भृगुसंहिता

फलित सर्वाङ्ग
दर्शन

•

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर
राजादरवाजा, वाराणसी

ज्योतिष शास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ

भृगु संहिता फलित

सर्वाङ्ग दर्शन

सम्पूर्ण

सम्पादक : श्री भगवानदास मित्तल
मथुरानिवासी

प्रकाशक :—
ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर
राजादरवाजा, वाराणसी

फोन : ६४६५०
सन् १९८२

मूल्य ३६) रुपया

भृगु संहिता फलित सर्वांग दर्शन

विषय सूची

॥ इति ॥

❀ भृगु संहिता ❀

फलित सर्वाङ्ग दर्शन

फलादेश देखने की विधि

(बारहो लग्न वालों को)

१—मेष लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर कुण्डली नं० १०८ तक में फलादेश देखना चाहिये।

२—वृषभ लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० २१६ तक में फलादेश देखना चाहिये।

३—मिथुन लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ३२४ तक में फलादेश देखना चाहिये।

४—कर्क लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ४३२ तक में फलादेश देखना चाहिये।

५—सिंह लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ५४० तक में फलादेश देखना चाहिये।

६—कन्या लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-

दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ६४८ तक में फलादेश देख़ना चाहिये।

७—तुला लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ७५६ तक में फलादेश देखना चाहिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ८६४ तक में फलादेश देखना चाहिये।

९—धन लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ९७२ तक में फलादेश देखना चाहिये।

१०—मकर लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० १०८० तक में फलादेश देखना चाहिये।

११—कुम्भ लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० ११८८ तक में फलादेश देखना चाहिये।

१२—मीन लग्न वालों को, प्रथम की एक बड़ी कुण्डली से लेकर-दूसरी बड़ी कुण्डली तक के अन्दर, कुण्डली नं० १२९६ तक में फलादेश देखना चाहिये।

*—

पुस्तक परिचय

प्रिय पाठक वृन्द–इस ग्रन्थके अन्दर, समस्त जन्म कुण्डलियोंका फलादेश, पूर्णरूपेण विस्तार पूर्वक, कारणों सहित लिखा है अर्थात् प्रत्येक व्यक्तिकी कुण्डलीका प्रत्येक ग्रह भाग्य सम्बन्धित, किस-किस विषय का अधिकारी होकर, किस-किस स्थान में बैठकर, किस-किस स्थानको, किस-किस प्रकारकी दृष्टियों से देख-देख कर, किस-किस प्रकारका फल प्रदान जिन्दगी भर तक स्थाई रूपसे करेगा। इसके अतिरिक्त, आकाश मार्ग में, सदैव परिभ्रमण करते रहने वाले नवग्रहों की चालके द्वारा, हर एक लग्न वालों पर, भाग्यके हरएक सम्बन्धोंमें जिन्दगी भर तक परिवर्तनशील फल कब २ क्या २ प्रदान करेगा अर्थात् समस्त जीवन भर, कौन २ से वर्षोंमें एवं कौन २ से मासोंमें, तथा कौन २ से दिनोंमें किस २ ग्रहोंके द्वारा क्या २ फल प्रदान होता रहेगा, इस प्रकरणमें आदिसे अन्त तक जीवनका पूर्ण रूपेण विस्तार पूर्वक फलादेश मिलेगा। अतः पाठक वृन्द, इस बात पर ध्यान देनेकी कृपा करें कि प्रत्येक व्यक्तिकी जन्म कुण्डलीमें, नव ग्रह जिस २ स्थान पर, जैसा २ स्वभाव फल लेकर बैठे हैं, उनका फल समस्त जीवनके एक तरफ, सदैव चलता रहेगा और दूसरी तरफ आकाशमें प्रत्येक राशिपर भ्रमण करते रहनेसे, जिस २ प्रकारका बदलता हुआ फल हर एक लग्न वालों पर नवग्रह करते रहते हैं, उसका फल चलता-बदलता रहेगा। इस प्रकार हर प्राणीके जीवन पर दोनों प्रकारसे फल घटित होता रहेगा, अतः उपरोक्त समस्त विषयको महान् विस्तृत रूपसे, भिन्न २ ज्योतिषके सरल और सत्य सिद्धान्तोंके द्वारा निरूपण किया है, अतः इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति, बगैर ज्योतिष सीखे हुए ही, ज्योतिष के सम्पूर्ण आँकड़ोंके द्वारा अपना २ फलादेश मालूम कर सकते हैं।

———

ज्योतिष ज्ञान प्राप्त करने के लिये

आवश्यक बातें

१-जन्म कुण्डलीके बारह घरोंके अन्तर्गत, किस २ स्थानसे, क्या २ भाव देखा जाता है।

२-बारह राशियों के क्या २ नाम हैं और कौन २ राशिके, कौन २ ग्रह स्वामी होते हैं।

३-कौन २ सी राशियों पर बैठनेसे, कौन २ ग्रह, उच्च एवं नीच माने जाते हैं।

४-कौन २ सी राशियों पर दृष्टियाँ डालनेसे, कौन २ ग्रह उच्च एवं नीच फल प्रदान करते हैं।

५ कौन २ ग्रह की, (अपने बैठे हुए स्थान से,) कौन २ स्थानों पर दृष्टियाँ पड़ती हैं।

६-कौन २ ग्रह का आपस में, किस २ से शत्रु एवं मित्र तथा सामान्य भाव रहता है।

७-कौन २ ग्रह, किस २ स्थानपर, बैठने से, स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री, नीचक्षेत्री, तथा सामान्य क्षेत्री कहलाते हैं।

८-कुण्डली के अन्दर, कौन २ से स्थानों को, केन्द्र, एवं त्रिकोण तथा सामान्य स्थान कहते हैं।

९-कौन २ ग्रह, किस २ स्थान पर बैठनेसे अथवा किस २ स्थान को देखने से, किस २ प्रकारसे अच्छा-बुरा फल क्योंकर करते हैं। यद्यपि इन उपरोक्त समस्त बातों की जानकारी के लिये पुस्तक के अन्दर प्रथम पृष्ठों में ही यह सब वस्तुयें दे दी हैं किन्तु इस पुस्तक की विशेषता यह है कि उपरोक्त तमाम बातों को वगैरह सीखे ही, पुस्तक के अन्दर फलादेश मालूम करते समय इन समस्त विषयों की जानकारी स्वतः हो जाती है, क्योंकि हर एक फलादेश के अन्दर उपरोक्त ग्रहों के समस्त कारणों को युक्त करके, उदाहरणों सहित, दर्पणकी तरह फलादेश लिखा गया है।

बारह राशियों के नाम और स्वरूप

(मेष)	(वृषभ)	(मिथुन)	(कर्क)	(सिंह)	(कन्या)
१	२	३	४	५	६
(तुला)	(वृश्चिक)	(धन)	(मकर)	(कुम्भ)	(मीन)
७	८	९	१०	११	१२

ग्रहों का आपसी स्थान और दृष्टि सम्बन्ध

यदि कोई ग्रह अपने बैठे हुए स्थान से, अपनी दृष्टि के द्वारा, किसी और स्थान को देख रहा है या उस स्थान पर बैठे हुए किसी ग्रह को देख रहा है, वह ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध कहलाता है, और यदि अलग २ स्थानों में बैठे हुए कोई भी दो ग्रह, एक दूसरे को दोनों देख रहे हों तो वह ग्रहों का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध कहलाता है, और यदि कोई दो ग्रह आपस में, एक दूसरे के घर में बैठे हुए हों तो, इन दोनों ग्रहों का स्थान सम्बन्ध कहलाता है, इसके अतिरिक्त विचारणीय बात यह है कि वह ग्रह आपस में मित्रभाव से सम्बन्ध कर रहे हैं अथवा उच्च भाव से या नीच भाव से या सामान्य भाव से सम्बन्ध कर रहे हैं। अतः सम्बन्धों का सार फल यह है कि उन सम्बन्ध करने वाले ग्रहों के गुण स्वभाव कर्मों को, एक दूसरे के सहयोग से मिलकर उन घरों के फलादेशों की पूर्ति करते हैं, अर्थात् एक ग्रह में दूसरे ग्रह का स्वभाव सम्मिलित रहता है। पाठकगण, इस बातका ध्यान रखें कि इस ग्रन्थ के अन्दर जहाँ ग्रहों के फलादेश दृष्टियों के सहित लिखे हैं, वहाँ पर यदि किसी ग्रह की दृष्टि के अन्दर कोई ग्रह भी उस स्थान पर बैठा हो तो, उस ग्रह का दृष्टि सम्बन्ध मान लेना चाहिये और जहाँ पर स्थानाधिपतियों का फलादेश लिखा है, वहाँ पर यदि कोई ग्रह के स्थान में दूसरा कोई बैठा है, और उसके स्थान में, वह ग्रह बैठा है तो उसे स्थान सम्बन्ध मान लेना चाहिये, क्योंकि इस पुस्तक के अन्दर हर एक फलादेश, ग्रहों की पूर्ण विवेचन युक्त स्थितियों के द्वारा लिखा हुआ है।

कौन २ स्थानों को केन्द्र या त्रिकोण

या अन्यान्य स्थान कहते हैं

जन्म कुण्डली के अन्दर—पहिला स्थान, चौथा स्थान, सातवाँ स्थान, दसवाँ स्थान, इस चारों घरों को केन्द्र स्थान कहते हैं, अतः केन्द्र में बैठे हुए ग्रह, विशेष शक्ति युक्त होने की वजह से अधिक सफलता शक्ति प्रदान करते हैं। पाँचवाँ स्थान और नवमाँ स्थान, इन दोनों स्थानों को त्रिकोण स्थान कहते हैं, इन स्थानों में दैविक शक्तिकी प्रधानता होने की वजह से, इन स्थानों पर बैठे हुए ग्रह भी, किसी-किसी मार्गों में, विलक्षण सफलता शक्ति प्रदान करते हैं। और लाभ-स्थान, धनस्थान में बैठे हुए ग्रह, धन की वृद्धि का कार्य करते हैं परन्तु लाभ में बैठा ग्रह प्रायः उत्तम फल का दाता होता है और तीसरे पराक्रम स्थान में बैठा हुआ ग्रह भी, पराक्रम शक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त कराता है इसलिये यह स्थान भी उत्तम है और छठें स्थान, आठवें स्थान, बारहवें स्थान, इन तीनों स्थानों में बैठे हुए ग्रह परेशानी करते हैं क्योंकि छठाँ घर शत्रु का है आठवाँ घर मृत्यु का है और बारहवाँ घर खर्च का है, इसलिये इन तीनों स्थान के स्वामी ग्रह भी परेशानी के हेतु बनते हैं। किन्तु उपरोक्त समस्त स्थानों का फल, अपनी २ ग्रह स्थिति के भेद और राशिभेद के कारणों से, सैकड़ों अच्छे बुरे रूपों में परिवर्तन होता रहता है। इसका पूरा स्पष्टी करण इस पुस्तक के अन्दर, भिन्न २ स्थानों में एवं भिन्न २ राशियों में ग्रहों का फल जो विस्तार पूर्वक लिखा है उसी के अन्दर मालूम हो सकेगा।

कौन २ राशियों के, कौन २ ग्रह स्वामी होते हैं।

मेष और वृश्चिक—इन दोनों राशियों के स्वामी-मङ्गल हैं।
१ ८

वृष और तुला—इन दोनों राशियों के स्वामी-शुक्र हैं।
२ ७

जन्म कुण्डलीमें बारह घरोंके नाम और स्वरूप
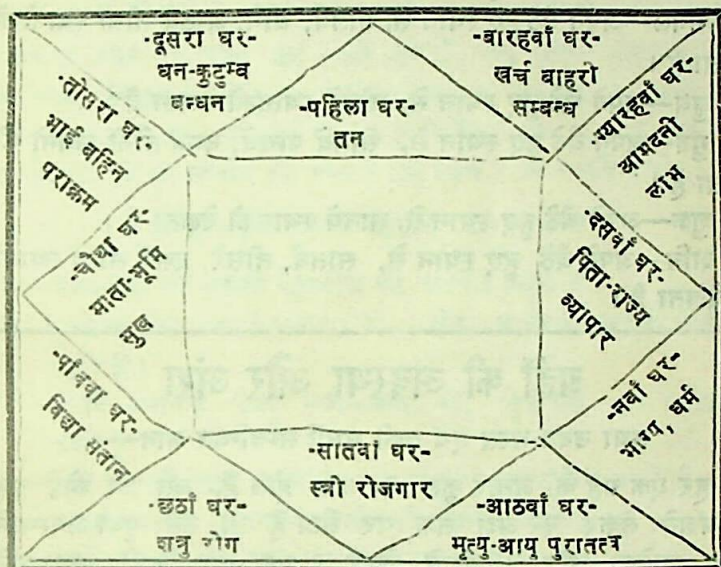
मिथुन और कन्या—इन दोनों राशियोंके स्वामी-बुध हैं।
 ३ ६

कर्क—इस राशिके स्वामी-चन्द्रमा हैं।
४

सिंह—इस राशिके स्वामी सूर्य हैं।
५

धन और मीन—इन दोनों राशियोंके स्वामी-गुरु हैं।
 ९ १२

मकर और कुम्भ—इन दोनों राशियोंके स्वामी-शनि हैं।
१० ११

कौन २ ग्रह की, कौन २ से स्थानों पर दृष्टियाँ पड़ती हैं।

सूर्य—अपने बैठे हुए स्थानसे, सातवें स्थानको देखता है।

चन्द्रमा—अपने बैठे हुए स्थान से सातवें स्थान को देखता है।

मंगल—अपने बैठे हुए स्थान से, सातवें, चौथे, आठवें तीनों स्थानोंको देखता है।

बुध—अपने बैठे हुए स्थान से, सातवें स्थानको देखता है।

गुरु—अपने बैठे हुए स्थान से, सातवें पाँचवें, नववें तीनों स्थानों को देखता है।

शुक्र—अपने बैठे हुए स्थान से, सातवें स्थानको देखता है।

शनि—अपने बैठे हुए स्थान से, सातवें, तीसरे, दसवें तीनों स्थानों को देखता है।

ग्रहों की अवस्था और अंश

तथा उदय-अस्त एवं वक्री मार्गी सम्बन्धित ज्ञान—

हर एक ग्रह के अन्दर कुल ३० अंश होते हैं, अतः जो कोई ग्रह १० अंशसे लेकर २२ अंश तक पर बैठा है तो, उसे युवा अवस्थामें माना जायेगा और ३ अंशसे लेकर ९ अंश तक, किशोर अवस्थामें माना जायगा और २३ अंशसे लेकर २८ अंश तक वृद्ध अवस्थामें माना जायगा और २९ अंशसे ऊपर तथा २ अंशके भीतर वाले ग्रहों को मृतक अवस्थामें माना जायगा। इसके अतिरिक्त, जो कोई ग्रह, सूर्यके नजदीक बिलकुल बराबर अंशों पर साथ होगा वह ग्रह पूर्ण अस्त माना जायगा, और जो कोई ग्रह सूर्यके आठ अंश की दूरी पर होगा वह अधूरा अस्त माना जायगा, और जो कोई ग्रह, सूर्यसे १५ अंशकी दूरी पर है वह पूर्ण उदय माना जायगा। अतः उपरोक्त सम्बन्धोंमें यह स्पष्टीकरण है कि जो कोई ग्रह, युवाः अवस्था वाले हैं और उदय हैं वह ग्रह अपनी शक्तिके अनुसार पूर्णरूपेण फल प्रदान करते हैं और जो कोई ग्रह, किशोरावस्था एवं वृद्धा अवस्था वाले ग्रह हैं वह कुछ कमजोरीके सहित अपना फल प्रदान करते हैं, और अधूरे अस्तवाले ग्रह भी कुछ कमजोरीसे युक्त फल प्रदान करते हैं, और जो कोई ग्रह, मृतक अंश होते हैं या पूर्ण अस्त होते हैं, वह

ग्रह प्रायः बहुत सूक्ष्म और शून्य रूपसे फल प्रदान करते हैं। और जो कोई ग्रह मार्गी होते हैं, वह सीधे रूपसे अपने स्थानानुसार फल प्रदान करते हैं और जो कोई ग्रह वक्री होते हैं, वह अपने स्थानसे पहिले स्थानकी स्थितिका भी ध्यान रखकर उलटा चलनेके कारणोंसे, एक सी रफ्तारका फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। अतः यह उपरोक्त द्वारा जानकारी की जा सकेगी कि कौन २ ग्रह किस २ अवस्थामें हैं।

बारह घरोंके स्वामी ग्रहों के नाम सम्बोधन

१—प्रथम स्थानके स्वामी देहाधीश को, लग्नेश कहते हैं।
२—दूसरे स्थानके स्वामी धनपति को, धनेश कहते हैं अथवा द्वितीयेश कहते हैं।
३—तीसरे स्थानके भ्रातृ स्थान-पति को, तृतीयेश एवं पराक्रमेश कहते हैं।
४—चौथे स्थानके मातृ स्थानपति को, चतुर्थेश एवं सुखेश कहते हैं।
५—पाँचवें स्थानके संतान-स्थानपति को पंचमेश कहते हैं।
६—छठवें स्थानके शत्रुस्थानपतिको षष्ठेश कहते हैं।
७—सातवें स्थानके स्त्री स्थानपतिको सप्तमेश कहते हैं।
८—आठवें स्थानके आयु-स्थानपति को, अष्टमेश कहते हैं।
९—नवमें स्थानके भाग्य स्थानपति को, भाग्येश एवं धर्मेश तथा नवमेश कहते हैं।
१०—दशम स्थानके राज्य स्थानपतिको, राज्येश एवं दशमेश कहते हैं।
११—ग्यारहवें स्थानके लाभ स्थानपति को, लाभेश कहते हैं।
१२—बारवें स्थानके खर्च स्थानपति को, व्ययेश कहते हैं।

ग्रहों की आपस में मित्रता, शत्रुता तथा सामान्यता

—: बुध :—

{ सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, गुरु, ये चारों ग्रह आपस में मित्र हैं } सभी के मित्र हैं { शुक्र शनि, राहु, केतु ये चारों ग्रह आपस में मित्र }

उपरोक्त नवग्रहों में दो प्रकार के यूथ हैं, इसलिये ये चार २ ग्रह अपने २ यूथ में, आपसी मित्रता मानते हैं और दोनों यूथ, एक दूसरे के सम्बन्ध में शत्रुता मानते हैं और बुध सभी ग्रहों के मित्र हैं। इसके अतिरिक्त शत्रुता मानने वाले ग्रहों में कहीं २ सामान्यता आती है उस भाव का पुस्तक के अन्दर फलादेशों में, साफ २ स्पष्टीकरण कर दिया है।

स्त्री पुरुषों का फलित भेद

प्रिय पाठक वृन्द—इस ग्रन्थ के अन्दर आदि से अन्त तक जो कुछ भी फलादेश लिखा है वह यद्यपि पुरुष जाति पर सम्बोधन करके लिखा है, किन्तु वास्तव में, यह फलादेश स्त्री, पुरुष, बालक सभी पर लागू होनेवाला है, परन्तु एक बात का खास फर्क रहेगा, वह यह है कि, पुरुषों की जन्मकुण्डली में, लग्न से, सातवें स्थान का वर्णन करते समय, जिस जगह पर स्त्री से सम्बन्धित सुख दुःख का फलादेश लिखा है, उस जगह पर यदि स्त्री की कुण्डली का फलादेश देखना हो तो, उसे पति से सम्बन्धित दुःख-सुःख मान लेना चाहिये, इसके अतिरिक्त बात यह है कि, भाग्य के हर एक सम्बन्धों में, जहाँ अच्छे बुरे समय की और जिन्दगी के भोगों की जानकारी करनी हो तो, स्त्री और पुरुष, दोनों की जन्मकुण्डली के ग्रहों से, भाग्य की और भविष्य की जानकारी करना परम आवश्यक है, क्योंकि स्त्री पुरुषों का भाग्य मिलकर साथ चलता है। इसके अतिरिक्त परिवार में जो लड़के बच्चे पैदा होते हैं, उनकी कुण्डली में, माता पिता से सम्बन्धित जैसे भी अच्छे बुरे ग्रह बैठे होते हैं, उनका फलादेश भी माता-पिता पर लागू रहता है, और घर में कन्या का जन्म हो जाये तो जबतक लड़की की शादी नहीं हो जायगी, तबतक उसके ग्रहों का असर भी, माता-पिता पर लागू रहता है, इसलिये सर्वप्रथम, पुरुष की कुण्डली के ग्रहों का असर-दूसरे स्त्री के ग्रहों का असर, तीसरे पुत्रों के ग्रहों का असर चौथे पुत्री के ग्रहों का असर, भी सामूहिक रूप से प्राप्त होता रहता है।

नवग्रहों का दृढ़ से परिचय

सूर्य—प्रकाश और प्रभाव का सम्बन्धी ग्रह है, इसलिये जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान का स्थायी है और जहाँ बैठा होगा और जहाँ देख रहा होगा वहाँ से प्रकाश और प्रभाव प्राप्त करेगा।

चन्द्रमा—मन की शक्ति का सम्बन्धी ग्रह है, इसलिए जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस स्थान का स्थायी स्वामी है और बैठा है और जहाँ देखता है वहाँ २ पर मनोयोग का कार्य करता है।

मंगल—खून और शक्ति का सम्बन्धी ग्रह है, इसलिये जन्म कुण्डलीमें मंगल जिस २ स्थानका स्वामी है और जहाँ बैठा है तथा देखता है, वहाँ २ पर वह अपनी शक्ति और तेजीका कार्य करता है।

बुध—विवेक शक्ति का स्वामी है, इसलिये जन्मकुण्डली में, जिस २ स्थान का स्वामी है और जहाँ २ बैठा है तथा जिस २ स्थानों को देखता है, उन सभी में, विवेक शक्ति के सहित कार्य करता है।

गुरु—हृदय की शक्ति का स्वामी है, इसलिये जन्मकुण्डली में गुरु, जिस २ स्थान का स्वामी है और जहाँ बैठा है एवं जहाँ जहाँ देख रहा है, उन सम्बन्धों में, हृदय की शक्ति के योग से कार्य करता है।

शुक्र—महान् चतुराई का स्वामी है, इसलिये जन्मकुण्डलीमें जिन २ स्थानों का स्वामी है, और जहाँ बैठा है, एवं जहाँ देखता है, वहाँ २ महान् चतुराई के योगसे कार्य करता है।

शनि—महान् दृढ़ता शक्तिका अधिकारी है, इसलिये जन्म कुण्डलीके अन्दर शनि, जिन २ स्थानोंका स्वामी है और जहाँ बैठा है, तथा जिन २ स्थानोंको देखता है, उन स्थानोंमें दृढ़ता शक्तिसे काम करता है।

राहु—गुप्त युक्तिबल, तथा कमी और कष्टके अधिपति हैं, इसलिये जन्म कुण्डलीके अन्दर जिस स्थान पर बैठते हैं वहाँ गुप्त युक्तिबलका प्रयोग तथा कमी और कष्टका कार्य करते हैं।

केतु—गुप्त शक्तिबल, कठिन कर्म तथा कमी और भयके अधिपति हैं, इसलिये जन्मकुण्डलीमें जिस स्थान पर बैठते हैं, वहाँ कठिन कर्म शक्ति एवं कमी तथा भयकी प्राप्तिका कार्य करते हैं और जन्म-कुण्लीमें या ग्रह गोचरमें जिस किसी भी ग्रह के सामने केतु आ रहे हों, वह ग्रह भी भययुक्त हो जाता है।

नोठ—उपरोक्त ग्रहों का, हर सम्बन्धों में विचार रखते हुए, विस्तृत फलादेश पुस्तकके अन्दर लिखा गया है।

—: गलत बनी हुई कुण्डलियोंको सुधारनेकी सरल विधि :—

प्रिय पाठक वृन्द—प्रायः कुछ निम्नलिखित कारणोंसे, जन्म कुण्डलियाँ गलत बन जाया करती हैं, अर्थात् बच्चेके जन्म समय पर स्त्रियोंकी असावधानता से, और घड़ियोंकी गड़बड़ीसे, तथा गर्भसे बाहर बालकके क्षणिक दर्शन पर जन्म मानना या पूर्णरूपेण बालकका पृथ्वी पर आने पर जन्म मानने से, अथवा लोकल टाइम और सूर्य टाइमके अन्तर फर्कसे और पृथ्वीको ऊँचाई नीचाई के शहरों में, सूर्योदयके फ़र्क से, अतः उपरोक्त समस्त कारणोंमें से, किसी भी कारण के द्वारा, अक्सर कुण्डलियाँ गलत बन जाया करती हैं, इसलिए जनता को, सत्य कुण्डली, सरलता पूर्वक प्राप्त होनेके दृष्टिकोण से, यह ठोस उपाय प्रस्तुत कर रहा हूँ कि जिसके द्वारा, घण्टे दो घण्टे तकका फर्क भी निश्चय रूपसे शुद्ध हो जायगा। अतः जन्म कुण्डली जो पैदाइशके समय प्राप्त हो, उससे १ लग्न पहिलेकी लेकर और १ लग्न बादकी लेकर, तथा ग्रहों की स्थान स्थिति उसी अनुसार बनाकर, फिर पुस्तकके अन्दर लिखित फलादेशोंके अनुसार तीनों कुण्डलियोंसे जीवनको मिलाकर देख लें, अतः जिस कुण्डलीसे मनुष्यका जीवन चरित्र सही मिल जाय, उस कुण्डलीको सही मान लेनी चाहिये।

अर्थात् जिस प्रकार हमको, श्री लोकमान्य तिलककी जन्म कुण्डली प्रथम बार मिथुन लग्नकी प्राप्त हुई थी, किन्तु उस कुण्डलीके ग्रहों से उनकी जीवनीका मिलान सही साबित नहीं हुआ तब हमने उनकी लग्नको बदलकर उपरोक्त रूपसे देखा तो कर्क लग्न सही साबित

रही, तदुपरान्त अन्य पुस्तकोंमें भी प्राप्त श्री लोकमान्य तिलककी जन्म कुण्डली, कर्क लग्न की ही लिखी प्राप्त हुई, इसलिये इस प्रकरणमें हम इस पृष्ठ में, तीनों कुण्डलियाँ बना कर रख रहे हैं ताकि जनता इस अचूक आँकड़े से सरलता पूर्वक लाभ उठा सके।

(कुण्डली सही बनाने का तरीका)

श्री लोकमान्यतिलक की ३ कुण्डलियाँ

सही जन्मकुण्डली, कर्कलग्न

जन्म ता० २३ जुलाई सन् १८५८ सुबह

इस कुण्डली में, आदर्शवादिता, धार्मिकता, तथा राजनैतिक एवं सामाजिक कार्य कुशलता और प्रभाव, नाम ख्याति, मान सम्मान प्रतिष्ठा इत्यादिसे शुद्ध मानी गई है।

मिथुन लग्न

उपरोक्त कुण्डली से १ घंटे पूर्व की कुण्डली

सिंह लग्न

उपरोक्त कुण्डली से १ घंटे वाद की कुण्डली

इस कुण्डली में धनोपार्जन की उन्नति से इज्जत बढ़ाने का योग मुख्य है इसलिये यह ऐसे आदर्श व्यक्ति के लिये गलत है।

इस कुण्डली में तो चारों केन्द्र और दोनों त्रिकोण ग्रहों से शून्य हैं जिससे कि कोई महानता नहीं बने बल्कि दुनियाँ में कोई जान भी न सके, इतना ऊँचा आदर्श बनाना तो बहुत दूर रहा इसलिये यह भी गलत है।

नवग्रहों का शक्ति परिचय

जो कोई भी ग्रह अपने क्षेत्र में बैठे हों या उच्च क्षेत्र में बैठे हों अथवा अपने क्षेत्र को या उच्च क्षेत्र को देख रहे हों, तो उन सभी स्थानों की वृद्धि करते हैं। अर्थात् निम्नांकित रूप से समझिये।

सूर्य—सिंह राशि या मेष राशि पर बैठा हो, या इन्हें देख रहा हो।
चन्द्रमा—कर्क राशि या वृष राशि पर बैठा हो, या इन्हें देख रहा हो।
मंगल—मेष, वृश्चिक राशि या मकर राशि पर बैठा हो या इन्हें देख रहा हो।

बुध—मिथुन, कन्या, राशि पर बैठा हो या इन्हें देख रहा हो।
गुरु—धन, मीनराशि या कर्क राशि पर बैठा हो, या इन्हें देख रहा हो।
शुक्र—वृषभ, तुला राशि या मीन राशि पर बैठा हो, या इन्हें देख रहा हो।

शनि—मकर कुम्भ राशि या तुला राशि पर बैठा हो, या इन्हें देख रहा हो।
राहु—मिथुन राशि पर बैठा हो, या धन राशि को छोड़कर लग्न से तीसरे या छठें या ग्यारहवें स्थान पर कहीं भी बैठा हो।
केतु—धन राशि पर बैठा हो या मिथुन राशिको छोड़कर-लग्नसे तीसरे-छठें-ग्यारहवें स्थान पर कहीं भी बैठा हो।

नोट—क्रूर या गरम ग्रहों का, लग्नसे तीसरे-छठें-ग्यारहवें स्थानमें बैठना शक्ति प्रदायक होता है।

अतः उपरोक्त, नवग्रह यदि उपरोक्त राशियों पर बैठे हों या इन्हें देखते हों तो उन स्थानोंमें शक्तिशाली कार्य करते हैं। इसलिये इस ग्रंथके अन्दर उपरोक्त समस्त विषय को, फलादेशोंके अन्दर पूर्ण रूपेण स्पष्टीकरण करके फलादेश लिखा गया।

ग्रहों का स्थानाधिपति स्वभाव

ज्योतिष के फलादेशको जाननेके लिये, यह एक बड़ा सरल और सत्य आँकड़ा है कि, जन्म कुण्डलीके अन्दर १२ स्थानोंके अधिपति सातों ग्रहोंका यह प्राकृतिक स्वभाव है कि, किसी भी स्थानका स्वामी कोई ग्रह, जिस किसी भी स्थान पर बैठेगा, तो उस स्थानमें, अपने स्थानकी शक्तिके योग से, सफलता या असफलता प्राप्त करेगा, अर्थात् भाग्यका स्वामी ग्रह यदि भाग्य स्थान पर ही बैठा है, तो भाग्य स्वयमेव कुदरती तौरसे जागृत रहेगा और भाग्यका स्वामी कोई ग्रह यदि राज्य स्थान पर बैठा है तो पिता, राज्य व्यापार-आदिके योगसे भाग्यकी जागृति होगी और भाग्यका स्वामी यदि लाभ स्थान पर बैठा है तो आमदनीके उत्तम मार्गसे भाग्यकी जागृति होगी और भाग्यका स्वामी यदि बारहवें स्थान पर बैठा है तो, प्रथम भाग्य स्थानमें कमजोरी रहेगी फिर बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे भाग्यकी जागृति रहेगी, और भाग्यका स्वामी यदि प्रथम देहके स्थान पर बैठा है तो, देह के योग्यसे भाग्यकी उन्नति प्राप्त होगी और भाग्यका स्वामी यदि धन भवनमें बैठा है तो, भाग्यकी शक्ति एवं उन्नति, धन जनके योगसे बनेगी और भाग्यका स्वामी यदि पराक्रम स्थानमें बैठा है तो, पराक्रम और भाईके योग से, भाग्यकी उन्नति होगी और भाग्यका स्वामी यदि चौथे स्थान पर बैठा है तो माता और भूमिके योगसे भाग्यकी जागृति होगी और भाग्यका स्वामी यदि पंचम

स्थान पर बैठा है तो, विद्या और संतानके योगसे भाग्यकी जागृति होगी और भाग्यका स्वामी यदि छठें स्थान पर बैठा है तो, परतन्त्रता या परेशानियोंके योगसे भाग्यकी जागृति होगी, और भाग्यका स्वामी यदि, सातवें स्थान पर बैठा है तो रोजगार एवं स्त्री सम्बन्धसे भाग्यकी जागृति होगी और भाग्यका स्वामी यदि आठवें मृत्यु स्थान पर बैठा है तो, मुसीबतों और पुरातत्वके लाभसे भाग्यकी जागृति होगी। इसी प्रकार किसी भी स्थानका स्वामी कोई ग्रह, जिस स्थान पर बैठा होगा, उसी स्थानके द्वारा उस अपने स्थानकी शक्ति प्राप्त करता है। इस-लिये उपरोक्त १२ घरोंके स्वामी समस्त ग्रहोंका वर्णन, हर एक स्थान और हर एक राशियों में भिन्न २ रूपसे खुलासा उदाहरणों सहित इस ग्रन्थके अन्दर विस्तार पूर्वक लिखा है इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली के अन्दर लग्न से छठे, आठवें, बारहवें, तीनों स्थानोंका सम्बन्ध या इनके स्थान पतियोंका सम्बन्ध हर जगह कष्टप्रद सिद्ध होता है और अच्छे स्थानों का एवं स्थानपतियों का सम्बन्ध हमेशा उन्नतिदायक एवं सुखद सिद्ध होता है।

प्रश्न लग्न विचार

प्रिय पाठक वृन्द ! यदि कभी किसी व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर देना हो तो, प्रश्न करनेवाले व्यक्ति के, प्रश्न करते ही घड़ी का टाइम देख लेना चाहिये और उस टाइम के अन्दर कौन सी लग्न वर्तमान है, उस लग्न को नवग्रहों सहित कागज पर लिख लेनी चाहिये। फिर उन नवग्रहों का फलादेश इस ग्रन्थ के अन्दर से, कुण्डली नं० १ से लेकर नं० १२९६ तक में वह लग्न के जहाँ भी ग्रहों का फलादेश लिखा हो, उन फलादेशों से, उस व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर मान लेना चाहिये। और उसके प्रश्न सम्बन्धी भविष्य की जानकारी उसी

प्रकार कर लेनी चाहिये। जिस प्रकार जन्मकुण्डलियों के भविष्य जानने के लिए, हरएक लग्नके प्रथम भाग में, नवग्रहों के द्वारा दैनिक, मासिक, वार्षिक तीनों प्रकार से भविष्य जानने की रीति लिखी हुई है। किन्तु पाठक वृन्द इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि, प्रश्न कर्ता ने जिस विषय का प्रश्न किया है, उस विषय का योग, उस व्यक्ति की जन्मकुण्डली में, किस प्रकार पड़ा हुआ है, अतः जन्म-कुण्डली के अन्दर जैसा योग होगा, उसके अन्तर्गत विचार करके प्रश्न लग्न में आये हुए ग्रहों का फलादेश समझना चाहिये, और यदि जन्मकुण्डली प्रश्न कर्ताके पास कतई नहीं हो तो केवल प्रश्न लग्न के ग्रहों से ही फलादेश, इस पुस्तक के आधार पर बता देना चाहिये। इसके अतिरिक्त प्रश्न लग्न को, या तो पंचांगों में लिखित सारिणी के अनुसार वर्तमान समय की लग्न ले लेनी चाहिये या लग्न निकालने की रीति किसी से सीख लेनी चाहिये अथवा अन्दाज से लग्न निकालना हो तो, पंचागों में प्रथम लग्न जिसमें सूर्य बैठा होता है वह लग्न सूर्योदय के समय अवश्य रहती है। उसके बाद करीबन ११ बजे तक दो लग्न उसके आगे वाली समाप्त हो जाती है, दोपहर १२ बजे पर सुबह वाली लग्न से चौथी लग्न अवश्य आ जाती है और उसके बाद सायंकाल ५ बजे तक करीबन छठवीं लग्न समाप्त हो जाती है और सूर्यास्त के समय, सुबह वाली लग्न से, सातवीं लग्न आ जाती है और इसके बाद रात्रि में ११ बजे तक करीबन नवमी लग्न समाप्त होकर रात्रि के १२ बजे दसवीं लग्न रहती है इसके उपरान्त करीबन ५ बजे प्रातःकाल तक बारहो लग्नें समाप्त हो जाती हैं।

०:—:०

समर्पण

बन्दौं श्री हरिपद सुखदाई,

तन्दुल समझ सुदामा के प्रभु दुख दारिद्र देहु नशाई ।

हे जगत् नियन्ता, जगत् पिता, जगदीश्वर, आपकी जिस अलौकिक महान् सामर्थ्य को बड़े २ देवता और ऋषि मुनि भी समझने में पूर्ण असमर्थ हैं, और जिस प्रकार आपने मुझे समय २ पर प्रेरणा और परिस्थितियोंके चक्रमें डाल २ कर, मुझ जैसे अनाड़ी बालकके द्वारा, ज्योतिष जैसे गम्भीर शास्त्रकी रचनायें कराई हैं, उसके लिये मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ, और जो कुछ भी त्रुटियाँ रह गई हों, उसकी क्षमा चाहते हुए, यह पुस्तक पुष्प आपकी भेंट करता हूँ। एवं प्रार्थना करता हूँ कि हे लक्ष्मीपते भगवान् वासुदेव श्रीकृष्ण चन्द्र, आप मेरे ऊपर पूर्ण कृपा करिये तथा मेरे समस्त संचित अपराधोंको क्षमा करके अपने चरणारविन्द की निर्मल भक्ति प्रदान कीजिये ।

प्रार्थी—भगवानदास मीतल
नया बाजार, मथुरा ।

मेष लग्न प्रारम्भ
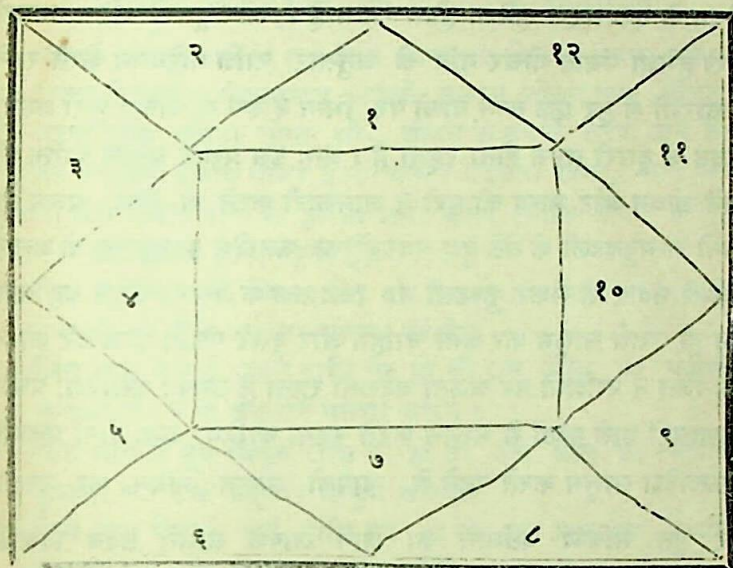
मेष लग्न का फलादेश प्रारम्भ

नवग्रहों द्वारा भाग्य फल

(कुण्डली नं० १०८ तक में देखिये)
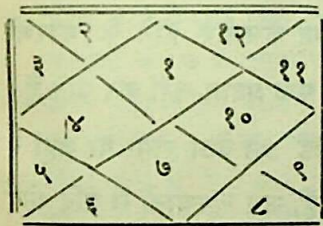
प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को, अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये, यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर, नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २

अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं, उनका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है। और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर, भिन्न २ रूप से, अच्छा बुरा असर, जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये, प्रथम तो अपनी जन्मकुण्डली के बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० १ से लेकर कुण्डली नं० १०८ तक के अन्दर, जो २ ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो २ ग्रह, जिन २ राशियों पर चलता बदलता रहता है उसका फलादेश, प्रथम के नवग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम करते रहना चाहिये, अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से, आपको समस्त जीवन का नक्शा और भूत भविष्य वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव दिखाई देता रहेगा।

नोट—जन्मकुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में, जो कोई भी ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है, या ३ अंश के भीतर होता है, या सूर्य से अस्त होता है, तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से, अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्मकुण्डली के अन्दर किसी ग्रहके साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ २ जिन २ स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं, उन २ स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो, उस ग्रह पर भी उसका असर फल लाग समझा जायेगा।

(१) मेष लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर सूर्यफल

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्स जीवन भर, जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा, अतः जन्म-कुण्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से फल घटित होता रहता है।

१—जिस मास में सूर्य, मेष राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य, वृषभ राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० १० के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० १२ के अनुसार मालूम करिये।

(१) मेष लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर चन्द्र-फल

आपकी जन्म कुन्डली में चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचाङ्ग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा अतः जन्म कुन्डली और पंचांग दोनों हमेशा देखते रहिये, क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकारका फल घटित होता रहता है।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० १३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० १४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० १५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं १६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं १७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० १८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० १९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० २० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० २१ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० २२ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० २३ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो तो उस दिन का फलादेश कुन्डली नं० २४ के अनुसार मालूम करिये।

(१) मेष लग्न वालों को, समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर भौम-फल

आपकी जन्म कुन्डली में मंगल जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा, अतः जन्म कुन्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये, क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार का फल घटित होता रहता है।

१--जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो तो उस मास का फलदेश कुन्डली नं० २५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० २६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० २७ के अनुसार मालूम करिये।

४--जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० २८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० २९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३३ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३४ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३५ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३६ के अनुसार मालूम करिये।

—:o:o:o—

(१) मेष लग्न वालों की समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर बुद्ध-फल

आपकी जन्म कुन्डली में बुध जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा, अतः जन्म कुन्डली और पंचाग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से फल घटित होता रहता है।

१. जिस मास में बुध—मेष राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३७ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस मास में बुध—वृषभ राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३८ के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस मास में बुध—मिथुन राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ३९ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस मास में बुध—कर्क राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४० के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस मास में बुध—सिंह राशि पर हो तो; उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४१ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस मास में बुद्ध—कन्या राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४२ के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस मास में बुध—तुला राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४३ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस मास में बुध—वृश्चिक राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४४ के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस मास में बुध—धन राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४५ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस मास में बुध—मकर राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४६ के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस मास में बुध—कुम्भ राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४७ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस मास में बुध—मीन राशि पर हो तो, उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ४८ के अनुसार मालूम करिये।

(१) मेष लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर गुरु-फल

आपकी जन्म कुन्डली में गुरु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा अतः जन्म कुन्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से घटित होता रहता है।

१. जिस वर्ष में गुरु—मेष राशि पर हो तो, उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ४९ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस वर्ष में गुरु—वृषभ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५० के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस वर्ष में गुरु—मिथुन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस वर्ष में गुरु—कर्क राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२ के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस वर्ष में गुरु—सिंह राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस वर्ष में गुरु—कन्या राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५४ के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस वर्ष में गुरु—तुला राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५५ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस वर्ष में गुरु—वृश्चिक राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५६ के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस वर्ष में गुरु—धन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५७ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस वर्ष में गुरु—मकर राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५८ के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस वर्ष में गुरु—कुम्भराशि पर हो तो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस वर्ष में गुरु—मीन राशि पर हो तो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६० के अनुसार मालूम करिये।

(१) मेष लग्नवालों को समस्त जीवन के लिए।

जीवन के दोनों किनारों पर शुक्र-फल

आपकी जन्म कुण्डली में जिस स्थान पर शुक्र बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा,

अतः जन्मकुण्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से फल घटित होता रहता है।

१. जिस मासमें शुक्र, मेष राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुण्डली नं ६१ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस मास में शुक्र, वृषभ राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ६२ के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस मास में शुक्र, मिथुन राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६३ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस मास में शुक्र, कर्क राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुन्डली नं० ६४ के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस मास में शुक्र, सिंह राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुन्डली नं० ६५ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस मास में शुक्र, कन्या राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ६६ के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस मास में शुक्र, तुला राशि पर हो तो उस मास का फलादेश कुन्डली नं० ६७ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस मास में शुक्र, वृश्चिक राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ६८ के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस मास में शुक्र, धन राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुन्डली नं० ६९ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस मास में शुक्र, मकर राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ७० के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस मास में शुक्र, कुम्भ राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ७१ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस मास में शुक्र, मीन राशि पर हो तो उस मासका फलादेश कुन्डली नं० ७२ के अनुसार मालूम करिये।

---

(१) मेष लग्नवालों को, समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर शनि-फल

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा बदलता चलता रहेगा, अतः जन्म कुन्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार का फल घटित होता रहता है।

१. जिस वर्ष शनि, मेष राशि पर हो तो उस वर्षका फलादेश कुन्डली नं० ७३ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस वर्ष में शनि, वृषभ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४ के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस वर्ष में शनि, मिथुन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ७५ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ७६ के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ७७ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ७८ के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ७९ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ८० के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ८१ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ८२ के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ८३ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० ८४ के अनुसार मालूम करिये।

(१) मेष लग्नवालोंको समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर राहु-फल

आपकी जन्म कुन्डली में राहु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा अतः जन्म कुन्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से फल घटित होता रहता है।

१. जिस वर्ष में राहु-मेष राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६ के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८७ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८८ के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८९ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९० के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२ के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९३ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४ के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६ के अनुसार मालूम करिये।

---

(१) मेष लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर केतु-फल

आपकी जन्म कुण्डली में केतु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश इस पुस्तक के अन्दर लेखानुसार आपके समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ सदैव चलता रहेगा और जीवन के दूसरी तरफ नीचे लिखे अनुसार फलादेश पंचांग गोचर द्वारा चलता बदलता रहेगा अतः जन्म कुण्डली और पंचांग दोनों से हमेशा देखते रहिये क्योंकि जीवन पर दोनों प्रकार से फल घटित होता रहता है।

१. जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९७ के अनुसार मालूम करिये।

२. जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९८ के अनुसार मालूम करिये।

३. जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९९ के अनुसार मालूम करिये।

४. जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०० के अनुसार मालूम करिये।

५. जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०१ के अनुसार मालूम करिये।

६. जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०२ के अनुसार मालूम करिये।

७. जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०३ के अनुसार मालूम करिये।

८. जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०४ के अनुसार मालूम करिये।

९. जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०५ के अनुसार मालूम करिये।

१०. जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०६ के अनुसार मालूम करिये।

११. जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुडली नं० १०७ के अनुसार मालूम करिये।

१२. जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो तो उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०८ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसी प्रकार हर एक लग्न वालों को कुन्डली के नम्बरों से प्रत्येक ग्रहों का फल समझ लेना चाहिये। अब इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ होता है—

विद्या बुद्धि-संतान-स्थापित सूर्य

मेष लग्न में सूर्य

नं० १

यदि मेषका सूर्य प्रथम केन्द्र देह के स्थानमें, उच्चका होकर, मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो, देह का कद प्रभावशाली रहेगा और बुद्धि में उत्तेजना शक्ति रहेगी, तथा विद्याके स्थान में महानता प्राप्त होगी और वाणी में प्रभाव रहेगा तथा हृदयमें बड़ा भारी स्वाभिमान होगा तथा संतान पक्ष में, उत्तम शक्ति रहेगी, किन्तु सूर्य, सातवीं नीच दृष्टि से, स्त्री एवं रोजगारके स्थानको देख रहा है इसलिये स्त्री

स्थानमें क्लेश एवं कष्ट तथा सुन्दरताकी कमी प्राप्त होगी और रोजगारके मार्गमें कुछ परेशानियाँ तथा कुछ कमी प्रतीत होगी और गृहस्थीके सुख सम्बन्धोंमें एवं संचालनमें कुछ दिक्कतें रहेंगी।

मेष लग्न में २ सूर्य

नं० २

यदि वृषभका सूर्य—दूसरे, धन एवं कुटुम्ब स्थानमें, शत्रु शुक्रकी राशि पर बैठा है तो, धनका स्थान कुछ बन्धनका सा भी कार्य करता है, इसलिये संतान पक्षमें बाधा रहेगी, और विद्याके ग्रहण करनेमें कुछ दिक्कतोंके योगसे शक्ति प्राप्त होगी, किन्तु बुद्धि योग द्वारा धनकी वृद्धि का विशेष प्रयत्न किया जायगा, परन्तु धनकी संचित शक्तिके अन्दर कुछ त्रुटि रहेगी और सातवी मित्र दृष्टि से, आयु एवं पुरातत्व स्थान को, मंगलकी वृश्चिक राशिमें देख रहा है इसलिये आयुकी वृद्धि रहेगी और पुरातत्व शक्ति का लाभ बुद्धि योग द्वारा प्राप्त होगा, तथा जीवनकी दिनचर्या में, बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और कुटुम्ब का कुछ प्रभाव रहेगा।

मेष लग्न में ३ सूर्य

नं० ३

मिथुन का सूर्य—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में, मित्र बुधकी राशि पर बैठा है, इसलिये विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी शक्ति मिलेगी और तीसरे स्थान पर, गरम ग्रह बहुत शक्तिशाली फलका दाता हो जाता है, इसलिये पराक्रम-पुरुषार्थकी बहुत वृद्धि होगी तथा बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और दिमागके अन्दर तथा वाणीके अन्दर तेजी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से, भाग्य एवं धर्म स्थान को, गुरु की धन राशिमें देख रहा है, इसलिये बुद्धि योगकी शक्तिके द्वारा, भाग्यकी वृद्धि होगी और धर्म का मनन एवं पालन होता रहेगा तथा ईश्वर और धर्ममें निष्ठा रहेगी।

मेष लग्न में ४ सूर्य

नं ० ४

कर्कका सूर्य—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमिके स्थान पर, मित्र चन्द्र की राशिमें बैठा है इसलिये सुखपूर्वक विद्या प्राप्त करेगा, तथा संतान पक्षकी तरफसे सुख रहेगा और बुद्धि के अन्दर तेजी रहते हुए भी शान्ति धारण करेगा तथा बुद्धि की योग्यतासे भूमि मकानादि की शक्ति का प्रभाव प्राप्त करेगा और माता की सुख शक्ति रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से, पिता एवं राज्य स्थान को, शनिकी मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये पिता के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा और राज्यके मार्गमें कुछ नीरसता रहेगी, तथा कुछ मान और प्रभाव प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ५ सूर्य

नं० ५

यदि सिंह का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर, स्वयं अपनी राशिमें स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो, विद्या की महान् शक्ति प्राप्त करेगा, तथा वाणी और बुद्धि की महान् तेजी के कारण, बड़ा भारी प्रभाव रखेगा तथा संतान पक्षके अन्दर बड़ा शक्तिशाली पुत्र प्राप्त होगा और अपनी बुद्धि की योग्यताके सम्मुख दूसरोंकी बुद्धि को छोटी समझेगा-तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे लाभ स्थान को, शनिकी कुम्भ राशिमें देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्गमें विशेष प्रयत्न करने पर लाभ (प्राप्त) की तरफसे कुछ असंतोष रहेगा, किन्तु लाभके मार्गमें कुछ कटु भाषणसे कार्य सम्पादन करेगा।

यदि कन्याका सूर्य—छठें, शत्रु एवं झगड़े झंझटके स्थान पर, मित्र बुधकी राशि पर बैठा है तो, विद्या ग्रहण करनेमें कुछ दिक्कतें रहेंगी किन्तु विद्या और बुद्धि के द्वारा बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा और संतान पक्षके अन्दर कुछ परेशानी रहेगी, किन्तु छठें स्थान पर

मेष लग्न में ६ सूर्य

नं० ६

गरम ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी सफलता शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा, तथा सातवीं मित्र दृष्टि से, खर्च एवं बाहरी स्थान को, गुरु की मीन राशिमें देख रहा है इसलिये खर्चा खूब करेगा और बुद्धि योग द्वारा बाहरी स्थानों में सफलता शक्ति पायेगा और दूसरे स्थानों में मान प्राप्त करेगा।

विद्या, बुद्धि, संतान-स्थानपति—सूर्य

मेष लग्न में ७ सूर्य

नं० ७

तुला का सूर्य—सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगार के स्थान पर नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि में बैठा है इसलिये, विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी, तथा बुद्धि और विवेक की लघुता से कार्य करेगा और संतान पक्षमें कुछ कमी रहेगी तथा स्त्री के सुख स्थान में परेशानी अनुभव होगी और रोजगार के मार्ग में दिक्कतों से एवं दिमागी परिश्रम से कार्य सम्पादन करेगा, तथा सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को, मित्र मंगलकी मेष राशि में देख रहा है इसलिये देह के कदमें कुछ लम्बाई प्राप्त होगी तथा हृदय में कुछ छिपा हुआ स्वाभिमान विशेष रहेगा और बुद्धि की युक्ति से मान एवं प्रभाव प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का सूर्य—आठवें मृत्यु आयु-एवं पुरातत्व स्थान में, मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो, विद्या ग्रहण करने में दिक्कतें और कमजोरियाँ रहेंगी, तथा संतान पक्ष में कष्ट अनुभव होगा और दिमाग में कुछ परेशानियाँ रहेंगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव

मेष लग्न में ८ सूर्य

नं० ८

रहेगा तथा आयु में शक्ति होगी और पुरातत्व सम्बन्ध में बुद्धि योग द्वारा प्रभाव और चमत्कार रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को, शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष की वृद्धि करने में, बड़ा प्रयत्नशील रहेगा किन्तु फिर भी धन और कुटुम्ब की तरफ से कुछ असन्तोष युक्त शक्ति प्राप्त करेगी।

मेष लग्न में ९ सूर्य

नं० ९

यदि धन का सूर्य- नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो बड़ी प्रभावशालिनी विद्या प्राप्त करेगा तथा बुद्धि के अन्दर उच्चतम शक्ति पायेगा और धर्म शास्त्र का अच्छा ज्ञान पायेगा तथा बुद्धि योग के द्वारा भाग्य की महान् वृद्धि करेगा और संतान पक्ष में उत्तम सहयोग प्राप्त करेगा तथा वाणी के द्वारा बड़ा प्रभाव और यश पायेगा तथा ईश्वर और न्याय पर विश्वास मानेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का अच्छा योग बनेगा पराक्रम तथा पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर बुद्धि की योग्यता से बड़ी शक्ति और स्फूर्ति प्राप्त करेगा।

विद्या, बुद्धि, संतान-स्थानपति—सूर्य

यदि मकर का सूर्य—दशम केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो, पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा, तथा विद्या के पक्ष में कुछ अड़चनों के द्वारा राजभाषा की योग्यता पायेगा और दिमाग एवं विचारों के अन्दर बड़ी भारी उत्तेजना क्रोध तथा अहंभाव रखेगा और संतान पक्ष के

मेष लग्न में १० सूर्य

नं० १०

सम्बन्ध में कुछ अरुचिकर सहयोग शक्ति प्राप्त होगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये, माता का और भूमि का अच्छा योग पायेगा तथा राज समाज व कारबार के मार्ग में बुद्धि योग से उन्नति प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ११ सूर्य

नं० ११

यदि कुम्भ का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर या गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है। इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष उन्नति करने के लिये बड़ा भारी परिश्रम करेगा और बुद्धि योग के द्वारा विशेष सफलता प्राप्त करेगा तथा आमदनी के मार्ग में बड़ा प्रभाव रहेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को, स्वयं अपनी सिंह राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये विद्या की शक्ति प्राप्त करेगा और संतान शक्ति प्राप्त रहेगी तथा स्वार्थ सिद्धि के मार्ग में बड़ी दृढ़ता और तत्परता तथा वाणी की कटुता से कार्य में सफलता पायेगा।

मेष लग्न में १२ सूर्य

नं० १२

यदि मीन का सूर्य—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्च की विशेष संचालन शक्ति बुद्धि योग द्वारा करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा, किन्तु व्यय स्थान के दोष के कारण विद्या के पक्ष में कमजोरी रहेगी और संतान पक्ष में कुछ कमी और

परेशानी तथा हानि के कारण प्राप्त करेगा तथा दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी रहेगी और सातवां मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को, बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये, शत्रु पक्ष में सद्भावनाओं के द्वारा प्रभाव की शक्ति और निर्भयता प्राप्त करेगा।

माता, भूमि तथा सुख-स्थान पति—चन्द्र

मेष लग्न में १ चन्द्र

नं० १३

यदि मेष का चन्द्र—प्रथम केन्द्र, देह के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो माता का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का सुख एवं घरेलू सुख प्राप्त करेगा और देह में सुन्दरता रहेगी तथा मन का स्वामी चन्द्रमा है, इसलिये मन की प्रसन्नता प्राप्त करने के साधन बनेंगे और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री पक्ष में सुख और सुन्दरता रहेगी तथा रोजगार के मार्ग में सुख पूर्वक मनयोग द्वारा सफलता शक्ति प्राप्त रहेगी और गृहस्थ के सम्बन्धों में बड़ा मनो-रंजन और मान प्राप्त करेगा।

मेष लग्न २ चन्द्र

नं० १४

यदि वृषभ का चन्द्र—दूसरे, धन एवं कुटुम्ब स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति का बड़ा आनन्द प्राप्त करेगा और बड़ा धनवान् एवं जायदाद वाला बनेगा अतः मन स्थान पति चन्द्रमा होने के कारण धन जन कुटुम्ब की वृद्धि करने में ही प्रसन्नता मानेगा और धन का स्थान कुछ बन्धन का भी कार्य करता है इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और नीच दृष्टि

से आयु एवं पुरातत्व के स्थान को, मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ अशान्ति रहेगी और कभी २ आयु और पुरातत्व स्थानों में कुछ संकट उत्पन्न होंगे।

मेष लग्न में ३ चन्द्र

नं० १५
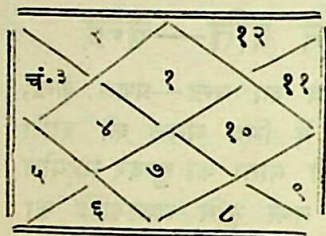
यदि मिथुन का चन्द्र—तीसरे पराक्रम एवं भाई बहिन के स्थान में मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठा है तो भाई बहन का सुख प्राप्त करेगा तथा सुख पूर्वक पराक्रम की वृद्धि पायेगा और माता की शक्ति मिलेगी तथा मन का स्वामी चन्द्रमा होता है इसलिये मनोबल की शक्ति से भूमि मकानादि रहने का सुन्दर स्थान प्राप्त करेगा तथा मन में सदैव प्रसन्न रहने का प्रयत्न करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को, गुरु की धनराशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्म का पालन एवं मनन करेगा और मनोबल की उत्साह शक्ति के द्वारा सफलता और यश प्राप्त करके भाग्यवान् कहलायेगा।

मेष लग्न में ४ चन्द्र

नं० १६
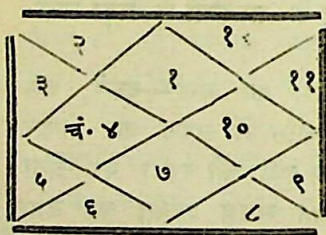
यदि कर्क का चन्द्र—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो माता का महान् सुख प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति का सुन्दर योग मिलेगा तथा घरेलू वातावरण में मन को प्रसन्न करने के महान् साधन मिलेंगे क्योंकि मन का स्वामी चन्द्रमा है, इसलिये मन के द्वारा सदैव मनोरंजन का ढंग बनाता रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को, शनि की मकर राशि में देख रहा है इस लिये पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता का योग अनुभव करेगा तथा राज समाज कारबार के मार्ग में कुछ नीरसता से काम करेगा।

मेष लग्न में ५ चन्द्र

नं० १७

यदि सिंह का चन्द्र-पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर मित्र सूर्य की राशि में बैठा है तो संतान पक्ष में बड़ा सुख अनुभव करेगा तथा मन का स्वामी चन्द्रमा होने के कारण मनोबलकी शक्ति के द्वारा विद्या के पक्ष में बहुत सफलता प्राप्त करेगा तथा माता और मकानादि का सुख योग रहेगा और मन तथा बुद्धि के अन्दर प्रसन्नता और विनोद रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ असन्तोष युक्त मार्ग के द्वारा सफलता शक्ति पायेगा और गम्भीर तथा शान्त बुद्धि योग के द्वारा संतोषी एवं बड़ा चतुर बुद्धिमान् बनेगा।

मेष लग्न में ६ चन्द्र

नं० १८

यदि कन्या का चन्द्र—छठें शत्रु एवं झंझट के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो माता के पक्ष में सुख शक्ति की बड़ी कमी रहेगी और भूमि मकानादि एवं घरेलू वातावरण में अशान्ति का योग प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में कुछ शान्ति के प्रभाव से सुख अनुभव करेगा तथा मन स्थान-पति चन्द्रमा होने के कारण से मनोयोग द्वारा बड़ी-बड़ी दिक्कतों और मुसीबतों को सरलता और नम्रता से पार करेगा—तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, गुरु की मीन राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों में मनोबल के योग से सुख प्राप्त करेगा।

माता, भूमि तथा सुख स्थानपति—चन्द्र

मेष लग्न में ७ चन्द्र

नं० १९
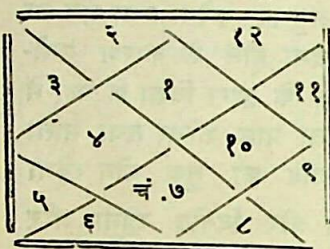
यदि तुला का चन्द्र—सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री के स्थान में बड़ा सुख और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा माता का सहयोग मिलेगा और भूमि मकानादि की सुन्दर उपभोग्यता प्राप्त होगी तथा रोजगार के मार्ग में शानदार सफलता शक्ति मिलेगी, किन्तु चन्द्रमा मन की गति का स्वामी है इसलिये मनोयोग के बल से गृहस्थ के हर सम्बन्धों में सुख शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को, मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये देह में सुन्दरता और सुख प्राप्त रहेगा तथा मनोरंजन का सदैव ध्यान रखेगा और मान सम्मान प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ८ चन्द्र
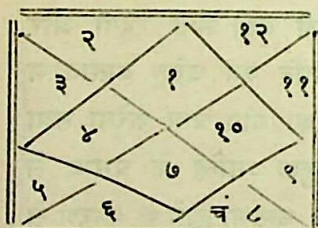
नं० २०

यदि वृश्चिक का चन्द्र—आठवें, मृत्यु स्थान पर मंगल की राशि में नीच का होकर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों को नष्ट करेगा और भूमि मकानादि की हानि रहेगी तथा जन्म भूमि से बिछोह रहेगा और घरेलू सुख शान्ति की भारी कमी रहेगी तथा आयु और जीवन की दिनचर्या में परेशानी एवं कमजोरी रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति की भी कुछ हानि रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को, शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा इसलिये धन की शक्ति का सुख योग बनेगा और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये एवं धन की वृद्धि के लिये मनोबल की विशेष शक्ति का उपयोग करेगा।

मेष लग्न में ९ चन्द्र

नं० २१

यदि धन का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता का सदैव सहयोग प्राप्त करेगा और भूमि भवनादि की उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी तथा भाग्य की महानता से बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और मन की गति का स्वामी चन्द्रमा होने के कारण से मनोयोग से धर्म में विशेष रुचि रखेगा और मन के द्वारा सुख पूर्वक भाग्य की उन्नति के साधन प्राप्त करेगा तथा मगन मन रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई बहन और पराक्रम स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा तथा मनोबल की शक्ति से पराक्रम में सफलता पायेगा।

माता, भूमि, सुख-स्थानपति चन्द्र

मेष लग्न में १० चन्द्र

नं० २२

यदि मकर का चन्द्र—दशम केन्द्र, पिता एवं राजस्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पिता के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता से युक्त सुख शक्ति प्राप्त करेगा और मनोयोग की शक्ति से कारबार में सफलता पायेगा और राजसमाज में मान प्राप्त करेगा तथा सुख पूर्वक उन्नति के साधन प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को, स्वयं अपनी कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी तथा भूमि मकानादि का सुन्दर योग मिलेगा और घरेलू वातावरण में मान युक्त सुख के साधनों की प्राप्ति रहेगी तथा उन्नति करने में मन रहेगा।

मेष लग्न में ११ चन्द्र

नं० २३
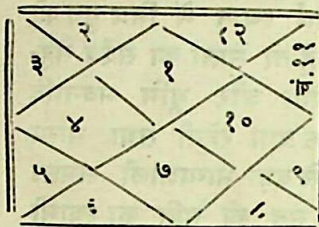
यदि कुम्भ का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा तो आमदनी के मार्ग में मनोयोग की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा, क्योंकि मन की गतिका स्वामी चन्द्रमा है इसलिये मन के द्वारा आमदनी की वृद्धि करने में ही प्रयत्नशील रहेगा, किन्तु सुख पूर्वक आमदनी का योग प्राप्त करने के दृष्टिकोण से कुछ थोड़ा सा असंतोष अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये मनोयोग की शक्ति से विद्या बुद्धि में उन्नति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में सुख के साधन बनेंगे तथा वाणी से कुछ विनोद करेगा।

मेष लग्न में १२ चन्द्र

नं० २४
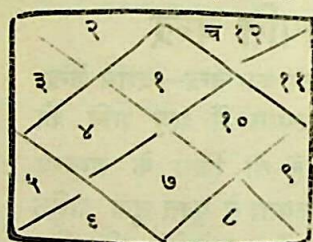
मीन का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है इसलिए खर्चा सुख पूर्वक शानदारी से चलेगा और बाहरी स्थानों में सुन्दर सम्बन्ध पैदा करेगा और माता के सुख सम्बन्धों में कमी का योग प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि की कुछ कमजोरी रहेगी और घरेलू वातावरण से या जन्म भूमि से अलहदगी का योग बनेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को, बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में मनोयोग से शान्ति पूर्वक काम निका-लेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में बड़ी सन्तोष बुद्धि से सफलता प्राप्त करेगा।

देह, आयु, मृत्यु, पुरातत्व—स्थानपति—मंगल

मेष लग्न में १ भौम
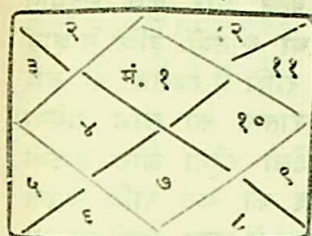
नं० २५

यदि मेष का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो देह में शक्तियुक्त रहेगा तथा आत्मबल उठा हुआ रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण देह में कुछ परेशानी रहेगी तथा हृदय में बड़ा भारी स्वाभिमान रहेगा और चौथी नीच दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को, मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिए माता के सुख सम्बन्धों की हानि प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि एवं मातृ स्थान के सुखों की कमी रहेगी और घरेलू वातावरण में कुछ अशान्ति प्रतीत होगी तथा सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष के कारण से स्त्री स्थान में कुछ कष्ट एवं क्लेश रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और आठवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि रहेगी तथा जीवन की दिन-चर्या में बड़ा प्रभाव और शान गुमान रहेगा और पुरातत्व शक्ति का शान गुमान रहेगा और पुरातत्व शक्ति का शानदार लाभ प्राप्त रहेगा।

मेष लग्न में २ भौम
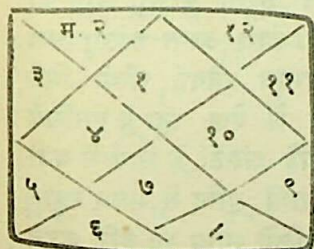
नं० २६

यदि वृषभ का मंगल—दूसरे, धन एवं कुटुम्ब स्थान में बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से धन की संग्रह शक्ति में कमी रहेगी और कुटुम्ब के स्थान में कुछ परेशानी रहेगी तथा देह का स्वामी धन भवन में बैठा है इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये कुछ कठि-नाइयाँ सहन करके इज्जत प्राप्त करेगा

और चौथी मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को, सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये विद्या के मार्ग में कुछ परेशानियों से शक्ति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में कुछ कष्ट और कुछ सहयोग पावेगा और बुद्धि एवं वाणी में तेजी रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये आयु की वृद्धि रहेगी और पुरातत्व का लाभ पायेगा तथा जीवन की दिनचर्या का ढंग अमीरों जैसा रहेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को, गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये अष्टमेश के दोष के कारण धर्म में श्रद्धा रखते हुए भी धर्म का ठीक रूप से पालन नहीं हो सकेगा और इसी कारण से भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ त्रुटियुक्त विकास का साधन पायेगा।

देह, आयु, मृत्यु, पुरातत्व-स्थानपति—मंगल

मेष लग्न में ३ भौम
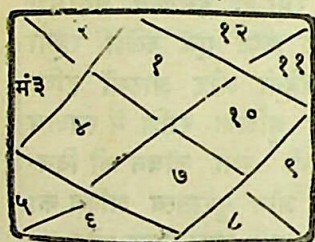
नं० २७

यदि मिथुन का मंगल—तीसरे, भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूरग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिए पराक्रम शक्ति की महान् वृद्धि करेगा तथा बड़ी जबरदस्त हिम्मत वाला बनेगा, किन्तु अष्टमेश होने के दोषकारण से भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा परन्तु आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ी शानदारी और प्रभाव रहेगा, चौथी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को, बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी हिम्मत और बहादुरी से काम करेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को, मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये भाग्य की वृद्धि करने के लिये बड़ा प्रयत्न करेगा और धर्म के पालन में कुछ रुचि रखेगा तथा

आठवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये राज-समाज से बड़ा भारी प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और पिता स्थान की उन्नति करेगा।

मेष लग्न में ४ भौम

नं० २८
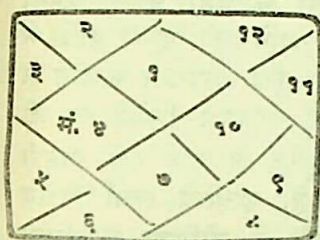
यदि कर्क का मंगल—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान पर नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से माता के सुख सम्बन्धों की हानि प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि एवं घरेलू सुखों की बड़ी भारी कमी रहेगी तथा देह की सुन्दरता में कमजोरी प्राप्त होगी और जीवन की दिनचर्या एवं आयु में कुछ अशान्ति के योग प्राप्त रहेंगे और पुरातत्व सुख लाभ की कमजोरी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री स्थान में कुछ क्लेश युक्त सम्बन्ध रहेगा तथा रोजगार के मार्ग में परेशानी के योग से शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये पिता से कुछ वैमनस्य रखते हुए भी पिता और राज समाज में कुछ उन्नति करेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में उन्नति पाने के लिए भारी प्रयत्न करेगा।

मेष लग्न में ५ भौम

नं० २९

यदि सिंह का मंगल—पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान स्थान पर मित्र सूर्य की राशि में बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण संतान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा तथा विद्या में कुछ कठिनाइयों के योग से शक्ति प्राप्त करेगा और वाणी तथा बुद्धि के अन्दर बड़ी तेजी रखेगा तथा देह में स्वाभि-

मान रखेगा और चौथी दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त रहेगी तथा बुद्धि योग द्वारा पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति का लाभ प्राप्त रहेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ परेशानी के योग से उन्नति प्राप्त करेगा किन्तु लाभ के मार्ग में सफलता मिलने पर भी कुछ असंतोष मानेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष रूप से खूब होता रहेगा तथा बाहरी स्थानों से जीविका सम्बन्धित शक्ति का उत्तम योग प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ६ भौम
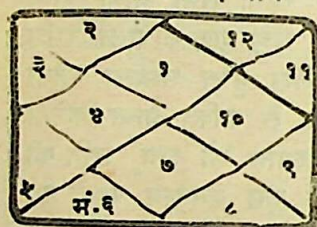
नं० ३०

यदि कन्या का मंगल—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव कायम रखेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी निर्भयता से काम करेगा और परिश्रम के योग से उन्नति और स्वाभिमान की वुद्धि प्राप्त करेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करने के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन करने में इच्छा रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, गुरु की मीन राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा खूब शानदार करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अच्छा सम्बन्ध बनाकर लाभ प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में देह के स्थान को, स्वक्षेत्र रूप से देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा प्रभाव और स्वाभिमान प्राप्त करेगा तथा कठिन परिश्रम के

योग से अपने व्यक्तित्व की बड़ी जागृति और नाम प्राप्त करेगा और अधिक स्वाभिमानी होने के कारण कुछ विरोधियों से टकराते रहना पड़ेगा किन्तु विजयी रहेगा।

मेष लग्न में ७ भौम

नं० ३१
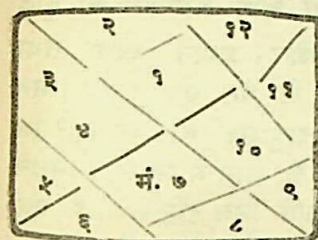
यदि तुला का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट युक्त सम्पर्क के साधन प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा तथा आयु की उत्तम शक्ति पायेगा और पुरातत्वशक्ति का सुन्दर सहयोग पायेगा और जीवन की दिनचर्या में शानदारी रहेगी तथा चौथी उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये पिता से कुछ वैमनस्यता होते हुए भी पिता की उन्नति करेगा और कारबार में बड़ी सफलता पायेगा तथा राज-समाज के मार्ग में बड़ी भारी इज्जत पायेगा और सातवाँ दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा प्रभाव और गौरव प्राप्त करेगा तथा बड़ा भारी स्वाभिमान रखेगा और आठवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने के लिये कठिन प्रयत्न करने पर भी थोड़ी सफलता मिलेगी।

यदि वृश्चिक का मंगल—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो आयु की वृद्धि करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव और गौरव रहेगा किन्तु देह का स्वामी होकर अष्टम स्थान में बैठा है इसलिये देह की सुन्दरता में कमी रहेगी तथा बुढ़ापे के चिन्ह जल्दी प्रतीत होने लगेंगे और दूसरे स्थानों से सम्बन्ध बनेगा और चौथी

मेष लग्न में ८ भौम

नं० ३२

शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को, शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ थोड़ी सी परेशानियों के योग से सफलता शक्ति मिलती रहेगी और आमदनी की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा तथा सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब के मार्ग में सफलता मिलने पर भी कुछ असन्तोष रहेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को, बुध की मिथुन राशि में देख रहा है किन्तु अष्ट-मेश होने के दोष के कारण से भाई बहिन के सुख में कमी रहेगी और पराक्रम की सफलता के लिये सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

मेष लग्न में ९ भौम

नं० ३३
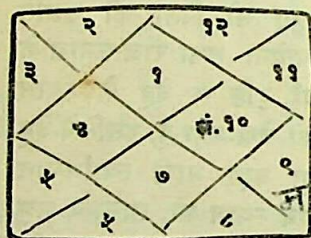
यदि धन का मंगल नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में बैठा है तो देह और जीवन के लिये भाग्य की शक्ति का अच्छा सहयोग पायेगा किन्तु अष्टमेष होने के दोष के कारण से भाग्य के अन्दर कुछ कमी अनुभव करेगा और धर्म के पालन में रुचि होते हुए भी धर्म का ठीक तौर से पालन नहीं हो सकेगा तथा आयु की वृद्धि पायेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, गुरु की मीन—राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को, बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, अष्टमेष होने के दोष के कारण से भाई बहन के सम्बन्ध में उत्तम रुचि होते हुए भी कुछ कमी रहेगी और पराक्रम की विशेष सफलता

प्राप्त करेगा और आठवीं नीच दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को, मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये डबल दोष होने से अर्थात् नीच दृष्टि है और अष्टमेश है, इसलिये माता के सुख में और घरेलू मकानादि के सुख सम्बन्धों में बड़ी कमी रहेगी।

मेष लग्न में १० भौम

नं० ३४

यदि मकर का मंगल—दशम केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पिता से कुछ वैमनस्यता रखते हुए भी पिता के स्थान की उन्नति करेगा और कारबार की वृद्धि रहेगी तथा राज-समाज के अन्दर बड़ा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा आयु की विशेष शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व शक्ति का विशेष अधिकार पायेगा और चौथी दृष्टि से देह के स्थान को, स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये देह में बड़ा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा हृदय में बड़ा अहंकार एवं स्वाभिमान रहेगा तथा कुछ ख्याति प्राप्ति और अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिये बड़ा भारी उद्योग करता रहेगा, किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से उन्नति के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी और सातवीं नीच दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को, मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमि के सुखों में कुछ घरेलू अशान्ति सी रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को, सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये विद्या बुद्धि में बड़ी तेजी और हुकुमत रखेगा तथा संतान पक्ष में कुछ शक्ति मिलेगी और कुछ कष्ट रहेगा।

यदि कुम्भ का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह की राशि में, गरम ग्रह बैठा होने से विशेष शक्तिशाली माना जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा, किन्तु अष्टमेश होने के

कारण, आमदनी का वृद्धि करने के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ रहेगी, किन्तु अधिक मुनाफा खाने के मार्ग में संलग्न रहेगा और आयु का

मेष लग्न में ११ भौम

नं० ३५

लाभ रहेगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध से अच्छा लाभ रहेगा और चौथी दृष्टि से, धन एवं कुटुम्ब के स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये अष्टमेश होने के कारण से धन और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ असंतोष रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को, सूर्य की सिंह राशि मे देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान पक्ष में कुछ शक्ति एवं कुछ त्रुटि रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से अनुसंधान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा तथा बड़ा साहसी बनेगा।

मेष लग्न में १२ भौम

नं० ३६

यदि मीन का मंगल—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और देह में कमजोरी पायेगा तथा बाहरी दूसरे स्थानों में अधिकांश भ्रमण करेगा और देह की सुन्दरता में कमी रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि रहेगी किन्तु बाहरी दूसरे स्थानों में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को, बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष के कारणों से भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ परेशानी सी रहेगी और पराक्रम की सफलता के लिये विशेष परिश्रम करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को, बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ी हिम्मत और प्रभाव

शक्ति से काम करेगा, तथा आठवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष के कारण से स्त्री स्थान में कुछ खास परेशानी करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों से सफलता शक्ति पायेगा तथा कुछ मूत्र विकार पायेगा।

भाई, पराक्रम, शत्रु, झंझट-स्थान पति—बुध

मेष लग्न में १ बुध

नं० ३७
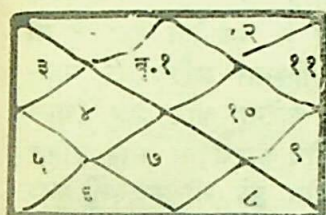
यदि मेष का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो बहुत पराक्रम पुरुषार्थ के योग से काम करेगा, किन्तु षष्ठेश होने के दोष के कारण से देह में कुछ रोग एवं कुछ परेशानी रहेगी और इसी कारण से भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति प्राप्त रहेगी और बुध विवेक शक्ति का दाता है इसलिये देह में विवेक शक्ति की योग्यता के द्वारा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा फत्रु पक्ष में विजयी रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम एवं पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा रोजगार में सफलता पायेगा और कुछ झंझट युक्त मार्ग से स्त्री पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में २ बुध

नं० ३८

यदि वृषभ का बुध—दूसरे-धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा हो तो पुरुषार्थ एवं परिश्रम के योग से धन की वृद्धि के योग प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु स्थानपति होने के दोष के कारण से धन के मार्ग में कभी २ कुछ नुक-सान होता रहेगा तथा धन का

स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है इसलिये भाई बहिन के सम्बन्धों में कमी रहेगी और शत्रु पक्ष के मार्ग में धन की शक्ति के द्वारा प्रभाव रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये कुछ झंझटों से आयु के मार्ग में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ कुछ विवेक शक्ति के द्वारा प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ३ बुध

नं० ३९
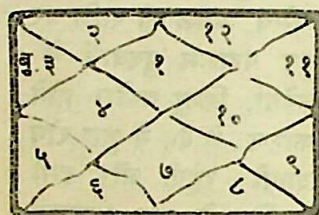
यदि मिथुन का बुध—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर—स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो पराक्रम एवं हिम्मत शक्ति की महानता प्राप्त करेगा और शत्रु स्थान पति होने के दोष कारण से भाई बहिन की शक्ति होते हुये भी अन्दरूनी कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये पराक्रम शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि करने का महान् प्रयास करता रहेगा और धर्म के पालन में कुछ त्रुटि युक्त कार्य सम्पादक करेगा और बुध विवेक का स्वामी है, इसलिये विवेक शक्ति के परिश्रम से सफलता पायेगा।

मेष लग्न में ४ बुध

नं० ४०
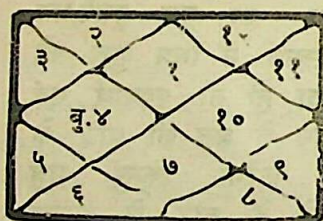
यदि कर्क का बुध—चौथे केन्द्र, एवं भूमि के स्थान पर मित्र चन्द्र की राशि में बैठा है तो शत्रु स्थान-पति होने के दोष के कारण से माता के सुखों में कुछ त्रुटि और झंझट प्राप्त करेगा तथा भूमि और मकानादि की भी कुछ त्रुटि युक्त सुख शक्ति मिलेगी तथा शत्रु पक्ष के मार्ग में कुछ अशान्ति सी रहते हुये भी प्रभाव रहेगा और भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ

थोड़ा सा झंझट युक्त वातावरण के द्वारा सुख प्राप्त रहेगा और अपने स्थान से ही पराक्रम एवं परिश्रम की सफलता पायेगा और सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को, मित्र शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये बुध विवेकी ग्रह है इस कारण विवेक शक्ति के परिश्रम योग से पिता, व्यापार और राज समाज में सफलता पायेगा।

मेष लग्न में ५ बुध

नं० ४१
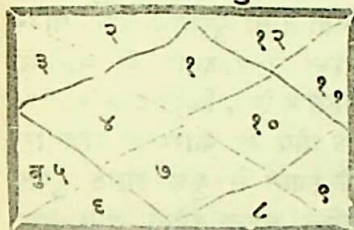
यदि सिंह का बुध—पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान-पति होने के दोष के कारण से विद्या एवं संतान पक्ष की सुख शक्ति प्राप्त करने में कुछ परेशानी रहेगी किन्तु बुध विवेकी ग्रह है तथा विद्या स्थान पर बैठा है, इसलिये परिश्रम शक्ति के योग से विद्या बुद्धि की विशेष सफलता प्राप्त करेगा और वाणी के अन्दर बड़ी चतुराई रहेगी और भाई बहिन के पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त मार्ग से प्रेम सम्बन्ध रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये विवेक शक्ति के योग से आमदनी के मार्ग में वृद्धि प्राप्त करेगा और दिमाग की शक्ति के कारण से शत्रु पक्ष में सफलता और प्रभाव पायेगा।

मेष लग्न में ६ बुध

नं ४२
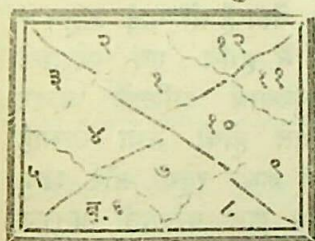
यदि कन्या का बुध—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर उच्च का बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव और विजय प्राप्त करेगा किन्तु बुध विवेकी ग्रह है, इसलिये विवेक शक्ति के पुरुषार्थ से बड़े बड़े प्रभावशाली कर्म करेगा परन्तु शत्रु स्थान-पति होने के दोष के कारण से भाई बहिन के पक्ष में कुछ विरोध रहेगा और पराक्रम शक्ति के अन्दर कुछ थोड़ी सी परतन्त्रता रहेगी और सातवीं नीच दृष्टि से

खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों में कुछ परेशानी प्रतीत होगी तथा रोग व झंझटों की परवाह नहीं करेगा।

मेष लग्न में ७ बुध

नं ४३

यदि तुला का बुध—सातवें केन्द्र, एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ और परिश्रम की शक्ति से रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा, किन्तु शत्रु स्थान-पति होने के दोष के कारण से रोजगार और स्त्री के स्थान में कुछ झंझट युक्त कार्य से शक्ति प्राप्त रहेगी तथा बुध विवेकी ग्रह है, इसलिये विवेक शक्ति के योग से गृहस्थ में संचालन करेगा और भाई बहिन का कुछ सहयोग पावेगा और शत्रु पक्ष के मार्ग में विवेक शक्ति के परिश्रम से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये रोगेश होने के कारण देह में कुछ परेशानी के योग से मान और प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ८ बुध

नं० ४४
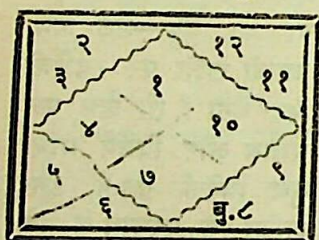
यदि वृश्चिक का बुध—आठवें, मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में हानि एवं परेशानी रहेगी और पुरुषार्थ शक्तिके अन्दर कमजोरी प्रतीत होगी तथा उत्साह और हिम्मतकी कमी रहेगी और शत्रु पक्षके सम्बन्धमें कुछ परेशानी अनुभव होगी तथा शत्रु स्थान-पति होने के दोषके कारणसे जीवनकी दिनचर्या तथा आयु एवं उदर और पुरातत्व के सम्बन्धमें कुछ कमजोरी होने के कारणों से परेशानी अनुभव होगी और सातवीं मित्र दृष्टिसे धन

एवं कुटुम्ब स्थानको शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये बड़ी भारी दौड़ धूप करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ थोड़ी अशान्ति के द्वारा शक्ति पायेगा।

मेष लग्न में ९ बुध

नं० ४५
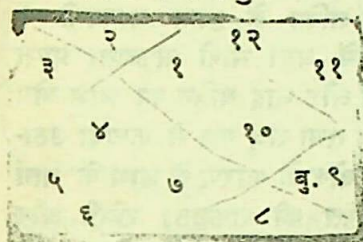
यदि धन का बुध—नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थानमें मित्र गुरुकी राशि पर बैठा है तो परिश्रमके योगसे भाग्यकी वृद्धि करेगा किन्तु शत्रु स्थान पति होनेके दोषके कारणसे भाग्यके पक्षमें कुछ परेशानी अनुभव करेगा और धर्मके पालनमें कुछ त्रुटि किन्तु शत्रु पक्षके सम्बन्धमें भाग्यकी ताकतसे सफलता प्राप्त करेगा और प्रभावकी वृद्धि रहेगी तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से उन्नतिका योग बनेगा और विवेकी बुध सातवीं दृष्टिसे स्वयं अपनी मिथुन राशिमें भाई एवं पराक्रम स्थानको, स्वक्षेत्रमें देख रहा है, इसलिये विवेक शक्तिके योगसे पुरुषार्थ कर्मकी सफलता और भाई बहिनके संयोगका लाभ प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में १० बुध

नं० ४६
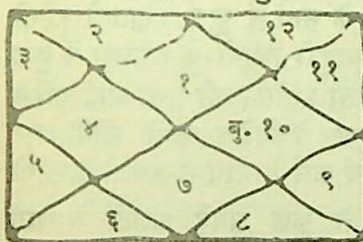
यदि मकरका बुध-दसवें केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शनिकी मकर राशिपर बैठा है तो परिश्रम और पुरुषार्थ शक्तिके द्वारा बहुत उन्नति करेगा और भाई बहिनका कुछ योग पायेगा किन्तु शत्रु स्थान-पति होनेके दोष कारणसे पिता स्थानसें कुछ वैमनस्यता युक्त सम्बन्ध प्राप्त करेगा और बुध स्वभावसे विवेकी ग्रह है, इसलिये विवेक शक्तिके योगसे कारबार, राज-समाजके अन्दर मान प्रतिष्ठा एवं सफलता पायेगा और शत्रु पक्षमें विजयी रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे माता एवं भूमि स्थानको चन्द्रमाकी कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये माता एवं मकान जायदाद के घरेलू वातावरणमें कुछ प्रभाव युक्त शक्ति प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ११ बुध

नं० ४७
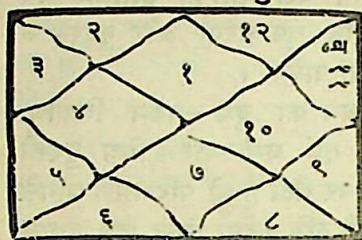
यदि कुम्भ का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो बुध स्वभाव से विवेकी ग्रह है इसलिये परिश्रम की विवेक शक्ति के द्वारा आमदनी के मार्ग में बड़ी भारी सफलता प्राप्त करेगा और भाई बहिन का लाभ योग पावेगा तथा शत्रु पक्ष से फायदा उठावेगा किन्तु शत्रु स्थान पति होने के दोष के कारण से लाभ के मार्ग में कुछ झंझट रहेगा तथा पराक्रम शक्ति की सफलता रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परिश्रम की शक्ति से विद्या में सफलता पायेगा और कुछ झंझटों के योग से संतान पक्ष में शक्ति और सहयोग मिलेगा।

मेष लग्न में १२ बुध

न० ४८
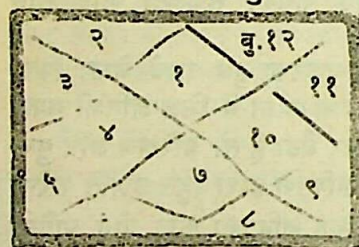
यदि मीन का बुध—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में नीच का होकर गुरु की मीन राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता प्रतीत होगी तथा भाई बहिन के सुख में विशेष कमी रहेगी और पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में कमजोरी रहेगी और शत्रु स्थान-पति होने के दोष से कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग द्वारा भी हानि और परेशानी के कारण प्राप्त होंगे और सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को, स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है और बुध स्वभाव से विवेकी ग्रह है इसलिये विवेक शक्ति की युक्तियों के द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा और गुप्त धैर्य से विजय प्राप्ति का ढंग पायेगा।

———

भाग्य-धर्म-खर्च-बाहरी स्थान-पति-गुरु

मेष लग्न में १ गुरु

नं० ४९
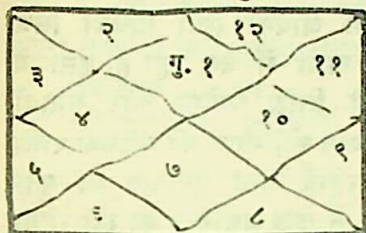
यदि मेष का गुरु—प्रथम केन्द्र, देह के स्थान पर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर बड़ा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा खर्चा खूब ठाट से चलता रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्पर्क से बड़ी भारी इज्जत और उन्नति प्राप्त करेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण से देह के अन्दर कुछ गुप्त कमजोरी भी रहेगी और पाँचवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को, सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी योग्यता प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री स्थान में कुछ परेशानी के योग से शक्ति प्राप्त होगी और रोजगार के मार्ग में कुछ दौड़ धूप करने से सफलता प्राप्त करेगा तथा नवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को, स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य की महान् वृद्धि प्राप्त करेगा तथा धर्म और सज्जनता का यथा साध्य पालन करेगा तथा यश प्राप्त करेगा देव गुरु बृहस्पति के लग्न में बैठने से लौकिक एवं पारलौकिक दोनों मार्गों में कुशलता प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में २ गुरु

नं० ५०

यदि वृषभ का गुरु दूसरे, धन एवं कुटुम्ब स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो बाहरी स्थानों के योग से भाग्य शक्ति के द्वारा धन प्राप्त करेगा और भाग्यवान् धनवान् समझा जायेगा, किन्तु व्ययेश होने के कारण से धन के कोष में कभी २ हानि और कुछ कमजोरी प्राप्त

करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ शक्ति रहेगी तथा खर्चा खूब रहेगा परन्तु खर्च को रोकने की चेष्टा बराबर रहेगी और धर्म के मुकाबले में धन का अधिक महत्व माना जायेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रुपक्ष में दानाई के योग से कार्य की सिद्धि पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को, मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में सक्ति रहेगी तथा पुरातत्व का कुछ लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ अमीरात का ढंग रहेगा नवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राजस्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के पक्ष में कमी और परेशानी रहेगी तथा राजसमाज के मार्ग में दिक्कतें प्राप्त होंगी और कारबार की उन्नति प्राप्त करने के लिये बड़ी कठिनाइयों के मार्ग से लाभ करेगा।

मेष लग्न में ३ गुरु
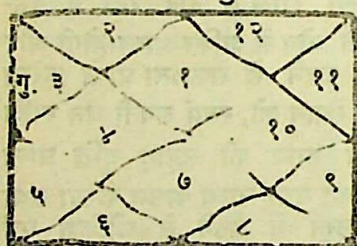
नं० ५१

यदि मिथुन का गुरु–तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो पराक्रम स्थान में शक्ति पायेगा और भाई बहिन का योग प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से भाई एवं पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और खर्च की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध रहेगा और पाँचवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये रोजगार के मार्ग में कुछ कमजोरी के योग से सफलता प्राप्त करेगा और स्त्री स्थान में कुछ त्रुटि युक्त रूप से शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य एव धर्म स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करेगा तथा भाग्यशाली समझा जायगा और धर्म का भी कुछ पालन करेगा तथा नवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये

आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के योग द्वारा सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और व्ययेश होने के दोष के कारण से तथा भाग्येश होने के गुण से भाग्य गृहस्थ, लाभ, रोजगार, पुरुषार्थ, भाई बहिन इत्यादि सभी मार्गों में उतार चढ़ाव सुख-दुख का योग प्राप्त होगा।

मेष लग्न में ४ गुरु
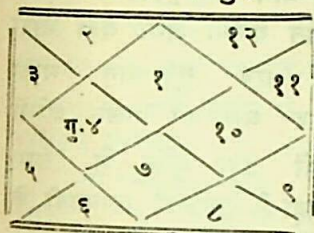
नं० ५२

यदि कर्क का गुरु—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थान पर उच्च का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि में बैठा है तो माता की महान् शक्ति पायेगा और भूमि मकानादि की शोभा और गौरव प्राप्त करेगा तथा अपने स्थान में बड़ा भाग्यशाली समझा जायेगा और धर्म का पालन भी करेगा तथा भाग्य की शक्ति से घरेलू सुखों के महान् साधन प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिए आयु में शक्ति मिलेगी और पुरातत्व सम्बन्ध से लाभ रहेगा तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी और सातवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को, शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये पिता के सुख में कमी रहेगी और राजसमाज के मार्ग में कुछ अरुचि और असंतोष रहेगा तथा कारबार की वृद्धि करने में कुछ रुकावटें पड़ेंगी और नवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक तायदाद में रहेगा तथा बाहरी स्थानों का महान् सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त होगा तथा अपने स्थान से ही आनन्द प्राप्त करने का योग प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि के अन्दर विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म का अच्छा अध्ययन करेगा तथा सन्तान पक्ष में शक्ति और उन्नति पायेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से विद्या एवं सन्तान पक्ष में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा तथा

विद्या की शक्ति के द्वारा खर्च का संचालन उत्तम रूप से करेगा और बाहरी स्थानोंका विशेष ज्ञान प्राप्त करेगा और पाचवीं दृष्ठि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा भाग्य की महान् उन्नति करेगा तथा बड़ा भारी भाग्यवान् एवं बुद्धिमान् माना जायगा और धर्म का पालन करेगा एवं सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ नीरसता रहेगी और नवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को, मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा गौरव तथा सुन्दरता युक्त मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और ईश्वर तथा न्याय के लिए हृदय में विशेष स्थान रखेगा तथा अपने व्यक्तित्व और स्वाभिमान का बड़ा ध्यान रखेगा।

मेष लग्न में ५ गुरु

नं० ५३

मेष लग्न में ६ गुरु

नं० ५४

यदि कन्याका गुरु—छठें शत्रु स्थान एवं झंझट स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्यकी उन्नतिके मार्ग में बड़ी झंझटें रहेंगी और धर्मका पालन ठीक तौरसे नहीं हो सकेगा, किन्तु फिर भी झगड़े झंझटों के मार्ग से ही भाग्य की वृद्धि हो सकेगी तथा शत्रु पक्ष में भाग्य की शक्ति से ही सफलता पायेगा और झगड़े तथा पाप के मार्ग में कुछ न्याय धर्म का भी ध्यान रखेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये पिता के पक्ष में भाग्य की कुछ कमजोरी रहेगी और उन्नति के मार्गों में तथा कारबार में कुछ दिक्कतें रहेंगी और राजसमाज के पक्ष में कुछ कमी रहेगी और

सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिए खर्चा अधिक होने पर भी खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ शक्ति प्राप्त रहेगी और नवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को, सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये धन की वृद्धि करने के लिए बड़ा भारी प्रयत्न करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ मतभेद युक्त सम्बन्ध का योग प्राप्त करेगा तथा भाग्येश के छठें बैठने से कुछ दूसरों का सहारा पाकर भाग्य की जागृति करेगा।

मेष लग्न में ७ गुरु

नं० ५५

यदि तुलाका गुरु—सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्रकी राशि पर बैठा है तो व्ययेश होनेके दोष तथा भाग्येश होनेके गुणके कारणों से स्त्री पक्ष में कुछ त्रुटि लिये हुए शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री के अन्दर कुछ प्रभाव एवं दानाई तथा भाग्यवानी मिलेगी और इसी प्रकार रोजगारके मार्ग में कुछ कमजोरी के साथ २ भाग्यकी शक्ति से उन्नति प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध से सफलता पायेगा तथा गृहस्थमें खर्चा खूब रहेगा और पाँचवीं शत्रु दृष्टिसे लाभ स्थानको शनिकी कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा आमदनीके मार्गमें सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देहके स्थानको, मगलकी मेष राशिमें देख रहा है इसलिये देह में सुन्दरता एवं प्रभाव पायेगा अर्थात् भाग्यवान् समझा जायेगा और हृदय में धर्मका भी ध्यान रखेगा तथा नवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थानको, बुधकी मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिनके पक्षमें सफलता शक्ति और यश पायेगा।

यदि वृश्चिकका गुरु—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होनेके दोषसे तथा मृत्यु

स्थानमें बैठने के दोषके कारणसे भाग्यकी उन्नति के मार्ग में बड़ी भारी दिक्कतें और कमजोरियाँ रहेगी तथा धर्म की हानि रहेगी और सुयश के स्थानपर अपयश मिल सकेगा किन्तु आयु की शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्वका लाभ मिलेगा क्योंकि भाग्येश होकर आयु स्थान पर बैठा है इसलिये जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी रहेगी और पाँचवीं

मेष लग्न में ८ गुरु

नं० ५६
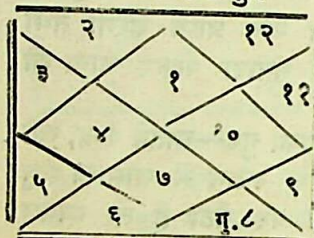
दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थानको स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों से विशेष सम्बन्ध रखेगा और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये कुछ सफलता प्राप्त करेगा और नवीं उच्च दृष्टिसे माता एवं भूमि स्थानको मित्र चन्द्र की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये माता और भूमि के सम्बन्धोंमें विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और घरेलू सुखके साधनोंको विशेष रूप से पायेगा तथा आमोद प्रमोद चाहेगा।

मेष लग्न में ९ गुरु

नं० ५७
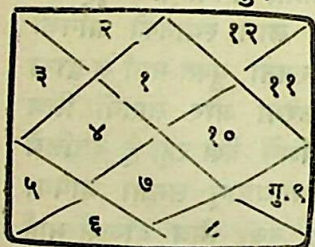
यदि धन का गुरु—नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थानमें स्वयं अपनी राशिपर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्यकी महान् शक्ति प्राप्त करके भाग्यशाली कहलायेगा और धर्मका पालन करेगा, किन्तु व्ययेश होने के दोषके कारणसे भाग्य और धर्म के अन्दर कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा और भाग्यकी शक्तिके द्वारा खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानका सुन्दर सम्बन्ध पायेगा तथा पाचवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थानको, मंगलकी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये देहके अन्दर बड़ी प्रतिभा

और गौरव तथा मान प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थानको, बुधकी मिथुन राशिमें देख रहा है इसलिये पराक्रमसे सफलता पायेगा और भाई बहिनका योग प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होनेके दोषके कारणसे भाई बहिन एवं पुरुषार्थ कर्मके मार्ग में कुछ कमजोरी भी रहेगी और नवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थानको सूर्यकी सिंह राशि में देख रहा है इसलिये विद्या बुद्धिके अन्दर बड़ी उत्तम शक्ति एवं सफलता प्राप्त करेगा और संतान पक्ष से उत्तम योग पायेगा और वाणी के अन्दर धर्म शास्त्रकी चर्चा करेगा तथा सज्जनता और बुद्धिमत्ताका योग प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में १० गुरु
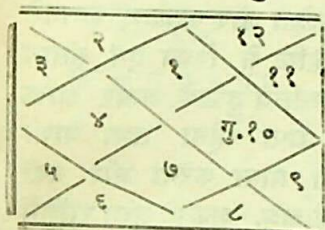
नं० ५८

यदि मकर का गुरु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थानमें नीचका होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होनेके दोष और नीच होनेके दोषके कारणसे पिता स्थानमें हानि पायेगा और राजसमाजके पक्षमें नीरसता रहेगी तथा कारबारकी उन्नतिके मार्गमें बड़ी भारी कठिनाइयाँ रहेंगी तथा धर्म-कर्म का साधारण पालन कर सकेगा और खर्चकी कमजोरी रहेगी तथा बाहरी स्थानोंका सम्बन्ध भी अल्प रूपमें रहेगा और भाग्यकी तरफसे बड़ी दुर्बलता अनुभव करेगा तथा पाँचवीं दृष्टिसे धन एवं कुटुम्ब स्थानको सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब का थोड़ा लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टिसे माता, भूमि, सुख भवनको मित्र चन्द्रकी कर्क राशिमें देख रहा है इसलिए माता भूमि आदिकी शक्तिका सुख पायेगा और अन्दरूनी तरीके से सुख शान्ति प्राप्त करने का महान् साधन पायेगा और नवीं मित्र दृष्टिसे शत्रु एवं झंझट स्थानको बुधकी कन्या राशिमें देख रहा है इसलिये शत्रुपक्षमें भाग्यकी शक्तिसे सफलता प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में भाग्य और भगवान् की (धर्म) शक्तिसे कार्य सफल बनाने का प्रयत्न करेगा।

मेष लग्नमें ११ गुरु

नं० ५९

यदि कुम्भका गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थानमें शत्रु शनिकी राशि पर बैठा है तो भाग्यकी शक्तिसे धनका लाभ प्राप्त करेगा, किन्तु व्ययेश होनेके दोषके कारणसे आमदनीके पक्षमें कुछ कमी अनुभव होगी तथा खर्चा भी अच्छे ढंग से चलेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे लाभ रहेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा—और धर्मका कुछ पालन करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थानको बुधकी मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिनके पक्ष में कुछ त्रुटियुक्त शक्ति मिलेगी और पराक्रम स्थानसे कुछ सफलता प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थानको सूर्यको सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये बुद्धिके अन्दर शक्ति प्राप्त रहेगी और संतान पक्षमें सहयोग प्राप्त रहेगा तथा वाणी की योग्यतासे प्रभाव और सज्जनताका योग प्राप्त करेगा और नवीं दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगार के स्थानको सामान्य शत्रु, शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है इसलिये कुछ कठिनाई के योगसे रोजगारमें सफलता पायेगा और स्त्री एवं गृहस्थके मार्गमें कुछ नीरसता से शक्ति प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में १२ गुरु

नं० ६०

यदि मीन का गुरु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थानमें स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक तायदादमें रहेगा और भाग्यकी शक्तिसे बाहरी दूसरे स्थानों से सफलता प्राप्त रहेगी किन्तु व्ययेश होने के दोषके कारणसे भाग्यकी उन्नतिका योग बिलम्बसे प्राप्त होगा तथा धर्मके यथार्थ पालनमें कुछ कमजोरी रहेगी और सुयश तथा बरक्कतकी कमी रहेगी और पाँचवीं उच्च दृष्टिसे माता एवं भूमि स्थानको मित्र चन्द्रकी कर्क राशिमें देख रहा है इसलिए खर्चकी विशेष शक्तिके

द्वारा घरेलू वातावरणमें एवं भूमि आदिके सम्बन्धमें चमत्कार रखेगा और माताका सुख पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे शत्रु स्थानको बुधकी कन्या राशिमें देख रहा है इसलिये शत्रु पक्षके मार्ग में भाग्यकी शक्तिसे दानाईके द्वारा कार्य सम्पादन करेगा तथा झगड़े झंझटोंके पक्षमें प्रभाव प्राप्त करेगा और नवीं मित्र दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थानको मंगलकी वृश्चिक राशिमें देख रहा है इसलिये आयुमें शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व सम्बन्धमें सफलता पायेगा किन्तु व्ययेश होनेके दोषके कारणसे उपरोक्त मार्गोंके लाभ में कुछ त्रुटि रहेगी।

धन, कुटुम्ब, स्त्री रोजगार-स्थानपति-शुक्र

मेष लग्न में १ शुक्र
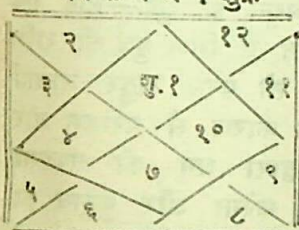
नं० ६१

यदि मेष का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान पर परम चतुर आचार्य के बैठने के कारण से देह में बड़ी भारी सुन्दरता प्राप्त करेगा एवं बड़ा भारी मान प्राप्त करेगा और बड़ी भारी चतुराई के योग से धन और कुटुम्ब की शक्ति का आनन्द वैभव प्राप्त करेगा किन्तु धनका स्वामी कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये देह में कुछ घिराव सा अथवा कुछ परेशानी सी भी रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी तुला राशि में स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार की महान् शक्ति को अपनी आदर्श योग्यता से उत्तम रूप में प्राप्त करेगा, किन्तु धनेश होने के कारण से स्त्री विवाह एवं रोजगार के संचालन में कुछ दिक्कतें प्राप्त रहेंगी।

यदि वृषभ का शुक्र—धन भवन एवं कुटुम्ब स्थानमें स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धनकी संग्रह शक्तिका उत्तम योग प्राप्त

करेगा तथा कुटुम्ब का सुन्दर सौभाग्य प्राप्त करेगा, किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है इसलिये स्त्री के सुख

मेष लग्न में २ शुक्र

नं० ६२
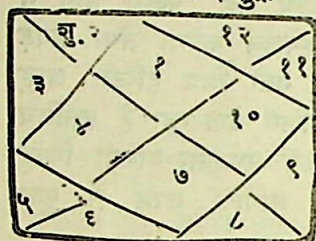
सम्बन्धों में दिक्कतें रहेंगी और रोजगार के कार्य संचालन में सुचारु रूप की कमी रहेगी, किन्तु आचार्य चतुर शुक्र की योग्यता के कारण से रोजगार द्वारा धन की वृद्धि खूब प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थान को, सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिए आयु एवं जीवन की दिनचर्या में रौनक और अमीरात का ढंग रहेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में चतुराई से सफलता और लाभ पावेगा।

मेष लग्न में ३ शुक्र

नं० ६३

यदि मिथुन का शुक्र—भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो परम चतुर आचार्य शुक्र ग्रह के कारण से पराक्रम और चतुराई के द्वारा धन की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का सुन्दर योग पायेगा तथा रोजगार के मार्ग से धन प्राप्त करेगा और स्त्री का उत्तम सहयोग पायेगा किन्तु धन स्थान पति ग्रह कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये भाई बहिन और स्त्री के सुख सम्बन्ध में कुछ अड़चनें या कमी रहेगी और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को, सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये चतुराई के विशेष योग से भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का कुछ पालन करेगा और पुरुषार्थ कर्म के द्वारा भाग्यवान् समझा जायगा।

यदि कर्क का शुक्र—चौथे केन्द्र, माता और भूमि स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो धन और कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा किन्तु धन स्थान का स्वामी ग्रह कुछ बन्धन का

सा कार्य भी करता है इसलिये माता के सुख में कुछ कमी रहेगी किन्तु भूमि मकानादि की शक्ति पायेगा और कुछ थोड़ी सी त्रुटि के साथ स्त्रीका सुख प्राप्त रहेगा और परम चतुर आचार्य शुक्र की कृपा से रोजगार के मार्ग में बड़ी चतुराई के द्वारा धन पैदा करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये बड़ी चतुराई के कर्म योग से राजसमाज में इज्जत और उन्नति पायेगा तथा पिता से धन लाभ करेगा और कारबार के मार्ग में सफलता पायेगा।
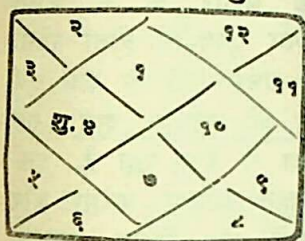
मेष लग्न में ४ शुक्र

नं० ६४

मेष लग्न में ५ शुक्र

नं० ६५
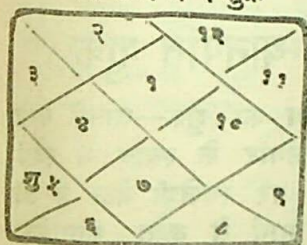
यदि सिंह का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो परम चतुर आचार्य शुक्र के कारण से विद्या स्थानमें बड़ी शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा तथा बुद्धि योगके द्वारा रोजगार की शक्ति से धन प्राप्त करेगा, किन्तु धन स्थान का स्वामी कुछ बन्धन का सा कार्य करता है इसलिये संतान पक्ष में कुछ मतभेद के सहित शक्ति मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को, शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये बुद्धि की योग्यता से धन की आमदनी का सुन्दर योग प्राप्त करेगा तथा बुद्धि और वाणी तथा विचारों के द्वारा धन की बुद्धि और भोग प्राप्ति का विशेष ध्यान रखेगा।

यदि कन्या शुक्र—छठें शत्रु स्थान में नीच का होकर-मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन की संचित शक्ति का अभाव रहेगा और स्त्री की तरफ से कुछ परेशानी रहेगी तथा धन कुदुम्ब सुख की

तरफ से कमजोरी रहेगी और रोजगार के मार्ग में कुछ झंझट एवं परतंत्रता का योग रहेगा और शत्रु पक्ष में कुछ बेकार के से कार्यों में भी धन का दुरुपयोग होता रहेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष सम्बन्ध शक्ति पायेगा तथा परम चतुर आचार्य शुक्र ग्रह के योग से बड़ी-बड़ी कठिनाइयों द्वारा युक्ति बल से कार्य सिद्ध करेगा।

मेष लग्न में ६ शुक्र

नं० ६६

धन, कुटुम्ब स्त्री रोजगार-स्थानपति शुक्र

मेष लग्न में ७ शुक्र

नं० ६७

यदि तुला का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो रोजगार के मार्ग से बहुत धन पैदा करेगा तथा स्त्री पक्ष में बड़ी सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का बड़ा आनन्द पायेगा तथा परम चतुर दैत्य-आचार्य शुक्रके बलवान् होनेसे रोजगार और गृहस्थ के पक्ष में बड़ी भारी चतुराई के योग से विशेष सफलता शक्ति पायेगा किन्तु धन स्थान का स्वामी कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है इसलिये रोजगार व स्त्री पक्ष में कुछ दिक्कत रहेगी और सातवीं दृष्टिसे देहके स्थानको सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशिमें देख रहा है इसलिये देह में सुन्दरता और मान तथा बड़ी इज्जत प्राप्त करेगा तथा बड़ा योग्य कार्य कुशल समझा जायेगा।

मेष लग्न में ८ शुक्र

नं० ६८
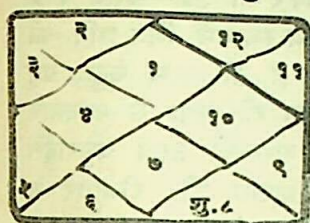
यदि वृश्चिक का शुक्र—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में बड़ा कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयों के द्वारा कार्य सम्पादन करेगा तथा धन की संचित शक्ति का अभाव या कमी अनुभव करेगा और कुटुम्बके सुख में कमी रहेगी किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र के योग से पुरातत्व शक्ति का लाभ पायेगा और आयु में शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या का ढंग शानदार रहेगा और सातवीं दृष्टि में धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन प्रयत्न सदैव करता रहेगा और कठिन परिश्रम एवं चतुराई के योग से इज्जत प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ९ शुक्र

नं० ६९
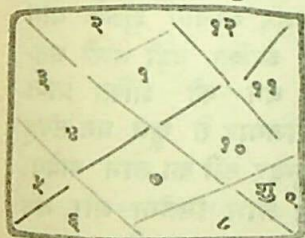
यदि धन का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि पर बैठा है तो बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा और परम चतुर आचार्य शुक्र की कृपासे उत्तम-मार्गके रोजगार द्वारा विशेष चतुराई के योग से धन और भाग्य की उन्नति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ और स्त्रीका सुन्दर योग पाकर यश कमावेगा तथा धन और कुटुम्ब का पालन धार्मिक रूप से करेगा तथा भाग्य और धर्म की शक्ति से उन्नति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिन का कुछ अच्छा योग पायेगा और पुरुषार्थ की सफलता शक्ति चतुराई के योग से प्राप्त करेगा और मान पायेगा।

मेष लग्न में १० शुक्र

नं० ७०
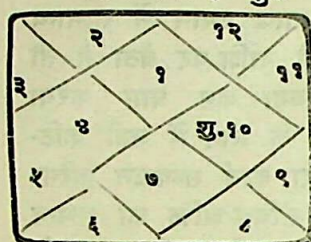
यदि मकर का शुक्र—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थानमें मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो परम चतुर ग्रह आचार्य शुक्र देव की कृपा से कारबार राज समाजके सम्बन्धों द्वारा चतुराईसे खूब धन पैदा करेगा और रोजगार में बड़ी तरक्की करेगा तथा स्वाभिमानिनी सुन्दर स्त्री पायेगा और मान प्रतिष्ठा एवं वैभव तथा कुटुम्बका सुन्दर आनन्द पायेगा और सातवीं दृष्टि से माता भूमि एवं सुख स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिए घरेलू सुखके साधनों में शक्ति प्राप्त करेगा तथा माता और भूमि की शक्ति का अनुकूल सहयोग पायेगा तथा हर मार्ग में चतुराई से उन्नति करेगा।

मेष लग्न में ११ शुक्र

नं० ७१
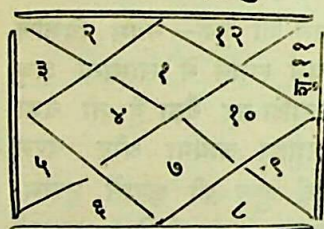
यदि कुम्भ का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो परम चतुर आचार्य शुक्रके योग कारणसे यह व्यक्ति बड़ी भारी चतुराईके द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार से खूब धन संग्रह करेगा तथा सुन्दर स्त्री का लाभ पायेगा तथा कुटुम्बसे लाभ मिलेगा और धन की सुन्दर आमदनी योग के कारणसे बड़ा धनवान् व इज्जतदार माना जायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टिसे विद्या एवं संतान स्थानको सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है इसलिये बुद्धि विद्याके मार्ग में बड़ी चतुराईके द्वारा सफलता पायेगा और संतान पक्षमें सुन्दर योग पायेगा तथा वाणीके द्वारा धन की वृद्धिके पक्षमें स्वार्थ युक्त बातें करेगा तथा गृहस्थ का उत्तम योग पायेगा।

यदि मीन का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत

अधिक करेगा तथा परम चतुर आचार्य शुक्रके योगसे बाहरी स्थानों में बड़ी भारी चतुराईके द्वारा धन और रोजगार की शक्ति प्राप्त

मेष लग्न में १२ शुक्र

नं० ७२

करेगा किन्तु व्ययस्थानके दोषके कारण अपने निजी स्थानमें हानि प्राप्त करेगा तथा स्त्री पक्षके मार्गमें कुछ कमजोर या कमी रहेगी तथा धर्म का संग्रह और कुटुम्ब का सुख पूर्ण प्राप्त नहीं कर सकेगा तथा सातवीं नीच दृष्टिसे शत्रु स्थान को मित्र बुध की कन्या राशिमें देख रहा है इसलिये शत्रु पक्षमें कुछ कमजोरी और छिपाव तथा भेदकी शक्तिसे कम निकालेगा।

पिता-राज्य-लाभ-स्थान पति—शनि

मेष लग्न में १ शनि

नं० ७३

यदि मेष का शनि—प्रथम केन्द्र, देहके स्थानमें शत्रु मंगल की राशिपर नीचका होकर बैठा है तो देहकी सुन्दरतामें कमी रहेगी और आमदनीके मार्ग में कमजोरी और कुछ परतन्त्रता का योग प्राप्त करेगा तथा अपने मान प्रतिष्ठा के अन्दर कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और राज समाजके पक्षमें कुछ परेशानी या कमी रहेगी और तिसरी मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थानको बुधकी मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिनका कुछ योग पायेगा और पराक्रम स्थानमें सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा बड़ी हिम्मत शक्ति से काम करेगा और सातवीं उच्च दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगारके स्थानको, मित्र शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है इसलिये स्त्री स्थानमें विशेष शक्ति पायेगा तथा रोजगारके मार्गमें बड़ी उन्नति करेगा तथा गृहस्थके अन्दर बड़ी भारी आसक्ति

रखेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में पिता एवं राज्य स्थानको, स्वक्षेत्रमें देख रहा है किन्तु स्वयं नीच होकर बैठा है इसलिये पिता का अल्प सुख पायेगा और कारबार मान प्रतिष्ठा आदि के सम्बन्धों में थोड़ी सफलता प्राप्त कर सकेगा।

मेष लग्न में २ शनि

नं० ७४

यदि वृषभ का शनि—दूसरे, धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो कारबार राज समाज के सम्बन्धों से धन की प्राप्ति करेगा और पिता स्थान की शक्ति को पायेगा तथा धन और कुटुम्बकी वृद्धि करने में विशेष सफलता पायेगा तथा मान प्रतिष्ठा इज्जत आबरू की शक्ति प्राप्त करेगा, किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है इसलिए पिता के सुख सहयोग की कुछ कमी रहेगी और तीसरी शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थानको चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये माता और भूमि के सुख सम्बन्धों में कुछ परेशानी के योग से कार्य सम्पादन करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे जीवन आयु और पुरातत्व स्थान को, मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ अशान्ति रहेगी और पुरातत्वका लाभ प्राप्त होगा तथा दसवीं दृष्टिसे लाभ स्थानको स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्रको देख रहा है इसलिये धनकी आमदनीके मार्ग में विशेष शक्ति पायेगा धन जनकी वृद्धि करनेमें संलग्न रहकर सफलता पायेगा और अमीरात के ढङ्गसे जीवन व्यतीत करेगा।

यदि मिथुन का शनि—तीसरे, भाई एवं पराक्रम स्थानमें मित्र बुधकी राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फलका दाता होता है, इसलिये पराक्रम शक्तिके द्वारा विशेष सफलता और लाभ प्राप्त करेगा और भाई बहिनकी शक्ति प्राप्त करेगा तथा पिता स्थानकी शक्तिका सहयोग पायेगा और राज समाजके मार्गमें बहुत उन्नति प्राप्त करेगा तथा कारबार में वृद्धि पायेगा और तीसरी

शत्रु दृष्टिसे विद्या एवं संतान स्थानको सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है इसलिये विद्याके पक्षमें कुछ नीरसता के मार्गसे शक्ति पायेगा तथा संतान पक्षमें कुछ वैमनस्यता के साथ लाभ प्राप्त करेगा और वाणीके अन्दर तेजी और हुकूमत रखेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थानको गुरुकी धन राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करने के मार्ग में थोड़ी सी कठिनाईके योगसे सफलता पायेगा और धर्मके पालनका ध्यान रखेगा तथा दशवीं शत्रु दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थानको गुरुकी मीन राशिमें देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत करेगा और खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा।
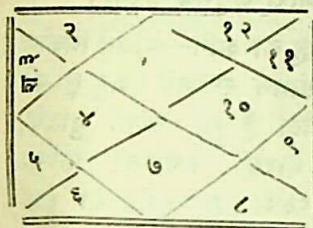
मेष लग्न में ३ शनि

नं० ७५

मेष लग्न में ४ शनि

नं० ७६
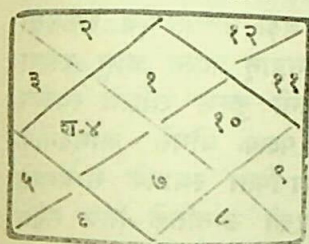
यदि कर्कका शनि—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमिके स्थानमें शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो माताके सुख सम्बन्धोंमें कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादिके सम्बन्ध में शक्ति प्राप्त रहेगी और घर बैठे आमदनीका योग प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुखके साधनोंकी वृद्धि करनेका विशेष ध्यान रखेगा और तीसरी मित्र दृष्टिसे शत्रु स्थानको बुधकी कन्या राशिमें देख रहा है इसलिये शत्रु पक्षमें प्रभाव और लाभ प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटोंके मार्गमें फायदेमन्द रहेगा तथा सातवीं दृष्टिसे पिता एवं राज्य स्थानको स्वयं अपनी मकर राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये पिता एवं कारबारकी वृद्धि करेगा तथा राज समाजमें मान प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त करेगा और अपनी इज्जत आबरूका बड़ा ख्याल रखेगा तथा दसवीं नीच दृष्टि से देहके स्थान को शत्रु मंगलकी मेष राशिमें देख रहा है इसलिये देह में सुन्दरताकी

कमी और परेशानी रहेगी तथा अपने कारबारकी वृद्धि करनेके सम्बन्धित मार्गके द्वारा देहमें कुछ चिन्ता फिकर के योगसे कार्य संचालन करता रहेगा तथा हृदयमें कुछ कमजोरी अनुभव करेगा।

मेष लग्न में ५ शनि
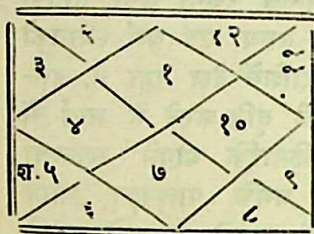
नं० ७७

यदि सिंह का शनि—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थानमें शत्रु सूर्यकी राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धिके योगसे कारबारकी सफलता पायेगा तथा संतान पक्षमें कुछ मतभेद या कुछ नीरसताके योगसे शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणी और बुद्धिमें बड़ी तेजी रहेगी और राज-समाजसे कुछ लाभ प्राप्त करेगा तथा तीसरी उच्च दृष्टि से स्त्री एवं रोजगारके स्थानको मित्र शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है इसलिये स्त्री स्थानमें विशेष महत्व प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्षमें बड़ी उन्नति एवं सफलता शक्ति मिलेगी तथा गृहस्थकी वृद्धि करनेका महान् प्रयत्न चालू रखेगा और सातवीं दृष्टिसे लाभ स्थानको स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये बुद्धि और संतान पक्षके योगसे आमदनीके मार्गमें बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा पिता स्थानके सम्बन्धसे भी कुछ लाभ प्राप्त करेगा और हर प्रकारकी उन्नतिके लिये सदैव विचारमग्न रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थानको शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है इसलिए धनकी शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्बका सुन्दर योग पायेगा और इज्जतदारी एवं आबरूसे जीवन चलायेगा।

यदि कन्या का शनि—छठें शत्रु स्थानमें मित्र बुधकी राशि पर बैठा है तो पिता स्थानसे कुछ वैमनस्यता रहेगी और राज-समाज के मार्गमें कुछ परिश्रम के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा तथा छठें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फलका दाता हो जाता है इसलिये आमदनी के मार्गमें किसी भी प्रकार बड़ा भारी प्रभाव और परिश्रमका योग

प्राप्त करेगा और शत्रु पक्षमें विजयी रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थानको मंगलकी वृश्चिक राशिमें देख रहा है

मेष लग्न में ६ शनि

नं० ७८

इसलिए जीवनमें और दिनचर्या में कुछ कठिनाई प्रतीत रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति के मार्ग में कुछ नीरसताई से फायदा पायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थानको गुरुकी मीन राशिमें देख रहा है इसलिये खर्चके मार्गमें कुछ अधिकता हाने के कारणसे परेशानी अनुभव होगी और बाहरी स्थानोंके सम्बन्धमें कुछ नीरसता रहेगी तथा दशवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थानको बुधकी मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये भाई बहिनका उत्तम सम्बन्ध रखेगा और पराक्रम स्थान से बड़ी सफलता शक्ति मिलेगी तथा बड़ी हिम्मत और प्रभाव शक्ति से कार्य करेगा।

मेष लग्न में ७ शनि

नं० ७९

यदि तुला का शनि—सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगारके स्थानमें उच्चका होकर मित्र शुक्रकी राशि पर बैठा है तो रोजगारके मार्ग में बड़ी भारी सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा तथा स्त्री स्थानमें विशेष महत्वदायक शक्ति पायेगा और पिता स्थानकी शक्तिका बड़ा भारी सहयोग मिलेगा तथा राज-समाजसे फायदा उठायेगा और मान प्रतिष्ठा युक्त मार्गसे आमदनी खूब प्राप्त करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थानको गुरुकी धन राशिमें देख रहा है इसलिये भाग्यके मार्गमें कुछ कठिनाइयों के योग से उन्नति प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन कुछ अरुचि के साथ करेगा तथा यशकी कमी रहेगी और सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये देह की सुन्दरता में

कुछ कमी रहेगी और हृदय में कुछ अशान्ति रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये माता और भूमि के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटियुक्त शक्ति प्राप्त रहेगा और घरेलू सुखों में कुछ नीरसता युक्त सम्बन्ध रहेगा।

मेष लग्न में ८ शनि
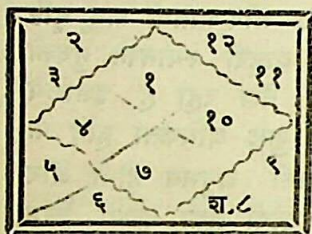
नं० ८०

यदि वृश्चिक का शनि—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में अपने क्षेत्र से कमजोरी पाकर दूसरे स्थान के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का फायदा उठायेगा तथा अष्टम शनि के बैठने से आयु में उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है किन्तु मृत्यु स्थान में बैठने के दोष के कारण से पिता स्थान की शक्ति का अल्प लाभ पायेगा और राज समाज में थोड़ा मान प्राप्त करेगा तथा उन्नति पाने के लिये कठिन प्रयत्न करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने के मार्ग में विशेष परिश्रम करके सफलता पायेगा और दशवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये विद्या की सफलता में कुछ त्रुटि रहेगी और सन्तान पक्ष में कुछ नीरसतायुक्त मार्ग से शक्ति पायेगा तथा बुद्धि में क्रोध और वाणी में तेजी रहेगी और अपने मान सम्मान का गुप्तरूप से बड़ा ख्याल रखेगा।

यदि धन का शनि—नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो गुरु के स्थान पर बैठकर शनि कुछ विशेष फल देता है इसलिये भाग्य की विशेष उन्नति करेगा किन्तु प्रथम रूप में भाग्य की कुछ कमजोरी दिखायेगा और धर्म का कुछ आडम्बर रूप से पालन करेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का लाभ पायेगा और

राजसमाज के मार्ग में भी सफलता पायेगा और तीसरी दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये

मेष लग्न में ९ शनि

नं० ८१
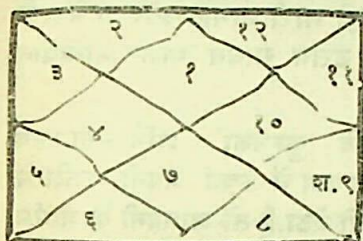
आमदनी के मार्ग में भाग्य की शक्ति से बहुत सफलता पायेगा और किसी उत्तम कर्म से लाभोन्नति करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को बुध कि मिथुन राशि में देख रहा है इसलिए भाई बहन से लाभ युक्त रहेगा और पुरुषार्थ कर्म की सफलता का लाभ प्राप्त, करेगा तथा दसवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु स्थान में अपनी इज्जतदारी की शक्ति से बड़ा भारी प्रभाव पायेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ युक्त रहेगा तथा रोग, दोष, पाप के ऊपर सदैव अपना अधिकार रखकर सावधान और सचेष्ट रहेगा तथा मान प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में १० शनि
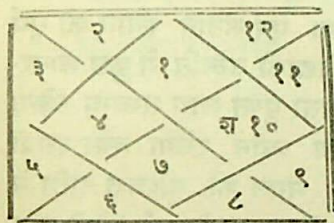
नं० ८२

यदि मकरका शनि—दसम केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो पिता स्थान में महान् शक्ति पायेगा और कारबार में बड़ी भारी सफलता और लाभोन्नति करेगा तथा राज समाजके मार्ग में बड़ी भारी इज्जत एवं मान प्रतिष्ठा और लाभ प्राप्त करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थानको गुरु की मीन राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा बहुत अधिक रहेगा अतः खर्च के मार्ग में एवं बाहरी सम्बन्धों में कुछ अरुचिकर रूप में कार्य संचालन रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को देख रहा है इसलिये माता के सुख में नीरसता रहेगी और भूमि मकानादि एवं घरेलू सुख

सम्बन्धों से कुछ त्रुटियुक्त वातावरण के द्वारा साधन शक्ति प्राप्त रहेगी और दसवीं उच्च दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थानको मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में विशेष महत्व और शोभा पायेगा तथा रोजगार के पक्ष में बड़ी भारी उन्नति और लाभ प्राप्त करेगा और गृहस्थ के भोग विलास का उत्तम साधन पाकर भाग्यवान् कहलायेगा।

मेष लग्न में ११ शनि
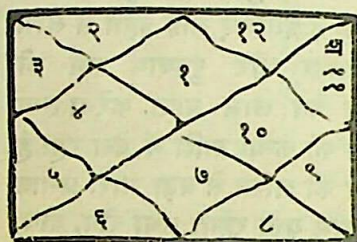
नं० ८३

यदि कुम्भका शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्गमें बड़ी भारी उन्नति एवं सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और पिता स्थानका अच्छा लाभ पायेगा तथा राज-समाजके संबंध से धन लाभ के उत्तम साधन पायेगा तथा कारबारमें बड़ी उन्नति करेगा एवं आमदनीके मार्गसे बड़ी भारी इज्जत और नाम प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा तीसरी नीच दृष्टि से देहके स्थानको, शत्रु मंगलकी मेष राशि में देख रहा है इसलिये देहकी सुन्दरता में तथा स्वास्थ्य एवं शान्ति में कमी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये विद्याकी उन्नति में कुछ लापर-वाही करेगा और सन्तान पक्ष से कुछ नीरसता युक्त लाभ सम्बन्ध रखेगा तथा बोल चाल के अन्दर स्वार्थ का विशेष ध्यान रखेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को, मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी रहेगी तथा पुरातत्वका कुछ लाभ पायेगा।

यदि मीनका शनि—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष सम्बन्ध स्थापित करेगा तथा पिता स्थान में हानि प्राप्त करेगा और राज-समाज

कारबारके पक्षमें नुकसान एवं परेशानी के कारण पायेगा तथा दूसरे स्थानोंके सम्बन्धसे आमदनीका योग पायेगा और तीसरी मित्र दृष्टिसे धन एवं कुटुम्ब स्थानको शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है इसलिये धन और कुटुम्बकी वृद्धि करनेके लिये बड़ा भारी प्रयत्न करेगा तथा कुछ सफलता पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे शत्रु स्थानको बुधकी कन्या राशिमें देख रहा है इसलिये शत्रु स्थानमें कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और कुछ झगड़े झंझटोंके मार्ग से सफलता पायेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थानको गुरुकी धन राशिमें देख रहा है इसलिये भाग्यके पक्षमें भारी प्रयत्न करनेपर शक्ति प्राप्त करेगा और धर्मका कुछ पालन करेगा तथा देर अबेर के योगसे एवं परेशानियोंके बाद अपनी इज्जत आबरू बना पायेगा।
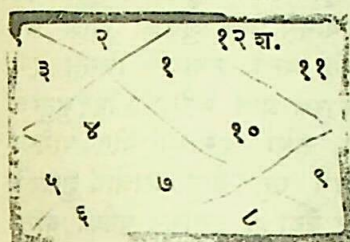
मेष लग्नमें १२ शनि

नं० ८४

कष्ट-चिन्ता-गुप्त युक्ति के अधिपति राहु

मेष लग्न में १ राहु
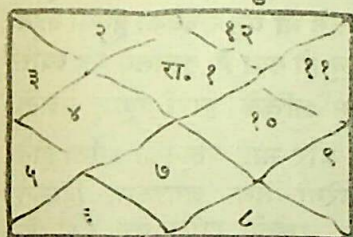
नं० ८५

यदि मेष का राहु—प्रथम केन्द्र देहके स्थानमें शत्रु मंगलकी राशि पर बैठा है तो देहकी सुन्दरतामें कमी रहेगी और देहके स्वास्थ्यमें कुछ परेशानी रहेगी तथा हृदयमें चिन्ताके कारण बनते रहेंगे और अपने व्यक्तित्वकी उन्नति पानेके लिये बड़ी भारी गुप्त युक्तिसे काम करेगा तथा गरम ग्रह मंगलकी राशि पर बैठा है, इसलिये अपने आत्म सम्मान तथा देह सम्मानको प्राप्त करनेके सम्बन्धमें अपने युक्ति बलको बड़े हठधर्मीके रूपमें इस्तेमाल करेगा और झूठ तथा छिपाव शक्तिसे भी फायदा

उठावेगा और बड़ी-बड़ी कठिन परिस्थितियोंसे गुजरता हुआ गुप्त हिम्मत एवं गुप्त बुद्धि योगके बलसे आगे बढ़ता जायेगा।

मेष लग्न में २ राहु

नं० ८६
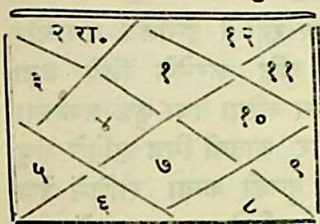
यदि वृषभ का राहु—सारे धन एवं कुटुम्ब स्थानमें मित्र शुक्रकी राशि पर बैठा है तो धनके स्थानमें चिन्ता एवं कष्टके कारण प्राप्त करेगा और कुटुम्ब में क्लेश तथा कमीका योग पायेगा किन्तु परम चतुर दैत्य आचार्य शुक्रकी राशि पर बैठा है, इसलिये धनकी वृद्धि करनेके सम्बन्धमें महान् गहरी गुप्त युक्तियोंके बलसे धनकी उन्नति करनेका साधन प्राप्त करेगा और अनेकों बार धन जनकी हानियाँ प्राप्त करने पर भी गुप्त युक्तिबलके योगसे अपने होने वाले नुकसान क्षेत्रकी पूर्ति भी करता रहेगा तथा प्रकट रूपमें धनवान् इज्जतदार माना जायगा और विशेष धन प्राप्त करनेके लिये विशेष साधन शक्तिका उपयोग करेगा।

मेष लग्न में ३ राहु

नं० ८७
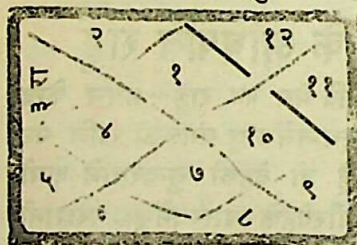
यदि मिथुन का राहु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थानमें उच्चका होकर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्ति शाली फलका दाता होता है। इसमें भी यह उच्चका होनेसे बहुत बलवान् हो गया है इसलिये यह व्यक्ति पराक्रम शक्तिके द्वारा महान् उन्नति करेगा और भाई बहिनकी शक्ति होने पर भी भाई बहिनकी परवाह नहीं करेगा तथा जबरदस्त हिम्मत शक्तिके द्वारा काम करेगा विवेकी ग्रह बुधकी राशि पर बैठा है, इसलिये गुप्त विवेककी महान् युक्ति बलसे सफलता प्राप्त करता रहेगा किन्तु फिर भी राहुके स्वाभाविक गुणोंके कारण कभी २ आन्तरिक हिम्मत शक्तिमें बड़ी कमजोरी अनुभव करने पर भी प्रकट रूपमें अपनी हिम्मत को नहीं छोड़ेगा।

मेष लग्न में ४ राहु

नं० ८८
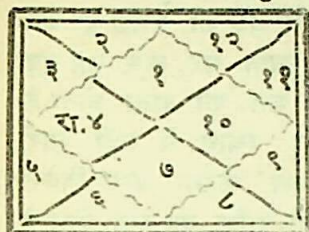
यदि कर्क का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में विशेष हानि प्राप्त करेगा और मातृ भूमि तथा मकानादि के सुखों में कमी और परिवर्तन के योग पायेगा तथा घरेलू वातावरण में सुख शान्ति का स्थाई योग प्राप्त नहीं हो सकने के कारणों से दुःख अनुभव करेगा तथा मन की गति के स्वामी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है इसलिये घरेलू मामलों में मानसिक अशान्ति होने पर भी गुप्त मनोयोग की शक्ति से सुख शान्ति की सफलता प्राप्त करने में सदैव प्रयत्न शील रहेगा, इसलिये दुःख-सुख का अनुभव करता रहेगा किन्तु कभी कभी घर के अन्दरूनी मामलों में विशेष अशान्ति भी प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ५ राहु

नं० ७०
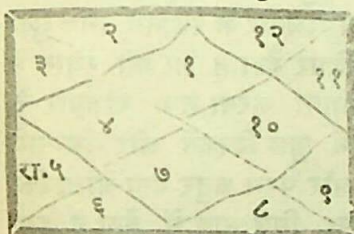
यदि सिंह का राहु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो विद्या ग्रहण करने के मार्ग में बड़ी कठिनाई प्राप्त रहेगी किन्तु तेजस्वी सूर्य की राशि पर बैठा है इसलिये प्रभाव शक्ति और गुप्त युक्ति के बल से विद्या स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और अपनी विद्या की अन्दरूनी कमजोरी को वाणी की प्रकट चतुराई द्वारा बुद्धिमानी से बदल कर सफाई के रूप में दिखाता रहेगा और सन्तान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा किन्तु बहुत सी युक्तियों के साधन करने के बाद सन्तान पक्ष में कुछ शक्ति पा सकेगा तथा दिमाग के अन्दर चिन्ता और परेशानियों के कारण प्राप्त रहेंगे किन्तु गुप्त बुद्धि योग के बल से कार्य सिद्ध करता रहेगा।

मेष लग्न में ६ राहु

नं० ९०
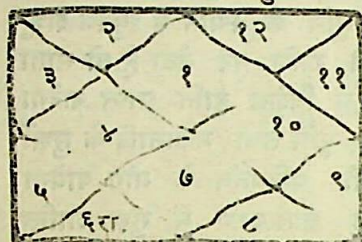
यदि कन्या का राहु—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो छठे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ी भारी सफलता प्राप्त करेगा और विवेकी ग्रह बुध की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये अनेकों प्रकार के झगड़े झंझटों एवं मुसीबतों के मार्ग में गुप्त विवेक की गहरी युक्ति के योग से बड़ी भारी प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा, इसलिए कठिन से कठिन परिस्थिति में भी बड़ी भारी धैर्य से और साहस से काम लेकर अपना कार्य पूरा करेगा, किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण कभी कभी परेशानियों से अधिक चिन्तित होना पड़ेगा परन्तु नवीन शक्ति का बल पाकर विजई होगा और ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी रहेगी।

मेष लग्न में ७ राहु
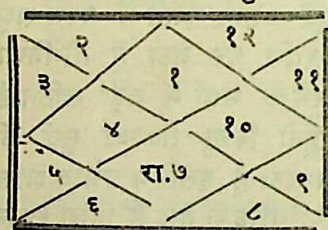
नं० ९१

यदि तुला का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थानमें, मित्र शुक्र की राशिपर बैठा है तो स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ दिक्कतें और चिन्तायें रहेंगी और परम चतुर दैत्य-आचार्यकी राशि पर मित्र भाव में बैठा है, इसलिये रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी चतुराई एवं गुप्त युक्ति के योगों से सफलता प्राप्त करेगा और इसी प्रकार गृहस्थके मार्ग में भी बड़ी भारी चतुराई से कार्य सिद्ध करेगा और स्त्री तथा रोजगार के मार्गों में कुछ विशेष लाभ गुप्त युक्ति के बल से प्राप्त करेगा किन्तु राहुके स्वाभाविक गुणों के कारण गृहस्थ के संचालन में कठिनाइयाँ रहेंगी किन्तु कुछ कमी के साथ-साथ कार्य संचालन होता रहेगा।

मेष लग्नमें ८ राहु

नं० ९२

यदि वृश्चिकका राहु—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो जीवन-यापन करने में बड़ी-बड़ी चिन्ताओं से टकराना पड़ेगा और जीवन में मृत्यु तुल्य कष्टों से भी कई बार सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा और पेट के अन्दर कुछ बीमारी या रोग की शिकायत रहेगी तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये जीवन शक्ति प्राप्त करने के लिये महान् कठिन कार्य करेगा और जीवन को सहायक होनेवाली किसी गुप्त शक्ति का लाभ भी प्राप्त करेगा किन्तु जीवन में कुछ खास कमी महसूस करने के कारणों से कुछ अशान्तप्रद वातावरण में रहकर उन्नति की चेष्टा करेगा।

मेष लग्न में ९ राहु

नं० ९३

यदि धन का राहु—नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु को राशि पर बैठा है तो भाग्यके स्थान में बड़ा कष्ट अनुभव करेगा और भाग्योन्नति के मार्ग में बड़ी-बड़ी दिक्कतें रहेगी और धर्म के पालन में अश्रद्धा रहेगी तथा धर्म की हानि भी प्राप्त होगी तथा देव गूरु वृहस्पतिकी राशि पर नीचका होकर बैठा है, इसलिये किसी अच्छे कार्य में भी लघुता युक्त रूप से भाग्य का संचालन रहेगा तथा कुछ परतन्त्रता एवं परेशानी रहेगी और सुयश के स्थान में कमी तथा अपयश की प्राप्ति रहेगी और भाग्य के स्थान में कभी २ घोर अन्धकार दिखाई देने के कारणों से महान् निराशा का अनुभव करेगा और अन्त में बहुत सी मुश्किलों के बाद भाग्य में कुछ शक्ति पायेगा।

मेष लग्न में १० राहु

नं० ९४
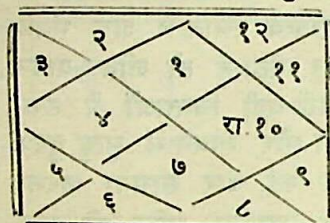
यदि मकर का राहु—दसम केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और राज समाज के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के क्षेत्र में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और मान प्रतिष्ठा आदि के मार्ग में कभी-कभी महान् कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा महान् कठोर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है तो मान उन्नति एवं पदोन्नति को प्राप्त करने के लिये महान् कठिन कर्म के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और वित्त से ज्यादे उन्नति पाने के लिये प्रयत्न करता रहेगा और सफलता भी प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण कुछ कमी युक्त रहेगा।

मेष लग्न में ११ राहु

नं० ९५
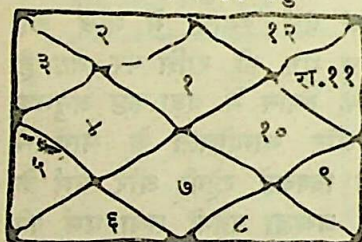
यदि कुम्भ का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनिकी राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पायेगा और अपने निश्चित वित्त के दायरे से भी अधिक मुनाफा खाने का विशेष प्रयत्न युक्ति बल से करता रहेगा और कभी २ विशेष लाभ की प्राप्ति भी करता रहेगा और कठिन कठोर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है इसलिये आमदनी की शक्ति पाने के लिये भारी कठिन कर्म करेगा फिर भी राहु के स्वाभाविक गुण के कारणों से आमदनी के मार्ग में कमी और असंतोष के कारण प्राप्त होते रहेंगे और अधिक स्वार्थी बनेगा।

मेष लग्न में १२ राहु

नं० ९६
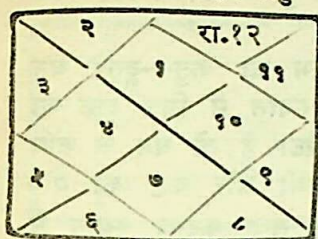
यदि मीन का राहु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चे के मार्ग से महान् परेशानी अनुभव करेगा और बाहरी स्थानों में कष्ट का योग पायेगा तथा देव गुरु वृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिए खर्च की शक्ति को पाने के लिये आदर्श युक्ति का विशेष उपयोग करेगा और गुप्त युक्ति बल की आदर्श शक्ति के द्वारा ही बाहरी स्थानों में सम्बन्ध स्थापित करेगा तथा विशेष योग्यता के द्वारा शानदार खर्चा करेगा। फिर भी कभी-कभी खर्च के मार्ग में महान् संकट का योग पायेगा। किन्तु बार-बार शक्ति प्राप्त होती रहेगी और अन्द-रूनी कुछ परेशानी एवं कमी के होते हुए भी प्रकट में शानदारी से खर्च रहेगा।

कष्ट कठिन कर्म गुप्त शक्ति के अधिपति केतु

मेष लग्न में १ केतु
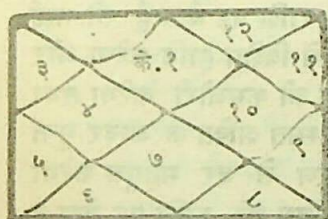
नं० ९७

यदि मेष का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु मंगल में राशि पर बैठा है तो देह में कष्ट और परे-शानी का योग प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी देह में कोई आघात शक्ति पायेगा और देह की सुन्दरता एवं सुडौलताई में कमी रहेगी तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर उग्र ग्रह केतु बैठा है, इसलिये अपना मान और व्यक्तित्व बढ़ाने के लिए बड़ा कठिन परिश्रम करेगा तथा कभी कभी अवसर पड़ने पर हठयोग से काम करेगा और अपने अन्दर गुप्त शक्ति एवं गुप्त हिम्मत के द्वारा महान् कार्य करके कोई सफलता शक्ति प्राप्त करेगा जिसके द्वारा आन्तरिक शक्ति का

विशेष अनुभव करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण कोई प्रकट कमी का योग प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में २ केतु

नं० ९८
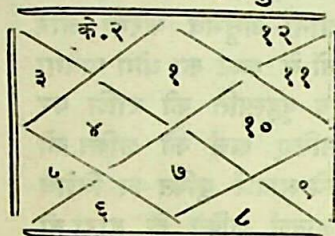
यदि वृषभ का केतु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो धन के कोष स्थान में कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में परेशानी एवं मतभेद और झंझट रहेगी किन्तु परम चतुर दैत्य गुरु शुक्राचार्य की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये महान् चतुराई और गुप्त शक्ति का विशेष प्रयोग करेगा तथा चतुराई के कठिन कर्म के द्वारा धन की प्राप्ति के साधन पायेगा और धन प्राप्त होने पर भी धन की संग्रह शक्ति के अभाव के कारण धन की तरफ से कुछ चिन्तित रहेगा किन्तु धन की अन्दरूनी कमजोरी के मुकाबले में प्रकट रूप में इज्जत आबरू धनवानों की सी रहेगी।

मेष लग्न में ३ केतु

नं० ९९
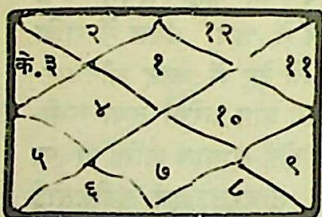
यदि मिथुन का केतु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में विशेष हानि करेगा और पुरुषार्थ शक्ति की कमजोरी करेगा तथा कभी-कभी हिम्मत शक्ति के अन्दर गुप्त कमी के कारण से डर महसूस करेगा किन्तु विवेकी बुध की राशि पर बैठा है इसलिये गुप्त विवेक की गुप्त शक्ति के द्वारा अपना कार्य पूरा करेगा और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये विशेष परिश्रम करने का प्रयत्न करेगा किन्तु नीच होने के कारण से कुछ पर-तन्त्रतायुक्त मार्ग से शक्ति प्राप्त करेगा। और कुछ अनाधिकार रूप से शक्ति का प्रयोग करके हिम्मत प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ४ केतु

नं० १००
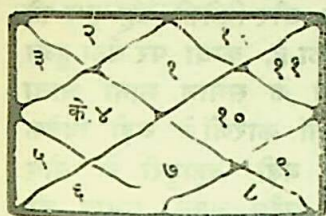
यदि कर्क का केतु—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि स्थान पर मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में महान् संकट प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का कष्ट प्राप्त रहेगा और घरेलू वातावरण में सुख शान्ति की कमी और अशान्ति का योग प्राप्त होगा तथा अपने जन्म भूमि से स्थान परिवर्तन करना पड़ेगा किन्तु मन की गति के स्वामी चन्द्रमा की राशि पर केतु बैठा है इसलिये मानसिक क्लेश विशेष रहने पर भी मन की आन्तरिक शक्ति के द्वारा कुछ सुख का अनुभव करेगा और रहने के स्थान में भी परिवर्तन होता रहेगा तथा बहुत प्रकार की कठिनाइयों को प्राप्त करने के बाद सुख प्राप्त करेगा।

मेष लग्न में ५ केतु

नं० १०१
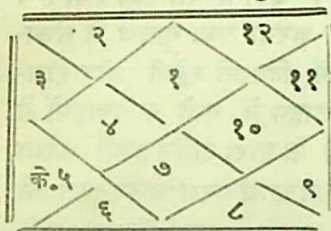
यदि सिंह का केतु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है, तो विद्या स्थान में विद्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में बड़ी परेशानियाँ एवं कष्ट अनुभव करेगा और दिमाग के अन्दर कुछ कमजोरी तथा फिकर मन्दी रहेगी तथा विद्या को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करने पर भी कुछ प्रगट में त्रुटि रहेगी और संतान पक्ष में सुख की प्राप्ति के लिये कठिन कर्म तथा विशेष उपचार करने पर भी पूरा सुख प्राप्त नहीं होगा और प्रबल तेजस्वी सूर्य की राशि पर गरम ग्रह केतु बैठा है, इसलिये वाणी के अन्दर नरमाई की कमी होने से बोलचाल में उग्रता रहेगी।

यदि कन्या का केतु—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा और छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता

मेष लग्न में ६ केतु

नं० १०२

है इसलिये शत्रु पक्ष में सदैव विजय प्राप्त करेगा और विवेकी ग्रह बुध की राशि पर बैठा है, कन्या पर बैठा हुआ केतु स्वक्षेत्री के समान माना जाता है। इन दोनों कारणों से बड़ी विवेक शक्ति एवं बड़ी बहादुरी के योग कारणों से सदैव अपने प्रभाव की जागृति रखेगा तथा बड़ी-बड़ी मुसीबतों एवं झगड़े झंझटों में सफलता पायेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण ननसाल पक्ष में कुछ हानि रहेगी और अपने अन्दर गुप्त रूप से कुछ कमजोरी अनुभव करेगा।

मेष लग्न में ७ केतु

नं० १०३
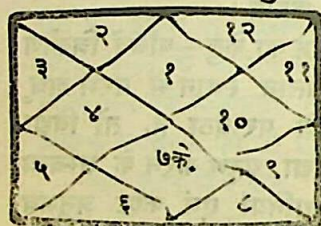
यदि तुला का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के संचालन मार्ग में दिक्कतें रहेंगी और रोजगार की लाइन में बड़ी कठिनाइयों से कठिन कर्म के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और दैत्य आचार्य परम चतुर शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये रोजगार और गृहस्थ के मार्ग में बड़ी भारी चतुराई और गुप्त शक्ति के योग से सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण रोजगार के मार्ग में परिवर्तन करेगा एवं रोजगार और स्त्री स्थान में शक्ति प्राप्त करने पर भी कुछ त्रुटि अनुभव करेगा।

यदि वृश्चिक का केतु—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में बहुत बार मृत्यु तुल्य संकट प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति की हानि प्राप्त होगी एवं आठवें स्थान का सम्बन्ध पेट के निचले हिस्से से भी होता है इसलिये पेट के निचले हिस्से में कोई प्रकार की बीमारी या शिकायत

मेष लग्न में ८ केतु
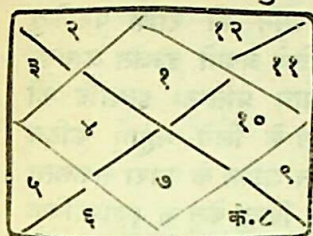
नं १०४

रहेगी और जीवन यापन करने के सम्बन्ध में चिन्ता और कष्ट अनुभव होगा किन्तु गरम ग्रह क्षत्रिय स्वभाव मंगल की राशि पर केतु बैठा है इसलिये गुप्तधैर्य की महान् शक्ति से जीवन में सान्त्वना और शक्ति प्राप्त करेगा परन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण जीवन की दिनचर्या में कोई खास कमी अनुभव करेगा।

मेष लग्न में ९ केतु

नं० १०५
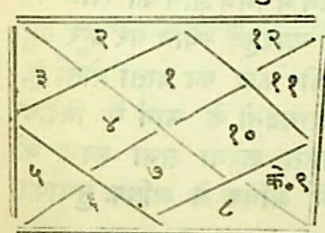
यदि धन का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में उच्च का होकर बैठा है तो भाग्य के अन्दर महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा भाग्य की उन्नति करने के लिए महान् कठिन कार्य करेगा और धर्म के क्षेत्र में बहुत शक्ति संग्रह करेगा और कठिन कर्म की सफलता के परिणाम में बड़ा भारी भाग्यशाली समझा जायगा तथा देव गुरु बृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिये दिव्य गुणों के मार्ग का अनुसरण करते हुए एवं आन्तरिक हृदय में मजबूती और साहस रखते हुए उन्नति प्राप्त करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण भाग्य में कई बार बहुत परिवर्तन और परेशानियों से भी टकराना पड़ेगा और भाग्य में कभी-कभी कुछ त्रुटि भी प्रतीत होती रहेगी।

यदि मकर का केतु—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में हानि करेगा और राज समाज में परेशानी के कारण प्राप्त रहेंगे तथा कारबार के संचालन मार्ग में कष्ट और कठिनाइयों से काम करेगा और कारबार

मेष लग्न में १० केतु

नं १०६
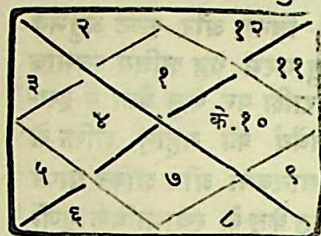
में परिवर्तन प्राप्त करने पड़ेंगे तथा कठोर ग्रह शनि की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये अपनी इज्जत आबरू, कारबार, मान प्रतिष्ठा इत्यादि की उन्नति करने के लिये महान् कठिन कर्म एवं गुप्त शक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण अपनी स्थिति और मान प्रतिष्ठा तथा कारबार के अन्दर कुछ कमी महसूस करेगा।

मेष लग्न में ११ केतु

नं० १०७
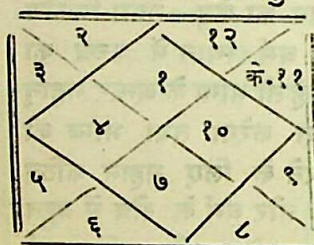
यदि कुम्भ का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा लाभ के सम्बन्ध में अधिक से अधिक मुनाफा खाने की योजना बनायेगा तथा कठोर ग्रह शनि की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये लाभ की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन कर्म करके गुप्त शक्ति के योग द्वारा विशेष सफलता पायेगा परन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनी के मार्ग में परिवर्तन करने पड़ेंगे और किसी भी परिस्थिति में रहकर लाभ की कुछ कमी अनुभव करेगा और कष्ट साध्य कर्म की शक्ति से उन्नति प्राप्त करेगा।

यदि मीन का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बहुत परेशानी अनुभव करेगा और खर्च की शक्ति को प्राप्त करने के लिये कठिन कर्म करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कष्ट एवं झंझट प्राप्त होगा परन्तु देव गुरु वृहस्पति की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये बड़े आदर्श मार्ग

मेष लग्न में १२ केतु

नं० १०८

के द्वारा महान् परिश्रम करके खर्च का संचालन शक्ति का योग प्राप्त करेगा और इसी प्रकार बड़ी योग्यता और कठिनाइयों के द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध की शक्ति का लाभ पायेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण खर्च की लाइन में और बाहरी सम्बन्धों में परिवर्तन करेगा, फिर भी खर्च के मार्ग में कुछ कमी और असंतोष का योग पायेगा।

❀ मेष लग्न समाप्त ❀

२ १२
१
३ ११
४ १०
५ ९
७
६ ८

❀ वृषभ लग्न प्रारम्भ ❀

३ १
४ २ १२
५ ११
६ १०
८
७ ९
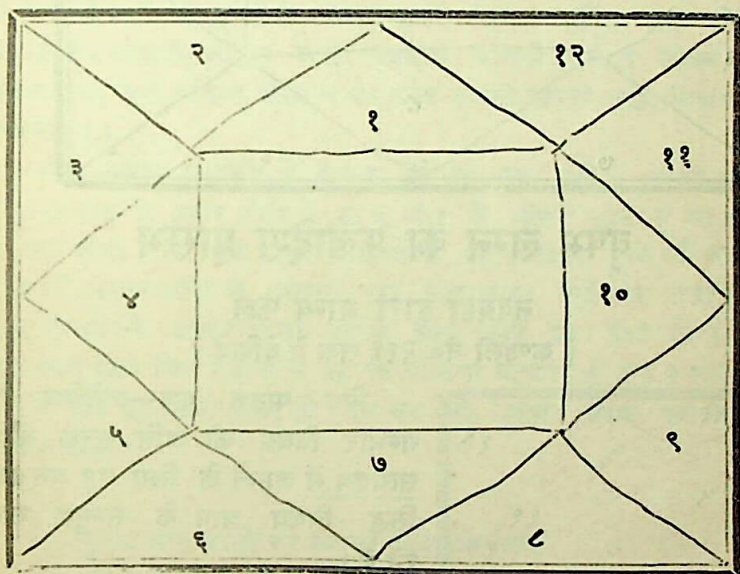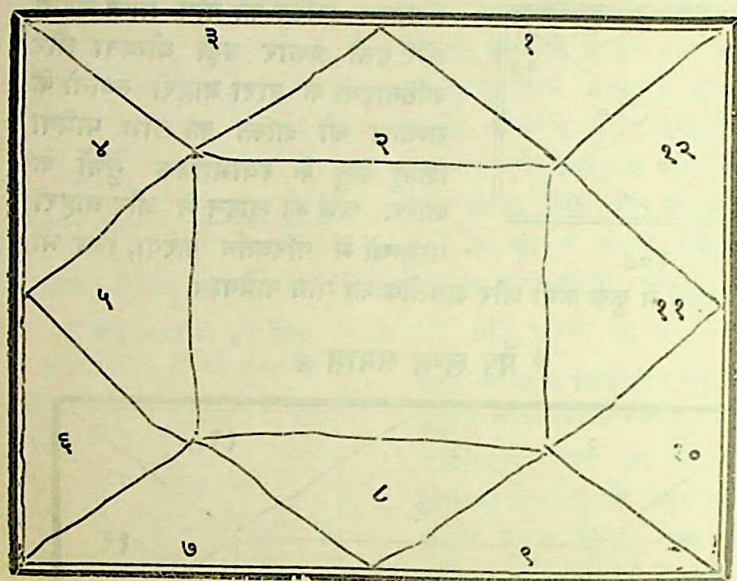
वृषभ लग्न का फलादेश प्रारम्भ

नवग्रहों द्वारा भाग्य फल

[कुण्डली नं० २१६ तक में देखिये]
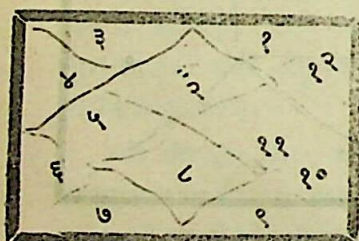
प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्यरूप में जानने के लिए यह अनुभव सिद्ध विषय आप के सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नव-ग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है। अर्थात् जन्म कुण्डली के अन्दर—जन्म के समय नवग्रह जिस-जिस स्थान पर जैसा-जैसा अच्छा

बुरा भाव लेकर बैठे होते हैं उनका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है, अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी पूरी जानकारी करने के लिए प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुन्डली नं० १०९ से लेकर कुण्डली नं० २१६ तक के अन्दर जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता है उसका फलादेश प्रथम के नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से मालूम करते रहना चाहिए अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत भविष्य वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुन्डली के अन्दर बैठे हुए नव ग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश के भीतर होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों कारणों से ग्रह कमजोर होने की वजह से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाता है। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ जहाँ जिन जिन स्थानों में ग्रह की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन २ स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस पर भी उसका असर फल लागू समझा जायगा।

---

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर-सूर्य फल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है तो उसका फलादेश कुण्डली नं० १०९ से १२० तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० ११४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० ११५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० ११६ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११७ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११८ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १२० के अनुसार मालूम करिये।

---

(२) वृषभ लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं॰ १२१ से १३२ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रका फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२१ के अनुसार मालूम करिये।

३ जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १२३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १२५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १२६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फालादेश कुंडली नं० १२८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १३० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १३१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुंडली नं० १३२ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० १३३ से १४४ तक में देखिये। और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १३३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो उस मासका फलादेश कुण्डली नं० १३४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १३५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १३६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्ठली नं० १३७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १३८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १३९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १४० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १४१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १४२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १४३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १४४ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर-बुधफल

आपकी जन्म कुण्डली में बुध जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० १४५ से १५६ तक में देखिये और समय कालीन बुधका फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १४५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १४६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १४७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १४८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १४९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १५० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १५१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १५२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १५३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १५४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १५५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १५६ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन क दोनों किनारों पर—गुरु फल

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० १५७ से १६८ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १५७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि में हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १५८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १५९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १६७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष के गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १६८ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए ।

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्र फल

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० १६९ से १८० तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये ।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १६९ के अनुसार मालूम करिये ।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७० के अनुसार मालूम करिये ।

४ जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७१ के अनुसार मालूम करिये ।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७२ के अनुसार मालूम करिये ।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १७३ के अनुसार मालूम करिये ।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १७४ के अनुसार मालूम करिये ।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७५ के अनुसार मालूम करिये ।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७६ के अनुसार मालूम करिये ।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७७ के अनुसार मालूम करिये ।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० १७८ के अनुसार मालूम करिये ।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १७९ के अनुसार मालूम करिये ।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १८० के अनुसार मालूम करिये ।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

आपकी जन्म कुण्डली में शनि जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० १८१ से १९२ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, तो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८६ के अनुसार मालूम करिये।

८-जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १८९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९१ के अनुसार मालूम करिये।

१-जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९२ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को, समस्त जीवन के लिए।

जीवन के दोनों किनारों पर-राहु फल

आपकी जन्म कुण्डली में राहु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० १९३ से २०४ तक में देखिए और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिए।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १९८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० १९९ के अनुसार मालूम करिए।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २०२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०४ के अनुसार मालूम करिये।

(२) वृषभ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये।

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

आपकी जन्म कुण्डली में केतु जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुंडली नं० २०५ से २१६ तक में देखिए और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिए।

२—जिस वर्ष केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २०६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २०९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २१० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २११ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २१२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २१३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २१४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २१५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २१६ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

माता भूमि घरेलू सुख स्थानपति—सूर्य

वृषभ लग्न में १ सूर्य

नं० १०९
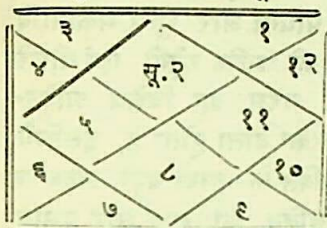
यदि वृषभ का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि का कुछ सुख और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण के सम्बन्ध में कुछ त्रुटियुक्त सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा तेजस्वी सूर्य के लग्न में बैठने से देह के अन्दर प्रभाव रहेगा किन्तु देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री स्थान में सुख शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ सुखयुक्त वातावरण के द्वारा सफलता और प्रभाव की शक्ति पायेगा।

वृषभ लग्न में २ सूर्य

नं० ११०
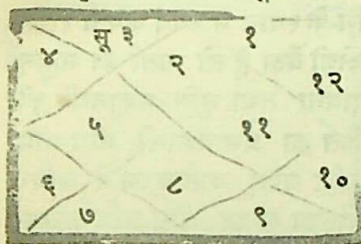
यदि मिथुन का सूर्य—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में सुख शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का सुख पायेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य करता है, इसलिये माता के सुख में कुछ कमी रहेगी और घरेलू सुख सम्बन्धों में त्रुटियुक्त मार्ग से शक्ति मिलेगी और भूमि मकानादि के सुख सम्बन्ध में जायदाद की शक्ति होते हुए भी जायदाद का उपभोग सुन्दरता युक्त रूप से प्राप्त नहीं होगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये आयु की सुख शक्ति मिलेगी और पुरातत्व शक्ति से सुख प्राप्त होगा तथा जीवन की दिनचर्या में सुख और प्रभाव रहेगा।

वृषभ लग्न में ३ सूर्य

नं० १११
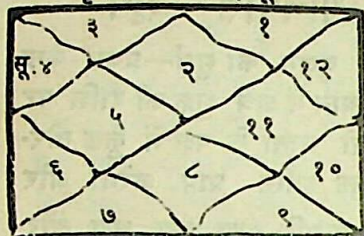
यदि कर्क का सूर्य—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो माता की शक्ति का प्रभाव पायेगा और भूमि मकानादि घरेलू सुख की शक्ति रहेगी एवं तीसरे स्थान पर गरम ग्रह विशेष शक्ति-शाली फल का दाता होता है, इसलिये पराक्रम शक्ति के द्वारा बड़ी सफलता और सुख शक्ति प्राप्त रहेगी तथा भाई बहिन का सुख और प्रभाव पायेगा तथा परिश्रम शक्ति से प्रभाव की वृद्धि होगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य के सम्बन्ध में उन्नति करने के लिए बहुत कुछ कठिन प्रयत्न करेगा और धर्म के पालन स्थान के कुछ-कुछ नीरसता युक्त मार्ग से धर्म का पालन करेगा तथा पुरुषार्थ में भरोसा रखेगा।

वृषभ लग्न में ४ सूर्य

नं० ११२
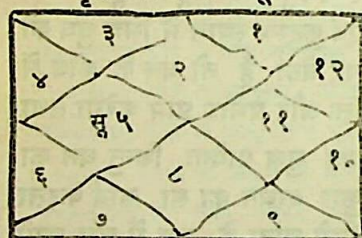
यदि सिंह का सूर्य—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की महान् शक्ति पायेगा तथा भूमि मकानादि की सुख शक्ति का प्रभावशाली योग प्राप्त करेगा और घरेलू वातावरण के अन्दर सुख शक्तिका सुन्दर योग प्राप्त करेगा, किन्तु तेजस्वी सूर्य की विशेषता के कारण दिखावे में विशेष प्रभाव रहेगा किन्तु वास्तविक शान्ति की कुछ कमी प्रतीत होगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिए पिता एवं राज-समाज में कुछ असन्तोष युक्त शक्ति के द्वारा सुख प्राप्त करेगा और व्यापार के पक्ष में कठिन मार्ग के द्वारा सफलता पायेगा और मान प्रतिष्ठा इज्जत आबरू पायेगा।

वृषभ लग्न में ५ सूर्य

नं० ११३
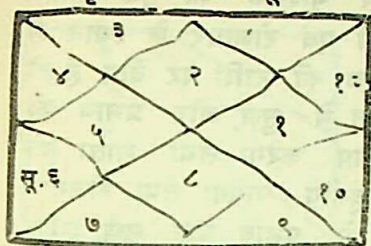
यदि कन्या का सूर्य—पाँचवे त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की कन्या राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में सुख पूर्वक शक्ति और ज्ञान प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में सुख और प्रभाव प्राप्त रहेगा और बुद्धि के अन्दर पृथ्वी तत्व का अधिकारी सूर्य के बैठने से बुद्धि के अन्दर बड़ी गम्भीरता और विशाल शक्ति प्राप्त होगी तथा वाणी में दूरदर्शिता और प्रभाव रहेगा और बुद्धि योग के द्वारा घरेलू सुख का विशेष आनन्द प्राप्त होगा तथा भूमि और माता का सहयोग पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये सुख पूर्वक बुद्धि योग के द्वारा आमदनी के मार्ग में अच्छी सफलता पायेगा।

वृषभ लग्न में ६ सूर्य

नं० ११४

यदि तुला का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में नीच का होकर-शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में हानि प्राप्त करेगा तथा जन्म भूमि से वियोग रहेगा और मकानादि भूमि की कमी रहेगी तथा घरेलू सुख के साधनों में विशेष कमी रहेगी और झंझट युक्त मार्ग के द्वारा सुख प्राप्त कर सकेगा तथा शत्रु पक्ष से कुछ अशान्ति रहेगी किन्तु गरम ग्रह होने के कारण से सूर्य के नीच होने पर भी कुछ प्रभाव कायम रखेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थान का उत्तम सुखदायक सम्बन्ध पायेगा तथा विशेष खर्च के द्वारा सुख के साधन पायेगा।

वृषभ लग्न में ७ सूर्य

नं० ११५
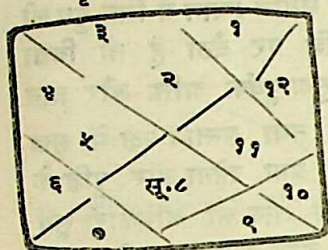
यदि वृश्चिक का सूर्य—सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में सुख और प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा तथा माता का सुन्दर सहयोग पायेगा तथा रोजगार के मार्ग में प्रभाव युक्त सुख शक्ति पायेगा और स्त्री गृहस्थ के रहन-सहन में भूमि मकानादि का अच्छा सहयोग पायेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कमी रहेगी और गृहस्थ के अन्दर की सुख साम-ग्रियों में त्रुटि प्रतीत होती रहेगी तथा गृहस्थी संचालन के कार्य कारणों से देह को आराम कम मिलेगा, इसलिये हृदय में कुछ अशान्ति रहेगी।

वृषभ लग्न में ८ सूर्य

नं ११६
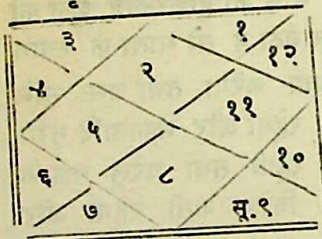
यदि धन का सूर्य—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में हानि करेगा तथा मातृ-भूमि से वियोग रहेगा अर्थात् जन्म स्थान और भूमि मकानादि के सुख में बड़ी कमी रहेगी और घरेलू सुख शान्ति के मार्ग में बड़ा असन्तोष रहेगा, किन्तु सुखेश सूर्य अष्टम स्थान में बैठा है, इसलिये आयु का सुख रहेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने का प्रयत्न चालू रहेगा और कुटुम्ब के स्थान में सुख सम्बन्ध प्राप्त रहेगा तथा धन प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ९ सूर्य

नं० ११७
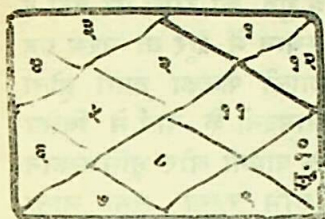
यदि मकर का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो माता के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि का योग भाग्य से पायेगा तथा घरेलू वातावरण में कुछ सुख प्राप्त रहेगा और भाग्य के अन्दर प्रभाव शक्ति रहेगी तथा धर्म का पालन भी रहेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने के कारण से भाग्य की खूबसूरती में कुछ कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुख सम्बन्ध प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान में सुख पूर्वक भाग्य की शक्ति के योग से सफलता प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १० सूर्य

नं० ११८
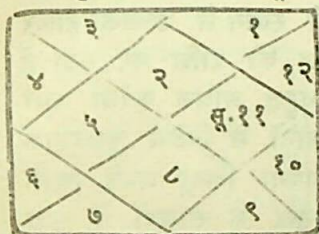
यदि कुम्भ का सूर्य—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पिता के सम्बन्ध में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और कुछ कठिनाई के द्वारा राज-समाज में मान तथा प्रभाव प्राप्त करेगा और कारबार में शक्ति एवं सफलता पायेगा किन्तु शत्रु राशि पर सूर्य के होने से प्रभाव की शक्ति जितनी अधिक रहेगी उतनी सफलता शक्ति का आनन्द प्राप्त न हो सकेगा परन्तु सातवीं दृष्टि से चौथे सुख भवन को स्वयं अपनी सिंह राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भूमि मकानादि की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा मातृ पक्ष में एवं घरेलू सुख के साधनों में प्रभाव और आनन्द का योग मिलेगा और सुख पूर्वक उन्नति के लिए प्रयत्न करेगा।

वृषभ लग्न में ११ सूर्य

नं० ११९
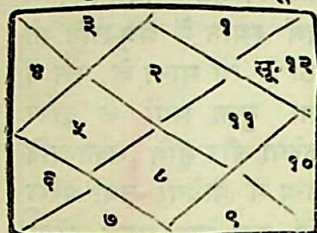
यदि मीन का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में क्रूर या गरम ग्रह विशेष शक्तिशाली फलका दाता होता है, इसलिए आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पायेगा और भूमि मकान इत्यादि का लाभ रहेगा तथा माता के सम्बन्ध से सुख लाभ पायेगा तथा घरेलू वातावरण से सुख के अच्छे साधन प्राप्त करेगा और सुखेश होकर सूर्य लाभ स्थान में बैठा है, इसलिये सुख पूर्वक आमदनी का कोई विशेष योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए सन्तान पक्ष से सुख और प्रभाव पायेगा तथा विद्या बुद्धि के अन्दर शान्ति युक्त प्रभाव शक्ति से सफलता पायेगा।

वृषभ लग्न में १२ सूर्य
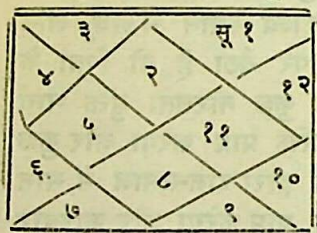
नं० १२०

यदि मेष का सूर्य—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में उच्चका होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों में विशेष सुखदायक सम्बन्ध पायेगा किन्तु अपने स्थान में घरेलू सुख के साधनों में कुछ कमी रहेगी और माता के पक्ष से भी कुछ कमी का योग बनेगा तथा भूमि मकानादि के सम्बन्ध में भी कुछ हानि प्राप्त होगी, क्योंकि खर्चा के स्थान में गरम ग्रह का फल प्रायः हानिकारक होता है, इसलिये अपने जन्म स्थान में कमी रहेगी और दूसरे स्थान में प्रभाव खूब रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में कुछ पेचीदी शक्ति के योग से कार्य सम्पन्न करेगा।

भाई, पराक्रम, मन स्थानपति–चन्द्र

वृषभ लग्न में १ चन्द्र

नं० १२१
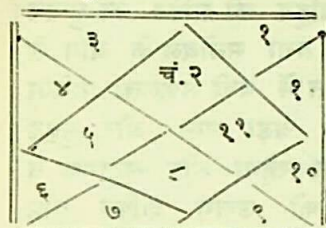
यदि वृषभ का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो मन के अन्दर महान् शक्ति पायेगा तथा देह में सुन्दर शक्ति रहेगी तथा भाई बहिन का विशेष योग पायेगा भाई और पराक्रम स्थान से बड़ी सफलता और हिम्मत शक्ति पायेगा तथा देह के अन्दर प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री स्थान में परेशानी और कुछ त्रुटि अनुभव करेगा तथा रोजगार के पक्ष में कुछ अरुचि युक्त मार्ग के द्वारा कार्य संचालन करेगा और रोजगार से एवं गृहस्थ के सम्बन्ध से कुछ लघुता अनुभव करेगा।

वृषभ लग्न में २ चन्द्र

नं० १२२
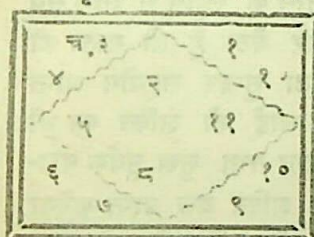
यदि मिथुन का चन्द्र—द्वितीय धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पराक्रम शक्ति और मनोबल के योग से धन का संग्रह प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में शक्ति पायेगा और धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य करता है, इसलिये भाई बहन के सुख सम्बन्ध में कमी रहेगी और देह के पुरुषार्थ स्थान की शक्ति में कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धनराशि में देख रहा है, इसलिए आयु की वृद्धि रहेगी और मनोबल की शक्ति के द्वारा पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ी रौनक एवं अमीरात का ढंग प्राप्त करेगा तथा धन वृद्धि की योजना में लगा रहेगा।

वृषभ लग्न में ३ चन्द्र

नं० १२३
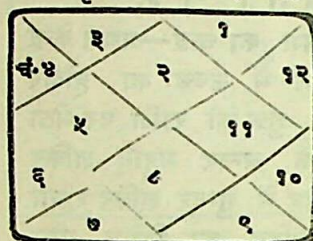
यदि कर्क का चन्द्र—तीसरे स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति का सुन्दर योग पायेगा तथा मनोबल के योग से पुरुषार्थ शक्ति में बड़ी सफलता पायेगा एवं मन में बड़ा मग्न और सुदृढ़ हिम्मत युक्त रहेगा और सहायक व सहयोगियों की उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी, इसलिये मनोयोग और पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करने के लिये कठिन प्रयत्न करना पड़ेगा एवं भाग्य के स्थान में कुछ असंतोष रहेगा तथा धर्म के पालन में कुछ नीरसता युक्त शक्ति रहेगी।

वृषभ लग्न में ४ चन्द्र

नं० १२४
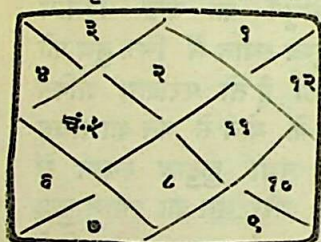
यदि सिंह का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो माता की शक्ति का बड़ा सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा और भाई की शक्ति का भी सुख प्राप्त रहेगा तथा सुख पूर्वक पराक्रम स्थान में शक्ति बल प्राप्त करेगा और मनोबल की शक्ति योग के द्वारा घरेलू सुख के उत्तम साधन पायेगा और भूमि मकान इत्यादि की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज-समाज तथा कारबार के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से शक्ति पायेगा और मनोबल परिश्रम से राज-समाज, कारबार के पक्ष में वृद्धि शक्ति से पायेगा।

वृषभ लग्न में ५ चन्द्र

नं० १२५
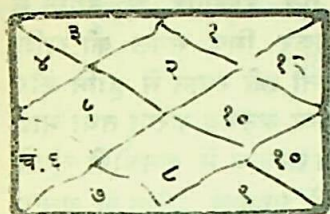
यदि कन्या का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो मनोबल की पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा विद्या स्थान में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा तथा वाणी और शब्दों के अन्दर बड़ी शक्ति रहेगी और बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी हिम्मत से कार्य करता रहेगा और संतान पक्ष में सुन्दर शक्ति प्राप्त रहेगी और छोटे भाई बहिन का अच्छा सम्बन्ध रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को देवगुरु वृहस्पति की मीन राशि में रख रहा है, इसलिये बुद्धि बल और मनोबल के योग से आमदनी के मार्ग में बड़ी उत्तम सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा लाभ की वृद्धि के लिए सदैव मनन करता रहेगा।

वृषभ लग्न में ६ चन्द्र

नं० १२६
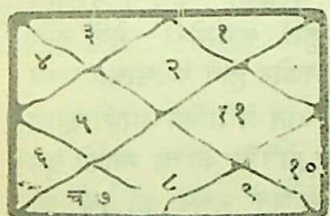
यदि तुला का चन्द्र—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई बहन के पक्ष में कुछ मन मुटाव रहेगा और मनोबल की पुरुषार्थ शक्ति के योग से शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पराक्रमेश के छठें स्थान पर बैठने से कुछ परतन्त्रता युक्त रहकर कार्य करेगा और मन के अन्दर हिम्मत शक्ति के रहते हुए भी कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा कुछ झंझट युक्त मार्ग से पुरुषार्थ शक्ति का विकास पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में मनोयोग से शक्ति प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ७ चन्द्र

नं० १२७

यदि वृश्चिक का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में हानि और मानसिक कष्ट अनुभव करेगा तथा भाई बहन के सुख सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और देह की पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर दुर्बलता एवं आलस्य प्राप्त होगा और रोजगार के मार्ग में कमजोरी तथा मानसिक परेशानी रहेगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता रहेगी और मान सम्मान एवं प्रभाव प्राप्त रहेगा और हृदय के अन्दर शक्ति प्राप्त रहेगी।

वृषभ लग्न में ८ चन्द्र

नं० १२८
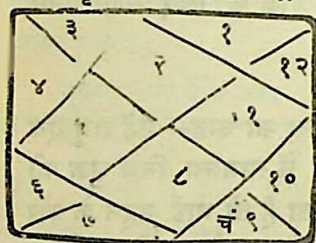
यदि धन का चन्द्र—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थानों में मित्र गुरु की धन राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में हानि एवं मानसिक परेशानी रहेगी और पराक्रम स्थान में पुरुषार्थ शक्ति की कुछ कमजोरी रहेगी तथा हिम्मतके कमजोर होने के साधन बनते रहेंगे आयु स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरातत्व सम्बन्ध में कोई सहायक शक्ति होने के कारण मनको गुप्त शक्ति प्राप्त रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये मानसिक पुरुषार्थ बहुत करता रहेगा और धन तथा कुटुम्ब की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि मकर का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुन्दर योग से भाग्य में कुछ शक्ति प्राप्त रहेगी और मनोबल के पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा मनोयोग से धर्म का पालन

वृषभ लग्न में ९ चन्द्र

नं० १२९

व मनन करेगा और भाग्य तथा भगवान् में श्रद्धा रखेगा अतः इन्हीं कारणों से भाग्यवान् और सज्जन सत् कर्मनिष्ठ माना जायगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र में भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाई और पुरुषार्थ कर्म की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा मनोबल के अन्दर स्फूर्ति शक्ति, हिम्मत और प्रसन्नता इत्यादि कारणों को प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १० चन्द्र

नं० १३०
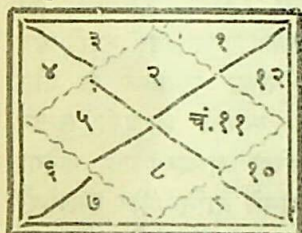
यदि कुम्भ का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ मतभेद का योग प्राप्त करेगा तथा मनोयोग के कठिन परिश्रम से राज-समाज में मान प्राप्त करेगा और कार-बार में उन्नति प्राप्त करने के लिये मानसिक विचारों की शक्ति के द्वारा बड़ा भारी प्रयत्न करता रहेगा तथा भाई बहिन को शक्ति का योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में सुख शक्ति पायेगा तथा भूमि मकानादि और घरेलू वातावरण में मनोबल के पुरुषार्थ से सुख व सफलता पायेगा।

यदि मीन का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के लाभ का योग प्राप्त रहेगा तथा मनोबल के द्वारा पुरुषार्थ कर्म करके आमदनी के मार्ग में बड़ी भारी सफलता और प्रसन्नता प्राप्त करेगा तथा बाहुबल की पुरुषार्थ शक्ति के बल पर बड़ी भारी हिम्मत रहेगी और लाभ स्थान में उन्नति करने के

वृषभ लग्न में ११ चन्द्र

नं० १३१

लिये सदैव मानसिक विचार चलते रहेंगे तथा लाभ मार्ग में शोभा युक्त रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये मनोबल की शक्ति से विद्या बुद्धि वाणी के अन्दर शक्ति पायेगा और संतान पक्ष में सुन्दर शक्ति प्राप्त रहेगी।

यदि मेष का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में बड़ी कमी और मतभेद रहेगा और बाहुबल की पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर बड़ी कमजोरी रहेगी किन्तु मनोबल की पुरुषार्थ शक्तिके द्वारा बड़ा भारी खर्च करता रहेगा तथा मनोबल के योग द्वारा बाहरी स्थानों में बड़ी सुन्दर शक्ति और अच्छे सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा अपने स्थानमें हानि और कमजोरी पायेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये मनोबल के योग द्वारा पुरुषार्थ कर्म से शत्रु स्थान में अपना कार्य निकालेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में मनोयोग की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १२ चन्द्र

नं० १३२

स्त्री, रोजगार, खर्च, बाहरी स्थानपति—मंगल

यदि वृषभ का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह के कर्म योग से खर्च की संचालन शक्ति पायेगा और बाहरी स्थानों में अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा रोजगार की वजह से दूसरे स्थानों में आना जाना रहेगा और व्ययेश होने के दोष कारण से देह में कमजोरी और रक्त विकार एवं धातु

क्षीणता का योग प्राप्त करेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिए उपरोक्त दोष के कारण ही माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि एवं घरेलू सुख सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये रोजगार की उन्नति करेगा तथा स्त्री पक्ष में शक्ति मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से स्त्री और रोजगार के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिए जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी रहेगी तथा आयु स्थान में कभी-कभी खतरा प्राप्त होता रहेगा और पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति की कुछ हानि प्राप्त होगी।
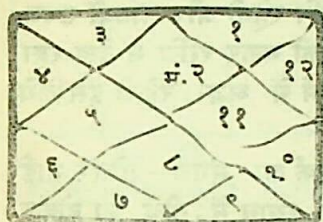
वृषभ लग्न में १ भौम

नं० १३३

वृषभ लग्न में २ भौम
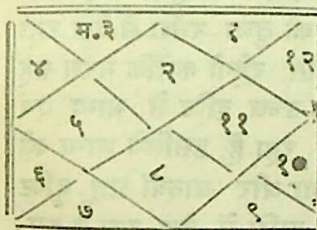
नं० १३४

यदि मिथुन का मंगल—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक रहेगा और इसी कारण से धन के कोष में कमजोरी रहेगी तथा कुटुम्ब स्थान में परेशानी प्राप्त होगी तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री स्थान में बड़ी कमी रहेगी और रोजगार तथा खर्च के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्राप्त होंगी, किन्तु बाहरी स्थान का सम्बन्ध कुछ अच्छा रहेगा और चौथी मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्ष में व्ययेश होने के दोष के कारण से कुछ हानि करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमी रहेगी तथा बुद्धि

और वाणी के द्वारा कुछ परेशानी प्रतीत होती रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में और आयु स्थान में कभी-कभी चिन्ताओं के कारण बनते रहेंगे और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ हानि रहेगी और आठवीं उच्च दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि रहेगी तथा धर्म में श्रद्धा रहेगी इसलिये भाग्यवान् व सज्जन समझा जायगा।

वृषभ लग्न में ३ भौम

नं० १३५

यदि कर्क का मंगल—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाई बहन के स्थान में हानि प्राप्त करेगा क्योंकि मंगल को नीच होने का दोष है तथा व्ययेश होने का दोष है, इसलिये विशेष दोषी होने से स्त्री पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में हानि एवं परेशानी रहेगी और पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध आलस्य रूप में रहेगा और चौथी दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में प्रभाव की जागृति रहेगी क्योंकि गरम ग्रह की दृष्टि शत्रु नाशक होती है और सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य एवं स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि रहेगी तथा धर्म का पालन होता रहेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान में शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इस-लिये पिता स्थान में उपरोक्त दोषों के कारण पिता के लाभ की हानि करेगा तथा राज समाज में कुछ परेशानी रहेगी और कारबार के मार्ग में हानि प्राप्त होगी तथा मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति के मार्ग में रुकावटों के द्वारा कार्य संचालन रहेगा।

यदि सिंह का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो मंगल को व्ययेश होने के दोष के
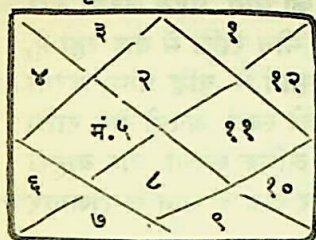
कारण से माता के स्थान में हानि प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि एवं मातृ भूमि इत्यादि सम्बन्धों में परेशानी और कमी के कारण प्राप्त होंगे तथा घरेलू सुख शान्ति के अन्दर कुछ कमी का योग प्राप्त रहेगा और चौथी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगारके स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में शक्ति रहेगी और रोजगार में भी उन्नति करेगा किन्तु बाहरी स्थानों के योग से उन्नति मिलेगी और फिर भी व्ययेश होने के दोष से कुछ परेशानी रहेगी और खर्चा गृहस्थी में विशेष रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में हानि या कमी प्राप्त होगी और राज समाज के मार्ग में कुछ परेशानी एवं नीरसता रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में वृद्धि प्राप्त करेगा किन्तु बाहरी स्थानों के योग से देर अबेर में लाभ प्राप्ति द्वारा उन्नति का योग बनेगा।

वृषभ लग्न में ४ भौम

नं० १३६

वृषभ लग्न में ५ भौम

नं० १३७
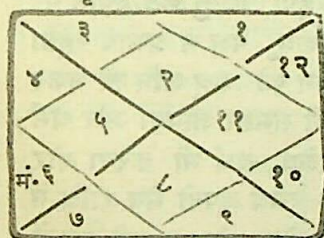
यदि कन्या का मंगल—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो मंगल को व्ययेश होने के दोष के कारण से सन्तान पक्ष में हानि प्राप्त करेगा तथा विद्या के पक्ष में कमजोरी रहेगी और बुद्धि के अन्दर कुछ फिकर चिन्ता का योग बनेगा तथा रोजगार के मार्गमें बुद्धि योग द्वारा कार्य संचालन करेगा और व्ययेश दोष के कारण ही स्त्री पक्ष में कुछ असन्तोष युक्त शक्ति प्राप्त रहेगी तथा चौथी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धनराशि में देख रहा है,

इसलिये आयु और जीवन की दिनचर्या में चिन्ता कारक योग बनता रहेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ हानि का योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये बाहरी स्थानों के योग से आमदनी के मार्ग में वृद्धि प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का बड़ा भारी सम्बन्ध प्राप्त करेगा और खर्च के योग से रोजगार में शक्ति प्राप्त रहेगी।

वृषभ लग्न में ६ मंगल
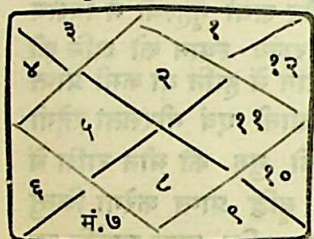
नं० १३८

यदि तुला का मंगल—छठें शत्रु स्थान में एवं झंझट स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्च के स्थान में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थान के सम्बन्ध में कुछ झंझट युक्त वातावरण रहेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण से एवं शत्रु स्थान में बैठने के दोष के कारण से स्त्री पक्ष में कुछ अशान्ति रहेगी और रोजगार के मार्ग में हानि एवं परेशानी रहेगी किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्ति प्रदायक होता है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा और चौथी उच्च दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और धर्म के स्थान में कुछ विशेष रुचि रहेगी एवं विशेष खर्च भी करेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थानों से सम्बन्ध भी रहेगा और आठवीं दृष्टि से देह स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कमजोरी और परेशानी के कारण प्राप्त होंगे क्योंकि मंगलको व्ययेश होने का दोष है, इसलिये देह में रक्त विकार एवं वीर्य दोष का रोग उत्पन्न करेगा।

वृषभ लग्न में ७ मंगल
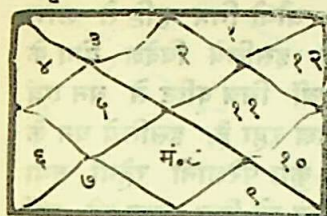
नं० १३९

यदि वृश्चिक का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो स्त्री स्थान में और रोजगार के स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण स्त्री पक्ष में एवं रोजगार के पक्ष में कुछ हानि एवं कुछ परेशानी रहेगी किन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता मिलेगी और खर्चा विशेष चालू रहेगा और चौथी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ मतभेद और कुछ हानि का योग मिलेगा और राज समाज के मार्ग में उन्नति के लिये कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी तथा कारबार में कुछ दिक्कतें रहेंगी और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष के कारण से देह में कुछ कमजोरी तथा कुछ रक्त विकार रहेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये उपरोक्त दोष के कारण ही धन के कोष स्थान में कमजोरी और हानि प्राप्त होगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ हानि एवं परेशानी रहेगी।

वृषभ लग्न में ८ मंगल
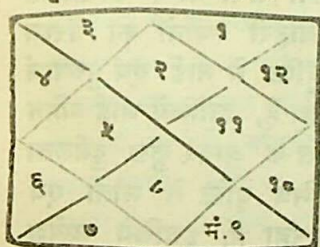
नं० १४०

यदि धन का मंगल—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो मंगल को व्ययेश होने का दोष एवं अष्टम में बैठने का दोष होने के कारण से स्त्री स्थान में बड़ा संकट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में भी बड़ी कठिनाइयाँ रहेंगी तथा दूसरे स्थान में रोजगार का संयोग बनेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ हानि रहेगी और आठवें स्थान से उदर का

सम्बन्ध भी रहता है इसलिये पेट के अन्दर कुछ शिकायत रहेगी तथा कुछ मूत्रेन्द्रिय में विकार प्राप्त होगा और चौथी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये विदेश योग के द्वारा धन का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में कमी रहेगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ परेशानी रहेगी तथा आठवीं नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में हानि प्राप्त होगी और दैहिक पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर कमजोरी रहेगी तथा अपने गृहस्थ जीवन में परेशानी अनुभव करेगा।

वृषभ लग्न में ९ मंगल

नं० १४१
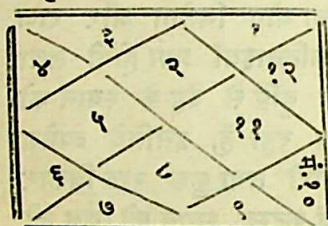
यदि मकर का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है, तो स्त्री पक्ष में कुछ भाग्यवानी प्राप्त करेगा और भाग्य की शक्ति से रोजगार के मार्ग में उन्नति पायेगा तथा गृहस्थ के अन्दर धर्म का पालन करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से भाग्य में कुछ कमी अनुभव करेगा और चौथी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को, स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा भाग्य की ताकत से खर्च की संचालन शक्ति पायेगा और बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाई एवं पुरुषार्थ स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कमजोरी रहेगी और पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर कुछ दुर्बलता एवं हिम्मत की कमी रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष के कारण से माता और भूमि-मकानादि के स्थान में कुछ हानि मिलेगी तथा घरेलू सुख में कुछ कमी रहेगी।

वृषभ लग्न में १० मंगल

नं० १४२

यदि कुम्भ का मंगल—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष से पिता स्थान में हानि प्राप्त करेगा तथा राज समाज कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और स्त्री पक्ष में प्रभाव की अधिकता एवं कुछ कटुता प्राप्त होगी और रोजगार को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से ऊँचा उठाने का प्रयत्न विशेष करता रहेगा और खर्चा विशेष होने के कारणों से, इज्जत आबरू बनाने में कुछ कठिनाइयाँ रहेंगी तथा चौथी दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश दोष के कारण ही देह में कमजोरी और कुछ रक्त विकार रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये माता के और भूमि के पक्ष में सुख की कमी रहेगी और घरेलू सुख शान्ति में कुछ बाधायें प्राप्त होती रहेंगी और आठवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ क्रोध रहेगा और दसम स्थान पर मंगल का बैठना उत्तम होता है, इसलिये मान प्रभाव रहेगा।

यदि मीन का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह अथवा गरम स्वभाव का ग्रह विशेष उत्तम फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बहुत लाभ प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष से लाभ रहेगा तथा रोजगार के मार्ग में बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से स्त्री पक्ष में एवं आमदनी के पक्ष में कुछ असन्तोष रहेगा और चौथी मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में कुछ हानि प्राप्त रहेगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ परेशानी रहेगी

वृषभ लग्न में ११ मंगल

नं० १४३

तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए विद्या में कुछ कमजोरी और संतान पक्षमें कुछ हानि और कष्ट प्राप्त होगा और आठवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुलाराशि में देख रहा है, छठें स्थान पर गरम ग्रहकी दृष्टि शुभ होती है, अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा और खर्च एवं लाभ की शक्ति के द्वारा प्रभावकी जागृति रहेगी तथा बड़ा स्वार्थ युक्त व्यवहार रखेगा।

वृषभ लग्न में १२ मंगल

नं० १४४
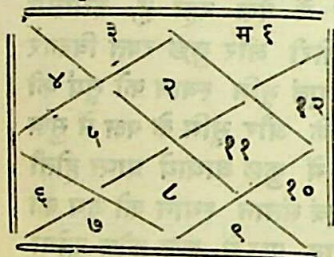
यदि मेष का मंगल— बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी मेष राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु स्त्री स्थानपति मंगल व्ययेश होकर स्वस्थान में बैठ गया है, इसलिये विशेष दोषी होने के कारण स्त्री स्थान में हानि प्राप्त करेगा तथा रोजगार में भी हानि का योग बनेगा और दूसरे स्थान में रोजगार की शक्ति बनेगी और चौथी नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इस-लिए भाई बहन के स्थान में हानि प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ में कमजोरी रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला-राशि में देख रहा है, अतः शत्रु स्थान पर गरम ग्रह की दृष्टि उत्तम होती है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में खर्च की ताकत से सफलता प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री एवं रोजगार के मार्ग में कमजोरियों के होते हुए भी शक्ति प्राप्त करेगा।

धन-कोष, कुटुम्ब, विद्या, संतान स्थानपति—बुध

वृषभ लग्न में १ बुध

नं० १४५

यदि वृषभ का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और दैहिक कर्म के द्वारा धन और मान प्रतिष्ठा और सुन्दरता पायेगा तथा संतान और कुटुम्ब की शक्ति का श्रेष्ठ योग प्राप्त होगा, इसके अतिरिक्त विवेकी बुध, बुद्धि विद्याका स्वामी होकर देह पर मित्र भाव में बैठा है इसलिये बुद्धि की लावण्यता का उत्तम आनन्द और उन्नति प्राप्त होगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को, मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री पक्ष में सुन्दर सहयोग मिलेगा तथा रोजगार के मार्ग में बुद्धि योग एवं धन की शक्ति से उन्नति एवं सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में २ बुध
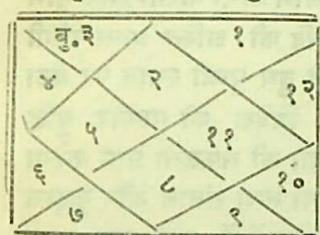
नं० १४६

यदि मिथुन का बुध—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन के कोष में बड़ी सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब की महानता रहेगी और बड़ी इज्जत प्राप्त रहेगी तथा विद्या स्थान में शक्ति मिलेगी और विद्या बुद्धि के योग से धन की वृद्धि प्राप्त होगी किन्तु धन स्थान कुछ बन्धन का-सा कार्य भी करता है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिए आयु पक्ष में उन्नति प्राप्त करेगा तथा जीवन में शानदारी प्राप्त रहेगी।

यदि कर्क का बुध—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि की उत्तम

शक्ति पायेगा और संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा धन की प्राप्ति करेगा तथा कुटुम्ब शक्ति का सुन्दर योग बनेगा और भाई बहन के योग का लाभ प्राप्त होगा तथा विवेकी बुध के पराक्रम स्थान पर बैठने से विवेकी शक्ति के द्वारा बड़ी हिम्मत प्राप्त रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि प्राप्त होगी और भाग्यवान् सफल और पुरुषार्थी समझा जायगा तथा धर्म का पालन करेगा और सज्जनता युक्त मार्ग से कार्योन्नति करता रहेगा।
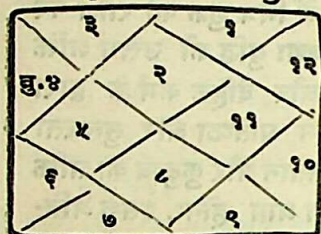
वृषभ लग्न में ३ बुध

नं० १४७

वृषभ लग्न में ४ बुध

नं० १४८
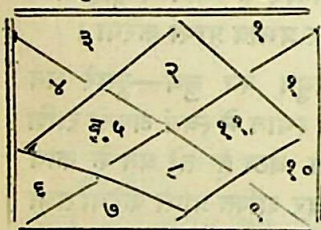
यदि सिंह का बुध—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो माता की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और भूमि मकान आदि की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा विवेकी बुध पृथ्वी स्थान पर बैठा है, इसलिये विवेक की गम्भीर बुद्धि योग से विद्या की सफलता प्राप्त करेगा और बुद्धि विद्या के योग से धन का संग्रह करेगा तथा संतान और कुटुम्ब का सुख प्राप्त रहेगा और घरेलू सुख के साधनों में लावण्यता प्राप्त रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये पिता की शक्ति का उत्तम लाभ पायेगा और राज समाज में मान प्राप्त करेगा तथा कारबार में बुद्धि योग से धनोन्नति प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का बुध—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में स्वयं अपनी राशि में उच्च का होकर स्वक्षेत्री बैठा है तो विवेकी

बुध, बुद्धि स्थान में उच्च का होने से विशेष बलवान् हो गया है, इसलिए विद्या बुद्धि में विशेष शक्ति प्राप्त रहेगी और वाणी के अन्दर बड़ी भारी योग्यता रहेगी तथा बुद्धि योग से धन की प्राप्ति करेगा और सन्तान एवं कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होगी और सातवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कमजोरी तथा कमी अनुभव करेगा अर्थात् आमदनी पर हमेशा त्रुटि प्रतीत होगी इसलिये विद्या और सन्तान पक्ष के द्वारा धन की वृद्धि करने का मार्ग बनेगा तथा बुद्धि योग से इज्जत प्राप्त होगी।
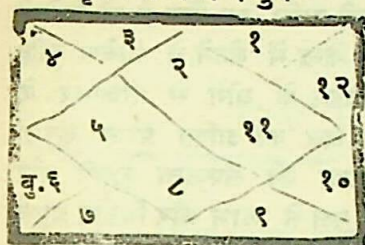
वृषभ लग्न में ५ बुध

नं० १४९

वृषभ लग्न में ६ बुध
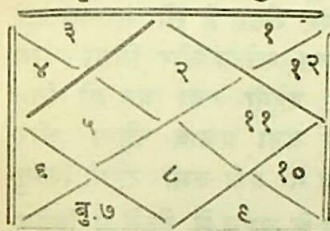
नं० १५०

यदि तुला का बुध—छठें शत्रु स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा तो धन के कोष में बड़ी कमी प्राप्त करेगा और कुटुम्ब में कमी तथा कुछ मतभेद रहेगा और सन्तान पक्ष में कष्ट प्राप्त रहेगा तथा विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी और शत्रु पक्ष से कुछ अशान्ति रहेगी किन्तु विवेकी बुध की विवेक शक्ति के योग से शत्रु पक्ष में एवं झगड़े-झंझटों के स्थान में कुछ सफलता प्राप्त करेगा और परिश्रम या कुछ परतन्त्रता के योग से धन की प्राप्ति करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का लाभ प्राप्त करेगा और दूसरे स्थानों में इज्जत प्राप्त रहेगी।

वृषभ लग्न में ७ बुध

नं० १५१

यदि वृश्चिक का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो विवेकी बुध के केन्द्र में बैठने से विवेक बुद्धि और विद्या के योग से रोजगार के मार्ग से धन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या की सफलता रहेगी और सन्तान पक्ष से लाभ और विनोद प्राप्त रहेगा तथा बुद्धिमती स्त्री मिलेगी और धन तथा कुटुम्ब का सुन्दर योग पायेगा और गृहस्थ संचालन के मार्ग में बुद्धि योग से आनन्द प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और मान सम्मान प्राप्त करेगा बुद्धि विवेक और धन की शक्ति से इज्जत बढ़ेगी और लौकिक कार्यों में बड़ा कार्य कुशल और प्रेमी स्वभाव होगा।

वृषभ लग्न में ८ बुध

नं० १५२

यदि धन का बुध—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में कमजोर रहेगी तथा धन की संग्रह शक्ति का बड़ा प्रभाव रहेगा और कुटुम्ब सुख में बड़ी कमी रहेगी किन्तु विवेकी बुध के अष्टम में बैठने से विवेक शक्ति के द्वारा पुरातत्व सम्बन्ध में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त रहेगी तथा जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग रहेगा और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये भारी प्रयत्न करता रहेगा अतः कठिनाई के मार्ग से धन की प्राप्ति रहेगी और कुटुम्ब की थोड़ी शक्ति का योग प्राप्त होगा।

वृषभ लग्न में ९ बुध

नं० १५३

यदि मकर का बुध—नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य और बुद्धि के योग से धन की प्राप्ति का उत्तम योग बनेगा तथा बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और विवेकी बुध, भाग्य का योग पाकर विद्या स्थान में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और सन्तान पक्ष में उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी तथा कुटुम्ब का आनन्द प्राप्त रहेगा और धर्म के मार्ग से पालन और मनन रखेगा तथा न्यायोक्त मार्ग से उन्नति करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान से लाभ युक्त सम्बन्ध रहेगा और पराक्रम शक्ति के अन्दर बुद्धि और धन के योग से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि कुम्भ का बुध—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो विवेकी बुध का विद्यास्थान-पति होकर राज्य में बैठने से उत्तम रूप से विद्या ग्रहण करेगा और राज-भाषा में सफलता पायेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा और राज-समाज में बड़ा मान पायेगा तथा बुद्धि योग द्वारा उत्तम कर्म करके कारबार से धन की प्राप्ति करेगा और संतान पक्ष में बहुत सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का वैभव अच्छा रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष में लाभ शक्ति पायेगा और भूमि मकानादि का सुन्दर सहयोग प्राप्त होगा तथा घरेलू वातावरण में सुख प्राप्ति के अच्छे साधन प्राप्त होंगे।
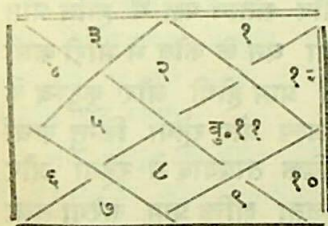
वृषभ लग्न में १० बुध

नं० १५४

वृषभ लग्न में ११ बुध

नं० १५५
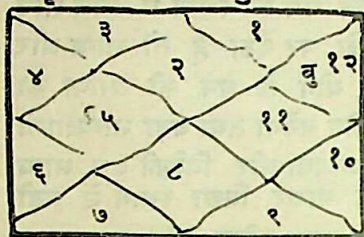
यदि मीन का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी कमजोरी और कठिनाइयों के योग से लाभ की प्राप्ति करेगा तथा धन के कोष में कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब का अल्प लाभ रहेगा तथा विद्या और संतान पक्ष में भी कुछ कमजोरी रहेगी तथा आमदनी और धन कुटुम्ब की कमजोरियों के कारण से दिमाग के अन्दर परेशानी अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को उच्च दृष्टि से स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या में कमी होते हुए भी विवेकी बुध की उच्च दृष्टि के बल से विद्या में शक्ति मिलेगी और इसी आधार के बल से संतान पक्ष में कमी होते हुये भी संतान शक्ति रहेगी।

वृषभ लग्न में १२ बुध

नं० १५६
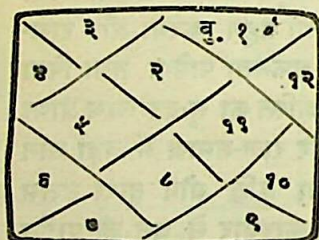
यदि मेष का बुध—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो विद्या के पक्षमें कमजोरी रहेगी और संतान पक्ष में हानि प्राप्त करेगा तथा धन के कोष में भारी कमी और हानि प्राप्त होगी और कुटुम्ब के स्थान में अल्प योग रहेगा किन्तु खर्चा बहुत अधिक तायदाद में रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में धन की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों में इज्जत पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये विवेकी बुध की विवेक शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में अपना कार्य सफल करने का मार्ग बनावेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में धन और बुद्धि के योग से कामयाबी पायेगा।

आयु, पुरातत्व, लाभ स्थानपति—गुरु

वृषभ लग्न में १ गुरु

नं० १५७
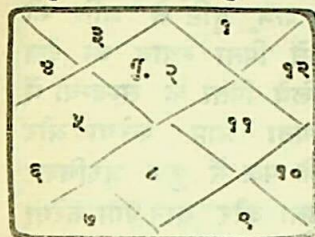
यदि वृषभ का गुरु—प्रथम केन्द्र में देह के स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु का लाभ प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्ध से मान और लाभ प्राप्त करेगा तथा देह के परिश्रम से लाभ की वृद्धि करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से पंचम संतान स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष से तथा लाभेश की सुन्दरता से संतान पक्ष में कुछ लाभ और कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि के स्थान से योग्यता और अनुभव की शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चक राशि में स्त्री और रोजगार के स्थान को देख रहा है, इसलिये रोजगार और स्त्री के पक्ष में कुछ कमी के साथ लाभ प्राप्त करेगा और नवीं नीच दृष्टि से शनि की मकर राशि में भाग्य और धर्म स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ कमी या हानि प्राप्त करेगा यश में कमी प्राप्त होगी और देह के पक्ष में कुछ परेशानी के साथ २ मान प्राप्त करेगा और लाभ की उन्नति करने के लिये सदैव परिश्रम करता रहेगा तथा प्रभाव युक्त रहेगा।

यदि मिथुन का गुरु—धन भवन में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में—अष्टमेश होने के कारण कुछ हानि करेगा और लाभेश होने के कारण वृद्धि करेगा और पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा और कुटुम्ब स्थान में इसी कारण से कुछ विघ्नयुक्त शक्ति प्राप्त रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी धन राशि में आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा और जीवन के समय को अमीरात के ढंग से व्यतीत करेगा

और पाँचवीं सामान्य शत्रु दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में छठें शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में दानाई के ढंग से प्रभाव रखेगा तथा नवमी शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पिता स्थान को देख रहा है, इसलिये पिता के सम्बन्धों में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा और राज-समाज के पक्ष में कुछ अरुचिकर रूप से सफलता और मान प्राप्त करेगा और इज्जतदार माना जायगा तथा अपने कारबार की उन्नति करने के मार्ग में बड़ा परिश्रम करेगा तथा कुछ कठिनाइयों के योग से धन की वृद्धि करेगा।

वृषभ लग्न में २ गुरु

नं० १५८

वृषभ लग्न में ३ गुरु
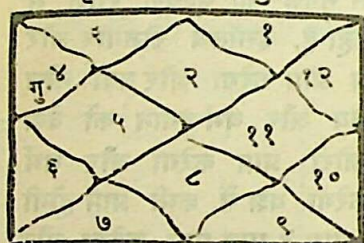
नं० १५९

यदि कर्क का गुरु—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर उच्च राशि में चन्द्र के घर में बैठा है तो पराक्रम शक्ति से महान् हिम्मत प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और नवम दृष्टि से मीन राशि में स्वयं अपने लाभ स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये धन के विशेष लाभ की आमदनी के रूप में प्राप्त करेगा तथा बड़ी प्रभाव शक्ति रखेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में रोजगार तथा स्त्री भवन को देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में तथा रोजगार पक्ष में कुछ कठिनाई के मार्ग से प्रभाव शक्ति और लाभ की उन्नति प्राप्त करेगा और आयु की वृद्धि और पुरातत्व का लाभ तथा जीवन में सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से शनि की मकर राशि में भाग्य और धर्म के नवम स्थान को देख रहा है इसलिये भाग्य में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ अरुचि

युक्त भावनायें रखेगा और दिनचर्या में बड़ी भारी सुस्ती प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ४ गुरु

नं० १६०
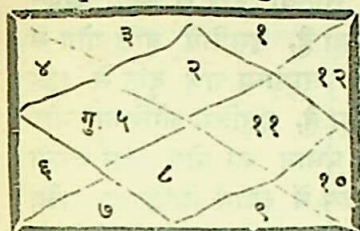
यदि सिंह का गुरु—चौथे केन्द्र माता के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के कारण माता के सुख में कुछ कमी करेगा, लाभेश होने के कारण आमदनी और सुख आदि के साधन प्राप्त रहेंगे और मकान जायदाद की पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृटि से स्वयं अपने अष्टम आयु एवं पुरातत्व स्थान को धन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा तथा जीवन का समय प्रभाव युक्त रूप से सुख पूर्वक व्यतीत करेगा किन्तु घर के अन्दरूनी सुखों में कुछ विघ्न बाधायें भी प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पिता स्थान को देख रहा है, इसलिये पिताके सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान प्रतिष्ठा, कारबार के पक्ष में कुछ कमी का योग करेगा और नवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि मेख राशि में खर्च स्थान को देख रहा है इसलिये खर्चा खूब रहेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध लाभ युक्त रहेगा तथा आमदनी से अधिक खर्च करने का ढंग रहेगा।

यदि कन्या का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो विद्या एवं संतान पक्ष में प्रभाव शक्ति पायेगा तथा वाणी के अन्दर बड़ी योग्यता रहेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष से सन्तान पक्ष में कुछ बाधायें प्राप्त करेगा किन्तु लाभेश होने से संतान पक्षमें लाभ रहेगा और इन्हीं कारणों से विद्या स्थानमें कुछ दिक्कतों के सहित लाभ शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरातत्व का लाभ बुद्धि-संयोग से करेगा तथा पंचम नीच दष्टि से शत्रु शनि की मकर राशि में भाग्य स्थान

वृषभ लग्न में ५ गुरु

३ १ ४ २ १२ ११ ५ गु. ६ ८ १० ७ ९

नं० १६१

को देख रहा है इसलिये भाग्य में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और धर्म के पालन में कुछ हानि करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र लाभ स्थान को मीन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग से आमदनी अच्छी प्राप्त करेगा और नवमी सामान्य शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये जीविका और लाभ के पक्ष से देह में कुछ परिश्रम और प्रभाव का योग प्राप्त करेगा और बातचीत के अन्दर भलमनसाहत के रूप में स्वार्थ सिद्धि का सदैव ध्यान रखेगा तथा आयु की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और जीवन में धन की वृद्धि करने में लगा रहेगा।

वृषभ लग्न में ६ गुरु

नं० १६२
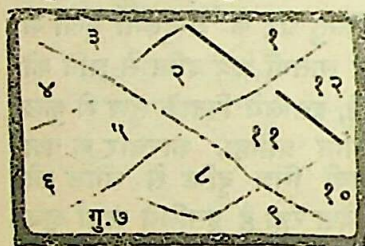
यदि तुला का गुरु—छठें शत्रु स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में दानाई से काम निकालेगा किन्तु लाभेश अष्टमेश होकर शत्रु घर में बैठने से लाभ के सम्बन्धों में कुछ कमी तथा परिश्रम और परतन्त्रता का योग प्राप्त करेगा तथा जीवन के समय में और आयु के पक्ष में कुछ परेशानी तथा कुछ घिराव सा प्रतीत होगा और पुरातत्व लाभ की कुछ कमी रहेगी तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पिता स्थान को देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा और कारबार, राज-समाज के पक्ष में कुछ प्रभाव की कमी के सहित लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध कुछ परेशानी से युक्त लाभप्रद रहेगा और परिश्रम करना पड़ेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से धन भवन को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये अधिक प्रयत्न और परिश्रम से सफलता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के

योग से कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ लाभ शक्ति का योग प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ७ गुरु

नं० १६३
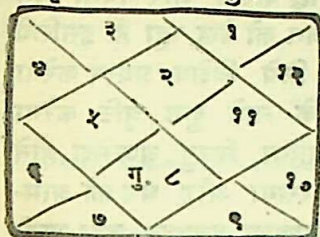
यदि वृश्चिक का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो आयु और पुरातत्व के सम्बन्ध में लाभ प्राप्त करेगा और स्त्री स्थान में अष्टमेष होसे से कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और लाभेश होने से लाभ करेगा और रोजगार के पक्ष में कुछ परिश्रम के योग से प्रभाव शक्ति प्रदान करेगा और पाँचवीं दृष्टि से स्वयं अपने लाभ स्थान को मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये दैनिक कार्य रोजगार के मार्ग से बँधी हुई अच्छी आमदनी के रूप में अच्छा लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं सामान्य शत्रु की दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि से देह को देख रहा है, इसलिये देह में आमदनी के मार्ग से कुछ थकान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा नवमीं उच्च दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में तीसरे स्थान को देख रहा है इसलिये पराक्रम की विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति भी प्राप्त रहेगी और धन लाभ के मार्ग में बड़ी तत्परता और स्वार्थ शक्ति से सज्जनता दिखाकर लाभ करेगा।

वृषभ लग्न में ८ गुरु

नं० १६४

यदि धन राशि का गुरु—अष्टम आयु स्थान में स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पायेगा किन्तु लाभेश के अष्टम में बैठने से आमदनी के मार्ग में कठिनाई और परिश्रम से सफलता प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में खर्च एवं बाहरी स्थान को देख रहा है। इसलिये खर्च खूब करेगा और बाहरी

स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में धन एवं कुटुम्ब स्थान को देख रहा है, इसलिए परिश्रम शक्ति के योग से धन जन की वृद्धि करेगा और नवमीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सुख भवन को देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्ति के साधनों की वृद्धि करने के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और माता के सुख में अष्टमेश होने के नाते कुछ त्रुटि करेगा तथा आमदनी के मार्ग में कुछ असंतोष रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के नाते जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रखेगा और धन की आमदनी बढ़ाने के लिए दूसरे स्थानों का सम्बन्ध बनाकर बड़ा भारी प्रयत्न करेगा।

वृषभ लग्न में ९ गुरु
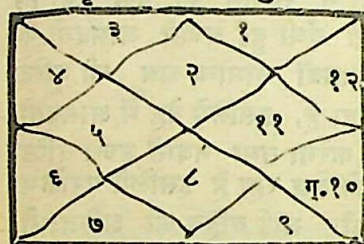
नं० १६५

यदि मकर का गुरु—नवम त्रिकोण धर्म एवं भाग्य स्थान में शत्रु शनि की नीच राशि पर बैठा है तो पुरातत्व शक्ति के सम्बन्ध से भाग्य में कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म पालन में अश्रद्धा रखेगा तथा आमदनी की कमी से दुःख अनुभव प्राप्त करेगा और जीवन तथा आयु के स्थान में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा और पाँचवी सामान्य शत्रु दृष्टि से वृषभ राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी करेगा तथा परिश्रम के योग से कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में पराक्रम एवं भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये पराक्रम की वृद्धि करेगा और भाई बहिन की सहयोग शक्ति प्राप्त रहेगी तथा बड़ी हिम्मत से काम करेगा और नवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में पंचम स्थान को देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ कमी के साथ शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में कुछ पुरातत्व बुद्धि के योग से वृद्धि प्राप्त करेगा परन्तु भाग्य में नीच ग्रह के बैठने के सुयश और बरक्कत की कमी प्राप्त होगी।

वृषभ लग्न में १० गुरु

नं० १६६
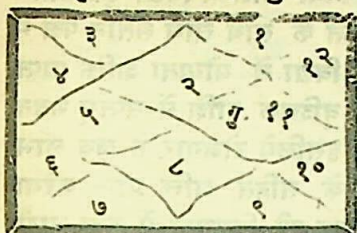
यदि कुम्भ का गुरु—केन्द्र में दशम स्थान पर शत्रु शनि की कुम्भ राशि में बैठा है तो अष्टमेश होने के नाते पिता स्थान में कुछ कष्ट और कमी प्राप्त करेगा और राज समाज कारबार के स्थान में कुछ कमजोरी के सहित मान और प्रभाव प्राप्त करेगा और लाभ प्राप्ति के मार्ग में कुछ असंतोष युक्त सफलता मिलेगी और पाँचवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने का विशेष प्रयत्न करेगा और कुटुम्ब का कुछ सहयोग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सुख भवन को देख रहा है, इसलिये कुछ असंतोष के सहित मातृ सुख और मकानादि की शक्ति पायेगा और नवीं सामान्य शत्रु दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में छठें स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी के सहित प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और मान व उन्नति के लिये अधिक परिश्रम कर्म करेगा और आयु की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ परिश्रम के योग से लाभ प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ प्रभाव शक्ति प्राप्त रहेगी।

यदि मीन का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में मजबूती प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के नाते कुछ परिश्रम या कुछ कठिनाई रहेगी और आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का अच्छा लाभ रहेगा और पाँचवीं उच्च दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में पराक्रम एवं भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये पराक्रम का विशेष लाभ प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की विशेष शक्ति

वृषभ लग्न में ११ गुरु

नं० १६७

रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में विद्या एवं संतान स्थान को देख रहा है, इसलिये कुछ दिक्कत के साथ साथ संतान पक्ष में लाभ का योग प्राप्त करेगा और बुद्धि विद्या में योग्यता शक्ति प्राप्त करेगा और नवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में सप्तम् भवन रोजगार और स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये रोजगार से खूब लाभ करेगा तथा स्त्री स्थान में कुछ कठिनाई के सहित शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री स्थान में प्रभाव रहेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ा भारी प्रभाव और मस्ती प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न १२ गुरु
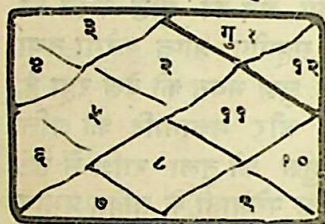
नं० १६८

यदि मेष का गुरु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त करेगा। नवीं दृष्टि से स्वयं अपने आयु स्थान को धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये व्यय स्थान के दोष के कारण कभी २ जीवन पर संकट प्राप्त होंगे किन्तु फिर भी आयु की शक्ति मिलेगी और पुरातत्व का कुछ कमजोरी से लाभ मिलेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सुख भवन को देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाई के योग से सुख प्राप्ति के साधनों में वृद्धि करेगा और सातवीं सामान्य शत्रु दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में छठें शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने के लिये बड़ी दानाई से काम लेगा और खर्च की अधिकता के कारणों से कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा अष्टमेश के बाहरवें स्थान पर बैठने से बाहरी स्थानों के सुन्दर सम्बन्ध के कारणों से आमदनी की अच्छी शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु खर्चा सदैव अधिक तायदाद में रहेगा।

———

देह, शत्रु रोग स्थान पति—शुक्र

वृषभ लग्न में १ शुक्र

नं० १६९

यदि वृषभ का शुक्र प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वक्षेत्री बैठा है तो देह में कुछ सुन्दरता, प्रभाव और आत्मबल की शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुछ रोग कुछ परिश्रम और कुछ शत्रु पक्ष में झंझट इत्यादि प्रात्त करेगा किन्तु शत्रु पक्ष का स्वामी लग्न में स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा और देह की चतुराई और शक्ति से बड़ी भारी हिम्मत रखेगा और सातवीं सामान्य मित्र की दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में स्त्री भवन को देख रहा है, इसलिये स्त्री भवन में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और दैहिक परिश्रम की शक्ति और चतुराई के योग से रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और लौकिक भोगादि के सम्बन्धों में तथा मान और प्रभाव की वृद्धि के स्थान में विशेष ध्यान रखेगा और आत्मबल की विशेष शक्ति से सफलतायें मिलेंगी।

यदि मिथुन का शुक्र—धन भवन में मित्र वुध की राशि पर बैठा है तो देह के परिश्रम से धन की वृद्धि करने में विशेष प्रयत्न करता रहेगा और यथा सम्भव धन और जन की वृद्धि करेगा और विशेष चतुराइयों के योग से इज्जत और मान प्राप्त करेगा और धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये देह के सुख में परेशानी सी रहेगी तथा सातवीं सामान्य शत्रु दृष्टि से गुरु की धन राशि में अष्टम आयु स्थान को देख रहा है, इसलिए आयु और जीवन के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व के स्थान में भी कुछ नीरसता से

वृषभ लग्न में २ शुक्र

नं० १७०

सफलता प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में चतुराई के योग से लाभ प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ३ शुक्र

नं० १७१

यदि कर्क का शुक्र—तीसरे पराक्रम स्थान पर सामान्य मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह की शक्ति के द्वारा महान् परिश्रम करके सफलता प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में चतुराई और हिम्मत के द्वारा विजय प्राप्त करेगा और षष्ठेश होने के कारण भाई बहिन के पक्ष में कुछ वैमनस्यता के साथ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की मकर राशि में नवम भाग्य एवं धर्म स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म पालन में श्रद्धा रखेगा तथा पराक्रम और चतुराई के योग से यश और सफलता प्राप्त करेगा और देहाधीश, शत्रु छठें स्थान का स्वामी होकर पराक्रम स्थान पर बैठा है, इसलिये परिश्रम की अधिकता के कारण कभी-कभी थकान अनुभव करेगा किन्तु जबर्दस्त हिम्मत शक्ति रखेगा।

वृषभ लग्न में ४ शुक्र

नं० १७२

यदि सिंह का शुक्र—चौथे केन्द्र स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो षष्ठेश होने के नाते माता के सुख में कमी और वैमनस्य उत्पन्न करेगा और मातृ भूमि के स्थान से कुछ अलग करेगा और रहन-सहन मकान इत्यादि सुख के साधनों में कुछ अरुचिकर शक्ति प्रदान करेगा क्योंकि षष्ठ तथा देह का स्वामी सुख भवन में बैठा है, इसलिये कुछ कमी और झंझटों के सहित सुख के साधन अवश्य प्राप्त होंगे और शत्रु पक्ष में कुछ शान्ति और चतुराई से काम निकालेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में दशम पिता भवन और राज्य समाज

स्थान को देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष से शक्ति प्राप्त करेगा और राज-समाज कारबार आदि के स्थान में मान और सफलता प्राप्त करेगा तथा शान्ति प्रिय बनेगा।

वृषभ लग्न में ५ शुक्र

नं० १६३
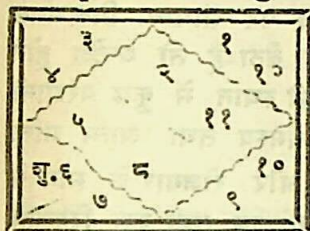
यदि कन्या का शुक्र—त्रिकोण पंचम स्थान में नीच राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा तथा विद्या में कुछ अपूर्ण रहेगा और बुद्धि की गुप्त चतुराई और बुद्धि के कठिन परिश्रम से शत्रु पक्ष में सफलता पा सकेगा और गुरु की मीन राशि में लाभ स्थान को सातवीं उच्च दृष्टि से देख रहा है, इसलिये दिमाग की कठिन सूझ और युक्तियों से, देह के परिश्रम से धन का लाभ अधिक करने में सफलता प्राप्त करेगा और आमदनी की वृद्धि करने में विशेष प्रयत्नशील रहेगा तथा बुद्धि में कुछ थकान और कुछ परेशानी अनुभव करेगा और देह की सुन्दरता में कुछ कमी और कुछ रोग प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों की तरफ से दिमाग में कुछ परेशानी रहेगी तथा वाणी की युक्ति से लाभ पायेगा।

वृषभ लग्न में ६ शुक्र

नं० १७४
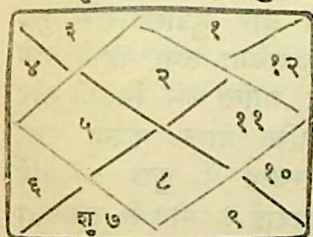
यदि तुला का शुक्र—शत्रु स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा तथा देह की शक्ति और युक्ति तथा मजबूत चतुराई के योग से शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा और देह के अन्दर सुन्दरता की कुछ कमी तथा कुछ रोग और कुछ परतन्त्रता प्राप्त करेगा और मामा के पक्ष में कुछ मजबूती पावेगा तथा सातवीं सामान्य मित्र दृष्टि से मंगल की मेश राशि में बारहवें बाहरी स्थान तथा खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में कुछ अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा और देहाधीश के छठें स्थान में बैठने से अधिक परिश्रम

तथा परेशानी अनुभव करेगा और शत्रु पक्ष से कुछ झंझट बाजी का योग चलता रहने से प्रभाव की वृद्धि का योग बनता रहेगा तथा स्वाभिमानी बनेगा।

वृषभ लग्न में ७ शुक्र

नं० १७५
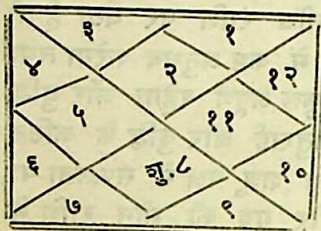
यदि वृश्चिक का शुक्र—केन्द्र में सातवें स्थान पर सामान्य मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो षष्ठेश होने के कारण स्त्री स्थान में कुछ परेशानी कुछ रोग वैमस्य तथा आत्म शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ दैहिक परिश्रम तथा कुछ दिक्कतों से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में विशेष रुचि के साथ युक्ति और चतुराइयों से तथा कठिनाइयों से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने देह स्थान को देख रहा है, इसलिये रोजगार तथा स्त्री पक्ष के संबंध से देह में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा देह में कुछ नामवरी भी प्राप्त करेगा और लौकिक कार्यों में बड़ी दक्षता रखेगा।

यदि धन राशि का शुक्र—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान पर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के पक्ष में कुछ रोगादिक कष्ट प्राप्त करेगा और देह की सुन्दरता में और सुडौलताई में कुछ कमी प्राप्त करेगा और दूसरे स्थानों में रह सकेगा तथा देह के लिये आराम और शान्ति कम मिलेगी और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ कठिनाई और गूढ़ चतुराई के योग से सफलता मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को देख रहा है, इसलिये कठिन परिश्रम के योग से धन की वृद्धि करने में तत्पर रहेगा और शत्रु पक्ष से कुछ कष्ट या झंझट प्राप्त करेगा तथा षष्ठेश के अष्टम स्थान में बैठने से
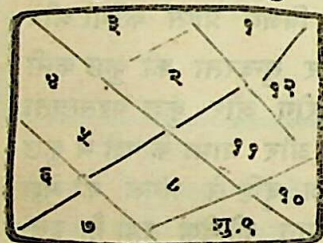
वृषभ लग्न में ८ शुक्र

नं० १७६

मामा के पक्ष में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा प्रभाव की कमी रहेगी और उदर के अन्दर कुछ बीमारी रहेगी।

नं० १७७
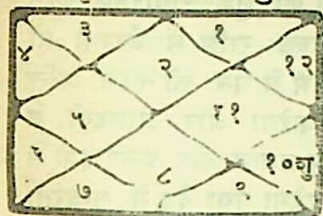
यदि मकर का शुक्र—त्रिकोण नवम भाग्य और धर्म स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो दैहिक परिश्रम के योग से भाग्यशाली बनेगा और शत्रु पक्ष में भाग्य शक्ति से ही सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ कठिनाई लिये हुए धर्म मार्ग का पालन करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के नाते धर्म की कुछ थोड़ी सी हानि करेगा और लग्नेश होने के नाते धर्म की वृद्धि करेगा तथा शत्रु पक्ष में धर्म और न्याय से काम लेगा तथा देह में कुछ सुन्दरता और कुछ रोग या दिक्कत प्राप्त करेगा तथा सातवीं सामान्य मित्र दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में तीसरे भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन और पराक्रम की शक्ति में कुछ अरुचि के साथ सफलता प्राप्त करेगा और अनेकों प्रकार के झगड़े झंझटों में कुदरती तौर से विजय प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १० शुक्र

नं० १७८
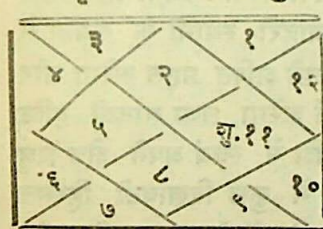
यदि कुम्भ का शुक्र—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो राज समाज में मान प्राप्त करेगा, कारबार में परिश्रम के योग से उन्नति करेगा और शत्रु स्थान पति होने से पिता के स्थान में कुछ वैमनस्य युक्त शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु पक्ष में प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और देह में तथा अपने कारबार में कुछ अहंकार रखेगा तथा बड़ी भारी चतुराई के योग से उन्नति के मार्ग में सफलता प्राप्त करता रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सुख भवन को

देख रहा है इसलिये अपनी उन्नति के कार्य कारणों से सुख प्राप्ति की परवाह नहीं करेगा और मातासे तथा जन्म भूमिसे कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुछ झगड़े के मार्गसे उन्नतिका सुन्दर योग पायेगा।

वृषभ लग्न में ११ शुक्र

नं० १७९
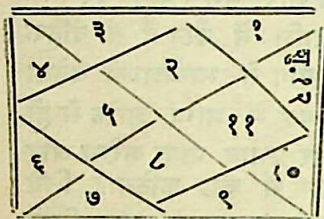
यदि मीन का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान पर उच्च राशि में बैठा है तो देह के परिश्रम से धन की लाभ शक्ति विशेष प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में महान् प्रयत्न और चतुराइयों से काम करता रहेगा तथा देह में सुन्दरता और कुछ रोग प्राप्त करेगा तथा शत्रु स्थान से लाभ युक्त रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से बुध की कन्या राशि में संतान घर को देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ कमी प्राप्त करेगा और विद्या ग्रहण करने के समय बड़ी लापरवाही के कारणों से कुछ झूठ बोलकर सफलता के लिये काम लेना पड़ेगा और बातचीत के अन्दर हेर-फेर से काम करेगा और प्रभाव की शक्ति से अच्छा लाभ प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १२ शुक्र

नं० १८०
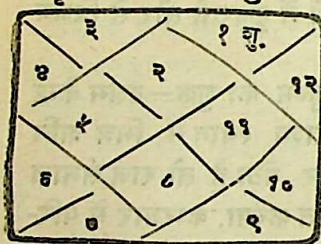
यदि मेष का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो देह में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और परिश्रम तथा बाहरी स्थानों के संयोग से खर्च की अच्छी शक्ति प्राप्त करेगा और विशेष खर्च करेगा तथा सातवीं दृष्टि से तुला राशि में स्वयं अपने क्षेत्र शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ दिखावटी हिम्मत शक्ति से प्रभाव रखेगा और शत्र, झगड़े, झंझटों से कुछ हानि और कमजोरी प्राप्त करेगा और मामा के पक्ष में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों में आने जाने का संयोग विशेष रूप से प्राप्त करेगा तथा देह में कुछ रोग प्राप्त करेगा और महान् चतुर ग्रह होने के कारण खर्च और प्रभावके मार्गमें महान् चतुराईके योगसे शक्ति प्राप्त करेगा।

भाग्य, राज्य, पिता स्थानपति—शनि

यदि वृषभ का शनि प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो देह में सुन्दरता प्राप्त करेगा और प्रभाव रखेगा

वृषभ लग्न में १ शनि

नं० १८१
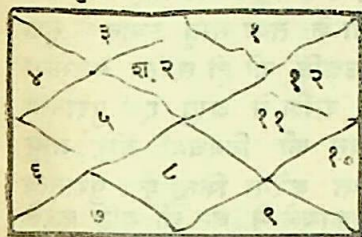
तथा देह के अवलोकन से भाग्यवान् समझा जायगा और धर्म को खूब समझने पर भी कर्म क्षेत्र का विशेष पालन करेगा क्योंकि दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कुम्भ राशि में राज्य स्थान को देख रहा है इसलिये राज-समाज में मान प्रतिष्ठा की उन्नति तथा कारबार की उन्नति खूब करेगा और पिता स्थान की शक्ति प्राप्त करेगा और देह में स्वाभिमान प्राप्त करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में भाई स्थान को देख रहा है, इसलिये बहिन भाई के पक्ष में कुछ नीरसता रखेगा किन्तु क्रूर ग्रह की तीसरे स्थान पर शक्ति बढ़ जाती है, इसलिये पराक्रम खूब करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाई भी अनुभव करेगा—किन्तु उन्नति की वृद्धि करेगा और राज्येश शनि, राज स्थान को देख रहा है, इसलिये दैहिक कार्यों में बड़ी भारी सफलता मिलेगी।

वृषभ लग्न में २ शनि
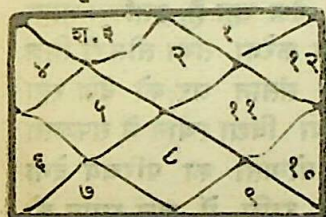
नं० १८२

यदि मिथुन का शनि धन एवं कुटुंब स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य और कर्म की शक्ति से धन की वृद्धि करेगा और पिता स्थान का सुख कुछ कम मिलेगा क्योंकि धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करताहै किन्तु राज समाज में बहुत सफलता और धन की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा

दशवीं शत्रु दृष्टि से गुरु की मीन राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये आमदनी विशेष प्राप्त करेगा, क्योंकि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह की शक्ति बलवान् हो जाती है और दृष्टि भी पड़ रही है, अतः आमदनी के मार्ग से भी धन संचय करेगा और कुटुम्ब की शक्ति में सफलता पावेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सुख भवन को देख रहा है, इसलिये माता के तथा मातृ स्थान के सुख में कमी प्राप्त करेगा और धन जन की उन्नति को ही सर्वस्व समझेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से गुरु की धन राशि में आयु एवं पुरातत्व स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या और आयु इत्यादि सम्बन्धों में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा किन्तु कुछ पुरातत्व स्थान में शक्ति पायेगा और धर्म के मुकाबले में धन की वृद्धि करने में ही तत्पर रहेगा।

वृषभ लग्न में ३ शनि

नं० १८३
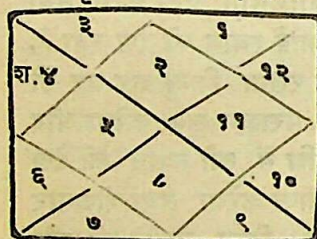
यदि कर्क का शनि—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान पर शत्रु चन्द्र की राशि में बैठा है तो कुछ वैमनस्यता युक्त भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् होता है, इसलिये उन्नति की सफलता प्राप्त करने के लिये विशेष पुरुषार्थ करेगा और पिता स्थान की कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और अपने कारबार के सम्बन्ध से भारी हिम्मत और सफलता प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की विशेष वृद्धि करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा तीसरी मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में विद्या एवं संतान घर को देख रहा है, इसलिये सन्तान शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और वाणी के द्वारा महान् योग्यता का परिचय देगा तथा दसवीं नीच दृष्टि से मंगल की मेष राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कमजोरी प्राप्त करेगा और

बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लापरवाही करेगा और प्रभावशाली तथा भाग्यवान् समझा जायगा।

वृषभ लग्न में ४ शनि

नं० १८४
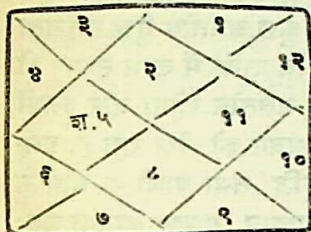
यदि सिंह का शनि—चौथे केन्द्र माता और भूमि के स्थान पर शत्रु सूर्य की राशि में बैठा है तो माता के स्थान में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और मकानादि सुख प्राप्ति के स्थानों में कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने दसवें पिता स्थान में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त शक्ति से पिता स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और कारबार की वृद्धि तथा राज समाज में मान प्राप्त करेगा किन्तु धर्मेश होने के कारण कारबार तथा व्यवहार में ईमानदारी वरतेगा परन्तु धर्म पालन के स्थान में कुछ कमजोरी इसलिये रहेगी कि अपने धर्म स्थान को नहीं देख रहा है, किन्तु फिर भी भाग्यवान् और सज्जनता की शक्ति प्राप्त रहेगी और तीसरी उच्च दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रहेगा और मामा के पक्ष में शक्ति मिलेगी और दसवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में मान और प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और बड़ा इज्जतदार समझा जायगा।

वृषभ लग्न में ५ शनि

नं० १८५

यदि कन्या का शनि—पाँचवें त्रिकोणविद्या एवं संतान स्थानपर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो संतान पक्ष में उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में चमत्कार पावेगा तथा धर्म को खूब समझने वाला बनेगा और बुद्धि योग से भाग्य की श्रेष्ठ उन्नति प्राप्त करेगा और पिता तथा कारबार के पक्ष

में विशेष रुचि के साथ काम करेगा और वाणी के द्वारा बड़ी नपी तुली बातें कहकर जनता में प्रभाव पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में कुछ असंतोष युक्त सफलता मिलेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से गुरु की मीन राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिए आमदनी के मार्ग में कुछ असंतोष रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन और जन की शक्ति प्राप्त करेगा बुद्धि तथा वाणी के योग से बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा धनवान् और भाग्यवान समझा जायेगा अतः मान और इज्जत प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ६ शनि

नं० १८६
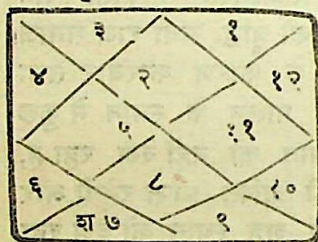
यदि तुला का शनि छठें शत्रु स्थान पर उच्च राशि में बैठा है तो शत्रु पक्ष में बहुत भारी प्रभाव रखेगा और कारबार राज-समाज के पक्ष में प्रभाव और सफलता प्राप्त करेगा तथा भाग्योन्नति के मार्ग में महान् प्रयत्न करते रहकर उन्नति और प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म का दिखावा अधिक करेगा तथा पिता स्थान से कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से गुरु की मीन राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु और जीवन की दिनचर्या में उन्नति के कार्य कारणों से कुछ फिकर मंदी रहेगी और कुछ परिश्रम के योग से पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से मंगल की मेष राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी प्राप्त रहेगी और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध कुछ अरुचिकर बनेगा और दशवीं शत्रु दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में तीसरे भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में कुछ असंतोष प्राप्त करेगा और पराक्रम की अधिकता के कारणों से कुछ परेशानी भी अनुभव करेगा किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान्

हो जाता है, इसलिये भाग्य और कर्म की शक्ति से प्रभाव की उन्नति करने का भारी प्रयत्न रखेगा।

यदि वृश्चिक का शनि—सातवें स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग में उन्नति प्राप्त करेगा तथा स्त्री स्थान में भाग्यवती स्त्री पायेगा परन्तु शत्रु राशि पर होने के कारण रोजगार एवं गृहस्थ के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत होंगी तथा पिता स्थान की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा उन्नति प्राप्त करेगा तथा उन्नति प्राप्त करने के लिये नित्य प्रयत्नशील रहेगा और तीसरी दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा, इसलिये भाग्य की बलवान् शक्ति प्राप्त करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा तथा यथाशक्ति धर्म का पालन करेगा और सज्जनता युक्त व्यवहार के द्वारा गृहस्थ का संचालन रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता शोभा और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ नीरसता प्राप्त रहेगी तथा भूमि मकानादि के सुख में कुछ त्रुटि अनुभव होगी किन्तु शोभा रहेगी।

वृषभ लग्न में ७ शनि

नं० १८७

यदि धन राशि का शनि—अष्टम आयु स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो कुछ अड़चनों के साथ २ आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा क्योंकि भाग्येश और राज्येश ग्रह जहाँ बैठता है वहाँ ही वृद्धि करता है। भाग्य स्थान में तथा पिता स्थान में कमी एवं हानि प्राप्त करेगा और धर्म का पालन नहीं कर सकेगा—तीसरी दृष्टि से स्वयं अपने दसम स्थान कुम्भ राशि को देख रहा है इसलिये पिता और

वृषभ लग्न में ८ शनि

नं० १८८
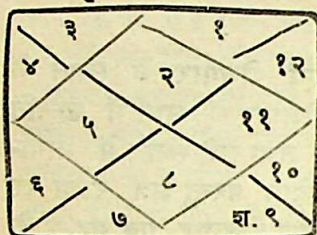
मान सम्मान के पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता प्राप्त करेगा—तथा भाग्योन्नति के लिए महान् कष्ट साध्य कार्य करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से बुधकी मिथुन राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिए धन की एवं जनकी वृद्धि करने में लगा रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में सन्तान पक्ष को देख रहा है, इसलिए विद्या एवं सन्तान पक्ष में भाग्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु धर्मेश राज्येश के अष्टम होने से उन्नति और यश प्राप्ति के मार्ग में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और अष्टम स्थान का शनि आयु की वृद्धि का योग बनाता है।

वृषभ लग्न में ९ शनि

नं० १८९
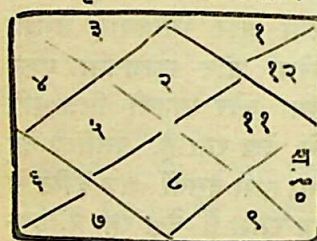
यदि मकर का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्य की महान् वृद्धि करेगा और मजबूत कर्म धर्म का पालन करेगा तथा उद्योग कर्म के मुकाबले में भाग्य और भगवान् को बड़ा मानेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का गहरा आनन्द प्राप्त करेगा और राज समाज, कारबार के मार्ग में न्याय और ईमानदारी से काम करेगा और इसी कारण से मान तथा सुयश प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से गुरु की मीन राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से अच्छा साधन लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में कुछ अरुचिकर सहायता प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ की बहुत सफलता प्राप्त करेगा किन्तु पुरुषार्थ से उन्नति करने के मार्ग में कुछ अरुचिकर

रूप से कार्य करेगा और दसवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य शक्ति के बल से शत्रु पक्ष में महान् प्रभाव प्राप्त करेगा और मामा के स्थान में वृद्धि पायेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में बहुत सफलता प्राप्त करेगा और परिश्रम के योग से बहुत उन्नति करेगा।

वृषभ लग्न में १० शनि
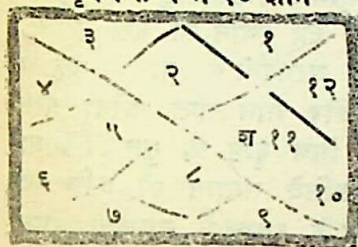
नं० १९०

यदि कुम्भ का शनि—दशम केन्द्र में पिता स्थान पर स्वक्षेत्री बैठा है तो पिता स्थान की महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज समाज कारबार के स्थान में भाग्य शक्ति के बल से भारी इज्जत और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा उत्तम कर्मेष्ठी बनेगा और धर्म कर्म का यथार्थ पालन करेगा तथा तीसरी नीच दृष्टि से मंगल की मेष राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में किसी कारण से कमजोरी या परेशानी प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ बुराई या कमी पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं सुख भवन को देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष में और घरेलू सुख सम्बन्धों में कुछ कुछ असन्तोष मानेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में स्त्री तथा रोजगार के स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ भाग्यवानी एवं कुछ नीरसता प्राप्त करेगा और दैनिक रोजगार के मार्ग में कुछ अकलसाहट समझा करेगा और ऊँचा भाग्यवान् समझा जायगा तथा लौकिक उन्नति करने के लिए बड़ी भारी चेष्टा और भारी प्रयत्न करके बड़ी भारी उन्नति करेगा तथा बड़े २ कारबार और बड़े २ व्यापार आदि में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा।

यदि मीन का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कुछ कठिन कार्यों के द्वारा विशेष सफलता प्राप्त करेगा और पिता पक्ष से भी लाभ की साधन शक्ति

कुछ नीरसता से प्राप्त करेगा तथा ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह विशेष फलदाता होता है, इसलिये भाग्य की शक्ति से किसी कार्य द्वारा विशेष लाभ प्राप्ति के साधन प्राप्त करेगा और धन की शक्ति को बढ़ाने के लिए महान् कार्य करेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में देह स्थान को देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग से देह में प्रभाव और मान प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से, बुध की कन्या राशि में सन्तान पक्ष को देख रहा है इसलिये सन्तान की शक्ति का सुन्दर सहयोग मिलेगा और बुद्धि विद्या के स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ कठिनाई अनुभव करेगा और पुरातत्व का कुछ दिक्कत से लाभ पावेगा।
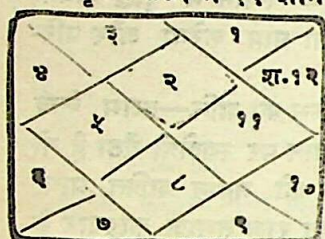
वृषभ लग्न में ११ शनि

नं० १९१

वृषभ लग्न में १२ शनि

नं० १९२
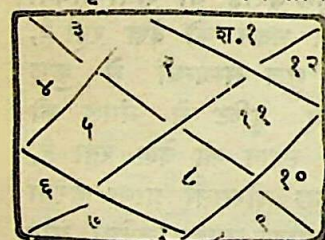
यदि मेष का शनि—बारहवें स्थान पर नीच राशि में बैठा है तो पिता स्थान की हानि प्राप्त करेगा क्योंकि शनि का स्थान बल और राशि बल दोनों ही निषेध तथा कमजोर हो गये हैं, इसलिये राज समाज कारबार मान प्रतिष्ठा सभी में कमजोरी करेगा तथा खर्च में भी परेशानी रखेगा और भाग्य में भी दुर्बलता प्राप्त करेगा किन्तु भाग्य के स्वामी शनि की भाग्य स्थान पर स्वक्षेत्र में दशवीं दृष्टि पड़ रही है, इसलिये भाग्य में कुछ शक्ति भी मिलेगी किन्तु यश की कमी रहेगी और धर्म का पालन कमजोर रहेगा और भाग्य की वृद्धि के लिये दूसरे स्थानों का कष्ट साध्य संपर्क स्थापित करना पड़ेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में धन स्थान को देख रहा है, इसलिये धन और जन की कुछ सफलता प्राप्त

करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और भाग्योन्नति के लिये कुछ अनुचित और गुप्त कार्य भी करना पड़ेगा तथा झगड़े झंझटों में मार्ग से फायदा और प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु राज्येश भाग्येश के नीच हो जाने से भाग्य के अन्दर बड़ा असंतोष रहेगा।

कष्ट, असत्य, गुप्तयुक्ति के अधिपति—राहु

वृषभ लग्न में १ राहु

नं० १ ३

यदि वृषभ का राहु—केन्द्र में देह के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य के अन्दर कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और देह में कुछ कष्ट तथा कुछ चिंता फिकर का योग प्राप्त करेगा तथा गुप्त चतुराई के बल से बड़ा मान प्राप्त करेगा और सत्य असत्य की परवाह न करके अधिक स्वार्थ सिद्धि का ध्यान रखेगा तथा जीवन में कभी-कभी कोई मूर्छा या चोट प्राप्त करेगा तथा देह में किसी प्रकार की कोई कमी महसूस करेगा और बहुत सी दिक्कतों को सहने के बाद कुछ शक्ति और हिम्मत प्राप्त करेगा तथा शरीर का सामान्य कद रहेगा तथा अपने व्यक्तित्व की उन्नति करने के लिए बड़ी भारी युक्ति से काम करेगा।

वृषभ लग्न में २ राहु

नं० १९४

यदि मिथुन का राहु—धन स्थान में उच्च राशि पर बैठा है तो बड़ी भारी चतुराई और युक्तियों से धन की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा धन के कोष में कभी २ कुछ परेशानी का योग भी प्राप्त करेगा और धन के सम्बन्ध में प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये धन की

वृद्धि करने के सम्बन्धों में कोई विशेष पोल अथवा मुफ्त का साधन प्राप्त कर लेने की विवेक शक्ति से योजनायें बनाता रहेगा और कुछ कुटुम्ब के स्थान में वृद्धि और शक्ति रहेगी किन्तु कोई संघर्ष भी प्राप्त करता रहेगा और धन की वृद्धि करने के लिए कठिन से कठिन कार्य को करने के लिए तत्पर रहेगा।

वृषभ लग्न में ३ राहु

नं० १९५
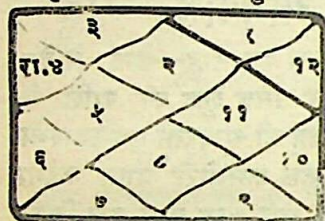
यदि कर्क का राहु—तीसरे स्थान पर मुख्य शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो भाई के पक्ष में हानि या कष्ट के कारण उत्पन्न करेगा और पराक्रम शक्ति के स्थान में कभी महान् संकट अनुभव करेगा किन्तु तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्ति प्रदान करता है, इसलिये पराक्रम की वृद्धि करने के लिये महान् हिम्मत से काम करेगा और कुछ परेशानियों से टकराने के बाद शक्ति प्राप्त करेगा तथा हिम्मत पर काफी भरोसा रहेगा किन्तु चन्द्रमा मन का स्वामी है और चन्द्रमा को राशि पर राहु बैठा है, इसलिये फिर भी मन के अन्दर अपनी शक्ति पर कोई गुप्त कमजोरी अनुभव करेगा और जाहिर में प्रभाव रहेगा।

वृषभ लग्न में ४ राहु

नं० १९६
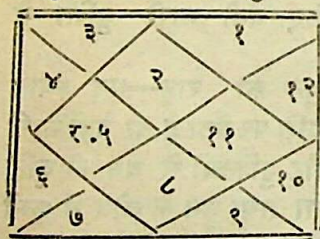
यदि सिंह का राहु केन्द्र में चौथे सुख स्थान पर परम शत्रु सूर्य की राशि में बैठा है तो माता के स्थान में हानि या कष्टका योग प्राप्त करेगा और सुख प्रप्ति के सम्बन्धों में बड़े २ विघ्न और अशांतिके कारण प्राप्त करेगा तथा जन्म भूमि से अलहदगी का योग प्राप्त करेगा और मकानादि रहने के स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और बहुत २ प्रकार के झंझट और दुखों को सहता रहेगा क्योंकि महान् तेजस्वी सूर्य की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी भारी हिम्मत शक्ति के द्वारा बाद में कुछ सुख के

साधनों को प्राप्त कर सकेगा और सुख प्राप्ति के मार्ग में गुप्त युक्तियों से धैर्य के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में ५ राहु

नं० १९७
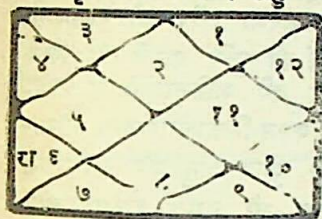
यदि कन्या का राहु—त्रिकोण में पंचम स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी चतुराई से काम लेगा और दिमाग की शक्ति के अन्दर बड़ी गहरी और दूर की सूझ का योग प्राप्त करेगा तथा विद्या की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु कभी २ दिमाग के अन्दर कुछ कमी और परेशानी के योग प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करने पर भी संतान का सहयोग प्राप्त करेगा और कन्या पर बैठा हुआ राहु स्वक्षेत्र के समान है, इसलिये बोलचाल के कार्यों में सत्य का पालन नहीं कर सकेगा तथा गुप्त विचारों के योग से काम लेता रहेगा तथा अधिक बोलने की आदत प्राप्त करेगा तथा कुछ नशा करना चाहेगा।

यदि तुला का राहु—छठें शत्रु के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो शत्रु स्थान में विजय प्राप्त करेगा क्योंकि छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाते हैं इसलिये गुप्त युक्तियों के बल से शत्रु पक्ष में तथा अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं के पक्ष में सफलता प्राप्त

वृषभ लग्न में ६ राहु

नं० १९८
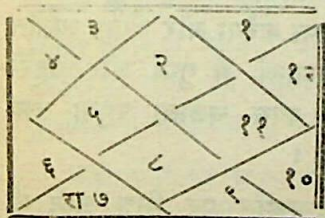
करेगा तथा महान् चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये गुप्त विचारों की महान् शक्ति और युक्तियों से प्रभाव की वृद्धि प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष के कारणों से कभी २ कुछ थोड़ी सी अशांति के योग भी प्राप्त करेगा किन्तु धैर्य और हिम्मत की शक्ति से सदैव सहारा प्राप्त करता रहेगा और मामा के सुख में कुछ कमी करेगा।

वृषभ लग्न में ७ राहु

नं० १९९
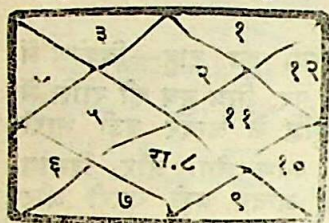
यदि वृश्चिक का राहु—केन्द्र में स्त्री स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो स्त्री पक्ष में कष्ट और कमी का योग प्राप्त करेगा और स्त्री स्थान के सुख सम्बन्धों की पूर्ति करने के लिये बहुत प्रकार की कठिनाइयों से तथा युक्तियों से काम निकालेगा तथा भोगादिक पक्ष में कुछ अनुचित लाभ भी प्राप्त करेगा तथा कुछ इन्द्रिय विकार का कष्ट भी प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कष्ट और हानियों के योग प्राप्त करेगा तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये रोजगार की सफलता के लिये कठिनाइयों से तथा गुप्त युक्तियों से काम निकालेगा तथा बड़ा भारी परिश्रम करेगा।

यदि धन राशि का राहु—आयु के स्थान पर नीच राशि में बैठा है तो जीवन और आयु के पक्ष में महान् संकटों का योग प्राप्त करेगा और दिनचर्या के अन्दर कुछ परेशानियों का सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा देवगुरु वृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी योग्यता और सज्जनता से जीवन यापन करने के लिये कठिनाइयों से काम लेता रहेगा तथा पुरातत्व शक्ति में हानि प्राप्त करेगा और जीवन व्यतीत करने के सम्बन्धों में गुप्त और गहरी युक्तियों से तथा विदेश आदि के योग से काम चलाता रहेगा तथा गुप्त चिन्ता और कमी का योग प्राप्त करेगा।
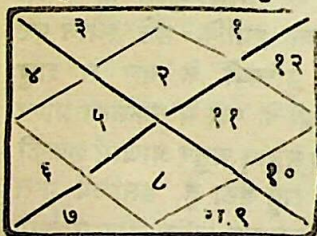
वृषभ लग्न में ८ राहु

नं० २००

यदि मकर का राहु—त्रिकोण में भाग्यस्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो भाग्य के पक्ष में कुछ कमजोरी और दिखावे की विशेषता का योग प्राप्त करेगा तदनुसार ही भाग्य की अन्दरूनी कुछ

वृषभ लग्न में ९ राहु

नं० २०१
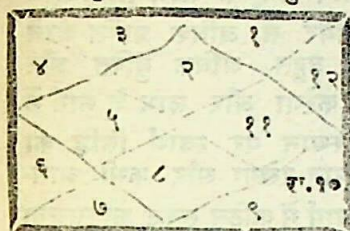
कमजोरी और दिखावे की शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म के स्थान में स्वार्थ सिद्धि का अधिक ध्यान रखेगा और भाग्य की वृद्धि करने के लिये बड़ी भारी युक्ति से और धैर्य से काम लेता रहेगा। तथा भाग्य के पक्ष में कभी सुख और कभी दुख का अनुभव करेगा तथा कठोर ग्रह शनि की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये भाग्योन्नति प्राप्त करने के लिये कठिन साधन करेगा।

यदि कुम्भ का राहु— दसम केन्द्र में पिता स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो पिता के सम्बन्धों में कुछ परेशानी प्रदान करेगा

वृषभ लग्न में १० राहु

नं० २०२
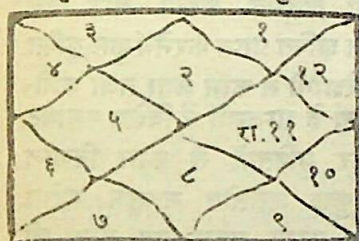
और राज समाज, कारबार उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें पैदा करेगा क्योंकि कठोर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये कठिन कर्म के द्वारा बड़ी युक्तियों से सफलता और मान प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में कभी २ कुछ विशेष संकट प्राप्त करने के बाद संतोष शक्ति मिलेगी और मान तथा इज्जत के स्थान में कुछ कमी महसूस करेगा और पिता स्थान की शक्ति को कुछ कठिनाइयों से सफल बनावेगा और गुप्त विचारों से उन्नति के मार्ग को सदैव सोचता रहेगा और आन्तरिक इज्जत के मुकाबले में जाहिरदारी श्रेष्ठ रहेगी।

यदि मीन का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त रहेंगी किन्तु ग्यारहवें स्थान में क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली फलदाता होता है, इसलिये आमदनी या धन प्राप्ति के स्थान में विशेष सफलता प्राप्त

वृषभ लग्न में ११ राहु

नं० २०३
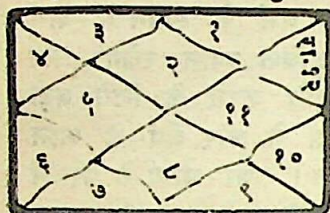
करेगा और धन के लाभ सम्बन्धों में नियत दायरे से अधिक प्राप्ति करने के लिये बहुत अधिक युक्ति और परिश्रम करेगा और लाभ के मार्ग में न्याय के स्थान पर स्वार्थ सिद्धि का विशेष ध्यान रखेगा और कभी आमदनी के मार्ग में कठिन संकट का सामना करना पड़ेगा, किन्तु आखिर में सफलता शक्ति को अवश्य प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १२ राहु

नं० २०४
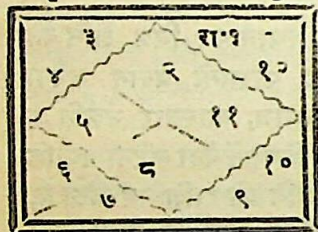
यदि मेष का राहु—बारहवें स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और खर्च संचालन शक्ति प्राप्त करनेमें कुछ युक्ति और परेशानी से काम लेगा तथा कभी-कभी खर्च के सम्बन्धों में विशेष रुकावट या दिक्कत पड़ने पर भी चतुराई से और युक्तियों से काम निकाल लेगा किन्तु फिर भी खर्च के मार्ग में कुछ असंतोष महसूस करेगा किन्तु दिखावटी खर्च में कुछ प्रभाव रखेगा परन्तु गरम ग्रह मंगल की राशि पर गरम ग्रह राहु बैठा है, इसलिये कठिन परिश्रम के द्वारा खर्च के मार्ग की शक्ति को सफल करेगा।

कष्ट, कठिन परिश्रम, गुप्त शक्ति के अधिपति—केतु

यदि वृषभ का केतु—केन्द्र में देह के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो देह के स्थान में कभी चोट या घाव का निशान मिलेगा तथा देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और कुछ गुप्त चिन्ता का योग प्राप्त रहेगा तथा साथ ही साथ गुप्त हिम्मत भी

वृषभ लग्न में १ केतु

नं० २०५

खूब रहेगी और इसी कारण से जिद्द बाजी या हठयोग से काम करेगा और शुक्र के घर में केतु है, इसलिये गुप्त चतुराई से सफलता प्राप्त करेगा तथा देह की शक्ति और तेजोके कारणों पर प्रभाव डालेगा किन्तु अकेला देह में बैठा होगा और दूसरे किसी भी ग्रह की इस पर दृष्टि भी नहीं होगी तो केतुके मस्तक न होनेके कारणसे अपने मंतव्यको ठीक तौरसे समझा नहीं सकेगा।

वृषभ लग्न में २ केतु

नं० २०६

यदि मिथुन का केतु—धन स्थान में नीच राशि पर बैठा है तो धन और जन के स्थान में महान् संकट का समय उपस्थित करेगा और धन की चिन्ता से कभी २ गम्भीर स्थिति के कारण इज्जत का बचाना मुश्किल हो जायगा और धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करने के लिए महान् कष्ट साध्य कर्म करना पड़ेगा तथा बड़ी दौड़ धूप करनी पड़ेगी और कुछ गुप्त रूप से शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा तथा धन जन के मार्ग में न्याय के मुकाबले स्वार्थ सिद्धि का विशेष ध्यान रखेगा किन्तु फिर भी धन-जन का पूरा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा।

वृषभ लग्न में ३ केतु

नं० २०७

यदि कर्क का केतु—तीसरे भाई के स्थान पर मुख्य शत्रु चन्द्र की राशि में बैठा है तो भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ हानि और कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन के सुख में विशेष कमी प्राप्त करेगा और पराक्रम सम्बन्धित कार्यों में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और अपनी बाहुबल की

शक्ति में अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा किन्तु तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली कार्य करने का द्योतक है, इसलिये अन्दरूनी कमजोरी की परवाह न करते हुए महान् धैर्य और हिम्मत की शक्ति से हठ योग के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा परन्तु मन के अधिकारी चन्द्रमा की राशि पर केतु बैठा है इसलिये अपने मन के अन्दर कुछ चिन्तित रहेगा।

वृषभ लग्न में ४ केतु

नं २०८

यदि सिंह का केतु - चौथे केन्द्र माता के स्थान पर परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में भारी कमी प्राप्त करेगा और जन्म स्थान से कुछ बिछोह प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख के साधनों में कमी और कष्ट का योग अनुभव करेगा तथा रहने के निवास स्थान मकान जायदाद के मामलों में असंतोष रहेगा, महान् तेजस्वी सूर्य की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये सुख प्राप्ति के साधनों को प्राप्त करने के लिये महान् कठिनतम युक्ति एवं शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा और सुख प्राप्ति के स्थान में गुप्त धैर्य की शक्ति से तथा सहयोग से काम करेगा।

वृषभ लग्न में ५ केतु

नं० २०९

यदि कन्या का केतु—त्रिकोण में संतान स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो संतान पक्ष में कुछ कमी या कष्ट अनुभव करेगा और विद्या प्राप्त करने के समय बड़ी कठिनाइयों का योग अनुभव करेगा और बुद्धि तथा विद्या विकास में कुछ कमी प्राप्त करेगा किन्तु विवेकी बुध के घर में स्वक्षेत्र के समान बैठा है, इसलिये विवेक की अन्दरूनी शक्ति से बड़े साहस के योग से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु फिर भी केतु के मस्तक

नहीं है, इसलिये अपने मन्तव्य को वाणी के द्वारा पूर्ण जाहिर करने में कुछ अन्दरूनी कमजोरी अनुभव करेगा तथा प्रकट में शक्ति प्रदर्शित रखेगा किन्तु फिर भी गुप्त धैर्य से काम करेगा।

वृषभ लग्न में ६ केतु

नं० २१०
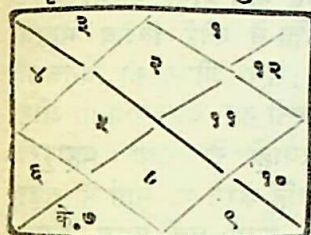
यदि तुला का केतु—छठें शत्रु स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो छठें स्थान में विशेष प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा और चतुराई के सहित महान् हिम्मत और गुप्त धैर्य के बल से अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करेगा और प्रभाव की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा तथा कभी २ कुछ हिम्मत हारने की बात का योग प्राप्त होने पर भी जाहिर में बड़े साहस से ही काम करेगा। क्योंकि परम चतुर ग्रह आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है इसलिये बड़ी से बड़ी दिक्कतों को गहरी चतुराई से पार करेगा।

यदि वृश्चिक का केतु - सातवें केन्द्र स्त्री के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो स्त्री के पक्ष में हानि और कष्ट प्राप्त करेगा तथा प्रमेह या मूत्राशय में कुछ बीमारी प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ा संघर्ष और संकट का योग प्राप्त करेगा तथा रोजगार की पूर्ति करने के लिये बड़ा कठिन परिश्रम और गुप्त धैर्य को शक्ति से काम करेगा तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये कठिन परिश्रम करेगा तथा गृहस्थ और रोजगार के मार्ग में कभी २ महान् /विफलता प्राप्त करेगा किन्तु अन्त में कुछ कमी के साथ गृहस्थ का पालन करेगा और आन्तरिक दुःख का अनुभव करेगा तथा कठिनाइयों से कुछ शक्ति प्राप्त करेगा।
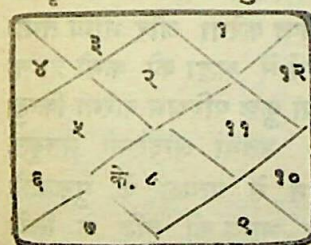
वृषभ लग्न में ७ केतु

नं० २११

वृषभ लग्न में ८ केतु

नं० २१२
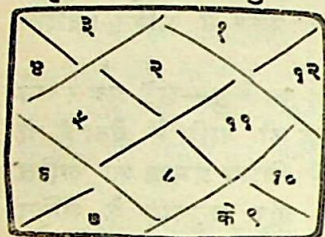
यदि धन का केतु—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में उच्च का होकर गुरु की राशि में बैठा है तो आयु स्थान की वृद्धि का योग प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति में कोई विशेष महत्व प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में विशेष मस्ती का योग पायेगा और बड़ी लापरवाही से तथा बहादुरी तरीके से रहन-सहन रखेगा और जीवन निर्वाह करने के मार्ग में बड़ा भारी कठिन परिश्रम करेगा और कभी २ बहुत धन प्राप्त करेगा तथा जीवन में किसी अल्प संकट का सामना प्राप्त करेगा तथा अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा किन्तु गुप्त धैर्य की महान् शक्ति से कोई विशेष लाभ का संयोग मुफ्त का सा प्राप्त करेगा और देवगुरु बृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिये शानदारी से रहेगा।

वृषभ लग्न में ९ केतु
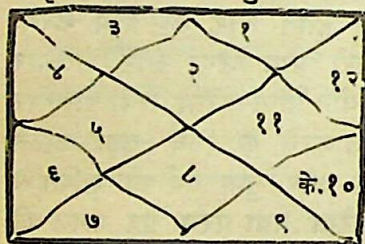
नं० २१३

यदि मकर का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य के स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो भाग्य स्थान में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और कुछ कठिन परिश्रम के योग से भाग्य की उन्नति प्राप्त करेगा और भाग्य तथा धर्म के मार्ग में श्रद्धा की कमी प्राप्त रहेगी तथा कुछ परिश्रम करेगा किन्तु धर्म का बाहरी रूप जितना अच्छा होगा उतना अन्दरूनी मजबूत नहीं होगा और इसी प्रकार भाग्य के स्थान में प्रत्यक्ष के मुकाबले में अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा और भाग्य की वृद्धि के लिये बड़ी मजबूत हिम्मत शक्ति से काम करेगा किन्तु स्थिर और कठोर ग्रह शनि की राशि पर कठोर ग्रह केतु बैठा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि के लिये महान् कठिन साधना करेगा।

वृषभ लग्न में १० केतु

नं० २१४
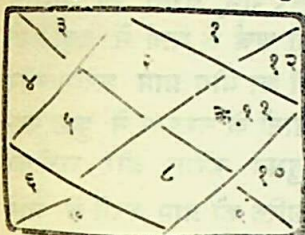
यदि कुम्भ का केतु—दसम केन्द्र में पिता एवं राज्य स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो पिता के सुख सम्बन्धों में कुछ बाधा उत्पन्न करेगा और राज समाज के मान प्रतिष्ठा आदि के मार्ग में कुछ कठिनाइयों से सफलता प्राप्त करेगा तथा कारबार की वृद्धि करने के लिये कठिन परिश्रम और गुप्त धैर्य की शक्ति से काम करेगा और उन्नति के मार्गों में कभी-कभी विशेष आपत्ति का सामना प्राप्त करेगा तथा मान सम्मान के स्थान में जाहिर में प्रभाव अच्छा रखेगा और अन्दरूनी कुछ कमजोरी महसूस करेगा तथा स्वार्थ पूर्ति के लिये हठ योग से भी सफलता प्राप्त करेगा और कठोर ग्रह शनि की राशि पर कठिन ग्रह केतु बैठा है, इसलिये उन्नति प्राप्त करने के लिये घोर कर्म करेगा।

वृषभ लग्न में ११ केतु

नं० २१५
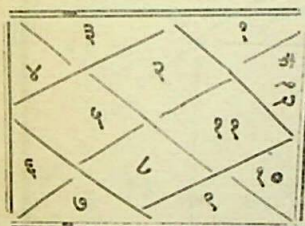
यदि मीन का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान पर शत्रु गुरु की राशि में बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा किन्तु ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह अधिक बलशाली हो जाता है, इसलिये आमदनी और धन का लाभ करने के लिये विशेष परिश्रम करेगा किन्तु फिर भी कुछ अन्दरूनी असंतोष प्राप्त रहेगा और स्वार्थ सिद्ध करने के लिये कुछ कड़ाई से काम निकालेगा और कभी कभी आमदनी के स्थान में कोई महान् संकट का सामना प्राप्त करने के बाद में सफलता मिलेगी और देवगुरु बृहस्पति की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में आदर्शवादिता से सफलता प्राप्त करेगा।

वृषभ लग्न में १२ केतु

नं० २१६
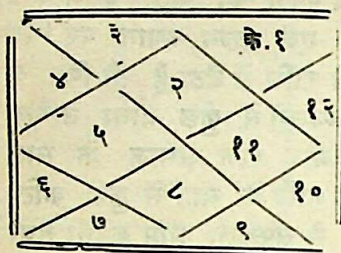
यदि मेष का केतु—बारहवें खर्च के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो खर्च के मार्ग में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का योग प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और खर्च की संचालन शक्ति को प्राप्त करने के मार्ग में बड़ा भारी परिश्रम और गुप्त धैर्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु खर्च के मार्ग में कुछ कमी और कुछ कष्ट अनुभव करने से असंतोष रहेगा किन्तु महान् दृढ़ता और हठ योग, जिद्द बाजी से काम निकलेगा और गरम ग्रह मंगल की राशि पर कठिन ग्रह केतु बैठा है, इसलिये कुछ अशांति युक्त कठिन कर्म की शक्ति से खर्च की शक्ति को प्राप्त करता रहेगा।

❀ वृषभ लग्न समाप्तम् ❀

❀ मिथुन लग्न प्रारम्भ ❀

४ २
५ ३ १
६ १२
७ ९ ११
८ १०
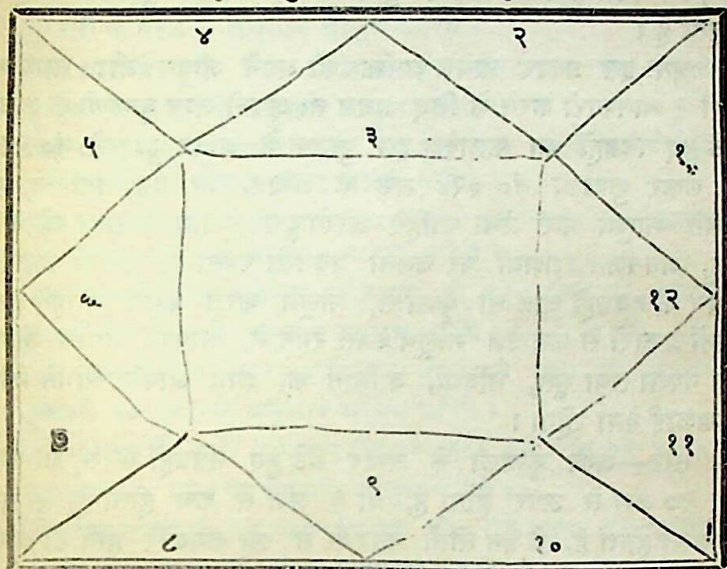
मिथुन लग्न का फलादेश प्रारम्भ
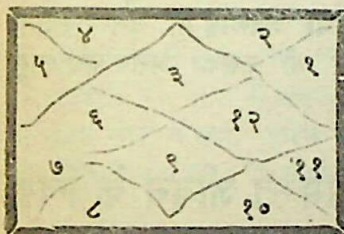
नवग्रहों द्वारा भाग्य फल

(कुण्डली नं० ३२४ तक में देखिए)

प्रिय पाठकगण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आप के सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है। अर्थात् जन्म कुण्डली के अन्दर जन्म के समय नवग्रह, जिस जिस स्थान पर, जैसा-जैसा अच्छा बुरा भाव लेकर बैठे होते हैं, उनका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांगगोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से, हर एक लग्न वालों

पर, भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है।

अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिए प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० २१७ से लेकर कुण्डली नं० ३२४ तक के अन्दर, जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो जोर ग्रह, जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से, मालूम करते रहना चाहिये अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से, आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से, जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है, या ३ अंश से कम होता है, या सूर्य से अस्त होता है, तो इन तीनों कारणों से ग्रह कमजोर होने की वजह से, अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं।

जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा जहाँ २ जिन २ स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं, उन २ स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो, उस पर भी उसका असर फल लागू समझा जायगा।

—:०:—

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य, जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० २१७ से २२८ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये—

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २१७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य, कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं २१८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य, सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २१९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य, कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य, तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य, वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का कलादेश कुण्डली नं० २२२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य, धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य, मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य, कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य, मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य, मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य, वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२८ के अनुसार मालूम करिये।

---

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० २२९ से २४० तक में देखिये और समय कालीन चन्द्र का फल निम्न प्रकार से देखिये—

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २२९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३५ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३७ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २३९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० २४० के अनुसार मालूम करिये।

———

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० २४१ से २५२ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये –

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २४२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २४७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २४८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २४९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २५० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली न० २५१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २५२ के अनुसार मालूम करिये।

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

आपकी जन्म कुण्डली में बुध जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुंडली नं० २५३ से २६४ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये—

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २५३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २५४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २५५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २५६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २५७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २५८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २५९ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २६० के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २६१ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २६२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिज मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २६३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २६४ के अनुसार मालूम करिये।

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

आपकी जन्म कुण्डली में, गुरु जिस स्थान पर है उसका फलादेश कुण्डली नं० २६५ से २७६ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २६५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २६६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २६७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २६८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २६९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७१ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २७६ के अनुसार मालूम करिये!

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्र फल

आपकी जन्म कुंडली में, शुक्र जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० २७७ से २८८ तक में देखिए और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिए।

३ - जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २७७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २७८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० २७९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २८० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २८१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २८२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २८३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कु० नं० २८४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २८५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० २८६ के अनुसार मालूम करिये।

१-जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २८७ के अनुसार मालूम करिये।

२ —जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २८८ के अनुसार मालूम करिये।

(३) मिथुन लग्नवालों को, समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर शनि—फल

आपकी जन्म कुण्डली में शनि जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० २८९ से ३०० तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

३ जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २८९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष मे शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २९४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० २९५ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९६ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९७ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० २९९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०० के अनुसार मालूम करिये।

(३) मिथुन लग्न वालों का समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर राहु—फल

आपकी जन्म कुण्डली में राहु जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ३०१ से ३१२ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० ३०६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०७ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०८ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३०९ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३१० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३११ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३१२ के अनुसार मालूम करिये।

(३) मिथुन लग्नवालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर केतु—फल

आपकी जन्म कुण्डली में केतु जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ३१३ से ३२४ तक में देखिए और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० ३१३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० ३१४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३१५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ण में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुंडली नं० ३१६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ण में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३१७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ण में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुंडली नं० ३१८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ण में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३१९ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ण में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३२० के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ण में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३२१ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ण में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३२२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ण में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३२३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ण में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ण का फलादेश कुण्डली नं० ३२४ के अनुसार मालूम करिये।

नोट इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

भाई बहन, पराक्रम (प्रभाव) स्थानपति सूर्य

मिथुन लग्न में १ सूर्य

नं० २१७
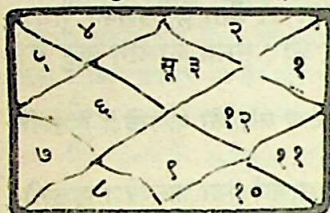
यदि मिथुन का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के तेजस्वी कर्म शक्ति के योग से मान प्राप्त करेगा और अपने को हमेशा ऊँचा रखने का कार्य करेगा और भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और अपनी देह के पुरुषार्थ कर्म से महान् प्रभाव प्राप्त करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत रखने वाला साहसी बनेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की धन राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री के अन्दर प्रभाव और पुरुषार्थ शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के भोगादिक पक्ष में पुरुषार्थ शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में पुरुषार्थ कर्म के योग से सफलता प्राप्त करेगा और इसी सफलता के कारण प्रभाव शक्ति प्राप्त रहेगी और देह के अन्दर बड़ी हिम्मत और स्फूर्ति तथा क्रोध, प्रभाव इत्यादि शक्ति भी प्रात रहेगी।

मिथुन लग्न में २ सूर्य

नं० २१८
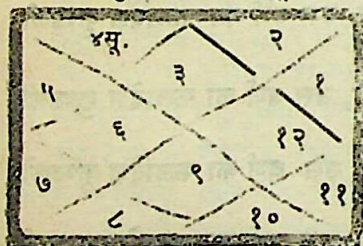
यदि कर्क का सूर्य - धन भवन में मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो धन का कोष स्थान बन्धन का स्थान माना जाता है, इसलिये भाई बहन के सुख सम्बन्धों में कमी करेगा और पुरुषार्थ कर्म के योग से धन की वृद्धि करेगा और तेजस्वी कर्म शक्ति के योग से धन की वृद्धि और कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करेगा धन की वृद्धि करने के कारणों से देह के पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी प्राप्त रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ

अशान्ति अनुभव करेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ कुछ अरुचिकर एवं असंतोष रूप में प्राप्त करेगा और धन की वृद्धि करने के कारणों से प्रभाव और हिम्मत शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का सूर्य—पराक्रम स्थान पर स्वयं अपने घर में स्वक्षेत्री बैठा है तो पराक्रम की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और पराक्रम शक्ति के कार्य कारणों से महान् प्रभाव रखेगा तथा भाई की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और अपने पुरुषार्थ से महान् भरोसा और हिम्मत शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ असन्तोष बनेगा और धर्म के मार्ग में कुछ मतभेद समझने की वजह से अपने अलग ढंग से ही काम लेगा और बहादुर स्वभाव होने के कारण से भाग्य की कुछ कमजोरी समझते रहने पर भी परवाह नहीं करेगा परन्तु महान् तेजस्वी सूर्य का तीसरे स्थान पर स्वक्षेत्री होने के कारण से कठिन कार्य को पूर्ति करने में तत्पर रहेगा।
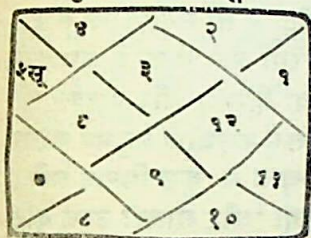
मिथुन लग्न में ३ सूर्य

नं० २१९

यदि कन्या का सूर्य—चौथे केन्द्र में माता के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो तेजस्वी पराक्रम शक्ति के द्वारा घरेलू सुख के साधनों में महानता प्राप्त करेगा और भाई बहिन का सुख और मान प्राप्त करेगा और माता के स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा रहने सहने के स्थान में सुख शक्ति और प्रभाव पायेगा तथा मकान भूमि आदि की शक्ति प्राप्त करेगा और पराक्रम की सफलता से सुख प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में पिता स्थान को देख रहा

मिथुन लग्न में ४ सूर्य

४ २ ५ ३ १ सू.६ १२ ७ ९ ११ ८ १०

नं० २२०

है, इसलिये पिता स्थान से पराक्रम शक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा और राज समाज में मान और प्रभाव पायेगा तथा कारबार की सफलता शक्ति का प्रभाव प्राप्त करेगा और सुख पूर्वक परिश्रम करके उन्नति करेगा।

मिथुन लग्न में ५ सूर्य

नं० २२१
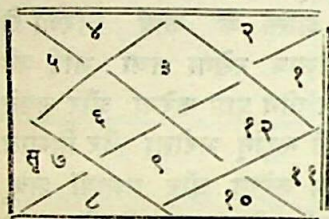
यदि तुला का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण में सन्तान एवं विद्या स्थान पर नीच राशि में बैठा है तो सन्तान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा और विद्या में कमजोरी पायेगा तथा हिम्मत और बाहुबल की पराक्रम-शक्तिमें कमजोरी अनुभव करेगा और बोल-चाल में कुछ छिपाव शक्ति से काम लेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से मंगल की मेष राशि में लाभ के स्थान को देख रहा है, इसलिये बुद्धि और बाहुबल की शक्ति से धन का विशेष लाभ करेगा और धन का लाभ अधिक करने के मार्ग में झूठ और छिपाव की शक्ति से काम करना पड़ेगा क्योंकि बुद्धि स्थान पर सूर्य नीच राशि में बैठकर लाभ स्थान को उच्च भावना से देख रहा है, इसलिये लाभ के मुकाबले में शब्द शक्ति के सत्य असत्य की परवाह नहीं करेगा तथा लाभ के मार्ग में प्रभाव प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ६ सूर्य

नं० २२२
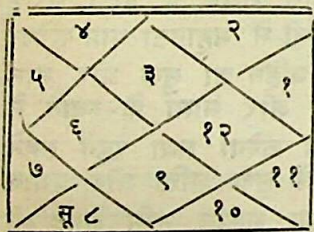
यदि वृश्चिक का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में पराक्रम की शक्ति के द्वारा महान् प्रभाव प्राप्त करेगा क्योंकि छठे घर में गरम ग्रह विशेष महत्व दायक कार्य करते हैं, इसलिये विपक्षियों के सामने सदैव विजय प्राप्त करेगा और भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ वैमनस्य प्राप्त करेगा और पराक्रम शक्ति से कोई परिश्रमी प्रभाव का कार्य करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृषभ

राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ असन्तोष रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता मानेगा परन्तु खर्च के मार्ग में शक्ति प्राप्त करने के लिये कठिन परिश्रम करेगा और प्रभाव शक्ति से भी काम करेगा।

भाई बहन, पराक्रम (प्रभाव) स्थान पति–सूर्य

यदि धन का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो तेजस्वी कर्म शक्ति के द्वारा गृहस्थ में महानता प्राप्त करेगा और स्त्री के स्थान में प्रभाव और शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में प्रभावशाली परिश्रम के द्वारा सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये परिश्रम की सफलता से देह में प्रभाव प्राप्त करेगा और गृहस्थके दैनिक कार्य मार्गों में बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम लेगा तथा स्त्री के अन्दर कुछ तेजी और गर्मीका स्वभाव प्राप्त करेगा तथा भोगादिक पक्षमें शक्ति पावेगा।
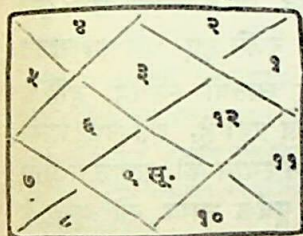
मिथुन लग्न में ७ सूर्य

नं० २२३

यदि मकर का सूर्य—आठवें मृत्यु स्थान पर शत्रु शनि की राशि की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में हानि या कमी प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में असफलता और कमजोरी प्राप्त करेगा तथा कठिन परिश्रम करने के कारणोंसे जीवन में अशांति अनुभव करेगा और अपने बाहुबल के कार्यों में निराशाओंके कारणोंसे कभी २ अधिक हिम्मत हार जायगा और पुरातत्व सम्बन्ध की कुछ नीरसता युक्त शक्ति
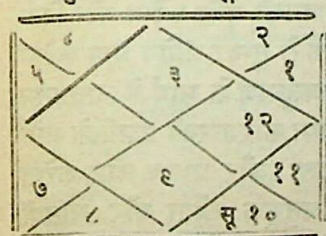
मिथुन लग्न में ८ सूर्य

नं० २२४

प्राप्त करेगा और चन्द्रमा की कर्क राशि में धन भवन को सातवीं मित्र दृष्टि से देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये थकान पाने वाले परिश्रम के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब में कुछ शक्ति और जीवन में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा। किन्तु कुछ उत्साह हीन रहेगा।

मिथुन लग्न में ९ सूर्य

नं० २२५
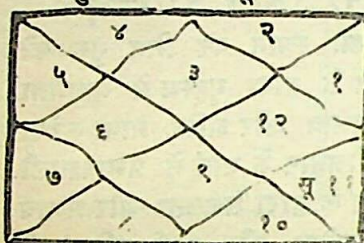
यदि कुम्भ का सूर्य—नवम त्रिकोण में भाग्य स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो भाई बहन का कुछ अरुचिकर संयोग प्राप्त करेगा और अपने बाहुबल के कठिन कार्य से भाग्य में कुछ वृद्धि प्राप्त करेगा तथा कुछ भेद भावना रखते हुए धर्म का पालन करेगा और सातवीं स्वक्षेत्री दृष्टि से स्वयं अपनी सिंह राशि पराक्रम स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की कुछ अरुचिकर सहयोग शक्ति से पराक्रम स्थान की सफलता प्राप्त करेगा और महान् हिम्मत शक्ति से उत्साह पूर्वक भाग्य की वृद्धि के कार्य में लाग रहेगा और भाई के संयोग से किसी प्रकार की सहायता प्राप्त करेगा और पराक्रम तथा भाग्य के संयोग से कुछ प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुछ तेजस्वी कर्म के द्वारा उन्नति पर पहुँचेगा।

मिथुन लग्न में १० सूर्य

नं० २२६
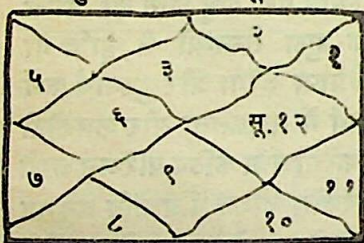
यदि मीन का सूर्य—दसम केन्द्र में पिता स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो पराक्रम शक्ति के द्वारा पिता स्थानकी वृद्धि करेगा और पिता की शक्ति से सुन्दर संयोग प्राप्त करेगा और राजसमाज के मार्ग में मान प्राप्त करेगा तथा कारबारकी उन्नतिके मार्ग में सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की प्रभाव शक्ति का योग अनुकूल रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में चौथे सुख भवन को देख रहा

है, इसलिए सुख के साधनों की पराक्रम और प्रभाव शक्ति से वृद्धि करेगा और माता के स्थान में अनुकूल शक्ति प्राप्त करेगा और बाहुबल से लौकिक उन्नति के श्रेष्ठ साधन और सम्मान प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ११ सूर्य
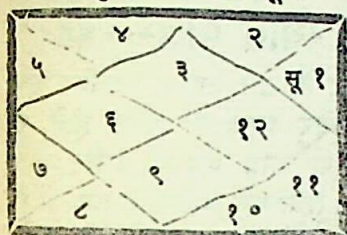
नं० २२७

यदि मेष का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च राशि पर बैठा है तो पराक्रम शक्ति के संयोग से धन का विशेष लाभ और उत्तम आमदनी प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति का विशेष लाभ प्राप्त करेगा और आमदनी तथा लाभ के योग से बाहुबल की शक्ति में विशेष उन्नति और विशेष उत्साह प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में संतान घर को देख रहा है, इसलिए संतान पक्ष की सुख शक्ति में कमी और बाधायें प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमजोरी या कुछ रुकावटें प्राप्त करेगा और लाभ की दृष्टिकोण से बोलचाल के अन्दर कुछ रूखेपन से काम निकालेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति प्राप्त रहेगी।

मिथुन लग्न में १२ सूर्य
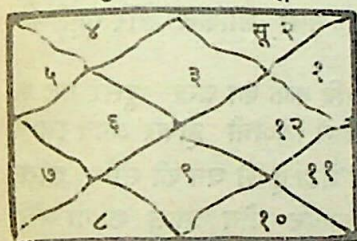
नं० २८८

यदि वृषभ का सूर्य—बारहवें खर्च के स्थान पर शत्रु शुक्र की राशि में बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में हानि प्राप्त करेगा और खर्चे की अधिकता के कारणों से हिम्मत और पराक्रम शक्ति में कमजोरी प्राप्त करेगा और बाहरी दूसरे स्थान में परिश्रम के योग से कुछ सफलता प्राप्त करेगा और खर्चा अधिक करने के वेग को रोक नहीं सकेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव और मिठास की शक्ति से काम करेगा किन्तु अपने अन्दर की कमजोरी को छिपा कर जाहिर में हिम्मत शक्ति से

तथा परिश्रम से सफलता पायेगा और पराक्रम स्थान पति सूर्य खर्च स्थान में बैठा है, इसलिए अपने अन्दर उत्साह की कमी का अनुभव करेगा।

धन, जन, बंधन तथा मन स्थान पति—चंद्र

यदि मिथुन का चन्द्र—प्रथम केन्द्र में तन स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो देह के अन्दर धनवान प्रतीत होने के सुन्दर लक्षण प्राप्त करेगा और देह के कार्य धन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा धन प्राप्ति के सम्बन्ध में तन मन की सुन्दर शक्ति का प्रयोग करेगा, किन्तु देह के कार्य क्रम में कुछ अधिक घिराव सा रहेगा और कुटुम्ब शक्ति का योग सुन्दर प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु को धन राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री के पक्ष में सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग से धन प्राप्त करेगा तथा इज्जतदार व धनवान् समझा जायेगा तथा लौकिक और गृहस्थिक सफलता के लिये विशेष प्रयत्न करेगा।
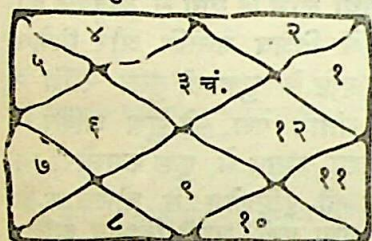
मिथुन लग्न में १ चन्द्र

नं० २२९
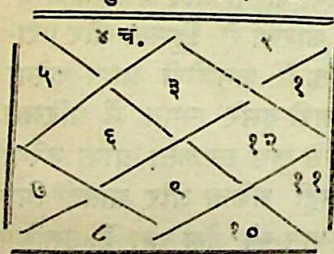
यदि कर्क का चन्द्र—दूसरे धन के स्थान में स्वक्षेत्री होकर अपने स्थान में ही बैठा है तो धन की संचित शक्ति का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का अच्छा सहयोग प्राप्त करेगा तथा धन की वृद्धि करने के लिये मन की संपूर्ण शक्ति का प्रयोग करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में धन के कारणों से कुछ परेशानी अनुभव करेगा और सदैव धनोन्नति

मिथुन लग्न में २ चन्द्र

नं० २३०

के चिन्तन में ही अपने मन को लगाये रख कर उन्नति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का कुछ नीरसता युक्त लाभ प्राप्त करेगा क्योंकि धनेश कुछ बन्धन का सा कार्य करता है, फिर भी धन जन के कारणों से इज्जतदार समझा जायगा।

मिथुन लग्न में ३ चन्द्र

नं० २३१

यदि सिंह का चन्द्र—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र सूर्य की राशि में बैठा है तो भाई बहिन के स्थान में कुछ बन्धन युक्त सुन्दरता प्राप्त करेगा और मनोयोग के पुरुषार्थ से धन संचय करने के मार्ग में सदैव लगा रहेगा, इसलिए परिश्रम की सफलता से इज्जत और प्रसन्नता प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के स्थान में कुछ नीरसता अनुभव करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ अरुचि रखेगा तथा धर्म के मुकाबले में धन का महत्व अधिक समझेगा और कीमती पुरुषार्थ कर्म के द्वारा धन की शक्ति एवं बड़ी प्रतिष्ठा और प्रभाव पावेगा।

मिथुन लग्न में ४ चन्द्र

नं० २३२

यदि कन्या का चन्द्र—चौथे केन्द्र में माता के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो धनेश कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ रुकावट डालेगा किन्तु माता के स्थान में धन का आनंद प्राप्त करेगा और मकान जायदाद की शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब तथा घरेलू सुख प्राप्त होगा और घरेलू सुख में कुछ सुन्दरता और कुछ बन्धन प्रतीत होगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मित्र राशि में पिता स्थान को देख रहा है, इसलिए पिता स्थान से सुन्दर सहायक शक्ति प्राप्त करेगा और राज समाज में मान प्राप्त करेगा तथा कार-

बार के मार्ग में मनोयोग से तथा धन की शक्ति से उन्नति का योग प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण में प्रभाव प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ५ चन्द्र

नं० २३३
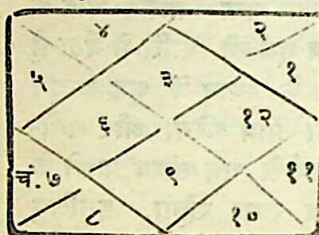
यदि तुला का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण में सन्तान स्थान पर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो धनेश कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये सन्तान स्थान के सुख सम्बन्धों में कुछ रुकावट करेगा किन्तु सन्तान पक्ष से लाभ प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि में सुन्दरता प्राप्त करेगा और मन बुद्धि के योग से धन की शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये धन की आमदनी और धन लाभ प्राप्त करने में विशेष रुचि के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा बातचीत के अन्दर बड़े जचाव की बातों से लाभ प्राप्त करेगा और स्वार्थ युक्त बुद्धि से चतुराई के द्वारा इज्जत प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का चन्द्र—छठे शत्रु स्थान में नीच राशि पर मंगल के घर में बैठा है तो कुछ मनोयोग के कठिन परिश्रम से धन की प्राप्ति करेगा धन और जन की हानि तथा संकट भी प्राप्त करेगा और धन जन के अभाव के कारणों से मानसिक परेशानी का अनुभव करेगा और शत्रु स्थान में विपक्षियों के द्वारा कुछ चिन्ता रहेगी तथा उनसे धन की हानि का योग प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा इसी कारण धन संचय नहीं कर सकेगा और कुछ परतन्त्रता से धन प्राप्त करेगा तथा
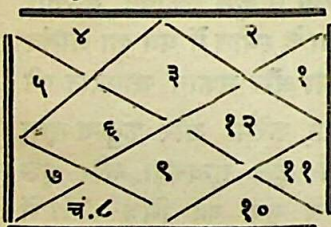
मिथुन लग्न में ६ चन्द्र

नं० २३४

बाहरी स्थानों में शक्ति प्राप्त करेगा और धन के मार्ग में कुछ अपयश भी रहेगा।

मिथुन लग्न में ७ चन्द्र

नं० २३५
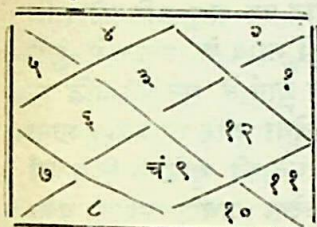
यदि धन का चन्द्र—सातवें केन्द्र में स्त्री स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो धन स्थान पति ग्रह कुछ बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री पक्ष के सुख साधनों में कुछ दिक्कतें, रुकावट और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा शादी के बाद धन की उन्नति पावेगा और रोजगार के मार्ग में मनोबल की शक्ति से खूब धन प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में कुटुम्ब का आनन्द प्राप्त करेगा और भोगादिक पक्ष में अधिक रुचि रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में देह स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और इज्जत प्राप्त करेगा तथा धन की वृद्धि करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा और शोभा युक्त कार्य करेगा।

मिथुन लग्न में ८ चन्द्र

नं० २३६
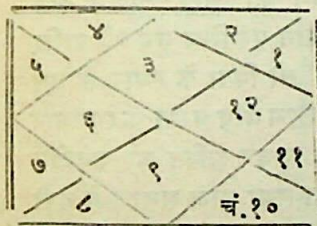
यदि मकर का चन्द्र—आठवें मृत्यु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में भारी कमी अनुभव करेगा और कुटुम्ब में अशांति के कारण प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का कुछ नीरसता युक्त मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और आयु स्थान में तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ शक्ति एवं कुछ परेशानी और इज्जत प्राप्त करेगा तथा मानसिक अशांति प्राप्त रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्वयं कर्क राशि में धन भवन में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये मनोयोग के कठिन मार्ग से धनकी पूर्ति के साधन प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की कुछ अधूरी नीरसता युक्त शक्ति के

साधन प्राप्त करेगा किन्तु धन और कुटुम्ब की उन्नति करने के लिए सदैव भारी परिश्रम करता रहेगा।

मिथुन लग्न में ९ चन्द्र

नं० २३७
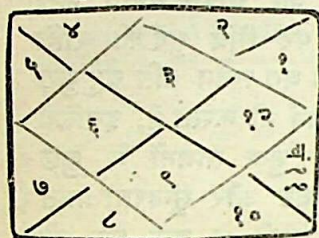
यदि कुम्भ का चन्द्र—नवम त्रिकोण में भाग्य स्थान पर शत्रु शनि की राशि में बैठा है तो भाग्य के स्थान में कुछ नीरसतायुक्त मार्ग से धन की वृद्धि का योग प्राप्त करेगा और भाग्यवान् माना जायेगा तथा धन की वृद्धि के लिये धर्म का पालन करेगा अर्थात् स्वार्थ युक्त धर्म का पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और पराक्रम की सुन्दर शक्ति से धन की प्राप्ति करेगा और मनोयोग से उत्तम मार्ग का अनुसरण करते हुए भाग्य और भगवान् पर भरोसा करेगा इसलिये मान और इज्जत तथा यश प्राप्त करेगा और धनकी शक्ति प्राप्त रहेगी तथा जन शक्ति के द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान में बड़ी हिम्मत शक्ति प्राप्त रहेगी।

मिथुन लग्न में १० चन्द्र

नं० २३८
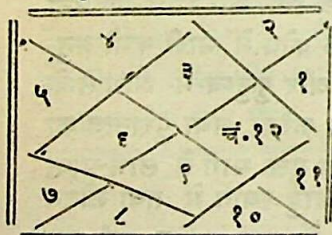
यदि मीन का चन्द्र—दशम केन्द्र में पिता स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान से धन का सुन्दर लाभ योग प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की सुन्दर शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा तथा राज समाज में बड़ी इज्जत प्राप्त करेगा और धनकी लागत लगाकर व्यापार कार्य में उन्नति करके धन की विशेष वृद्धि करेगा और मनोयोग की शक्ति से अनेक प्रकार की सफलता और वैभव प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की कन्या राशि में सुख स्थान को देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष

में तथा घरेलू सुख प्राप्ति के साधनों में सफलता प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में और धन उन्नति के सम्बन्धों में कुछ घिराव सा रहेगा क्योंकि धनेश कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है।

यदि मेष का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो मनोयोग की शक्ति से धन का विशेष लाभ प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में मन की महान् लवलीनता रहेगी तथा धन की शक्ति से धन की वृद्धि के कारण प्राप्त रहेंगे और कुटुम्ब का सुन्दर लाभ रहेगा और मन को प्रसन्न करने के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और सातवीं सामान्य मित्र की दृष्टि से शुक्र की तुला राशि को सन्तान स्थान में देख रहा है, इसलिये संतानकी कुछ सहयोग शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि वाणी आदि के पक्ष में धन और मन की शक्ति के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा इज्जतदार समझा जायगा।
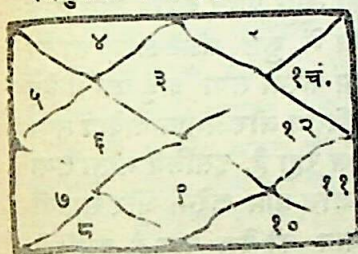
मिथुन लग्न में ११ चन्द्र

नं० २३९
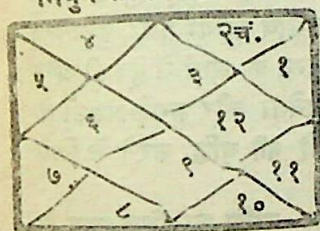
यदि वृषभ का चन्द्र—बारहवें खर्च स्थान में उच्च राशि पर बैठा है तो धन का बहुत अधिक खर्च करेगा और धन के कोष में कमी प्राप्त रहेगी और बाहरी स्थानों में धन प्राप्ति के सुन्दर साधन मिलेंगे और कुटुम्ब शक्ति कमजोर रहेगी और सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नरमाई से काम लेना पड़ेगा और मामा के पक्ष में कुछ कमजोरी रहेगी और रोगादिक झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में मन को कुछ अशांति रहेगी, इसलिये प्रभाव स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और खर्च की बहुतायत को रोक

मिथुन लग्न में १२ चन्द्र

नं० २४०

नहीं सकेगा परन्तु बाहरी स्थानों में बड़ी भारी इज्जत और मान प्रतिष्ठा रहेगी।

आमद, शत्रु, रोग-परिश्रम लाभ स्थानपति—मंगल

मिथुन लग्न में १ मंगल

नं० २४१
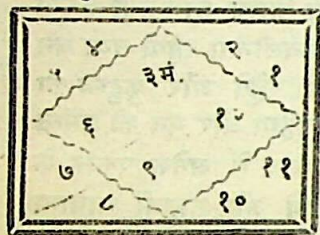
यदि मिथुन का मंगल—प्रथम केन्द्र में देह स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर कुछ गरम रोग प्राप्त करेगा और देह के परिश्रम से धन का लाभ प्राप्त करेगा तथा लाभ के सम्बन्ध में कुछ झंझट-झगड़े का सा योग प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में देह के द्वारा विजय और प्रभाव पावेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से माता के स्थान को देख रहा है, इसलिये माता तथा सुख सम्बन्धों के पक्ष में कुछ झंझट और लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की धन राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ झगड़ा तथा कुछ रोग प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम के योग से लाभ प्राप्त करेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा जीवन में प्रभाव रखेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और लाभ सम्बन्ध के मार्ग में हेकड़ी और तेजी से कार्य लेगा और क्रोधी स्वभाव का बनेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग से खूब लाभ प्राप्त करेगा तथा आमदनी की वृद्धि करने के लिये बड़ी भारी दौड़ धूप एवं परिश्रम करेगा।

यदि कर्क का मंगल—धन भवन में नीच राशि का मित्र चन्द्र के स्थान पर बैठा है तो धन के कोष में हानि और संकट प्राप्त करेगा तथा परिश्रम और कपट के योग से धन संचय करने में लगा रहेगा और कुटुम्ब की हानि प्राप्त करेगा और विपक्षी शत्रुओं के झगड़े-झंझटों से भी धन की हानि का योग बनेगा तथा जूआ सट्टा आदि कार्यों से धन का नुकसान होगा और चौथी सामान्य मित्र की दृष्टि से

मिथुन लग्न में २ मंगल

नं० २४२

शुक्र की तुला राशि में संतान स्थान को देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ क्लेशयुक्त शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या वृद्धि के स्थान में कुछ हठयोग और छिपाव शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु में वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में भाग्यस्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और यश की कमी रहेगी तथा धर्म के स्थान में सच्ची श्रद्धा की अधिक कमी रहेगी और गुप्त युक्ति पर भरोसा रखेगा तथा धन की वृद्धि करने के लिये कठिन से कठिन कार्य को करने में तत्पर रहेगा।

यदि सिंह का मंगल—भाई पराक्रम तीसरे स्थान पर मित्र सूर्य की राशि में बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में कुछ झंझट युक्त शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा और परिश्रम का स्वामी गरम ग्रह पराक्रम के स्थान पर बैठकर अपनी चौथी दृष्टि से स्वयं अपने शत्रु स्थान के क्षेत्र की वृश्चिक राशि को देख रहा है, इसलिये महान् परिश्रम करेगा और परिश्रम की शक्ति से शत्रु पक्ष में महान् प्रभाव प्राप्त करेगा तथा मामाके

मिथुन लग्न में ३ मंगल

नं० २४३
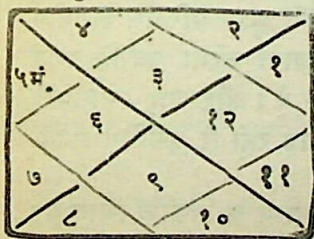
पक्ष में शक्ति प्राप्त रहेगी और प्रभाव तथा परिश्रम की शक्ति से खूब लाभ प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में विजय और लाभ दोनों चीजें प्राप्त करेगा और रोग पर तथा झगड़े झंझटों पर बड़ी बहादुरी और हिम्मत से सफलता प्राप्त करेगा और शत्रु शनि की कुम्भ राशि में सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य पर और धर्म पर कुछ नीरसता युक्त रूप में

थोड़ा सा भरोसा रखेगा और मित्र गुरु की मीन राशि में आठवीं दृष्टि से पिता के दसवें स्थान को देख रहा है, इसलिए पिता के पक्ष से तथा राज समाज, कारबार के पक्ष से धन का लाभ तथा मान, प्रभाव और सफलता, वैभव आदि परिश्रम शक्ति के योग से प्राप्त करेगा, क्योंकि दसवें स्थान पर मंगल की दृष्टि बहुत श्रेष्ठ फल प्रदान करती है।

मिथुन लग्न में ४ मंगल

नं० २४४
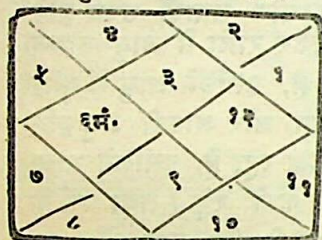
यदि कन्या का मंगल—चौथे केन्द्र में माता स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो माता के स्थान में कुछ वैमनस्यता युक्त मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष से घर बैठे लाभ प्राप्त करेगा और घरेलू रहने सहने के सुख भवन में कुछ झंझट या परेशानी के साथ लाभ शक्ति प्राप्त करेगा और मकानादि से लाभ प्राप्त करेगा क्योंकि आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि को लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये अपने स्थान से ही आमदनी की शक्ति प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से मित्र गुरु की धन राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिए स्त्री पक्ष में कुछ गरम रोग और झंझट युक्त मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में परिश्रम की शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा और सप्तम स्थान पर रोगेश की दृष्टि है, इसलिये कभी २ मूत्रेन्द्रिय विकार प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में राज्य स्थान को देख रहा है, इसलिये राज-समाज कारबार एवं पिता स्थान में कुछ परिश्रम के योग से लाभ और मान तथा प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा क्योंकि दसवें स्थान पर मंगल की दृष्टि श्रेष्ठ फल दाता होती है। और शत्रु स्थानपति मंगल की लाभ स्थान पर बलवान पूर्ण दृष्टि पड़ रही है, इसलिये झगड़े-झंझटों के मार्ग से खूब लाभ प्राप्त करेगा।

यदि तुलाका मंगल—पंचम त्रिकोण में सन्तान व विद्याके स्थान पर सामान्य मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो सन्तान पक्ष में कुछ वैमनस्यता एवं कुछ रोग झंझट आदि मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और

विद्या स्थान में कुछ कठिन परिश्रम के योग से लाभ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि को लाभ स्थान में देख रहा है, इसलिए परिश्रमी और कुछ छिपाव की बुद्धि योग से खूब लाभ और आमदनी प्राप्त करेगा और चौथी उच्च दृष्टि से शत्रु शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिए कुछ झंझट युक्त मार्ग से आयु की वृद्धि और शक्ति प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और पुरातत्वका लाभ पावेगा तथा जीवन में प्रभाव रहेगा और आठवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिए खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में कुछ परिश्रम के वृद्धि योग से लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा और आठवें स्थान का सम्बन्ध कुछ गुदा और पेट का भी होता है, इसलिये कुछ उदर विकार प्राप्त करेगा क्योंकि रोगेश मंगल की उस पर दृष्टि पड़ रही है। तथा रोगेश पंचम में बैठा है, इसलिए बुद्धि के झंझट युक्त कर्म से धन का विशेष लाभ पायेगा।
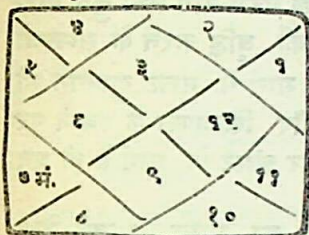
मिथुन लग्न में ५ मंगल

नं० २४५

मिथुन लग्न में ६ मंगल

नं० २४६
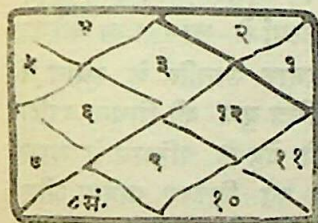
यदि वृश्चिक का मंगल—छठें शत्रु स्थान में अपनी ही राशि का होकर स्वक्षेत्र में बैठा है तो शत्रु पक्ष में महान् प्रभाव शक्ति रखेगा और बड़े भारी परिश्रम के मार्ग से प्रभाव योग के द्वारा आमदनी और लाभ प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष से तथा रोग व झगड़े झंझटों के मार्ग से भी लाभ योग प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से शत्रु शनि की कुम्भ राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य और धर्म के पक्ष में कुछ अरुचि और कमी का योग प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से

सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में खर्च स्थान को देख रहा है इसलिये खर्चा खूब करेगा किन्तु कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों से लाभ की शक्ति पायेगा और आठवीं दृष्टि से मित्र बुध की मिथुन राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ गरम रोग तथा कुछ परिश्रम झंझट आदि प्राप्त करेगा और प्रभाव की वृद्धि करने के सम्बन्धों में कुछ हठ योग के कारणों से आमदनी के मार्ग में नफा नुकसान भी करेगा क्योंकि लाभेश मंगल गरम ग्रह है और खिलाफत के स्थान पर बलवान् होकर बैठा है, इसलिये परिश्रम और झंझट के मार्ग से ही धन और प्रभाव की वृद्धि करेगा।

मिथुन लग्न में ७ मंगल
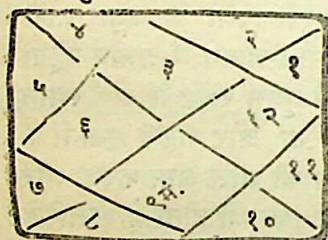
नं० २४७

यदि धन का मंगल—सातवें केन्द्र में मित्र गुरु की राशि में स्त्री स्थान पर बैठा है तो कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा रोजगार की लाइन में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में कुछ झंझट, रोग, मतभेद इत्यादि के सहित लाभ योग प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में परिश्रम की शक्ति से उन्नति प्राप्त करेगा और मूत्रेन्द्रिय में कुछ विकार प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में पिता स्थान को देख रहा है, किन्तु मंगल को षष्ठेश होने का दोष है और लाभेश होने का गुण है, इसलिए पिता के स्थान में कुछ झंझट युक्त मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और राज समाज में मान पावेगा तथा कारबार उन्नति के स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से मित्र बुध की मिथुन राशि में देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह के परिश्रम से लाभ पावेगा किन्तु देह में कुछ रक्त या गरमी का विकार पावेगा और आठवीं नीच दृष्टि से कर्क राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन संग्रह की कमी के कारण से दुःख अनुभव करेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ क्लेश प्राप्त करेगा और कुछ गलत तरीके से धन की हानि करेगा।

मिथुन लग्न में ८ मंगल

नं० २४८
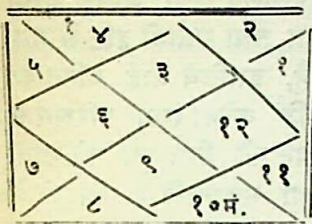
यदि मकर का मंगल—आठवें आयु स्थान में उच्च का होकर शनिकी मकर राशिमें बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रखेगा और पुरातत्व स्थान में लाभ प्राप्त करेगा तथा उदर में कुछ विकार पावेगा और शत्रु पक्ष से कुछ झंझट युक्त मार्गके द्वारा सफलता प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये महान् परिश्रम के योग से धन का लाभ प्राप्त करेगा तथा लाभ के सम्बन्ध में विदेश का योग भी प्राप्त करेगा और जीवन निर्वाह के लिये बँधी सी आमदनी प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से धन भवन को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिए धन संग्रह की कमी प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब में कुछ क्लेश पावेगा किन्तु जीवन की मस्ती के मुकाबले में धन जन की परवाह नहीं करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम स्थान को मित्र सूर्य की राशि में देख रहा है, इसलिये पराक्रम की वृद्धि करेगा किन्तु भाई बहिन के स्थान में कुछ झंझट या मतभेद के सहित लाभ पावेगा।

मिथुन लग्न में ९ मंगल
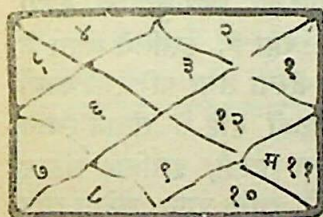
नं० २४९

यदि कुम्भ का मंगल—नवम् त्रिकोण भाग्य स्थान पर शत्रु शनि की कुम्भ राशि में बैठा है तो भाग्य स्थान में कुछ झंझट व परिश्रम के मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और लाभ प्राप्ति के मार्ग में भाग्य का कुछ असंतोषप्रद साधन रहेगा तथा धर्म का पालन स्वार्थ युक्त होकर अरुचिकर रूप से करेगा और शत्रु स्थान के सम्बन्ध में कुछ भाग्य की शक्ति का सहारा तथा कुछ कठिनाई से सफलता प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से खर्च स्थान को सामान्य

मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध लाभप्रद रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई के स्थान को मित्र सूर्य की राशिमें देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का योग प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान की वृद्धि करेगा तथा परिश्रम से सफलता रहेगी और आठवीं दृष्टि से सुख भवन को मित्र बुध की कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्तिके तथा मकानादि के साधनों में कुछ परिश्रमके योगसे सफलता प्राप्त करेगा और माताके सुख सम्बन्ध में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा क्योंकि मंगल षष्टेश होने से दोषी है।

यदि मीन का मंगल—दसम केन्द्र में पिता स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो उत्तम परिश्रम के योग से पिता स्थान में लाभ प्राप्त करेगा किन्तु पिता स्थान के प्रेम सम्बन्ध में कुछ मतभेद रहेगा किन्तु दसम स्थान पर मंगल उत्तम फल का दाता बन जाता है, इसलिये कारबार राज समाज के सम्बन्धों में सफलता और लाभ प्राप्त करेगा

मिथुन लग्न में १० मंगल
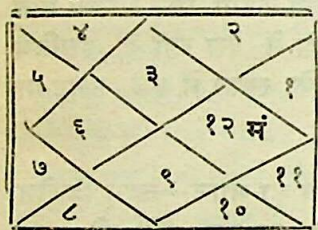
नं० २५०

तथा शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और चौथी दृष्टि से देह के स्थान की मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में मान प्रभाव लाभ और कुछ रोग झंझट आदि वस्तुयें प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से माता के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में कुछ झंझट युक्त मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा तथा परिश्रमी कार्यों से सुख के साधनों की वृद्धि करेगा और आठवीं दृष्टि से संतान स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता रोग और लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में परिश्रम के योग से लाभ तथा सफलता प्राप्त करेगा क्योंकि दसवें स्थान पर मंगल बलवान् फल करता है, इसलिये बड़े प्रभाव से आमदनी प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होने के कारण मंगल कुछ परेशानियाँ करता है।

मिथुन लग्न में ११ मंगल
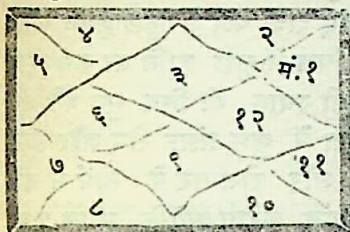
नं० २५१

यदि मेष का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान पर स्वयं अपने क्षेत्र में बहुत अधिक बलवान् बैठा है, तो धन का लाभ खूब करेगा क्योंकि ग्यारहवें घर में गरम ग्रह बहुत शक्ति शाली फल का दाता हो जाता है, इसलिए परिश्रम के योग से बड़ी मजबूत आमदनी का स्थाई रूप प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु स्थान का स्वामी होने के कारण कुछ परेशानियाँ करेगा और आठवीं दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र शत्रु स्थान को वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में महान् प्रभाव रखते हुए लाभ प्राप्त करेगा और झगड़े झंझट प्रपंच आदि के योग से अथवा रोगादि के योग से सम्बन्धित लाभ भी प्राप्त करेगा और मामा के पक्ष का लाभ प्राप्त रहेगा और चौथी नीच दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन का संग्रह नहीं कर सकेगा और कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ क्लेश प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से संतान पक्ष को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ परेशानी के साथ शक्ति प्राप्त करेगा और बुद्धि विद्या में परिश्रम के योग से सफलता प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का मंगल—बारहवें खर्च स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की वृषभराशि में बैठा है तो खर्च विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करेगा और परिश्रम, प्रपंच व झंझट आदि के योग से खर्च और आमदनी का संयोग प्राप्त रहेगा तथा चौथी दृष्टि से भाई पराक्रम भवन को मित्र सूर्यकी सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिए भाई बहिन के पक्ष में कुछ झंशट युक्त रूप से लाभ रहेगा और लाभ प्राप्ति के योग से परिश्रम

मिथुन लग्न में १२ मंगल

नं० २५२

तथा पुरुषार्थ खूब करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने शत्रु स्थान को वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में कुछ हानि लाभ के योग से प्रभाव रखेगा और माता के पक्ष में कुछ हानि या कमजोरी प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से स्त्री स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ झंझट रोग और कुछ मतभेद के सहित लाभ प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़े परिश्रम और प्रपंच के योग से लाभ प्राप्त करेगा क्योंकि मंगल शत्रु स्थान का स्वामी होने से दोषी है, इसलिये मूत्रेन्द्रिय के स्थान में कभी कुछ रोग प्राप्त करेगा, क्योंकि सातवाँ स्थान भोग प्राप्त करने का होता है।

माता, भूमि, देह, सुख, विवेक स्थानपति-बुध

मिथुन लग्न में १ बुध
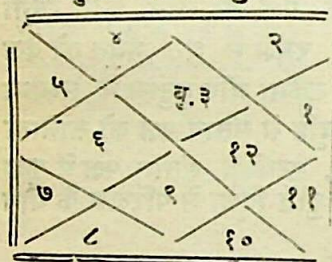
नं० २५३

यदि मिथुन का बुध—प्रथम केन्द्र में देह के स्थान पर स्वयं अपने क्षेत्र में ही बैठा है तो देह के अन्दर सुडौल कद एवं सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा माता की महानता और घरेलू सुख के साधनों को उत्तम रूप में प्राप्त करेगा और मकानादि भूमि का सुन्दर योग प्राप्त करेगा तथा विवेक की उच्चतम योग शक्ति स्वयमेव प्राप्त रहेगी इसलिये देह सदैव मान सम्मान प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की धन राशि में स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिए स्त्री स्थान में आत्मीयता और सुख का विशेष योग प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में देह की विशेष शक्ति के द्वारा उत्तम सुख और सफलता प्राप्त करेगा और सुख शान्ति का विशेष अनुयायी बनेगा।

यदि कर्क का बुध—धन भवन में मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह की विवेक शक्ति से सुख पूर्वक धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इस-

मिथुन लग्न में २ बुध

नं० २५४
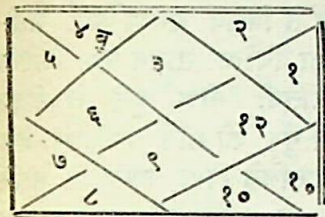
लिये धन संग्रह करने के सम्बन्ध से देह के सुख साधनों में कुछ त्रुटि प्राप्त रहेगी और इसीलिये माता के सुख सम्बन्ध में भी कमी प्राप्त रहेगी और मकान जायदाद की शक्ति से धन का योग प्राप्त रहेगा और कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को मित्र शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये जिन्दगीमें महानता प्राप्त करेगा आयु और जीवन में सुख प्राप्ति के साधन प्राप्त रहेंगे तथा पुरातत्व का लाभ पावेगा।

मिथुन लग्न में ३ बुध

नं० २५५
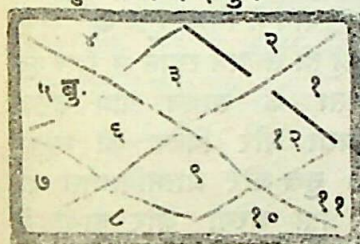
यदि सिंह का बुध—भाई और पराक्रम के स्थान पर मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा और सुख पूर्वक देह के परिश्रम से उन्नति करेगा और माता के स्थान की अनुकूल शक्ति प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति के द्वारा सुख के साधन प्राप्त करेगा तथा शांति युक्त बहादुरी और हिम्मत से काम लेगा तथा मकानादि रहने के स्थान की शक्ति प्राप्त रहेगी और सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक पुरुषार्थ की विवेक शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का सुन्दर पालन करेगा तथा इसी कारण से मान और प्रभाव तथा यश प्राप्त करेगा और धैर्यवान् तथा सज्जन समझा जायेगा।

यदि कन्या का बुध—चौथे केन्द्र सुख भवन में माता के स्थान पर स्वयं अपनी राशि के अन्दर उच्च का होकर बैठा है तो सुख प्राप्ति के महान् साधन प्राप्त करेगा और माता के स्थान में महानता प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का विशेष महत्व दायक अधिकार प्राप्त रहेगा और देह में सुडौलता-सुन्दरता का योग प्राप्त करेगा

मिथुन लग्न में ४ बुध

नं० २५६

तथा घर के अन्दर विवेक शक्ति की महानता से विशेष प्रभाव और मनोविनोद का विशेष साधन प्राप्त करेगा किन्तु सातवीं नीच दृष्टि से पिता स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में हानि या त्रुटि प्राप्त करेगा और राज समाज कारबार के स्थान में कमजोरी और मान सम्मान में कमी पायेगा क्योंकि घरेलू सुख की मस्ती के कारणों से उन्नति के मार्ग में लापरवाही करेगा।

मिथुन लग्न में ५ बुध

नं० २५७
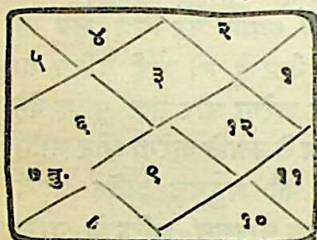
यदि तुला का बुध—पाँचवें त्रिकोण सन्तान स्थान में मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो सन्तान स्थान में सुख एवं आत्मीयता के साधन प्राप्त करेगा तथा विद्या और विवेक की महान् शक्ति से सुख और आत्मविश्वास का आनन्द प्राप्त करेगा और वाणी के द्वारा बड़ी गम्भीर और जचाव की बातें कहेगा, इसलिये महान् चतुर और बड़ा योग्य बुद्धिमान् माना जायेगा और सातवीं दृष्टि से मित्र मंगल की मेष राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये देह और बुद्धि के योग से लाभ खूब प्राप्त करेगा तथा अपने स्वाभिमान और धन लाभ का विशेष ध्यान रखेगा और माता की शक्ति का सुख बुद्धि योग द्वारा अनुभव करेगा तथा कुछ भूमि का सुख प्राप्ति करेगा और गम्भीर एवं शान्तिप्रिय बनेगा।

यदि वृश्चिक का बुध—छठें शत्रु स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो शांति पूर्वक देह की विवेक शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में काम निकालेगा तथा देह से परिश्रम खूब करेगा और कुछ परतन्त्रता का योग प्राप्त करेगा और माता के स्थान से सम्बन्धित सुखों की

मिथुन लग्न में ६ बुध

नं० २५८

बहुत कमी प्राप्त करेगा तथा रहने सहने के स्थान में त्रुटि प्राप्त करेगा और देह में सुन्दरताकी कमी तथा कुछ रोग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में खर्च स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सुख का अनुभव करेगा तथा मामा के स्थान में भी कुछ सुख सहायता प्राप्त करेगा तथा कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग से सम्बन्धित रहकर परेशानी अनुभव करेगा।

यदि धन का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो स्त्री का उत्तम सुख और सुन्दरता तथा महानता प्राप्त करेगा और स्त्री के अन्दर विशेष आत्मीयता का भाव रखेगा तथा

मिथुन लग्न में ७ बुध

नं० २५९
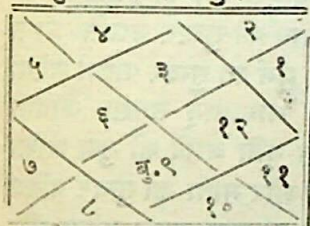
माता के मान सम्मान में कुछ न्यूनता के भाव से सुन्दर काम निकालेगा और रोजगार के मार्ग में दैहिक कर्म की चतुराई से सुख और सफलता प्राप्त करेगा और रहने के स्थान मकान का सुन्दर सुख मिलेगा तथा भोग विलास का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने देह स्थान को मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता तथा मान और चतुराई प्राप्त करेगा तथा अपने हृदय के अन्दर बड़ा भारी स्वाभिमान रखेगा तथा कुछ नाम प्राप्त करेगा।

यदि मकर का बुध—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की मकर राशि में बैठा है तो माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा और देह के अन्दर सुन्दरता सुडौलताई की कमी प्राप्त करेगा और मातृ स्थान तथा जन्म भूमि के स्थान से दूर किसी दूसरे स्थान में निवास करेगा और मकानादि रहने के स्थान में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा तथा

मिथुन लग्न में ८ बुध

नं० २६०

पुरातत्व के सम्बन्ध में विवेक शक्ति के द्वारा सुख उठावेगा और आयु का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या को सुखद रूप से व्यतीत करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि विशेष प्रयत्न से करेगा तथा कुटुम्ब के स्थान में कुछ सुखमय सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु अपने देह द्वारा कुछ कठिन परिश्रम के कार्यों के करने से सुख शान्ति में बाधा प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ९ बुध

नं० २६१
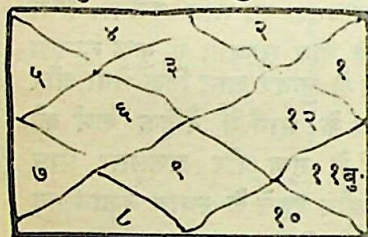
यदि कुम्भ का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो दैहिक कर्म की विवेक शक्ति के द्वारा भाग्य की सुन्दर उन्नति प्राप्त करेगा और धर्म का सुन्दर पालन करेगा और बड़ा भाग्यवान् समझा जायेगा तथा मकान भूमि आदि की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और माता का सुन्दर पवित्र योग प्राप्त करेगा और भाग्य की शक्ति से महान् सुख प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में भाई और पराक्रम स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान में सुन्दर सफलता और यश प्राप्त करेगा किन्तु पुरुषार्थ के मुकाबले में भाग्य और भगवान् को बड़ा मानेगा, क्योंकि बुध बड़ा विवेकी ग्रह है, इसलिये लौकिक और पारलौकिक मार्गों में गहरी विवेक शक्ति से उन्नति और यश प्राप्त करेगा।

यदि मीन का बुध—केन्द्र में दसवें पिता स्थान पर नीच राशि का गुरु क्षेत्र में बैठा है तो देह के कठिन कर्म से उन्नति करने के मार्ग में प्रयत्नशील रहकर मान और अपमान का योग प्राप्त करेगा तथा पिता

का सुख बहुत थोड़ा प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र सुख भवन को कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्ति के साधनों में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा मकानादि रहने के स्थानों में वृद्धि की शक्ति पावेगा, माता के स्थान का विशेष ख्याल रखेगा तथा देहाधीश बुध नीच राशि में बैठा है इसलिये कुछ छिपे तौर से तथा कुछ अनधिकार रूप से भी उन्नति प्राप्त करने का प्रयत्न कार्य करेगा।
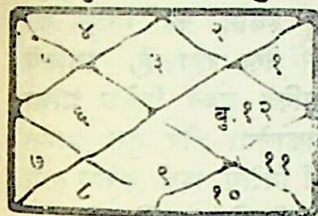
मिथुन लग्न में १० बुध

नं० २६२

यदि मेष का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो देह की विवेक शक्ति के योग से सुख पूर्वक खूब लाभ प्राप्त करेगा तथा माता के स्थान का सुख प्राप्त करेगा और मकान तथा जायदाद का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में संतान स्थान को देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष से सुख प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में सफलता पावेगा और बुद्धि के अन्दर विवेक शक्ति के बल से मीठी, मोहित करने वाली शब्द शैली से सुख प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता पावेगा और अन्तरात्मा में धन लाभ की वृद्धि का विशेष ध्यान रखेगा।
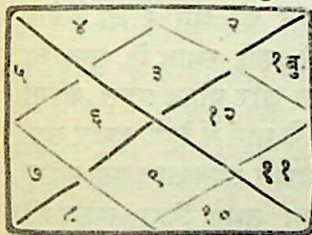
मिथुन लग्न में ११ बुध

नं० २६३

यदि वृषभ का बुध—बारहवें स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा और देह में दुर्बलता प्राप्त करेगा तथा माता के सुख सम्बन्धों में कमी प्राप्त करेगा और मकान आदि रहने के स्थान में कमी करेगा तथा जन्मभूमि से अलग दूसरे स्थानों में

मिथुन लग्न में १२ बुध

नं० २६४
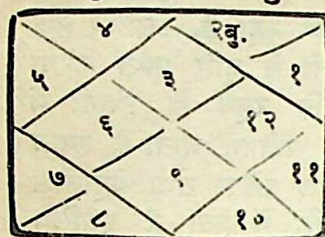
सुख के साधन प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों में विशेष आने जाने का सम्बन्ध रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में शक्ति युक्त विवेक शक्ति से मतलब निकालेगा और सुख प्राप्ति के सम्बन्धों में विशेष खर्च करेगा तथा अन्दरूनी कुछ दुःख महसूस करेगा तथा खर्च की विशेष शक्ति के द्वारा अपना मान और प्रभाव कायम रखेगा।

स्त्री, रोजगार, पिता, राज्य स्थानपति—गुरु

मिथुन लग्न में १ गुरु
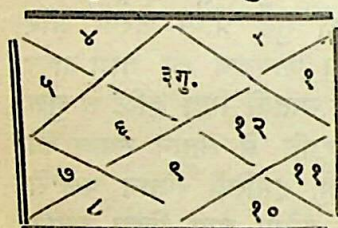
नं० २६५

यदि मिथुन का गुरु—केन्द्र में देह के स्थान पर मित्र बुध की राशिमें बैठा शरीर में प्रभाव रहेगा और सातवी दृष्टि से स्वयं अपने स्त्री स्थान को धन राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री स्थान में सुन्दरता योग्यता प्रतिभा और गौरव प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में देहके सुन्दर सहयोग से बड़ी उत्तम सफलता प्राप्त करेगा और अपने अन्दर बड़ा भारी स्वाभिमान रखेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का उत्तम लाभ प्राप्त करेगा और राज समाज के कामों में मान प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता और प्रभाव पावेगा और पाँचवीं सामान्य शत्रु की दृष्टि से संतान भवन को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ नीरसता युक्त शक्ति से सहायता प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में उन्नति, वाणी में कुशलता तथा योग्यता प्राप्त करेगा और नवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, इसलिये भाग्य के स्थान में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा किन्तु भाग्यवान् माना जायगा और धर्म के स्थान में

कुछ अरुचिकर रूप से धर्म का पालन करेगा और बड़प्पन का रहन सहन रखकर इज्जत पावेगा।

मिथुन लग्न में २ गुरु

नं० २६६
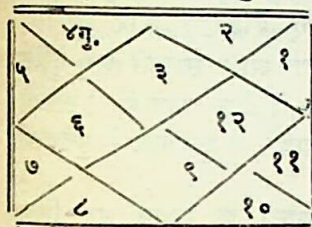
यदि कर्क का गुरु—धन भवन में उच्च का होकर मित्र चन्द्र की राशि में बैठा है तो धन संग्रह शक्ति का बड़ा गौरव प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री पक्ष के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर योग पावेगा तथा नवमी दृष्टि में स्वयं अपने दसवें पिता स्थान मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की उन्नति प्राप्त करेगा और कारबार से धन की खूब वृद्धि करेगा तथा राज समाज में मान इज्जत और लाभ प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में इज्जत और प्रभाव की शक्ति से विजय एवं सफलता प्राप्त करेगा और मामा के पक्ष में सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से अष्टम आयु एवं पुरातत्व स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ अशान्ति अनुभव करेगा तथा पुरातत्व की कुछ कमी रहेगी।

मिथुन लग्न में ३ गुरु

नं० २६७
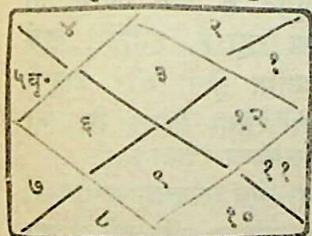
यदि सिंह का गुरु--तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान पर मित्र सूर्य की राशि में बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति करेगा तथा पराक्रम की खूब वृद्धि और सफलता प्राप्त करेगा और बड़ी भारी हिम्मत वाला बनेगा और पाँचवीं दृष्टि से स्वयं अपनी राशि में स्त्री स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये अपने स्थान की वृद्धि करेगा अर्थात् स्त्री की

महान् सुन्दर और सुयोग्य शक्ति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव एवं जागृति रखेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिए रोजगार और पुरुषार्थ के योग से धन का लाभ खूब शानदार करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य में तर्क शक्ति से काम करेगा तथा भाग्य के मुकाबले में पुरुषार्थ और कर्म को बड़ा मानेगा।

यदि कन्या का गुरु—चौथे केन्द्र में माता के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा तो माता की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और मकान आदि रहने के स्थान में सुन्दर शक्ति और प्रभाव रखेगा तथा सुख के अच्छे साधन प्राप्त रहेंगे और सातवीं दृष्टि से मीन राशि में स्वयं अपने क्षेत्र राज्य स्थान को देख रहा है, इसलिये राज समाज में मान प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की सहायता शक्ति पावेगा और पाँचवीं नीच दृष्टि से शनि की मकर राशि में आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन में बहुत प्रकार की असुविधा और अशांति अनुभव करेगा तथा पुरातत्व की हानि प्राप्त करेगा और नवमी दृष्टि से खर्च स्थान को सामन्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च अधिक होने के कारणों से कुछ असुविधा प्रतीत होगी और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध कुछ नीरसता युक्त प्राप्त रहेगा किन्तु फिर भी खर्च खूब करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष सम्बन्ध रखेगा।
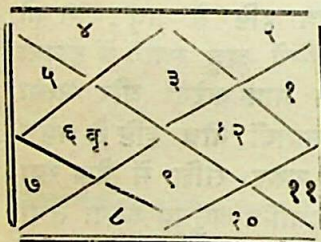
मिथुन लग्न में ४ गुरु

नं० २६८

यदि तुला का गुरु - पाँचवे त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि में बैठा है तो सन्तान और स्त्री के पक्ष में कुछ नीरसताई से सहायक शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में प्रभाव तथा योग्यता प्राप्त करेगा और वाणी की कुशलता से

कारबार तथा राज-समाज में मान और सफलता प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ त्रुटि युक्त सफलता प्राप्त करेगा और धर्म का कुछ मतभेद सहित पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये धन लाभ का विशेष ध्यान रखते हुए बुद्धि की कुशलता से लाभ खूब प्राप्त करेगा और नवीं मित्र दृष्टि से देह स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा भारी स्वाभिमान रखेगा तथा सुन्दरता और मान तथा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा बड़ा चतुर बुद्धिमान् दूरदर्शी बनेगा तथा अपनी विशेष उन्नति के लिए बड़ा भारी प्रयत्न करता रहेगा तथा वाणी में शक्ति प्राप्त करेगा।
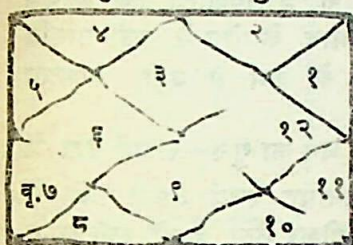
मिथुन लग्न में ५ गुरु

नं० २६९

मिथुन लग्न में ६ गुरु

नं० २७०
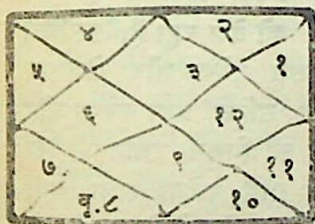
यदि वृश्चिक का गुरु—छठें शत्रु स्थान में मंगल की राशि में बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ विरोध भावना या कुछ मतभेद और रोग के सहित स्त्री का अच्छा सहयोग प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान में भी कुछ विरोध या वैमनस्यता के सहित शक्ति प्राप्त करेगा और शत्रु स्थान में अपने कर्म-बल के प्रभाव से विजय प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से अपने क्षेत्र राज्य स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि को देख रहा है, इसलिये परिश्रम के योग से प्रभावशाली कर्म के द्वारा उन्नति करेगा और राज-समाज में सम्मान प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये कुछ नीरसता के योग से खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों के

सम्बन्ध में मान और रोजगार का लाभ उठावेगा और नवीं 'उच्च दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये परिश्रमी रोजगार के मार्ग से धन की वृद्धि करेगा और कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करेगा और भलमनसाहत के प्रभावशाली कर्म में खूब परिश्रम करेगा। तथा परिश्रम और प्रभाव के योग से बड़ी उन्नति करेगा तथा झगड़े-झंझट युक्त परेशानी के कर्म से बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ७ गुरु

नं० २७१
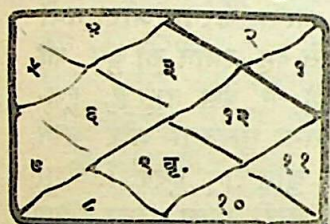
यदि धन का गुरु—सातवें केन्द्र में स्त्री स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा भारी प्रभाव सुन्दरता और गौरव प्राप्त करेगा और गृहस्थ में बड़ा वैभव प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में महानता पायेगा और पिता एवं राज्य स्थान के सम्बन्ध से रोजगार के पक्ष में सफलता और सहायता प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से मंगल की मेष राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि प्राप्त करने का बड़ा भारी ध्यान रखेगा और रोजगार व्यापार के मार्ग से धन का खूब लाभ मान सहित प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और मान प्राप्त करेगा तथा नवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति और सहायता प्राप्त करेगा और पराक्रम के कार्यों में बड़ी सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा तथा लौकिक और गृहस्थिक कार्यों में बड़ी भारी प्रवीणता रखेगा और अपने स्वाभिमान वृद्धि करने का सदैव ध्यान रखकर दैनिक कार्य करता रहेगा।

यदि मकर का गुरु—आठवें मृत्यु स्थान में नीच का होकर शत्रु शनि की मकर राशि में बैठा है तो स्त्री और पिता के स्थान में कष्ट

अनुभव करेगा तथा रोजगार और कारबार के मार्ग में महान् कठिनाइयों से काम करेगा तथा दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से और कुछ कष्ट तथा कुछ कपट के योग से गृहस्थ का कार्य संचालन करेगा तथा उदर और मूत्रेन्द्रिय में कुछ विकार पायेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से खर्च स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च की अधिकता के स्थान में कुछ नीरसता प्राप्त रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से धन भवन को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये धनकी वृद्धि का विशेष ध्यान और अधिक प्रयत्न करेगा और नवीं दृष्टिसे सुख भवन को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्ति के साधन और मकान आदि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान और प्रभाव की कमी प्राप्त करेगा तथा कुछ अनुचित मार्ग का अनुयायी बनेगा।
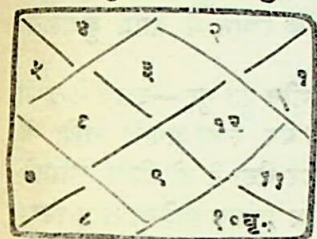
मिथुन लग्न में ८ गुरु

नं० २७२

यदि कुम्भ का गुरु—नवम त्रिकोण में भाग्य स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ अरुचिकर रूप से भाग्य की उन्नति प्राप्त करेगा और कर्म धर्म के स्थान में कुछ नीरस मार्ग के द्वारा सफलता पावेगा तथा स्त्री और पिता स्थान के सम्बन्ध में कुछ अरुचिकर रूप से भाग्य वृद्धि के साधन प्राप्त करेगा और रोजगार व्यापार तथा राज समाज के मार्ग में कुछ थोड़ी सी दिक्कतों के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में मान सम्मान सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाई

मिथुन लग्न में ९ गुरु

नं० २७३
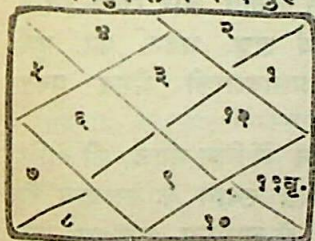
बहिन की शक्ति का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ की सफलता पावेगा तथा नवमी दृष्टि से संतान पक्ष को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से सफलता मिलेगी और विद्या बुद्धि के स्थान में कार्य कुशलता और योग्यता बढ़ेगी।

मिथुन लग्न में १० गुरु
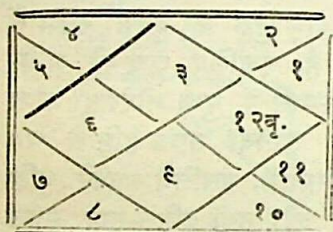
नं० २७४

यदि मीन का गुरु—दसवें केन्द्र में पिता स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो पिता स्थानमें महानता और प्रभाव पावेगा तथा पिता स्थान की शक्ति से रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और राज समाज से मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा लौकिक कार्यों में बड़ी भारी कार्य कुशलता व सफलता पावेगा और पाँचवीं उच्च दृष्टि से धन भवन को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति का बड़ा उत्तम सुख प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की श्रेष्ठ शक्ति मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से सुख भवन को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये माता और मकानादि का सुन्दर सुख प्राप्त करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा तथा मामा के पक्ष में सहायता और मान पावेगा और राज्य स्थान पर स्वक्षेत्र में बैठकर धन भवन को एवं शत्रु भवन को पूर्ण देखने के कारण से बड़ा धनवान् एवं प्रभावशाली वैभव युक्त भाग्यवान् बनेगा।

यदि मेष का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो कारवार-व्यापार तथा पिता स्थान के सम्बन्ध से खूब लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में संतान घर को देख रहा है, इसलिये कुछ थोड़ी सी नीरसताई से संतान के पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा तथा विद्या

स्थान में उत्तम व्यवहारिक बुद्धि की योग्यता से सफलता प्राप्त करेगा तथा नवमी दृष्टि से स्वयं अपनी धन राशि में अपने स्वक्षेत्र स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान का विशेष लाभ और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ा लाभ और विशेष आमदनी का योग प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को मित्र सूर्य की राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का उत्तम सुख प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान की विशेष बुद्धि और शक्ति प्राप्त करेगा तथा बाहुबल के कार्यों से मान सम्मान और सफलता तथा धन लाभ प्राप्त करेगा और राज्येश होकर लाभ स्थान में बैठने से बड़ी शानदारी के साथ आमदनी की विशेष सफलता प्राप्त करेगा।
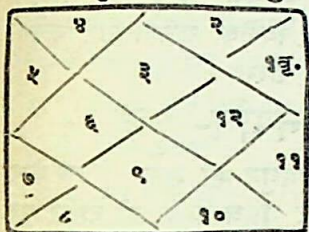
मिथुन लग्न में ११ गुरु

नं० २७५

मिथुन लग्न में १२ गुरु

नं० २७६
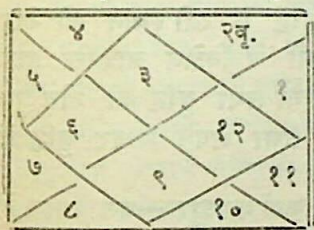
यदि वृषभ का गुरु—बारहवें खर्च स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो खर्च की अधिकता के कारणों से कुछ परेशानी प्रतीत होगी और बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से कुछ मान और रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री और पिता के सुख सम्बन्धों में कमजोरी प्राप्त होगी और रोजगार व्यापार के स्थान में कुछ हानि तथा कमजोरी अनुभव होगी तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से चौथे सुख भवन को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये घरेलू सुख मकानादि रहने के स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा नवीं नीच दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु शनि की

मकर राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा तथा उदर में कुछ विकार पायेगा तथा खर्चा अधिक रहने की मजबूरी बनी रहेगी तथा आयु के स्थान में कभी २ विशेष खतरा प्राप्त करेगा और अपने मान सम्मान में कमजोरी अनुभव करेगा।

विद्या संतान-खर्च स्थानपति-शुक्र

मिथुन लग्न में १ शुक्र

नं० २७७

यदि मिथुन का शुक्र—प्रथम केन्द्र स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण देह में दुर्बलता प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी चतुराई रखेगा तथा खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से तथा बुद्धि की योग्यता से बड़ा मान पावेगा और संतान पक्ष में कुछ कमजोरी के साथ सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं सामान्य शत्रु की दृष्टि से स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये कुछ मतभेद के साथ स्त्री में विशेष आसक्ति प्राप्त करेगा और भोगादिक में विशेष रुचि रखेगा तथा बुद्धि की दौड़ धूप से रोजगार के मार्ग में काम निकालेगा तथा अपने अन्दर बुद्धि में कमजोरी और भ्रम प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में २ शुक्र

नं० २७८

यदि कर्क का शुक्र—धन स्थान में सामान्य मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो बाहरी स्थानों के सम्बन्ध और बुद्धि योग से बड़ी चतुराई के साथ धन के मार्ग में इज्जत प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण धन की संग्रह शक्ति में कमजोरी प्राप्त करेगा और सन्तान पति का व्ययेश

होकर बन्धन (धन) के स्थान पर बैठने से सन्तान सुख में विशेष कमी उत्पन्न करेगा विद्या अच्छी ग्रहण करेगा और बातचीत के अन्दर छिपी स्वार्थ शक्ति से ही चतुराइयों के सहित काम करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से अष्टम आयु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में शानदारी से काम निकालेगा और पुरातत्व का सामान्य हानि-लाभ प्राप्त करेगा और कुटुम्ब में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ३ शुक्र

नं० २७९
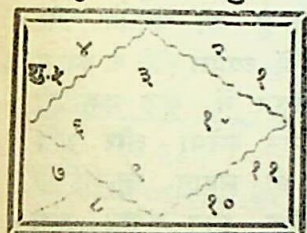
यदि सिंह का शुक्र—भाई के स्थान पर शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण भाई बहिन के पक्ष में कुछ कमी प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ के अन्दर कुछ कमजोरी पावेगा तथा सन्तान और विद्या के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी होते हुए भी चतुराई की शक्ति और हिम्मत से बातचीत के द्वारा काम की सफलता और खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और खर्च की शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और धर्म के पक्ष में विशेष दिलचस्पी रखेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा खर्च का संचालन करेगा।

मिथुन लग्न में ४ शुक्र

नं० २८०

यदि कन्या का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं सुख भवन में नीच राशि का होकर बैठा है और व्ययेश होने का दोष भी है, इसलिये मातृ स्थान के सुख सम्बन्धों में हानि प्राप्त करेगा तथा मकानादि रहने के स्थानों में सुख की कमी प्राप्त करेगा और सन्तान सुख की कुछ कमजोरी अनुभव

करेगा और खर्च के कारणों से कुछ सुख-शान्ति में बाधा प्राप्त करेगा किन्तु सातवीं उच्च दृष्टि से राज्य स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये घरेलू अशान्ति को सहन करके भी उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा गुप्त चतुराई से सफलता पावेगा तथा अन्दरूनी कमजोरी के होते हुए भी बाहर मान प्रतिष्ठा पावेगा।

मिथुन लग्न में ५ शुक्र

नं० २८१

यदि तुला का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण सन्तान स्थान पर अपनी ही राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो सन्तान और विद्या के पक्ष में व्ययेश होने के कारण उपरोक्त विषय में कुछ कमजोरी या कमी प्राप्त करेगा और बुद्धि और वाणी की महान् चतुराई से खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग से धन का खूब लाभ प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के कारण आमदनी को भी विशेष खर्च करता रहेगा तथा हेर फेर की और दूर की बातों पर विशेष बोलने वाला बनेगा।

मिथुन लग्न में ६ शुक्र

नं० २८२

यदि वृश्चिक का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में बाधा प्राप्त करेगा और विद्या ग्रहण करने में दिक्कतें प्राप्त करेगा तथा दिमाग में कुछ खर्च के कारणों से परेशानी रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने खर्च स्थान को वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परतन्त्रता या परेशानी के योग से खर्चा खूब

करेगा और शत्रु स्थान में बुद्धि की चतुराई और खर्च की ताकत से काम निकालेगा तथा सन्तान और रोग एवं झंझट झगड़े आदि सम्बन्धों से खर्चा अधिक करेगा तथा गुप्त चतुराई के योग से मतलब निकालेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध कुछ साधारण प्रभावशाली रहेगा।

मिथुन लग्न में ७ शुक्र

नं० २८३
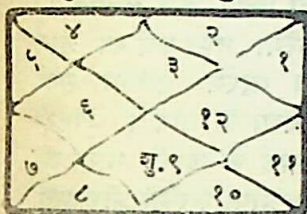
यदि धन का शुक्र—सातवें केन्द्र में स्त्री एव रोजगार के स्थान पर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो बुद्धिमती और चतुर स्त्री प्राप्त करेगा और बुद्धि की चतुराई के योगसे रोजगार चलायेगा किन्तु व्ययेश होने के कारण रोजगार के मार्ग में कुछ हानि भी प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में कुछ कमी या क्लेश का रूप भी प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में खर्चा खूब रहेगा और सन्तान तथा विद्या का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये देह में कुछ कमजोरी और मान प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों से कुछ रोजगार के मार्ग में सहायता सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ८ शुक्र

नं० २८४
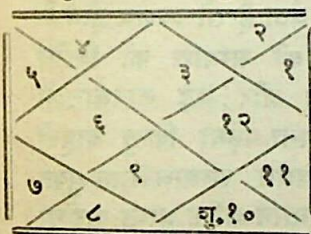
यदि मकर का शुक्र—आठवें मृत्यु स्थान पर मित्र शनि की मकर राशि में बैठा है तो सन्तान पक्ष में हानि और कष्ट प्राप्त करेगा और विद्या में कमजोरी रहेगी और खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी महसूस होगी और गूढ़ बुद्धि तथा पुरातत्व का ज्ञान प्राप्त करेगा और अपनी जीवनाधार शक्ति को होने के लिये सदैव महान् प्रयत्न करता और सोचता रहेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ प्रभाव रहेगा और सातवीं दृष्टि से

सामान्य मित्र चन्द्र की कर्क राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा किन्तु व्ययेश होने के कारण धन की संग्रह शक्ति में कमी अनुभव करेगा।

मिथुन लग्न में ९ शुक्र

नं० २८५

यदि कुम्भ का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो विद्या और सन्तान का सुख प्राप्त करेगा तथा धर्म का ज्ञान और सज्जनता धारण करेगा तथा बुद्धि और विद्या के योग से बाहरी स्थानों के सम्पर्क के द्वारा भाग्य की वृद्धि के साधन प्राप्त करेगा और बड़ा भारी चतुराई के योग से मान और यश प्राप्त करेगा भाग्य की ओर बुद्धि की शक्ति से खर्च के उत्तम साधन पावेगा किन्तु व्ययेश होने के नाते भाग्य की कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और सातवी दृष्टि से भाई के स्थान को शत्रु सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में वैमनस्य प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ के मुकाबले में भाग्य को बड़ा मानेगा।

मिथुन लग्न में १० शुक्र

नं० २८६
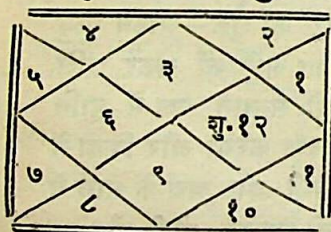
यदि मीन का शुक्र—दसवें केन्द्र पिता स्थान में उच्च का होकर गुरु की राशि में बैठा है तो व्ययेश होने के कारण पिता की सम्पत्ति को विशेष खर्चा करेगा और बड़े कारबार में नुकसान उठाना पड़ेगा किन्तु बाहरी स्थानों का विशेष सम्बन्ध मान युक्त रहेगा और सन्तान शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या भी ग्रहण करेगा और राज समाज में कुछ मान प्राप्त करेगा तथा खर्चा अधिक रहेगा तथा बुद्धि के अहंभाव के कारण उन्नति और मान प्राप्ति के स्थान में बार-बार हानियाँ प्राप्त करेगा

और चौथे सुख स्थानको नीच दृष्टि से देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्ति के सम्बन्ध में तथा मातृ स्थान के सुख में कमी प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में ११ शुक्र

नं० २८७
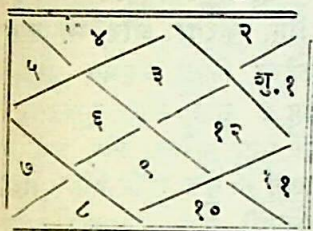
यदि मेष का शुक्र—ग्यारवें लाभ स्थान में सामान्य मित्र मंगल की राशि में बैठा है और सातवी दृष्टि से स्वयं अपने सन्तान स्थान को तुला राशि में देख रहा है, तो सन्तान का लाभ प्राप्त करेगा तथा विद्या ग्रहण करेगा और वाणी के द्वारा तथा चतुराई के द्वारा खूब धन लाभ प्राप्त करेगा, विद्या बुद्धि तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से आमदनी में शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होनेके कारणसे विद्या तथा संतानके पक्षमें कुछ कमी या कमजोरी अनुभव करेगा और दिमाग में कुछ परेशानी या फिकर रहेगी तथा खर्चा खूब करेगा और लाभ प्राप्ति के स्थान सम्बन्ध में बड़ी चतुराई के साथ बहुत हेर फेर की बातें करके स्वार्थ सिद्धि में सफलता प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में १२ शुक्र

नं० २८८
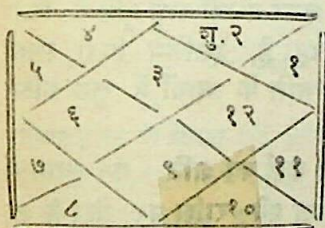
यदि वृषभ का शुक्र—बारहवें खर्च स्थान पर स्वयं अपने घर में स्वक्षेत्री होकर बैठा तो खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्पर्क प्राप्त करेगा तथा विद्या और संतान पक्ष में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा विद्या और संतान का कुछ विलम्ब से योग प्राप्त करेगा और बुद्धि योग से बड़ी चतुराई के साथ खर्चे की शक्ति प्राप्त करेगा तथा बड़ी घुमाव-फिराव की बातें करने का स्वभाव पावेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ी चतुराई और नरमाई से बातें बनाकर कार्य की पूर्ति करेगा तथा बुद्धि में कुछ परेशानी अनुभव करेगा।

आयु, मृत्यु, भाग्य, धर्म स्थानपति–शनि

यदि मिथुन का शनि—प्रथम केन्द्र में देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और भाग्यवान् समझा जायेगा और धर्म का पालन करेगा किन्तु अष्टमेष होने के कारण देह के सुख और सुन्दरता में कुछ कमी प्राप्त करेगा और धर्म के यथार्थ पालन में कुछ त्रुटि रखेगा तथा भाग्य सम्बन्धी कुछ पुरातत्व शक्ति का लाभ पायेगा किन्तु भाग्य में भी कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से भाई के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिए भाई बहन के स्थान में कुछ वैमनस्यता पावेगा और पुरुषार्थ कर्म में कुछ नीरसता अनुभव करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में कुछ नीरसता अनुभव करेगा तथा दशवीं शत्रु दृष्टि से पिता स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में वैमनस्यता करेगा। राज समाज व उन्नति के मार्गों में कुछ कठिन कर्म के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में १ शनि

नं० २८९

यदि कर्क का शनि—धन स्थान में शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से पुरातत्व धन का लाभ प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेष होने के दोष के कारण धन की संचित शक्ति के अन्दर हानि के कारण उत्पन्न करेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ सुख-दुख का सामान्य योग पावेगा तथा तीसरी

मिथुन लग्न में २ शनि

नं० २९०

मित्र दृष्टि चौथे सुख भवनको देख रहा है, इसलिये सुख और मकानादि के स्थानका कुछ सहारा प्राप्त करेगा और माता के पक्षमें सुखकी थोड़ीसी कमी के साथ योग प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र आयु स्थान को मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा और जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी का तरोका प्राप्त करेगा और दसवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरी तथा कष्ट और लापरवाही का योग प्राप्त करेगा और धर्म पालन के स्थान में धन का विशेष महत्व मानेगा किन्तु भाग्य स्थानपति शनि के धन भवन में बैठने के कारण से धन की तरफ से बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा तथा स्वार्थ युक्त सज्जनता का पालन करेगा।

मिथुन लग्न में ३ शनि

नं० १९१
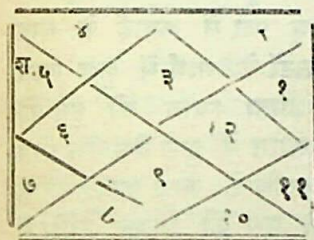
यदि सिंह का शनि—तीसरे भाई के स्थान पर शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन से वैमनस्य प्राप्त रहेगा और पराक्रम सम्बन्धी कार्यों में कुछ अरुचि के साथ मिहनत करके सफलता प्राप्त करेगा और पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा आयु में वृद्धि प्राप्त रहेगी और तीसरी उच्च दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि और सन्तान पक्ष में उन्नति प्राप्त करेगा तथा वाणी द्वारा विशेष बातें कह कर अपना मतलब सिद्ध करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र भाग्य को कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा किन्तु अष्टमेश होने के कारण भाग्य स्थान में कुछ परेशानी भी प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग का यथाशक्ति पालन करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब रहेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर

सम्बन्ध प्राप्त रहेगा और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिए बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से सफलता प्राप्त रहेगी।

मिथुन लग्न में ४ शनि

नं० २९२

यदि कन्या का शनि—चौथे केन्द्र माता एवं सुख स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो माता के स्थान की शक्ति तो प्राप्त होगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष से माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और मकानादि की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा आयु का उत्तम सुख प्राप्त रहेगा और घर की रहन-सहन के अन्दर भाग्यवान् समझा जायेगा तथ धर्म का कुछ पालन करेगा और तीसरी दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कड़ाई के साथ प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ लाभ युक्त रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ वैमनस्य प्राप्त करेगा और राज-समाज के कार्यों में कुछ अरुचि के साथ कार्य करेगा तथा दशवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए देह से भाग्यवान् समझा जायेगा और देह के द्वारा कुछ धर्म कर्म का भी कार्य करेगा और सुख प्राप्ति के साधनों का विशेष ध्यान रखेगा तथा भाग्योन्नति प्राप्त करने के लिए देह के द्वारा विशेष प्रयत्नशील रहेगा।

यदि तुला का शनि—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि में उन्नति पावेगा तथा आयु में वृद्धि प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा संतान पक्ष से भाग्य की वृद्धि पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कमजोरी प्राप्त करेगा और

मिथुन लग्न में ५ शनि

नं० २९३

तीसरी शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट और शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाई के सहित कार्य में सफलता पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से धन भवन को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाई के सहित धन की पूर्ति करेगा अतः प्रत्येक विषयों में अष्टमेष होने के कारण कष्ट करता है और नवमेश होने के कारण से उन्नति और सहायता प्रदान करता है, इसलिये कुटुम्ब के पक्ष में कुछ अल्प सुख प्राप्त करेगा और भाग्य तथा जीवन की उन्नति करने के लिये भारी प्रयत्न करेगा।

यदि वृश्चिक का शनि—छठें शत्रु स्थान में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में बैठा है तो झगड़े झंझटों के मार्ग से भाग्य की वृद्धि करेगा और शत्रु स्थान में प्रभाव और सफलता प्राप्त करेगा तथा तीसरी

मिथुन लग्न में ६ शनि

नं० २९४

दृष्टि से स्वयं अपने आयु स्थान को मकर राशि में देख रहा है इसलिये आयु की वृद्धि करेगा और पुरातत्व शक्तिका लाभ प्राप्त करेगा तथा भाग्येश का छठें स्थान पर बैठने से भाग्योन्नति में कुछ दिक्कतें पैदा करेगा और धर्म का यथार्थ पालन नहीं कर सकेगा। सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब शानदार करेगा और बाहरी स्थान का सम्बन्ध उत्तम रहेगा और दशवीं शत्रु दृष्टि से भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख में बाधा प्राप्त करेगा और पराक्रम की सफलता के लिये कठिन प्रयत्न करेगा तथा छठें

स्थान पर क्रूर ग्रह बैठा है और तीसरे स्थान को क्रूर ग्रह स्वयं देख रहा है, इसलिए परिश्रम खूब करेगा और महान् हिम्मत शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और छठें स्थान पर क्रूर ग्रह के बलवान् होने से प्रभाव शक्ति की महान् वृद्धि करेगा।

मिथुन लग्न में ७ शनि
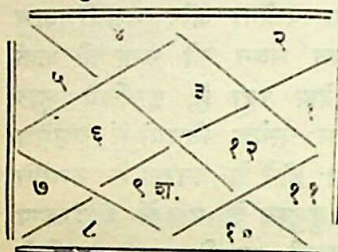
नं० २९५

यदि धन का शनि सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने का दोष और नवमेश होने का गुण दोनों कारणों के योग से स्त्री स्थान में सुख और दुख का हेतु बनेगा तथा रोजगार के पक्ष में कुछ कष्ट युक्त मार्ग से सफलता प्राप्त करेगा और आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा मूत्र-इन्द्रिय में कभी कोई कष्ट प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के मार्ग द्वारा भाग्य वृद्धि के अच्छे साधन प्राप्त करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा और गृहस्थ धर्म का पालन करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ फिकर सहित सज्जनता और प्रभाव शक्ति पावेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से चौथे माता के स्थान को देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान के सुख में कुछ त्रुटि युक्त सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा तथा मकानादि रहने के स्थान में कुछ नीरसता सहित सुखद शक्ति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के अन्दर कुछ दिक्कतें सहने के बाद उन्नति का योग प्राप्त करेगा।

यदि मकर का शनि—आठवें आयु स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और भाग्य में दुर्बलता अनुभव करेगा तथा विदेश द्वारा कठिनाई के योग से भाग्य की शक्ति प्राप्त करेगा और सुयश की कमी पावेगा तथा धर्म का ठीक पालन नहीं कर सकेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि

मिथुन लग्न में ८ शनि

नं० २९६

से पिता स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ कष्ट या कमी अनुभव करेगा और राज-समाज, व्यापार आदि कार्यों में कुछ कठिनाइयों से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह के स्थान में त्रुटि अनुभव करेगा और दसवीं उच्च दृष्टि से संतान स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान पक्ष में कुछ दिक्कत के साथ वृद्धि प्राप्त करेगा तथा वाणी की शक्ति के द्वारा उन्नति तथा भाग्य वृद्धि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में भाग्यवानी के तरीके से गुजरान करेगा इसलिये भाग्यवान् समझा जायगा।

मिथुन लग्न में ९ शनि

नं० २९७
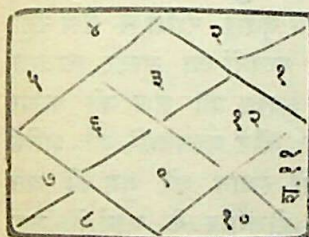
यदि कुम्भ का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष से भाग्य में कुछ अन्दरूनी त्रुटि पाते हुए प्रकट में अच्छा भाग्यवान् समझा जायगा और धर्म का पालन करेगा एवं कुछ यश प्राप्त करेगा तथा कुछ पुरातत्व शक्ति का अच्छा लाभ पावेगा और आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और दिनचर्या को बड़ी शान-दारी से अमीरात के ढंग पर व्यतीत करेगा और कुदरती तौर से दैवी सहायतायें प्राप्त करेगा तथा तीसरी नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरियाँ तथा परेशानियाँ प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाई

बहन के प्रेम सुख सम्बन्धों में त्रुटि प्राप्त करेगा और भाग्य के सम्मुख पुरुषार्थ को थोड़ा कम महत्व देगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान के पक्ष से कुछ परेशानी होते हुए भी शत्रुओं की परवाह नहीं करेगा तथा दिक्कतों पर भाग्य शक्ति से विजय पायेगा।

मिथुन लग्न में १० शनि
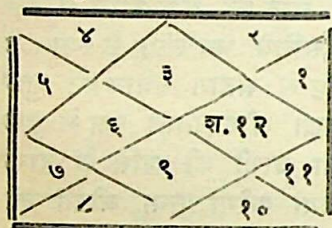
नं २९८

यदि मीन का शनि - दसम केन्द्र पिता स्थान में शत्रु बृहस्पति की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान के सुख में कमी प्राप्त करेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में बहुत प्रकार की दौड़ धूप और रद्दो बदल के बाद सफलता प्राप्त होगी और आयु स्थान की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान पावेगा और भाग्यवान् समझा जायेगा तथा धर्म-कर्म का पालन करेगा किन्तु प्रत्येक कार्यों में स्वार्थ सिद्धि का मुख्य ध्यान रखेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त होगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से सुख स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये सुख के साधन और मकानादि की शक्ति प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री तथा रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी के साथ सफलता शक्ति प्राप्त करेगा, अतः इस जगह शनि का अष्टमेश होने का दोष और नवमेश होने का गुण दोनों ही चीजें हर विषय पर लागू होती हैं।

यदि मेष का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कमजोरी प्राप्त करेगा और भाग्य शक्ति के स्थान में कुछ कमी महसूस करेगा तथा धर्म का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा, बल्कि धन के लाभ सम्बन्ध

मिथुन लग्न में ११ शनि

नं० २९९
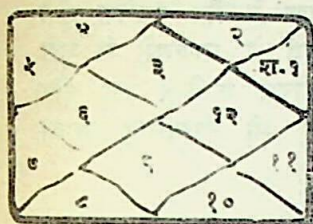
में कभी कुछ अनुचित स्वार्थ सिद्ध करेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष से देह में कुछ कष्ट या अशान्ति पावेगा तथा नवमेश होने के कारण देह में भाग्यवानी पैदा करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये वाणी के अन्दर वाचाल शक्ति पायेगा और विद्या तथा संतान पक्ष में वृद्धि प्राप्त करेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपने आयु स्थान को मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा तथा पुरातत्व का कुछ लाभ प्राप्त करेगा किन्तु नीच का होने के कारण जीवन में बड़े २ कष्ट एवं संकट पायेगा तथा आयु में खतरा प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में १२ शनि
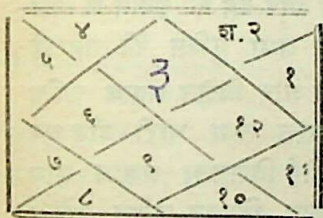
नं० ३००

यदि वृषभ का शनि—बारहवें खर्च स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति में कुछ हानि करेगा तथा दसवीं दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र भाग्य स्थान को कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये बाहरी स्थान के योग से भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का दिखावटी पालन करेगा तथा भाग्य स्थान में अन्दरूनी कमजोरी महसूस करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से धन भवन को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये धन स्थान के कोष में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा और कुटुम्ब स्थान में कुछ अशांति अनुभव करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये

शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ विजय और प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण से और नवमेश होने के नाते श्रेष्ठता के कारण से भाग्य और खर्च के सम्बन्धों में कुछ दुःख सुख उत्पन्न करता रहेगा और इसी कारण कभी २ यश और अपयश की प्राप्ति करता रहेगा किन्तु फिर भी भाग्यवान् माना जायेगा।

कष्ट, असत्य, गुप्त युक्ति के अधिपति-राहु

मिथुन लग्न में १ राहु

नं० ३०१

यदि मिथुन का राहु प्रथम केन्द्र में धन स्थान पर उच्च का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विवेकी बुध की राशि पर बैठने से विवेक की महान् शक्ति के योग से बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और देह के स्थान में कद की लम्बाई तथा युक्ति की गहराई प्रदान करेगा और विशेष महत्व शक्ति और प्रभाव प्राप्त करने के लिये महान् प्रयत्न तथा भारी दौड़ धूप करायेगा तथा अपने व्यक्तित्व के अन्दर कोई विशेषता अवश्य प्राप्त करेगा और अपनी युक्ति बल के अन्दर महान् हिम्मत शक्ति रखेगा तथा उन्नति प्राप्त करने के लिये कोई कष्ट साध्य कर्म का योग प्राप्त करेगा और गुप्त रूप से बड़े २ उद्यम करेगा तथा बड़ी भारी जवाब की लम्बी चौड़ी बातों से मान और स्वार्थ सिद्ध करेगा।

यदि कर्क का राहु—दूसरे धन भवन में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो धन के खजाने में भारी कमी और हानि करेगा तथा धन सम्पत्ति के कारणों से महान् संकट प्राप्त करेगा और कुटुम्ब स्थान में कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा और मन के

मिथुन लग्न में २ राहु

नं० ३०२
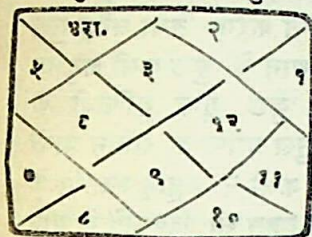
अधिकारी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिये धन संग्रह करने के लिये महान् कष्ट साध्य कर्म को करेगा और मानसिक वेदनाओं तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा धन की खोज में रहेगा और जन तथा धन की खोज में रहेगा और जन तथा धन दोनों ही मार्गों में कभी २ भारी संकटों का सामना करना पड़ेगा और बहुत सी दिक्कतों के बाद देर अबेर में धन का सुख प्राप्त कर सकेगा।

मिथुन लग्न में ३ राहु

नं० ३०३
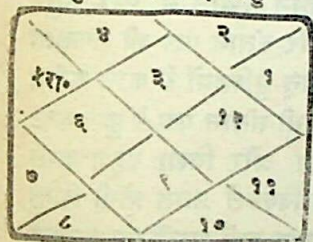
यदि सिंह का राहु—तीसरे भाई के स्थान पर परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में भारी कमी या कष्ट के कारणों को प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में बड़ा कठिन और कष्ट साध्य कर्म करेगा तथा बड़ा भारी प्रभाव रखने के लिये बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम करेगा, क्योंकि तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये कभी २ हिम्मत और धर्म की शक्ति में भारी संकट प्राप्त करने पर भी धैर्य की शक्ति प्राप्त रहेगी और गुप्त युक्तियों के बल से प्रभाव शक्ति की वृद्धि करेगा तथा भाई बहिन के साथ कभी २ कोई विशेष झगड़ा झंझट भी प्राप्त करेगा किन्तु बहादुर स्वभाव रहेगा।

यदि कन्या का राहु—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर विवेकी बुध की मित्र राशि में बैठा है तो विवेक की महान् शक्ति के द्वारा सुख के साधन प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभावानुसार माता के सुख सम्बन्धों में कमी रहेगी और मकानादि रहने के स्थान में कुछ अशान्ति

मिथुन लग्न में ४ राहु

नं० ३०४

या किसी प्रकार कोई झगड़े झंझट का योग प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख शान्ति के स्थान में कुछ कमी अनुभव करेगा और कुछ गुप्त युक्तियों के कारणों से सुख प्राप्ति के साधन प्राप्त करेगा तथा कभी २ महान् अशांति के कारण और बहुत सी दिक्कतों के बाद अन्त में सुख शक्ति के साधन प्राप्त करेगा क्योंकि बुध के घर में राहु उत्तम समझा जाता है, इसलिये किसी भी स्थिति में रहकर भी सुख प्राप्त करेगा।

यदि तुला का राहु—पाँचवें त्रिकोण संतान स्थान में परम चतुर शुक्र की मित्र राशि पर बैठा है तो विद्या और संतान पक्ष की सफलता

मिथुन लग्न में ५ राहु

नं० ३०५
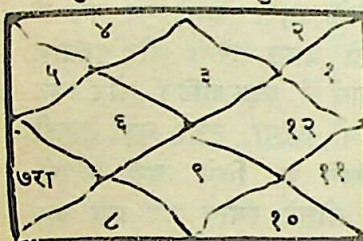
के लिये महान् युक्तियों से काम करेगा किन्तु फिर भी संतान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और विद्या ग्रहण करते समय कुछ दिक्कतें प्राप्त होंगी किन्तु बुद्धि के अन्दर बड़ी भारी गुप्त चतुराई रहेगी तथा असत्य मिश्रित बातों के योगसे काम निकालेगा किन्तु बातचीत के अन्दर बड़ी भारी योग्यता प्रदर्शित करेगा और दिमाग के अन्दर कुछ परेशानी तथा कुछ चिंता बनी रहेगी तथा विद्या स्थान में कुछ कमी या कमजोरी प्राप्त रहेगी और संतान सुख की पूर्ति करने में कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

यदि वृश्चिक का राहु—छठें शत्रु स्थान में शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और शत्रु का दमन करेगा किन्तु शत्रु पक्ष से कुछ कठिनाई अनुभव होगी और छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु स्थान के सम्बन्ध में कठिन से कठिन मुसीबत आने पर भी धैर्य मजबूत रहेगा

मिथुन लग्न में ६ राहु

नं० ३०६

और अन्तमें विजय प्राप्त होगी तथा रोग और झगड़े झंझटों में बड़ी हिम्मत से काम निकालेगा तथा चतुराई और युक्तिबल से सदैव प्रभाव शक्ति कायम रखेगा और अधिकांश रूप में कभी भी अपनी कमजोरियों को जाहिर नहीं होने देगा और मामा के पक्ष में कुछ त्रुटि करेगा।

यदि धन का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा कष्ट प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ संचालन की चिंताओं से टकराता रहेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाई और हानियाँ प्राप्त करेगा तथा कभी २ रोजगार और गृहस्थ के कार्योंमें महान् संकटका सामना प्राप्त करेगा और मूत्र-इन्द्रियके अन्दर कभी-कभी कोई विकार प्राप्त करेगा और गृहस्थ तथा रोजगार के पक्ष में कुछ कमी या गुप्त युक्ति और असत्य तथा कुछ अनुचित रूप से भी कार्य संपादन करेगा तथा कुछ परतंत्रता या परेशानी मानेगा।

मिथुन लग्न में ७ राहु

नं० ३०७

मिथुन लग्न में ८ राहु

नं० ३०८

यदि मकर का राहु—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानियाँ अनुभव करेगा और आयु स्थान में कई बार संकट और निराशा प्राप्त करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व संचित शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा और राहु कठोर

ग्रह की राशि पर बैठा है, इसलिये हठ योग की युक्ति से शक्ति प्राप्त करेगा और पेट के अन्दर निचले हिस्से में कभी कोई विकार प्राप्त करेगा तथा जीवन की शक्ति प्राप्त करने के लिये किसी पुरातत्व वस्तु को गुप्त योजनाओं तथा कुछ कष्ट साध्य कर्म के द्वारा प्राप्त करेगा और जीवन के रहन-सहन के अन्दर प्रकट रूप में और अन्दरूनी में फर्क रहेगा।

मिथुन लग्न में ९ राहु

नं० ३०९
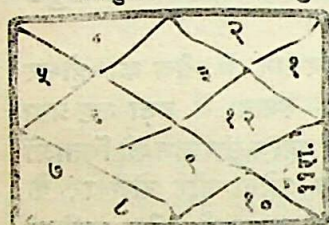
यदि कुम्भ का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो भाग्य की उन्नति को प्राप्त करने के लिये बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी और भाग्य के स्थान में कभी २ भारी चिंताओंका सामना करना पड़ेगा तथा गुप्त योजनाओं के कष्ट साध्य कर्म के द्वारा सफल बनकर भाग्य का विकास प्राप्त करेगा और अनाधिकार के रूप में कर्म द्वारा भाग्य में वृद्धि का मार्ग प्राप्त करेगा और सुयश की कमी पावेगा तथा धर्म के क्षेत्र में धर्म का पालन ठीक रूप से नहीं कर सकेगा किन्तु दिखावटी धर्म का पालन कर सकेगा और भाग्य के प्रकट रूप में और अन्दरूनी स्वरूप में अन्तर महसूस करेगा किन्तु कठोर ग्रह शनि की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये कठिन कर्म की युक्ति से सफलता पावेगा।

मिथुन लग्न में १० राहु

नं० ३१०

यदि मीन का राहु—दसम केन्द्र में पिता स्थान पर शत्रु की राशि में बैठा है तो पिता के सुख के सम्बन्धों में कष्ट प्राप्त करेगा और मान प्राप्ति तथा उन्नति के कार्य व्यापार क्षेत्र में कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी तथा सुन्दर गुप्त युक्तियों के द्वारा कष्टसाध्य कर्म को करके उन्नति का मार्ग स्थापित

करेगा और राज-समाज के सम्बन्धों में कुछ सुन्दर सम्बन्धकी कमी और दुख का अनुभव करेगा तथा राज-समाज व व्यापार, मान-प्रतिष्ठा इत्यादि सम्बन्धोंमें कभी २ भारी संकट का सामना प्राप्त करेगा किन्तु सहारा और शक्ति प्राप्त करेगा तथा इज्जत आबरू प्रभाव मान आदि में प्रकट और अन्दरूनी स्थिति में फर्क रहेगा किन्तु देव गुरु वृहस्पति की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये आदर्शवादकी युक्ति से उन्नति का मार्ग बनावेगा।

मिथुन लग्न में ११ राहु

नं० ३११

यदि मेष का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा तो आमदनी के मार्ग में कुछ कष्ट साध्य कर्म को बड़ी भारी गुप्त युक्तियों से सफल बनावेगा किन्तु ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये वित्त से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये कठिन से कठिन कार्य को करके अधिक लाभ प्राप्त करेगा और कभी २ लाभ के स्थान में भारी संकट का सामना प्राप्त करना पड़ेगा किन्तु अन्त में लाभ की योजनाओं में मजबूत सफलता प्राप्त करेगा और लाभ के स्थान में थोड़ा नफा थोड़ी आमदनी पर सन्तोष नहीं रहेगा, इसलिये आमदनी को वृद्धि करने के हेतु सदैव गम्भीर योजनाओं में तत्पर बना रहेगा।

मिथुन लग्न में १२ राहु

नं० ३१२

यदि वृषभ का राहु—बारहवें खर्च स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा के मार्ग में कभी २ बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा किन्तु महान् चतुर शुक्र के घर में बैठा है, इसलिये गुप्त योजनाओं की बड़ी भारी चतुराइयों के द्वारा सफल बनकर खर्च की संचालन शक्ति को प्राप्त करेगा।

और इसी प्रकार गुप्त चतुराइयों के योग से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कष्ट साध्य कर्म के द्वारा कार्य सम्पादन करेगा और खर्च के स्थान पर प्रकट रूप में जितना प्रभाव होगा उसकी तुलना में अन्दरूनी कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और खर्च की व्यवस्था सुचारुरूप में संचालित करने में सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

कष्ट, कठिन परिश्रम, गुप्त शक्ति के अधिपति–केतु

मिथुन लग्न में १ केतु
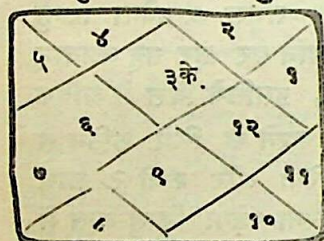
नं० ३१३

यदि मिथुन का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में कमी प्राप्त करेगा तथा देह की कुछ परतन्त्रता होगी और कष्ट साध्य कर्म को करेगा और हृदय में गुप्त चिंताओं से प्रायः चिंतित रहेगा और कभी २ महान् संकट का सामना प्राप्त करेगा अथवा कभी-कभी देह में कोई चोट या बीमारी का योग प्राप्त करेगा तथा देह के द्वारा कुछ अनुचित और गुप्त कर्म को भी करेगा एवं गुप्त धैर्य की शक्ति से हृदय में बल प्राप्त करेगा तथा स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए अपने अन्दर स्वाभिमान में कुछ कमी प्राप्त करेगा किन्तु विवेकी बुध की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये विवेक के द्वारा स्वार्थ सिद्ध करेगा।

यदि कर्क का केतु—धन स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, तो धन स्थान में बड़ी भारी चिन्ता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब में क्लेश या हानि प्राप्त करेगा और धन की संग्रह शक्ति के अभाव से कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा कभी २ धन स्थान में गहरा संकट

मिथुन लग्न में २ केतु
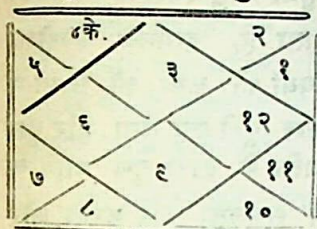
नं० ३१४

और हानि प्राप्त करेगा तथा बहुत सी दिक्कतों और मुसीबतों के बाद धन का सहारा प्राप्त करेगा तथा मन अधिकारी चन्द्रमा की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये धन और कुटुम्ब के कारणों से मानसिक क्लेश का योग अनुभव करता रहेगा किन्तु गुप्त धैर्य की शक्ति से धन के सम्बन्ध में काम करेगा।

मिथुन लग्न में ३ केतु
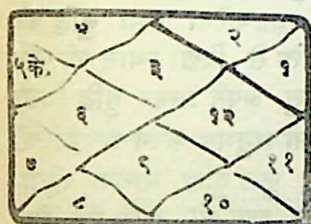
नं० ३१५

यदि सिंह का केतु—तीसरे स्थान पर परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाई के स्थान में कष्ट अनुभव करेगा तथा भाई बहिन के सुख में भारी कमी का योग प्राप्त करेगा तथा तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये पराक्रम शक्ति और हिम्मत का बड़ा भारी योग प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने से बाहुबल के कार्यों में कुछ परेशानी अनुभव होगी और अपने पराक्रम द्वारा किये हुये कार्यों की सफलता में निराशा का अनुमान होगा किन्तु परेशानियों का परिणाम विजय और प्रभाव सूचक बनेगा केतु महान् तेजस्वी सूर्य की राशि पर बैठा है, इसलिये जबर्दस्त हेकड़ी और हिम्मत से काम करेगा।

यदि कन्या का केतु—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर विवेकी बुध की मित्र राशि पर बैठा है तो घरेलू वातावरण का सुख प्राप्त करने के लिये गुप्त चतुराई से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु भूमि मकानादि और माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख शान्ति के वातावरण में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा और भूमि मकानादि रहने के स्थानों में सुख के साधनों की कुछ कमी रहेगी किन्तु कन्या

मिथुन लग्न में ४ केतु

नं० ३१६

पर बैठा हुआ केतु स्वक्षेत्री के समान माना जाता है, इसलिये उपरोक्त सभी विषयों की कमी को किसी न किसी प्रकार पूरी कर लेगा और गुप्त धैर्य की शक्ति के द्वारा सुख प्राप्ति के साधनों में सफलता प्राप्त करेगा और सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्न करेगा।
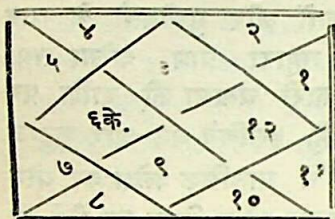
यदि तुलाका केतु—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव करेगा और विद्या ग्रहण करने के समय में कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा तथा बुद्धि की गुप्त धैर्य शक्ति से विद्या स्थान की पूर्ति करेगा किन्तु अपने अन्दर बुद्धि विद्या की कुछ कमी अनुभव करने के कारणों से जन्दरूनी कुछ दुःख मानता रहेगा, क्योंकि चतुर शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये बातों की शब्द शैली में दृढ़ता और चतुराई से काम निकालेगा और संतान पक्ष में बहुत सी कठिनाइयों के बाद कुछ शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु फिर भी संतान पक्ष में कुछ कमी का योग अनुभव करता रहेगा।
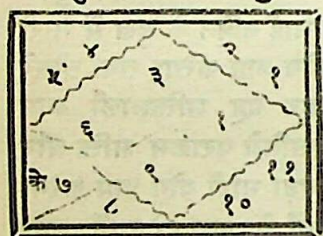
मिथुन लग्न में ५ केतु

नं० ३१७

मिथुन लग्न में ६ केतु

नं० ३१८

यदि वृश्चिक का केतु—छठें शत्रु स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ी दमन शक्ति से काम लेगा और शत्रु पक्ष पर प्रभाव और विजय प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में विजय पाने के लिये बड़ी कठिन और गुप्त शक्ति से काम लेगा, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी कार्य

के पक्ष में कुछ सहयोग की कमी प्राप्त करेगा तथा छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये कुछ झंझटों और झगड़ों में ही प्रभाव की मजबूती प्राप्त करेगा और अपने अन्दर कुछ कमजोरी महसूस करते हुए भी अपनी कमजोरी की कमी जाहिर नहीं होने देगा और बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम लेने वाला बनेगा।

मिथुन लग्न में ७ केतु

नं ३१९

यदि धन का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में उच्च का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ कठिनाइयों के योग से बहुत प्रकार की विशेषतायें प्राप्त होंगी और बहुत प्रकार से इन्द्रिय भोगादिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी २ तब्दीलियों के सहित बहुत ऊँचा कार्य करेगा और रोजगार की उन्नति के लिये महान् कठिन परिश्रम तथा दौड़ धूप करेगा और थोड़े बहुत रोजगार की सफलताओं से तृप्ति नहीं मानेगा अर्थात् उन्नति के लिए अन्धाधुन्ध कोशिश में लगा रहेगा, इसलिये गृहस्थ की हर प्रकार से उन्नति करने के लिये बड़े २ कष्ट साध्य कर्म को करने में तत्पर रहेगा।
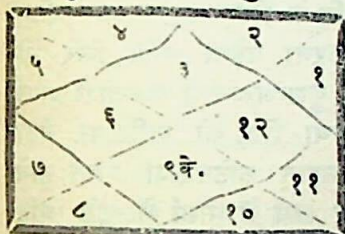
मिथुन लग्न में ८ केतु

नं० ३२०
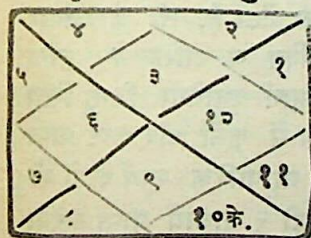
यदि मकर का केतु—आठवें मृत्यु स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो जीवन यापन करने के मार्ग में अनेक प्रकार की चितायें प्राप्त होंगी और आयु के स्थान में कई बार संकट प्राप्त होंगे तथा पुरातत्व सम्बन्धी धरोहर शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा और पेट के अन्दर निचले हिस्से में कोई प्रकार की कुछ शिकायत या परेशानी रहेगी किन्तु मित्र की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये किसी भी परेशानी के अन्दर रहते हुए

गुप्त धैर्य की शक्ति से समय व्यतीत करेगा और जीवन की दिनचर्या में अन्दरूनी तौर से कुछ कमी अनुभव करेगा और प्रत्यक्ष रूप में शक्ति और प्रभाव कायम रहेगा तथा कुछ गरमाई रखेगा।

मिथुन लग्न में ९ केतु

नं० ३२१
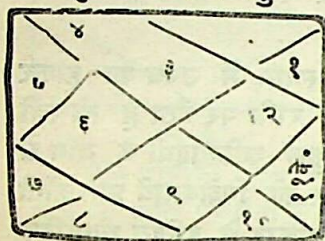
यदि कुम्भ का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में कुछ परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा भाग्य की उन्नति के लिए कष्ट साध्य कठिन प्रयत्न करना पड़ेगा और फिर भी भाग्य में कुछ अन्दरूनी कमजोरी प्राप्त करेगा तथा मित्र की राशि पर बैठा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के लिये महान् कठिनाइयाँ प्राप्त होने पर भाग्य का विकास प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा अर्थात् धर्मानुकूल धर्म का यथार्थ पालन नहीं कर सकेगा और सुयश की कमी प्राप्त करेगा और भाग्योन्नति के लिये गुप्त शक्ति का योग प्राप्त करेगा किन्तु कठोर ग्रह की राशि पर केतु बैठा है, इसलिए कठिन मार्ग की गुप्त शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा।

मिथुन लग्न में १० केतु

नं० ३२२
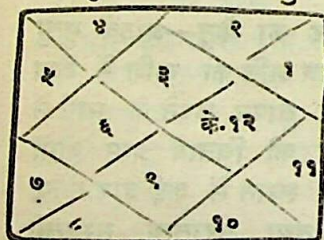
यदि मीन का केतु—दशम केन्द्र पिता स्थान में शत्रु देवगुरु वृहस्पति की राशि पर बैठा है, तो आदर्शवाद की गुप्त युक्ति व शक्ति के द्वारा उन्नति का मार्ग बनायेगा किन्तु पिता स्थान के सुख में कमी और कष्ट प्राप्त करेगा तथा व्यापारिक कार्य क्षेत्रों की उन्नति में बड़ी २ बाधायें प्राप्त करेगा तथा राज-समाज, मान प्रतिष्ठा आदि के कार्यों के सम्बन्ध में कमजोरी तथा परेशानियाँ अनुभव करेगा और मान प्रतिष्ठा की उन्नति के लिये बड़े कठिन साध्य कर्म को करेगा और कभी २ इज्जत आबरू

के स्थान में महान् संकट प्राप्त करेगा तथा राज-काज में झंझट पावेगा आदर्श गुरु की राशि पर बैठा है, इसलिये उन्नति पाने के लिये उत्तम मार्ग में कठिन परिश्रम करके गुप्त शक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा ।

मिथुन लग्न में ११ केतु

नं० ३२३
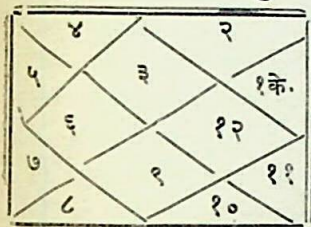
यदि मेष का केतु--ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन की आमदनी के मार्ग में कठिन परिश्रम करेगा और ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् होकर शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में अधिक लाभ और अधिक मुनाफा प्राप्त करेगा और धन लाभ की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन प्रयत्न करेगा तथा लाभ के मार्ग में कभी २ कोई भारी संकट प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त धैर्य की मजबूत शक्ति से काम लेने के कारणों से अन्त में उत्तम सफलता प्राप्त करेगा फिर भी आमदनी लाभ के सम्बन्धों में कुछ त्रुटि, कुछ असंतोष अनुभव करेगा और लाभ की वृद्धि के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा ।

यदि वृषभ का केतु--बारहवें खर्च स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में हमेशा कुछ न कुछ परेशानी अनुभव करेगा खर्च की अधिकता के कारणों से कभी २ कोई भारी संकट का अवसर प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा खर्च की संचालन शक्ति को सुचारु रूप में प्राप्त करने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा और गुप्त धैर्य की शक्ति से खर्च के

मिथुन लग्न में १२ केतु
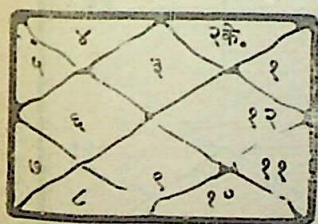
नं० ३२४

मार्ग को ठीक रखेगा किन्तु परम चतुर शुक्र की राशि पर केतु बैठा है, इसलिए गुप्त शक्ति की चतुराइयों द्वारा सफल बनकर खर्च का संचालन कार्य पूरा करेगा।

❀ मिथुन लग्न समाप्त ❀
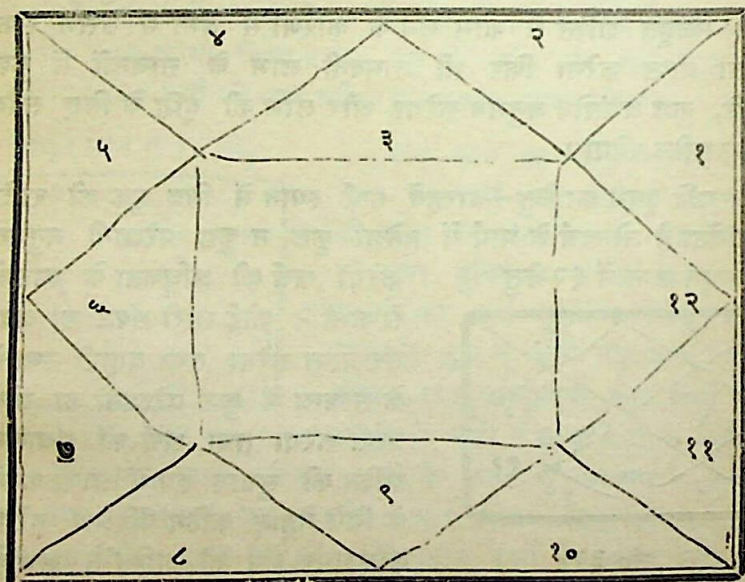
कर्क लग्न प्रारम्भ
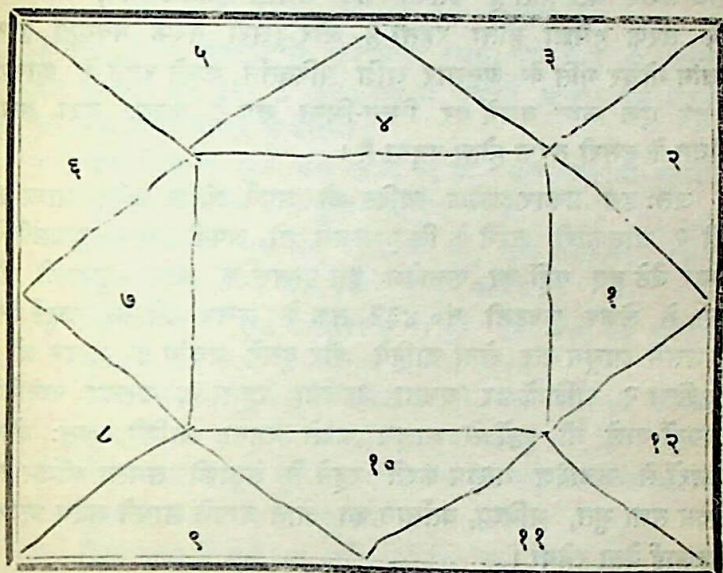
कर्क लग्न का फलादेश प्रारम्भ

नवग्रहों द्वारा भाग्य फल

(कुण्डली नं० ४३२ तक में देखिये)
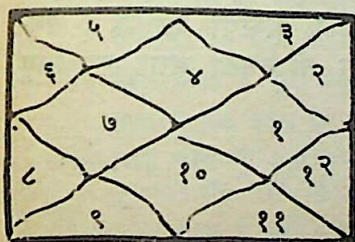
प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिए यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकार से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म कुण्डली के

अन्दर जन्म के समय नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा बुरा भाव लेकर बैठे होते हैं उसका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है।

अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिए प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए ग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ३२५ से लेकर कुण्डली नं० ४३२ तक के अन्दर जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो २ ग्रह जिन २ राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से मालूम करते रहना चाहिये, अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है, या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों कारणों से ग्रह कमजोर होने की वजह से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूर्ण फल प्रदान नहीं कर पाता है।

जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उसका असर फल लागू समझा जायगा।

———

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर——सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ३२५ से ३३६ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं ३२५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३२६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्याराशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३२७ के अनुसार मालूम करिये।

७ जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३२८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३२९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ३३३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३३६ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों की समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ३३७ से ३४८ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३३७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३३८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३३९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ३४८ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ३४९ से ३६० तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३४९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेषराशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३५९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६० के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर---बुधफल

आपकी जन्म कुण्डली में बुध जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ३६१ से ३७२ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६६ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६७ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६८ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३६९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेंश कुण्डली नं० ३७० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३७१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३७२ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ३७२ से ३८४ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७८ के अनुसार मालूम करिये।

१० जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३७९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३८० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३८१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३८२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३८३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३८४ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ३८५ से ३९६ तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३८५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३८६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३८७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३८८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३८९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ३९६ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

आपकी जन्म कुण्डली में शनि जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ३९७ से ४०८ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३९७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३९८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ३९९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०८ के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

आपकी जन्म कुण्डली में राहु जिस स्थान पर बैठा है, उसका फलादेश कुण्डली नं० ४०९ से ४२० तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४०९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४११ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४१९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२० के अनुसार मालूम करिये।

(४) कर्क लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

आपकी जन्म कुण्डली में केतु जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ४२१ से ४३२ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२६ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२७ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२८ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४२९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४३० के अनुसार मालूम करिये।

२ जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४३१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४३२ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

धन, कुटुम्ब, तेज स्थान पति—सूर्य

कर्क लग्न में १ सूर्य

नं० ३२५

यदि कर्क का सूर्य—देह के स्थान पर प्रथम केन्द्र में मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह के द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का योग पावेगा तथा देह में तेज और प्रभाव की शक्ति रखेगा क्योंकि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि में धनवान् और इज्जतदार समझा जायेगा और धन स्थान का स्वामी ग्रह कुछ बन्धन का सा कार्य करता है, इसलिये धन कुटुम्ब के कारणों से देह में कुछ घिराव और परेशानी अनुभव करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ झंझट और नीरसता प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी युक्त धन लाभ प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का सूर्य—धन भवन में स्वयं अपनी राशि का मालिक होकर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन भवन में शक्ति प्राप्त करेगा और धन के कारणों से प्रभाव और प्रतिष्ठा पावेगा तथा कुटुम्ब शक्ति प्राप्त होगी किन्तु गरम ग्रह होने के कारणों से धन जन की स्थिति में कोमलता की कमी प्राप्त रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन जन की रक्षा और वृद्धि करने के कारणों से जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति अनुभव करेगा और पुरातत्व शक्ति के लाभ स्थान में कुछ नीरसता मानेगा तथा प्रभाव की शक्ति से धन की वृद्धि के कारणों को उत्पन्न करता रहेगा।

कर्क लग्न में २ सूर्य

नं० ३२६

कर्क लग्न में ३ सूर्य

नं० ३२७
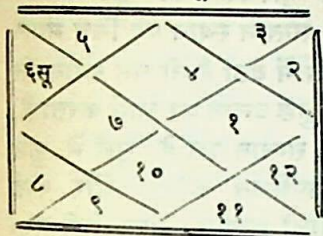
यदि कन्या का सूर्य—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धनेश ग्रह बन्धन का स्वरूप होता है, इसलिये भाई बहन के सुख स्थान में कुछ कमी के साथ शक्ति रखेगा और पराक्रम स्थान की शक्ति से धन प्राप्त करेगा तथा धन के कारणों से प्रभाव की वृद्धि पावेगा क्योंकि तीसरे स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये धन के कारणों से बड़ी भारी हिम्मत शक्ति और प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये धन और पराक्रम के कारणों से भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा भाग्य स्थान में प्रभाव और यश प्राप्त करेगा तथा भाग्य और पुरुषार्थ दोनों की मान्यता रखेगा।

कर्क लग्न में ४ सूर्य

नं० ३२८
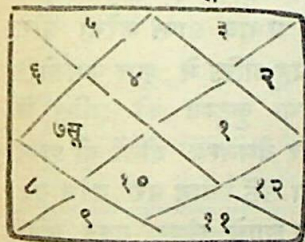
यदि तुला का सूर्य—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि में बैठा है तो धन संग्रह शक्ति के अभाव से दुःख अनुभव करेगा अर्थात् धन कोष त्रुटि युक्त रहेगा और माता के सुख सम्बन्ध में कमी और वियोग प्राप्त करेगा तथा कौटुम्बिक सुख की कमी प्राप्त करेगा तथा रहने के स्थान में सुख की कमी प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से राज-स्थान का मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये पिता और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा कारबार की वृद्धि करेगा तथा प्रतिष्ठा और उन्नति प्राप्त करने के लिये धन और सुख शान्ति की परवाह नहीं करेगा।

कर्क लग्न में ५ सूर्य

नं० ३२९
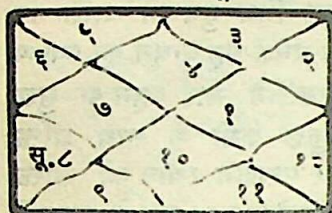
यदि वृश्चिक का सूर्य—पाँचवे त्रिकोण सन्तान स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो धन स्थानपति होने से कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये सन्तान पक्ष के सुख में कुछ बाधा उपस्थित करेगा और कोई प्रभावशाली सन्तान प्राप्त होगी तथा विद्या स्थान में बड़ी भारी शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणी के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और स्वभाव में गर्मी रहेगी तथा धनके कोषकी वृद्धिका विशेष ध्यान रहेगा और सातवीं दृष्टिसे लाभ स्थानको शत्रु शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये लाभ की शक्ति प्राप्त करते हुए भी लाभकी अधिक परवाह नहीं करेगा तथा वजनदार कीमती बातें कहने और सोचने की शक्ति रखेगा।

कर्क लग्न में ६ सूर्य

नं० ३३०
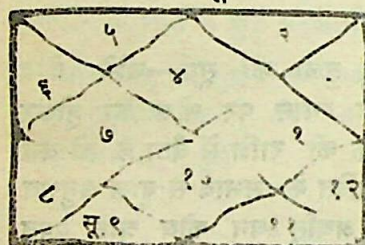
यदि धन का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो धन के कारण से शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा और धन की संग्रह शक्ति में कुछ कमजोरी पावेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति में प्रभाव और वैमनस्य दोनों ही प्राप्त करेगा तथा छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये कुछ झगड़े झंझट युक्त परिश्रमी और प्रभावशाली मार्ग से धन की शक्ति प्राप्त करेगा और शत्रु तथा रोग पर काबू रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा धन का खर्चा करने में गौरव अनुभव करेगा, इसलिये धनकोष का संग्रह करने की परवाह नहीं रखेगा।

यदि मकर का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो धनस्थान-पति (द्वितीयेशग्रह) बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री स्थान के सुख में कमी और क्लेश का रूप प्राप्त करेगा तथा स्त्री से वैमनस्य पावेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानियों के योग से धन की शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब सुखके दृष्टिकोण से गृहस्थ में कुछ झंझट प्राप्त करेगा और मूत्र इन्द्रिय के अन्दर कभी कोई बीमारी या परेशानीका योग अनुभव करेगा तथा भोगादिक सुखोंको प्राप्त करने के लिये धन की शक्ति का प्रयोग करने पर भी कुछ नीरसता रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और इज्जत प्राप्त करेगा।
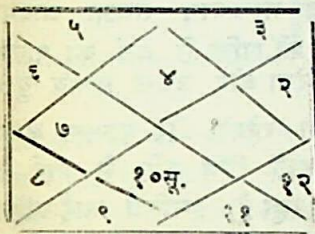
कर्क लग्न में ७ सूर्य

नं० ३३१

कर्क लग्न में ८ सूर्य

नं० ३३२
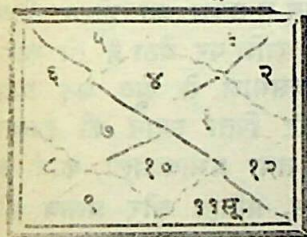
यदि कुम्भ का सूर्य—आठवें मृत्यु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति का अभाव प्राप्त करेगा और कुटुम्ब सुख के स्थान में क्लेश और कमी पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ बन्धन या घिराव सा प्रतीत रहेगा और आयु स्थान में कभी २ विशेष संकट प्राप्त करेगा तथा जीवन में कुछ अमीरात का ढंग प्राप्त रहेगा किन्तु द्वितीयेश होने के दोष के कारण से जीवन के वास्तविक आनन्द में कमी रखेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ कुछ नीरसता युक्त रूप में अच्छा प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से अपने धन स्थान को स्वक्षेत्र भाव से देख रहा है, इसलिये धन और जन की शक्ति का कुछ सहारा प्राप्त करेगा तथा उदर के अन्दर कोई बीमारी या परेशानी का योग प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ९ सूर्य

नं० ३३३

यदि मीन का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन का कोष प्राप्त करेगा और कुटुम्ब सुख प्राप्त करेगा तथा बड़ा भारी प्रभाव शाली व भाग्यवान् समझा जायगा और धन की शक्ति से धर्म का पालन अच्छा करेगा और उत्तम प्रभाव युक्त मार्ग के द्वारा धन की शक्ति उपलब्ध करता रहेगा और इज्जत, मान, प्रभाव तथा यश प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और पराक्रम शक्ति से धन लाभ और सफलता प्राप्त करेगा इसलिये बड़ी हिम्मत शक्ति रखेगा और स्वार्थ तथा परस्वार्थ दोनों का ठीक पालन करेगा।

कर्क लग्न में १० सूर्य

नं० ३३४

यदि मेष का सूर्य—दसम केन्द्र राज-स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो कार-बार राजसमाज से खूब धन प्राप्त करेगा और पिता स्थान की इज्जत बढ़ायेगा तथा प्रभावशाली कार्य के द्वारा मान, प्रतिष्ठा और प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा तथा धनवान्, इज्जतदार समझा जायगा और किसी भी संस्था आदि में अच्छा पद प्राप्त करेगा। और सातवीं नीच दृष्टि से माता स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा तथा मातृ-स्थान में और रहने के स्थान में कुछ त्रुटि या कमी पावेगा और घरेलू सुख शान्ति के अन्दर कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा ऊँचा कर्मेष्ठी बनेगा।

कर्क लग्न में ११ सूर्य

नं० ३३५

यदि वृषभ का सूर्य—एकादश लाभ स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में गरम ग्रह अधिक शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये धन का लाभ तो अधिक करेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने से लाभ प्राप्ति के मार्ग में कुछ नीरसता प्रतीत होगी और कुटुम्ब सुख में प्रेम कम रहेगा तथा धन की शक्ति से आमदनी की वृद्धि अच्छी रहेगी और लाभ प्राप्ति के मार्ग में प्रभाव और अमीरात के ढंग से सफलता विशेष प्राप्त होगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से संतान स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष से धन का लाभ प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि के योग द्वारा धन की वृद्धि के साधन प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में १२ सूर्य

नं० ३३६

यदि मिथुन का सूर्य—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन का खर्चा विशेष करेगा तथा धन की संग्रह शक्ति में कमजोरी प्राप्त रहेगी और कुटुम्ब स्थान में सुख शक्ति का अभाव रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन की वृद्धि एवं धन प्राप्ति के साधन उत्तम रहेंगे और खर्च के स्थान में प्रभाव और अमीरात का ढंग रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में धन की खर्च शक्ति के कारणों से अच्छा प्रभाव रखेगा और इसी हेतु रोगादिक झगड़े झंझटों के स्थान में सफलता प्राप्त करेगा तथा खर्च शक्ति के महत्ता के सम्मुख धन संग्रह की परवाह नहीं करेगा।

———

देह, आत्मा मन स्थानपति—चन्द्र

कर्क लग्न में १ चन्द्र

नं० ३३७
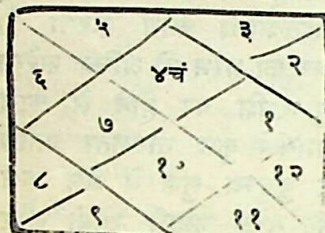
यदि कर्क का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वयं अपनी ही राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो देहमें सुन्दरता, सुडौलता प्राप्त होगी तथा मनोबल और आत्म बल की सुन्दरता शक्ति प्राप्त रहेगी और कीर्ति तथा ख्याति प्राप्त करेगा तथा अपने अन्दर बहुत उत्तम उच्च कोटि की भावना उन्नति करने के लिये रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री स्थान में कुछ नीरसता अनुभव करते हुए भी स्त्री भोगादिक पदार्थों की प्राप्ति करेगा और रोजगार के मार्ग में आत्मबल व मनोबल से सफलता पावेगा और लौकिक कार्यों में बड़ी दक्षता और सावधानी से यश प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का चन्द्र—धन स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बै । है तो देह की और मन की शक्ति से धन की वृद्धि करता रहेगा और कुटुम्ब की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का भी कार्य करता है, इसलिये धन के कारणों से देह में कुछ घिराव और परेशानी सी रहेगी और धन की संग्रह शक्ति का आनन्द प्राप्त करेगा और इज्जतदार एवं भाग्यवान् समझा जायगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये आयु के स्थान में कुछ संशयात्मक रूप से आयु की वृद्धि करेगा और कुछ नीरसता युक्त मार्ग से पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या शानदार तरी-. से व्यतीत करेगा।
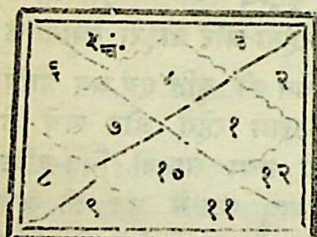
कर्क लग्न में २ चन्द्र

नं० ३३८

कर्क लग्न में ३ चन्द्र

नं० ३३९
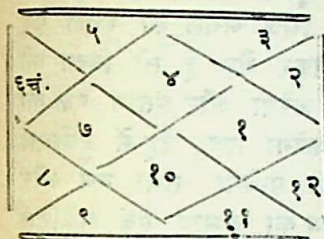
यदि कन्या का चन्द्र—भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और तन मन से पराक्रम और प्रभाव की वृद्धि करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम करेगा और तनमन में बड़ा उमंग और उत्साह की शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का ध्यान और पालन करेगा और भरपूर पुरुषार्थ करने पर भी ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्य में विश्वास रखेगा तथा देह के अन्दर शक्ति और सुन्दरता प्राप्त करेगा और मनोबल, देहबल के मिश्रित योग के द्वारा सज्जनता युक्त कर्म करने से सफलता प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ४ चन्द्र

नं० ३४०

यदि तुला का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता का और मातृ स्थान का सुख प्राप्त करेगा और देह को सुख पूर्वक आनन्द युक्त रखेगा और हँसने हँसाने तथा मनोविनोद का स्वभाव प्राप्त करेगा और मकान जायदाद पर अधिकार रखेगा तथा देह में सुन्दरता और मन में कोमलता प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से राजस्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये तन और मन की शक्ति से पिता स्थान की उन्नति करेगा तथा कारबार में सफलता पावेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा घरेलू और व्यापारिक कार्यों को सुख पूर्वक संचालन करने का ही प्रयत्न करेगा।

कर्क लग्न में ५ चन्द्र

नं० ३४१
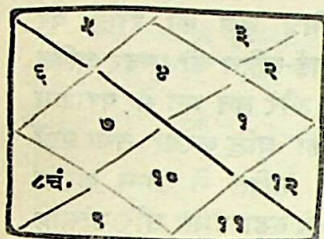
यदि वृश्चिक का चन्द्र—पाँचवे त्रिकोण में मित्र मंगल की राशि पर नीच का होकर बैठा है तो विद्या की कमी प्राप्त करेगा और संतान पक्ष का कष्ट प्राप्त करेगा तथा देह में दुर्बलता या कमजोरी पावेगा तथा मन और बुद्धि में सत्य का अभाव एवं संकुचित विचार रहेगा तथा लाभ स्थान को उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये देह और बुद्धि की युक्ति बल से विशेष लाभ प्राप्त करेगा तथा धन लाभ की वृद्धि करने के लिये अनेक प्रकार की योजनाओं द्वारा मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का विशेष प्रयोग करेगा और छिपाव की बातों से सदैव अपने स्वार्थ की सिद्धि करने में तत्पर रहेगा तथा मानसिक अशांति रहेगी।

कर्क लग्न में ६ चन्द्र

नं० ३४२
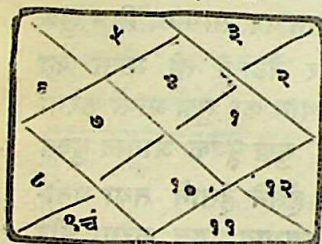
यदि धन का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर कुछ रोग या परेशानी तथा दुर्बलता प्राप्त करेगा और कुछ झगड़े-झंझट आदि मार्ग में रहकर कार्य करेगा तथा किसी प्रकार से कुछ परतन्त्रता का योग अनुभव करेगा और शारीरिक तथा मानसिक शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में बड़ी नरमाई के साथ प्रभाव की जागृति रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को बुध की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में मनोयोग की शक्ति से मान प्रात करेगा तथा कुछ परेशानी के कार्यों में आत्मबल और गौरव से सफलता प्राप्त करेगा।

यदि मकर का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में शत्रु शनि की

कर्क लग्न में ७ चन्द्र

नं० ३४३
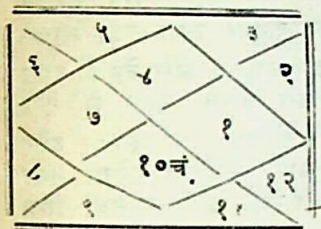
राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा सुन्दर अधिकार प्राप्त करेगा तथा स्त्री भोगादिक कार्यों में मन की विशेष रुचि रहेगी और रोजगार के मार्ग में देह और मन की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु गृहस्थ और रोजगार के कार्य संचालन में कुछ कठिनाई अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपने क्षेत्र कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा लौकिक कार्यों की सफलता को प्राप्त करने के लिये अपनी शारीरिक तथा मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों का प्रयोग करके हृदय में आनन्द अनुभव करेगा।

कर्क लग्न में ८ चन्द्र

नं० ३४४
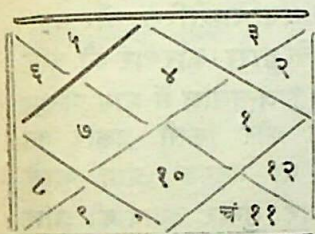
यदि कुम्भ का चन्द्र आठवें मृत्यु स्थान में शनि की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में कमी प्राप्त करेगा तथा जीवन निर्वाह करने के कार्यों से परेशानी अनुभव करेगा और विदेश आदि के कठिन मार्ग का किसी प्रकार से अनुसरण करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का कुछ निरसताई से लाभ प्राप्त करेगा और आयु में कुछ शक्ति पावेगा जीवन की दिनचर्या में कुछ रौनक पावेगा और सातवीं दृष्टि से धन स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये तन और मन की कठिन साधना के द्वारा धन-जन की वृद्धि करेगा और गूढ़ शक्ति की खोज में लगा रहेगा।

यदि मीन का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो देह और मन की सुन्दर शक्ति के द्वारा भाग्य

कर्क लग्न में ९ चन्द्र

नं० ३४५
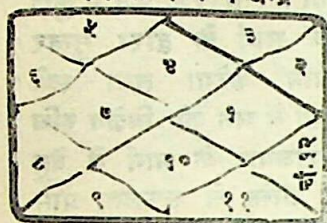
की महान् उन्नति करेगा और धर्म का सुन्दर पालन करेगा तथा बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और देह के द्वारा सतोगुणी कर्म करते रहने से दैवी शक्ति की सफलता प्राप्त करेगा और ईश्वर में भारी भरोसा रखेगा तथा सुयश प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा मनोबल और देहबल के द्वारा पुरुषार्थ कर्म की सफलता प्राप्त करेगा और मन के अन्दर मगन रहने के साधन प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में १० चन्द्र

नं० ३४६
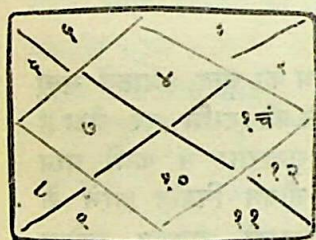
यदि मेष का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की सुन्दर वृद्धि करेगा तथा शारीरिक और मानसिक शक्ति के द्वारा कारबार की वृद्धि करेगा तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और किसी प्रकार का सुन्दर पद या बड़प्पन प्राप्त करके आनन्द का अनुभव करेगा और देह के अन्दर सुन्दर प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से सुख स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये सुख स्थान की वृद्धि करेगा और मातृ स्थान में सुन्दर प्रेम रखेगा तथा रहने के मकानादि स्थानों में सुन्दरता और सुख प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का चन्द्र—एकादश लाभ स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो शारीरिक और मानसिक शक्ति के द्वारा धन लाभ की विशेष उन्नति करेगा तथा देह में सुन्दरता एवं सुडौलता प्राप्त करेगा तथा आमदनी की वृद्धि करने के

कर्क लग्न में ११ चन्द्र

नं० ३४७

लिये सदैव बड़ा भारी प्रयत्नशील रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से संतान स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी का योग प्राप्त करेगा और विद्या की शक्ति के अन्दर कुछ त्रुटि अनुभव करेगा तथा धन लाभ के कार्य कारणों में स्वार्थ सिद्धि के लिये कुछ कटु शब्दों का प्रयोग भी करेगा।

कर्क लग्न में १२ चन्द्र

नं० ३४८
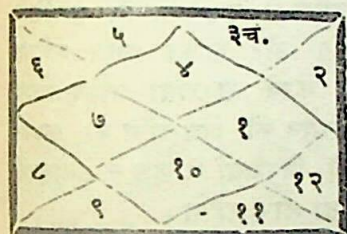
यदि मिथुन का चन्द्र—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के सुख सम्बन्धों में कुछ कमजोरी रहेगी और खर्चा विशेष रहेगा तथा तन और मन की शक्ति से बाहरी स्थानों में सफलता प्राप्त करेगा तथा खर्च की विशेषताओं में ही प्रसन्नता का अनुभव करेगा किन्तु खर्च संचालन के कार्य कारणों से देह में कमजोरी या दुबलापन प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु-स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये तन-मन और खर्च के कारणों से शत्रु स्थान में शांति युक्त वातावरण से प्रभाव रखेगा और मन के अन्दर कुछ अशांति अनुभव करेगा।

विद्या, संतान, पिता, राज-स्थानपति—भौम

यदि कर्क का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर नीच का होकर मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह के स्वास्थ्य और सुन्दरता में कमी प्राप्त करेगा तथा विद्या कुछ अपूर्ण रहेगी और संतान पक्ष के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा पिता के प्रेम स्थान

कर्क लग्न में १ भौम

नं० ३४९
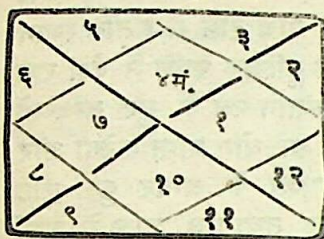
में कुछ नीरसता रहेगी और कार, व्यापार उन्नति के मार्ग में अधूरा विकास होगा तथा राज समाज के सम्बन्धों में मान प्रतिष्ठा आदि की कुछ कमजोरी रहेगी तथा उन्नति को प्राप्त करने के लिये देह के परिश्रम और फिकरमंदी से काम करना पड़ेगा तथा चौथी दृष्टि से सुख भवन को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है; इसलिये कुछ मकानादि मातृ स्थान की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से स्त्री स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता के सहित बुद्धि और शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में विशेष प्रयत्न करके सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शत्र शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ कठिनाइयों के द्वारा प्रभाव शक्ति और कुछ पुरातत्व का लाभ रहेगा।

कर्क लग्न में २ भौम

नं० ३५०
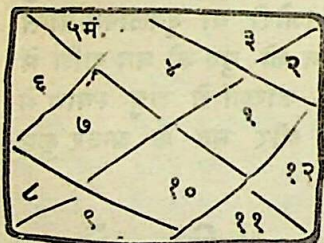
यदि सिंह का मंगल—धन स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो ऊँचे कारबार के योग से धन की वृद्धि करेगा और राज-समाज से धन का लाभ और मान, प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और बुद्धि योग के कर्म से उन्नति का मार्ग बनावेगा तथा चौथी दृष्टि से संतान स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा किन्तु बुद्धि से धन की वृद्धि करेगा और

सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी के योग से प्रभाव पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिए बुद्धि और उत्तम कर्म के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का पालन करेगा।

कर्क लग्न में ३ भौम

नं० ३५१
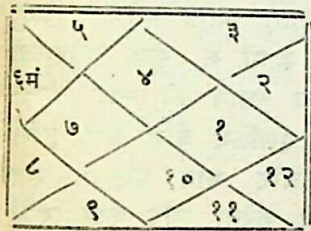
यदि कन्या का मंगल—तीसरे पराक्रम स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पराक्रम और बाहुबलकी शक्तिसे महान् उन्नति प्राप्त करेगा और भाई या बहिन की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या और संतान शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरे स्थान पर गरम ग्रह बलवान् हो जाता है, फिर भी विशेषता -ह है कि बुद्धि और राज्य का स्वामी है, इसलिये आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में राज्य स्थान को स्वक्षेत्र दृष्टि से देख रहा है, अतः बुद्धि योग द्वारा राज समाज के उत्तम प्रभावशाली कर्म को करके बड़ी भारी शक्ति और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की ऊँची शक्ति प्राप्त करेगा और राजनैतिक क्षेत्र के कार्यों में बड़ी दक्षता और हिम्मत शक्ति से उत्साह पूर्वक कार्य करेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की धनराशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और कर्म की बलवान् शक्ति के द्वारा शत्रु स्थान में विजय और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धिबल के कर्म से भाग्यशाली बनेगा और धर्म तथा यश की प्राप्ति करेगा और नीच राशि को छोड़ कर राज्य स्थान पर मंगल का बैठाना या देखना उन्नति दायक स्वयमेव होता है।

यदि तुला का मंगल—चौथे केन्द्र मातृ स्थान पर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो बुद्धि विद्या और संतान शक्ति का सुख

कर्क लग्न में ४ भौम

नं० ३५२

प्राप्त करेगा तथा मातृ स्थान का सुख पावेगा और सातवें स्त्री स्थानको उच्च दृष्टिसे शनिकी मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के मार्ग में उन्नति प्राप्त करेगा तथा लौकिक एवं गृहस्थिक कार्यों में बड़ी दक्षता और सफलता प्राप्त करेगा किन्तु गृहस्थिक कार्यों में कुछ नीरसता अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से राज्य स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र दृष्टि से देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा शान्ति, राज समाज में वृद्धि, उन्नति और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान का नाम ऊँचा करेगा और कारबार में सफलता प्राप्त करेगा तथा भूमि और मकानादि का प्रभाव पावेगा और आठवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के योग से धन का लाभ खूब प्राप्त करेगा और अपने स्थान से ही अनेकों प्रकार के लाभ और सफलतायें प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का मंगल—पंचम त्रिकोण संतान स्थाअ पर स्वयं अपने स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो विद्या और सन्तान की

कर्क लग्न में ५ भौम

नं० ३५३

शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज्य-भाषा की ज्ञान शक्ति के द्वारा मान और प्रभाव की वृद्धि करेगा तथा बुद्धि योग से ही कारबार चलावेगा और पिता की शक्ति का सहारा प्राप्त करेगा तथा वाणी की शक्ति से राज-समाज में सफलता और उन्नति पावेगा तथा चौथी दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या

में कुछ थकान पाने वाले बौद्धिक कर्मों के द्वारा शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कुछ नीरसता लिये हुये पुरातत्व का और आयु का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये लाभ की वृद्धि करने के लिये दिमाग की शक्ति का विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा और आठवीं दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में बुद्धि योग द्वारा खर्च की सफलता और मान प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ६ भौम

नं० ३५४
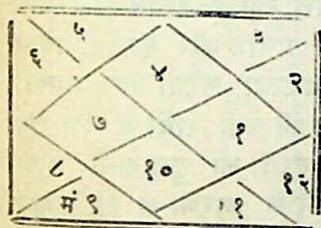
यदि धन का मंगल—छठें शत्रु स्थान पर मित्र गुरु की धन राशि पर बैठा है तो पिता और सन्तान पक्ष के सुख सम्बन्धों में कुछ अरुचि या वैमनस्यता प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये विद्या ग्रहण करेगा और विद्या बुद्धि के कर्म योग से परिश्रम के द्वारा शत्रु स्थान में विजय प्राप्त करेगा और कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा राज-समाज में मान और सफलता प्राप्त करेगा और वाणी की शक्ति से प्रभाव की जागृति रखेगा तथा चौथी दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के कर्म से भाग्य की उन्नति प्राप्त करेगा तथा धर्म के पालन में रुचि रखेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध ठीक रखेगा तथा आठवीं नीच दृष्टि से देह स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता और सुडौलताई में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा देह में कुछ थकान पाने वाले बुद्धि योग के कर्म से सफलता प्राप्त करेगा इसलिये अपने दैहिक सुख शान्ति और देह के सम्मान के मार्ग में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा।

कर्क लग्न में ७ भौम

नं० ३५५

यदि मकर का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान पर उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि में बैठा है तो कई स्त्रियों का संयोग प्राप्त करेगा और स्त्री स्थान में सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद भी रहेगा और रोजगार के मार्ग में विशेष सफलता और मान प्राप्त करेगा तथा विद्या और संतान शक्ति प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से राज्य स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये कारबार में खूब उन्नति करेगा तथा राज-समाज में प्रभाव और इज्जत पावेगा तथा पिता की शक्ति का नाम और महत्व ऊंचा करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी और सुन्दरता की कुछ कमी रहेगा तथा गृहस्थ और कारबार की उन्नति करने के कारणों से देह में कुछ परेशानी सी रहेगी और आठवीं दृष्टि से धन स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और रोजगार का शक्ति से धन का संग्रह करेगा तथा वाणी में विशेष प्रभाव रखेगा।

यदि कुम्भ का मंगल—आठवें मृत्यु स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पिता और पुत्र के सुख सम्बन्धों में कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में कमजोरी अनुभव करेगा और राज-समाज के अन्दर मान और प्रभाव की कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा बड़े कारबार की हानि प्राप्त करेगा और दूसरे स्थानों के सम्बन्धों में कुछ सफलता प्राप्त करेगा चौथी दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि

कर्क लग्न में ८ भौम

नं० ३५६

में देख रहा है, इसलिये परिश्रमी मार्ग से बराबर लाभ प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति से सम्बन्धित भी लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से धन स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के परिश्रमी मार्ग के द्वारा धन की वृद्धि करेगा और कुटुम्ब का कुछ अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा आठवीं दृष्टि से पराक्रम स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या और आयु स्थान में कुछ नीरसता के योग से शक्ति प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ९ भौम
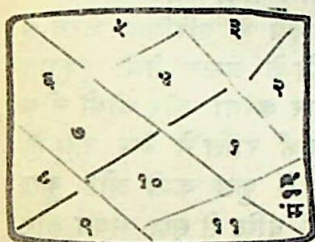
नं० ३५७

यदि मीन का मंगल —नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो उत्तम श्रेष्ठ विद्या प्राप्त करेगा तथा संतान का उत्तम सुख प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की महानता प्राप्त करेगा और बुद्धि के उत्तम कर्म रके द्वाा भाग्य की श्रेष्ठ उन्नति और यश प्राप्त करेगा तथा धर्म-कर्म का ज्ञान और पालन करेगा और उत्तम न्याय की बातों के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से भाई के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का उत्तम सहयोग प्राप्त करेगा और पराक्रम शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा तथा आठवीं दृष्टि से माता के सुख स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान के सुख सम्बन्धों में कुछ नीरसताई के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा मकानादि का लाभ पावेगा।

यदि मेष का मंगल—दसम केन्द्र पिता के स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो पिता स्थान की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त

कर्क लग्न में १० भौम

नं० ३५८

करेगा और राज समाज में बहुत मान प्राप्त करेगा तथा बड़े कारबार को करने से सफलता प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में संतान और विद्या स्थान को स्वक्षेत्री दृष्टि से देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और बुद्धि विद्या के योगसे ऊँचा पद और बड़ा कारबार करेगा तथा राज-भाषा और राजनैतिक ज्ञान को वाणी की योग्यता के द्वारा कार्य रूप मे परिणित करने से प्रभाव और सफलता प्राप्त करेगा तथा बुद्धि के अन्दर तेजी हुकूमत और कानून कायदे को धारण करके व्यवहार करेगा और चौथी नीच दृष्टि से देह के स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी तथा सुन्दरता में कुछ कमी और कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से सुख भवन और मातृ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ११ भौम

नं० ३५९

यदि वृषभ का मंगल— ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत शक्ति शाली फल का दाता होता है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करेगा और बड़े कारबार के मार्ग द्वारा धन का लाभ खूब करेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से संतान और विद्या के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र

को देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान की शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि के कर्म योग से आमदनी और लाभ की वृद्धि करेगा तथा वाणी की योग्यता से मान और प्रभाव तथा राज समाज की सफलता प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से धन स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से शत्रु-स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि की महानता से शत्रु स्थान में विजय और प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में १२ भौम

नं० ३६०
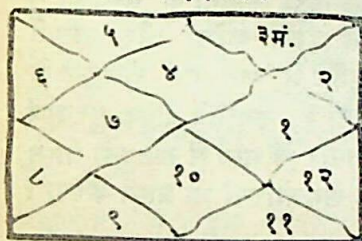
यदि मिथुन का मंगल—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता और पुत्र की हानि या कष्ट का योग प्राप्त करेगा और विद्या तथा संतान पक्षके सुखमें विशेष कमी अनुभव करेगा और खर्चा अधिक करेगा तथा कारबारकी उन्नतिमें बड़ी बाधायें प्राप्त करेगा और राज समाज के अन्दर मान प्रतिष्ठा की कमजोरी प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से भाई बहिन पराक्रम के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पराक्रम से सफलता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में प्रभाव रखेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से स्त्री स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार की विशेष उन्नति करेगा तथा स्त्री स्थान में विशेषता और प्रभाव प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में बुद्धि योग के कर्म से सफलता और मान प्राप्त करेगा तथा खर्च के मार्ग से उन्नति के साधन पावेगा तथा बुद्धि में कुछ भ्रम और परेशानी अनुभव करेगा।

———

भाई, पराक्रम, खर्च विवेक स्थानपति—बुध

यदि कर्क का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो प्रभाव और पराक्रम की जागृति विवेक शक्ति के द्वारा करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और खर्चा खूब करेगा, किन्तु व्ययेश होने के कारण देह में कुछ कमजोरी तथा भाई बहिन के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा। परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक पुरुषार्थ और खर्च की शक्ति से स्त्री और रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा, किन्तु व्ययेश होने के दोष से कुछ कमजोरियाँ भी प्राप्त करेगा।
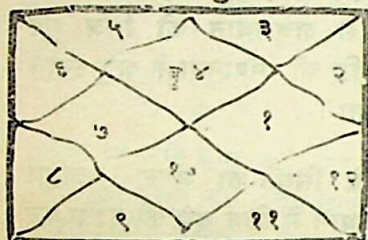
कर्क लग्न में १ बुध

नं० ३६१
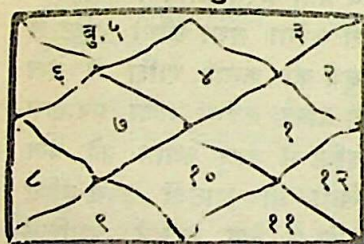
यदि सिंह का बुध—धन स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो पराक्रम शक्ति और खर्च की शक्ति तथा विवेक द्वारा धन संग्रह करने का विशेष प्रयत्न करेगा, किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण धन संग्रह नहीं हो सकेगा, परन्तु इज्जत बनी रहेगी और धन का स्थान बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिये भाई-बहिन के सुख में बहुत कमी करेगा और खर्चे को रोकने की चेष्टा करने पर भी धनका खर्च अधिक होता रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में आयु-स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का कुछ अधूरा लाभ प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में २ बुध

नं० ३६२

कर्क लग्न में ३ बुध

नं० ३६३
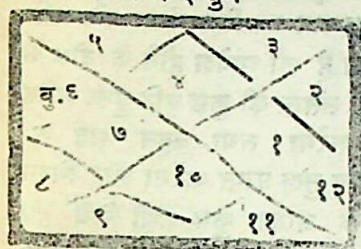
यदि कन्या का बुध—तीसरे भाई बहिन के स्थान पर उच्च का होकर स्वयं अपनी राशिमें स्वक्षेत्री बैठा है तो पराक्रम की विशेष वृद्धि करेगा और भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा खर्चा खूब करेगा और व्ययेश होने के दोष के कारण भाई बहन के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा और देह की पराक्रम शक्ति के अन्दर कुछ अन्दरूनी कमजोरी अनुभव करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाग्य-स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म सम्बन्ध में कुछ लापरवाही रखेगा तथा पुरुषार्थ के मुकाबले में भाग्य की शक्ति को कुछ कमजोर समझेगा तथा यश की कुछ कमी प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ४ बुध

नं० ३६४
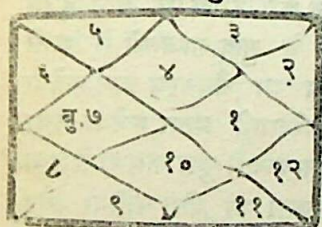
यदि तुला का बुध—चौथे केन्द्र माताके स्थान पर मित्र शुक्रकी राशि में बैठा है तो भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा तथा खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुख घर बैठे प्राप्त करेगा तथा सुख पूर्वक पराक्रम शक्ति से खर्च का संचालन करेगा और व्ययेश होने के दोष के कारण से माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा मकान जायदाद रहने के स्थानों में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कमजोरी के साथ २ पिता स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और राज समाज कारबार के सम्बन्धों में कुछ थोड़ी सफलता प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ५ बुध

नं० ३६५
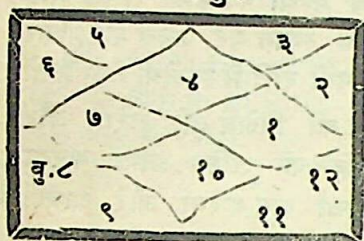
यदि वृश्चिक बुध—पाँचवें त्रिकोण संतानस्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण संतान की कुछ त्रुटि युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा बहन भाई का सामान्य सुख प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि के अन्दर कुछ कमी लिये हुए शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु विवेक और वाणी की शक्ति से खर्च की सफलता प्राप्त करेगा तथा बुद्धि के अन्दर कुछ कमजोरी अनुभव करते हुए भी बुद्धि द्वारा बड़ी हिम्मत शक्ति से काम करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि बल के द्वारा लाभ प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों में बुद्धि बल से सफलता प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ६ बुध
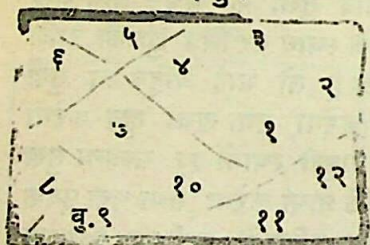
नं० ३६६

यदि धन का बुध छठें शत्रु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कमी और विरोध या वैमनस्य प्राप्त करेगा और कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थके सम्बन्धमें कुछ कमजोरी तथा कुछ परतंत्रता का योग पावेगा और शत्रु स्थानमें व्ययेश के दोष कारणों से कुछ कमजोरी तथा पराक्रमेश होने के नाते कुछ शक्ति से काम करेगा किन्तु नरम और विवेकी ग्रह होने के कारण प्रकट शान्ति से ही शत्रु पक्ष में अपना मतलब सिद्ध करेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा कम करने पर भी अधिक होगा और बाहरी स्थानों का सामान्य सम्बन्ध बनेगा।

कर्क लग्न में ७ बुध

नं० ३६७
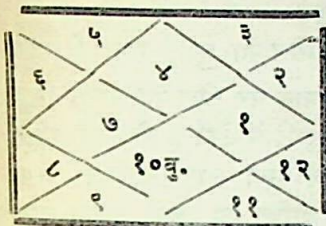
यदि मकर का बुध—सातवें केन्द्र, स्त्री व रोजगार के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो पराक्रम की शक्ति से रोजगार में सफलता और गृहस्थ का आनन्द प्राप्त करेगा, किन्तु व्ययेश होने के दोष से रोजगार और स्त्री स्थान का सुख तथा सफलता-शक्ति के अन्दर कमजोरी अनुभव करेगा और गृहस्थ के अन्दर खर्चा खूब करेगा तथा रोजगार और गृहस्थ के अन्दर-बाहरी स्थानों के संपर्क से विवेक शक्ति और परिश्रम के द्वारा उन्नति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से, देह स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परिश्रम और खर्च की शक्ति से देह में प्रभाव और कुशलता प्राप्त करेगा किन्तु देह में कुछ शक्ति और कुछ दुर्बलता, दोनों का अनुभव करेगा।

यदि कुम्भ का बुध—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कमी या कष्ट का योग

कर्क लग्न में ८ बुध

नं० ३६८
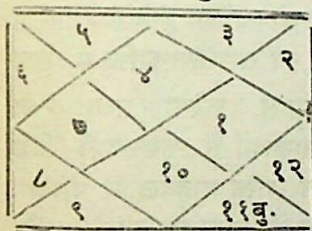
प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर कमजोरी तथा हिम्मत और उत्साह के अन्दर त्रुटि एवं आलस्यता प्राप्त करेगा और खर्च की संचालन शक्ति में कमजोरी या कमी पावेगा तथा कठिन परिश्रम और विवेक के योग से बाहरी स्थानों का सम्बन्ध तथा खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा और जीवन तथा आयु स्थान में कुछ शक्ति और कुछ कमजोरी का अनुभव करेगा और पुरातत्व के लाभ सम्बन्ध में भी कुछ त्रुटियुक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ पुरातत्व शक्ति से सम्बन्धित कार्य

के द्वारा धन का लाभ कुछ त्रुटियुक्त करेगा क्योंकि उपरोक्त सभी कार्यों में व्ययेश होने के दोष से कमजोरी करता है।

कर्क लग्न में ९ बुध

नं० ३६९
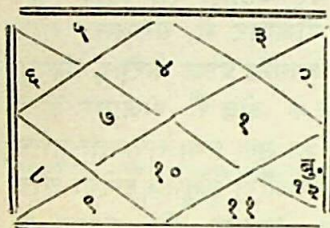
यदि मीन का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर नीच का होकर मित्र गुरु की राशिमें बैठा है तो भाई बहिन का अपूर्ण सुख प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति का कुछ अधूरा लाभ प्राप्त करेगा और भाग्य तथा धर्म एवं ईश्वर के सम्बन्धों में बहुत थोड़ा विश्वास और थोड़ा धर्म का पालन कर सकेगा तथा बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में सामान्य लाभ प्राप्त करेगा और भाग्य की शक्ति से सामान्य खर्चे का योग प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य के मुकाबले में पुरुषार्थ का विशेष महत्व मानेगा और व्ययेश होने से भाग्योन्नति के मार्ग में रुकावटें पावेगा।

कर्क लग्न में १० बुध

नं० ३७०
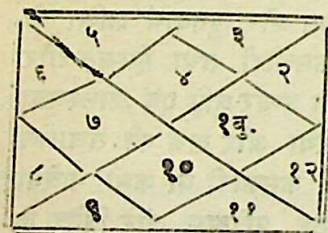
यदि मेष का बुध—दसम केन्द्र पिता स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष से पिता स्थान की सफलता शक्ति में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा राज समाज के सम्बन्धों में कुछ कमी लिये हुए सफलता शक्ति बाहुबल के परिश्रम तथा विवेक के द्वारा प्राप्त करेगा और भाई बहन की शक्ति का कुछ योग प्राप्त करेगा तथा खर्च अधिक करने से उन्नति में बाधा रहेगी और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुन्दर व प्रभावयुक्त रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से सुख भवन को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम और खर्चे की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ११ बुध

नं० ३७१
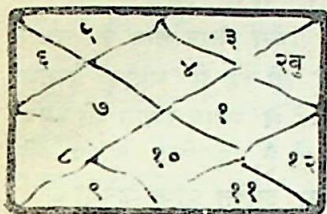
यदि वृषभ का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ शक्ति से विवेक के द्वारा अच्छा लाभ प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन का कुछ लाभ करेगा तथा खर्चा खूब करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष से आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु बाहरी सम्बन्धों से खूब लाभ रहेगा और खर्चे के बल से आमदनी में वृद्धि प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से संतान स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या के पक्ष में कुछ कमी लिये हुए शक्ति प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा वाणी में विवेक शक्ति से लाभ प्राप्त होगा।

कर्क लग्न में १२ बुध

नं० ३७२
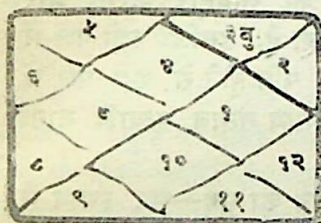
यदि मिथुन का बुध—बारहवें खर्च स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा बाहरी दूसरे स्थानों में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और भाई बहन के सुख में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर भी कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और विवेकरूपी पुरुषार्थ से खर्च की मजबूत संचालन शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये शांति पुरुषार्थ और खर्च की शक्ति से शत्रु स्थान में कुछ सफलता और विवेक तथा खर्च के बल से बहुत सी दिक्कतों पर काबू रखेगा तथा अपने अन्दर कुछ कमी या कमजोरी अनुभव करेगा क्योंकि पुरुषार्थ का स्वामी व्ययेश हो गया है।

भाग्य, धर्म शत्रु, स्थान पति–गुरु

यदि कर्क का गुरु—देह के स्थान पर प्रथम केन्द्र लग्न के उच्च का होकर मित्र चन्द्र की राशि में बैठा है तो देह में महान् प्रभाव और सुन्दरता प्राप्त करेगा और नवम दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य की महान् उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा भाग्य की शक्ति से सफलता और सुयश प्राप्त करेगा और पाँचवीं दृष्टि से संतान स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान शक्ति का सुख प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि में कला कौशल और योग्यता प्राप्त करेगा तथा वाणी के द्वारा बड़ी सज्जनता का व्यवहार करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कमी या कष्ट प्राप्त करेगा और शत्रु-स्थान पति होने से शत्रु पक्ष में विजय और प्रभाव रखेगा किन्तु देह और भाग्य संतान इत्यादि मार्गों में कुछ दिक्कतें प्राप्त करेगा।
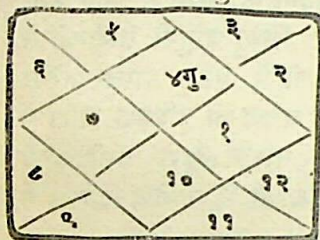
कर्क लग्न में १ गुरु

नं० ३७३
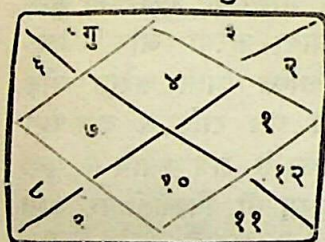
यदि सिंह का गुरु—धन स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाग्य और परिश्रम की शक्ति से खूब धन पैदा करेगा तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा तथा स्वार्थ युक्त धर्म का पालन करेगा और धन की शक्ति से इज्जत और मान प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में धन की शक्ति से भारी सफलता, विजय और लाभ प्राप्त करेगा और

कर्क लग्न में २ गुरु

नं० ३७४

सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये पुरातत्व का लाभ और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और नवमी दृष्टि से राज्य स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज में मान प्राप्त करेगा और कुछ परिश्रम के द्वारा पिता स्थान में व कारबार के सम्बन्ध में उन्नति और धन का लाभ प्राप्त करेगा तथा ननसाल पक्ष से कुछ फायदा पावेगा।

कर्क लग्न में ३ गुरु
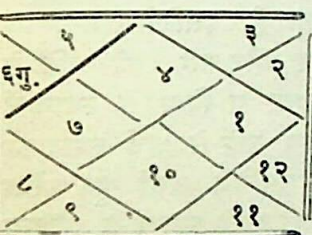
नं० ३७५

यदि कन्या का गुरु—भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ तथा परिश्रम के योग से महान् कार्यों के द्वारा उन्नति और यश प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कमी और क्लेश का योग प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी तथा कमजोरी अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मीन राशि, भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये भाग्य की महान् वृद्धि करेगा तथा धर्म का पालन करेगा और शत्रु-स्थान में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा तथा नवमीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और पुरुषार्थ के द्वारा कुछ थोड़ी सी दिक्कतों से आमदनी के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा तथा हिम्मतदार एवं विजयी बनेगा किन्तु शत्रु-स्थान का स्वामी होनेसे हर एक मार्गमें कुछ दिक्कतें रहेंगी।

यदि तुला का गुरु—चौथे केन्द्र मातृ-स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में बैठा है तो माता के पक्ष में तथा मातृ-भूमि के सम्बन्ध में कुछ नीरसता के साथ सुख और सफलता प्राप्त करेगा और मकानादि होने के स्थान में कुछ त्रुटि लिये हुये अच्छी शक्ति

प्राप्त करेगा और झगड़े-झंझटों में कुछ शान्तिप्रद वातावरण के द्वारा सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और पाँचवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान

कर्क लग्न में ४ गुरु

नं० ३७६
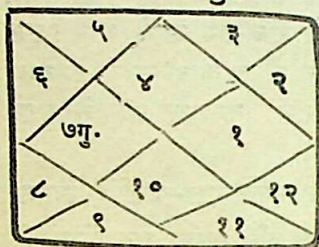
को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के सहित जीवन की दिनचर्या में शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुछ पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से राज-स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज में परिश्रम और भाग्य की शक्ति से उन्नति और मान प्राप्त करेगा तथा कारबार व पिता के स्थान में शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा और नवम दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा परिश्रम और भाग्य की शक्ति से बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में सफलता प्राप्त करेगा और यथा शक्ति धर्म का पालन करेगा।

यदि वृश्चिक का गुरु—पंचम त्रिकोण संतान स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से संतान पक्ष में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और थोड़े से परिश्रम के योग से भाग्य के द्वारा विद्या अध्ययन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि की शक्ति से शत्रु पक्ष में सफलता और यश प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से

कर्क लग्न में ५ गुरु
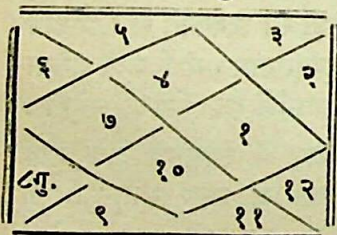
नं० ३७७

भाग्य स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्री को देख रहा है, इसलिये बुद्धि और संतान के योग से भाग्य की महान् वृद्धि प्राप्त करेगा तथा धर्म शास्त्र का ज्ञान और धर्म का पालन करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता

के साथ लाभ की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा नवमीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में बड़ी भारी सुन्दरता और प्रभाव और सुयश की शक्ति प्राप्त करेगा तथा हृदय में उत्तम ज्ञान धारण करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के कारण बुद्धि, संतान, भाग्य, देह, धर्म इत्यादि सभी मार्गों में कुछ २ परेशानी का योग मिश्रित रहेगा।

कर्क लग्न में ६ गुरु

नं० ३७८

यदि धन का गुरु—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और शत्रु पक्ष में भाग्य की शक्ति से बड़ी सफलता और सुयश प्राप्त करेगा किन्तु भाग्य-पति गुरु छठें घर में बैठा है, इसलिये भाग्य की उन्नति में बड़ी २ दिक्कतें और विलम्ब का योग प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से राज्य-स्थान को एवं पिता स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज में बड़ी सफलता उन्नति और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च-स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन-जन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के नाते उप-रोक्त सभी सम्बन्धों में कुछ दिक्कतें पैदा करेगा अर्थात् भाग्य के हर एक सम्बन्धों में कुछ झगड़े-झंझटों का योग प्राप्त करता रहेगा किन्तु प्रभाव की वृद्धि हमेशा चलती रहेगी।

यदि मकर का गुरु—सातवें स्त्री स्थान पर नीच का होकर शत्रु शनि की राशि में बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्राप्त

कर्क लग्न में ७ गुरु

नं० ३७९

करेगा तथा शत्रु-पक्ष और भाग्य के सम्बन्ध में कमजोरी अनुभव करेगा और पाँचवीं दृष्टि से लाभ-स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये दैनिक परिश्रम के योग से धन लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा नवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और पराक्रम से सफलता और उत्साह पावेगा तथा छठें स्थान का पति होने से हर एक सम्बन्धों में कुछ २ परेशानी करेगा।

कर्क लग्न में ८ गुरु

नं० ३८०
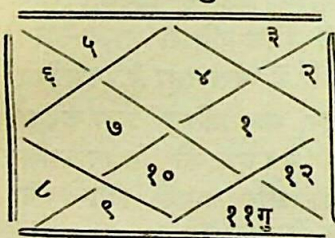
यदि कुम्भ का गुरु—आठवें मृत्यु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य को महान् दुर्बलता प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष की तरफ से जीवन में कुछ अशांति अनुभव करेगा और आयु स्थान में कुछ असंतोष के साथ शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति की कुछ सफलता प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता प्राप्त करेगा अर्थात् दूसरे स्थानों में कुछ दिक्कतों के साथ भाग्य की वृद्धि पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन-स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के साधन प्राप्त करेगा और नवीं दृष्टि से माता के सुख-स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के

साथ मातृ-स्थान के सुखों को प्राप्त करेगा और धर्म पालन की कमजोरी पावेगा।

यदि मीन का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो भाग्य की श्रेष्ठ उन्नति प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के नाते भाग्य और धर्म की उन्नति में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा किन्तु भाग्य की शक्ति से विजय और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख

कर्क लग्न में ९ गुरु

नं० ३८१
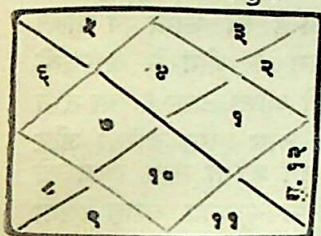
रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान पक्ष को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये उत्तम विद्या प्राप्त करेगा और सन्तान पक्ष की शक्ति प्राप्त करेगा तथा बुद्धि और सज्जनता के योग से यश प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में १० गुरु

नं० ३८२
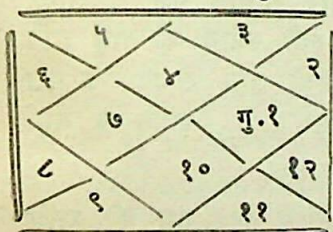
यदि मेष का गुरु—दसम केन्द्र पिता स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में उन्नति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज, कार-बार के स्थान में मान-प्रतिष्ठा और सफलता प्राप्त करेगा और लौकिक धर्म-कर्म का पालन बड़ी योग्यता से करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से धन-स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और कर्म की शक्ति से धन-जन की वृद्धि करेगा और सातवीं दृष्टि से

सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में सुख-भवन को देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के साथ सुख की प्राप्ति खूब करेगा और नवमी दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझट तथा परिश्रम के योग से पदोन्नति और भाग्योन्नति करेगा तथा छठें स्थान का स्वामी होने के कारण उन्नति के मार्गों में कुछ दिक्कतें सहन करेगा और भाग्यशाली समझा जायगा।

कर्क लग्न में ११ गुरु

नं० ३८३
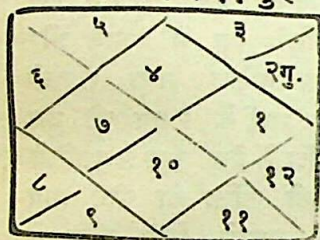
यदि वृषभ का गुरु—ग्यारहवें लाभ-स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि में बैठा है तो भाग्य की शक्ति और परिश्रम के योग से आमदनी एवं लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष से लाभ प्राप्त करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा आमदनी के मार्ग में पाप-पुण्यका ध्यान रखेगा और पाँचवीं दृष्टि से भाई-बहिन के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ थोड़ा सा मन-मुटाव के साथ भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और पराक्रम शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से सन्तान और विद्या स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और सन्तान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और नवमी नीच दृष्टि से स्त्री स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में कमजोरी और कष्ट का अनुभव करेगा तथा बड़प्पन के मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का गुरु—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा भाग्य और परिश्रम के योग से बाहरी सम्बन्धों की सफलता और खर्च संचालन की शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु भाग्य में कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म का पालन ठीक

तौर से नहीं कर सकेगा, परन्तु छठें घर का स्वामी होकर धर्मेश खर्च-स्थान में बैठा है, इसलिये किसी रोग सम्बन्धी गरीबों की

कर्क लग्न में १२ गुरु

नं० ३८४
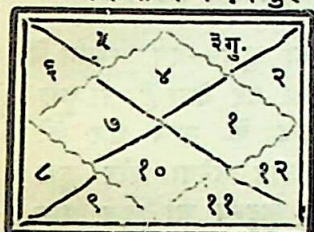
सहायता में किसी प्रकार से खर्च करेगा और पाँचवीं दृष्टि से सुखभवन को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परिश्रम और भाग्य की शक्ति से सुख के साधनों में सहायता प्राप्त करेगा और मातृ-स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु-पक्ष में कुछ खर्च और भाग्य की सहायता से सफलता प्राप्त करेगा और नवमी दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में एवं आयु स्थान में कुछ नीरसता के साथ सफलता प्राप्त करेगा और कुछ पुरातत्वका लाभ प्राप्त करेगा।

धनलाभ, माता, भूमि-स्थानपति-शुक्र

कर्क लग्न में १ शुक्र

नं० ३८५
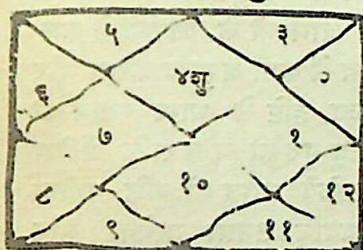
यदि कर्क का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर सामान्य मित्र चन्द्र की राशि में बैठा है तो देह की चतुराई के योग से बड़ा सुख और लाभ प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता प्राप्त करेगा और मातृ-स्थान का सुख प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख और रहने के स्थानों में सुख प्राप्ति के साधनों पर सुन्दर अधिकार रखेगा तथा आमदनी और चतुराई के योग से आनन्द का अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि में स्त्री-स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री-पक्ष में सुख और सफ-

लता प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग से खूब लाभ प्राप्त करेगा और भोगादिकके पक्ष में विशेष रुचि और सफलता प्राप्त करेगा और लग्न में शुक्र के बैठने से अनेक प्रकार की सफलता और मान प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में २ शुक्र

नं० ३८६

यदि सिंह का शुक्र—धन स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो कुछ थोड़े से असंतोष के साथ धन की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा और कुछ वैमनस्य के साथ कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा और कभी २ धन लाभ अच्छा पावेगा और धनवान्, इज्जतदार समझा जायेगा तथा कुछ मकानादि का सुख प्राप्त करेगा और मातृ स्थान के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा क्योंकि धन स्थान कुछ बन्धन का रूप होता है, इसके अतिरिक्त सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा तथा जीवन की दिनचर्या को अमीरात और सुखी करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ और सुख प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का शुक्र—तीसरे भाई के स्थान पर नीच का होकर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो भाई बहिन के स्थान में सुखकी प्राप्ति करेगा और पुरुषार्थ शक्ति के स्थान में लाभ और आमदनी के कारणों से कम-जोरी प्राप्त करेगा तथा मातृ स्थान के सुख में कमी अनुभव करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि पायेगा और भाग्यवान् समझा जायेगा और धर्म का विशेष ध्यान रखेगा किन्तु अपने अन्दर की कमजोरी को चतु-राइयों के द्वारा छिपा कर रखेगा और अन्दरूनी कमजोर हिम्मत रखेगा।

कर्क लग्न में ३ शुक्र

नं० ३८७

यदि तुला का शुक्र—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो माता के पक्ष से महान् सुख लाभ प्राप्त करेगा और भूमि का बड़ा सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा तथा बड़ी चतुराई के साथ सुख और आनन्द की महानता प्राप्त करेगा और सुख पूर्वक आमदनी का गम्भीर लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से राज्य स्थान को सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये राज समाज के सम्बन्धों में सुख पूर्वक मान प्रतिष्ठा और लाभ प्राप्त करेगा तथा बड़ी चतुराई के योग से कारबार के अन्दर अच्छा लाभ प्राप्त करेगा।
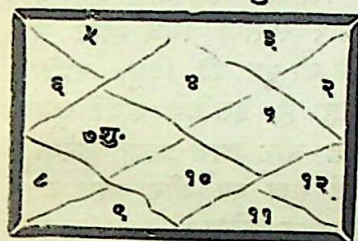
कर्क लग्न में ४ शुक्र

नं० ३८८

यदि वृश्चिक का शुक्र—पंचम त्रिकोण सन्तान स्थान में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में विशेष लाभ और सुख प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में बड़ी सफलता, सुख और धन-लाभ प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा वाणी के अन्दर बड़ी भारी चतुराई तथा कोमलता के योग से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि के स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि-योग के द्वारा धन-लाभ की विशेष योग्यता शक्ति प्राप्त करेगा तथा मातृ-स्थान का प्रेम और सुख प्राप्त करेगा तथा मकानादि रहने की सुख शक्ति प्राप्त करेगा।
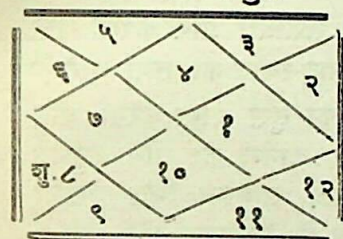
कर्क लग्न में ५ शुक्र

नं० ३८९

यदि धन का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शांति युक्त चतुराइयों के द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलेगी और मातृ-स्थान के सुख सम्बन्धों में कमजोरी और कुछ

कर्क लग्न में ६ शुक्र

नं० ३९०
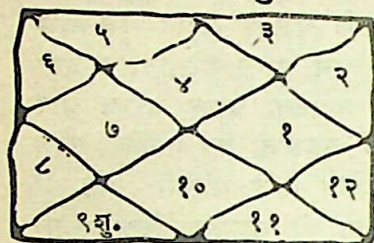
अशांति का योग प्राप्त करेगा और मकान जायदाद के सुख और आराम में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा आमदनी के मार्ग में कुछ परिश्रम कुछ परेशानी या कुछ परतंत्रता का योग अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च-स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सुख और लाभ प्राप्त करेगा और झगड़े-झंझट व परेशानी के कार्यों में सुख का और लाभ का योग प्राप्त करेगा तथा ननसाल पक्ष से सुख प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ७ शुक्र

नं० ३९१
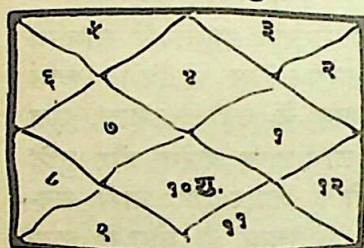
यदि मकर का शुक्र—सातवें स्त्री स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बहुत सुख और लाभ प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी चतुराई के योग से धन-लाभ और सफलता प्राप्त करेगा और घरेलू व मातृ-स्थान का तथा रहने के मकानादि का सुख प्राप्त करेगा और गृहस्थ भोगादिक सुखों में विशेष रुचि और आनन्द का योग अनुभव करेगा तथा सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और सुख व चतुराई प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ और धन लाभ की ओर से यश और नाम प्राप्त करेगा अर्थात् लौकिक कार्यों में बड़ी कुशलता एवं योग्यता से गृहस्थ का संचालन करने में गम्भीर सुख मानेगा।

यदि कुम्भ का शुक्र—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में कमी और दुःख का योग प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में व मातृ स्थान में कमी होने के

कर्क लग्न में ८ शुक्र

नं० ३९२

कारण दूसरे स्थान में सफलता पावेगा किन्तु घरेलू सुख शांति के अभाव से तथा कुछ कठिनाइयों के योग से धन लाभ का मार्ग स्थापित करेगा और आयु में सुख सफलता प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या का अपनी स्थिति संचालन करेगा अर्थात् अपनी स्थिति के अन्दर ही सुख के साधनों की प्राप्ति करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन भवन को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन को संग्रह करने की परवाह नहीं करेगा और कुटुम्ब सुख की थोड़ी शक्ति का योग प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न में ९ शुक्र

नं० ३९३
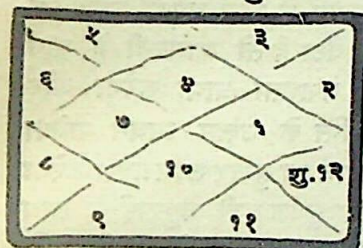
यदि मीन का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर सामान्य शत्रु गुरु की राशि में उच्च का होकर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और भाग्य की शक्ति से विशेष लाभ प्राप्त करेगा और मातृ स्थान का तथा मकानादि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त करेगा और घरेलू सुख प्राप्ति के उत्तम साधन भाग्य की शक्ति से ही प्राप्त करेगा और धर्म का पालन सुखपूर्वक आनन्द के साथ करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के सुख साधनों में कमी या कमजोरी प्राप्त करेगा और भाग्य शक्ति की तुलना में पुरुषार्थ शक्ति को छोटा समझेगा, इसलिये भाग्य की शक्ति में अधिक भरोसा और सुख का अनुभव करेगा।

यदि मेष का शुक्र—दसम केन्द्र पिता स्थान में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में बड़ा सुख और लाभ

कर्क लग्न में १० शुक्र

नं० ३९४
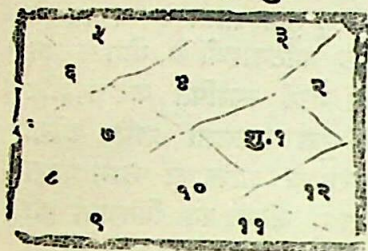
प्राप्त करेगा तथा राजसमाज में बड़ा भारी मान और सुख प्राप्त करेगा और कारबार के मार्ग में बड़ी भारी सुख और सफलता पावेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी तुला राशि में मातृ तथा सुख भवन को स्वक्षेत्र दृष्टि से देख रहा है, इसलिये माता का गौरव और लाभ प्राप्त करेगा तथा घरेलू मकानादि का सुन्दर लाभ तथा सुख प्राप्त करेगा और बड़ी गम्भीर चतुराइयों के योग से बड़ी भारी उन्नति प्राप्त करेगा तथा सुन्दरता और सजावट पसन्द करेगा।

कर्क लग्न में ११ शुक्र

नं० ३९५
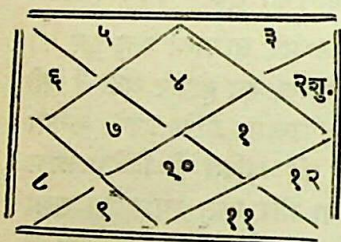
यदि वृषभ का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और सुख प्राप्ति के उत्तम साधन पावेगा मातृ-स्थान का सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा और सुख पूर्वक बड़ी चतुराई के साथ धन का लाभ प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि का लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से विद्या और संतान स्थान को सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये विद्या में सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा तथा वाणी से बड़ी चतुराई और सज्जनता युक्त बातों के द्वारा लाभ प्राप्त करेगा और संतान पक्ष से सुख और लाभ प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का शुक्र—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा खर्च के मार्ग से बड़ा सुख प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में बड़ी कमजोरी प्राप्त करेगा किन्तु बाहरी दूसरे स्थानों में बड़ी सफलता और सुख प्राप्त करेगा

कर्क लग्न में १२ शुक्र

नं० ३९६

तथा माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा और मातृ-स्थान के सम्बन्धों में कुछ वियोग या अलहदगी प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि के सुख की कमजोरी प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु-स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में शीलता और चतुराई से कार्य सिद्ध करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ अरुचि से कार्य करेगा तथा खर्च के मार्ग से प्रभाव प्राप्त करेगा।

स्त्री, रोजगार, आयु, मृत्यु स्थानपति—शनि

कर्क लग्न में १ शनि

नं० ३९७
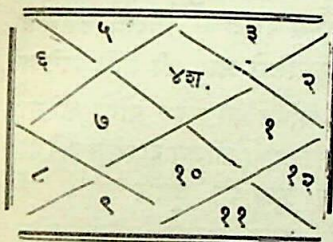
यदि कर्क का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर सुन्दरता की कुछ कमी रहेगी तथा देह में कुछ परेशानी के कारण भी प्राप्त रहेंगे और आयु की शक्ति का गौरव रहेगा तथा तीसरी मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति तो प्राप्त रहेगी, किन्तु मृत्यु स्थानपति होने के दोष कारणों से भाई बहिन के सुख में कुछ कमी रहेगी और पुरुषार्थ खूब करना पड़ेगा और सातवीं दृष्टि से स्त्री स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री की शक्ति रहेगी किन्तु अष्टमेष के दोष से स्त्री व गृहस्थ में कुछ परेशानी भी रहेगी और इसी प्रकार कुछ परेशानी के योग से रोजगार के मार्ग में सफलता रहेगी और भोगादिक वस्तुओं की विशेष लालसा रहेगी

तथा दसवीं नीच दृष्टि से पिता स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ कमी और परेशानी प्राप्त करेगा तथा राज समाज के सम्बन्ध में और कारबार के सम्बन्ध में कुछ मान प्रतिष्ठा और सफलता की कमी प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का शनि—धन स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो धन संग्रह के कोष में हानि प्राप्त करेगा और कुटुम्ब में भी हानि या परेशानी प्राप्त करेगा और शनि को अष्टमेश होने का दोष तथा धन भवन में बन्धन होने का दोष है, अतः दोनों दोष होने के कारणों से स्त्री स्थान का सुख कंटक युक्त अपूर्ण रहेगा और तीसरी उच्च दृष्टि से सुख भवन को तथा भूमि स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये सुख प्राप्ति के महान् साधन प्राप्त करेगा और भूमि की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और अमीरातका जीवन व्यतीत करेगा और दसवीं दृष्टि से लाभ-स्थान को मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये धन की आमदनी बहुत उत्तम रहेगी और सप्तमेश, अष्टमेश होने के दोष के कारण से रोजगार के मार्ग में परिश्रम के योग से धन पैदा करेगा किन्तु धन और कुटुम्ब के अभाव का योग रहेगा।
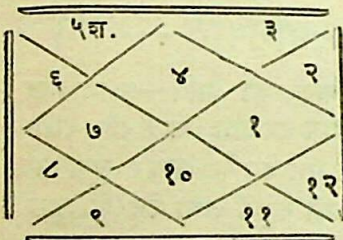
कर्क लग्न में २ शनि

नं० ३९८

यदि कन्या का शनि—भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण भाई बहिन के स्थान में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और पराक्रम तथा पुरुषार्थ की वृद्धि करेगा, क्योंकि तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये परिश्रम के योग से रोजगार की वृद्धि करेगा स्त्री और

कर्क लग्न में ३ शनि

नं० ३९९
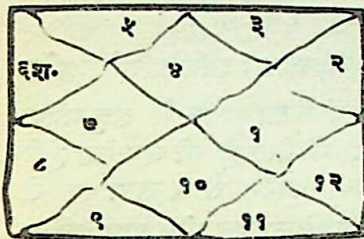
पुरातत्व शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा तथा तीसरी दृष्टि से सन्तान स्थान को शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा वाणी में कुछ क्रोध रखेगा और विद्या स्थान में कुछ परेशानी पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ परेशानी पावेगा तथा धर्म के मार्ग में कुछ अरुचि रखेगा और दसवीं दृष्टि से खर्च-स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थान के सम्बन्ध में शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि तुला शनि —चौथे केन्द्र माता के स्थान पर उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो घरेलू सुख के साधनों की वृद्धि तथा मकान प्राप्त करेगा, स्त्री तथा गृहस्थ की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा माता के स्थान में अष्टमेश होने के दोष के कारण से कुछ परेशानी के साथ सफलता प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से गुरु की धन राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये कुछ अड़चनों के साथ शत्रु स्थान में प्रभाव

कर्क लग्न में ४ शनि

नं० ४००

प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से पिता-स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में तथा राज समाज और कारबार के स्थान में दिक्कतें और परेशानी प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये

कुछ देह मे परेशानी प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख के साधनों के मुकाबले में उन्नति के कार्यों में आलस्य अनुभव करेगा।

कर्क लग्न में ५ शनि

नं० ४०१

यदि वृश्चिकका शनि—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से सन्तान पक्ष से कष्ट और चिन्ता का योग प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और आयु स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी तथा तीसरी दृष्टि से स्त्री स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धिमती स्त्री का सुख प्राप्त करेगा किन्तु स्त्री पक्ष में कुछ कष्ट भी प्राप्त करेगा और बुद्धि योग के द्वारा रोजगार में वृद्धि करेगा तथा भोगादिक काम वासना की विशेष इच्छा रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के मार्ग में आमदनी खूब करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से धन भवन को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में कमजोरी प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और धन जन के कारणों से हमेशा कुछ चिन्तित रहेगा किन्तु उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहेगा।

कर्क लग्न में ६ शनि

नं० ४०२

यदि धन का शनि—छठें शत्रु स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद और प्रभाव प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम के द्वारा परेशानी को दूर करनेवाले प्रभावशाली कार्य करेगा और तीसरी दृष्टि से

आयु स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये कुछ दिक्कतों के साथ पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी दूसरे स्थानों का अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से पराक्रम स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पराक्रम तथा हिम्मत की वृद्धि करेगा और भाई के स्थान में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये प्रभाव युक्त जीवन रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के कारण से कुछ दिक्कतें भी पैदा करता है।

यदि मकर का शनि—सातवें केन्द्र स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो गृहस्थ के अन्दर किसी एक मार्ग में विशेष चमत्कार और रोजगार मार्ग में शक्ति प्राप्त करेगा और आयु तथा स्त्री-स्थान में भी शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के कारण स्त्री तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और भोगादिक सुखों की विशेष इच्छा रखेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये गृहस्थ के सम्बन्धों से भाग्य में त्रुटि अनुभव करेगा और धर्म की श्रद्धा में कुछ कमी पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये सुन्दरता और स्वास्थ्य में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा दसवीं उच्च दृष्टि से चौथे सुख भवन को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान में तथा घरेलू सुख साधनों में तथा मकानादि के सम्बन्धों में शक्ति प्राप्त करेगा।
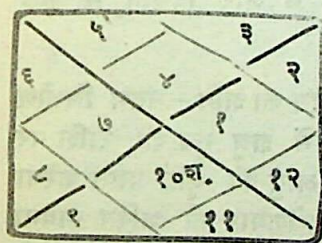
कर्क लग्न में ७ शनि

नं० ४०३

यदि कुम्भ का शनि—आठवें स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व की शक्ति पावेगा और सप्तमेश के अष्टम में बैठने के नाते स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में निजी स्थान के अन्दर परेशानी प्राप्त करेगा और दूसरे बाहरी स्थानों के अन्दर रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरी नीच दृष्टि से पिता स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा तथा राज समाज में एवं कारबार में कमजोरी या परेशानी प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन-स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति में कमी प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब में कुछ क्लेश या कमी पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से संतान स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा तथा विद्या-स्थान में और दिमाग में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा।
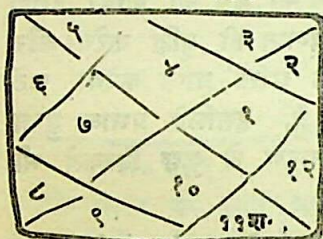
कर्क लग्न में ८ शनि

नं० ४०४

कर्क लग्न में ९ शनि
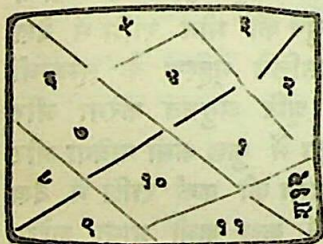
नं० ४०५

यदि मीन का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य-स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा स्त्री व रोजगार की शक्ति पावेगा और गृहस्थ तथा जीवन की तरफ से भाग्य में कुछ दुःख सुख का अनुभव करेगा और पुरातत्व शक्ति का कुछ लाभ प्राप्त करेगा तथा तीसरी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के मार्ग में भाग्य के सहयोग से लाभ प्राप्त करेगा और

सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष के कारण भाई बहिन के स्थान में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा और पराक्रम की उन्नति करेगा तथा दसवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ अड़चनों के साथ शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में हिम्मत से काम लेगा तथा धर्म और भाग्य के सम्बन्धों में दिखावटी उन्नति तथा अन्दरूनी कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा किन्तु प्रकट में बड़ा भारी भाग्यवान् समझा जायेगा।

कर्क लग्न में १० शनि
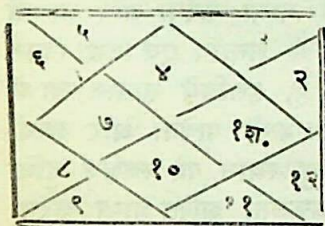
नं० ४०६

यदि मेष का शनि—दसम केन्द्र पिता स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो पिता स्थान के सुख में संकट प्राप्त करेगा तथा राज समाज कारबार के सम्बन्धों में एवं उन्नति के मार्ग में दिक्कतें और परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या और आयु स्थान में दिक्कतें प्राप्त करेगा और तिसरी मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च अधिक होने के कारण खर्च में कुछ प्रयत्नशील रहेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से सुख भवन को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये मकान, जायदाद व घरेलू सुख के साधन प्राप्त करेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये स्त्री तथा रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा तथा भोगादिक मार्ग में प्रयत्नशील रहेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण तथा नीच होने के दोष के कारण स्त्री तथा कारबार के पक्षों में कुछ कमजोरी लिये दिक्कतों के साथ कार्य संचालन करेगा तथा गुप्तनीति से भी कार्य-क्रम करता रहेगा।

यदि वृषभ का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की

राशि पर बैठा है तो अच्छी आमदनी प्राप्त करेगा और स्त्री का लाभ प्राप्त करेगा किन्तु क्रूर ग्रह का लाभ स्थान में बैठना श्रेष्ठ होता है और अष्टम स्थानपति होना कुछ कष्ट दायक होता है, इसलिये स्त्री तथा रोजगार के मार्ग में लाभ भी रहेगा और कुछ कष्ट एवं कुछ प्रपंच भी रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी एवं कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव करेगा और विद्या में कुछ कमी पावेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कुम्भ राशि में आयु स्थान को स्वक्षेत्र दृष्टि से देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा।
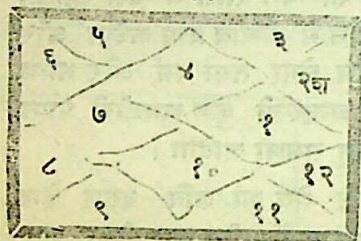
कर्क लग्न में ११ शनि

नं० ४०७
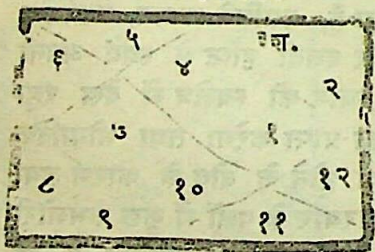
यदि मिथुन का शनि—बारहवें खर्च स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा तथा स्त्री स्थान में हानि और बाहरी स्थानों में सफलता प्राप्त करेगा तथा आयु के सम्बन्ध में कभी २ चिन्तायें होती रहेंगी और तीसरे शत्रु दृष्टि से धन स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये नगद धन की तरफ से चिन्तायें रहेंगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ परेशानियाँ रहेंगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ झंझट और प्रभाव रहेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थानको गुरु

कर्क लग्न में १२ शनि

नं० ४०८

की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की तरफ से कुछ चिंतायें रहेंगी और धर्म के पालन में कुछ प्रपंच रहेगा और जीवन की दिनचर्यामें कुछ परेशानी होते हुये भी खर्चे की शोभा रहेगी और खर्च की अधिकता के कारणों से जीवन में शानदारी और आमोद प्रमोद रहेगा।

कष्ट, चिन्ता, गुप्तयुक्ति के अधिपति—राहु

यदि कर्क का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में सुन्दरता की कमी करेगा और किसी प्रकार की चिन्ता हृदय में बनी रहेगी और कभी २ बड़ी भारी मुसीबतों का सामना प्राप्त करेगा और गुप्त रूप से कोई पेचीदा युक्ति के द्वारा मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा अपने अन्दर किसी प्रकारसे खास किस्मकी कमी अनुभव करेगा और अपनी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्नशील रहेगा और अपने स्वास्थ्य सम्बन्ध की कोई चिन्ता का योग प्राप्त रहेगा।
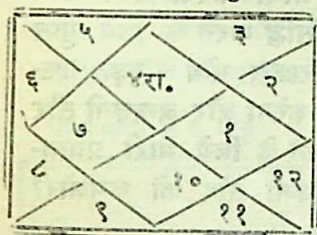
कर्क लग्न में १ राहु

नं० ४०९

यदि सिंह का राहु—धन स्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो धन स्थान में हानियाँ और परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा धन के सम्बन्ध में कभी २ महान् संकट का समय प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के सुख सम्बन्धों में हानि और कमी प्राप्त करेगा तथा धन की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन कार्य करने में उद्यत रहेगा और कोई गुप्त पेचीदा कर्म को बड़ी भारी हिम्मत के साथ कार्य रूप में परिणित करके धन की वृद्धि करने का साधन प्राप्त करेगा तथा इज्जत आबरू की रक्षा और वृद्धि

कर्क लग्न में २ राहु

नं० ४१०

के लिये चिन्ता युक्त रहेगा तथा मुफ्त का सा धन भी कभी-कभी प्राप्त करेगा ।

यदि कन्या का राहु—तीसरे पराक्रम और भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है और कन्या पर बैठा हुआ राहु स्वक्षेत्र के समान हो जाता है, इसलिये, पराक्रम शक्ति की बहुत वृद्धि करेगा तथा महान् हिम्मत शक्ति से काम लेगा और प्रभाव की शक्ति रखेगा और भाई-बहन के स्थान में कुछ झंझट प्राप्त करेगा तथा अपने कार्य की सिद्धि करने के लिये गुप्त शक्ति के पराक्रम योग से बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और अन्दरूनी तौर से अपने अन्दर प्रभाव शक्ति को कायम रखने के लिये भारी प्रयत्नशील रहेगा और कभी २ अपने अन्दर अन्दरूनी तौर की कमजोरी अनुभव करेगा ।
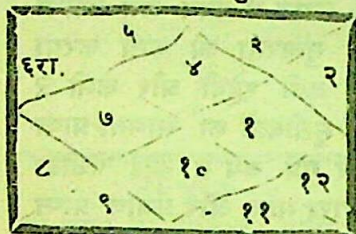
कर्क लग्न में ३ राहु

नं० ४११

यदि तुला का राहु—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में कुछ परेशानी और मातृ-स्थान के सुख सम्बन्धों में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा घरेलू रहन-सहन और घर के अन्दरूनी वातावरण में कुछ अशांति का अनुभव करेगा तथा मकानादि भूमि की कमी प्राप्त करेगा और सुख शांति के साधनों को प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी गुप्त युक्तियों और चतुराइयों से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु कभी २ विशेष अशांति के कारणों से बड़ा दुःख अनुभव करेगा और बहुत समय के बाद शांति से कारणों को प्राप्त करेगा ।
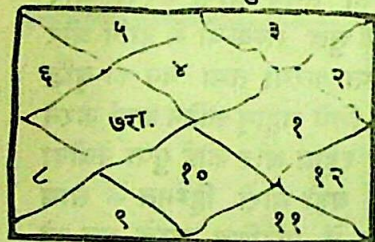
कर्क लग्न में ४ राहु

नं० ४१२

यदि वृश्चिक का राहु—पाँचवें त्रिकोण सन्तान स्थान पर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो सन्तान स्थान में कष्ट अनुभव करेगा

कर्क लग्न में ५ राहु

नं० ४१३

और विद्या ग्रहण करने में परेशानी प्राप्त करेगा तथा दिमाग के अन्दर चितायें अनुभव करेगा तथा छिपाव शक्ति और जिह्वाजी से काम लेगा और बुद्धि के अन्दर कुछ कमजोरी महसूस करते हुए भी प्रकट में बड़ी भारी जचाव की बातें कहकर तथा बुद्धिमत्ता दिखाकर कार्य करेगा और सन्तान पक्ष में कुछ विलम्ब और दिक्कतों के बाद शक्ति प्राप्त करेगा और राज्येश मंगल की राशि पर बैठा है इसलिये कानूनी तरीके की बातें करेगा।

कर्क लग्न में ६ राहु

नं० ४१४

यदि धन का राहु—शत्रु-स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा क्योंकि छठं स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये छिपी हुई तरकीबों से और भेद नीति से शत्रु का दमन करेगा और ननसाल पक्षमें हानि या कमजोरी पावेगा तथा झगड़े झंझटों में कुछ परशानियों से मार्ग प्राप्त करेगा तथा गुप्त युक्ति और गुप्त शक्ति का भरोसा रखेगा तथा पाप-पुण्य की परवाह नहीं करेगा।

यदि मकर का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में परेशानी प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी चिन्ताओं के साथ कार्य संचालन करेगा तथा स्त्री और रोजगार की सफलता के लिये गुप्त युक्ति और कठिनाइयों

कर्क लग्न में ७ राहु

नं० ४१५
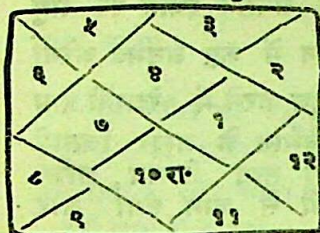
से काम निकालेगा तथा स्त्री और रोजगार के मार्ग से विशेष सफलता पाने के लिये कोई विशेष तरकीब निकालेगा कभी इन्द्रिय विकार प्राप्त करेगा किन्तु जाहिरा की सफलता के मुकाबले में अन्दरूनी कुछ कमी के कारणों से दुःख अनुभव करेगा तथा कभी २ गृहस्थ के सम्बन्धों में महान् कष्ट का योग प्राप्त करेगा और अन्त में शक्ति पावेगा।

कर्क लग्न में ८ राहु

नं० ४१६

यदि कुम्भ का राहु—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो आयु के स्थान में कभी २ कोई विशेष चिंता प्राप्त करेगा तथा जीवन में बड़ी बड़ी चिंतायें प्राप्त करेगा और उदर के अन्दर किसी प्रकार की दिक्कत का योग प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्धकी कुछ चिंता एवं हानि प्राप्त करेगा और जीवन निर्वाह करने के सम्बन्धमें कुछ फिकर मंदी रहेगी और जीवन (जिन्दगी) के लिये विशेष मजबूती पहुँचानेके लिये कोई गुप्त युक्ति के बल से कार्य करेगा और जीवन में बहुत सी दिक्कतों के बाद कोई शक्ति प्राप्त करेगा और अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा।

कर्क लग्न में ९ राहु

नं० ४१७

यदि मीन का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्ध में चिंता प्राप्त करेगा और धर्म का पालन दिखावटी करेगा किन्तु अन्दरूनी तौर से धर्म के स्थान में हानि प्राप्त करेगा और भाग्य की उन्नति के लिये महान् कठिन युक्तियों से कार्य करेगा और

भाग्य में कभी २ महान् भीषण संकट का सामना पावेगा किन्तु मुशीबतों के बाद भाग्य की उन्नति का मार्ग प्राप्त करेगा और किसी गुप्त युक्ति से सफलता पाने पर भी भाग्य के सम्बन्ध में कुछ फिकर बनी रहेगी और कुछ मुफ्त का सा भाग्य से लाभ भी पावेगा।

कर्क लग्न में १० राहु

नं० ४१८

यदि मेष का राहु–दसम केन्द्र पिता स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में हानि तथा सुख की कमी प्राप्त करेगा और राजसमाज मान प्रतिष्ठा आदि के मार्गों में कुछ कमजोरी या कष्ट प्राप्त करेगा और किसी बड़ी उन्नति, कारबारके सम्बन्धों में परेशानी से सफलता प्राप्त करेगा तथा बार-बार दिक्कतों से टकराते रहने के कारणों से निराशायें प्राप्त करेगा और कुछ गुप्त युक्तियों के वैदिक कर्म से मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करेगा और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये बड़ी बहादुरी तथा हिम्मत से कार्य करेगा।

कर्क लग्न में ११ राहु

नं० ४१९

यदि वृषभ का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो बड़ी गहरी चतुराई के योग से धन का लाभ खूब करेगा यद्यपि राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण से आमदनी के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी तथापि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है; इसलिये लाभ और मुनाफा की वृद्धि करेगा और कुछ मुफ्त का सा लाभ प्राप्त करने को विशेष चेष्टा करके सफलता प्राप्त करेगा किन्तु कभी २ लाभ में किसी गहरे संकट का सामना प्राप्त करेगा और अधिक लाभ की खुशी होने पर भी लाभ के मार्ग में अन्दरूनी कुछ कमी अनुभव करेगा।

कर्क लग्न में १२ राहु

नं० ४२०
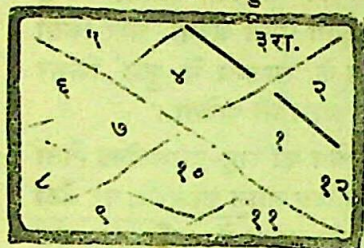
यदि मिथुन का राहु—बारहवें खर्च के स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष युक्ति बल के द्वारा विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों में बड़ा भारी मान और प्रभाव प्राप्त करेगा और खर्चा बढ़ाने में तथा बाहरी सम्बन्धों में सदैव बहुत गहरी-गहरी योजनायें बनायेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण खर्च की अधिकता और बाहरी सम्बन्धों के कार्यों में गुप्त रूप से कुछ कमी अनुभव करेगा किन्तु उपरोक्त कार्यों में अपनी कुछ गुप्त कमजोरी की कमी प्रकट नहीं होने देगा तथा बड़ी भारी बुद्धिमत्ता की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा।

कष्ट, कठिन-कर्म, गुप्त शक्ति के अधिपति—केतु

यदि कर्क का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर परम शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर कोई खास चोट या घाव का योग प्राप्त करेगा और देह की सुन्दरता और सुडौलता में कमी प्राप्त करेगा तथा किसी प्रकार से कोई रोग या चिंता का योग प्राप्त करता रहेगा और कभी चेचककी बीमारी भी रहेगी तथा मन के अधिकारी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिये कुछ गुप्त मानसिक क्लेश के कारण देह में कुछ दुबलापन रहेगा और देह में कभी २ कोई मृत्यु तुल्य संकट का योग प्राप्त करेगा तथा अपनी प्रसिद्धता और प्रभाव के लिये कोई कठिन प्रयत्न गुप्त शक्ति के योग से करेगा।
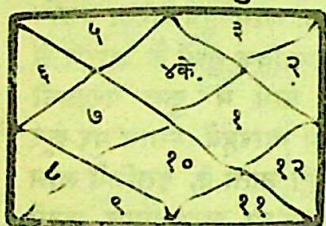
कर्क लग्न में १ केतु

नं० ४२१

कर्क लग्न में २ केतु

नं० ४२२

यदि सिंह का केतु—दूसरे धनस्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में विशेष हानि और संकट प्राप्त करेगा तथा धन के अभाव से बड़ी भारी दिक्कतों का सामना पावेगा और कुटुम्ब स्थानमें बड़ी कमी और क्लेश प्राप्त करेगा धन द्वारा कार्य संचालन करने के लिये दूसरों से उधार भी लेना पड़ेगा किन्तु फिर भी धन की व्यवस्था को सुचारु रूप में न कर सकने के कारण कठिन प्रयत्न और दौड़ धूप परेशानी से इज्जत आबरू प्राप्त करेगा और धन प्राप्ति के लिए कभी जोखिम उठा कर काम करेगा और धन की शक्ति का विशेष प्रभाव दिखाने की कोशिश करेगा।

यदि कन्या का केतु—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाई के स्थान में परेशानी प्राप्त करेगा किन्तु तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये हिम्मत और

कर्क लग्न में ३ केतु

नं० ४२३

पराक्रम शक्ति की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा गुप्त विवेक शक्ति के सम्बन्ध में महान् परिश्रम करके विशेष सफलता प्राप्त करेगा और नरमाई तथा शील का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा तथा जाहिरा में विशेष हिम्मत शक्ति का प्रदर्शन करने पर भी अन्दरूनी तौर से कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और प्रभाव युक्त रहेगा।

यदि तुला का केतु—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में कमी और परेशानी करेगा तथा मकानादि रहने के स्थानों में परिवर्तन और दिक्कतें करेगा

कर्क लग्न में ४ केतु

नं० ४२४

एवं मातृ-भूमि या मातृ-स्थान से अलहदा दूसरे स्थान में रहेगा और घर के अन्दरूनी सुखों को प्राप्त करने के लिये बड़ी चतुराई के साथ महान् कठिन परिश्रम करेगा तथा कभी २ घरेलू वातावरण के अन्दर घोर संकट प्राप्त करेगा और बाद में धीरे २ सुख के साधन प्राप्त करेगा।
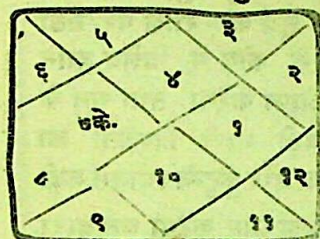
यदि वृश्चिक का केतु—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में शत्रु मंगल राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट एवं कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और विद्यास्थान में कुछ कमी और कुछ दिक्कतें प्राप्त करेगा तथा बुद्धि के अन्दर और वाणी के अन्दर तेजी और छिपाव की शक्ति रखेगा तथा दिमाग के अन्दर परेशानी या कुछ चिन्ता महसूस करेगा और अपनी बुद्धिविद्या के अन्दर कुछ कमी करते हुए भी ज़ाहिर में बड़ी मजबूती से बातें करके योग्यता प्रदर्शित करेगा और शील संतोष का पालन करने में असमर्थता प्राप्त करेगा।
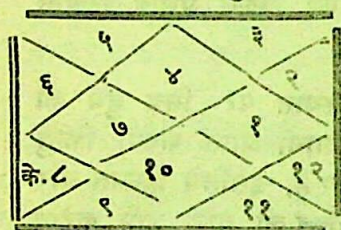
कर्क लग्न में ५ केतु

नं० ४२५

कर्क लग्न में ६ केतु

नं० ४२६

यदि धन का केतु—छठें शत्रु-स्थान में उच्च का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्षमें महान् सफलता प्राप्त करेगा तथा बड़ी से बड़ी मुसीबतों के अन्दर महान् धैर्य की गुप्त शक्ति से काम करेगा और महान् उन्नतिपर पहुंचनेके लिये महान् कठिन

कार्य की सिद्धि महान् परिश्रम के द्वारा प्राप्त करेगा और अपने अन्दर बड़ी भारी हिम्मत और बहादुरी का योग प्राप्त करेगा और रोग इत्यादि के भय से मुक्त रहेगा और शील तथा दया का पालन नहीं कर सकेगा।

कर्क लग्न में ७ केतु

नं० ४२७

यदि मकर का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री-स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में हानि तथा कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी परेशानी अनुभव करेगा तथा रोजगार की सफलता प्राप्त करने में महान् कठिन परिश्रम करेगा और कभी कोई मूत्रेन्द्रिय का विकार प्राप्त करेगा तथा स्त्री भोगादिक पक्ष में विशेष भोग प्राप्ति की इच्छा शक्ति रखेगा और गृहस्थ के कार्यों को संचालन एवं पालन करने में बड़ी दिक्कतों का और कठिनाइयों का योग प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में गुप्त धैर्य की महान् जिद्दबाजी से काम करेगा।

कर्क लग्न में ८ केतु

नं० ४२८

यदि कुम्भ का केतु—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो जीवन की दिनचर्या में बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और आयु के स्थान में कई बार मृत्यु तुल्य संकट प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा तथा पेट के अन्दर निचले हिस्से में कोई बीमारी

या शिकायत प्राप्त करेगा और जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में कभी २ भारी चिन्ता का योग प्राप्त करेगा तथा अपनी वित्त शक्ति में कमजोरी अनुभव करेगा किन्तु किसी स्थिर सहायक शक्ति को प्राप्त करने के लिए महान् कठिन परिश्रम किसी गूढ़तम कार्य में करेगा।

कर्क लग्न में ९ केतु

नं० ४२९
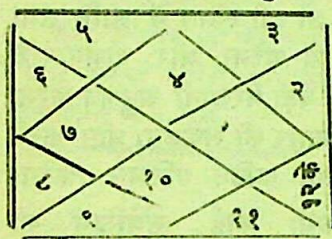
यदि मीन का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में बहुत प्रकार की चिन्ताओं का योग प्राप्त करेगा तथा धर्म के पालन में कुछ कमजोरी पावेगा और भाग्य की वृद्धि करने के लिए बड़ी योग्यता के द्वारा महान् कठिन परिश्रम करेगा और धीरे-धीरे भाग्य की सफलता पावेगा किन्तु कभी-कभी भाग्य के स्थान में भीषण संघर्ष का योग प्राप्त करेगा और गुप्त धैर्य की शक्ति से काम करेगा तथा ईश्वर के विश्वास में आन्तरिक कुछ कमजोरी अनुभव करेगा।

कर्क लग्न में १० केतु

नं० ४३०
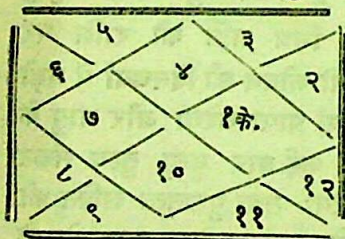
यदि मेष का केतु—दसम केन्द्र पिता स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में हानि एवं कष्ट प्राप्त करेगा और राज समाज के सम्बन्धों में कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा कारबार की उन्नति के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा और कभी २ मान-प्रतिष्ठा स्थान में भारी संकट प्राप्त करेगा तथा गुप्त हिम्मत शक्ति के द्वारा अपनी

इज्जत आबरू को ऊँचा उठाने का प्रयत्न करेगा और कठिन कर्म की शक्ति का भरोसा रखेगा।

यदि वृषभ का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में खूब सफलता शक्ति प्राप्त करेगा क्योंकि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये अधिक मुनाफा खाने के लिए भारी परिश्रम करेगा और

कर्क लग्न में ११ केतु
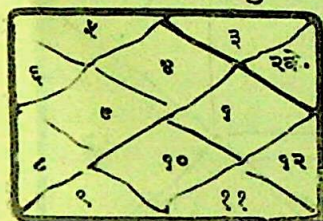
नं० ४३१

शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी चतुराई और गुप्त शक्ति के द्वारा आमदनी के स्थान में वृद्धि प्राप्त करेगा किन्तु अपने स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनी के मार्ग में परेशानी के योग कभी २ प्राप्त करेगा और स्वार्थ युक्त रहेगा।

यदि मिथुन का केतु—बारहवें खर्च स्थान में नीच राशि का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में महान् संकट

कर्क लग्न में १२ केतु
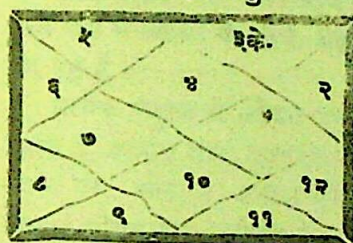
नं० ४३२

उपस्थित करेगा और बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्धों में कष्ट एवं परेशानी प्राप्त करेगा तथा खर्च की संचालन शक्ति को प्राप्त करने के लिये महान् कष्ट साध्य परिश्रम करेगा किन्तु फिर भी खर्च की पूर्ति सुचारु रूप में संतोष जनक नहीं कर सकेगा। तथा खर्च के मार्ग में कुछ गुप्त शक्ति के बल से काम निकालेगा किन्तु कभी २ खर्च के स्थान में आन्तरिक विशेष दुःख अनुभव करेगा।

॥ कर्क लग्न समाप्त ॥
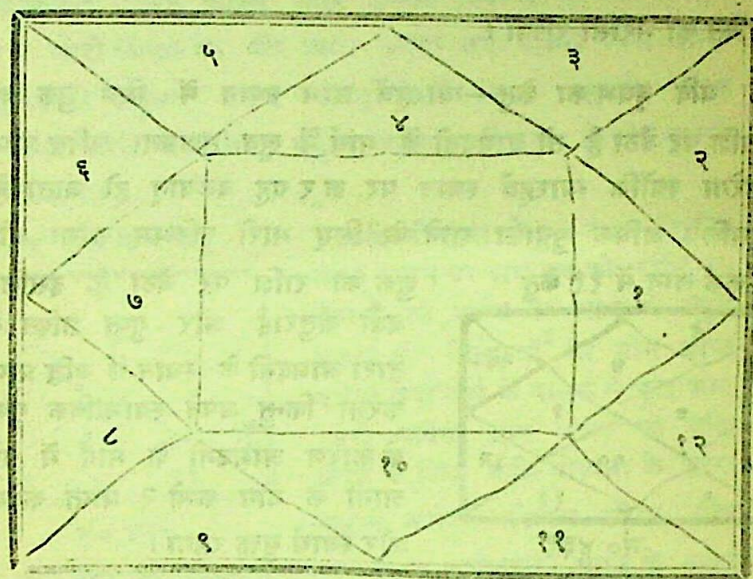
सिंह लग्न का फलादेश आरम्भ
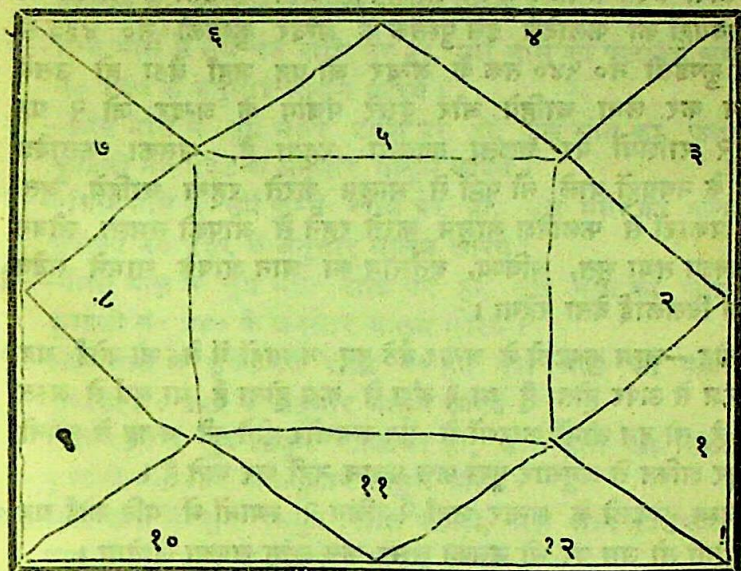
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल
(कुण्डली नं० ५४० तक में देखिये)

प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म कुण्डली के अन्दर जन्म के समय नवग्रह जिस २ स्थान पर, जैसा २ अच्छा बुरा भाव लेकर बैठे होते हैं उनका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और जीवन के दूसरी तरफ नव ग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्नवालों पर भिन्न २ रूप से अच्छा बुरा असर होता रहता है।

अतः इस प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ४३३ से लेकर कुण्डली नं० ५४० तक के अन्दर जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो २ ग्रह जिन २ राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से मालूम करते रहना चाहिये, अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है, तो इन तीनों कारणों से ग्रह कमजोर होने की वजह से अपनी भर पूर शक्ति से अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं।

जन्म कुण्डली के अन्दर जहाँ २ जिन २ स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस पर भी उसका असर फल लागू समझा जायेगा।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ४३३ से ४४४ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४३९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४४० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४४१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४४२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४४३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४४४ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ४४५ से ४५६ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५ जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४४५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४४६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४४७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४४८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४४९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५० के अनुसार मालूम करिये।

११ जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५१ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ४५६ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ४५७ से ४६८ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४५७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४५८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४५९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६१ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६८ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० ४६९ से ४८० तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४६९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४७९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४८० के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ४८१ से लेकर ४९२ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली

नं० ४८२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष मे गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८५ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८७ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८८ के अनुसार मालूम करिये।

१-जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४८९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४९० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४९१ के अनुसार मालूम करिये।

४ जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ४९२ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० ४९३ से लेकर ५०४ तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९७ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९८ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ४९९ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५०० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५०१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५०२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५०३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५०४ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ५०५ से लेकर ५१६ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५०५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५०६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५०७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५०८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५०९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१० के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५११ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१६ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ५१७ से ५२८ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५१९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२१ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२२ के अनुसार मालूम करिये।

११ जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२८ के अनुसार मालूम करिये।

(५) सिंह लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० ५२९ से ५४० तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार देखिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५२९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५३९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५४० के अनुसार मालूम करिये।

देह, आत्मबल (तेज) के स्वामी–सूर्य

सिंह लग्न में १ सूर्य

नं० ४३३

यदि सिंह का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो देह में शक्ति और स्वाभिमान प्राप्त करेगा तथा आत्मबल की विशेष शक्ति के कारण बड़ी भारी हिम्मत प्राप्त करेगा और देह के प्रथम जीवन काल में सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा और देह में बड़ा कद प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा गृहस्थ के संचालन कार्यों में कुछ अरुचि युक्त लापरवाही से कार्य करेगा और तेजी रखेगा।

सिंह लग्न में २ सूर्य

नं० ४३४

यदि कन्या का सूर्य—दूसरे धन स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन की वृद्धि करने में विशेष संलग्नतापूर्वक कार्य करेगा और धन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा धन स्थान बन्धन का सा कार्य करता है, इसलिये देह में कुछ परेशानी या खिंचाव सा महसूस करेगा तथा कुटुम्ब में कुछ प्रभाव रहेगा, सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव शक्ति पावेगा और कुछ पुरातत्व शक्ति की खोज एवं लाभ प्राप्त करेगा तथा इज्जतदार समझा जायगा।

सिंह लग्न में ३ सूर्य

नं० ४३५

यदि तुला का सूर्य—तीसरे भाई के स्थान पर नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई के स्थान में कमी और वैमनस्य एवं दुःख का योग प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और कुछ परतंत्रता युक्त कर्म करेगा तथा तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये अपने अन्दर कमजोरी होते हुए भी बड़ी हिम्मत से कार्य करेगा किन्तु कभी-कभी किसी विशेष परेशानी का योग प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और भगवान् पर भरोसा करेगा तथा धर्म का पालन करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा।

सिंह लग्न में ४ सूर्य

नं० ४३६

यदि वृश्चिक का सूर्य—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो माता की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और सुख के साधन प्राप्त करेगा और देह को आनन्द युक्त एवं प्रभाव युक्त रखेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान के सम्बन्धों में वैमनस्यता या मतभेद रखेगा तथा राज-समाज के स्थान में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और किसी बड़े कारबार को ऊँचा उठाने का सामान्य प्रयत्न करता रहेगा।

यदि धन का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण संतान स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो संतान शक्ति प्राप्त करेगा तथा उत्तम विद्या प्राप्त करेगा और बुद्धि के अन्दर दूरदर्शिता और आत्मज्ञान को

सिंह लग्न में ५ सूर्य

नं० ४३७
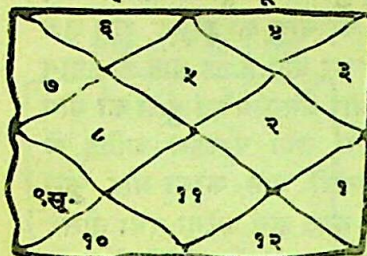
शक्ति प्राप्त करेगा तथा देह और बुद्धि योग के द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु दिमाग के अन्दर तेजी रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा खूब लाभ प्राप्त करेगा तथा आत्मिक बल के द्वारा आमदनी के मार्ग में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा अहंभाव रखेगा।

सिंह लग्न में ६ सूर्य

नं० ४३८

यदि मकर का सूर्य—छठें शत्रु-स्थान पर शनि की मकर राशि पर बैठा है तो देह के पक्ष में कुछ परेशानी तथा कुछ परतंत्रता एवं कुछ रोग प्राप्त करेगा तथा सुन्दरता में कुछ कमी प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रुओंको और दिक्कतों की परवाह नहीं करेगा तथा हिम्मत शक्तिके द्वारा शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा और अपने को कुछ दिमाग के अन्दर समझते हुए भी प्रभाव शक्ति से काम लेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च-स्थानको चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ७ सूर्य

नं० ४३९

यदि कुम्भ का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्रीपक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति का सम्बन्ध प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में कठिन परिश्रम से सफलता प्राप्त करेगा। स्त्री तथा गृहस्थ के संचालन में नीरसता का अनुभव करेगा किन्तु फिर भी गृहस्थिक

मार्ग के भोगादिक पक्ष में आत्मीयता रखेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी सिंह राशि में देह स्थान को स्वक्षेत्र रूप में देख रहा है, इसलिये देह में शक्ति और स्वाभिमान रखेगा तथा गृहस्थ धर्म के संचालन मार्ग से कुछ ऊँचा नाम करने की कोशिश करेगा।

सिंह लग्न में ८ सूर्य

नं० ४४०

यदि मीन का सूर्य—आठवें मृत्यु स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा बाहरी दूसरे स्थान का सम्बन्ध प्राप्त करेगा और जीवन निर्वाह की शक्ति को तथा कुछ पुरातत्व सम्बन्ध को स्वयं अपनी दैहिक शक्ति के योग से प्राप्त करेगा और अपने जीवन की दिनचर्या में प्रभाव प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये बड़ा प्रयत्न करेगा और धन-जन के मार्ग में कुछ सफलता प्राप्त करेगा तथा क्रोधी बनेगा।

सिंह लग्न में ९ सूर्य

नं० ४४१
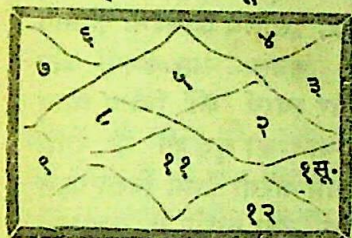
यदि मेष का सूर्य—भाग्य स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की बड़ी शक्ति प्राप्त करेगा और देह में बड़ी भारी प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म और ईश्वर में विश्वास करेगा और भाग्यवान् समझा जायेगा तथा देह में स्थूलता प्राप्त करेगा। सातवीं नीच दृष्टि से भाई के स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन का सम्बन्ध असंतोष रूप में प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान में लापरवाही करेगा तथा पुरुषार्थ की तुलना में भाग्य को बड़ा मानेगा और कभी-कभी किसी छोटे कार्य को करेगा।

सिंह लग्न में १० सूर्य

नं० ४४२
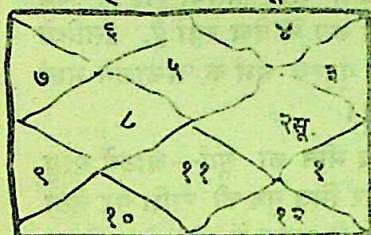
यदि वृषभ का सूर्य—दसवें केन्द्र पिता स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ वैमनस्यतायुक्त शक्ति को प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु उन्नति के मार्गों में कुछ नीरसता का अनुभव करेगा परन्तु उन्नति के मार्ग में हमेशा प्रयत्नशील रहेगा और देह में प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से मातृ-स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में सुन्दर रुचि रखेगा और सुख के साधनों को प्राप्त करने के लिये विशेष कार्य करेगा।

सिंह लग्न में ११ सूर्य

नं० ४४३

यदि मिथुन का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह की शक्ति के द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करेगा और देह में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा क्रूर ग्रह यानी गरम ग्रह ग्यारहवें स्थान पर बलवान् हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त करेगा और सदैव हर कार्यों में अपने निजी लाभ और स्वार्थ का विशेष ध्यान रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से संतान स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान की शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या ग्रहण करेगा और हमेशा स्वार्थयुक्त बातें करेगा तथा वाणी में कुछ गर्मी रखेगा।

यदि कर्क का सूर्य—बारहवें खर्च स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा देह में कमजोरी और दुबलापन प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों में भ्रमण करेगा तथा हृदय में

सिंह लग्न में १२ सूर्य
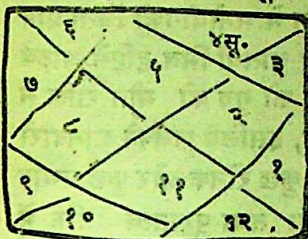
नं० ४४४

अशान्ति अनुभव करेगा और दूसरे स्थानों में शक्ति और स्वाभिमान प्राप्त करेगा तथा खर्च के मार्ग में प्रभाव रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा तथा खर्च की शक्ति से एवं देह की शक्ति से अनेक प्रकार की दिक्कतों पर विजय प्राप्त करेगा।

खर्च (मन) बाहरी स्थानों के स्वामी—चन्द्र

सिंह लग्न में १ चन्द्र

नं० ४४५

यदि सिंह का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण देह में दुबलापन प्राप्त करेगा। बाहरी स्थानों का भ्रमणकारी सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा और मन में व हृदय में खर्च के कारणों से कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में भी कुछ परेशानी अनुभव करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ नुकसान और चिन्ता का योग प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में मनोबल की शक्ति से सफलता पावेगा।

यदि कन्या का चन्द्र—दूसरे धन स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण, धन भवन में कुछ हानि करेगा और दिखावटी अमीरी का ढंग बनावेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी पैदा करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में मनोयोग

सिंह लग्न में २ चन्द्र
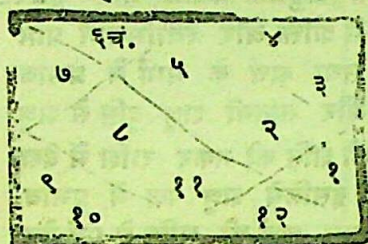
नं० ४४६

की शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा और धनके स्थान में मनोयोगकी चिंता प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे आठवें आयु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चकी शानदारी से जीवनमें कुछ रौनक और कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा।

यदि तुला का चन्द्र—तीसरे भाई के स्थान पर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा खूब करेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण से भाई बहिन के स्थान में कुछ हानि प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और बाहरी दूसरे स्थानों की शक्ति से मनोयोग द्वारा सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्य में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म के पालन में कमी पावेगा, किन्तु भाग्य और धर्म स्थान में कुछ खर्च के योग से थोड़ी सी सुन्दरता प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ३ चन्द्र

नं० ४४७

सिंह लग्न में ४ चन्द्र
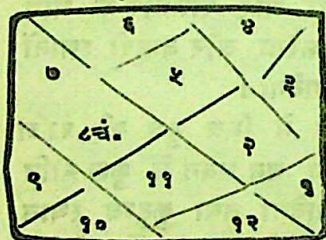
नं० ४४८

यदि वृश्चिक का चन्द्र—चौथे मातृ-स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो माता के सुख स्थान में हानि प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादिकी शक्ति में कष्ट एवं कमी के कारण प्रदान करेगा तथा घर के अन्दर खर्च की कमी के कारणों से परेशानी का अनुभव करेगा और मानसिक

अशांतिका योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से राज्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में मनोयोग की शक्ति से मान प्राप्त करेगा और पिता स्थान के सम्बन्ध में ऊँची भावना रखेगा।

सिंह लग्न में ५ चन्द्र

नं० ४४९

यदि धन का चन्द्र—पाँचवें संतान स्थान पर मित्र गुरु कि राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष कारणों से सन्तान पक्ष में बाधा प्राप्त करेगा तथा विद्या में कमजोरी पावेगा और दिमाग के अन्दर खर्च के कारणों से परेशानी अनुभव करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से मनोयोग के द्वारा खर्च का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ-स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च और बुद्धि के संयोग से लाभ की सूरत पैदा करेगा तथा आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा।

यदि मकर का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ परतन्त्रता या परेशानियों के योग से मनोबल के द्वारा खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करेगा और व्ययेश होने के

सिंह लग्न में ६ चन्द्र
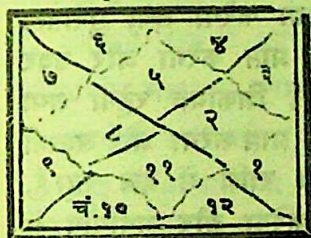
नं० ४५०

दोष के कारण शत्रु पक्ष में या झगड़े झंझट में या रोगादि कार्यों में भी असन्तोषप्रद रूप से नाजायज खर्च करना पड़ेगा, इसलिये किसी भी परेशानियों के कारण मन को दुःख अनुभव होगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कर्क राशि में खर्च स्थान को स्वक्षेत्र रूप में देख रहा है, इसलिये खर्च की कुछ परेशानी होते हुए भी खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी

स्थानों का कुछ परिश्रम युक्त सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में मनोयोग की नरम शक्ति और खर्च के द्वारा कार्य चलावेगा।

यदि कुम्भ का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण स्त्री स्थान में हानि प्राप्त करेगा तथा रोजगार में नुकसान प्राप्त करेगा और मनोयोग के द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से रोजगार के मार्ग में खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थी के संचालन मार्ग में कुछ मानसिक कमजोरी अनुभव करेगा तथा इन्द्रिय भोगादि सुखों में कुछ कमी अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा कुछ खर्च की फिकर रहेगी।
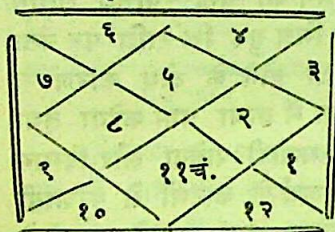
सिंह लग्न में ७ चन्द्र

नं० ४५१
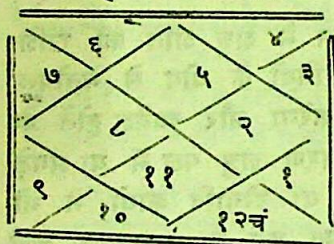
यदि मीन का चन्द्र—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण आयु स्थान में कभी २ परेशानियाँ या फिकर प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व की कुछ हानि प्राप्त करेगा और उदर के अन्दर कोई शिकायत रहेगी तथा मनोयोग के बल से बाहरी स्थानों का सम्बन्ध प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन स्थान में कुछ नुकसान प्राप्त करेगा और मनोयोग से पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ८ चन्द्र

नं० ४५२

यदि मेष का चन्द्र— नवम त्रिकोण भाग्य स्थान पर मित्र मंगल की

सिंह लग्न में ९ चन्द्र

नं० ४५३
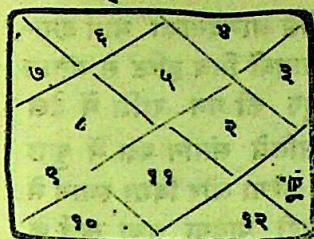
राशि में बैठा है तो भाग्य की शक्तिके द्वारा मनोबल के योग से खर्च की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा धर्म के मार्ग में कुछ खर्च करेगा किन्तु धर्म पालन में त्रुटि प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सम्बन्धों में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा तथा मन के अन्दर कुछ कमजोरी और कुछ प्रसन्नता दोनों प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में १० चन्द्र

नं० ४५४

यदि वृषभ का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता की सम्पत्ति को विशेष खर्च करेगा और विशेष खर्चा करने के कारणों से उन्नति के मार्ग में हानि प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों का ऊँचा सम्बन्ध मनोयोग के द्वारा प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से सुख भवन को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के कारणों से सुख शान्ति में बड़ी अशांति प्राप्त करेगा और माता के स्थान में कमी प्राप्त करेगा तथा मकान जायदाद की कमजोरी प्राप्त करेगा तथा मन के अन्दर स्वाभिमान रखेगा।

यदि मिथुन का चन्द्र—ग्यारहवें स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से मनोयोग के द्वारा लाभ प्राप्त करेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण आमदनी के मार्ग में कम

सिंह लग्न में ११ चन्द्र

नं० ४५५

जोरी अनुभव करेगा तथा खर्च के कार्य कारणोंसे आमदनीका मार्ग बनावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से संतान स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ हानि प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमजोरी पावेगा तथा खर्च के इन्तजामी मार्ग में कुछ फिकर मंदी से काम चलावेगा।

सिंह लग्न में १२ चन्द्र

नं० ४५६
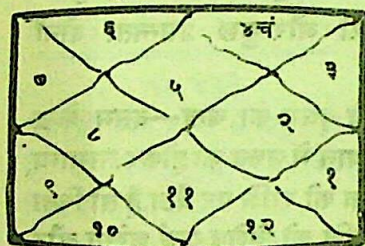
यदि कर्क का चन्द्र—बारहवें खर्च स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थानों का विशेष सुन्दर सम्बन्ध मनोयोग के द्वारा प्राप्त करेगा और विशेष खर्च करने में ही मनकी प्रसन्नता प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में शान्तियुक्त मनोबल की शक्ति से काम करेगा तथा खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा और कुछ रोगादिक झगड़े-झंझटों के मामले में खर्चा अधिक करेगा।

भाग्य, धर्म, माता, भूमि स्थान पति—मंगल

यदि सिंह का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा तथा धर्म का पालन करेगा तथा ईश्वर और भाग्य पर भरोसा करेगा और देह में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में माता स्थान को स्वक्षेत्र भाव से देख रहा है, इसलिये माता की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का सुख प्राप्त करेगा

सिंह लग्न में १ भौम
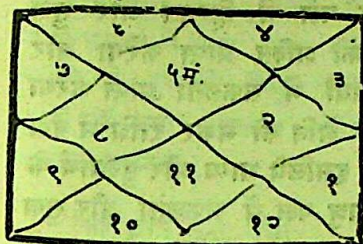
नं० ४५७

और देह के लिये सुख और भाग्य की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता के साथ सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप में सफलता प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से आयुस्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली किसी पुरातत्व शक्ति की सुख सफलता प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का मंगल—धन स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन का सुख प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का अच्छा सहयोग प्राप्त करेगा तथा धन का स्थान बंधन का भी कार्य करता है, इसलिये माता के और मातृ-स्थान के सुख सम्बन्धों में कमी प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से संतान स्थान को मित्र गुरु की धन

सिंह लग्न में २ भौम
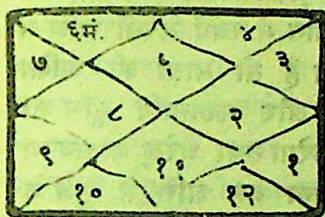
नं० ४५८

राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में सुख प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि के स्थान में सफलता शक्ति भाग्य द्वारा प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और पुरातत्व में सफलता प्राप्त करेगा तथा आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र रूप में देख रहा है, इसलिये बड़ा भाग्यशाली बनेगा और धन के द्वारा भाग्य और धर्म का आनन्द प्राप्त करेगा तथा इज्जतदार व्यक्तियों में नाम रहेगा तथा स्वार्थ युक्त धर्म का पालन करेगा।

यदि तुला का मंगल—तीसरे भाई के स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के पक्ष में हिम्मत और सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा माता के स्थान की शक्ति प्राप्त करेगा और सुख पूर्वक अपने पराक्रम पुरुषार्थ के कार्यों में सफलता प्राप्त करेगा और चौथी उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान के शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और पुरुषार्थ के द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता और सुख एवं प्रभाव प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में भाग्य स्थान को स्वक्षेत्र रूप में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के सरल योग से भाग्य की उत्तम शक्ति और वृद्धि प्राप्त करेगा तथा धर्म कार्यका पालन करेगा और यश की प्राप्ति होगी और आठवीं दृष्टि से राज्य-स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा व्यापारिक क्षेत्र में और पिता-स्थान में उन्नति और सुख प्राप्त करेगा।
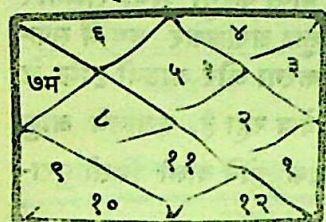
सिंह लग्न में ३ भौम

नं० ४५९

सिंह लग्न में ४ भौम

नं० ४६०

यदि वृश्चिक का मंगल—चौथे माता के स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की शक्ति प्राप्त करेगा और मकानादि भूमि का सुख प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण के अन्दर भाग्य बल शक्ति से सुख के महान् साधन प्राप्त करेगा और चौथी शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा स्त्री स्थान में सुख और सफलता प्राप्त करेगा तथा कुछ अरुचिकर रूप से रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और

सातवीं दृष्टि से पिता-स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता-स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता और सुख प्राप्त करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा।

सिंह लग्न में ५ भौम

नं० ४६१
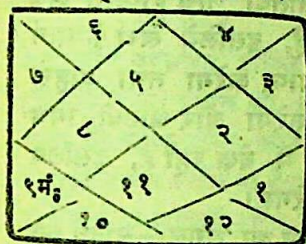
यदि धन का मंगल—पाँचवें स्थान में मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो संतान पक्ष से सुख और सफलता प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में सुख और सफलता के साथ २ यश प्राप्त करेगा और माता तथा मातृ-स्थान का सहयोग और अनुराग मानेगा तथा धर्म और न्याय की बात को कहना और समझना पसंद करेगा और चौथी दृष्टि से आयु स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का लाभ पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य शक्ति के द्वारा लाभ प्राप्ति के अच्छे साधन प्राप्त करेगा और आठवीं नीच दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और धार्मिक कार्यों में खर्च की रुकावटें या खर्च की मजबूरियाँ रहेंगी।

यदि मकर का मंगल—शत्रु स्थान में उच्च का होकर शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में महान् प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में भाग्य को शक्ति से सफलता और सुख का योग प्राप्त करेगा तथा रोगादिक झगड़े-झंझटों में बड़ी भारी हिम्मत

सिंह लग्न में ६ भौम

नं० ४६२

शक्ति से काम करेगा तथा चौथी दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये कुछ परिश्रम और प्रभाव तथा कुछ झंझटों के मार्गके द्वारा भाग्य की अच्छी बुद्धि प्राप्त करेगा और कुछ परेशानियों से मुक्त करने के मार्ग में धार्मिक कार्य करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा के मार्ग में कुछ कमी और कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और सुख तथा सुन्दरता प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ७ भौम

नं० ४६३
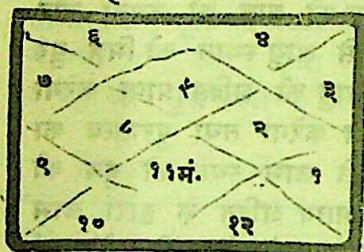
यदि कुम्भ का मंगल—सातवें स्त्री स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ नीरसता युक्त मार्ग से या कुछ कठिनाइयों के योग से स्त्री का सुख सौभाग्य प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से पिता स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ थोड़े से मतभेद के योग से पिता स्थान की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कारबार में सफलता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और सुख सौभाग्य की शक्ति पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में धर्म कर्म का पालन करेगा।

सिंह लग्न में ८ भौम

नं० ४६४

यदि मीन का मंगल—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य की कमजोरी और माता के सुख में कमी एवं कष्ट प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा और मकानादि के अन्दर घरेलू वातावरण में सुख शान्ति की कमी और कष्ट प्राप्त करेगा तथा आयु और पुरातत्व शक्ति का सुख लाभ प्राप्त करेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की प्राप्ति में सफलता पावेगा तथा आठवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में भाई-बहिन के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के स्थान में सुख प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ की शक्ति प्राप्त करेगा और यश तथा बरक्कत में विशेष कमी प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में उमंग प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ९ भौम
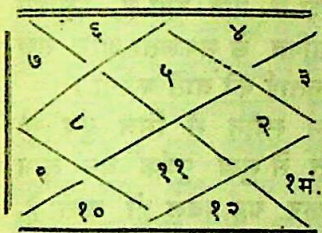
नं० ४६५

यदि मेष का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो भाग्य की महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन करेगा और चौथी नीच दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में परेशानी के योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त मार्ग से

भाई बहिन की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ कर्म की सफलता शक्ति प्राप्त करेगा आठवीं दृष्टि से माता के स्थान को एवं सुख स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता के स्थान की शक्ति प्राप्त करेगा तथा मकानादि रहने के सुख सम्बन्धों में उन्नति प्राप्त करेगा और सुख के अच्छे साधन प्राप्त करेगा

सिंह लग्न में १० भौम

नं० ४६६
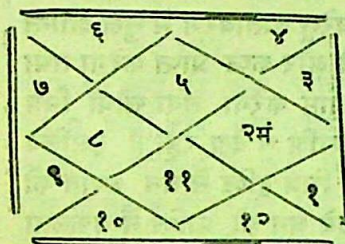
यदि वृषभ का मंगल—दसम केन्द्र राज्य स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो भाग्य शक्ति के बल से राज-समाज में विशेष सफलता और मान प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान में और कारवारके सम्बन्धों में उन्नति प्राप्त करेगा तथा धर्म कर्म का पालन करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और भाग्यवानी के लक्षण प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये मातृ-सुख और घरेलू सुख प्राप्त करेगा तथा मकानादि भूमि की शक्ति प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से संतान और विद्या के स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या के स्थान में भाग्य की शक्ति से सफलता और सुख प्राप्त करेगा तथा वाणी के द्वारा बड़ी सज्जनताई की बातें करेगा।

यदि मिथुन का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से सुख पूर्वक धन लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा तथा लाभ स्थान में क्रूर ग्रह प्रबल हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि एवं माता के पक्ष से लाभ प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से धन भवन को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह के साधन प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सहयोग

सिंह लग्न में ११ भौम

नं० ४६७

प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से संतान स्थान को एवं विद्या स्थान को देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या के पक्ष में सुख सफलता प्राप्त करेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में भाग्य शक्ति द्वारा बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा और रोगादि झगड़े-झंझटों में बड़ी भारी हिम्मत से सफलता प्राप्त करेगा तथा ननसाल पक्ष से सुख प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में १२ भौम

नं० ४६८
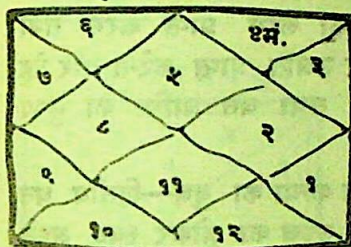
यदि कर्क का मंगल—बारहवें खर्च स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में परेशानी प्राप्त करेगा और भाग्य की तरफ से कष्ट अनुभव करेगा और मातृ-स्थान की तरफ से सुख सम्बन्धों में भारी कमी का योग प्राप्त करेगा, बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और चौथी दृष्टि से भाई के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा तथा झगड़े-झंझटों में हिम्मत से काम निकालेगा और आठवीं दृष्टि से स्त्री स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के योग से स्त्री तथा रोजगार का लाभ सुख प्राप्त करेगा और धर्म की परवाह नहीं करेगा।

———

धन, कुटुम्ब, आमद स्थानपति—बुध

यदि सिंह का बुध—देह के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा देह और विवेक शक्ति के योग से धन की अच्छी आमदनी प्राप्त करेगा तथा धन की संग्रह शक्ति का साधन पावेगा और धनवान् तथा इज्जतदार समझा जायगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन की शक्ति से स्त्री व गृहस्थ का लाभ प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा और देह में सुन्दरता एवं भोग की शक्ति पावेगा तथा धन प्राप्ति का मुख्य दृष्टि कोण रखेगा।

सिंह लग्न में १ बुध

नं० ४६९

यदि कन्या का बुध—द्वितीय धन भवन में उच्च का होकर स्वयं अपने क्षेत्र में बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति का उत्तम कोष प्राप्त करेगा और धन की शक्ति से धन की वृद्धि करने के और धन लाभ प्राप्त करेगा तथा धनवान् इज्जतदार समझा जायगा और सातवीं नीच दृष्टि से अष्टम आयु स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में कई बार कष्ट एवं चिन्ताओं के कारण प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति की कमजोरी पावेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी पावेगा तथा उदर में विकार प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में २ बुध

नं० ४७०

यदि तुला का बुध—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र शुक्र की

सिंह लग्न में ३ बुध

नं० ४७१
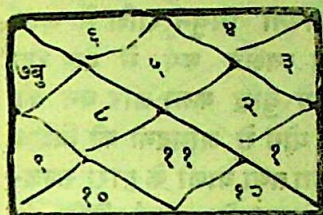
राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा धन की सफलता प्राप्त करेगा तथा विवेक बल से आमदनी के मार्ग में तथा उन्नतिके मार्ग में उन्नति करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति प्राप्त करेगा तथा धन के द्वारा धर्म का पालन करेगा और पुरुषार्थ कर्म के योग से यश प्राप्त करेगा और कुटुम्ब शक्ति का सहयोग अच्छा प्राप्त करेगा और धन कमाने के मार्ग में बड़ी हिम्मत से काम करेगा।

सिंह लग्न में ४ बुध

नं० ४७२

यदि वृश्चिक का बुध—चौथे मातृ स्थान पर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है, तो धन संग्रह का सुन्दर सुख प्राप्त करेगा और माता की शक्ति का विशेष लाभ प्राप्त करेगा तथा मकान जायदाद की शक्ति का लाभ पावेगा और सुख प्राप्ति के अच्छे साधन पावेगा तथा घर बैठे ही आमदनी का सुख प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति से लाभ और उन्नति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज और कारबार के पक्ष में सफलता और मान प्राप्त करेगा।

यदि धन का बुध—पाँचवें त्रिकोण सन्तान स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि के स्थान में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा विवेक की शक्ति से धन की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और सन्तान शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान से

सिंह लग्न में ५ बुध

नं० ४७३

लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मिथुन राशि में लाभ स्थान को स्वक्षेत्र रूप में देख रहा है, इसलिये बुद्धि कला और धन की शक्ति के योग से आमदनी की विशेष वृद्धि करेगा तथा वाणी के द्वारा सज्जनता युक्त रूप से स्वार्थ सिद्धि की बातें करेगा।
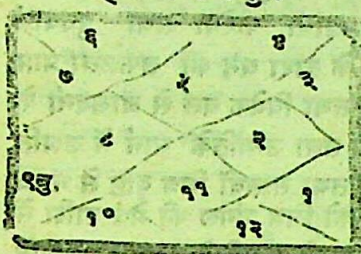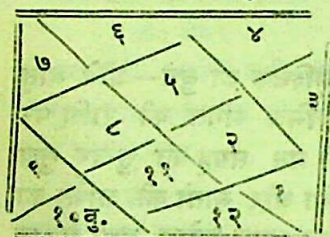
यदि मकर का बुध—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है, तो धनकी संग्रह शक्तिमें बड़ी कमी प्राप्त करेगा तथा कुछ परतन्त्रता युक्त मार्ग से आमदनी प्राप्त करेगा और शत्रु स्थान में एवं कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ धन की हानि पावेगा तथा शत्रु पक्ष में कुछ पैसे की ताकत एवं नरमाई की ताकत से काम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा और कुटुम्ब स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ६ बुध

नं० ४७४

सिंह लग्न में ७ बुध

नं० ४७५

यदि कुम्भ का बुध—सातवें स्त्री स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष लाभ और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में धन की आमदनी तथा धन की संग्रह शक्ति का योग प्राप्त करेगा और गृहस्थ तथा रोजगार के पक्ष में इज्जत तथा कुटुम्ब की शक्ति

प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और मान प्राप्त करेगा तथा विवेक शक्ति के द्वारा धनोपार्जन का विशेष स्थान रखेगा और बड़ी कुशलता प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ८ बुध

नं० ४७६
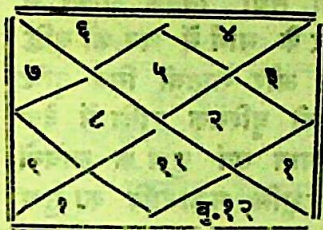
यदि मीन का बुध—आठवें मृत्यु-स्थान में नीच का होकर गुरु की राशि पर बैठा है तो धन की आमदनी और धन की संग्रह शक्ति के मार्ग में बड़ी परेशानी और चिन्ता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान के सम्बन्ध में क्लेश और कमी का योग पावेगा तथा आयु स्थान में कभी-कभी भारी संकट प्राप्त करेगा और पुरातत्व लाभ एवं जीवन की दिनचर्या में कुछ कमी पावेगा तथा उदर में कुछ विकार प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से धन भवन को स्वयं अपनी कन्या राशि में देख रहा है इसलिये धन की कमी रहते हुये भी कार्यों की पूर्ति का योग प्राप्त करेगा।

यदि मेष का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा तो भाग्य की और धर्म की शक्ति से धन की प्राप्ति करेगा और बड़ा भारी भाग्यवान् समझा जायगा तथा धर्म का पालन करेगा और ईमानदारी से धन का उपार्जन एवं संग्रह करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म की सफलता एवं वृद्धि प्राप्त करेगा तथा सज्जनता और यश प्राप्त करेगा।
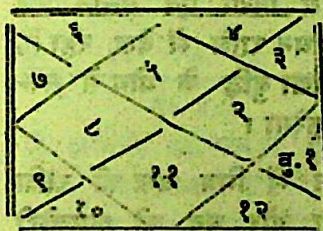
सिंह लग्न में ९ बुध

नं० ४७७

सिंह लग्न में १० बुध
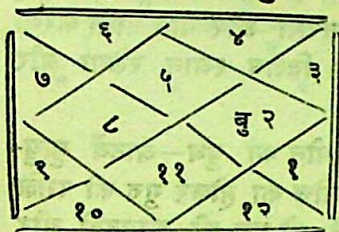
नं० ४७८

यदि वृषभ का बुध—दसम केन्द्र पिता स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की उन्नति करेगा तथा पिता का लाभ पावेगा और राज-समाज में मान और सफलता प्राप्त करेगा तथा विवेक शक्ति से बड़े कारबार के मार्ग में धन की वृद्धि प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से सुख स्थान एवं मातृ स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन के योग से मातृ स्थान एवं सुख के साधनों में सफलता और सुख प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का सुख सम्बन्ध पावेगा।

यदि मिथुन का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो विवेक शक्ति के योग से धन का लाभ स्वयमेव प्राप्त करेगा तथा आमदनी के मार्ग में सुन्दर शक्ति एवं प्रभाव प्राप्त करेगा और धन की शक्ति का सुख लाभ के रूप में प्राप्त करेगा तथा धन के द्वारा आमदनी का मार्ग पावेगा और कुटुम्ब शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान पक्ष को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि के योग से सफलता पावेगा तथा संतान पक्ष में लाभ प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ११ बुध

नं० ४७९

यदि कर्क का बुध—बारहवें खर्च स्थान में मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा तो धन का खर्चा विशेष करेगा और धन की कमजोरी प्राप्त करेगा और धन की संग्रह शक्ति न कर सकने के कारणों से दुःख अनुभव करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से धन का लाभ

सिंह लग्न में १२ बुध
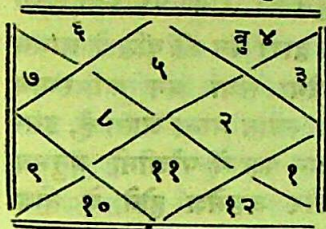
नं० ४८०

विवेक द्वारा प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान की शक्ति में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में धन की शक्ति से एवं विवेक शक्ति से काम निकालेगा और झगड़े झंझटों में भी विवेक और खर्च की शक्ति से काम करेगा।

विद्या, सन्तान, आयु, स्थानपति–गुरु

यदि सिंह का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र सूर्य की सिंह राशि में बैठा है तो देह में प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा तथा सुन्दर आयु प्राप्त करेगा और अष्टमेश होने के दोष से कुछ कठिनाइयाँ और कुछ फिकरमंदी, बुद्धि और सन्तान पक्ष में रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से स्वयं अपनी धन राशि में सन्तान पक्ष को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और वाणी की योग्यता के द्वारा मान प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ अरुचि के स्थान सम्बन्ध प्राप्त करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये बुद्धि योग द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का ज्ञान प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा बड़प्पन के ढंग से रहन-सहन रखेगा।
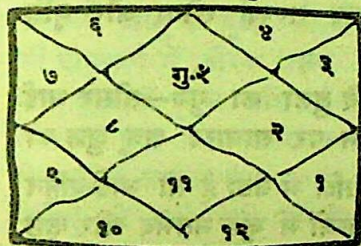
सिंह लग्न में १ गुरु

नं० ४८१

सिंह लग्न में २ गुरु

नं० ४८२

यदि कन्या का गुरु—धन भवन में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बुद्धि योग द्वारा धन की वृद्धि के साधन प्राप्त करेगा तथा धन का स्थान बन्धन का स्थान माना जाता है, इसलिये सन्तान पक्ष में परेशानी अनुभव करेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण धन की संग्रह शक्ति में बाधा प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा ननसाल पक्ष में हानि पावेगा और सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा तथा अमीरात के ढंग से रहन-सहन रखेगा और नवमी दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में राज्य-स्थान को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ मतभेद प्राप्त करेगा तथा राज-समाज के कार्यों में कुछ अरुचि के साथ सम्पर्क रखेगा और वृद्धि के लिये प्रयत्नशील रहेगा।

सिंह लग्न में ३ गुरु

नं० ४८३
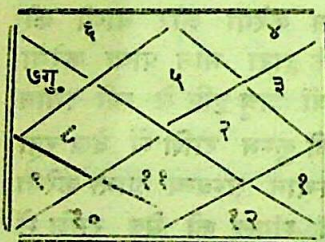
यदि तुला का गुरु—तीसरे भाई के स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में बैठा है तो भाई-बहिन के सम्बन्धों में कुछ मतभेद और कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा पराक्रम स्थान में बुद्धि विद्या के योग द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुछ परेशानी के साथ संतान शक्ति प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कुछ

वैमनस्यता युक्त सम्बन्ध रखेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी सी अनुभव करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के मार्ग में बुद्धि के योग से सफलता प्राप्त करेगा और धर्म को समझेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के द्वारा आमदनी की शक्ति प्राप्त करेगा और हिम्मत शक्ति से काम करेगा।

सिंह लग्न में ४ गुरु

नं० ४८४
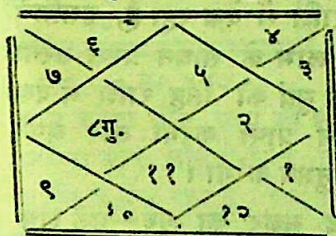
यदि वृश्चिक का गुरु—चौथे केन्द्र मातृ स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश के दोषके कारण मातृ स्थान के सुख सम्बन्धों में कमी और कष्ट का कुछ सुख प्राप्त करेगा तथा मातृ पक्षका कुछ सुख प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष का कुछ सुख प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा जीवन की दीनचर्या में गौरव प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में पिता स्थान को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में साधारण विचारों से सम्पर्क रखेगा और नवमीं उच्च दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा एवं दूसरे स्थानों से जीवन का विशेष आनन्द प्राप्त होगा।

यदि धन का गुरु—पाँचवें त्रिकोण सन्तान स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो सन्तान शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि में शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होनेके दोषसे सन्तान और विद्या के स्थान में कुछ कमी और कुछ परेशानी प्राप्त करेगा

सिंह लग्न में ५ गुरु

नं० ४८५

तथा वाणी की शक्ति के अन्दर सभ्यता की कुछ कमी प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा और पुरातत्व शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा और कुछ धर्म का भी ध्यान रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग और पुरातत्व शक्ति के द्वारा लाभ के साधन प्राप्त करेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और मान प्राप्त करेगा और अपने विचारों द्वारा देह में सुख और दुःख का अनुभव करेगा।

सिंह लग्न में ६ गुरु

नं० ४८६
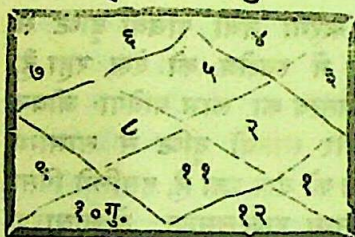
यदि मकर का गुरु—छठें शत्रु स्थान में नीचक्षा होकर शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष से कष्ट अनुभव करेगा तथा विद्या स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा और आयु के सम्बंध में बहुत बार झंझट प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व की हानि पावेगा और जीवन की दिनचर्या में परेशानी अनुभव करेगा तथा शत्रु पक्ष में चिंता फिकर पावेगा और पाँचवीं दृष्टि से पिता स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष में कुछ वैमनस्य युक्त सम्बन्ध रखेगा तथा राजसमाज के कार्यों में कुछ थोड़ी दिनचर्या रखेगा और मान, उन्नति का प्रयत्न करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और दूसरे स्थानों का अच्छा सम्बन्ध बनावेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से

धन स्थान को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये प्रयत्नशील रहेगा और कुटुम्ब का कुछ योग प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ७ गुरु

नं० ४८७

यदि कुम्भ का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष कारणों से स्त्री स्थान में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा विद्या और संतान के पक्ष में साधारण शक्ति प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व का कुछ लाभ पावेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और पुरातत्व के योग से आमदनी प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग से देहमें मान और प्रभाव प्राप्त करेगा और नवमी दृष्टि से भाई के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में कुछ वैमनस्य प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति के मार्ग में विशेष प्रयत्न शील रहकर उन्नति की चेष्टा करेगा।

यदि मीन का गुरु—आठवें आयु स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु में वृद्धि प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक और प्रभाव लावेगा और संतान पक्ष से कष्ट प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा वाणी के अन्दर मिठास की कमी और भेदनीति के द्वारा काम करेगा तथा पाँचवीं उच्च दृष्टि से चन्द्र की कर्क राशि में खर्च भवन को देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्पर्क बनावेगा और सातवीं मित्र

सिंह लग्न में ८ गुरु

नं० ४८८
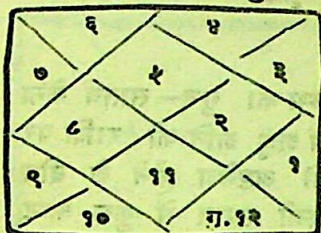
दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने का प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख पावेगा और नवमी मित्र दृष्टि से माता के सुख स्थान को मित्र मंगल की राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि लिये हुये सहायता शक्ति प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ९ गुरु

नं० ४८९
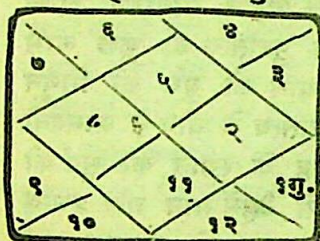
यदि मेष का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है, तो बुद्धि योग के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म शास्त्र तथा पुरातत्व का ज्ञान प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिय देह में बुद्धि योग द्वारा मान प्राप्त करेगा तथा बड़े जचाव की बातें करेगा और सातवीं दृष्टि से भाई के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई के स्थान में कुछ अरुचिकर रूप से सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा पराक्रम की वृद्धि करेगा और नवमी दृष्टि से स्वयं अपनी धन राशि संतान स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये संतान की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण विद्या, संतान, भाग्य सभी में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा।

यदि वृषभ का गुरु—दसम केन्द्र पिता स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण पिता स्थान में हानि और कुछ मतभेद प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि

के योग से राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करेगा और संतान शक्ति के द्वारा मान प्राप्त करेगा और पांचवीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा धन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ सुख का सामान्य लाभ प्राप्त करेगा तथा नवमी नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी अनुभव करेगा। तथा झगड़े झंझट आदि के सम्बन्धों से कुछ फिकर-मन्दी पावेगा।
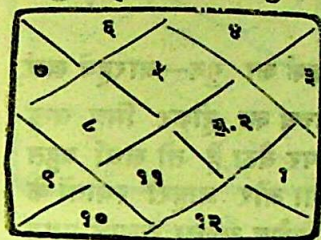
सिंह लग्न में १ गुरु

नं० ४९०

सिंह लग्न में ११ गुरु
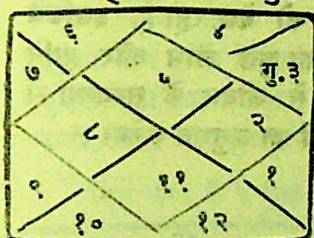
नं० ४९१

यदि मिथुन का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बुद्धि योगके द्वारा आमदनी के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्ध का भी लाभ प्राप्त करेगा तथा आयु की शक्ति में वृद्धि पावेगा और पाँचवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में भाई के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में कुछ मतभेद रखेगा तथा पुरुषार्थ कर्म की कुछ शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी धन राशि में संतान एवं विद्या स्थान को देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष से कुछ परेशानी करेगा और नवम शत्रु दृष्टि से

स्त्री स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्य और कुछ असन्तोष पावेगा तथा रोजगार में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में १२ गुरु
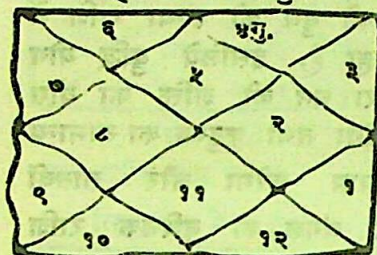
नं० ४९२

यदि कर्क का गुरु—बारहवें खर्च स्थान में उच्च का होकर मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष अच्छा सम्पर्क प्राप्त करेगा और विद्या में कमी और बुद्धि में शक्ति प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में कुछ हानि और कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से माता के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सम्बन्ध में और भूमि मकानादि के सम्बन्ध में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा नवमी दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का कुछ लाभ और हानि प्राप्त करेगा और अष्टमेश के दोष कारणों से जीवन के सम्बन्धों में अनेक प्रकार से कुछ चिन्ता फिकर या दिक्कतों का अनुभव करेगा।

पिता, राज्य, भाई, पराक्रम स्थानपति—शुक्र

यदि सिंह का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सुन्दरता एवं सजावटका ध्यान रखेगा और भाई बहिन तथा पिताकी शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु भाई और पिता से कुछ मतभेद रहेगा तथा उन्नति प्राप्त करने के

सिंह लग्न में १ शुक्र

नं० ४९३

लिये बहुत-बहुत प्रकारके कर्म, चतुराई और परिश्रमके द्वारा करता रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे स्त्री स्थानको शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थानमें महान् शक्ति और इज्जत प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त करेगा और लौकिक गृहस्थिक कार्यों के सम्बन्ध में सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा भोगादिक आनन्द प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में २ शुक्र

नं० ४९४
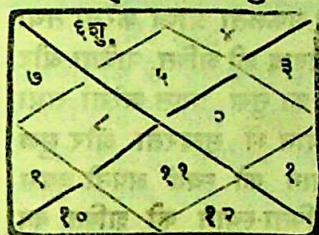
यदि कन्या का शुक्र—धन भवन में नीचका होकर बुधकी कन्या राशिमें बैठा है तो धन संग्रह की शक्ति में कमजोरी प्राप्त करेगा और पिता एवं भाई बहन के सुख सम्बन्धोंमें कमीका योग प्राप्तकरेगा तथा कारबार और पुरुषार्थ कर्म एवं राज समाज इत्यादि मार्गों में कमजोरी रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से आयु स्थानको गुरुकी मीन राशि में देख रहा है, इसलिये आयुमें शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्वका लाभ पावेगा तथा जीवन की दिनचर्यामें प्रभाव एवं शान दारी रखेगा और गुजर-बसर करने का साधन अच्छा प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ३ शुक्र

नं० ४९५

यदि तुला का शुक्र—तीसरे भाई के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई बहिन को शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा पिता की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ कर्म के द्वारा महान् शक्ति प्राप्त करेगा और राज समाज को सम्बन्धित शक्ति का योग प्राप्त करेगा

तथा अपने बाहुबल के द्वारा कोई बड़े कारबार का संचालन कार्य करेगा और उन्नति के कार्यों में महान् चतुराई और हिम्मत से काम करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के द्वारा भाग्य की वृद्धि के साधन पैदा करेगा तथा धार्मिक कार्यों में भी परिश्रम से सुन्दर कर्म करेगा।

सिंह लग्न में ४ शुक्र

नं० ४९६

यदि वृश्चिक का शुक्र—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माताके स्थान में कुछ थोड़े से मतभेद के साथ सुख शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा तथा मकान जायदाद की शक्ति पावेगा और भाई-बहिन का सुख प्राप्त करेगा तथा रहने के स्थान में सुन्दरता और सुख प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से पिता-स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता-स्थान की शक्ति का सुख पूर्वक परिश्रम करके सफलता प्राप्त करेगा और राज-समाज के सम्बन्धों में मान और सुख प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ५ शुक्र

नं० ४९७

यदि धन का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण संतान स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि पर बैठा है तो संतान शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा विद्या के स्थान में शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा और वाणी की योग्यता और चतुराई से बड़ा मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा भाई बहन और पिता स्थान का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये उत्तम कर्म के योग

द्वारा विशेष लाभ के सहित आमदनी प्राप्त करेगा और राज-समाज सम्बन्धित कार्यों में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा बड़ा चतुर नीतिज्ञ बनेगा।

सिंह लग्न में ६ शुक्र

नं० ४९८
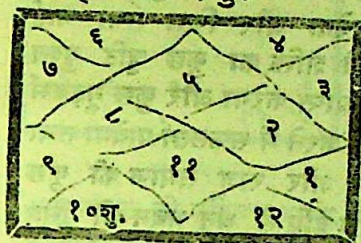
यदि मकर का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ी चतुराई की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा तथा भाई और पिता स्थान में कुछ मतभेद रखेगा तथा कुछ परतन्त्रतायुक्त मार्ग से उन्नति का स्थान प्राप्त करेगा और बड़ी हिम्मत शक्ति से काम करेगा और राज-समाज के परिश्रमी मार्गों द्वारा मान और प्रभाव पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान को सामान्य मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा और पेचीदी युक्तियों से शक्ति बल में वृद्धि पावेगा।

सिंह लग्न में ७ शुक्र

नं० ४९९

यदि कुम्भ का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त करेगा और भाई बहिन तथा पिता के सम्बन्धों में सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा लौकिक व गृहस्थिक कार्यों में बड़ी कुशलता और चतुराई के द्वारा सफलता और मान प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और जबाब की शक्ति प्राप्त करेगा तथा हिम्मत हुकूमत और न्याय से काम करेगा और पुरुषार्थ कर्मसे उन्नति पावेगा।

सिंह लग्न में ८ शुक्र

नं० ५००

यदि मीन का शुक्र—आठवें मृत्यु स्थान में उच्चका होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का लाभ पावेगा और पिता तथा भाई बहिन की शक्ति का कुछ त्रुटि युक्त सम्बन्ध प्राप्त करेगा और कुछ गूढ़कर्म की वृद्धि करने में सफलता पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या में शानदारी रखेगा और राज समाज की कुछ सम्बन्ध शक्ति प्राप्त करेगा सातवीं नीच दृष्टि से धन भवन को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन के संग्रह करने में कुछ कमजोरी पावेगा और कुटुम्ब के सहयोग में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा।

यदि मेष का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म-कर्म का पालन करेगा तथा पिता स्थान की शक्ति लाभ भाग्य द्वारा सुन्दर रूप में प्राप्त करेगा और राज समाज के सम्बन्ध में मान और सफलता तथा यश प्राप्त करेगा तथा चतुराई के सुन्दर सद्गुणी कर्म के द्वारा उन्नति पावेगा और सातवीं दृष्टि से पराक्रम और भाई के स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के द्वारा सुन्दरता युक्त भाग्य की वृद्धि करेगा और बाहुबल के अन्दर विशेष शक्ति पावेगा।
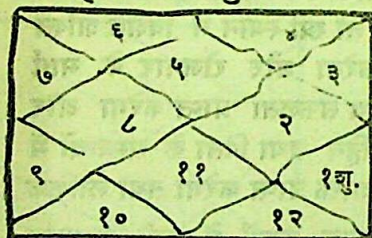
सिंह लग्न में ९ शुक्र

नं० ५०१

यदि वृषभ का शुक्र—दसम केन्द्र पिता स्थान पर स्वयं अपनी

राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो पिता स्थान की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और राज समाज के मार्ग में बड़ा मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कारबार में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और सुन्दर चतुराई से परिश्रम कर्म के द्वारा विशेष उन्नति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से माता के स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और मकानादि की शक्ति का सुन्दर सुख लाभ प्राप्त करेगा।
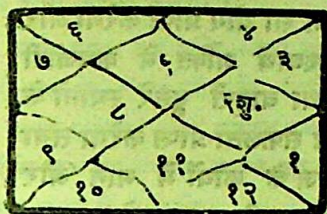
सिंह लग्न में १० शुक्र

नं० ५०२

यदि मिथुन का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान का लाभ प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति का लाभ योग प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के कार्यों को चतुराई के द्वारा सफल बनाकर विशेष लाभ प्राप्त करेगा और राज-शमाज सम्बन्धित मार्ग भी लाभप्रद रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या स्थान में शक्ति और बुद्धि में बड़ी योग्यता प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में सफलता शक्ति पावेगा और वाणी के द्वारा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा।
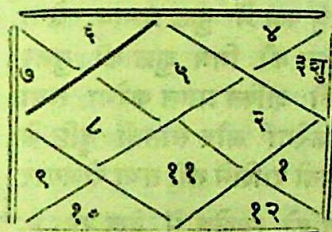
सिंह लग्न में ११ शुक्र

नं० ५०३

यदि कर्क का शुक्र—बारहवें खर्च स्थानमें सामान्य मित्रचन्द्रकी राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत करेगा तथा पिता और भाई की हानि प्राप्त

सिंह लग्न में १२ शुक्र

नं० ५०४

करेगा तथा अपने स्थानीय कार्यों में कमजोरी प्राप्त करेगा और कुछ परतन्त्रता का सा योग प्राप्त करेगा और देह की पुरुषार्थ शक्ति में कमजोरी पावेगा तथा बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में सफलता-प्राप्त करेगा तथा राज-समाज के कार्यों में मान और प्रभाव की कमी प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में बड़ी चतुराई की शक्ति से काम बनावेगा और झगड़े झंझटों में हिम्मत शक्ति से कामयाबी पावेगा।

स्त्री, रोजगार, शत्रुस्थानपति—शनि

यदि सिंह का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु सूर्य की सिंहराशि में बैठा है तो देह के स्थान में परेशानी तथा कुछ रोग और झंझट आदि के योग प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में कुछ प्रभाव रखेगा और तीसरी उच्च दृष्टि से भाई के स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा हिम्मत और पुरुषार्थ शक्ति में वृद्धि प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से

सिंह लग्न में १ शनि

नं० ५०५

स्वयं अपनी राशिमें स्त्री तथा रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, किन्तु शत्रु स्थान पति होने के कारण स्त्री के सुख और प्रेम की शक्ति में कुछ झंझट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्गमें कुछ परिश्रम और कुछ परेशानी के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा तथा दशवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को

शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और कारबार में कुछ उन्नति एवं मान प्राप्त करेगा तथा कार्य कुशल बनेगा।

यदि कन्या का शनि—धन स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन के संग्रह कोष के अन्दर वृद्धि और हानि के दोनों कारणों को प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ दुःख-सुख का योग पावेगा क्योंकि धन का स्थान बन्धन का रूप है, और छठवाँ स्थान झंझट का रूप है, इसलिये स्त्री स्थान के सुख में अनेक बाधायें प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ दिक्कतों के साथ पैसा कमावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से माता के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माताके सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा और घरेलू मकानादिके सुख सम्बन्धों में कुछ विघ्न बाधायें प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु-स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में कुछ अशान्ति अनुभव करेगा और पुरातत्व में कुछ नीरसता पावेगा तथा दसवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में वृद्धि और शक्ति पावेगा।
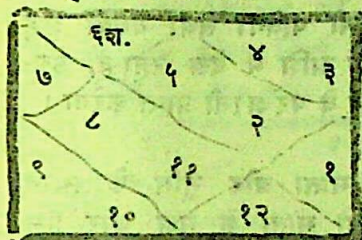
सिंह लग्न में २ शनि

नं० ५०६

सिंह लग्न में ३ शनि

नं० ५०७

यदि तुला का शनि—तीसरे भाई के स्थानमें उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो परिश्रम और पुरुषार्थ शक्ति के मार्गमें बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति का संयोग प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष के सम्बन्धों में बड़ी भारी हिम्मत और दौड़ धूप की शक्ति से विजय प्राप्त

करेगा और स्त्री स्थान में बड़ा प्रभाव और कुछ झंझट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी मिहनत के द्वारा उन्नति करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या में कुछ झंझट युक्त शक्ति पावेगा तथा संतान पक्ष में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि में भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार तथा कुछ झंझटों के कारणों से भाग्य स्थान में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा धर्म के कार्य के कारणों में कमी और हानि प्राप्त करेगा और सुयश की कमी पावेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करते हुए भी खर्चा के मार्ग में परेशानी प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का शनि—चौथे केन्द्र माता और भूमि के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माता के सुख और प्रेम में कुछ झंझट प्राप्त करेगा तथा सुख शान्ति और मकानादि के सम्बन्धों में कुछ परेशानी और प्रभाव भी प्राप्त करेगा तथा स्त्री गृहस्थ और रोजगार के स्थान में कुछ सुख और कुछ झंझट फिकर प्राप्त करेगा, क्योंकि छठें घर का स्वामी परेशानी का दाता होता है और तीसरी दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये अपने घर के क्षेत्र से ही शान्ति पूर्वक शत्रु स्थान में प्रभाव रखेगा और दिक्कतों पर सफलता प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और कारबार में सफलता पावेगा तथा राज-समाज में मान प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ रोग और
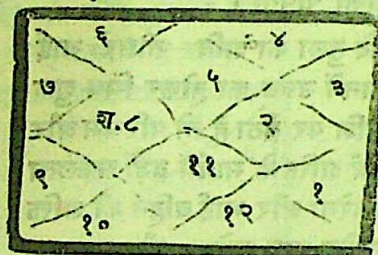
सिंह लग्न में ४ शनि

नं० ५०८

चिन्ता फिकर प्राप्त करेगा तथा देह की सुन्दरता में कमी का योग प्राप्त करेगा।

यदि धन का शनि—पंचम त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान पर शत्रु गुरु की राशि में बैठा है तो बुद्धि में कुछ फिकर रहेगी सन्तान पक्ष में कुछ रोग या परेशानी का अनुभव करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमी प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टि से स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्त्री तथा रोजगार से स्थान को देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा रोजगार की शक्ति का संचालन करेगा और बुद्धिमती स्त्री प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के दोष से स्त्री व गृहस्थ तथा रोजगार के मार्ग में कुछ चिंता फिकर का योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के परिश्रमी मार्ग से आमदनी की वृद्धि प्राप्त करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के द्वारा धन की वृद्धि करने का विशेष प्रयत्न करता रहेगा और कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त करेगा और भोगादिक की विशेष इच्छा रखेगा।
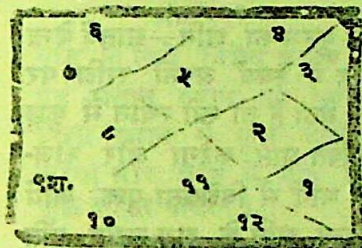
सिंह लग्न में ५ शनि

नं० ५०९

यदि मकर का शनि – छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखेगा और ननसाल पक्ष की कुछ शक्ति प्रात करेगा तथा स्त्री स्थान में कुछ मतभेद के सहित शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार व गृहस्थ के संचालन मार्ग में कुछ परेशानियाँ और प्रभाव तथा परिश्रम का योग प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में कुछ अशांति अनुभव करेगा और पुरातत्व का सामान्य लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि

सिंह लग्न में ६ शनि

नं० ५१०
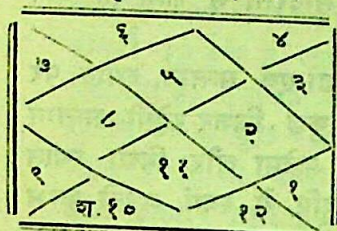
से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करते हुए भी खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और भाई के स्थान को दसवीं उच्च दृष्टि से मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की अच्छी शक्ति प्राप्त करेगा और विशेष परिश्रम तथा हिम्मत शक्ति के योग से रोजगार की सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ७ शनि

नं० ५११

यदि कुम्भ का शनि—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में विशेषता युक्त कार्य करेगा किन्तु शनि के शत्रु स्थान पति होने के कारण स्त्री पक्ष में कुछ झंझट और रोग भी प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम और परेशानी भी प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा तथा तीसरी नीच दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री व गृहस्थ के कारणों से भाग्य में कुछ कमजोरी या परेशानी रहेगी और धर्म के मार्ग में कुछ हानि रहेगी तथा यश की कमी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता और शान्ति में कमी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से माता के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी। और रहने के स्थान भूमि में कुछ अशांति रहेगी।

यदि मीन का शनि—आठवें मृत्यु स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष अशान्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयों से कार्य करेगा और शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतें और परेशानी रहेगी और आयु स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा क्योंकि अष्टम शनि आयु की वृद्धि का सूचक होता है और तीसरी मित्र दृष्टि से पिता स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पिता और कारबार के स्थान में कुछ सहारा प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये विद्या स्थान में कुछ कमी तथा संतान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और बुद्धि में कुछ फिकर रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ शक्ति पावेगा।
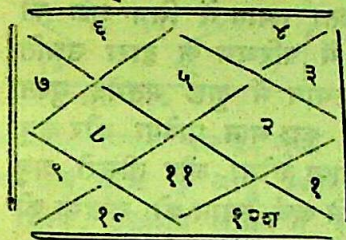
सिह लग्न में ८ शनि

नं० ५१२

यदि मेष का शनि नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की मेष राशि पर बैठा है, तो भाग्य स्थान में परेशानी प्राप्त रहेगी और धर्म में कमजोरी पावेगा तथा सुयश नहीं मिलेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनीकी कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से भाई के स्थानको मित्र शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और दसवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी
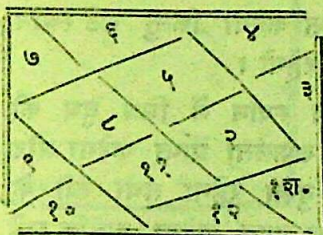
सिह लग्न में ९ शनि

नं० ५१३

मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में भाग्य की शक्ति से प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग से कुछ बुराई और कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और सप्तमेश होने के कारण स्त्री तथा रोजगार के मार्ग में कुछ भाग्य की दुर्बलता के साथ सहयोग शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का शनि—दशम केन्द्र पिता स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो व्यापार के मार्ग में परिश्रम के द्वारा उन्नति और शक्ति प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान में कुछ मतभेद युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में कुछ मान पावेगा और शत्रु पक्ष में कार व्यापार के द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करते हुये भी खर्च में कुछ नीरसता रहेगी और रोजगार के लिये कुछ बाहरी स्थानों का सम्बन्ध पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्त्री तथा रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये स्त्री व रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के कारण कुछ परेशानी भी रहेगी।
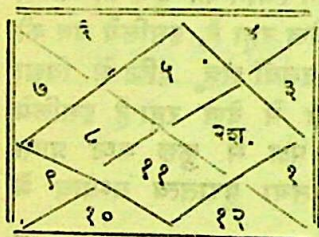
सिंह लग्न में १० शनि

६	५	४
७	८	३
	११	२श.
९		१
१०		१२

नं० ५१४

यदि मिथुन का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और शत्रु स्थान से लाभ युक्त एवं प्रभाव युक्त रहेगा तथा स्त्री के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतों के साथ स्त्री सुख प्राप्त करेगा क्योंकि छठें स्थान का स्वामी होने का दोष है और रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम और परेशानी के योग से अच्छी सफलता और लाभ प्राप्त करेगा

सिंह लग्न में ११ शनि

नं० ५१५
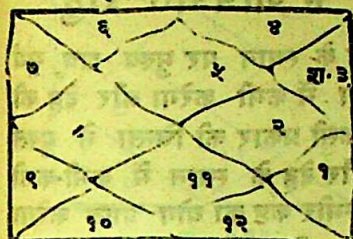
और अधिक नफा खाने का प्रयत्न करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी और देह में कुछ रोग प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और सन्तान पक्ष की सुख शक्ति में कुछ कमी प्राप्त होगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में कुछ चिन्ता फिकर का योग प्राप्त करेगा और पुरातत्व के लाभ में कुछ कमी प्राप्त करेगा।

यदि कर्क का शनि—बारहवें खर्च स्थान में शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों से रोजगार सम्बन्ध प्राप्त करेगा और रोजगार की लाइन में नुकसान का योग प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी प्राप्त होगी और तीसरी मित्र दृष्टि से धन स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और सातवीं दृष्टि

सिंह लग्न में १२ शनि
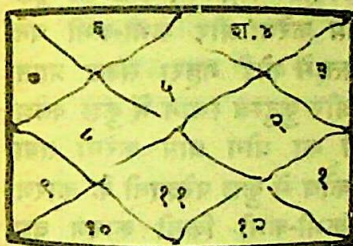
नं० ५१६

से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये कुछ खर्च की शक्ति से शत्रु स्थान में कुछ प्रभाव प्राप्त करेगा और दसवीं नीच दृष्टि से भाग्य स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के पक्ष से भाग्य में कमी और कष्ट अनुभव करेगा तथा धर्म के स्थान में हानि प्राप्त करेगा और ईश्वर के विश्वासों में और सुयश में कमी प्राप्त करेगा और कुछ रोगादिक झंझटों में खर्चा करना पड़ेगा।

कष्ट, चिन्ता, गुप्तयुक्ति के अधिपति–राहु

यदि सिंह का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में कमी करेगा और देह की सुख शक्ति में बाधा पैदा करेगा और किसी प्रकार की चिन्ता से युक्त रहेगा और देह के स्थान में कभी-कभी कोई गम्भीर कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा कुछ छिपाव शक्ति के कार्यों को हठयोग से पूर्ण करेगा और किसी विशेष पद पर या विशेष महत्व पर पहुँचने के लिये कोई गहरी और कष्ट युक्त चाल से कार्य करेगा और परेशानी के अन्दर हिम्मतसे काम लेकर सफलता की ओर चलता रहेगा।

सिंह लग्न में १ राहु

नं० ५१७

यदि कन्या का राहु—दूसरे धन स्थान में परम मित्र बुध की राशि पर स्वक्षेत्रवत् बैठा है तो धन की वृद्धि करने के लिये महान् गम्भीर युक्ति पूर्ण कर्म से कार्य में सफलता पावेगा और नगद धन की संग्रह शक्ति में अभाव होने के कारण कष्ट का कुछ योग प्राप्त करेगा और कभी-कभी धन की शक्ति में कोई गहरा संकट प्राप्त करेगा और कुटुम्ब स्थान में कुछ क्लेश या कमी का योग प्राप्त करेगा तथा धन के कोष में कुछ परेशानी के कारण या ऋण का योग प्राप्त करेगा और कभी-कभी किसी कारण वश मुफ्त का सा धन भी प्राप्त करेगा।
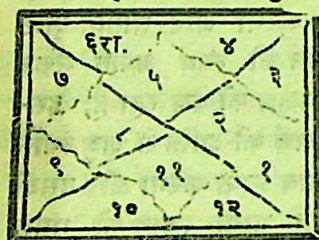
सिंह लग्न में २ राहु

नं० ५१८

यदि तुला का राहु—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के स्थान में कुछ क्लेश का योग

सिंह लग्न में ३ राहु

नं० ५१९
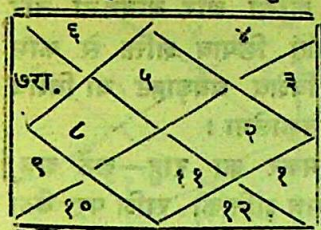
प्राप्त करेगा और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह प्रबल हो जाता है, इसलिये पुरुषार्थ की वृद्धि करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम करेगा और कभी-कभी जीवन में हिम्मत टूटने के विशेष योग अन्दरूनी प्राप्त होंगे, किन्तु प्रकट में धैर्य रहेगा और गुप्त युक्ति से और गुप्त शक्ति और चतुराइयों के बल से विशेष कार्य कर सकेगा और स्वार्थ सिद्धि के लिये विशेष दृढ़ता से और तत्परता से काम लेगा।

यदि वृश्चिक का राहु—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माताके स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा और घरेलू सुख शांतिमें बाधा मिलेगी तथा भूमि मकानादि के स्थान में कुछ अशांति अनुभव होगी और मातृ भूमि से अलग स्थान में रहनेका योग भी बनेगा और घरेलू वातावरण के अन्दर कभी २ महान् संकट का सामना करना पड़ेगा, किन्तु भाग्य शक्ति और हिम्मत शक्ति के द्वारा सुखके साधन प्राप्त होते रहेंगे किन्तु फिर भी सुख प्राप्तिके लिये गुप्त युक्ति बल के द्वारा काम करता रहेगा।

सिंह लग्न में ४ राहु

नं० ५२०

यदि धन का राहु—पाँचवें त्रिकोण संतान और विद्या के स्थान से नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा और विद्याके स्थान में कमी रहेगी तथा बोलचाल के अन्दर सभ्यता और योग्यता की कमजोरी पावेगा तथा विद्या बुद्धि की योग्यता में अन्दरूनी कमजोरी अनु-

सिंह लग्न में ५ राहु

नं० ५२१

भव करने के कारणों से परेशानी अनुभव करेगा और अन्दरूनी तौर से सत्य का पालन नहीं कर सकेगा अर्थात् छिपाव शक्ति से काम निकालेगा और विचारों के अन्दर कभी २ विशेष घबड़ाहट या विशेष चिंता प्राप्त करेगा और गुप्त धैर्य से काम निकालेगा।

सिंह लग्न में ६ राहु

नं० ५२२

यदि मकर का राहु—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान में क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है इसलिये शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव रखेगा और गुप्त युक्तिबल के द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा तथा कभी २ किसी शत्रु पक्ष से या किसी झंझट के कारणों से परेशानी अनुभव करेगा किन्तु प्रत्यक्ष में बड़ी हिम्मत शक्ति से काम लेगा और ननसाल पक्ष में कुछ हानि पावेगा और कभी २ किसी झगड़े झंझटों के मार्ग से गुप्त की सी बहादुरी का योग प्राप्त करेगा और कठिन परिस्थिति में रहकर भी गुप्त धैर्य की महान् शक्ति के द्वारा पार होता रहेगा।

सिंह लग्न में ७ राहु

नं० ५२३
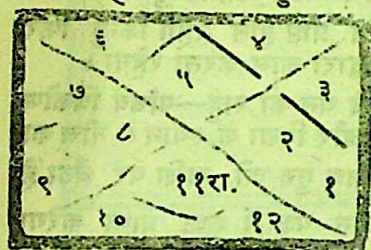
यदि कुम्भ का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा और स्त्री पक्ष के सुख की वृद्धि करने के लिये गुप्त युक्तियों से विशेष कार्य करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी-बड़ी पेचीदी और परिश्रम की युक्तियों से रोजगार का कार्य संचालन करेगा और रोजगार तथा गृहस्थिक मार्गों में कभी २ महान् वेदना और भारी संकट का सामना पावेगा फिर भी किसी प्रकार की दिक्कतों के बाद गृहस्थ का संचालन कर सकेगा।

सिंह लग्न में ८ राहु

नं० ५२४

यदि मीन का राहु—आठवें आयु स्थानमें शत्रु गुरुकी राशि पर बैठा है तो जीवनके अन्दर मृत्यु तुल्य कई बार संकट प्राप्त करेगा और उदर के अन्दर निचले हिस्सेमें कुछ शिकायत प्राप्त करेगा तथा दिनचर्यामें कुछ परेशानी और चिंता अनुभव करेगा और पुरातत्व की कुछ हानि प्राप्त करेगा और जीवन निर्वाह करने के सम्बन्ध में कुछ अधिक दौड़ धूप और दिक्कतों का योग प्राप्त रहेगा किन्तु किसी विशेष गूढ़ युक्तिके बलसे कुछ सहारा प्राप्त करेगा।

यदि मेष का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की चितायें प्राप्त करेगा और भाग्योन्नति के मार्ग में बहुत बार रुकावटें और झंझटों के योग प्राप्त करेगा तथा धर्म पालन के स्थान में हानि करेगा और ईश्वर की निष्ठा में कुछ कमजोरी रहेगी तथा भाग्य की वृद्धि करने के लिये बड़े कठिन प्रयत्न से और पेचीदी युक्तियों से कार्य करेगा किन्तु बहुत सी कठिनाइयों के बाद भाग्य की शक्ति में सहारा प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ९ राहु

नं० ५२५

सिंह लग्न में १० राहु

नं० ५२६

यदि वृषभ का राहु—दसम केन्द्र राज्य स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ झंझट या परेशानी प्राप्त करेगा और पिता स्थान के सुख में कमी तथा कष्ट मिलेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें और रुकावटें प्राप्त होंगी किन्तु शुक्र की राशि पर

होने के कारण विशेष गहरी युक्तियों के योग से कारबार की उन्नति करेगा और कठिनाइयों के कर्म योग से मान प्राप्त करेगा तथा गुप्त कर्म के बल का भरोसा रखेगा।

सिंह लग्न में ११ राहु

नं० ५२७
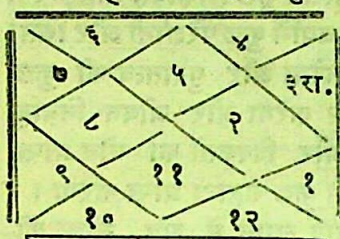
यदि मिथुन का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध को राशि पर बैठा है तो क्रूर ग्रह लाभ स्थान में विशेष शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त करेगा और आवश्यकता से अधिक मुनाफा खायेगा तथा कभी कभी मुफ्त का सा विशेष धन लाभ पावेगा और आमदनी के मार्ग में विशेष युक्ति बल की महान् शक्ति से कार्य करेगा किन्तु कभी कोई आमदनी के मार्ग में विशेष संकट या परेशानी का योग भी प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में १२ राहु

नं० ५२८

यदि कर्क का राहु—बारहवें खर्च स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो खर्च संचालन के विषय में विशेष चिन्ता और परेशानी के योग प्राप्त करेगा तथा खर्च के मार्ग में कभी कभी महान् संकट प्राप्त होने के कारण शोचनीय दशा की स्थिति प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में हानि प्राप्त करेगा और खर्च संचालन के मार्ग की पूर्ति करने के लिये मनोयोग के कष्ट साध्य कर्म के द्वारा एवं गुप्त युक्ति के बल के द्वारा सफलता पावेगा तथा मन-स्थान-पति चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिये खर्च के मार्ग में मन की शक्ति से बल प्राप्त करेगा।

———

कष्ट, कठिन कर्म, गुप्त शक्ति के अधिपति—केतु

सिंह लग्न में १ केतु

नं० ५२९

यदि सिंह का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में कुछ कष्ट और चिन्ता का योग प्राप्त करेगा तथा सुन्दरता एवं सुडौलताई में कमजोरी पावेगा तथा देह में कभी कोई विशेष सांघातिक चोट या घाव का योग प्राप्त करेगा और संलग्नता पूर्वक परिश्रम कर कार्य करेगा और हृदय में कुछ चिन्ता के होते हुये भी अन्दरूनी गुप्त धैर्य की शक्ति से काम करेगा और अपने अन्दर कुछ कमी या कमजोरी के होते हुये भी बड़ी हिम्मत के साथ काम करेगा।

सिंह लग्न में २ केतु
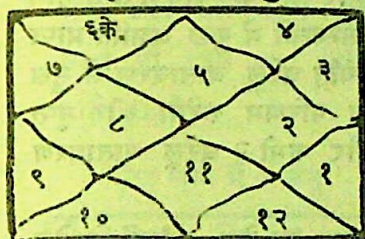
नं० ५३०

यदि कन्या का केतु—दूसरे धन स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति के स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा और धन के कारणोंसे चिन्ता फिकरका योग मिलेगा और कुटुम्ब स्थान में कुछ अशांति का योग प्राप्त करेगा तथा धन की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा और गुप्त शक्ति के बल से इज्जत बढ़ाने का प्रयत्न करेगा तथा धन के पक्ष में कभी-कभी कोई विशेष संकट का योग प्राप्त होगा तथा कभी-कभी कोई ऋण के रूप में भी धन प्राप्त करना पड़ेगा।

यदि तुला का केतु—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के स्थान में कष्ट और कुछ परेशानी का योग प्राप्त करेगा किन्तु तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान्

सिंह लग्न में ३ केतु

नं० ५३१

हो जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति की वृद्धि करेगा तथा पराक्रम और परिश्रम की गहन शक्ति पर विशेष भरोसा रखने के कारण बड़ी हिम्मत और निर्भयता प्राप्त करेगा तथा चतुराइयों के कार्यों को बाहुबल के द्वारा पूरा करके प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा तथा लापरवाही और हठ धर्मी से कार्य करेगा।

सिंह लग्न में ४ केतु

नं० ५३२

यदि वृश्चिक का केतु — चौथे केन्द्र माता के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माताके स्थानमें कुछ परेशानी या कमी प्राप्त करेगा तथा मातृ स्थान में कुछ अलहदगी का योग प्राप्त करेगा और रहने के स्थान में तथा भूमि के सुख सम्बन्धों में कुछ अशांति प्राप्त रहेगी अर्थात् घरेलू वातावरण में सुख की शक्ति को प्राप्त करने के लिये कठिन परिश्रम करेगा और गुप्त युक्ति के बल से सुख का अनुभव करेगा और कभी २ घरेलू वातावरण में गहरी अशांति का योग प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ५ केतु

नं० ५३३

यदि धन का केतु—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान पर उच्च का होकर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और कभी २ संतान पक्ष में कष्ट भी अनुभव करेगा तथा विद्या स्थान में शक्ति प्राप्त करने के लिये महान् परिश्रम करेगा और विद्या में सफलता शक्ति मिलेगी किन्तु फिर भी

बुद्धि विद्या के सम्बन्ध में कुछ कमी महसूस करेगा तथा हृदय में अन्दरूनी अपने को विशेष बुद्धिमान् समझेगा और वाणी की लावण्यता में कुछ कमी प्राप्त रहेगी किन्तु तायदाद से अधिक बातों के द्वारा प्रभाव प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा।

सिंह लग्न में ६ केतु

नं० ५३४

यदि मकर का केतु—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में विशेष परिश्रम और विशेष प्रयत्न करेगा और झंझट तथा परेशानियों के मार्ग में अन्दरूनी तौरसे बड़ी भारी शक्ति से काम करेगा क्योंकि छठें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये बड़ी से बड़ी मुसीबतों में भी धैर्य से काम लेगा और बड़े भारी आन्तरिक साहस के साथ उन्नति की तरफ बढ़ते ही रहने का प्रयास करता रहेगा तथा ननसाल पक्ष में हानि रहेगी।

सिंह लग्न में ७ केतु

नं० ५३५
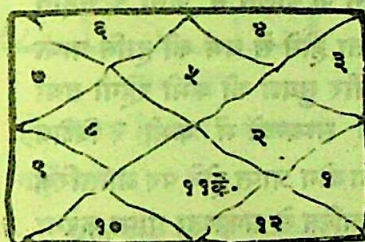
यदि कुम्भ का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री तथा रोजगार के स्थान में बैठा है तो स्त्री पक्ष के सुख सम्बन्धों में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त होंगे और रोजगार के मार्ग में कठिन परिश्रम करेगा तथा रोजगार के लिये बड़ी-बड़ी दिक्कतें प्राप्त करेगा और गृहस्थ पालन के स्थान में झंझटों का सामना पावेगा और कभी कोई मूत्रेन्द्रिय का विकार प्राप्त करेगा तथा कभी २ गृहस्थ

सम्बन्ध में गहरे संकटों का योग प्राप्त होने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से काम लेगा और परिश्रम के योग से सफल होगा।

यदि मीन का केतु—आठवें आयु स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो जीवन काल में अनेक बार मृत्यु तुल्य संकटों का सामना प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन को सहायक होने वाली भूमि की हानि या कमी प्राप्त करेगा तथा उदर के नीचले भाग में कोई विकार प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में चिन्ता फिकर प्राप्त रहेगी और जीवन को सहायक होने वाली किसी गुप्त शक्ति का संचय परिश्रम के योग द्वारा प्राप्त करेगा और जीवन काल में कभी-कभी विशेष चिन्ताओं का योग प्राप्त होने पर भी आन्तरिक धैर्य की महान् शक्ति के बल से मुक्ति प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ८ केतु

नं० ५३६

यदि मेष का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्धों में कुछ परेशानी और कष्ट प्राप्त करेगा तथा भाग्योदय के मार्ग में बड़ा कठिन परिश्रम करेगा और धर्म के स्थान में कमजोरी रहेगी तथा धर्म के पालन में कभी २ महान् असमर्थता होने से धर्म की हानि प्राप्त रहेगी और सुयश की कमी रहेगी तथा भाग्य के सम्बन्धों में कभी २ विशेष संकट का योग प्राप्त होने पर आन्तरिक धैर्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और अन्त में कुछ कमी लिये हुए भाग्य की मजबूती का योग प्राप्त करेगा।

सिंह लग्न में ९ केतु

नं० ५३७

सिंह लग्न में १० केतु

नं० ५३८
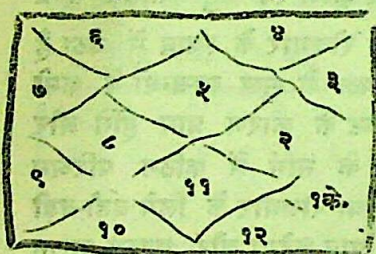
यदि वृषभ का केतु—दसम केन्द्र पिता स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता-स्थान में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और राज-समाज के सम्बन्धों में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिये कठिन प्रयत्न करेगा तथा कारबार की उन्नति के स्थान में कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और कभी २ इज्जत आबरू के स्थान में महान् संकट प्राप्त होने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति और चतुराइयों से कार्य की पूर्ति करेगा तथा बहुत समय तक परिश्रम और कठिनाइयाँ सहन करने पर उन्नति पावेगा।

यदि मिथुन का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी-बड़ी दिक्कतें और कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा तथा धनोपार्जन की कमजोरी से दुःख का अनुभव करेगा और आमदनी के मार्ग में कुछ निम्न प्रकार के मार्ग से काम चलावेगा और कभी २ द्रव्य के अभाव से घोर संकट प्राप्त होने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से काम करेगा और किसी न किसी प्रकार अपना मतलब सिद्ध कर लेगा क्योंकि ग्यारहवें स्थान में क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है अतः लाभ के मार्ग में उचित अनुचित की परवाह नहीं करेगा।
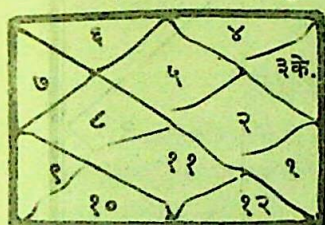
सिंह लग्न में ११ केतु

नं० ५३९

यदि कर्क का केतु—बारहवें खर्च के स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बहुत परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा

सिंह लग्न में १२ केतु

नं० ५४०

खर्च के कारणों से कष्ट और कमी तथा मानसिक चिन्ता का योग प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में दिक्कतों और हानियों के योग प्राप्त करेगा और खर्च के संचालन में बड़ा परिश्रम करेगा तथा कठिनाइयों के द्वारा कार्य करते रहने पर भी कभी-कभी खर्च के मार्ग में विशेष संकट प्राप्त करेगा किन्तु आन्तरिक धैर्य की गुप्त शक्ति के बल से सदैव कार्य निकालता रहेगा।

❀ सिंह लग्न समाप्त ❀
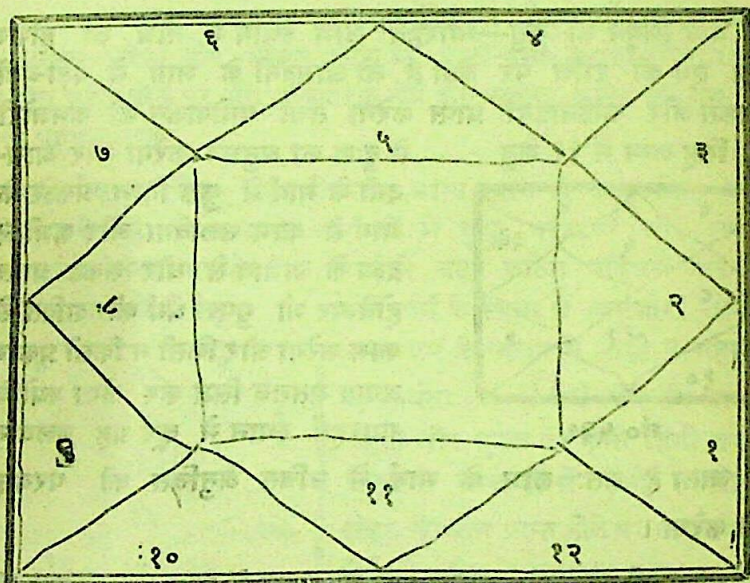
कन्या लग्न का फलादेश-प्रारम्भ
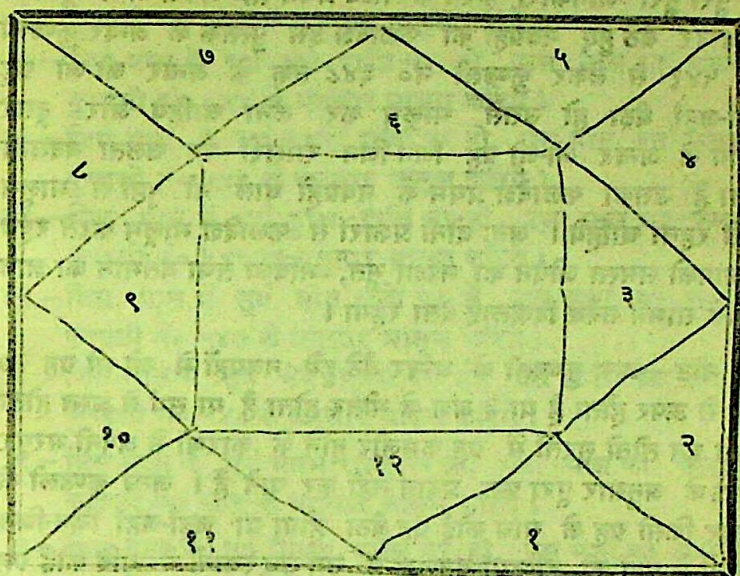
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

(कुण्डली नं० ६४८ तक में देखिये)

प्रिय पाठक गण ! ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस स्थान पर जैसा-जैसा अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं उनका फल समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है। और जीवन के दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर होता

रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी पूरी जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ५४१ से लेकर कुण्डली नं० ६४८ तक के अन्दर जो जो ग्रह जहाँ-जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है उसका फलादेश प्रथम के नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से मालूम करते रहना चाहिये। अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा भूत, भविष्य तथा वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुये नवग्रहों में जो भी ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश के भीतर होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस पर भी उसका असर फल लागू समझा जायगा।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ५४१ से ५५२ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५४९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५५० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५५१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५५२ के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ५५३ से ५६४ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५६ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५७ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५८ के अनुसार मालूम करिये।

१२ जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५५९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५६० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५६१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५६२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५६३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ५६४ के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ५६५ से ५७६ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५६५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५६६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५६७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५६८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५६९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७६ के अनुसार मालूम करिये।

---

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० ५७७ से ५८८ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६–जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७७ के अनुसार मालूम करिये।

७–जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५७९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ५८८ के अनुसार मालूम करिये।

कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ५८९ से ६०० तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५८९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९५ के अमुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ५९९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६०० के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० ६०१ से ६१२ तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६०९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६१० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६११ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६१२ के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ६१२ से ६२४ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस साल में शनि कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६१३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१६ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१७ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१८ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६१९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२४ के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ६२५ से ६३६ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६२९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३६ के अनुसार मालूम करिये।

(६) कन्या लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० ६३७ से ६४८ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६३८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस का फलादेश कुण्डली नं० ६३९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६४८ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

खर्च तथा बाहरी स्थानपति-सूर्य

यदि कन्या का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक शानदार रहेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त होगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण से देह में दुर्बलता प्राप्त रहेगी और बाहरी स्थानों में आने जाने से प्रभाव होगा और खर्च के कारण कुछ परेशानी अनुभव होगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के कारण स्त्री स्थान में कुछ कमजोरी या परेशानी मिलेगी और रोजगारके मार्ग कुछ हानि तथा कुछ कमी रहेगी।

कन्या लग्न में १ सूर्य

नं० ५४१

यदि तुला का सूर्य—धन स्थान में नीच का होकर शत्रु शुक्र राशि पर बैठा है तो धन के कोष स्थान में भारी कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा सूर्य को व्ययेश होने का दोष और नीच होने का दोष है अर्थात् प्रबल दोष है, इसलिये जन और धन की हानि प्राप्त होगी तथा धन की शक्ति के लिये बाहरी स्थान का कमजोर सम्बन्ध प्राप्त करेगा और खर्च करने के स्थान में कमजोरी और कष्ट प्राप्त करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से आयु स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में प्रभाव और पुरातत्व शक्ति प्राप्त करेगा।

कन्या लग्न में २ सूर्य

नं० ५४२

यदि वृश्चिक का सूर्य—तीसरे भाई के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पराक्रम की शक्ति से खर्च का सुन्दर संचालन

करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध रखेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से भाई-बहन के संबन्धों में कमजोरी प्राप्त रहेगी और

कन्या लग्न में ३ सूर्य
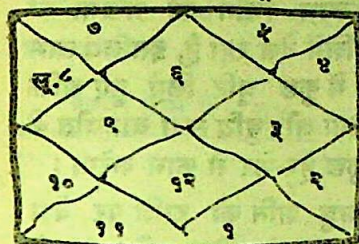
नं० ५४३

दैहिक पुरुषार्थ के स्थान में कुछ कमजोरी महसूस करेगा तथा तीसरे स्थान पर गरम ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये पुरुषार्थ शक्तिके सम्बन्ध में तथा खर्च के सम्बन्ध में बड़ी भारी हिम्मत और प्रभाव की शक्ति प्राप्ति रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य के स्थान में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा।

यदि धन का सूर्य—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो सुख पूर्वक अपने स्थान से ही खर्च का संचालन

कन्या लग्न में ४ सूर्य

नं० ५४४

कार्य करेगा और बाहरी स्थानों के संबन्ध से सुख और प्रभाव रखेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से माता के सुख सम्बन्धों में कमी प्राप्त करेगा और घरेलू रहन-सहन तथा मकानादि के सम्बन्धों में सुख की कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता और कारबार तथा राज-समाज के सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी।

यदि मकर का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण संतान स्थान पर शत्रु शनि को राशि में बैठा है तो बुद्धि योग के परिश्रम द्वारा खर्च का संचालन करेगा और बाहरी स्थानों का सामान्य सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से सन्तान पक्ष की हानि करेगा और विद्या

कन्या लग्न में ५ सूर्य

नं० ५४५

स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा और खर्च के कारणों से दिमाग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये लाभ सम्बन्ध में कुछ त्रुटि लिये हुए शक्ति प्राप्त करेगा और बुद्धि तथा बातचीत के अन्दर कुछ हेर-फेर से काम करेगा।
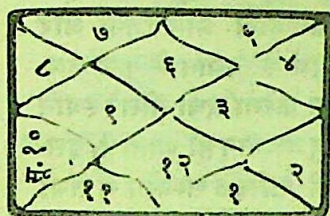
यदि कुम्भ का सूर्य—छठें स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो परिश्रम के योग से खर्च का संचालन कार्य करेगा और बाहरी

कन्या लग्न में ६ सूर्य

नं० ५४६
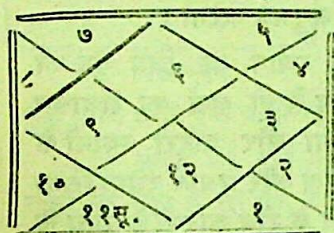
स्थानों का कुछ सामान्यतम सम्बन्ध बनावेगा और व्ययेश होनेके दोष करणों से शत्रु पक्षमें कुछ खर्च और झंझटों से परेशानी प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में और झंझटों के सम्बन्ध में बड़ी हिम्मत शक्ति से तथा प्रभाव शक्ति से काम करेगा और सातवीं दृष्टिसे स्वयं अपनी सिंह राशि में खर्च भवन को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये कुछ मजबूरियों की वजह से भी खर्चा अधिक करेगा।

कन्या लग्न में ७ सूर्य

नं० ५४७

यदि मीन का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से खर्च का संचालन कार्य करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध बनावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से स्त्री स्थान में कुछ कमी तथा कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और रोजगार के

कुछ हानि तथा कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और गृहस्थ भोगादिक सुखों में कुछ त्रुटि रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी प्राप्त रहेगी और खर्च के कारणों से कुछ फिकर चंचलता एवं क्रोध प्राप्त करेगा।

कन्या लग्न में ८ सूर्य

नं. ५४८

यदि मेष का सूर्य—आठवें आयु स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों का विशेष सम्बन्ध स्थापित करेगा और व्ययेश होने का दोष तथा उच्च होने की शक्ति इन दोनों कारणों के योग से जीवन में कुछ परेशानी और कुछ प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा प्रभाव की वृद्धि के लिये खर्चा अधिक स्वयमेव होगा और पुरातत्व की कुछ शक्ति पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से धन को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये धन की विशेष हानि करेगा और कुटुम्ब में कमी व अशांति प्राप्त करेगा और धन की तरफ से चिंता फिकर प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति के द्वारा खर्च का संचालन करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा व्ययेश होने के दोषके कारण भाग्य स्थानमें कमजोरी एवं परेशानी प्राप्त करेगा और धर्म के स्थान में कुछ हानि तथा कुछकमी प्राप्त करेगा और ईश्वर के विश्वास में संदेह और भ्रम रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई के स्थान को मंगल की वृश्चिक

कन्या लग्न में ९ सूर्य

नं० ५४९

राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख में कुछ कमी रहेगी और पराक्रम के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु खर्च का प्रभाव रहेगा।

यदि मिथुन का सूर्य—दशम केन्द्र स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो प्रभाव शक्ति के द्वारा खर्च का संचालन कार्य करेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर प्रभाव युक्त सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से पिता स्थान में हानि या कमी पावेगा और राज समाज तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से मातृ स्थान एवं सुख भवन को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये माताके सम्बन्ध में तथा घरेलू सुख सम्बन्धों में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा।
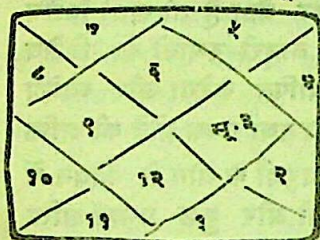
कन्या लग्न में १० सूर्य

नं० ५५०

यदि कर्क का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र चन्द्र की कर्क राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग से खर्च का संचालन कार्य करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष से लाभ के मार्ग में कुछ कमी प्रतीत होगी परन्तु गरम ग्रह लाभ स्थान में शक्ति शाली कार्य करता है, इसलिये खर्च के योग से आमदनी में वृद्धि प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ कष्ट पावेगा और विद्या बुद्धि में कुछ कमजोरी और फिकर प्राप्त करेगा।
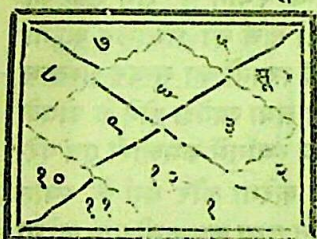
कन्या लग्न में ११ सूर्य

नं० ५५१

कन्या लग्न में १२ सूर्य

नं० ५५२

यदि सिंह का सूर्य—बारहवें खर्च स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा खर्च के मार्ग में प्रभाव शक्ति पावेगा और बाहरी स्थानों का मजबूत सम्बन्ध और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नाजायज खर्चा करना पड़ेगा अर्थात् झगड़े-झंझट, रोगादिक पक्ष में कुछ खर्च करना पड़ेगा किन्तु शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा क्योंकि छठें स्थान पर गरम ग्रह की दृष्टि अच्छा फल देती है, इसलिये मुसीबतों में साहस रखेगा।

मन एवं लाभ स्थानपति—चन्द्र

यदि कन्या का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो देह के द्वारा धन का लाभ प्राप्त करेगा और

कन्या लग्न में १ चन्द्र

नं० ५५३

मनोयोग की सुन्दर शक्ति से आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा तथा मन में प्रसन्नता और देह में सुन्दरता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में रोजगार एवं स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये रोजगार के मार्ग मे अच्छा लाभ प्राप्त करेगा और स्त्री स्थान में सुन्दरता एवं लाभ प्राप्त करेगा तथा मनोबल की शक्ति से गृहस्थ का विशेष आनन्द प्राप्त करेगा और कुछ मान एवं प्रभाव तथा ख्याति प्राप्त करेगा।

यदि तुला का चन्द्र—धन स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो धन की और जन ताकत से आमदनी की शक्ति प्राप्त करेगा और मनोबल की योगशक्ति से धनोपार्जन में सफलता मिलेगी तथा धन की आमदनी से धन की संग्रह शक्ति में सफलता प्राप्त करेगा और इज्जतदार व धनवान् समझा जायगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थानको मंगलकी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव एवं रौनक प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का लाभ पावेगा।

कन्या लग्न में २ चन्द्र

नं० ५५४

यदि वृश्चिक का चन्द्र तीसरे भाई बहिन के स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की तरफ से कमी या कष्ट का योग प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरी प्राप्त रहेगी तथा धनोपार्जन के सम्बन्ध में कुछ परतंत्रता या परेशानी अनुभव करेगा और पुरुषार्थ शक्ति में कमजोरी रहेगी तथा मानसिक चिन्ता का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कठिन पुरुषार्थ के योग से भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा और धर्म का विशेष ध्यान रखेगा।
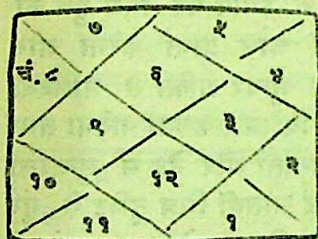
कन्या लग्न में ३ चन्द्र

नं० ५५५

यदि धन का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो सुख पूर्वक अपने स्थान से ही आमदनी प्राप्त

कन्या लग्न में ४ चन्द्र

नं० ५५६
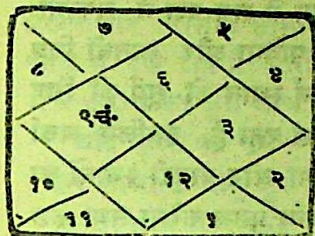
करेगा तथा मातृ सुख का सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा और मकान जायदाद का सुख लाभ पावेगा तथा मन की प्रसन्नता के लिये विशेष साधन प्राप्त करेगा और आमदनी के योग से महान् सुख का अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये मनोयोग की शक्ति से कारबार एवं पिता स्थान में लाभोन्नति पावेगा तथा राज समाज में मान प्रतिष्ठा एवं प्रभाव पावेगा।

यदि मकर का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो बुद्धि-विद्या के योग से धन

कन्या लग्न में ५ चन्द्र

नं० ५५७

लाभ प्राप्त करेगा तथा मनोयोग की शक्ति से विद्या स्थान में बड़ी सफलता पावेगा और मन तथा वाणी के संयोग से आमदनी के स्थान में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष के लाभ का मन में आनन्द मानेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपने लाभ स्थान कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन लाभ की उन्नति एवं वृद्धि करने के लिये सदैव प्रयत्न शील रहेगा तथा विचारों की और दिमाग की शक्ति को लाभ के लिये लगाता रहेगा।
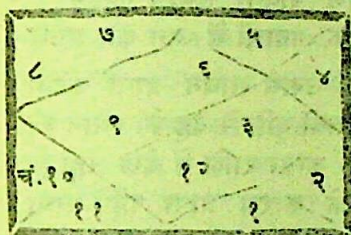
यदि कुम्भ का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो झंझट और परेशानी के मार्ग से आमदनी का योग प्राप्त करेगा तथा लाभ के सम्बन्ध में कुछ परतंत्रता या बन्धन सा महसूस करेगा तथा आमदनी और शत्रु पक्ष के सम्बन्ध में

कन्या लग्न में ६ चन्द्र

नं० ५५८

कुछ मनको अशान्ति रहेगी किन्तु नर-भाई के योग से शत्रु पक्ष में सफलता और लाभ पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा कुछ रोगादिक सम्बन्ध में थोड़ा ज्ञान रहेगा।

यदि मीन का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से धन लाभ प्राप्त करेगा तथा मनोबल के दैनिक कर्म से आमदनी के स्थान में सुन्दर सफलता प्राप्त रहेगी और सुन्दर स्त्री का लाभ पावेगा तथा गृहस्थ के भोगादिक पदार्थों में मन को प्रसन्न करने के उत्तम साधन प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और प्रसन्नता के कारण प्राप्त रहेंगे तथा लाभ प्राप्ति का विशेष ध्यान रखेगा।

कन्या लग्न में ७ चन्द्र

नं० ५५९

कन्या लग्न में ८ चन्द्र

नं० ५६०

यदि मेष का चन्द्र—आठवें आयु एवं मृत्यु स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कष्ट और कमी प्राप्त करेगा तथा दूसरे स्थानों के योग से आमदनी के मार्ग बनावेगा और आयु के स्थान में लाभ प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति एवं जीवन को सहायक होने-

वाली वस्तु का लाभ पावेगा तथा रहन-सहन में सुन्दरता प्राप्त करेगा और सातवीं सामान्य मित्र दृष्टि से धन स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये धन संग्रह करने का विशेष ध्यान रखेगा और कुटुम्ब का कुछ लाभ पावेगा।

यदि वृषभ का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन लाभ का विशेष साधन पावेगा और धर्म का विशेष पालन एवं ध्यान रखेगा तथा दैवी सहायक शक्तिका योग पावेगा तथा मन में मगन रहेगा और बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा और कभी-कभी उम्मीदसे भी बहुत अधिक मुफ्तका सा धन लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से पराक्रम भवन को तथा भाई बहिन के स्थानको देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ करने की परवाह नहीं करेगा तथा भाई बहिन के स्थान में कुछ नीरसता मानेगा।
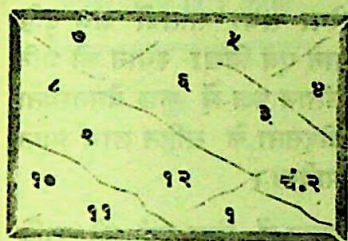
कन्या लग्न में ९ चन्द्र

नं० ५६१

यदि मिथुन का चन्द्र—दशम केन्द्र राज्य एवं पिता स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो पिता स्थान से लाभ प्राप्त करेगा तथा कारबार में मनोयोग की शक्ति से सुन्दर लाभ पावेगा और राज-समाज के मार्ग में लाभ तथा मान प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में इज्जत और प्रभाव की शक्ति से सफलता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की धन राशि में सुख भवन को देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष से लाभ प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि रहने के स्थान का सुख लाभ प्राप्त करेगा तथा मन में बड़प्पन की खुशी पावेगा।
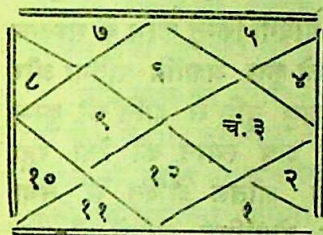
कन्या लग्न में १० चन्द्र

नं० ५६२

यदि कर्क का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा और मनोयोग की स्थिर शक्ति के द्वारा खूब धन लाभ मिलेगा तथा मन में बड़ा भारी आनन्द अनुभव करेगा और स्वयमेव होनेवाले लाभ का मार्ग प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता अनुभव करेगा और विद्या स्थान में कुछ नीरसता के सहित लाभ प्राप्त करेगा और बातचीत की चतुराई से लाभ पावेगा।
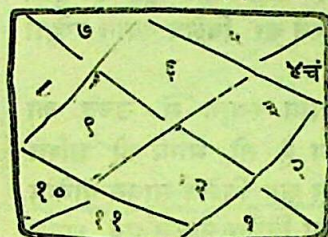
कन्या लग्न में ११ चन्द्र

नं० ५६३

यदि सिंह का चन्द्र—बारहवें खर्च स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो बाहरी स्थानों के योग से धन लाभ पावेगा तथा खर्च की शक्ति और मनोबल के योग से आमदनी का मार्ग स्थापित करेगा और आमदनी का धन पूरा-पूरा खर्च कर देगा तथा बाहरी स्थान में सुन्दर सम्बन्ध पावेगा किन्तु लाभ के सम्बन्ध में मन को कुछ अशांति पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में मनोयोग की शीतल शक्ति से तथा खर्च की शक्ति से सफलता पावेगा और रोगादिक झंझटों में कुछ खर्च करेगा।

कन्या लग्न में १२ चन्द्र

नं० ५६४

भाई, पराक्रम, आयु पुरातत्व स्थानपति–मंगल

यदि कन्या का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति पावेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति का सुन्दर उपयोग करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारणों से देह में कुछ परेशानी तथा सुन्दरता में कुछ कमी पावेगा और भाई बहिन के सुख में कुछ दिक्कतें रहेंगी और चौथे मित्र दृष्टि से मातृ स्थान तथा सुख भवन को गुरुकी धन राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के कारण माता के सुख सम्बन्धों में कमी और कष्ट का योग पैदा करेगा तथा घरेलू सुख और मकानादि भूमि की शक्ति में भी कमी के कारण पैदा करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के योग से परिश्रम के द्वारा सफलता पावेगा तथा आठवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में आयु स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा तथा पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा।

कन्या लग्न में १ भौम

नं० ५६५

यदि तुला का मंगल—धन स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष कारण से धन स्थान की संग्रह शक्ति में हानि प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन एवं कुटुम्ब के सुखों में कमी एवं अशान्ति पावेगा और धन की संग्रह शक्ति के लिये कठिन पुरुषार्थ करेगा तथा चौथी उच्च दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि की विशेष उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और सन्तान पक्ष के सम्बन्ध में कुछ कष्ट युक्त वातावरण के अन्दर भी कुछ रौनक और उन्नति पावेगा

कन्या लग्न में २ भौम

नं० ५६६
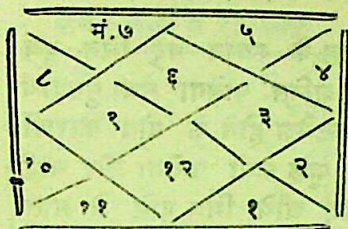
और अधिक वाचाल शक्ति पावेगा तथा सातवीं स्वक्षेत्र दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या को अमीरी ढंग से व्यतीत करेगा और आठवीं सामान्य शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि के लिये प्रयत्न करते रहने पर भी भाग्य स्थान में कुछ असंतोष पावेगा और धर्म पालन में कुछ कमजोरी रहेगी।

कन्या लग्न में ३ भौम

नं० ५६७
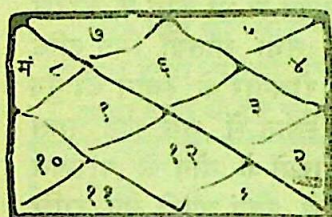
यदि वृश्चिक का मंगल—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है, तो पराक्रम स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति प्राप्त होने पर भी अष्टमेश होने के दोष कारण से भाई के सुख में कुछ संकट पावेगा और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति का भरोसा रखेगा और चौथी दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये बाहुबल की हिम्मत शक्ति के द्वारा शत्रु स्थान में प्रभाव रखेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्राप्त करेगा और धर्म का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा तथा आठवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सुख में कुछ कमी करेगा तथा राज-समाज एवं कारबार के स्थान में उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करने पर भी सफलता की कमी पावेगा।

यदि धन का मंगल—चौथे केन्द्र माता के स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो आयु स्थान में सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का लाभ पावेगा और भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी या त्रुटि पावेगा और अष्टमेश के दोष के कारण माता के सुख स्थान में कमी प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि के स्थान में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा और चौथी दृष्टि से स्त्री स्थान एवं रोजगार स्थान को मित्र गुरु की राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में कुछ कष्ट युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ कष्ट पावेगा तथा राज-समाज, कारबार के स्थान में उन्नति के लिये कुछ कठिन परिश्रम करेगा और आठवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में परेशानी अनुभव करेगा।
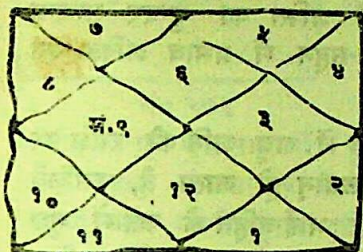
कन्या लग्न में ४ भौम

नं० ५६८

यदि मकर का मंगल—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि तथा वाणी के स्थान में वृद्धि एवं शक्ति प्राप्त करेगा और अष्टमेश होने के दोष कारण से संतान पक्ष में कुछ कष्ट एवं शक्ति और प्रभाव पावेगा और भाई-बहन के पक्ष में कुछ कमी युक्त सम्बन्ध रहेगा और वाणी के द्वारा पुरुषार्थ शक्ति का विशेष परिचय देगा और चौथी स्वक्षेत्र दृष्टि से आयु स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की

कन्या लग्न में ५ भौम
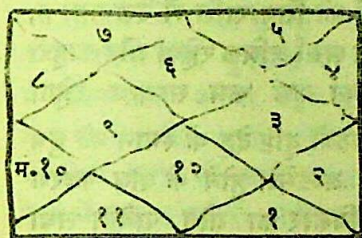
नं० ५६९

शक्ति में गौरव प्राप्त करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का योग प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च विशेष करेगा और बाहरी स्थानों की शक्ति का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा और दिनचर्या और रहन-सहन में प्रभाव शक्ति एवं शानदारी रखेगा।

यदि कुम्भ का मंगल—छठें शत्रु स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव रखेगा और भाई-बहिन के पक्ष में कुछ विरोध या वैमनस्य प्राप्त करेगा तथा अधिक पुरुषार्थ और अधिक परिश्रम करेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ खिराव या परतंत्रता और प्रभाव की शक्ति रखेगा तथा आयु की शक्ति का योग अच्छा रहेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ शक्ति पावेगा और चौथी दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश दोष होने के कारण से भाग्य में कुछ कमी अनुभव करेगा तथा धर्म में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों का कुछ कम सम्बन्ध रहेगा तथा आठवीं दृष्टि देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष कारण से देह में कुछ परेशानी और कुछ रक्त विकार का योग पावेगा तथा शत्रु पक्ष में एवं रोगादिक झगड़े-झंझटों के विषय में प्रभाव एवं विजय पाने के लिये कुछ कठिनाइयाँ सहन करेगा।
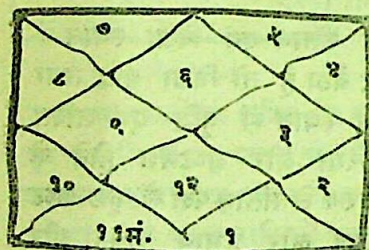
कन्या लग्न में ६ भौम

नं० ५७०

कन्या लग्न में ७ भौम

नं० ५७१

यदि मीन का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के कारण से स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ा कठिन परिश्रम करेगा तथा आयु की शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति की कुछ सहायता पावेगा तथा भाई बहिन की शक्ति एवं सुख सम्बन्धों में कुछ अनुकूलता एवं कुछ प्रतिकूलता पावेगा तथा गृहस्थ संचालन के लिये पराक्रम शक्ति का विशेष उपयोग करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से पिता स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ परेशानी पावेगा तथा राज-समाज कारबार की उन्नति एवं मान प्राप्त करने के लिये बहुत पुरुषार्थ करेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ गरम विकार तथा कुछ परेशानी और हिम्मत शक्ति पावेगा और आठवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में धन भवन को देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति एवं कुटुम्ब स्थान में कुछ कमजोरी पावेगा।

यदि मेष का मंगल—आठवें मृत्यु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान में सुख सम्बन्ध की कमी पावेगा और पुरुषार्थ की कुछ कमजोरी रहेगी तथा आयु स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन को सहायक होने वाली शक्ति प्राप्त रहेगी और चौथी नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ कमजोरी पावेगा और जीवन की दिनचर्या की मस्ती के कारणों से आमदनी में कुछ लापरवाही रहेगी और सातवीं दृष्टि से धन भवन को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है,

कन्या लग्न में ८ भौम

नं० ५७२

इसलिये अष्टमेश के दोष के कारण धन की संग्रह शक्ति में कुछ कमजोरी पावेगा और कुटुम्ब में कुछ अशांति रहेगी और आठवीं स्वक्षेत्र दृष्टि से भाई के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन और पराक्रम स्थान की कुछ सामान्य शक्ति प्राप्त करेगा तथा गुप्त हिम्मत खूब रहेगी।

यदि वृषभ का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा भाग्य से पुरातत्व की शक्ति का लाभ पावेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से भाग्य स्थान में कुछ परेशानी पावेगा और धर्म के स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध पावेगा सातवीं स्वक्षेत्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाइयों के साथ-साथ भाई बहन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान में सफलता पावेगा तथा आठवीं मित्र दृष्टि से माता व सुख स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश दोष के कारण माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी प्राप्त करेगा और मकानादि एवं रहने के स्थानों में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा किन्तु जीवन की दिनचर्या का ढंग भाग्यवानी के रूप में रहेगा।
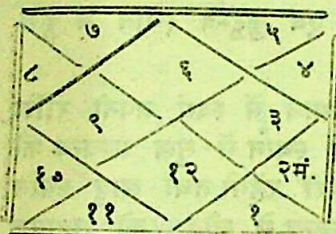
कन्या लग्न में ९ भौम

नं० ५७३

यदि मिथुन का मंगल—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान

में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आयु की शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व की कुछ सहायक शक्ति पावेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारणों से पिता-स्थान में कुछ कष्ट पावेगा और कारबार एवं राज-समाज के कार्यों में उन्नति के स्थानों में कुछ परेशानियाँ पावेगा किन्तु मान एवं प्रभाव प्राप्त करेगा क्योंकि दसम स्थान पर मंगल शक्ति प्रदायक कार्य करता है और भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त वातावरण रहेगा और चौथी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ विकार प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त रहेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि विद्या के स्थान में खूब उन्नति करेगा और सन्तान पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त विशेष शक्ति पावेगा तथा हुकूमत और हेकड़ी से बातें करेगा।

कन्या लग्न में १० भौम

नं० ५७४

यदि कर्क का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो आमदनी के स्थान में कमजोरी प्राप्त करेगा तथा आयु के पक्ष में कुछ न्यूनता एवं दिनचर्या में कुछ सादगी पावेगा तथा पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और चौथी दृष्टि से धन भवन को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश के दोष के कारण धन भवन में कुछ कमी करेगा तथा कुटुम्ब
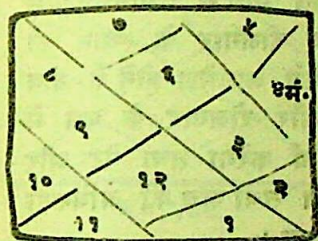
कन्या लग्न में ११ भौम

नं० ५७५

के स्थान में कुछ क्लेश पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि विद्या के पक्ष में तेजी रखेगा तथा सन्तान पक्ष में कुछ कष्ट-युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति पावेगा और अधिक बोलेगा तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव और विजय प्राप्त करेगा तथा बड़ी बहादुरी और हिम्मत से झगड़े-झंझटों में सफलता पावेगा।

कन्या लग्न में १२ भौम
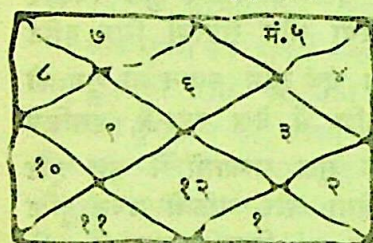
नं० ५७६

यदि सिंह का मंगल—बारहवें खर्च स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो पुरातत्व शक्ति के सम्बन्ध में खर्चा अधिक करने के कारण कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और आयु स्थान में कभी-कभी संकट पावेगा तथा बाहरी स्थानों की सम्बन्ध शक्ति को काममें लावेगा और चौथी स्वक्षेत्र दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सामान्य योग पावेगा और पुरुषार्थ शक्ति में कुछ न्यूनतम बल प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कत युक्त मार्ग से प्रभाव कायम रखेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के दोष कारण से स्त्री पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में कठिनाइयों के परिश्रम योग के द्वारा कार्य करेगा तथा पेट और इन्द्रियों के अन्दर कुछ विकार का योग पावेगा तथा खर्च की अधिकता को न रोक सकने के कारण कुछ परेशानी पावेगा।

———

देह, पिता तथा राज्य स्थानपति—बुध

यदि कन्या का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो देह के कद में विशालता एवं सुन्दरता पावेगा और पिता स्थान के सम्बन्ध में बड़प्पन पावेगा राज समाज में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कार-व्यापार में उन्नति करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये अपने व्यक्तित्व के सम्मुख स्त्री पक्ष में बहुत कमी अनुभव करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कमजोरी पावेगा और गृहस्थ भोगादिक के सुखों में कुछ त्रुटि रहेगी और अपने विशेष स्वाभिमान के कारण रोजगार के मार्ग में पूरो तौर से दिलचस्पी नहीं लेगा।
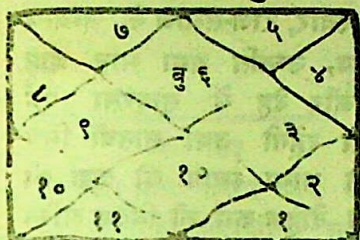
कन्या लग्न में १ बुध

नं० ५७७

यदि तुला का बुध—धन स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो विवेक शक्ति द्वारा महान् व्यापार कर्म से धन की वृद्धि उत्तम रूप में प्राप्त करेगा और पिता से भी धन की शक्ति का योग पावेगा तथा कुटुम्ब का वैभव प्राप्त करेगा और राज-समाज से मान तथा लाभ प्राप्त रहेगा तथा धन जन की वृद्धि के लिये दैहिक सुख शान्ति में बाधा पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग रहेगा और धन की वृद्धि करने में अपनी संपूर्ण शक्ति का प्रयोग करेगा।
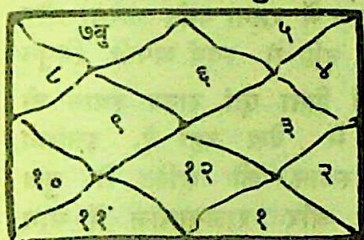
कन्या लग्न में २ बुध

नं० ५७८

यदि वृश्चिक का बुध—तीसरे भाई के स्थान पर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की सुख-शक्ति प्राप्त करेगा और

कन्या लग्न में ३ बुध

नं० ५७९

अपने पराक्रम स्थान में बड़ी सुन्दर सफलता शक्ति पावेगा तथा पिता के स्थान की शक्ति से सहायता मिलेगी और कारबार, राज-समाज के सम्बन्ध में प्रभाव, उन्नति तथा मान प्राप्त करेगा और देह में सुन्दरता एवं सुडौलता रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये अपने दैहिक कर्म की विवेक शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म कर्म की शक्ति में सफलता पावेगा तथा यश मिलेगा।

यदि धन का बुध—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता की सुन्दर शक्ति मिलेगी मकानादि भूमि एवं रहने के स्थान आदि की शक्ति प्राप्त करेगा और देह में

कन्या लग्न में ४ बुध

नं० ५८०

सुन्दरता एवं सुख प्राप्ति के साधन पावेगा तथा शान्ति युक्त कोमल वातावरण में रहना पसंद करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मिथुन राशि में पिता एवं राज्य स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति से सुख मिलेगा और राज-समाज में मान एवं प्रभाव, शील-शान्ति द्वारा मिलेगा और कारबार के मार्ग में गम्भीर विवेक के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा अपने स्थान में सुन्दर स्वाभिमान रखेगा।
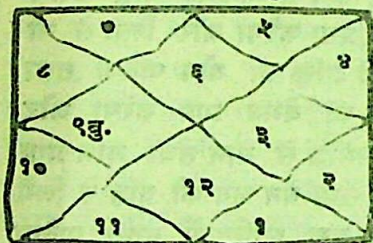
यदि मकर का बुध—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान पर

मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो संतान शक्ति प्राप्त करेगा और

कन्या लग्न में ५ बुध

नं० ५८१
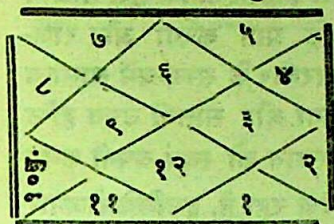
विद्या स्थान में दैहिक कर्म और विवेक शक्ति के योग से सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा तथा बुद्धि एवं वाणी के योग से बड़े प्रशंसनीय कार्य करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज के सुन्दर व्यवहारिक ज्ञान की शक्ति से अच्छी आमदनी प्राप्त करेगा और कारबार की बड़ी योग्यता एवं कुशलता प्राप्त करने के कारणों से मान और प्रभाव की शक्ति रखेगा तथा स्वाभिमान रखने वाला एवं सुन्दरता युक्त रहेगा।

यदि कुम्भ का बुध—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह के सम्बन्ध में परेशानी एवं कुछ रोग और सुन्दरता की

कन्या लग्न में ६ बुध

नं० ५८२

कमी पावेगा तथा कुछ परतंत्रता युक्त मार्ग से कर्म करेगा और पिता, राज-समाज, व्यापार, मान प्रतिष्ठा इत्यादि सम्बन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी और शत्रु पक्ष में कुछ विवेक की नरम गरम शक्ति से काम निकालेगा तथा ननसाल पक्ष में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

यदि मीन का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री तथा रोजगार के स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ कमी तथा स्त्री के सम्मुख अपने व्यक्तित्व में कुछ त्रुटि एवं कुछ दबाव अनुभव करेगा और रोजगार के पक्ष में कुछ अधिक परिश्रम करेगा

कन्या लग्न में ७ बुध

नं० ५८३

एवं कुछ न्यूनतम मार्ग का अनुसरण करेगा तथा पिता स्थानके सुख सम्बन्ध में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा और राज-समाज, कारबार के सम्बन्धमें सामान्य शक्ति पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के मार्ग से देह का मान एवं बड़प्पन प्राप्त करेगा यथा देह की सुन्दरता में कुछ त्रुटि युक्त रहेगी।

यदि मेष का बुध—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो देह के सुख सम्बन्धों में तथा सुन्दरता में कमी प्राप्त करेगा और पिता की शक्ति का अल्प सुख प्राप्त करेगा तथा राज-समाज, कारबार के सम्बन्धों में परेशानी अनुभव करेगा और विदेश आदि दूसरे स्थानों में रहकर कार्य संचालन करेगा और आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व का लाभ प्राप्त होगा। और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवन को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये गुप्त एवं गूढ़ विवेक की शक्ति से कार्य करेगा तथा जीवन निर्वाह करने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा तथा कुटुम्ब को बहुत चाहेगा।

कन्या लग्न में ८ बुध

नं० ५८४

यदि वृषभ का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में बड़ी सुन्दरता एवं भाग्यवानी प्राप्त करेगा और पिता स्थान की शक्ति का बड़ा उत्तम लाभ पावेगा

तथा विवेक शक्ति के उत्तम प्रशंसनीय कार्य के द्वारा कारबार और भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म कर्म का सुन्दर पालन करेगा तथा

कन्या लग्न में ९ बुध
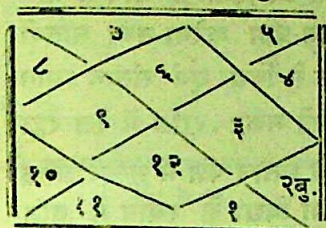
नं० ५८५

ईश्वर विश्वास करेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा कुदरती तौर से उन्नति के मूल कारण प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति मिलेगी तथा पराक्रम की सफलता प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो पिता स्थान की शक्ति का

कन्या लग्न में १० बुध

नं० ५८६

स्वयं संचालन करेगा और राज-समाज, कारबार आदि के सम्बन्धों में बड़ी सफलता और मान प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता और प्रभाव की शक्ति पावेगा और बड़े स्वाभिमान एवं विवेक शक्ति के द्वारा बड़ी उन्नति करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये माता स्थान की शक्ति पावेगा तथा भूमि स्थान का सुख प्राप्त करेगा और घरेलू वातावरण में अमीरात का ढंग एवं कार्य कुशलता पावेगा।

यदि कर्क का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान से लाभ प्राप्त करेगा तथा दैहिक कर्म और विवेक शक्ति के योग से सुन्दर लाभ पावेगा और राज-'समाज,

कन्या लग्न में ११ बुध

नं० ५८७

कारबार से सम्बन्धित आमदनी का योग मिलेगा और देह में सुन्दरता रहेगी तथा आमदनी के मार्ग में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में सुन्दर शक्ति पावेगा तथा विद्या के स्थान में वृद्धि करेगा और वाणी की शक्ति से उन्नति करेगा।

यदि सिंह का बुध—बारहवें खर्च स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा पिता स्थान में कमजोरी रहेगी और देह में दुर्बलता रहेगी एवं विदेश यात्राओं का योग पावेगा तथा कारबार, राज-समाज के सम्बन्धों में हानि रहेगी और बाहरी स्थानों के योग से सफलता एवं मान प्राप्त करेगा किन्तु उन्नति के लिये बड़ी दौड़-धूप करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये विवेक शक्ति और दैहिक कर्म के शांत योग से शत्रु पक्ष में कामयाबी पावेगा।

कन्या लग्न में १२ बुध

नं० ५८८

माता, भूमि, स्त्री तथा रोजगार स्थानपति—गुरु

यदि कन्या का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह में सुन्दरता एवं सुडौलता प्राप्त करेगा और माता की सुख-शक्ति पावेगा तथा भूमि मकानादि का आनन्द रहेगा और पाँचवीं नीच दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कमजोरी पावेगा और

कन्या लग्न में १ गुरु

नं० ५८९
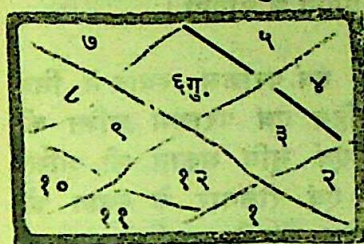
विद्या स्थान में कुछ परेशानी रहेगी तथा बुद्धि के अन्दर कुछ छिपाव शक्ति से काम करेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मीन राशि में स्त्री तथा रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये स्त्री सुख उत्तम प्राप्त करेगा और रोजगार में उन्नति एवं मान प्राप्त करेगा और नवमी दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के स्थान में कुछ न्यूनता युक्त बुद्धि के साधन मिलेंगे तथा धर्म पालन की आन्तरिक यथार्थता में कुछ कमी रहेगी किन्तु भाग्यवान् सज्जन और कार्यकुशल समझा जायगा।

कन्या लग्न में २ गुरु

नं ५९०
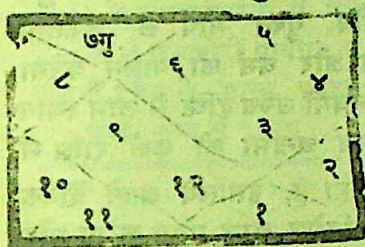
यदि तुला का गुरु—दूसरे स्थान धन भवन में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में बैठा है तो धन की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब में प्रभाव रहेगा तथा धन का स्थान बन्धन का स्थान होता है, इसलिये माता एवं स्त्री पक्ष के सुख सम्बन्धों में कमी और रुकावटें प्राप्त रहेंगी तथा रोजगार के मार्ग से धन वृद्धि पावेगा और मकानादि के जरिये लाभ पावेगा तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में दानाई के योग से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को मित्र मंगलकी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा तथा पुरातत्व शक्ति का सुख मिलेगा और नवमी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से सुख प्राप्त करेगा तथा कार व्यापार में

उन्नति रहेगी और राज-समाज में मान एवं प्रभाव पावेगा तथा धन प्राप्त करने की क्रिया को विशेष रूप से प्रयोग में लावेगा।

यदि वृश्चिक का गुरु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन एवं पराक्रम शक्ति की सफलता पावेगा और मातृ स्थान की एवं भूमि मकान की शक्ति प्राप्त रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ शक्ति के योग से रोजगार की विशेष वृद्धि करेगा और स्त्री स्थान में सुख शक्ति एवं सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के कार्यों में विशेष रुचि एवं शक्ति का प्रयोग करेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के सम्बन्ध में कुछ असंतोष युक्त मार्ग से सफलता पावेगा और धर्म का पालन करेगा तथा नवमीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये अपने दैनिक कार्य क्रम के योग से आमदनी के मार्ग में विशेष लाभ प्राप्त करेगा और लाभ का विशेष ध्यान रखेगा।
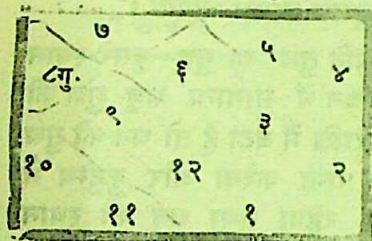
कन्या लग्न में ३ गुरु

७ ५ ८गु. ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

नं० ५९१

यदि धन का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की सुन्दर शक्ति एवं मकानादि का सुख प्राप्त करेगा और स्त्री व गृहस्थ का अच्छा उत्तम सुख पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में घर बैठे सफलता शक्ति मिलेगी और अपने घर के अन्दर बड़ा प्रभाव एवं महत्व प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की सुख शक्ति पावेगा तथा जीवन को

कन्या लग्न में ४ गुरु

नं० ५९२

सहायक होने वाले पुरातत्व का लाभ पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से राज्य-स्थान एवं पिता-स्थान का बुध को मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में सुख शक्ति मिलेगी और राज-समाज कारबार के पक्ष में उन्नति एवं मान प्रभाव मिलेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

यदि मकर का गुरु—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान पर नीच का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव करेगा तथा विद्या स्थान में कुछ कमजोरी पावेगा और गृहस्थ के सुख सम्बन्धों में दुःख का अनुभव प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कमजोरी पावेगा व मातृ स्थान के पक्ष में कमी रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की कुछ वृद्धि मिलेगी और धर्म में कुछ रुचि रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा, इसलिये आमदनी की वृद्धि करने के लिये भारी प्रयत्न करेगा तथा दिमाग की परेशानी के योग से लाभ वृद्धि रहेगी और नवमीं मित्र दृष्टि में देह के स्थान की बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में मान और कार्य कुशलता की शक्ति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के दैनिक कार्यों में व्यस्त चित्त रहेगा।
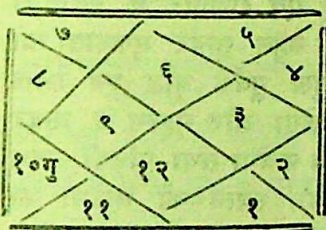
कन्या लग्न में ५ गुरु

नं० ५९३

यदि कुम्भ का गुरु—छठें शत्रु स्थान में शत्रु शनि की कुम्भ राशि

कन्या लग्न में ६ गुरु

नं० ५९४

पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ी नम्रता एवं बुजुर्गी के योग से काम निकालेगा और स्त्री के सुख सम्बन्धों में बड़ा झंझट एवं परेशानी पावेगा और मातृ स्थान के सुख में बड़ी कमी रहेगी तथा मकानादि रहने के स्थान व भूमि सम्बन्ध की तरफ से सुख की कमजोरी रहेगी तथा रोजगार के संचालन मार्ग में परिश्रम और कठिनाइयाँ प्राप्त रहेंगी और पाँचवी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष से कुछ सहारा प्राप्त होगा राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ मान प्राप्त होगा और कारबार की वृद्धि का विशेष प्रयत्न करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सुन्दर सहयोग पावेगा तथा नवमीं दृष्टि से धर्म भवन को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये धन की संग्रह शक्ति पाने के लिये विशेष परिश्रम करेगा तथा कुटुम्ब सुख का योग प्राप्त करेगा।

यदि मीन का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो बहुत सुन्दर सुखदाता स्त्री प्राप्त करेगा तथा रोजगार के पक्ष में सुख पूर्वक वृद्धि एवं शक्ति प्राप्त रहेगी और मातृ स्थान का सुख मिलेगा और गृहस्थ के अन्दर

कन्या लग्न में ७ गुरु

नं० ५९५

बड़ा गौरव पावेगा तथा पाँचवीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी की उत्तम वृद्धि पावेगा और सुख पूर्वक अपने स्थान में ही लाभ प्राप्त रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में

मान और सुख का आनन्द प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता पावेगा और नवमी मित्र दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन का सुख पावेगा तथा पराक्रम की शक्ति से सुख सफलता प्राप्त करेगा।

यदि मेष का गुरु—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में दुख के कारण प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त रहेगी और मातृ स्थान के सुख सम्बन्धों में विशेष कमी रहेगी अर्थात् गृहस्थ के मार्ग में बड़ी दिक्कतों से कामयाबी प्राप्त करेगा तथा दूसरे स्थान के सम्बन्ध से गृहस्थ स्त्री तथा रोजगार में सुख का साधन पावेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध रहेगा और सातवीं दृष्टि से धन भवन को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये धन वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब में कुछ वैमनस्य पावेगा और नवमी दृष्टि से सुख भवन एवं मातृ स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये कुछ देर और दिक्कतों से घरेलू सुख के साधन एवं मकानादि का सुख पावेगा।
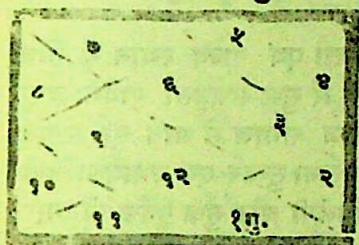
कन्या लग्न में ८ गुरु

नं० ५९६

यदि वृषभ का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो कुछ अरुचिकर मार्ग के द्वारा भाग्य की वृद्धि के साधन पावेगा और स्त्री गृहस्थ की सुख शक्ति में कुछ न्यूनतायुक्त मार्ग से कामयाबी पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ भाग्य के भरोसे एवं सज्जनता के कारणों से फायदा प्राप्त करेगा और मकानादि रहने के स्थान की कुछ शक्ति मिलेगी तथा माता का

कन्या लग्न में ९ गुरु

नं० ५९७
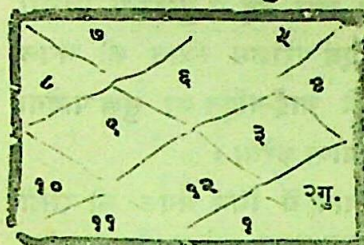
कुछ सहारा मिलेगा और पांचवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुख और सम्मान का योग पावेगा तथा भोगादिक सुखों की विशेष इच्छा रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की कुछ सुखपूर्वक कार्य करने की शक्ति पावेगा और नवमीं नीच दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष के सुख में कमी और विद्या में कुछ कमजोरी पावेगा और दिमाग की सूझ शक्ति के अन्दर कुछ गुप्त योजनाओं से कार्य करेगा तथा कुछ धर्म का पालन करेगा।

यदि मिथुन का गुरु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में सुख सफलता पावेगा तथा कार व्यापार में उन्नति करेगा और राज समाज में मान एवं प्रभाव पावेगा तथा सुन्दर एवं प्रभावशालिनी स्त्री मिलेगी और सुख पूर्वक रोजगार में सफलता पावेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से धन भवन को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब की कुछ सुख शक्ति पावेगा और सातवीं स्वक्षेत्र दृष्टि से माता के सुख भवन को स्वयं अपनी धन राशि में देख रहा है, इसलिये माता का सुख मिलेगा और मकानादि भूमि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा घरेलू सुख के उत्तम साधन पावेगा और नवमी शत्रु दृष्टि से
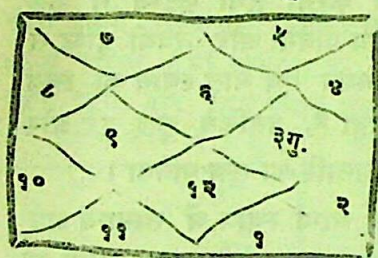
कन्या लग्न में १० गुरु

नं० ५९८

शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नीरसताई के योग से शान्त भाव के द्वारा कार्य सिद्ध करेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ सुख प्राप्त करेगा।

यदि कर्क का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और मातृ स्थान की शक्ति का लाभ पावेगा तथा भूमि मकानादि का उत्तम लाभ पावेगा और धन लाभ के मार्ग से महान् सुख का अनुभव करेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाई बहिन एवं

कन्या लग्न में ११ गुरु
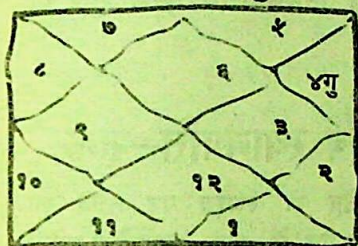
नं० ५९९

पराक्रम स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान के द्वारा सुख और सफलता पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमी पावेगा तथा दिमाग में कुछ घरेलू पक्ष से चिन्ता रहेगी और नवमी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये सुयोग्य स्त्री प्राप्त करेगा तथा रोजगार में खूब सफलता पावेगा और भोगादिक की उत्तम शक्ति पावेगा।

यदि सिंह का गुरु—बारहवें खर्च स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों के योग से एवं खर्च के योग से सुख प्राप्त करेगा किन्तु अपने मातृ स्थान के सुख में कमी पावेगा और स्त्री गृहस्थ का बहुत कमजोर सुख मिलेगा अर्थात् गृहस्थ सुख में कुछ हानि रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से मातृ व

कन्या लग्न में १२ गुरु

नं० ६००

सुख भवन को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान के सुख की कुछ थोड़ी शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से नरमाई के साथ काम निकालेगा और नवमीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को मंगल को मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की सुख शक्ति पावेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ सुख का अनुभव करेगा।

भाग्य, धर्म, धन तथा कुटुम्ब स्थानपति—शुक्र

यदि कन्या का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह में कुछ कमजोरी रहेगी और भाग्य तथा धन कुटुम्ब की तरफ से कमजोरी प्राप्त करेगा तथा धर्म पालन के सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और भाग्य तथा धन

कन्या लग्न में १ शुक्र

नं० ६०१

की वृद्धि करने के लिये धर्म की परवाह नहीं करेगा तथा धन की प्राप्ति के लिये कुछ सेवा के रूप में कार्य करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से स्त्री तथा रोजगार के स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्रीमें सुन्दरता एवं भाग्यवानी रहेगी तथा रोजगार के पक्ष में विशेष उन्नति करेगा और गृहस्थ भोगादिक शक्ति को विशेष रूप में पाने के लिये विशेष प्रयत्न करेगा।

यदि तुला का शुक्र—धन एवं कुटुम्ब स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो धन संग्रह शक्ति का सुन्दर योग पावेगा और कुटुम्ब का गौरव पावेगा तथा भाग्यशाली समझा जायेगा और धर्म का पालन कुछ धन के योग से करेगा तथा भाग्य की शक्ति से धन की वृद्धि का हेतु प्राप्त करेगा और इज्जत पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से आयु स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्येश की दृष्टि उत्तम होने के नाते आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा चतुर व धनवान् बनेगा।

कन्या लग्न में २ शुक्र

नं० ६०२

यदि वृश्चिक का शुक्र—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान पर सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्येश शुभ फल का दाता होता है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति में बड़ी स्फूर्ति पावेगा तथा पराक्रम के द्वारा धन की वृद्धि करेगा और कुटुम्ब का योग पावेगा एवं बड़ा चतुर, पुरुषार्थी बनेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य के स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये अपने बाहुबल की शक्ति के योग से भाग्य की महान् वृद्धि करेगा एवं बड़ा भाग्यवान्, चतुर समझा जायगा और शक्ति धर्म का भी पालन करेगा और बड़ा हिम्मतवर बनेगा।
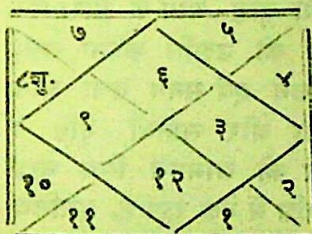
कन्या लग्न में ३ शुक्र

नं० ६०३

यदि धन का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि पर बैठा है तो भाग्य स्थानपति श्रेष्ठ

फल का दाता होता है, इसलिये माता स्थान का बड़ा सुख प्राप्त

कन्या लग्न में ४ शुक्र

नं० ६०४

करेगा और भूमि मकानादि की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा सुख प्राप्ति के साधन भाग्य बल से उत्तम रूप में पावेगा तथा धन और कुटुम्ब की शक्ति सुखपूर्वक चतुराई से प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति का लाभ पावेगा और राज समाज मान में और लाभ मिलेगा तथा कारबार में उन्नति पावेगा और धर्म कर्म का पालन करेगा।
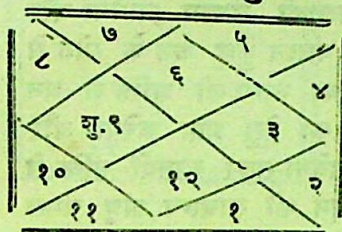
यदि मकर का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या में स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य स्थान पति जहाँ भी बैठता है वहाँ उत्तम फल करता है, इसलिये संतान शक्ति से लाभ

कन्या लग्न में ५ शुक्र

नं० ६०५

रहेगा और विद्या स्थान में सफलता मिलेगी तथा बुद्धि योग के द्वारा धन और भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्म का पालन एवं मनन तथा ज्ञान प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा तथा सज्जनता युक्त वाणी की महान चतुराई से उन्नति के अन्दर साधन प्राप्त करेगा।

यदि कुम्भ का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य की कमजोरी पावेगा और धन संग्रह की तरफ

कन्या लग्न में ६ शुक्र

नं० ६०६

से कमी और दुःख का कारण पायेगा तथा कुटुम्ब से कुछ मतभेद रहेगा और धर्म में कुछ अरुचि रहेगी किन्तु शत्रु स्थान में भाग्य की शक्ति एवं धन की शक्ति से चतुराई के द्वारा सफलता पावेगा तथा रोगादिक झगड़े झंझटों के मार्ग से तथा परिश्रम के योग से भाग्य की वृद्धि के साधन पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करने से कुछ दुःख अनुभव होगा किन्तु बाहरी स्थानों का कुछ अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

यदि मीन का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो रोजगार के स्थान में बहुत चतुराई से सफलता प्राप्त करेगा और बहुत धन कमावेगा तथा बड़ी चतुर सुन्दरी स्त्री प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में धर्म का पालन करेगा और बड़ा भाग्यवान् समझा जायेगा तथा कुटुम्ब का गृहस्थ में आनन्द पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी तथा सुन्दरता में कुछ कमी पावेगा और धन तथा रोजगार की वृद्धि करने के लिये देह के सुख की परवाह नहीं करेगा।

कन्या लग्न में ७ शुक्र

नं० ६०७

यदि मेष का शुक्र—आठवें मृत्यु स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की बड़ी कमजोरी पावेगा तथा धन की संग्रह शक्ति में परेशानी का योग प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में

कन्या लग्न में ८ शुक्र

नं० ६०८

कुछ क्लेश रहेगा तथा धर्म पालन स्थान में केवल स्वार्थ धर्म का पालन करेगा तथा सुयश की कमी रहेगी और आयु स्थान में वृद्धि पावेगा तथा पुरातत्व शक्ति से धन लाभ पावेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी तुला राशि धन भवन में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये महान् कठिनाइयों के योग से धन की प्राप्ति के साधन पावेगा और गुप्त चतुराई के बल से उन्नति के साधन प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो बड़ा भाग्यशाली बनेगा और धर्म का पालन करेगा तथा भाग्य और धर्म की शक्ति से धन

कन्या लग्न में ९ शुक्र

नं० ६०९
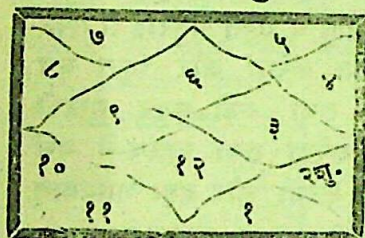
की खूब प्राप्ति करेगा तथा धन की शक्ति का सदुपयोग करने के कारणों से यश की प्राप्ति रहेगी और बड़ी चतुराई के योग से ईश्वर में विशेष निष्ठा रखेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ की शक्ति से विशेष सफलता प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर आनन्द पावेगा तथा सुमार्ग से धन की प्राप्ति रहेगी।

यदि मिथुन का शुक्र—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से पिता स्थान की विशेष उन्नति पावेगा तथा राज्य व्यापार मान प्रतिष्ठा आदि की अच्छी सफलता पावेगा तथा चतुराई के उत्तम कर्मयोग से धन की

कन्या लग्न में १० शुक्र

नं० ६१०

वृद्धि प्राप्त होगी और कुटुम्ब का सुख मिलेगा और बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ मतभेद के साथ माता के सुख स्थान की शक्ति पावेगा तथा मकानादि भूमि का सुख करेगा।
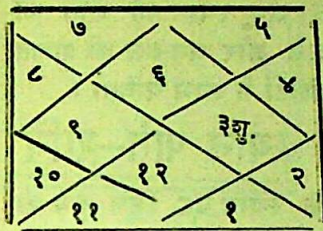
यदि कर्क का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य मित्र चन्द्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन का विशेष लाभ पावेगा और कुटुम्ब का आनन्द प्राप्त करेगा तथा बड़ा भाग्यवान्, समझा जायगा और धन का ध्यान रखेगा, इसलिये आमदनी के मार्ग में न्याय की शक्ति से काम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से संतान एवं विद्या के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये संतान का लाभ प्राप्त करेगा और विद्या की योग्यता में उन्नति पावेगा तथा वाणी एवं बुद्धि की विशेष चतुराई से यश और लाभ का सुन्दर योग पावेगा।
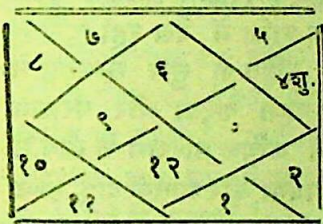
कन्या लग्न में ११ शुक्र

नं० ६११

कन्या लग्न में १२ शुक्र

नं० ६१२

यदि सिंह का शुक्र—बारहवें खर्च स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो धन का विशेष खर्चा करेगा और भाग्य की कमजोरी के कारणों से दुःख का अनुभव और उन्नति में बाधा प्राप्त करेगा और धन की संग्रह शक्ति नहीं कर सकेगा तथा कुटुम्ब की हानि पावेगा तथा धर्म का पालन नहीं कर सकेगा

और बाहरी दूसरे स्थानों में भाग्य की शक्ति का एवं धन की हानि का योग प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्यबल से और धन-बल की शक्ति से शत्रु पक्ष में सफलता पावेगा तथा झगड़े झंझटों से लाभ पावेगा।

विद्या, संतान, शत्रु तथा रोग स्थान पति—शनि

यदि कन्या का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा हो तो विद्या बुद्धि की परिश्रम युक्त शक्ति से प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा संतान शक्ति प्राप्त होने पर भी कुछ संतान से वैमनस्य पावेगा और देह में कुछ रोग एवं कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में विजय पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थानको मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि प्राप्त करेगा और पराक्रम के स्थान में अधिक परिश्रम के योग से सफलता पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्य पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में परिश्रम शक्ति से कार्य करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ कठिनाई से शक्ति मिलेगी और राज-समाज व व्यवहार में युक्ति से मान पावेगा।

कन्या लग्न में १ शनि

६श. ७ ५ ८ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

नं० ६१३

यदि तुला का शनि—दूसरे स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर उच्च का होकर बैठा है, तो बुद्धि और परिश्रम के योग से विशेष धन कमावेगा तथा कुटुम्ब के स्थान में कुछ वृद्धि एवं कुछ झंझट प्राप्त करेगा और विद्या ग्रहण करेगा तथा संतान पक्ष में परेशानी पावेगा

कन्या लग्न में २ शनि

नं० ६१४
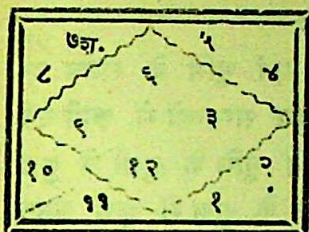
और तीसरी शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान में कुछ वैमनस्य पावेगा और मकानादि के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में कुछ अशांति पावेगा तथा आयु की कुछ कमी तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ कमजोरी पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के स्थान में कुछ दिक्कत प्राप्त करेगा अर्थात् छठें स्थान का गृह स्वामी हर एक सम्बन्धों में दिक्कतें और परिश्रम एवं युक्तियों से ही कार्य करता है किन्तु शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा।

यदि वृश्चिक का शनि—तीसरे भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान पर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है, तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये पराक्रम और हिम्मत शक्ति की वृद्धि करेगा और शत्रु पक्ष में प्रभाव एवं विजय पावेगा और शत्रु स्थानपति होने के दोष के कारणों से भाई बहिन के स्थान में झंझट एवं परेशानी पावेगा तथा तीसरी दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये मामूली कुछ दिक्कत लिये हुए संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या एवं वाणी की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, अतः बुद्धि और परिश्रम से भाग्य की उन्नति करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख

कन्या लग्न में ३ शनि

नं० ६१५

रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और बाहरी स्थानों में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा।

यदि धन का शनि—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर शत्रु गुरु की राशि में बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में कमी एवं झंझट के कारण प्राप्त करेगा तथा मकानादि भूमि के सुखों में कुछ कमी पावेगा और घर के अन्दर सन्तान पक्ष के सुख में कुछ झंझट या फिकर रहेगी तथा विद्या का सुख रहेगा और तीसरी दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा घर बैठे शत्रु पक्ष में प्रभाव की शक्ति कायम रखेगा और झगड़े-झंझटों के योग से सुख दुःख का सदैव अनुभव करेगा और ननसाल पक्ष की कुछ सुख शक्ति पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से दसम राज्य एवं पिता स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये बुद्धि और परिश्रम के योग से पिता एवं मान सम्मान आदि में शक्ति पावेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ रोग पावेगा तथा परिश्रम और प्रभाव की शक्ति से मान पावेगा।
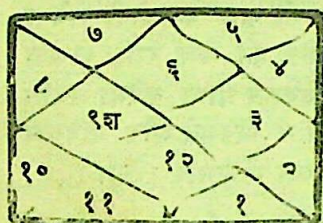
कन्या लग्न में ४ शनि

नं० ६१६

यदि मकर का शनि—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र पर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति पावेगा तथा विद्या ग्रहण करेगा किन्तु छठें स्थान पति का दोष होने के कारण संतान पक्ष में कुछ कष्ट एवं झंझट प्राप्त करेगा तथा विद्या के पक्ष में कुछ दिक्कतों और रुकावटों से सफलता रहेगी तथा बुद्धि एवं वाणी के अन्दर गुप्त युक्ति का बल रहेगा और इसी गुप्त बल बुद्धि के प्रभाव से शत्रु पक्ष में सफलता पावेगा और तीसरी

कन्या लग्न में ५ शनि

नं० ६१७

शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ दिमागी परिश्रम रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के परिश्रम से लाभ की प्राप्ति करेगा और दसवीं उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा धन की वृद्धि करेगा और कुटुम्ब की शक्ति पावेगा।

यदि कुम्भ का शनि—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो शत्रु पक्ष में बुद्धि की शक्ति से विजय प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में परेशानी पावेगा तथा विद्या ग्रहण करने में कुछ दिक्कतें रहेंगी किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये विद्या के पक्ष से प्रभाव कायम रखेगा और तीसरी नीच दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन में बहुत बार जान के खतरे आयेंगे तथा कुछ झंझटों के कारण अशांति का अनुभव होता रहेगा तथा पुरातत्व सहायक शक्ति की हानि रहेगी और उदर में कुछ विकार पावेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी तथा बाहरी दूसरे स्थानों के सम्बन्ध में नीरसता रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन
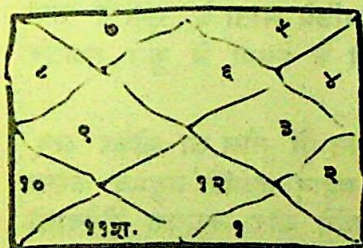
कन्या लग्न में ६ शनि

नं० ६१८

से कुछ परेशानी का सम्बन्ध रहेगा और पराक्रम के स्थान में बुद्धि योग के परिश्रम से दौड़ धूप में सफलता एवं हिम्मत शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि मीन का शनि—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु गुरु की मीन राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ी परेशानी अनुभव करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बुद्धि योग से बड़ा परिश्रम करेगा तथा कुछ मूत्रेन्द्रिय में विकार पावेगा और विद्या की शक्ति से गृहस्थ का संचालन करेगा तथा संतान पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और बुद्धि की पेचीदी युक्तियों से शत्रु पक्ष में सफलता पावेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्म का ध्यान रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ रोग और कुछ परेशानी के साथ-साथ प्रभाव पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि तथा सुख स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कमी पावेगा और मकानादि भूमि तथा रहने के स्थान में कुछ अशांति अनुभव करेगा।
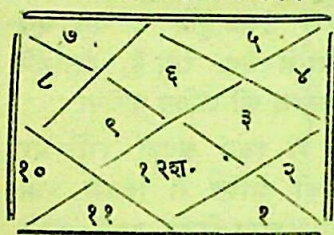
कन्या लग्न में ७ शनि

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२श० २ ११ १

नं० ६१९

यदि मेष का शनि—आठवें आयु स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा तो जीवन में महान् अशांति अनुभव करेगा तथा आयु स्थान में कई बार खतरे आयेंगे और सहायक होनेवाली पुरातत्व शक्ति की हानि रहेगी तथा संतान पक्ष में कष्ट अनुभव होगा और विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी एवं शत्रु पक्ष से अशांति रहेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता एवं राज्य पक्ष में कुछ

कन्या लग्न में ८ शनि

नं० ६२०

झंझट युक्त संपर्क रहेगा तथा कारबार में कुछ बुद्धि योग से शक्ति पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से धन स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये धन जन की वृद्धि के लिये महान् प्रयत्न करेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में सन्तान एवं विद्या स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या बुद्धि की कुछ कमजोर शक्ति पावेगा और गुप्त चतुर बनेगा।

यदि वृषभ का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो बुद्धि योग के परिश्रम मार्ग से भाग्य की शक्ति प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में सफलता पावेगा और विद्या प्राप्त करेगा तथा शत्रु स्थानपति होने के दोष के कारण भाग्य में और धर्म सम्बन्ध में कुछ कमजोरी पावेगा और बड़ा नीतिज्ञ चतुर बोलनेवाला बनेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये लाभ के लिये विशेष प्रयत्न करेगा

कन्या लग्न में ९ शनि

नं० ६२१
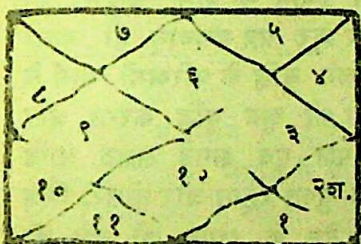
और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पराक्रम शक्ति की वृद्धि के लिये अधिक प्रयत्न एवं परिश्रम करेगा और भाई बहिनके सम्बन्ध में कुछ वैमनस्य पावेगा और दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में शत्रु स्थान को स्वक्षेत्रमें देख रहा है, इसलिये भाग्य और बुद्धि की शक्ति से शत्रु स्थान में विजय पावेगा और प्रभाव की वृद्धि करेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से उन्नति पावेगा।

यदि मिथुन का शनि—दसम केन्द्र पिता स्थान एवं राज्य स्थान में बैठा है तो छठें स्थान पति होने के दोष कारण से पिता के सुख में कुछ झंझट पावेगा और बुद्धि योग के परिश्रमी मार्ग से राज-समाज में प्रभाव शक्ति पावेगा एवं कारबार में उन्नति करेगा और

कन्या लग्न में १० शनि

नं० ६२२
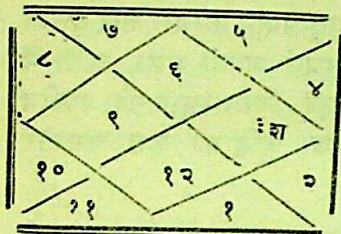
विद्या की शक्ति पावेगा तथा संतान पक्ष से उन्नति के साधन पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ नीरसता प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों में कुछ अरुचि रखेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से चौथे मातृ स्थान को एवं भूमि स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भूमि और माता के सम्बन्ध में सुख शांति की कमी पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री के सुख में भी कुछ कमी पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में कठिन परिश्रम से उन्नति करेगा।

यदि कर्क का शनि ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता

कन्या लग्न में ११ शनि

नं० ६२३

है, इसलिये बुद्धि के परिश्रमी मार्ग से आमदनी की खूब वृद्धि करेगा और शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट आदि से लाभ युक्त रहेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ रोग एवं परिश्रम का योग प्राप्त करेगा तथा बड़ी होशियारी से स्वार्थ सिद्ध करने में सदैव तत्पर रहेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं

अपनी मकर राशि में संतान एवं विद्या स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये संतान और विद्या की शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु स्थान पति होने के दोष कारण से संतान और विद्या के सुख में कुछ त्रुटि एवं झंझट रहेगी और दसवीं नीच दृष्टि से आयु स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और जीवन में बड़ा संघर्ष प्राप्त करेगा तथा सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि पावेगा।

यदि सिंह का शनि—बारहवें खर्च स्थान से शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो कुछ नीरसता के सहित खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा विद्या एवं संतान पक्ष में हानि तथा कमजोरी प्राप्त करेगा और तीसरी उच्च दृष्टि से धन भवन को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने के लिये भारी प्रयत्न करेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि और खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष में एवं रोगादिक झंझटों में प्रभाव पा सकेगा, किन्तु परेशानी सी रहेगी और दसवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये बाहरी स्थानों के संयोग से बुद्धि बल के द्वारा भाग्य की कुछ वृद्धि करेगा तथा धर्म के पक्ष में कुछ सुन्दर रुचि रखेगा तथा अधिक खर्च करने में अपनी शान समझता रहेगा।

कन्या लग्न में १२ शनि

नं० ६२४

कष्ट, चिन्ता, तथा गुप्त युक्ति के अधिपति–राहु

कन्या लग्न में १ राहु

नं० ६२५
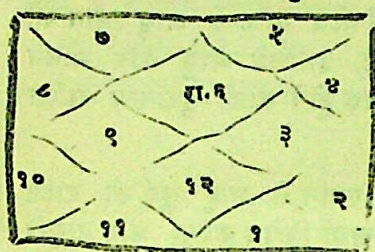
यदि कन्या का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो कन्या पर बैठा हुआ राहु स्वक्षेत्र के समान माना जाता है, इसलिये देह में गुप्त युक्तिबल की विशेष शक्ति पावेगा तथा बड़ा स्वाभिमान रखेगा और कुछ शरीर में दिक्कतें एवं कुछ परेशानी का योग पावेगा तथा मान प्राप्त करेगा तथा दिमाग की गहरी सूक्ष्म शक्ति के बल से प्रभाव कायम रखेगा एवं विशेष उन्नति पाने के लिये कठिन प्रयत्न करेगा और कभी २ गहरी चिन्ता पाने पर भी धैर्य की महान् शक्ति से काम लेगा और देह में आन्तरिक रूप से कुछ कमी महसूस करेगा और उन्नति भी करेगा।

कन्या लग्न में २ राहु
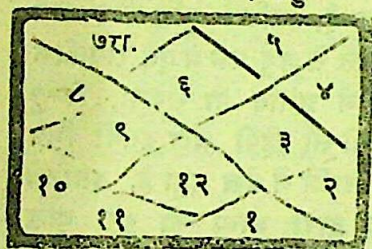
नं० ६२६

यदि तुला का राहु-- धन स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो धन की तरफ से चिन्ता प्राप्त रहेगी और कुटुम्ब के स्थान में कुछ झंझट या परेशानी प्राप्त रहेगी तथा धन संग्रह के अभाव से कुछ गुप्त वेदना, तेजी तथा कभी २ धन में हानि प्राप्त करेगा और धन की वृद्धि करने के लिये महान् प्रयत्न करेगा एवं राहु चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये विशेष चतुराई के गूढ़ मार्ग से कठिन कर्म के द्वारा धन की शक्ति पावेगा और प्रकट में धनवान् समझा जायेगा तथा कभी २ धन के पक्ष में मुफ्त की सी सफलता शक्ति से विशेष लाभ पा जायेगा।

कन्या लग्न में ३ राहु

नं० ६२७
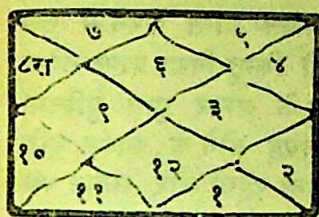
यदि वृश्चिक का राहु—तीसरे भाई-बहिन और पुरुषार्थ के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये पराक्रम, प्रभाव और हिम्मत की विशेष वृद्धि करेगा तथा चतुराई की शक्ति से बड़े-बड़े कठिन कार्यों को भी पूरा करनेमें सदैव तत्परता से काम करेगा किन्तु भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी एवं कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा कभी २ पराक्रम स्थान के कार्यों में विशेष संकट प्राप्त होने पर भी आन्तरिक धैर्य की शक्ति को नहीं छोड़ेगा और साहस से सफलता प्राप्त करेगा और सदैव अपनी जीत एवं कार्य सिद्धि के लिये प्रयत्नशील रहेगा तथा शील संतोष को परवाह नहीं करेगा।

यदि धन का राहु—चौथे केन्द्र माता, भूमि एवं सुख के स्थान पर नीच का होकर शत्रु गुरु की धन राशि पर बैठा है तो माता के सुख की महान् हानि करेगा तथा मकानादि रहने के स्थानों की कमी करेगा

कन्या लग्न में ४ राहु

नं० ६२८
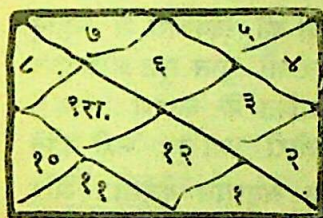
तथा घरेलू सुख शांति में विशेष बाधायें प्राप्त करेगा और घर के अन्दर कभी-कभी घोर संकट एवं दु:ख के कारण प्राप्त होंगे और मातृ स्थान एवं मातृ भूमि से सम्बन्ध बिच्छेद रहेगा तथा बहुत प्रकार से सुख सम्बन्धों में संकीर्णता रहेगी और किसी प्रकार गुप्त योजनाओं के द्वारा गुप्त रूप से सुख के साधन प्राप्त होंगे और निजी स्थान में शान्ति का विशेष अभाव रहेगा।

यदि मकर का राहु—पंचम त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान

कन्या लग्न में ५ राहु

नं० ६२९
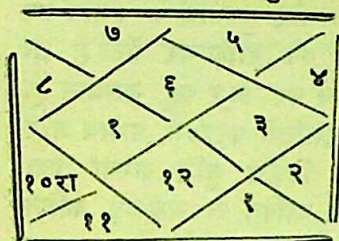
में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो विद्या की शक्ति प्राप्त करने में कुछ अड़चनें रहेंगी किन्तु विद्या प्राप्त करेगा तथा दिमाग् के अन्दर गुप्त युक्तियों का विशेष संग्रह होने के कारण बुद्धि में कुछ परेशानी रहेगी और संतान पक्ष में कष्ट के कारण प्राप्त करेगा और बुद्धि विद्या की आन्तरिक कमी के रहते हुये भी प्रकट में बातों की चतुराई और सफाई से काम करता रहेगा तथा बोल चाल में स्वार्थ सिद्धि के कारण सत्य असत्य की परवाह नहीं करेगा तथा कभी-कभी दिमाग के अन्दर गहरी चिन्ता के कारण भी प्राप्त करेगा।

यदि कुम्भ का राहु—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव कायम करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी गुप्त युक्ति के बल से विजय और सफलता पावेगा तथा कभी-कभी शत्रु एवं रोगादिक पक्ष की दिक्कतों में महान् संकट आने पर भी गुप्त सूझ और गुप्त हिम्मत की शक्ति के कारण प्रत्यक्ष में अपनी कमजोरी जाहिर नहीं होने देगा किन्तु अपने अन्दर कुछ कमजोरी का अनुमान करेगा। और अपना प्रभाव जमाने के लिये कठिन से कठिन कार्य को भी करने में तत्पर रहेगा।
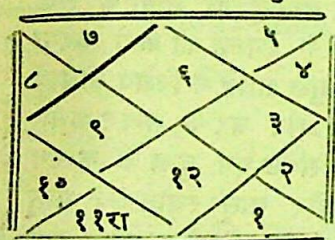
कन्या लग्न में ६ राहु

नं० ६३०

यदि मीन का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा

कन्या लग्न में ७ राहु

नं० ६३१
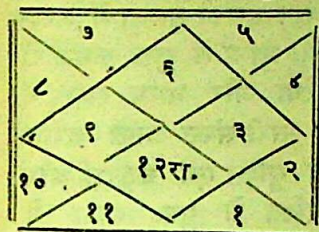
तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ एवं परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी गृहस्थ एवं रोजगार के मार्ग में महान् संकट प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त चतुराइयों के योग से तथा आन्तरिक धैर्य की शक्ति से परिस्थिति को पुनः संभाल कर चलेगा और कभी कोई मूत्रेन्द्रिय में विकार का योग बनेगा तथा स्त्री एवं रोजगार के मार्ग में हृदय के अन्दर कुछ दुःख और कमी का अनुभव करता रहेगा और स्त्री स्थान तथा रोजगार के सम्बन्ध में अधिक उन्नति करने के लिये कठिन प्रयत्न करेगा।

यदि मेष का राहु—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु मंगल की मेष राशि पर बैठा है तो आयु के सम्बन्ध में कई बार महान् संकट प्राप्त करेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि प्राप्त करेगा और उदर के अन्दर नीचेकी तरफ कुछ बीमारी या शिकायत पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या में चिन्ता एवं परेशानियों के कारण प्राप्त होंगे तथा जीवन निर्वाह को शक्ति को मजबूत बनाने के लिये स्थाई लाभ प्राप्त के ख्याल से बड़ा भारी कठिन प्रयत्न करेगा किन्तु इतने पर भी अपनी दिनचर्या के मार्ग में कुछ कमी और झंझट का गुप्त योग अनुभव करेगा।
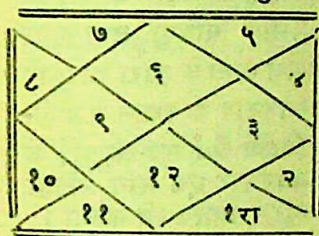
कन्या लग्न में ८ राहु

नं० ६३२

यदि वृषभ का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में कुछ चिन्तायें प्राप्त करेगा तथा धर्म के यथार्थ पालन में कुछ कमजोरी रहेगी और भाग्य की उन्नति के लिये महान् कष्ट साध्य प्रयत्न करेगा

कन्या लग्न में ९ राहु

नं० ६३३

तथा भाग्य के बाहरी हिस्से में जितनी उन्नति पावेगा उसकी तुलना में अन्दरूनी तौर से भाग्य में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और भाग्य स्थान में कभी-कभी भारी संकट प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त युक्ति एवं चतुराई और धैर्य की शक्ति से पुनः भाग्य में जागृति पावेगा और कुछ अधिकार रूप से भी भाग्य की उन्नति पावेगा।

कन्या लग्न में १० राहु

नं० ६३४

यदि मिथुन का राहु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर उच्च का होकर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ संघर्ष के साथ-साथ विशेष उन्नति प्राप्त करेगा और राज-समाज के स्थान में बड़ी चतुराई से मान और प्रभाव पावेगा तथा गुप्त युक्ति की विशेष कला के द्वारा कारबार में खूब सफलता प्राप्त करेगा और राज-समाज कारबार के स्थान में कभी-कभी विशेष संकट का योग प्राप्त करेगा किन्तु विशेष धैर्य एवं चतुराई के बल से पुनः अच्छे रास्ते पर आ जायेगा और कारबार एवं मान प्रतिष्ठा की विशेष उन्नति प्राप्त करने के लिये महान् कठिन प्रयत्न भी करेगा।

कन्या लग्न में ११ राहु

नं० ६३५

यदि कर्क का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में वृद्धि तो अवश्य करेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने से लाभ के मार्ग में विशेष दिक्कतें रहेंगी तथा कभी-कभी लाभ के सम्बन्ध में

विशेष चिन्ता या विशेष धोखा खाने का योग भी बनेगा क्योंकि आमदनी के मार्ग में कभी-कभी विशेष लाभ प्राप्ति के लिये कुछ अधिक कठिन परिश्रम और अधिक प्रयत्न भी करेगा तथा आमदनी के स्थान में कुछ त्रुटि एवं असंतोष रहेगा और कभी-कभी मुफ्त का सा अचानक लाभ भी प्राप्त होगा।

यदि सिंह का राहु—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बहुत परेशानी प्राप्त करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में दुःख का अनुभव करेगा और खर्च संचालन की शक्ति को प्राप्त करने के लिये भारी कठिन प्रयत्न करेगा और कभी-कभी खर्च के मार्ग में भारी संकटों का सामना पावेगा किन्तु फिर भी गुप्त युक्ति और गुप्त हिम्मत की शक्ति से खर्च का संचालन करता रहेगा और कभी-कभी कोई मुफ्त का सा धन खर्च संचालन के लिये प्राप्त करेगा।
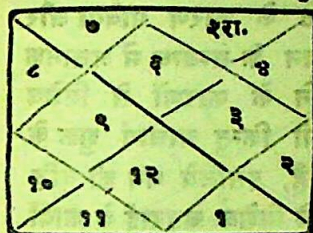
कन्या लग्न में १२ राहु

नं० ६३६

कष्ट, कठिन कर्म तथा गुप्त शक्ति के अधिपति-केतु
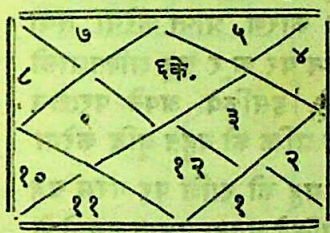
यदि कन्या का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में कुछ कष्ट एवं चिन्ताओं का योग प्राप्त करेगा तथा देह में कभी-कभी कोई चोट एवं घाव प्राप्त होंगे और देह की सुन्दरता में कुछ कमी तथा परिश्रम का योग पावेगा तथा अपने अन्दर गुप्त शक्ति एवं गुप्त हिम्मत का योग प्राप्त करेगा और कभी-कभी कोई गहरे

कन्या लग्न में १ केतु

नं० ६३७

संकट का अवसर प्राप्त होने पर भी गुप्त सहायक शक्ति के बल से रक्षा पावेगा और ग्रह के अन्दर कुछ कमजोरी के होते हुये भी बड़ी हेकड़ी और हठ रखेगा तथा कुछ कमी लिये हुये मान और प्रभाव प्राप्त करेगा अर्थात् नरम ग्रह के स्थान में गरम ग्रह बैठा है इसलिये नरमाई और गरमाई से काम करेगा।

यदि तुला का केतु—दूसरे धन स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो धन के कोष स्थान में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में क्लेश और त्रुटि के कारण पावेगा और कभी-कभी धन के सम्बन्ध में अचानक विशेष हानि के कारणों से विशेष चिन्ता रहेगी किन्तु आचार्य शुक्र के घर में बैठा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये विशेष चतुराई के कार्यों में परिश्रम शक्ति के योग से सफलता प्राप्त करेगा और कभी २ मुफ्त का धन भी प्राप्त करेगा किन्तु धन के किसी भी कार्य कारणों के सम्बन्ध से कुछ परेशानी का योग अवश्य पाता रहेगा और अधिक धन की प्राप्ति के लिये अधिक प्रयत्न करेगा।

कन्या लग्न में २ केतु

नं० ६३८

यदि वृश्चिक का केतु—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान में कष्ट एवं परेशानी के कारण प्राप्त करेगा तथा तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये अपने पराक्रम एवं हिम्मत शक्ति की बहुत वृद्धि करेगा और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये अपना प्रभाव जमाने के लिये महान् कठिन परिश्रम एवं कठिन कर्म करेगा और बाहुबल के अन्दर शक्ति

कन्या लग्न में ३ केतु

नं० ६३९

पावेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण कभी २ स्वयं अपनी हिम्मत के अन्दर गुप्त रूप से महान् कमजोरी अनुभव करेगा किन्तु प्रकट रूप में कभी २ हिम्मत हार कर भी हार मानने को तैयार नहीं होगा।

यदि धन का केतु—चौथे केन्द्र माता और भूमि तथा सुख स्थान में उच्च का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के सुख में कुछ आडम्बर युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति पावेगा तथा आचार्य गुरु के स्थान में उच्च का होकर बैठा है, इसलिये बड़े बुजुर्गों के ढंग से हेकड़ी और शानदारी से घरेलू सुखों की महान् शक्ति पाने के लिये महान् कठिन परिश्रम एवं कठिन प्रयत्न करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण कभी २ घरेलू सुख के सम्बन्धों में विशेष संकट प्राप्त करेगा और अन्त में सुख प्राप्ति के साधनों में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा।

कन्या लग्न में ४ केतु

नं० ६४०

यदि मकर का केतु—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में परेशानी एवं चिन्ता का योग प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में पढ़ाई के समय में कुछ गुप्त चिन्तायें महसूस करेगा किन्तु विद्या को ग्रहण करने के लिये महान् परिश्रम एवं कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और कभी २ केतु के स्वाभाविक दोष के कारण दिमाग के अन्दर महान् परिश्रम एवं कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा और कभी २ केतु के स्वाभाविक दोष के कारण दिमाग के अन्दर महान्

कन्या लग्न में ५ केतु

नं० ६४१

चिन्ता का योग पावेगा और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये बोलचाल एवं बात चित के अन्दर बड़ी कड़ाई से काम करेगा और अपने अन्दर कुछ बुद्धि विद्या की योग्यता में कमजोरी महसूस करेगा।

यदि कुम्भ का केतु—छठें शत्रु स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान में क्रूर ग्रह बहुत बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा तथा झगड़े झंझट आदि के स्थानों में बड़ी गुप्त हिम्मत शक्ति के बल से और बड़ी हेकड़ी एवं निर्भयता से काम करेगा और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये दूसरों के सामने प्रभाव कायम रखने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा किन्तु स्वाभाविक दोष के कारण अपने प्रभाव के अन्दर कुछ गुप्त कमजोरी अनुभव करेगा और ननसाल पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और कभी-कभी बड़ी भारी बहादुरी से काम करेगा।
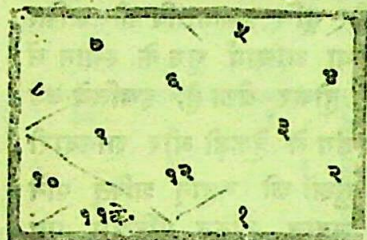
कन्या लग्न में ६ केतु

नं० ६४२

यदि मीन का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ मिलेंगी किन्तु आचार्य गुरु की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़े बुजुर्गों के ढंग से कठिन परिश्रम के द्वारा रोजगार में कुछ सफलता पावेगा स्त्री गृहस्थ के पक्ष में बड़े संकटों और दिक्कतों को प्राप्त कर लेने के बाद कुछ सहूलियत पायेगा तथा कभी २ कोई प्रकार से मूत्र-इन्द्रिय विकार का योग प्राप्त होगा

कन्या लग्न में ७ केतु

नं० ६४३

और गृहस्थ जीवन को अनेकों प्रकार की गुप्त युक्ति एवं गुप्त शक्ति के प्रयोगों से सफल बनाने पर भी अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा।

यदि मेष का केतु—आठवें आयु स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में अनेकों बार प्राण संकट का योग बनेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति की कमी एवं हानि रहेगी और उदर के अन्दर कोई प्रकार की दिक्कत या बीमारी पायेगा तथा गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये जीवन में प्रभाव पाने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा और जो कुछ भी शक्ति प्राप्त होगी उसमें भी कुछ कमी और जीवन की दिनचर्या में अधिक तेजी एवं क्रोध और संघर्ष रहेगा तथा जीवन में कभी २ जीवन निर्वाह करने के लिये महान् चिन्ता का योग बनेगा।

कन्या लग्न में ८ केतु

नं० ६४४

यदि वृषभ का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में बड़े २ संकट एवं दिक्कतें प्राप्त होंगी और धर्म के मार्ग में कमजोरी रहेगी तथा कुछ कमी लिये हुए युक्तिपूर्ण धर्म का पालन करेगा और आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करने के लिये चतुराई के महान् परिश्रम से शक्ति पावेगा किन्तु कभी २ केतु के स्वाभाविक दोष के कारण भाग्य के स्थान में किसी प्रकार गहरी चिन्ता का योग प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त शक्ति और चतुराई के कारणों से हर एक दिक्कतों से बचाव पाता रहेगा किन्तु भाग्य के अन्दर किसी कारण से कुछ कमजोरी महसूस करेगा।

कन्या लग्न में ९ केतु

नं० ६४५

कन्या लग्न में १० केतु

नं० ६४६
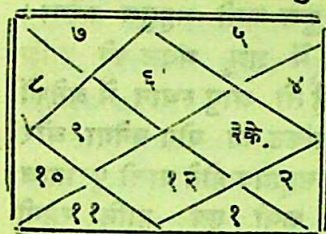
यदि मिथुन का केतु—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता-स्थान में हानि एवं कष्ट प्राप्त करेगा और राज-समाज के स्थान में मान और प्रभाव की कमजोरी रहेगी और कारबार एवं उन्नति के मार्ग में बड़ी २ दिक्कतें एवं झंझटें और अवनति के कारण प्राप्त होंगे तथा राज-पक्ष से कभी कोई झगड़ा और परेशानी प्राप्त करेगा और उन्नति प्राप्त करने के मार्ग में कभी कोई महान् संकट का सामना पावेगा तथा नरम ग्रह के स्थान पर नीच का होकर केतु बैठा है, इसलिये कभी २ कोई मान हानि पाने का कार्य एवं ढंग बनेगा और दब कर काम करेगा।

यदि कर्क का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में परम शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में उन्नति एवं वृद्धि तो करेगा किन्तु लाभ करने के कारणों में मानसिक परेशानियाँ प्राप्त रहेंगी और कभी २

कन्या लग्न में ११ केतु

नं० ६४७
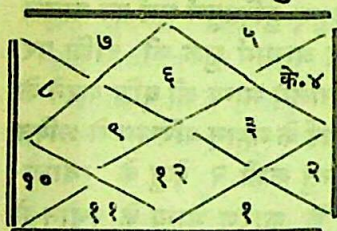
कोई विशेष झंझट या नुकसान भी आमदनी के मार्ग में हो सकेगा और केतु के स्वाभाविक दोष के कारण आमदनी के स्थान में कमी अनुभव करने के कारणों से दुःख का मान होता रहेगा किन्तु कभी २ कोई गुप्त का साधन लाभ होता रहेगा आमदनी की वृद्धि करने के लिये मनोयोग से कठिन परिश्रम करेगा।

यदि सिंह का केतु—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो खर्च के स्थान में बड़ी चिन्ता

और परेशानी का योग पावेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में दुःख एवं अरुचि अनुभव करेगा तथा खर्च की संचालन शक्ति को पाने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा और गरम ग्रह की शत्रु

कन्या लग्न में १२ केतु
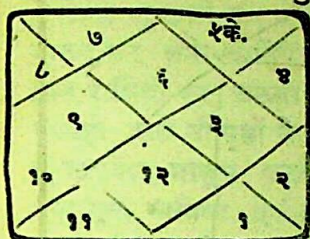
नं० ६४८

राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये खर्च के स्थान में कभी २ महान् संकट का सामना पावेगा इसलिये कभी २ बड़े संकीर्ण रूप से खर्च का संचालन करेगा और कभी २ अधिक तायदाद में खर्च करने के कारण भी दुःख का योग बनेगा, किन्तु गुप्त हिम्मत शक्ति से खर्च का कार्य करता रहेगा।

॥ कन्या लग्न समाप्त ॥
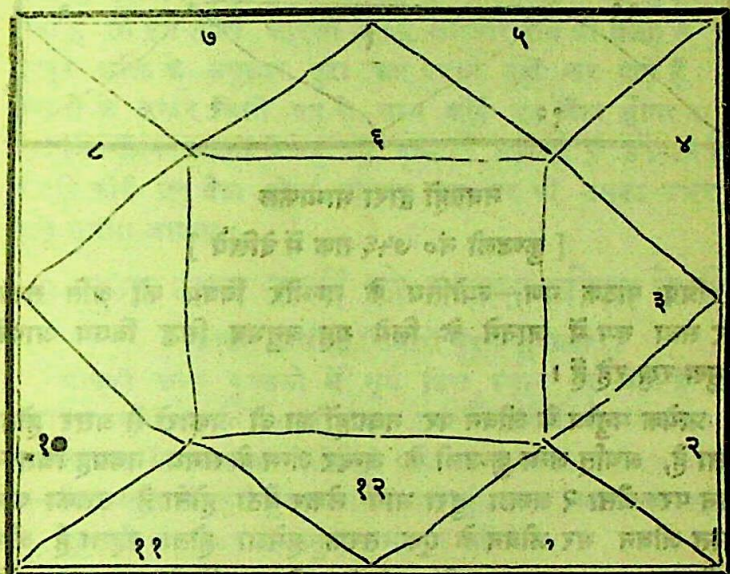
तुला लग्न का फलादेश प्रारम्भ
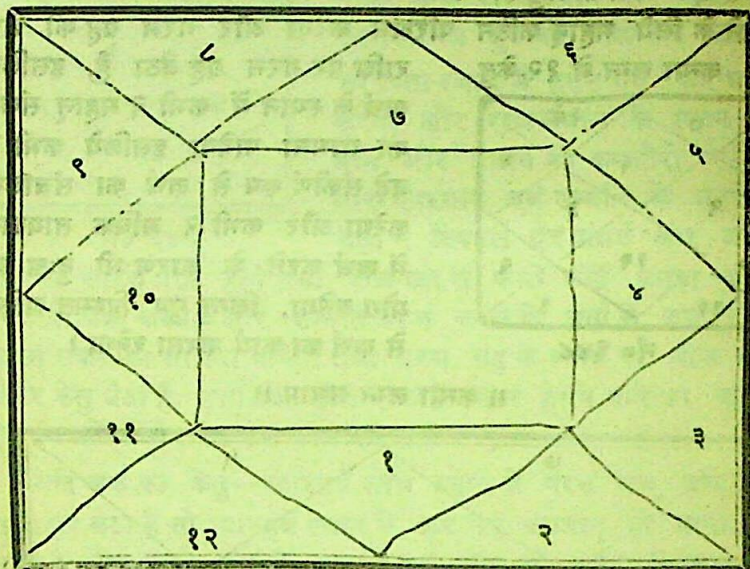
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

[कुण्डली नं० ७५६ तक में देखिये]

प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म कुण्डली के अन्दर जन्म के समय नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा बुरा भाव लेकर बैठा होता है उसका फल समस्त जीवन भर जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रह द्वारा हमेशा पंचांग गोचर गति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-

भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी-पूरी जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ६४९ से लेकर कुण्डली नं० ७५६ तक के अन्दर जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नवग्रहों वाले नौ पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा :

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों कारणों से ग्रह कमजोर होने की वजह से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका असर फल लागू समझा जायगा।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ६४९ से ६६० तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६४९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५१ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६५९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६६० के अनुसार मालूम करिये।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ६६१ से ६७२ तक में देखना चाहिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६६६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६६९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६७० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६७१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ६७२ के अनुसार मालूम करिये।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ६७३ से ६८४ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७५ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७७ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६७९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८४ के अनुसार मालूम करिये।

७-तुला लग्न वालों को प्रशस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० ६८५ से ६९६ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६८९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ६९५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में बुध कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६९६ के अनुसार मालूम करिये।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ६९७ से ७०८ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस मास में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६९७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६९८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ६९९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०० के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०१ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु बृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७०७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७०८ के अनुसार मालूम करिये।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० ७०९ से ७२० तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७०९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७११ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७१९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७२० के अनुसार मालूम करिये।

७-तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ७२१ से ७३२ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२१ के अनुसार मालूम करिये।

८--जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२२ के अनुसार मालूम करिये।

९--जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२३ के अनुसार मालूम करिये।

१०--जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७२९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३२ के अनुसार मालूम करिये।

७—तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ७३३ से ७४४ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डल नं० ७३४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३५ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३७ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७३९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४४ के अनुसार मालूम करिये।

७..तुला लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० ७४५ से ७५६ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४६ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७४९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ७५६ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

आमदनी एवं प्रभाव स्थानपति—सूर्य

यदि तुला का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में कमजोरी

और सुन्दरता की कमी प्राप्त करेगा तथा आमदनी के मार्ग में

तुला लग्न में १ सूर्य

नं० ६४९

कमी और कमजोरी मिलेगी तथा धन लाभ के सम्बन्ध में कुछ दबकर या परतंत्रता से आमदनी की शक्ति पावेगा और तेज की कमी रहेगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र मंगल की राशि में देख रहा है इसलिये रोजगार के पक्ष में उन्नति करेगा तथा स्त्री स्थान में विशेष लाभ एवं सुन्दरता पावेगा और गृहस्थ भोगादिक की अच्छी शक्ति मिलेगी।

यदि वृश्चिक का सूर्य—धन स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग से विशेष धन प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति पावेगा तथा धन और धन के संग्रह करने का विशेष प्रयोग

तुला लग्न में २ सूर्य

नं० ६५०

करेगा तथा धन और कुटुम्ब में प्रभाव पावेगा और प्रभाव युक्त मार्ग से एवं धन की शक्ति से आमदनी का मार्ग स्थापित करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है. इसलिये धन के कारणों से जीवन की दिनचर्या में कुछ थोड़ी सी परेशानी एवं प्रभाव पावेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ कुछ नीरसता से प्राप्त होगा।

यदि धन का सूर्य—तीसरे भाई और पराक्रम के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो पराक्रम की शक्ति से धन का लाभ एवं आमदनी प्राप्त करेगा और भाई-बहिन की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्ति शाली हो जाता है, इसलिये लाभ के मार्ग में विशेष सफलता मिलेगी और पुरुषार्थ तथा

तुला लग्न में ३ सूर्य

नं० ६५१

प्रभाव की महान् वृद्धि पावेगा एवं अपने बाहुबल की शक्ति का विशेष भरोसा करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की खूब वृद्धि होगी तथा धर्म के पक्ष में प्रकाश रखेगा और आमदनी के मार्ग में भाग्यवान् समझा जायगा।

तुला लग्न में ४ सूर्य

नं० ६५२
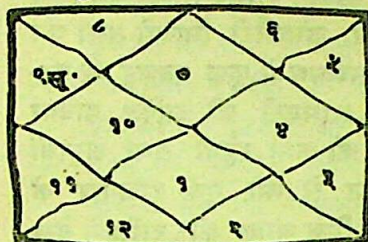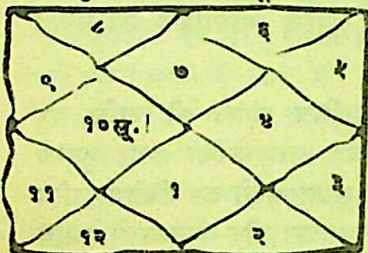
यदि मकर का सूर्य—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो आमदनी के पक्ष के कुछ नीरसता युक्त सुख की प्राप्ति करेगा तथा माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और भूमि मकानादिक की शक्ति का कुछ अधूरा सुख प्राप्त करेगा तथा आमदनी के मार्ग में कुछ सुख पूर्वक प्राप्ति करने की विशेष चेष्टा होते हुए भी कुछ अशांत युक्त थोड़ा सा वातावरण रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से राज्य एवं पिता, कारबार तथा मान के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज कारबार एवं पिता स्थान में मान और सफलता पावेगा।

तुला लग्न में ५ सूर्य

नं० ६५३

यदि कुम्भका सूर्य - पाचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो बुद्धि योग से लाभ पावेगा तथा संतान पक्ष का नीरसता युक्त लाभ मिलेगा तथा विद्या के ग्रहण करने में कुछ कठिनाइयों से सफलता मिलेगी और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा

है, इसलिये बोलचाल एवं बातचीत के अन्दर मिठास की कमी और स्वार्थ की विशेषता रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी सिंह राशि में लाभ स्थान स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग के कठिन कर्म से आमदनी की अच्छी शक्ति पावेगा किन्तु दिमाग में कुछ खिन्नता रहेगी।

यदि मीन का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतों के योग से लाभ प्राप्त करेगा तथा प्रभाव शक्ति से बहुत फायदा पावेगा और शत्रु स्थान में

तुला लग्न में ६ सूर्य

नं० ६५४

एवं झगड़े-झंझटों के मार्ग में लाभ विजय प्राप्त करेगा किंतु लाभ के लिये परिश्रम करना पड़ेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में लाभ की सूरतें पावेगा और बड़ी बहादुरी एवं हिम्मत शक्ति के द्वारा आमदनी को प्राप्त करता रहेगा तथा रोगादिक पक्ष में लाभ युक्त रहेगा।

तुला लग्न में ७ सूर्य

नं० ६५५
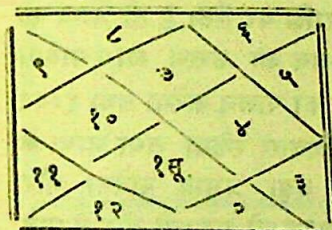
यदि मेष का सूर्य - सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा भारी प्रभाव एवं सुन्दरता पावेगा और स्त्री तथा ससुराल पक्ष से लाभ पावेगा तथा रोजगार के स्थान में बड़ी भारी आमदनी का योग पावेगा और दैनिक कार्य क्रम के द्वारा कभी-कभी बहुत अधिक लाभ पावेगा और गृहस्थ के अन्दर विशेष शक्ति एवं विशेष योग और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा

सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता और सुडौलताई में कमजोरी पावेगा और देह में कुछ चिंता एवं फिकर प्राप्त करेगा।

तुला लग्न में ८ सूर्य
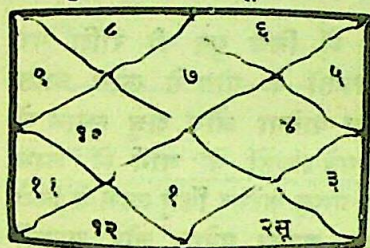
नं० ६५६

यदि वृषभ का सूर्य—आठवें आयु एवं पुरातत्व के स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में परेशानी प्राप्त करेगा तथा दूसरे स्थान के सम्बन्ध से कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ पावेगा और कुछ नीरसता युक्त मार्ग से पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा आयु स्थान में कुछ प्रभाव की शक्ति पावेगा एवं उदर के अन्दर कुछ गरमी की शिकायत पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवन व कुटुम्ब स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने का विशेष प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में प्रभाव एवं लाभ की शक्ति रखेगा और दिनचर्या में आमदनी के लिये बड़ा ख्याल रखेगा।

तुला लग्न में ९ सूर्य
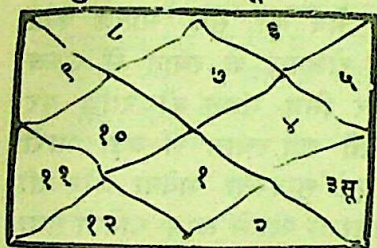
नं० ६५७

यदि मिथुन का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन का उत्तम लाभ पावेगा और धर्म का पालन करेगा तथा ईश्वर में बड़ा विश्वास रखेगा तथा भाग्य के स्थान में बड़ा प्रभाव पावेगा और न्यायोक्त लाभ को कुदरती तौर से पाने का योग रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का लाभ पावेगा तथा पराक्रम शक्ति का विशेष लाभ पावेगा अर्थात्

बाहुबल की शक्ति में प्रभाव और लाभ पावेगा अतः भाग्य और पुरुषार्थ दोनों में भरोसा रखकर करता रहेगा।

यदि कर्क का सूर्य—दसम राज्य स्थान एवं पिता स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में बड़ा लाभ प्राप्त करेगा और कारबार में उन्नति पावेगा तथा राज-समाज के स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और बड़े प्रभावशाली कर्म योग के द्वारा आमदनी एवं लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के सुख स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के कार्य कारणों से घरेलू सुख शांति में कुछ बाधा प्राप्त करेगा और माता के स्थान में कुछ नीरसता पावेगा और भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी तथा मान प्रतिष्ठा उत्तम रहेगी।

तुला लग्न में १० सूर्य
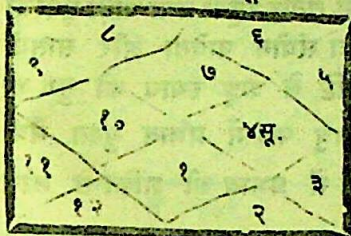
नं० ६५८

यदि सिंह का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता एवं शक्ति पावेगा तथा स्वयं प्रभाव की शक्ति से आमदनी का मार्ग बनेगा ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये लाभ के स्थान में विशेष प्रभाव रहेगा और सातवीं दृष्टि से संतान एवं विद्या-स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ असंतोष एवं कुछ नीरसता प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि के अन्दर कुछ अरुचिकर मार्ग से शक्ति पायेगा तथा वाणी में तेजी रहेगी।
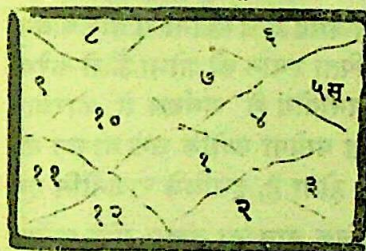
तुला लग्न में ११ सूर्य

नं० ६५९
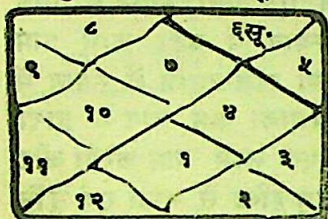
यदि कन्या का सूर्य—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानों के योग से प्रभाव के द्वारा आमदनी का मार्ग बनावेगा और बाहरी स्थानों में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु आमदनी के सम्पूर्ण लाभ को सदैव खर्च करने में तत्पर रहेगा तथा थोड़ा मुनाफा खाने का संयोग पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थाय को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव युक्त मैत्री संबन्ध रखेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में प्रभाव की शक्ति से लाभ युक्त रहेगा।

तुला लग्न में १२ सूर्य

नं० ६६०

पिता, कारबार तथा राज-समाज स्थानपति--चन्द्र

यदि तुला का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर शोभा सुन्दरता एवं सौम्य प्रभाव की शक्ति पावेगा तथा राज-समाज आदि ऊँचे स्थानों में मान पावेगा तथा पिता स्थान की शोभा ऊँची करेगा और मनोयोग के कर्मबल से कारबार में वृद्धि पावेगा क्योंकि चन्द्रमा मन का स्वामी होता है, इसलिये राजनीति एवं सामाजिक ज्ञान का उत्तम योग पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में सुन्दरता एवं मान तथा प्रभाव पावेगा और रोजगार
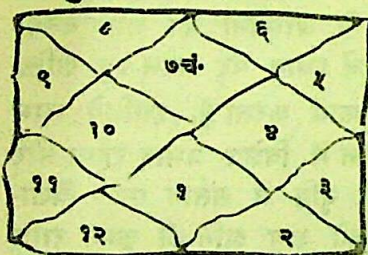
तुला लग्न में १ चन्द्र

नं० ६६१

के पक्ष में मनोयोग के कर्मबल से बहुत सफलता एवं उन्नति पावेगा तथा सुन्दर भोग प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का चन्द्र—धन भवन में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कमजोरी पावेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में मान सम्मान की कमी पावेगा तथा धन की संग्रह शक्ति में कमजोरी के कारणों से धन एवं कुटुम्ब के स्थान में दुःख और क्लेश का योग पावेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में कमजोरी और बाधायें प्राप्त करेगा किन्तु मनोयोग के गुप्त कर्म से एवं कुछ परतंत्रता युक्त कर्म से धन की वृद्धि का साधन बनावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व के स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि और जीवन को सहायक होने वाले पुरातत्व का लाभ पावेगा।

तुला लग्न में २ चन्द्र

नं ६६२
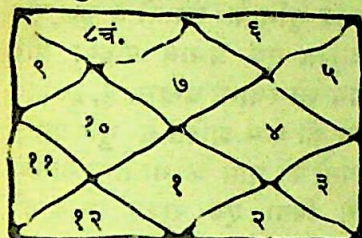
यदि धन का चन्द्र—तीसरे भाई के स्थान एवं पराक्रम स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान में शोभा पावेगा और पराक्रम स्थान में बड़ी सफलता शक्ति पावेगा और राज-समाज में बड़ा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में मनोयोग के कर्म बल से एवं पुरातत्व शक्ति से उन्नति का योग पावेगा और पिता स्थान की सहारा शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये मनोयोग के पुरुषार्थ कर्म से भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म
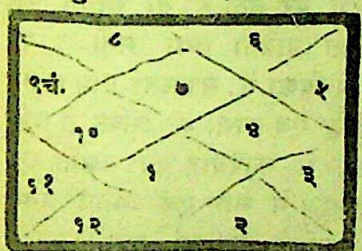
तुला लग्न में ३ चन्द्र

नं० ६६३

कर्म के पालन का ध्यान रखेगा और मन का स्वामी चन्द्रमा पुरुषार्थ स्थान में बैठा है, इसलिये भारी हिम्मत से कार्य करेगा।

यदि मकर का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ नीरसता युक्त मार्ग से माता की शक्ति एवं सुख प्राप्त करेगा तथा मकानादि भूमि के स्थानों में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति एवं प्रभाव पावेगा और मनोयोग का स्वामी चन्द्रमा है, इसलिये मनोबल की कर्म शक्ति से सुख प्राप्ति के साधनों को प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान पावेगा और कारबार के मार्ग में मनोबल के योग से उन्नति एवं सुख प्राप्त करेगा।
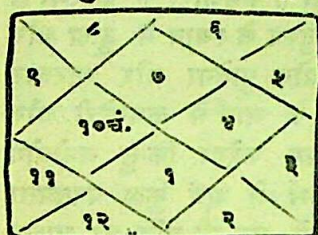
तुला लग्न में ४ चन्द्र

नं० ६६४

तुला लग्न में ५ चन्द्र
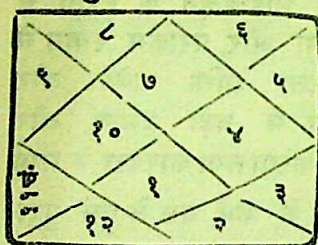
नं० ६६५

यदि कुम्भ का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति पावेगा तथा मनोबल की शक्ति से विद्या में सफलता प्राप्त करेगा और बुद्धि एवं वाणी की शक्ति से तथा मनोयोग से कारबार की उन्नति एवं राज-समाज में मान एवं प्रभाव प्राप्त करेगा और मन का स्वामी चन्द्रमा है, इसलिये मन एवं बुद्धि के अन्दर लौकिक सफलता के लिये विशेष विचार युक्त रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी एवं लाभ की वृद्धि प्राप्त करेगा।

यदि मीन का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की तरफ से कुछ असंतोष एवं वैमनस्य रहेगा तथा कारबार के मार्ग में मनोयोग के परिश्रमी कर्म के द्वारा कार्य संचालन करेगा किन्तु उन्नति के स्थान में कुछ बाधायें एवं रुकावटें मिलेंगी और राज समाज के सम्बन्ध में मान एवं प्रभाव की कुछ कमी रहेगी तथा शत्रु स्थान में मनोबल की विशेष चतुराई से शान्ति के द्वारा कार्य करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों में मनोयोग के कर्म से अच्छा सम्पर्क बनायेगा क्योंकि चन्द्रमा मनका स्वामी होता है।
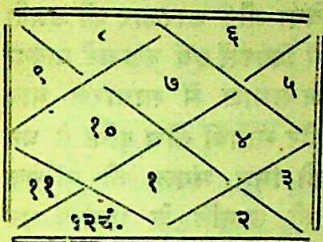
तुला लग्न में ६ चन्द्र

नं० ६६६

यदि मेष का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो चन्द्रमा मन का अधिकारी होने के कारण मनोबल के सुन्दर कर्म योग से रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में बड़ी सुन्दरता एवं प्रभाव और उन्नति के कारण प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की तरफ से भी सुख रहेगा तथा राज-समाजके पक्ष में मान रहेगा और कारबार की तरफ से उन्नति का योग पावेगा तथा गृहस्थ के सम्बन्ध में गौरव प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता, प्रभाव और मान पावेगा।
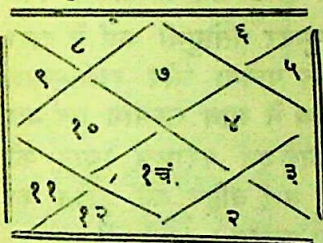
तुला लग्न में ७ चन्द्र

नं० ६६७

यदि वृषभ का चन्द्र—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व के स्थान पर उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु
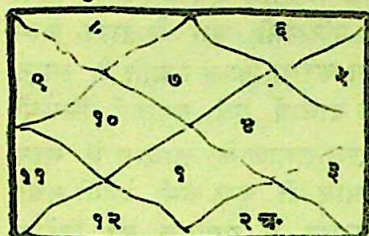
स्थान में शक्ति पावेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में मस्ती का आनन्द पावेगा तथा पिता स्थान में हानि एवं कमी पावेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में दिक्कतें एवं रुकावटें पावेगा तथा राज समाज में साधारण मान पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से धन भवन को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये कारबार की उन्नति के मार्ग में धन की हानि एवं कमजोरी पावेगा तथा कुटुम्ब की कमजोरी पावेगा।

तुला लग्न में ८ चन्द्र

८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २ च०

नं० ६६८

यदि मिथुन का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की सुन्दर शक्ति पावेगा तथा धर्म कर्म का पालन मनोयोग से सुन्दर रूप में करेगा और पिता स्थान की शक्ति का फायदा उठावेगा तथा मन का अधिकारी चन्द्रमा है, इसलिये कारबार की उन्नति के मार्ग में मनोयोग के सुन्दर सतोगुणी कर्म के द्वारा भाग्योन्नति पावेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में मान सम्मान एवं यश प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति का योग पावेगा तथा पराक्रम स्थान में सफलता पावेगा।
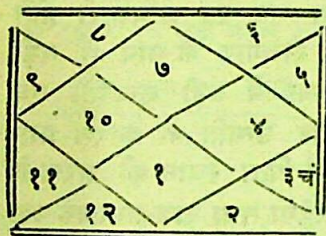
तुला लग्न में ९ चन्द्र

८ ६ ९ ७ ५ १० ४ ११ १ ३ चं १२ २

नं० ६६९

यदि कर्क का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता-स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो पिता-स्थान में बड़ी सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और चन्द्रमा मन की शक्ति का स्वामी है, इसलिये मनोबल के सुन्दर

तुला लग्न में १० चन्द्र

नं० ६७०
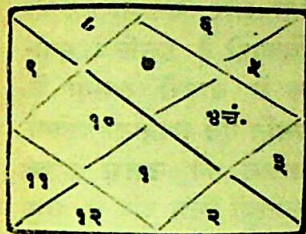
कर्मयोग से कारबार में उन्नति करेगा तथा राज समाज में मान प्रतिष्ठा पावेगा और मन के अन्दर विशेष स्वाभिमान रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शनि की मकर राशि से देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और भूमि का सुख कुछ त्रुटि युक्त पावेगा तथा घरेलू वातावरण के अन्दर कुछ नीरसता युक्त मार्ग से सुख प्राप्ति के साधन पावेगा तथा बड़ी नीतिज्ञता से काम करेगा।

यदि सिंह का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान का लाभ पावेगा तथा चन्द्रमा मन की

तुला लग्न में ११ चन्द्र

नं० ६७१
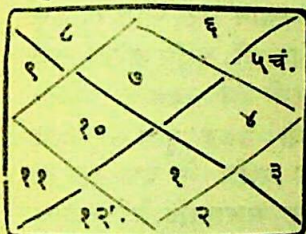
शक्ति का अधिकारी होता है, इसलिये मनोयोग के सुन्दर कर्म से उत्तम लाभ प्राप्त करेगा और राज-समाज के सम्बन्ध का लाभ पावेगा तथा मान प्रतिष्ठा पावेगा और मन की शक्ति से आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से सन्तान स्थान को देख रहा है, अतः सन्तान पक्ष के स्थान में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से सफलता पावेगा तथा विद्या में शक्ति पावेगा और बोलचाल की वाणी के अन्दर बड़ी चतुराई से अपने स्वार्थ की पूर्ति करेगा तथा लाभ का विशेष ध्यान रखेगा।

यदि कन्या का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा तथा पिता-स्थान की कमजोरी पावेगा और कारबार के स्थान में हानि पावेगा तथा राज-

तुला लग्न में १२ चन्द्र

नं० ६७२
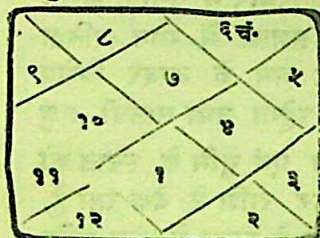
समाज के सम्बन्ध में मान प्रतिष्ठा की कमजोरी पावेगा और चन्द्रमा मन की शक्ति का अधिकारी है इसलिये मनोयोग की शक्ति से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में उन्नति एवं सफलता पावेगा तथा खर्च संचालन की उत्तम शक्ति पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये मनोबल की कर्म शक्ति से शत्रु स्थान में सफलता प्राप्त करेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में शांति युक्त चतुराई से काम निकालेगा।

धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा रोजगार स्थानपति-मंगल

यदि तुला का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह के कर्म से धन की प्राप्ति करेगा तथा कुटुम्ब का योग पावेगा तथा देह में कुछ गरमी का स्वभाव पावेगा और गृहस्थ में इज्जत प्राप्त करेगा और चौथी उच्च दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष में एवं घरेलू सुख और मकानादि के सम्बन्ध में विशेष शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये स्त्री की महानता पावेगा और रोजगार में उन्नति एवं इज्जत पावेगा तथा भोगादिक की उत्तम शक्ति मिलेगी और आठवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को

तुला लग्न में १ भौम
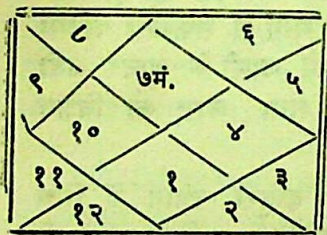
नं० ६७३

सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये पुरातत्व की सामान्य शक्ति पावेगा और आयु एवं जीवन के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से शक्ति पावेगा तथा उदर में कुछ शिकायत रहेगी।

यदि वृश्चिक का मंगल—दूसरे धन स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो धन की शक्ति में रोजगार के मार्ग से वृद्धि करेगा और धन का स्थान बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री पक्ष में संकट एवं घिराव सा पावेगा और कुटुम्ब की शक्ति रहेगी किन्तु गृहस्थ सुख में कमी रहेगी और चौथी शत्रु दृष्टि से संतान स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ बाधा एवं शक्ति पावेगा और विद्या बुद्धि के मार्ग में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में आयु एवं पुरातत्व को देख रहा है, इसलिये आयु तथा पुरातत्व की कुछ शक्ति पावेगा और आठवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि पावेगा तथा स्वार्थ धर्म का पालन करेगा।

तुला लग्न में २ भौम

नं० ६७४

तुला लग्न में ३ भौम
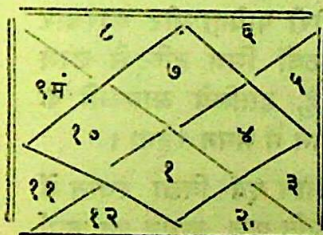
नं० ६७५

यदि धन का मंगल—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये पराक्रम स्थान में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति पावेगा तथा स्त्री पक्ष की सुन्दर शक्ति पावेगा और अपने पुरुषार्थ

से धन कमावेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा और दिक्कतों पर विजय पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्म का पालन एवं ध्यान रखेगा और आठवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये पिता का कष्ट प्राप्त करेगा और राज-समाज, उन्नति के मार्ग में रुकावटें एवं दिक्कतें रहेगी तथा कुछ परतंत्रता रहेगी।

यदि मकर का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो घरेलू सुख की महान् शक्ति पावेगा और माता की एवं भूमि की विशेषता पावेगा और धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा तथा चौथी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री की सुख शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में विशेष वृद्धि एवं सुख पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि पिता एवं राज-समाज के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सुख में कमी और राज-समाज में कुछ कमजोरी पावेगा और कारबार की उन्नति में कुछ दिक्कतें पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा और अपने स्थान में मगन रहेगा।
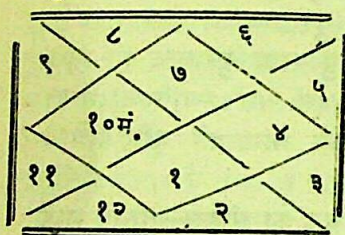
तुला लग्न में ४ भौम

नं० ६७६

यदि कुम्भ का मंगल—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो धन स्थानपति कुछ बन्धन का कार्य करता है, इशलिये संतान पक्ष के सुख में कुछ दिक्कतें पावेगा और

विद्या स्थान में कुछ दिक्कत के साथ शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री पक्षके सुखमें कुछ त्रुटि अनुभव करेगा तथा बुद्धि सम्बन्धित रोजगारके मार्ग से धन प्राप्त करेगा और कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य पावेगा तथा चौथी दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये जीवन के मार्ग में कुछ दिक्कतों के साथ-साथ पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थानको सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार से खूब आमदनी करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन की प्राप्ति में सफलता पावेगा तथा स्वार्थ सिद्धि के लिये कुछ कटु शब्द का प्रयोग भी करेगा।

तुला लग्न में ५ भौम

नं० ६७७

यदि मीन का मंगल—छठें शत्रु स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव रखेगा और धन की संग्रह शक्ति में कमी रहेगी तथा स्त्री पक्षमें कुछ मतभेद या झंझट रहेगा और रोजगारके मार्ग में कुछ परिश्रम एवं दिक्कतोंसे सफलता मिलेगी तथा कुटुम्ब एवं गृहस्थ से कुछ परेशानी रहेगी और चौथी दृष्टिसे भाग्य स्थानको भाग्य एवं धर्म स्थानको मित्र बुधकी मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्यकी कुछ वृद्धि करेगा तथा धर्मके मार्गमें स्वार्थ युक्त पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या
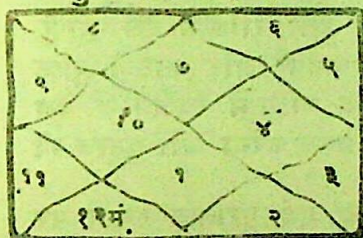
तुला लग्न में ६ भौम

नं० ६७८

राशिमें देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध बनायेगा और आठवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता एवं देह के सुख में कुछ कमी पावेगा और देह में कुछ गरम विकार पावेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से फायदा करेगा।

यदि मेष का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान

तुला लग्न में ७ भौम

नं० ६७९

पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो रोजगारके मार्गमें विशेष शक्ति पावेगा किन्तु धनस्थान-पति ग्रह कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ घिराव या कुछविकत सी रहेगी तथा भोगा-दिक की अच्छी शक्ति पावेगा और चौथी नीच दृष्टि से पिता स्थानको एवं राज-समाज, कारबार के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ हानि पावेगा तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ कमजोरी या परतंत्रता पावेगा और राज-समाज के अन्दर प्रभाव की कुछ कमी रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ गरम विकार पावेगा और आठवीं दृष्टि से धन स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की शक्ति पावेगा।

यदि वृषभ का मंगल—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में संकट पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में परेशानी पावेगा और दूसरे स्थान से सम्बन्धित रोजगार चलावेगा और पुरातत्व शक्ति का सहयोग पावेगा गृहस्थी के सम्बन्धमें चिन्ता रहेगी और चौथी मित्र दृष्टि से लाभ

तुला लग्न में ८ भौम

नं० ६८०

स्थानको सूर्यकी सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये आमदनी की शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशिमें धन स्थानको स्वक्षेत्रमें देख रहा है, इसलिये धन की कुछ शक्ति परिश्रम से और पुरातत्व से पावेगा और कुटुम्ब का थोड़ा सा सहयोग प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की कुछ शक्ति पावेगा तथा पराक्रम स्थान से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से धन की वृद्धि पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में भाग्य से अच्छा सहयोग मिलेगा और भाग्यवती स्त्री पावेगा तथा शादी के बाद भाग्य की उन्नति होगी और धर्म के योग से धन की वृद्धि पावेगा और गृहस्थ धर्म का उत्तम पालन करेगा और चौथी मित्र दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में फायदे का योग पावेगा और सातवीं

तुला लग्न में ९ भौम

नं० ६८१
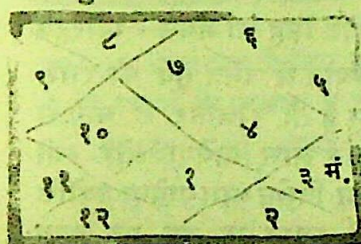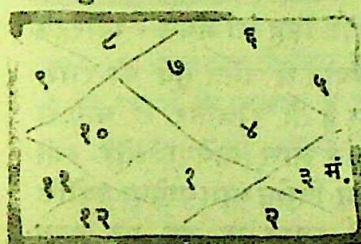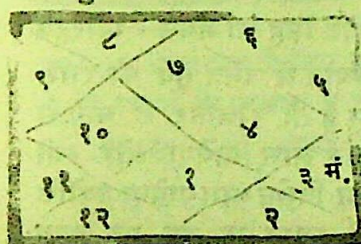
दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मित्र गुरुकी धन राशिमें देख रहा है, इसलिए भाई का कुछ अच्छा योग पावेगा तथा पराक्रम स्थानमें सफलता पावेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान की वृद्धि करेगा और भूमि मकानादि की सुख शक्ति पावेगा तथा गृहस्थी से सम्बन्धित सुखों की

वृद्धि करेगा तथा लौकिक पारलौकिक दोनों का ध्यान रखेगा।

यदि कर्क का मंगल—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में नीच को होकर चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में हानि करेगा तथा राज समाज में मान प्रतिष्ठा की कमी पावेगा और कारबार के मार्ग में पूरी उन्नति नहीं कर सकेगा तथा कुछ परतंत्रता युक्त कर्म से कार्य करेगा और धन एवं रोजगार की कमजोरी रहेगी तथा कुटुम्ब में कुछ अशांति रहेगी और स्त्री पक्ष में भी कुछ क्लेश

तुला लग्न में १० भौम

नं० ६८२
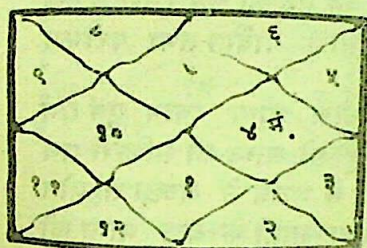
एवं कुछ कमीके कारण प्राप्त रहेंगे तथा चौथी मित्र दृष्टिसे देहके स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी और कुछ मान प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से माता एवं भूमिके स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान एवं भूमि स्थान की शक्ति पावेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से संतान एवं-एवं विद्या स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ वैमनस्य प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि की शक्ति से स्वार्थ पूर्ण और नीरसता युक्त बातें करेगा।

तुला लग्न में ११ भौम
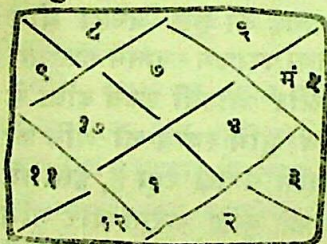
नं० ६८३

यदि सिंह का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से बहुत धन लाभ पावेगा और स्त्री स्थान का विशेष लाभ पावेगा क्योंकि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत शक्तिशाली हो जाता है और चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को

स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन संग्रह की शक्ति पावेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ वैमनस्य या नीरसता पावेगा और शब्द शैली में स्वार्थ युक्त बातें करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से शत्रुस्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव और लाभ पावेगा तथा झगड़ें-झंझटों से फायदा उठावेगा।

यदि कन्या का मंगल—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध पावेगा और धन एवं कुटुम्ब की हानि पावेगा तथा रोजगार व स्त्री स्थानमें हानि एवं कमजोरी प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ सुख में बाधा पावेगा और चौथी मित्र दृष्टि से भाई एवं पुरुषार्थ के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति पावेगा तथा पुरुषार्थके स्थान वृद्धि प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे शत्रु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये व्यवहारिक एवं धनकी शक्ति से शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा और आठवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कमजोरी लिए हुए शक्ति पावेगा और रोजगार के पक्ष में दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त करेगा।
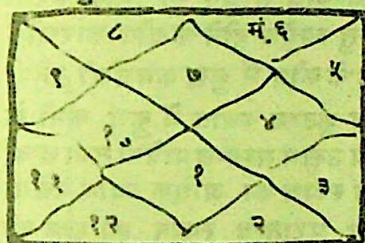
तुला लग्न में १२ भौम

नं० ६८४

भाग्य, धर्म, खर्च तथा बाहरी स्थानपति—बुध

यदि तुला का बुध प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति पावेगा तथा शानदार खर्च करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की उन्नति का

तुला लग्न में १ बुध

नं० ६८५

योग प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होनेके कारण से देह में कुछ दुर्बलता पावेगा तथा भाग्य के स्थान में कुछ कमी महसूस करेगा और कुछ कमी लिये हुए धर्मका सुन्दर पालन करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के मार्ग में भाग्य एवं बाहरी स्थान से विवेक की शक्तिके द्वारा सफलता पावेगा और स्त्री स्थान से सुन्दर सहयोग पावेगा।

तुला लग्न में २ बुध

नं० ६८६
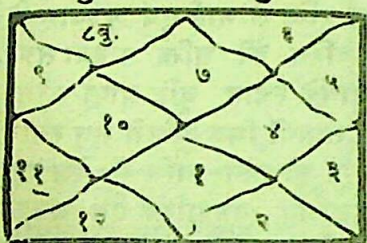
यदि वृश्चिक का बुध—दूसरे धन स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन की वृद्धि करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणोंसे धन के कोष में कुछ कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी के साथ उत्तम सम्बन्ध पावेगा तथा खर्चा खूब करेगा और धर्म के पालन में कुछ स्वार्थ का अधिक ध्यान रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की दिनचर्या में कुछ शक्ति एवं भाग्यवानी पावेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा धनवान् व इज्जतदार माना जायगा।

यदि धन का बुध तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन की शक्ति पावेगा और पराक्रम की सफलता पावेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्योन्नति का साधन पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से भाग्योन्नति के मार्ग में कुछ कमजोरी पावेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म

तुला लग्न में ३ बुध

नं० ६८७

स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि पावेगा और धर्म का पालन करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के द्वारा यश प्राप्त करेगा और भाग्य तथा पुरुषार्थ की शक्ति से खर्च खूब करेगा तथा धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में विवेक शक्ति के अन्दर कुछ कमी लिये हुये कुछ विशेष धर्म का पालन करेगा।

यदि मकर का बुध— चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान की सुख शक्ति पायेगा और भूमि मकानादि की शक्ति पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से घरेलू सुख शान्ति में कमी रहेगी और भूमि के सुख में भी कुछ कमजोरी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से घर बैठे भाग्य की वृद्धि के साधन विवेक शक्ति से पायेगा और खर्चा खूब आनन्द पूर्वक करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान प्राप्त करेगा।
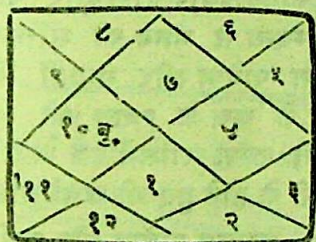
तुला लग्न में ४ बुध

नं० ६८८

यदि कुम्भ का बुध—पाँचवें त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि एवं विवेक की अच्छी शक्ति पावेगा किन्तु व्ययेश होनेके दोषके कारण संतान पक्षमें कुछ त्रुटि रहेगी और विद्या

तुला लग्न में ५ बुध

नं ६८९
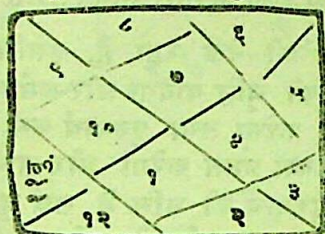
स्थानमें कुछ कमी रहेगी तथा बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे बुद्धि योग द्वारा भाग्य की वृद्धि पावेगा और बड़ी बुद्धिमत्तासे खर्चा खूब करेगा तथा धर्मका ज्ञान प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थानको सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग योग द्वारा धन लाभ की आमदनी खूब करेगा और भाग्यवान् माना जायगा।

यदि मीन का बुध— छठें शत्रु स्थान में नीच का होकर गुरु की मीन राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में परेशानी पावेगा और खर्च के संचालन में दिक्कतोंके मार्ग से काम करेगा तथा भाग्य के पक्ष में बड़ी कमजोरी पावेगा और धर्म का पालन ठीक नहीं कर सकेगा तथा कुछ कठिनाइयोंके द्वारा दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की शक्ति का साधन पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिये कमी के होते हुए भी खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध पावेगा और खर्चे के मार्ग में नीरसता रहेगी।
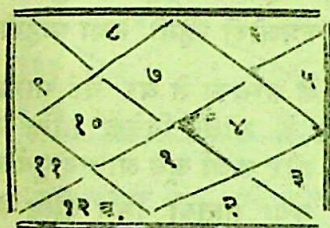
तुला लग्न से ६ बुध

नं० ६९०

यदि मेष का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति और बाहरी स्थानोंके योग से रोजगार में सफलता पावेगा तथा भाग्य का सुन्दर योग पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से स्त्री तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कमी महसूस करेगा और गृहस्थ के स्थान में खर्च

तुला लग्न में ७ बुध

नं० ६९१

की सुन्दर शक्ति पावेगा और धर्मका कुछ पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये देह में मान पावेगा और गृहस्थ के सम्बन्ध से भाग्यवान् समझा जायगा तथा विवेक शक्ति से यश और मान प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का बुध—आठवें आयु, मृत्यु तथा पुरातत्व स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में बड़ी कमजोरी पावेगा और धर्म के पक्ष में हानि पावेगा और खर्च के मार्ग

तुला लग्न में ८ बुध

नं० ६९२

में कमी एवं कुछ परेशानी पावेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतोंके साथ सफलता शक्ति पावेगा और आयु स्थानमें कुछ शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व शक्ति का कुछ लाभ पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन भवनको मंगल की वृश्चिकराशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाइयों के मार्ग से धन की वृद्धिके कारण पावेगा तथा यश की कमी रहेगी।

तुला लग्न में ९ बुध

नं० ६९३

यदि मिथुन का बुध—नवमत्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्यकी वृद्धि एवं शक्ति पावेगा और धर्म के मार्ग में श्रद्धा रखेगा तथा बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध से विवेक की सुन्दरता शक्ति द्वारा भाग्य की उन्नति का मार्ग पावेगा और भाग्य की शक्ति

से खर्चा खूब करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से भाग्य के अन्दर कुछ कमजोरी अनुभव करेगा तथा धर्म का पालन ठीक तौर से पूरा नहीं कर सकेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धनराशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति रहेगी तथा पुरुषार्थ स्थान में कुछ कमजोरी के साथ सफलता मिलेगी।

यदि कर्क का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र चन्द्रकी राशि पर बैठा है तो पिताके स्थान में भाग्य शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान रहेगा तथा कारबार के मार्ग में बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में खर्चा खूब करेगा और सफलता मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणसे पिताके लाभ स्थानमें कुछ कमी रहेगी और कारबार की उन्नति एवं राज-समाज के पक्ष में भी कुछ कमजोरी रहेगी तथा धर्म कर्म का थोड़ा पालन ठीकसे रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शनि की मकर राशि में माता एवं भूमि स्थान को देख रहा है, इसलिये मातृ स्थान और भूमि की कुछ शक्ति पावेगा और भाग्यवान् समझा जायगा।
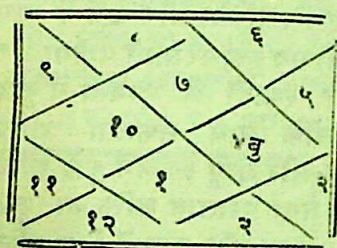
तुला लग्न में १० बुध

नं० ६९४

तुला लग्न में ११ बुध

नं० ६९५

यदि सिंह का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थानमें मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति और बाहरी स्थान के सम्बन्धसे आमदनीके मार्ग में अच्छी सफलता मिलेगी तथा भाग्यवान् माना जायगा तथा धर्मका पालन भी करेगा और व्ययेश होने के दोष के कारण लाभ स्थानमें कुछ

कमजोरी के भी कारण प्रतीत होंगे और सातवीं दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को मित्र शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ शक्ति पावेगा और विद्या में सफलता पावेगा क्योंकि बुध विवेक शक्तिका दाता है, इसलिये बुद्धि विवेक और वाणी की योग्यता से भाग्य में उन्नति के कारण पावेगा।

यदि कन्या का बुध—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी राशि में उच्च का होकर स्वक्षेत्र में बैठा है तो बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की उन्नति पावेगा और खर्चा विशेष करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारणों से भाग्य की उन्नति के मार्ग में दिक्कतें एव कुछ कमजोरी अनुभव होगी तथा देर से सफलता मिलेगी और बाहरी स्थानों में विशेष भाग्यवान् समझा जायगा तथा खर्चके मार्ग से धर्म का पालन करेगा और सातवीं नीच दृष्टि में शत्रु स्थान को मित्र गुरु की मीन राशिमें देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ अशान्ति एव कुछ अनुचित रूपसे कार्य निकाला जायगा पर कुछ दिक्कतें रहेंगी।
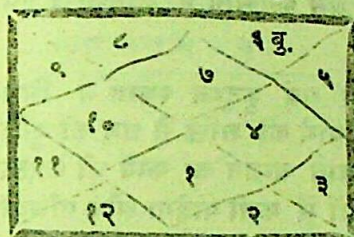
तुला लग्न में १२ बुध

नं० ६६६

भाई, पराक्रम, शत्रु तथा दिक्कत स्थानपति गुरु

यदि तुला का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में प्रभाव एवं पुरुषार्थ की शक्ति पावेगा तथा कुछ रोग और झंझट आदि परिश्रम का योग पावेगा और पुरुषार्थ के द्वारा मान पावेगा तथा भाई-बहिन का योग कुछ नीरसता युक्त मार्ग से पावेगा और शत्रु पक्ष में आदर्श मार्ग से एवं हिम्मत शक्ति से प्रभाव पावेगा और पचवीं शत्रु दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये

संतान पक्ष में कुछ वैमनस्यता पावेगा और विद्या बुद्धि में शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि एवं वाणी के द्वारा उत्थान पाने के लिये विशेष परिश्रम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री तथा रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार में शक्ति पावेगा तथा स्त्री स्थान में सहयोग का अच्छा सम्बन्ध पावेगा और नवीं मित्रदृष्टि से भाग्य एवं धर्मके स्थान को बुधकी मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य में उन्नति करेगा और धर्म के मार्ग में जानकारी एवं पालन करके यश प्राप्त करेगा।
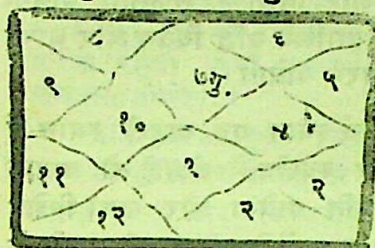
तुला लग्न में १ गुरु

८, ६, ९, ७ गु., ५, १०, ४, ११, १, ३, १२, २

नं० ६९७

यदि वृश्चिक का गुरु — दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ की शक्ति से धन की वृद्धि का योग प्राप्त करेगा और धन का स्थान बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिये भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों में कमी पावेगा और पांचवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की शक्ति और हिम्मत शक्ति से शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और परिश्रम एवं कुछ झंझटों के योग से धन की शक्ति पावेगा तथा कुटुम्ब स्थान में प्रभाव शक्ति पावेगा और धन की वृद्धि करने के लिये निरंतर परिश्रम एवं उद्योग में लगा रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में कुछ नीरसता

तुला लग्न में २ गुरु

८ गु, ६, ९, ७, ५, १०, ४, ११, १, ३, १२, २

नं० ६९८

से युक्त शक्ति पावेगा और पुरातत्व की कुछ शक्ति पावेगा तथा नवीं उच्च दृष्टि से राज्य स्थान एवं पिता स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति पावेगा तथा राज-समाज में मान पावेगा और कारबार में बड़ी उन्नति करेगा तथा अदर्श परिश्रम के मार्ग से हृदय बल की शक्ति से बड़ा प्रभाव और इज्जत पावेगा।

यदि धन का गुरु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो पराक्रम और पुरुषार्थ की महान् सफलता शक्ति मिलेगी तथा शत्रु स्थानपति होने के कारण से भाई बहिन की शक्ति में कुछ झंझट रहेगा किन्तु शत्रु पक्ष में विजय और प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े-झंझट, परिश्रम आदि दिक्कतों के मार्ग से शक्ति और हिम्मत पावेगा तथा पाँचवी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशिमें देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्मके योगसे रोजगार एवं स्त्री स्थान में सफलता और प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म से भाग्य की वृद्धि पावेगा और धर्म का यथा साध्य पालन करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ के द्वारा धन की आमदनी प्राप्त करेगा तथा अपनी प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन प्राप्त करेगा और प्रभाव युक्त रहेगा।
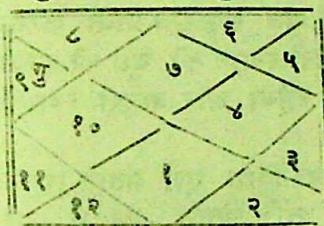
तुला लग्न में ३ गुरु

८ ६ ९ गु ७ ५ १० ४ ११ १ ३ १२ २

नं० ६१९

यदि मकर का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर नीच का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में सुख शान्ति की कमी और कष्ट का अनुभव करेगा तथा भूमि मका-

नादि के सुख में कुछ कमी पावेगा और भाई बहिन के सुख में भी कमी रहेगी और शत्रु पक्ष में झगड़े झंझटों के सम्बन्ध से सुख शान्ति में बाधा रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या में प्रभाव की शक्ति पावेगा और पुरातत्व स्थान का कुछ लाभ पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टिसे राज्य-स्थान एवं पिता-स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये राज-समाज में विशेष मान एवं प्रभाव पावेगा तथा पिता-स्थान की शक्ति पावेगा और कारबार मान प्रतिष्ठा आदि के मार्ग में खूब सफलता प्राप्त करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा।

तुला लग्न में ४ गुरु

नं० ७००

यदि कुम्भ का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर शत्रु की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कुछ दिक्कतें एवं कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति मिलेगी और विद्या स्थान में कुछ कठिन परिश्रमके योगसे सफलता एवं प्रभाव पावेगा तथा वाणी की शक्ति के द्वारा शत्रु स्थान में प्रभाव और विजय मिलेगा किन्तु दिमाग के अन्दर कुछ झंझटों से परेशानी का अनुभव होगा तथा भाई बहिनके पक्ष में कुछ मतभेद रहेगा और पराक्रम शक्ति का प्रयोग बुद्धि और युक्ति के द्वारा किया जायगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को
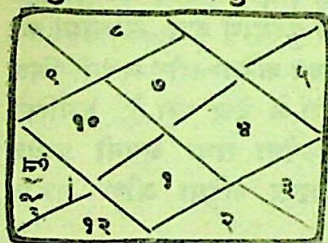
तुला लग्न में ५ गुरु

नं० ७०१

मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के योगसे भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का यथा शक्ति पालन करेगा और यश प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे लाभ स्थानको सूर्यकी सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये धन लाभकी शक्ति प्राप्त करेगा और नवमीं दृष्टिसे देहके स्थानको सामान्य शत्रु शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये देहमें सम्मान और प्रभाव की शक्ति पावेगा और छठें स्थान पति होनेके दोषसे स्वास्थ्य एवं संतानमें कुछ त्रुटि रहेगी।

यदि मीन का गुरु—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो शत्रु स्थान में आदर्श मार्ग से महान् प्रभाव की शक्ति पावेगा और झगड़े झंझटोंके मार्गसे पुरुषार्थ में सफलता शक्ति पावेगा तथा छठें स्थान का स्वामी होनेके दोषकारणोंसे भाईबहिनके

तुला लग्न में ६ गुरु

नं० ७०२

सम्बन्धों में कुछ वैमनस्यता प्राप्त होगी तथा पुरुषार्थ कर्म में कुछ परतन्त्रता युक्त प्रभावकी शक्ति पावेगा और पाँचवीं उच्च दृष्टिसे पिता एवं राज्य स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये पिताके स्थान की उन्नति करेगा तथा राजसमाजमें मान प्राप्त करेगा और कारबारमें वृद्धि प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थानको बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और पुरुषार्थ कर्म के योग से बाहरी स्थानों में सफलता शक्ति पावेगा और नवमी मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की बृश्चिक राशि में देख रहा है' इसलिये परिश्रम की विशेष शक्ति से धन वृद्धि करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ मतभेद के सहित शक्ति पावेगा और इज्जतदार माना जायगा।

यदि मेष का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा

तथा पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा रोजगार में उन्नति करेगा किन्तु शत्रु स्थान पति होने के दोष कारण से स्त्री पक्षमें कुछ मतभेद रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा भाई बहिनके पक्षमें कुछ दिक्कत रहेगी और पाँचवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थानको सूर्यकी सिंह राशिमें देखा रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के योगसे धन लाभकी शक्ति पावेगा तथा आवश्यकताओंकी पूर्ति पावेगा

तुला लग्न में ७ गुरु

नं० ७०३

और सातवीं दृष्टि से देह स्थान को सामान्य शत्रु शुक्रकी तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देहमें कुछ परेशानी तथा प्रभाव प्राप्त करेगा और नवमी दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी धन राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पराक्रम स्थानकी वृद्धि करेगा तथा भाईबहिन की सुख शक्तिमें कुछ कमी लिये हुये सहयोग पावेगा।

यदि वृष का गुरु आठवें आयु एवं मृत्यु तथा पुरातत्व स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में बैठा है तो भाई बहिन की सुख शक्ति में कमी पावेगा और पराक्रम स्थान के सम्बन्ध में कमजोरी पावेगा तथा शत्रु पक्ष के सम्बन्ध से जीवन में कुछ परेशानी सी रहेगी और छठें रोग स्थान का स्वामी होने के कारण

तुला लग्न में ८ गुरु

नं० ७०४

उदर के नीचे कुछ शिकायत रहेगी तथा पुरातत्व की कुछ शक्ति रहेगी पाँचवीं मित्र दृष्टि खर्च स्थान को एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम के योग से खर्च का संचालन करेगा तथा बाहरी स्थानों में शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं

रहा है इसलिये धन की वृद्धि के साधन बढ़ायेगा तथा कुटुम्ब से कुछ सहयोग पावेगा तथा नवमी नीच दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये माताके सुखमें कमी एवं क्लेश प्राप्त करेगा और भूमि, मकानादि के सुखमें एवं मातृ स्थानके सम्बन्धोंमें विशेष कमी रहेगी और कुछ परतंत्रता का अनुभव करेगा।

यदि मिथुन का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो परिश्रम के योग से भाग्य की वृद्धि और यश पावेगा तथा शत्रु पक्ष और झगड़े-झंझटों के योग से भाग्य में कुछ परेशानी रहेगी तथा धर्म के पालन स्थान में कुछ वृद्धि एवं कमजोरी पावेगा और पाँचवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ परेशानी को

(तुला लग्न में ९ गुरु)
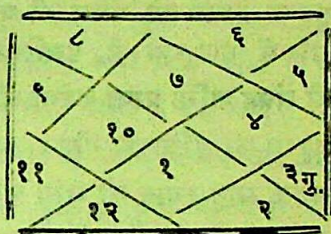
नं० ७०५

लिये हुए प्रभाव की शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पराक्रम की विशेष सफलता शक्ति, भाग्य और परिश्रमके योग से पावेगा तथा भाई-बहिन की शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा और नवीं शत्रु दृष्टि से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान स्थान को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्षमें कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या के स्थान में परिश्रम के योग से शक्ति प्राप्त

करेगा और वाणी एवं बुद्धि के द्वारा प्रभाव की शक्ति और बड़ी योग्यता पायेगा ।

यदि कर्क का गुरु—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थानमें उच्च का होकर चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में वृद्धि, तथा राज-समाज में मान और इज्जत मिलेगी और कारबार के मार्गमें उन्नति एवं सफलता पावेगा और भाई-बहिन का योग होगा, तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की वृश्चिक राशिमें देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा और

तुला लग्न में १० गुरु)
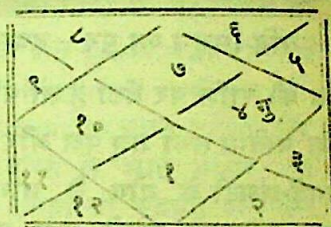
नं० ७०६

कुटुम्ब की शक्ति का गौरव पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से सुख भवन, मातृ स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये मातृस्थानके सुखमें कमी प्राप्त होगी और मकानादि रहने के स्थानोंमें कुछ त्रुटि रहेगी तथा नवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें विजय और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा झगड़े-झंझट आदि के मार्गों से तथा स्वयं परिश्रम और दौड़धूपके योगसे उन्नतिके कारण और मान-वृद्धि प्राप्त करेगा तथा छठे स्थान का स्वामी होने के दोषसे भाई-बहिन और पिता के सम्बन्ध में कुछ मतभेद रहेगा ।

यदि सिंह का गुरु - ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र सूर्य की राशिमें बैठा है तो परिश्रमके योगसे आमदनीके मार्गमें गौरव प्राप्त करेगा

और शत्रु पक्ष की तरफ से लाभ युक्त एवं प्रभाव युक्त रहेगा और झगड़े झंझट युक्त मार्गों से लाभ होगा तथा पाँचवीं दृष्टि से पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाईबहिन की शक्ति का लाभ और पराक्रम

(तुला लग्न में ११ गुरु)
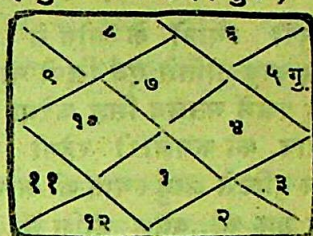
न० ७०७

स्थान की शक्ति के द्वारा विशेष सफलता पायेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और सन्तान पक्ष में कुछ नीरसता रहेगी किन्तु बुद्धि के स्थान में शक्ति पावेगा और नवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में शक्ति तथा रोजगार के मार्ग में सफलता शक्ति मिलेगी किन्तु छठे स्थान का स्वामी होने के दोष-कारण से भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ मतभेद रहेगा और आमदनी के मार्ग में विशेष दौड़-धूप करनी पड़ेगी।

यदि कन्या का गुरु - बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत करेगा तथा बाहरी स्थानों में शक्ति प्राप्त करेगा और भाई-बहिन के पक्ष में कमजोरी रहेगी तथा पुरुषार्थ शक्ति में कमजोरी रहेगी और कुछ परतन्त्रता का सा योग पावेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से माता के सुख स्थान को शनि की मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये माता के सुख-सम्बन्धोंमें कमी एवं कष्ट प्राप्त करेगा और मकानादि रहने के सुख स्थान में कुछ अशांति रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में

स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बाहरी स्थानों के योग से तथा कुछ दब्बू नीतिसे एवं छिपी नीतिसे शत्रु पक्षमें मतलब सिद्ध करेगा तथा प्रभाव की कमजोरी रहेगी और नवीं दृष्टिसे आयु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या एवं आयु में कुछ झंझटों के साथ शक्ति मिलेगी और पुरातत्व का कुछ लाभ पावेगा तथा छठें स्थान का स्वामी होने के दोष-कारण से खर्चके मार्ग में बाहरी सम्बन्धों में तथा भाई-बहिन आदि के पक्षों में कुछ परेशानी और झंझट-सी रहेगी।
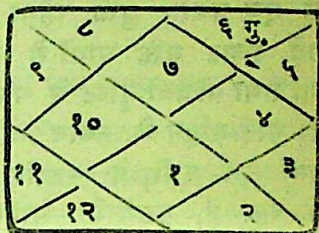
(तुला लग्न में १२ गुरु)

नं ७०८

देह, आयु तथा पुरातत्व स्थानपति—शुक्र

यदि तुला का शुक्र—प्रथम केन्द्र देहके स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो देह में आत्मबल की शक्ति तथा आयु की सुन्दर शक्ति मिलेगी और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का आदर्श लाभ पावेगा तथा देह के अन्दर प्रभाव और मान की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से देह में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु मंगल

(तुला लग्न में १ शुक्र)
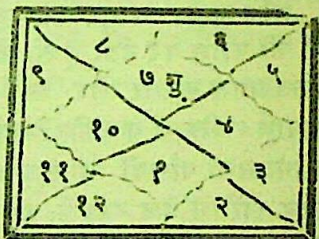
नं० ७०९

की मेष राशि में रोजगार तथा स्त्री स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री के पक्ष में खूब आत्मीयता रखते हुए भी कुछ स्त्री के सुख में कमी पावेगा और रोजगार के पक्ष में विशेष दिलचस्पी के साथ कार्य करने से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का शुक्र—दूसरे धन और कुटुम्ब स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन की शक्ति को प्राप्त करने के लिये विशेष प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति मिलेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष-कारणसे धन की संग्रह शक्तिमें कमी पावेगा और कुटुम्ब के सुख सम्बन्धों में कुछ अशान्ति रहेगी किन्तु धन-जन की उन्नति करने का ही मुख्य लक्ष्य रहेगा और सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ होगा और जीवन की दिनचर्या का रहन-सहन अमीरात के ढंग से व्यतीत होगा तथा बड़ी चतुराई के योग से इज्जत होगी।
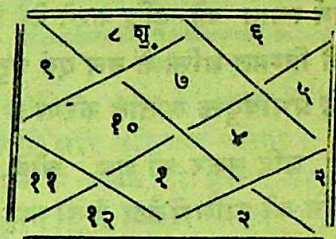
(तुला लग्न में २ शुक्र)

नं० ७१०

यदि धन का शुक्र—तीसरे भाई बहिन और पराक्रम स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के स्थानमें कुछ वैमनस्यता होगी और पुरुषार्थ शक्ति के स्थान में आत्मबल के योग और परिश्रम के द्वारा सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और आयु की

शक्ति प्राप्त होगी तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ चतुराई के द्वारा प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य और धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक परिश्रम के योग से भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा

(तुला लग्न में ३ शुक्र)
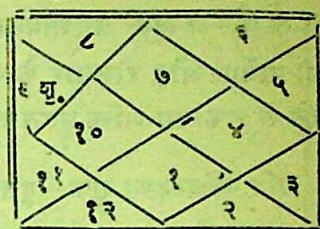
नं० ७११

धर्म स्थान की वृद्धि करने के लिये भी प्रयत्नशील रहेगा तथा देह की हिम्मत शक्ति के बल एवं चतुराई के योग से जीवन की दिनचर्या को प्रभावयुक्त व्यतीत करेगा।

यदि मकर का शुक्र चौथे केन्द्र माता और भूमिके स्थानपर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो मातृ स्थान की शक्ति प्राप्त करेगा तथा देह को आरामके साधन पायेगा किन्तु अष्टमेश होनेके दोष-कारणसे माता के सुख और प्रेम की कमी रहेगी तथा रहने के स्थान में भूमि का सुख होगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का सुख रहेगा और सातवीं दृष्टि से राज्य एवं पिता स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा को कर्क राशि में देख रहा है इसलिये पिता एवं कारबार की वृद्धि करने के लिये चतुराई के योग से प्रयत्नशील रहेगा और राज समाज में मान प्राप्त करेगा।
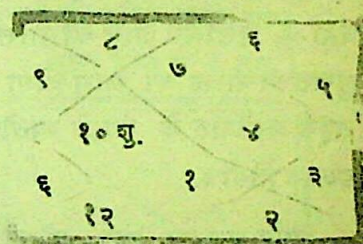
(तुला लग्न में ४ शुक्र)

८ ६ ७ ९ ५ १० शु. ४ ११ १ ३ १२ २

नं० ७१२

यदि कुम्भ का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो आत्मबल की शक्ति और चतुराई के योग से विद्या स्थान में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और वाक्चातुरी के द्वारा प्रभाव और मान प्राप्त होगा तथा संतान शक्ति पावेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से संतान पक्ष के सुख में कुछ त्रुटि अनुभव होगी और आयु का उत्तम योग मिलेगा तथा कुछ पुरातत्त्व शक्ति का फायदा पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये लाभ के स्थान में कुछ अरुचिकर रूप से लाभ की शक्ति मिलेगी और बुद्धिमान् बनेगा।

(तुला लग्न में ५ शुक्र)
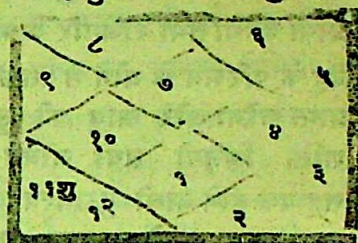
नं० ७१३

यदि मीन का शुक्र - छठे शत्रु स्थान में उच्च का होकर समान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव रखेगा और बड़ी-बड़ी दिक्कतों पर हमेशा हिम्मत शक्ति के द्वारा विजय प्राप्त करेगा साथ कुछ परतंत्रता युक्त जीवन व्यतीत करेगा और आयु की शक्ति का थोड़ा लाभ होगा और जीवन की दिनचर्या में शान-दारी रहेगी तथा देह में कुछ रोग और झंझट थोड़ा-सा पावेगा और सातवीं नीच दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्गमें कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों में कुछ दिक्कतें होंगी।

(तुला लग्न में ६ शुक्र)

नं० ७१४

यदि मेष का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशिपर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से स्त्री के पक्ष में कुछ दिक्कत पाते हुए आत्मीयता और शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में देह के परिश्रम के योग से सफलता प्राप्त करेगा और आयु की सुन्दर शक्ति मिलेगी तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा गृहस्थ जीवन में विकास प्राप्त होगा तथा सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए देह में सुन्दरता और आत्मशक्ति तथा प्रभाव पावेगा।

(तुला लग्न में ७ शुक्र)

नं० ७१५

यदि वृषभ का शुक्र—अष्टम आयु मृत्यु एवं पुरातत्त्व स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु के स्थान में शक्ति एवं वृद्धि प्राप्त करेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा किन्तु देहाधीश के अष्टम स्थान में बैठने के दोष के कारण शरीर की सुन्दरता और स्वास्थ्य में कमी प्राप्त होगी और बुढ़ापे के चिन्ह जल्दी दीखने लगेंगे और जीवन की दिनचर्या में शानदारी तथा प्रभाव रहेगा और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को

(तुला लग्न में ८ शुक्र)

नं० ७१६

सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये चतुराई युक्त कठिन कर्म करेगा और कुटुम्ब में कुछ वैमनस्यता होगी।

यदि मिथुन का शुक्र – नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य शक्ति का आनन्द मिलेगा तथा धर्म और ईश्वरमें विश्वास रखेगा किन्तु अष्टमेश होनेके दोषके कारण से भाग्य के अन्दर तथा धर्म पालन के अन्दर कुछ कमजोरी और जीवन की दिनचर्या को भाग्य के भरोसे पर रख कर हृदय में लापर-वाही रखेगा और आयु की शक्ति पावेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और देहमें कुछ शील तथा कुछ सुन्दरता पावेगा और सातवीं दृष्टि से भाई-बहिन एवं पुरुषार्थ स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये भाई-बहिन से कुछ मतभेद पावेगा और पराक्रम स्थान में शक्ति पावेगा।

(तुला लग्न में ९ शुक्र)

नं० ७१७

यदि कर्क का शुक्र—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो देह में प्रभाव और मान की शक्ति पावेगा और आयु की उत्तम शक्ति रहेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारणसे पिता के सुख में कुछ कमी रहेगी और राज समाजमें मान

(तुला लग्न में १० शुक्र)

नं० ७१८

मिलेगा तथा व्यापार कार्यके स्थानमें कुछ कठिनाइयोंके साथ-साथ शक्ति प्राप्त करेगा और उन्नति प्राप्त करने के लिये दैहिक परिश्रमके द्वारा चतुराइयोंके योगसे विशेष प्रयत्न करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे माता एवं सुख भवन को शनि की मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये माता का सुख और घरेलू सुख प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह के परिश्रम और चतुराई के योगसे आमदनी के मार्ग में सफलता और अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति प्राप्त करेगा तथा आयु की शक्ति पावेगा और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ होगा और जीवनकी दिनचर्यामें लाभका आनन्द मानेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इस लिये विद्या के स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में कुछ थोड़ी-सी अड़चनके साथ उत्साह शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणीके द्वारा प्रभाव शक्ति पावेगा।
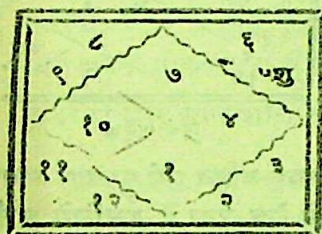
तुला लग्न में ११ शुक्र

नं० ७१९

यदि कन्या का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में नीच का होकर मित्र बुधकी राशिपर बैठा है तो खर्चके स्थानमें विशेष परेशानी अनुभव करेगा और बाहरी स्थानमें कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा आयु के सम्बन्धमें कमी और कष्ट के कारण बनेंगे तथा देहके पक्षमें कमजोरी

(तुला लग्न में १२ शुक्र)

नं० ७२०
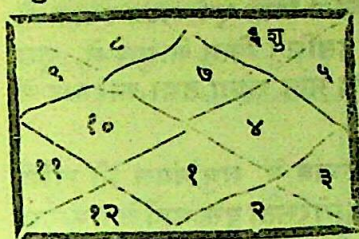
एवं दुर्बलता रहेगी और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति की हानि प्राप्त होगी तथा हृदय में कुछ अशान्ति रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में विशेष प्रभाव रखेगा और झगड़े-झंझट आदि मार्गों में बड़ी भारी हिम्मत और विशेष चतुराइयों से काम निकालेगा।

माता, भूमि, सुख, विद्या तथा संतान स्थानपति-शनि

यदि तुला का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में स्थूलता एवं प्रभाव पावेगा और मातृ स्थान की सुख शक्ति को उत्तम रूप से प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा संतान पक्ष से सुख शक्ति मिलेगी और विद्या का उत्तम ज्ञान प्राप्त होगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता पावेगा तथा पराक्रम स्थान में कुछ अधिक परिश्रम करने से सफलता शक्ति मिलेगी और सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद रहने के कारण थोड़ा—

(तुला लग्न में १ शनि)

नं० ७२१

सा कष्ट का अनुभव होगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ेंगी तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सुख में कुछ नीरसता रहेगी और राज-समाज में कुछ मान रहेगा तथा कारबार में शक्ति मिलेगी।

यदि वृश्चिक का शनि—दूसरे धन स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन के सुख-सम्बन्धों में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से सफलता प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के सुख में कुछ मतभेद रहेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये संतान पक्ष के सुख में कुछ कमी रहेगी और विद्या की कुछ शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु धन की वृद्धि करने में ही सुख का अनुभव करेगा तथा तीसरी दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की सहायता शक्ति एवं भूमि की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आठवें आयु स्थान एवं पुरातत्व स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ जीवन की सहायता के रूप में प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा आमदनी की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा और आमदनी की वृद्धि करने के लिये कठिन मार्ग से भी लाभ की सूरतें बुद्धि योग द्वारा स्थापित करेगा।
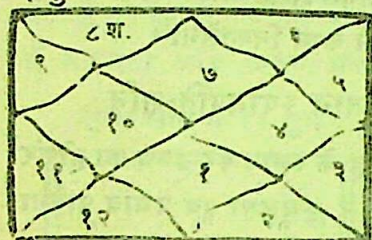
(तुला लग्न में २ शनि)

८ श.	७	६
९		५
१०		४
११	१	३
१२		२

नं० ७२२

यदि धन का शनि—तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति की विशेष सफलता पावेगा और कुछ

वैमनस्यता युक्त रूप से भाई-बहिन की शक्ति मिलेगी तथा मातृ स्थान की शक्ति प्राप्त होगी और परिश्रम के योग से प्रभाव और सुख तथा हिम्मत शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टिसे विद्या एवं संतान पक्षको स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या की विशेष शक्ति पावेगा और संतान पक्षमें शक्ति और सुख मिलने पर भी कुछ मतभेद रहेगा तथा वाणीमें उत्तेजना रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म में रुचि रखेगा और दसवीं मित्र दृष्टि खर्च एवं बाहरीस्थान को बुध की कन्या राशिमें देख रहा, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानोंका उत्तम सम्बन्ध प्राप्त करेगा।
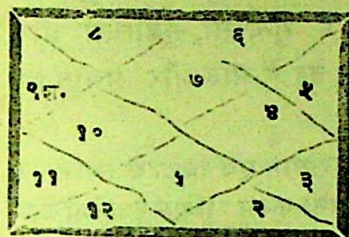
(तुला लग्न में ३ शनि)

नं० ७२३

यदि मकर का शनि—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर स्वयं अपनी राशिमें स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की सुख-शक्ति प्राप्त करेगा और मकानादि भूमिके स्थान की उत्तम शक्ति और सुख प्राप्त करेगा तथा संतान पक्षसे सुख प्राप्त करेगा और विद्याको सुखपूर्वक ग्रहण करेगा तथा तीसरी दृष्टिसे शत्रु स्थानको गुरु की मीन राशिमें शत्रु भावसे देख रहा ये शत्रु स्थानमें विशेष प्रभाव रखेगा और झगड़े-झंझटोंके मार्गमें विशेष नीरसता का भाव रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता स्थान एवं राज्यस्थान को चन्द्रमा की कर्क-राशि में देख रहा

(तुला लग्न में ४ शनि)

नं० ७२४

है, इसलिये पिता स्थान में कुछ मतभेद युक्त सुख शक्ति पावेगा तथा राज-समाज में मान प्राप्ति और कारबार की वृद्धि के लिये शान्ति से काम करेगा और दसवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता, सुडौलता और आनन्द प्राप्त करेगा तथा बुद्धियोग द्वारा देह में मान और प्रभाव का सुख भोगेगा।

यदि कुम्भ का शनि—पाँचवे त्रिकोण संतान एवं विद्या के स्थान पर स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्री बैठा है तो संतान पक्षमें शक्ति पावेगा तथा विद्या-बुद्धिसे सुख शक्ति प्राप्त करेगा और मातृ स्थान का एवं भूमि स्थान का सुख मिलेगा तथा वाणीके द्वारा गम्भीर प्रभावशाली बातें करेगा और तीसरी नीच दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगार के स्थानको मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्षमें कुछ मतभेद एवं कुछ कष्ट के कारण प्राप्त होंगे और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानियों से कार्य संचालित होगा तथा गृहस्थ भोगादिक पक्ष में कुछ त्रुटि रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से सफलता मिलेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से धनभवन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में कुछ त्रुटि युक्त सुख का अनुभव करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ मतभेद रहेगा किन्तु बुद्धि में आनन्द मानेगा।
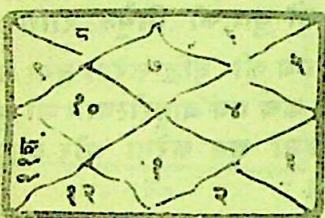
(तुला लग्न में ५ शनि)

नं० ७२५

यदि मीन का शनि—छठे शत्रु स्थानमें शत्रु गुरु की राशिपर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में कमी और वैमनस्यता का योग पावेगा

(तुला लग्न में ६ शनि)

नं० ७२६

तथा मकानादि रहनेके स्थानमें कुछ झंझट का योग होगा और संतान पक्षके सुख-संबंधों में दिक्कत और परेशानी पावेगा और विद्याके स्थान में कुछ कमी और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु स्थान में बुद्धि योग से विजय एवं प्रभाव प्राप्त करेगा तथा दिमागके अन्दर कुछ शांति की कमी पायेगा और तीसरी मित्र दृष्टिसे आयु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति पावेगा तथा पुरातत्त्व की कुछ सुख-शक्ति मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान को एवं बाहरी स्थान को बुधकी कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिये खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थान का सुख-सम्बन्ध होगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिनके पक्षमें कुछ वैमनस्यता पावेगा किन्तु पुरुषार्थ एवं हिम्मतकी वृद्धि करेगा।

यदि मेष का शनि— सातवें केन्द्र स्त्री स्थान एवं रोजगारके स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री गृहस्थ के सुख-साधनोंमें कमी एवं परेशानी प्राप्त होगी और रोजगार के मार्गमें कुछ परतन्त्रता एवं अशांति के कारण बनेंगे, तथा विद्या में कुछ कमजोरी रहेगी तथा सन्तान पक्ष में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा और तीसरी मित्र दृष्टिसे, भाग्य एवं धर्म स्थानको बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म के मार्गमें रुचि रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए देहका लम्बा कद एवं कुछ

(तुला लग्न में ७ शनि)

नं० ७२७

आराम और मान के साधन प्राप्त होंगे और दसवीं दृष्टि से माता, भूमि एवं सुख भवनको स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि के द्वारा किये गये कठिन परिश्रम के रोजगार से घरेलू सुखके साधन मिलेंगे तथा भातृ स्थान की कुछ शक्ति पावेगा किन्तु गृहस्थके सुख सम्बन्धों में कमी के कारणों से दिमागमें कुछ फिकर रहेगी।

यदि वृषभ का शनि—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थानमें मित्र शुक्र की राशिपर बैठा है तो माताके सुखमें कमी होगी तथा भूमि की

(तुला लग्न में ८ शनि)

नं० ७२८
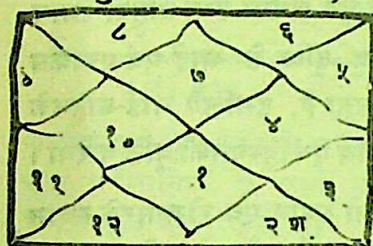
थोड़ी-सी पैतृक शक्ति और जीवन को सहायक होनेवाली कुछ पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा आठवें स्थान पर शनि दीर्घायु करता है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा तथा विद्या और सन्तान पक्षमें कुछ कमी एवं कष्ट होगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिए पिताके सम्बन्धमें कुछ वैमनस्यता होगी और राज-समाजमें कुछ कमी का सम्बन्ध और उन्नतिके मार्ग में कुछ नीरसता पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष स्थान में कुछ कमी रहेगी तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ नीरसता का योग पावेगा और दसवीं दृष्टि से सन्तान एवं विद्या स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में देख

रहा है, इसलिये विद्या एवं सन्तान पक्ष में कुछ थोड़ी सुख-शक्ति मिलेगी और मृत्यु स्थान में बैठा है, इसलिये दिमाग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा बुद्धि में कुछ छिपाव की शक्ति से काम लेगा।

(तुला लग्न में ९ शनि)

नं० ७२१
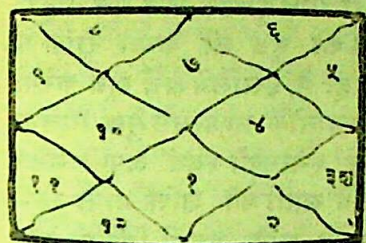
यदि मिथुन का शनि-नवमत्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बुद्धि योग द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म में रुचि रखेगा और उत्तम रूप से विद्या ग्रहण करेगा तथा संतान शक्ति का उत्तम सुख प्राप्त करेगा और मातृ स्थान की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा तथा मकानादि भूमि का आनन्द पायेगा और भाग्यवान् माना जायगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को शत्रु सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ नीरसता से सफलता शक्ति मिलेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ मतभेद होगा और विशेष परिश्रम के द्वारा पुरुषार्थ शक्ति की सफलता पायेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थानको गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्षमें कुछ वैमनस्यता एवं अरुचिकर रूपसे प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा तथा दिक्कतों पर विजय तथा बुद्धि योग एवं दैवयोग से भाग्योन्नति के साधन पावेगा तथा यश और भाग्य की शक्ति के द्वारा आनन्द का विशेष अनुभव करेगा।

यदि कर्क का शनि—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु चन्द्र की राशि पर बैठा है तो पिता-स्थान में कुछ नीरसता युक्त शक्ति मिलेगी तथा राज-समाज में कुछ मान और प्रभाव प्राप्त होगा और

(तुला लग्न में १० शनि)
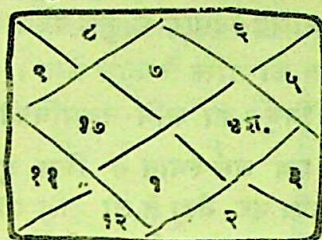
नं० ७३०

कारबार में कुछ दिक्कतों के साथ सफलता शक्ति के साथ विद्या ग्रहण करेगा तथा संतान पक्षमें उत्तम शक्ति पाने पर भी कुछ मतभेद रहेगा और तीसरी मित्र दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च खूब करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे सुख मिलेगा और सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि, स्थानको स्वयं अपनी मकर राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये माता की शक्ति प्राप्त होगी और भूमि, मकानादि रहने के स्थान की शक्ति अच्छी मिलेगी और प्रभाव युक्त मार्गसे सुखके साधन मिलेंगे तथा दसवीं नीच दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगारके स्थानको शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कुछ मतभेद के कारण परेशानी का अनुभव होगा और रोजगार के मार्ग में कुछ दिक्कतोंसे टकरा २ कर कार्य चलेगा तथा गृहस्थ भोगादिक सुखों की कुछ कमी रहेगी तथा बुद्धि में तेजी होगी।

यदि सिंह का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थानमें शत्रु सूर्य की राशि

(तुला लग्न में ११ शनि)
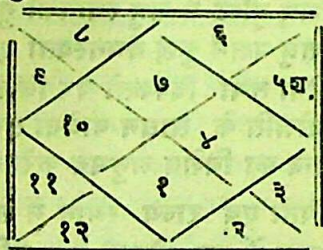
नं० ७३१

पर बैठा हो तो क्रूर ग्रह लाभ स्थानमें बैठनेसे अधिक लाभ करने की शक्ति देता है, किन्तु शत्रु राशिपर होने से बुद्धि योग द्वारा आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाई लिये हुए विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और माताके सुख को न्यूनताके साथ प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का लाभ होगा और तीसरी उच्च दृष्टिसे देहके स्थानको मित्र शुक्र की तुला राशिमें

देख रहा है, इसलिए देहमें स्थूलता एवं प्रभाव की शक्ति प्राप्त होगी और सातवीं दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या, बुद्धि की शक्ति पायेगा और दिमाग में कुछ गर्मी तथा चिंता-फिकर एवं विशेष स्वार्थ-परता होगी और संतान पक्षमें कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त रहेगी और दसवीं मित्र दृष्टिसे आयु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए आयु की शक्ति प्राप्त होगी तथा पुरातत्व की शक्ति का लाभ होगा और जीवन की दिनचर्या तथा देहमें कुछ मस्ती तथा सुख एवं लापरवाहीर हेगी।

यदि कन्या का शनि - बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध से सुख का योग प्राप्त करेगा किन्तु संतान पक्ष के सम्बन्ध में हानि एवं कमी रहेगी तथा विद्याके स्थान में कमजोरी और मातृ स्थान के सुख-सम्बन्धों में कमी प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की कमजोरी रहेगी तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से धन भवन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धनके कोष में भी कुछ कमजोरी पायेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ मतभेद रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टिसे शत्रु स्थान को गुरु की मीन राशिमें देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नीरसता के साथ शक्ति और प्रभाव होगा तथा दसवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्य की कुछ वृद्धि करेगा और धर्म के मार्ग में कुछ रुचि रखेगा तथा बुद्धि एवं वाणी के अन्दर भ्रम और कुछ परेशानी पायेगा।
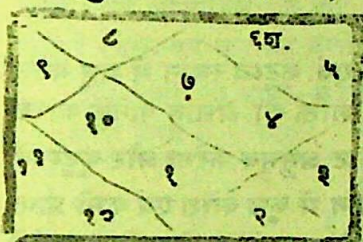
(तुला लग्न में १२ शनि)

न० ७३२

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्ति के अधिपति—राहु

यदि तुला का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो देह में कुछ परेशानी के कारण शरीर में कुछ कमी या कमजोरी रहेगी और अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिये महान् गुप्त युक्तियों का एवं चतुराइयों का प्रयोग होगा तथा दिखावटी प्रभाव अधिक पावेगा और अन्दरूनी गहरी उन्नति करने के लिये विशेष झंझट युक्त मार्गसे कठिन कर्मके द्वारा प्रयत्न करेगा तथा उन्नति के मार्ग में कभी-कभी महान् संकट का सामना करना पड़ेगा किन्तु फिर भी अपनी स्थिति के मुकाबले में उन्नति अवश्य प्राप्त करेगा क्योंकि आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये गहरी सूझ की शक्ति से और कठिनाइयों से सफलता मिलेगी।
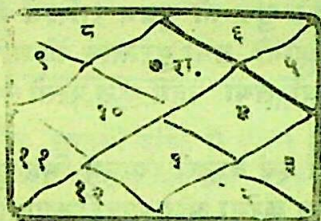
(तुला लग्न में १ राहु)

नं० ७३३

यदि वृश्चिक का राहु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु मंगल की राशिपर बैठा है तो धनकी संग्रह शक्ति का अभाव पानेके कारण कष्ट अनुभव करेगा और कुटुम्बके स्थान में कुछ क्लेश एवं कमी प्राप्त होगी तथा मंगल की राशि पर होने से धन वृद्धि के लिये कठिन प्रयत्न करेगा और कभी-कभी धनके मार्ग में भीषण कठिनाई या संकट का योग आयेगा किन्तु धनकी वृद्धि के लिये गुप्त युक्ति का कष्ट साध्य प्रयोग सदैव चलता रहेगा तथा कभी कोई मुफ्तकी सी धन राशि भी प्राप्त होगी।
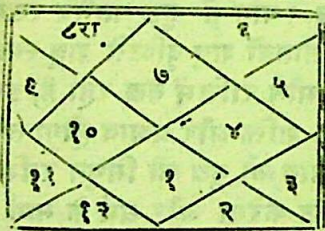
(तुला लग्न में २ राहु)

नं० ७३४

और धन की संग्रह शक्ति के लिये कोई नवीन और गम्भीर योजनाओं के द्वारा सफलता का मार्ग बनेगा।

यदि धन का राहु - तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर नीच (तुला लग्न में ३ राहु) का होकर बैठा है तो भाई-बहिन के
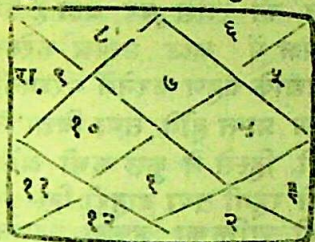
नं० ७३५

सम्बन्धमें परेशानी एवं कष्टके कारण होंगे और पराक्रम स्थान की कमजोरी प्राप्त करेगा तथा अपने पुरुषार्थ कर्मके कार्योंमें कुछ परतंत्रता का योग प्राप्त करेगा और गुप्त हिम्मत शक्ति के बल पर कार्य होगा तथा प्रकट रूपमें हिम्मत शक्ति के अन्दर कमजोरी के साथ अपनी पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि करने के लिये कभी-कभी कुछ अनुचित मार्ग का भी अनुसरण करेगा तथा कभी-कभी महान् संकट का सामना पाने पर बड़ा भय प्रतीत होगा किन्तु गुप्त युक्ति और आन्तरिक धैर्य की शक्ति से सफलता पा जायेगा क्योंकि तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बली हो जाता है।

यदि मकर का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर (तुला लग्न में ४ राहु) मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता

नं० ७३६
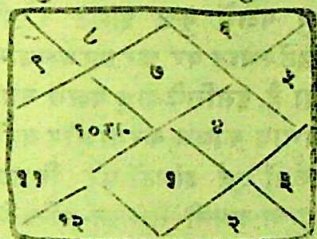
के सुख-सम्बन्धोंमें कमी और कष्टके कारण प्राप्त करेगा तथा भूमि, मकानादि की शक्तिमें सुख की कुछ कमी रहेगी और घरेलू सुखके साधनों में कुछ कमी रहेगी किन्तु शनि की राशि पर होने से युक्तिबल से और दृढ़ताके बल से सुख के साधनों को प्राप्त करेगा परन्तु कभी-कभी जीवनमें घरेलू वातावरण के अन्दर महान्

अशान्ति के कारण प्राप्त होंगे और अन्त में गुप्त शक्ति के बल पर संकट से मुक्ति मिलेगी तथा सुख प्राप्ति के साधन मिलेंगे।

यदि कुम्भ का राहु--पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में (तुला लग्न में ५ राहु) मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट उत्पन्न करेगा और विद्याके ग्रहण करनेमें परेशानी के कारण प्राप्त होंगे तथा विद्या के अन्दरूनी हिस्से में कुछ कमी और कमजोरी रहेगी तथा बाहरी हिस्सेमें विद्या की शक्ति का अच्छा प्रदर्शन रहेगा और दिमाग-शक्तिके अन्दर कुछ परेशानी एवं कुछ युक्तियों का योग मिलेगा तथा अपनी बातको सिद्ध करने के लिये सत्य-असत्य की परवाह नहीं की जायेगी बल्कि शनिके घरमें बैठा है, इसलिये अपने प्रत्येक शब्दों को दृढ़ताके रूपमें इस्तेमाल करेगा तथा विचारों में कुछ चिन्ता रहेगी।

नं० ७३७

यदि मीन का राहु--छठें शत्रु स्थान में एवं रोग, झगड़े-झंझट के (तुला लग्न में ६ राहु) स्थानमें शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्षमें कुछ झंझट रहेगी किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्षमें बड़ा भारी प्रभाव कायम करेगा और बड़ी २ दिक्कतों एवं झंझटों पर विजय पावेगा तथा अपनी हिम्मत-शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी महसूस करते हुये भी प्रकटमें बड़ी भारी हिम्मत और बहादुरी से काम लेगा तथा गुरु की राशि पर बैठा है, इसलिये आदर्श युक्ति के गुप्त बलसे सज्जनता युक्त
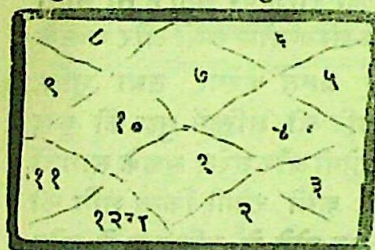
नं० ७३८

मार्गके द्वारा विपक्षियों में सफलता और प्रभाव प्राप्त होगा और रोगादिक मार्ग में सफलता और ननिहाल पक्षमें कुछ कमी रहेगी।

यदि मेष का राहु--सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगारके स्थान पर (तुला लग्न में ७ राहु) शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्षमें कठिन संकट प्राप्त करेगा और रोजगारके मार्गमें बड़ी दिक्कतों और परेशानियोंसे कार्य करेगा तथा स्त्री गृहस्थके अन्दर कभी-कभी गम्भीर चिंता प्राप्त होगी किन्तु गुप्त युक्ति और धैर्यके कारण गम्भीर परिस्थिति पर काबू पा सकेगा और बहुत-सी दिक्कतोंके बाद स्त्री स्थान में कुछ शक्ति पायेगा तथा रोजगारके पक्षमें कभी २ महान् संकट पाने पर भी हिम्मत और युक्ति से काम लेगा क्योंकि गरम ग्रह मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये विशेष परिश्रम और विशेष युक्तिबल तथा संघर्षो के योग से सफलता पायेगा।
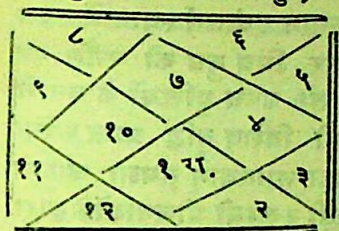
नं० ७३९

यदि वृषभ का राहु--आठवें आयु एवं पुरातत्त्व स्थान पर मित्र (तुला लग्न में ८ राहु) शुक्र की राशि पर बैठा है तो जीवनके अन्दर आयु स्थानमें बड़े २ महान् संकट प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी जीवन समाप्ति का सा योग बन जायेगा किन्तु आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है अतः जीवन रक्षा बराबर युक्ति बल से होती रहेगी और आयु स्थानमें शक्ति बनेगी तथा उदरमें कुछ शिकायत रहेगी और पुरातत्त्व स्थान में हानि प्राप्त होगी किन्तु किसी दूसरे मार्ग से जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व
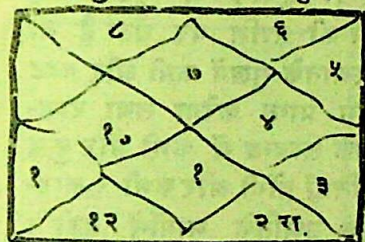
नं० ७४०

शक्ति का लाभ गम्भीर योजनाओं द्वारा प्राप्त होगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ चिन्ता और परेशानियों का योग प्राप्त रहने पर भी कुछ प्रभाव युक्त रहेगा।

(तुला लग्न में ९ राहु)

नं० ७४१
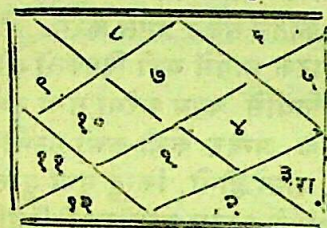
यदि मिथुन का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो उच्च युक्तियों के बल से भाग्य की विशेष वृद्धि प्राप्त करेगा और बड़ा भाग्यवान् समझा जायेगा तथा बड़ी २ लम्बी योजनाओंके द्वारा भाग्यकी वृद्धि के लिये सदैव महान् प्रयत्नशील रहेगा और धर्म के सम्बन्ध में बड़ी भारी छान-बीन करके किसी खास तरीके पर धर्मका पालन करेगा और कभी २ भाग्योन्नतिके मार्ग में विशेष बाधायें मिलेंगी किंतु विवेकी बुध के घर में मित्र भाव से बैठा है, इसलिये विवेक की महान् शक्ति और चतुराई से सदैव सफलता को पायेगा।

(तुला लग्नमें १० राहु)

नं० ७४२

यदि कर्क का राहु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो पिता-स्थानके सुखमें कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा राज-समाजके सम्बन्ध में कमी और कुछ परेशानियाँ होंगी और कभी २ कार-बार एवं उन्नतिके मार्गोंमें बड़ी २ दिक्कतें और झंझट प्राप्त होंगे तथा मन की शक्ति के स्वामी चन्द्रमा की राशि पर शत्रु भाव में बैठा है, इसलिये मान-प्रतिष्ठा कारवार के मार्ग में मन को अशांति रहेगी और उन्नति के स्थान में

रुकावटों और परेशानियों का क्रम बना रहेगा तथा बड़ी दिक्कतों के बाद उन्नति होगी।

यदि सिंह का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी कठिनाइयों का योग प्राप्त होगा किन्तु ग्यारहवें स्थानपर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिए दिक्कतों का मार्ग होते हुये भी आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति मिलेगी तथा बड़ी युक्तियों से सफलता पायेगा और सूर्य की राशि पर होने से लाभ प्राप्ति के स्थान में हठधर्मी से काम लेगा और अधिकसे अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करेगा किन्तु कभी २ आमदनी के स्थान में कोई महान् संकट का योग प्राप्त करेगा तथा बाद में शक्ति प्राप्त होगी।

(तुला लग्न में ११ राहु)
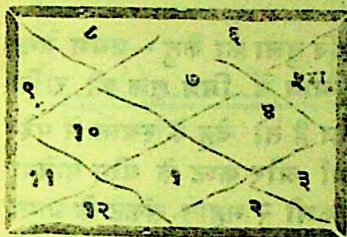
नं० ७४३

यदि कन्या का राहु—बारहवें खर्च स्थान में एवं बाहरी स्थान में परम मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा और खर्च के कारणों को कुछ परेशानियों के योग से संचालित करेगा तथा खर्च के मार्ग में कभी २ कोई महान् संकट का योग बनेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानियों के योग से अच्छा सम्बन्ध बनाएगा क्योंकि विवेकी बुध की राशि पर कूटनीतिज्ञ राहु मित्र भाव में बैठा है, इसलिये खर्च के सम्बन्ध में बड़ी भारी विवेक

(तुला लग्न में १२ राहु
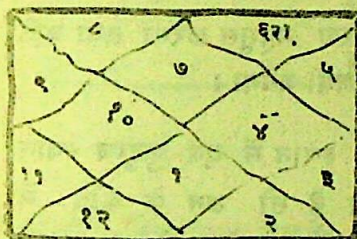
नं० ७४४

शक्ति से और युक्तिबल से सफलता पायेगा और इसी प्रकार बाहरी सम्बन्धों में भी विवेक और युक्ति बल से बड़ी कामयाबी रहेगी।

कष्ट, कठिन कर्म तथा गुप्त शक्ति के अधिपति-केतु

(तुला लग्न में १ केतु)
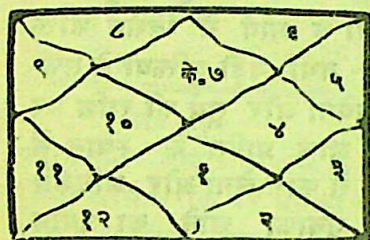
नं० ७४५

यदि तुला का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में परेशानियाँ और कष्ट के योग पायेगा तथा कभी २ महान् संकट के प्राप्त होने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से काम निकालेगा और परम चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर मित्र भाव में बैठा है इसलिए देह के कठिन कर्म के योग से महान् चतुराइयों के द्वारा अपने व्यक्तित्व की उन्नति करेगा तथा मान-प्रतिष्ठा पायेगा और गुप्त युक्ति के बल से बड़ी गहरी योजना बनाकर सफलता प्राप्त करेगा तथा देह में कुछ अन्दरूनी कमी के कारण महसूस करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति के गुप्त बल से विजयी बनेगा।

यदि वृश्चिक का केतु—दूसरे धन स्थान में एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में बड़ी कमी रहेगी और कुटुम्ब के सम्बन्ध में बड़ा क्लेश होगा तथा धन के सम्बन्ध में कभी २ महान् संकट का सामना करेगा और धन के लिए कठिन कर्म का प्रयोग और कुछ गुप्त शक्ति के द्वारा भी धन की

(तुला लग्न में २ केतु)

नं० ७४६

प्राप्ति करेगा क्योंकि मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये धन और कुटुम्ब के सम्बन्ध से सदैव ही कुछ न कुछ परेशानियाँ प्राप्त होती रहेंगी किन्तु धन की पूर्ति करने के लिये कष्ट-साध्य कर्म को बड़ी भारी हिम्मत के साथ करता रहेगा और कुछ गुप्त रूप से धन की शक्ति पाने पर भी धन के सम्बन्ध में अन्दरूनी दुःख का अनुभव प्राप्त होगा।

यदि धन का केतु—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर उच्च का होकर बैठा है तो पराक्रम स्थान की महान् वृद्धि करेगा और बहिन भाइयों की विशेष शक्ति मिलेगी और तीसरे स्थानपर क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये कठिन से कठिन कार्यों को बड़ी जबरदस्त मुस्तैदी के साथ पूरा करेगा और कभी हिम्मत नहीं हारेगा तथा महान् कठिन कर्म की पूर्ति के द्वारा बड़ी भारी प्रभाव-शक्ति पायेगा और सदैव दौड़-धूप में लगा रहेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक दोष के कारण कभी-कभी भाई के स्थान से कोई परेशानी का योग होगा तथा कभी कोई गुप्त पराक्रम शक्ति के अन्दर कमजोरी पाने से कुछ कष्ट अनुभव करेगा।
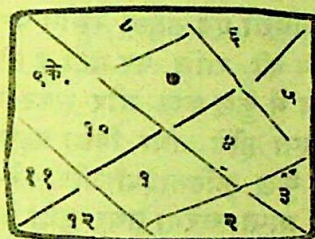
(तुला लग्न में ३ केतु)

नं० ७४७

यदि मकर का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में कमी और कष्टके कारण तथा मकानादि भूमि की कमी प्राप्त करेगा और घरेलू सुख-सम्बन्धों में झंझट और परेशानी होगी तथा गरम ग्रह शनि की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये कभी २ घरेलू वातावरण में महान् अशांतिके कारण प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त शक्ति और कठिन कर्म के द्वारा सुख प्राप्ति के साधन प्राप्त होगा फिर भी कुछ न कुछ मकान आदि सुख के सम्बन्धों में कमी प्राप्त रहेगी तथा गहरे सुख की खोज में रहेगा।
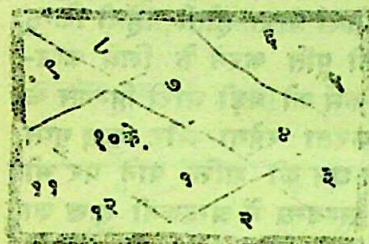
(तुला लग्न में ४ केतु)

नं० ७४८

यदि कुम्भ का केतु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कुछ कष्ट और संकटके योग प्राप्त होंगे तथा विद्या ग्रहण करने में कुछ कठिनाइयाँ और परेशानियाँ प्राप्त करेगा तथा बुद्धि के अन्दर कुछ अन्दरूनी कमजोरी महसूस होगी और शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये कठिन कर्मके द्वारा विद्या की शक्तिका संग्रह करेगा और बहुत सी अति कठिनाइयों के बाद संतान पक्ष में शक्ति पावेगा किन्तु फिर कभी २ संतान पक्षमें गहरे संकट का सामना होगा।

(तुला लग्न में ५ केतु)

नं० ७४९

यदि मीन का केतु—छठें शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु के स्थान में बड़ा प्रभाव रखेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम लेगा तथा देव गुरु बृहस्पति के घर में बैठा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ी योग्यता और दृढ़ता तथा निर्भयता से काम लेगा। उत्तम रूप के साथ शत्रु पक्ष में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा, छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये कभी-कभी शत्रु स्थान में महान् संकट प्राप्त करेगा और परेशानियों पर काबू पाने के लिये गुप्त शक्ति के कठिन कर्म का प्रयोग करेगा तथा ननिहाल पक्ष में कमजोरी पायेगा।

(तुला लग्न में ६ केतु)

नं० ७५०
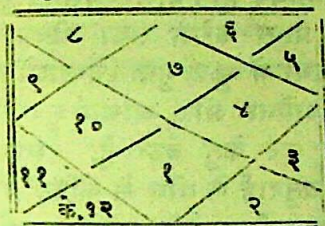
यदि मेष का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष कष्ट अनुभव करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी दिक्कतें प्राप्त होंगी और गरम ग्रह की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये कभी २ गृहस्थ के स्थान में महान् संकट का योग प्राप्त करेगा किंतु गृहस्थ एवं रोजगार के पक्ष में सफलता पाने के लिये गुप्त शक्ति के कठिन कर्म का प्रयोग दृढ़ता के साथ करेगा और बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम लेगा तथा कभी कुछ इन्द्रिय विकार प्राप्त करेगा और बड़ी परेशानियों के बाद गृहस्थ शक्ति को प्राप्त करेगा।

(तुला लग्न में ७ केतु)

नं० ७५१

यदि वृषभ का केतु—आठवें आयु स्थान एवं पुरातत्त्व स्थान में मित्र

(तुला लग्न में ८ केतु)

नं० ७५२
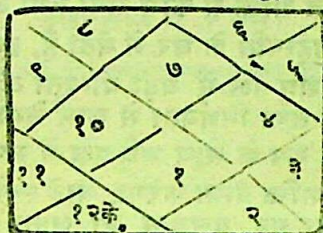
शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में कई बार महान् संकट प्राप्त करेगा तथा पुरातत्त्व स्थान में जीवन की सहायक होने वाली शक्तिकी कुछ हानि प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ गुप्त चिन्ताओं का योग पायेगा और आचार्य शुक्र की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये महान् चतुराई के योग से कठिन कर्म के द्वारा जीवन की सहायक शक्ति प्राप्त करेगा और कुछ गुप्त शक्ति के बल से हृदय में साहस मिलेगा किन्तु अपने जीवन की दिनचर्या में किसी प्रकार की खास कमी महसूस करेगा और उदर में कुछ विकार होगा।

यदि मिथुन का केतु -- नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में महान् कष्ट पायेगा तथा धर्म के स्थान में हानि प्राप्त करेगा और भाग्य की उन्नतिके लिये बड़ी २ परेशानियाँ पायेगा तथा कभी २ भाग्य के स्थान में घोर संकट का योग पावेगा किन्तु विवेकी बुध की राशिपर बैठा है, इसलिये भाग्य की रक्षा एवं उन्नति के लिये महान् कठिन कर्म के द्वारा मार्ग बना सकेगा और कुछ अनुचित मार्ग के द्वारा भी स्वार्थ की सिद्धि पाने का प्रयत्न करेगा तथा कभी कोई अपयश पायेगा तथा बरक्कत की कुछ कमी रहेगी और ईश्वर में श्रद्धा एवं विश्वास की कमी होगी।

(तुला लग्न में ९ केतु)

नं० ७५३

यदि कर्क का केतु—दसवें केन्द्र पिता स्थान एवं राज्य स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान के सम्बन्ध में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में कुछ परेशानी और मान की कमी होगी और कारबार की उन्नति के मार्गमें बार-बार दिक्कतें और झंझटें प्राप्त होंगी तथा राज-काज, व्यापार आदि सम्बन्धों में कभी २ भयानक संकट का योग प्राप्त होगा और बड़ी २ दिक्कतें सहने के बाद एवं बहुत उतार चढ़ाव के बाद कठिन परिश्रम की गुप्त शक्ति के द्वारा सफलता का मार्ग पायेगा।

(तुला लग्न में १० केतु)

नं० ७५४

यदि सिंह का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो लाभ के स्थान में कुछ झंझट और परेशानी के कारण पायेगा किन्तु ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिए आमदनी के स्थान में विशेष शक्ति मिलेगी अर्थात् आमदनी की वृद्धि करने के लिए गुप्त शक्ति के कठिन परिश्रम से लाभ के स्थान में विशेष संकट का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में सफलता मिलेगी और सूर्य की राशि पर होने से आमदनी के मार्ग में फायदे से अधिक मुनाफा खाने का भारी प्रयत्न करेगा और प्रभाव रखेगा।

(तुला लग्न में ११ केतु)

नं० ७५५

यदि कन्या का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में परम मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो

खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति पायेगा और विवेकी बुध की राशि पर केतु बैठा है, इसलिए खर्च की शक्तिको सुचारु रूप में चलाने के लिए बड़ी विवेक शक्ति से काम लेगा और खर्च की शक्ति में वृद्धि और सफलता पाने के लिए गुप्त रूप की शक्ति से कठिन परिश्रम के द्वारा काम करेगा फिर भी कभी २ खर्च के मार्ग में महान् संकट का योग पायेगा तथा बाहरी स्थानों में परेशानी के योग प्राप्त करेगा किन्तु अन्त में शक्ति प्राप्त होगी।

(तुला लग्न में १२ केतु)
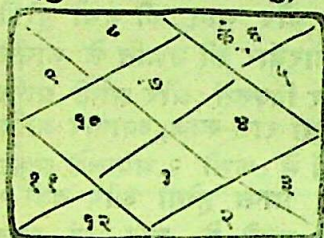
नं० ७५६

॥ तुला लग्न समाप्त ॥
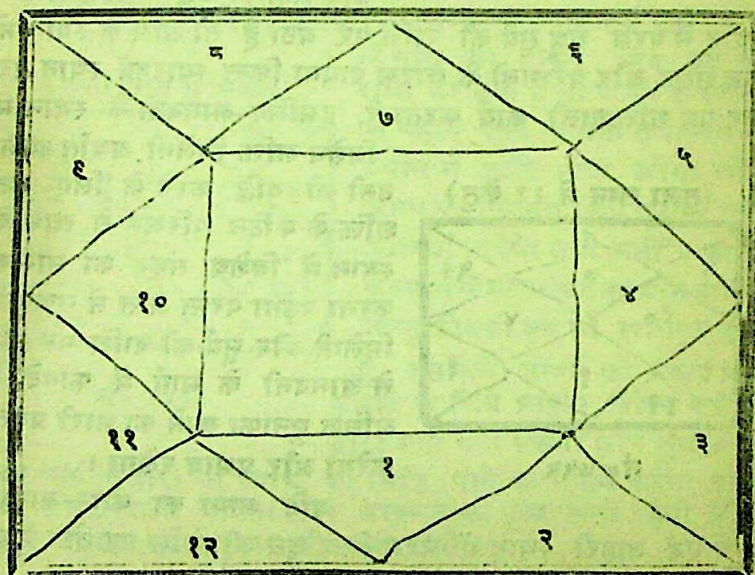
वृश्चिक लग्न का फलादेश प्रारम्भ
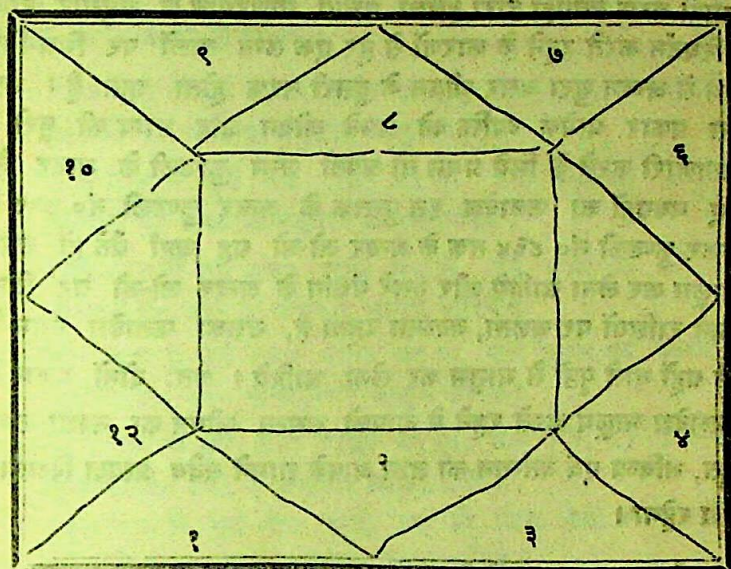
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

[कुण्डली नं० ८६४ तक में देखिये]

प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकार से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २

स्थान पर जैसा २ अच्छा-बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं, उसका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचरगति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ७५७ से लेकर कुण्डली नं० ८६४ तक के अन्दर जो-जो ग्रह जहाँ बैठे हों उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता, बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नौ ग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये। अतः दोनों प्रकार से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थनों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई गई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका असर फल लागू हो जायेगा।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ७५७ से ७६८ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिए।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७५७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७५८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७५९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७६८ के अनुसार मालूम करिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ७६९ से ७८० तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७६९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश

कुण्डली नं० ७७७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७७९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुल राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ७८० के अनुसार मालूम करिये।

८ - वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये
जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ७८१ से ७९२ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७८९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९२ के अनुसार मालूम करिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० ७९३ से ८०४ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९७ के अनुसार मालूम करिये।

१--जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९८ के अनुसार मालूम करिये।

२--जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ७९९ के अनुसार मालूम करिये।

३--जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८०० के अनुसार मालूम करिये।

४--जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८०१ के अनुसार मालूम करिये।

५--जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८०२ के अनुसार मालूम करिये।

६--जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८०३ के अनुसार मालूम करिये।

७--जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८०४ के अनुसार मालूम करिये।

८--वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर--गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ८०५ से ८१६ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८--जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८०५ के अनुसार मालूम करिये।

९--जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८०६ के अनुसार मालूम करिये।

१०--जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८०७ के अनुसार मालूम करिये।

११--जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८०८ के अनुसार मालूम करिये।

१२--जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८०९ के अनुसार मालूम करिये।

१--जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८१० के अनुसार मालूम करिये।

२--जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८११ के अनुसार मालूम करिये।

३--जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८१२ के अनुसार मालूम करिये।

४--जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८१३ के अनुसार मालूम करिये।

५--जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ८१४ के अनुसार मालूम करिये।

६--जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८१५ के अनुसार मालूम करिये।

७--जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८१६ के अनुसार मालूम करिये।

८--वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० ८१७ से ८२८ तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८--जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८१७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुंडली नं० ८१८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८१९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२० के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस का फलादेश कुण्डली नं० ८२१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृशभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८२८ के अनुसार मालूम करिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ८२९ से ८४० तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८२९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३१ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेश राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८३९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४० के अनुसार मालूम करिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये
जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ८४१ से ८५२ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डलो नं० ८४२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८४८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डलो नं० ८४९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५२ के अनुसार मालूम करिये।

८—वृश्चिक लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुंडली नं० ८५३ से ८६४ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० ८५३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुंडली नं० ८५४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५५ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशिप र हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८५९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ८६४ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

पिता, राज्य तथा प्रभाव स्थान पति—सूर्य

यदि वृश्चिक का सूर्य— प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र मंगल की

(वृश्चिक लग्न में १ सूर्य)
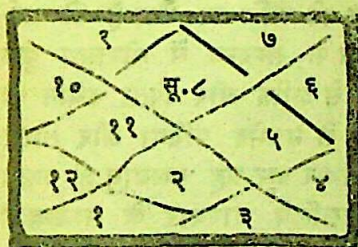
नं० ७५७

राशि पर बैठा है तो पिता की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और कारबार के मार्ग में प्रभाव और सफलता पायेगा तथा देह में गौरव और प्रभाव तथा गुस्सा एवं स्वाभिमान विशेष रखेगा एवं सुन्दर सुसज्जित रूप से वस्त्र इत्यादि पहिनेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री तथा रोजगार के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कुछ प्रभाव और मतभेद रखेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ नीरसता या वैमनस्य के योग से सफलता शक्ति पावेगा और हुकूमत तथा हेकड़ी से काम लेगा।

यदि धन का सूर्य—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो पैतृक मार्ग एवं कारबार के द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का प्रभाव पायेगा और राज-समाज से मान और लाभ प्राप्त करेगा एवं धन-जन की शक्ति का गौरव रहेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये पिता के सुख-सम्बन्धों में कुछ कमी पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन की सहायक होने वाली कुछ शक्ति पावेगा तथा आयु स्थान में तथा जीवन की दिनचर्या में शक्ति और प्रभाव मिलेगा।

(वृश्चिक लग्न में २ सूर्य)

सू.९	७
१० ८ ६	
११ ५	
१२ २ ४	
१ ३	

नं० ७५८

यदि मकर का सूर्य—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के सम्बन्ध में नीरसता युक्त मार्ग से शक्ति और पिता स्थान की तरफ से मतभेद पायेगा और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये कारबार के सम्बन्ध में पराक्रम स्थान के द्वारा खूब सफलता पावेगा और राज-समाज के स्थान में मान और प्रभाव पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से धर्म एवं भाग्य स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म की सफलता से यश
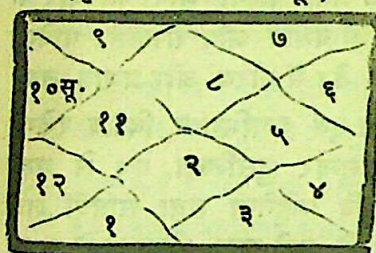
(वृश्चिक लग्न में ३ सूर्य)

नं० ७५९

मिलेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति रहेगी।

यदि कुम्भ का सूर्य—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर शत्रु

(वृश्चिक लग्न में ४ सूर्य)

नं० ७६०

शनि की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में कुछ मतभेद पावेगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति में कुछ नीरसता युक्त मार्ग से प्रभाव पावेगा तथा घरेलू सुख-सम्बन्धों में कुछ खरखरा रहते हुए भी शक्ति रहेगी और सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी सिंह राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति का सहयोग मिलेगा और राज-समाज के सम्बन्धों में मान और प्रभाव की प्राप्ति रहेगी और कारबार के स्थान में अपने घर से ही उन्नति के मार्ग प्राप्त करेगा तथा शक्ति युक्त रहेगा।

यदि मीन का सूर्य—पांचवें त्रिकोण सन्तान एवं विद्या के स्थान में

(वृश्चिक लग्न में ५ सूर्य)

नं० ७६१

मित्र गुरु की राशि पर बैठा है, तो विद्या स्थान में विशेष शक्ति एवं प्रभाव प्राप्त करेगा तथा राजनीतिक ज्ञान की शक्ति से मान और उन्नति पावेगा तथा संतान पक्ष में विशेष महत्त्व प्राप्त होगा तथा पिता की शक्ति पावेगा और बुद्धि योग द्वारा कारबार की वृद्धि होगी तथा दिमाग के अन्दर हुकूमत और क्रोध रखेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देखा रहा है, इसलिये धन लाभ की वृद्धि के

उत्तम साधन प्राप्त करेगा और आमदनी के मार्ग में बुद्धि के बल से सफलता पावेगा।

यदि मेष का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की

(वृश्चिक लग्न में ६ सूर्य)
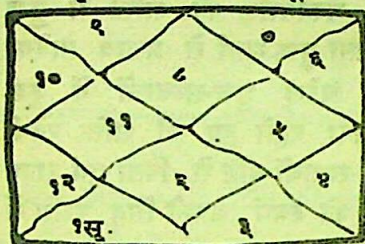
नं० ७६२

राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष के अन्दर महान् प्रभाव की शक्ति और विजय प्राप्त करेगा तथा पिताके स्थान में प्रभाव और मतभेद रहेगा तथा राज-समाज में बड़ा प्रभाव और मान पावेगा तथा कारबार के मार्ग में महान् परिश्रम एवं प्रभावशाली कर्म के द्वारा विशेष उन्नति करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी और कुछ कमजोरी पावेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता और दिक्कतें प्राप्त रहेंगी।

यदि वृषभ का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु

(वृश्चिक लग्न में ७ सूर्य)

नं ७६३

शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता युक्त प्रभाव की शक्ति पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के योग से उन्नति करेगा तथा पिता स्थान की कुछ सहायक शक्ति प्राप्त होगी और राज-समाज से सम्बन्धित कार्यों में कुछ मान और प्रभाव पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और गौरव प्राप्त

करेगा तथा कुछ शोभा युक्त वस्त्र पहिनेगा तथा कारबार की उन्नति करने के लिये विशेष प्रयत्न करता रहेगा।

यदि मिथुन का सूर्य—आठवें मृत्यु स्थान में मित्र बुध की राशि पर

(वृश्चिक लग्न में ८ सूर्य)

नं० ७६४

बैठा है तो पिता के सम्बन्ध में हानि और परेशानी का योग पावेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में विशेष कठिनाइयां मिलेंगी और आयु स्थान में शक्ति मिलेगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा और पुरातत्त्व सम्बन्ध की शक्ति का लाभ रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये कठिन परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि के कारण उत्पन्न करेगा और कुटुम्ब में कुछ प्रभाव होगा। तथा कुछ दूसरे स्थान का सम्पर्क पावेगा।

यदि कर्क का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र

(वृश्चिक लग्न में ९ सूर्य)

नं० ७६५

चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति के अन्दर विशेष प्रभाव पावेगा तथा धर्म का पालन करेगा तथा राज-समाज में मान और प्रभाव पावेगा तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में भाग्य को शक्ति से उन्नति पावेगा और उत्तम आदर्श कर्म के द्वारा सफलता और यश प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए

भाई-बहिन के पक्ष में मतभेद रखेगा और पराक्रम शक्ति के स्थान में कुछ नीरसता के साथ शक्ति और प्रभाव पावेगा।

यदि सिंह का सूर्य—दसम केन्द्र पिता स्थान में एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर बैठा है तो पिता-स्थान की शक्ति का प्रभाव पावेगा तथा राज-समाज में मान एवं शक्ति प्राप्त करेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा तथा मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की वृद्धि करने के लिये उग्र कर्म करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं मकानादि के सुख भवन को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सम्बन्ध में वैमनस्यता अथवा नीरसता पावेगा और भूमि मकानादि के स्थान में एवं सुख सम्बन्धों में कुछ कमी प्रतीत होगी।
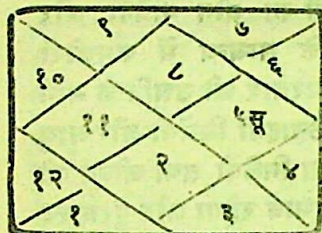
(वृश्चिक लग्न में १० सूर्य)

नं० ७६६

यदि कन्या का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान के सम्बन्ध से विशेष लाभ पावेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में प्रभाव कर्म के द्वारा लाभ की उत्तम शक्ति पावेगा और कारबार के मार्ग में विशेष लाभ करेगा और मान-प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की शक्ति पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा
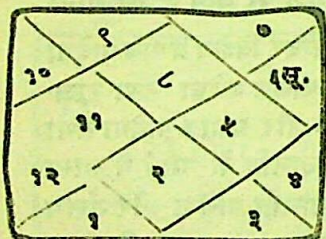
(वृश्चिक लग्न में ११ सूर्य)

नं० ७६७

विद्या के अन्दर शक्ति और प्रभाव पावेगा तथा विद्या एवं वाणी के द्वारा मान-प्रतिष्ठा पावेगा तथा हुकूमत और तेजी का स्वभाव पावेगा।

यदि तुला का सूर्य—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शुक्र की (वृश्चिक लग्न १२ सूर्य) राशि पर नीच का होकर बैठा है तो खर्च के स्थान में बड़ी दिक्कतें पावेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में बड़ी कमजोरी रहेगी और पिता स्थान की तरफ से कष्ट और कमजोरी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के लिये बड़ी परेशानियाँ प्राप्त करेगा एवं राज-समाज के सम्बन्ध में प्रभाव की कमी और कभी २ मान

नं० ७६८

हानि के कारण पावेगा तथा कुछ परतन्त्रता युक्त कर्म करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु के स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में शक्ति से काम करेगा।

भाग्य, धर्म तथा मन स्थानपति—चन्द्र

यदि वृश्चिक का चन्द्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीच का होकर (वृश्चिक लग्न में १ चन्द्र) मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी पायेगा तथा धर्म पालन के लिये श्रद्धा में कुछ कमी रहेगी और देह में कुछ कमजोरी रहेगी तथा सुयश की कुछ कमी रहेगी और भाग्योन्नति के मार्ग में कुछ रुकावटें पाने की वजह से मन में अशान्ति अनुभव करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से

नं० ७६९

स्त्री एवं रोजगार के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये

मनोबल और भाग्य-बल के द्वारा रोजगार में सफलता शक्ति पावेगा तथा स्त्री स्थान में सुन्दरता प्राप्त करेगा।

यदि धन का चन्द्र—दूसरे धन स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो मन और भाग्य की शक्ति से धन की शक्ति का उत्तम आनन्द पायेगा तथा कुटुम्ब का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये धर्म का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा और भाग्य में चमत्कार रहते हुए भी भाग्य में कुछ घिराव सा रहेगा और धन की संग्रह शक्ति के योग से यश और मान मिलेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में शक्ति मिलेगी और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ भाग्य द्वारा मिलेगा।
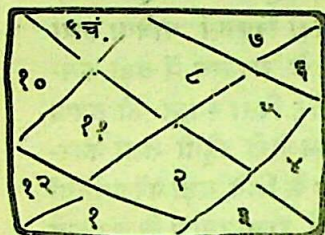
(वृश्चिक लग्न में २ चन्द्र)

नं० ७७०

यदि मकर का चन्द्र—तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो मनोयोग के बल से तथा भाग्यबल से पराक्रम स्थान में सफलता शक्ति पावेगा और भाई-बहिन के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा मन के अन्दर बड़ी हिम्मत रखेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति पावेगा और भाग्यवान् समझा जावेगा
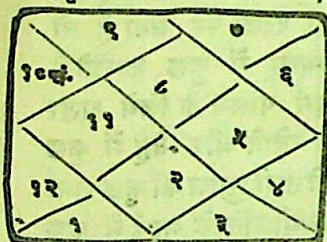
(वृश्चिक लग्न में ३ चन्द्र)

नं० ७७१

तथा धर्म का यथा शक्ति पालन करेगा और यश प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने से मन के अन्दर भाग्य के सम्बन्ध में कुछ कमी अनुभव करेगा।

यदि कुम्भ का चन्द्र —चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है, तो माता के पक्ष में सुन्दर शक्ति पावेगा और भूमि का सुख प्राप्त रहेगा तथा मनोयोग के बल से और भाग्यबल से सुख के साधन पावेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने से मन में कुछ नीरसता के साधन अनुभव करेगा और धर्म का कुछ पालन करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति का सुख मिलेगा और राज-समाज में मान और प्रभाव रहेगा तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में मनोबल की कर्म शक्ति से अपने स्थान में सफलता पावेगा।

(वृश्चिक लग्न में ४ चन्द्र)

नं० ७७२

यदि मीन का चन्द्र—पांचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में मनोबल और भाग्यबल के द्वारा महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में चमत्कारिक सुन्दर सफलता पावेगा तथा बुद्धि के अन्दर धर्म का विशेष ज्ञान रहेगा तथा वाणी के द्वारा शील युक्त सज्जनता का सुन्दर वर्ताव रखेगा तथा भाग्योन्नति के सुन्दर साधन बुद्धि के द्वारा प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से
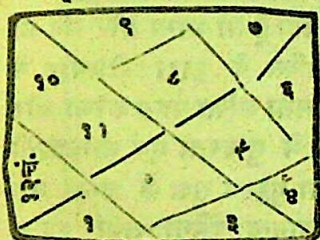
(वृश्चिक लग्न में ५ चन्द्र)

नं० ७७३

लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और बुद्धि के योग से आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता पावेगा तथा यश मिलेगा।

यदि मेष का चन्द्र—छठे शत्रु स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो धर्म और भाग्योन्नति के मार्ग में दिक्कतें एवं रुकावटें तथा झंझट झगड़े आदि का योग पावेगा किन्तु फिर भी मनोयोग के परिश्रमी मार्ग से ही भाग्य वृद्धि के साधन पावेगा और शत्रु पक्ष से मन में कुछ अशांति अनुभव करेगा, किन्तु मनोबल और भाग्यबल की शक्ति से ही शत्रु पक्ष में शांति नीति के द्वारा सफलता पा सकेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में खर्च एवं बाहरी स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में तथा बाहरी सम्बन्ध में मनोबल और भाग्यबल से सफलता पावेगा।
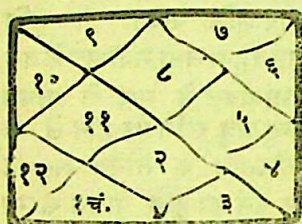
(वृश्चिक लग्न में ६ चन्द्र)

नं० ७७४

यदि वृषभ का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य और मन की विशाल शक्ति के द्वारा रोजगार में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री के पक्ष में सुन्दरता एवं भाग्यवानी मिलेगी तथा गृहस्थ सुख के अन्दर मन को बड़ा आनन्द रहेगा तथा स्वार्थ युक्त धर्म का पालन बनेगा और सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है,
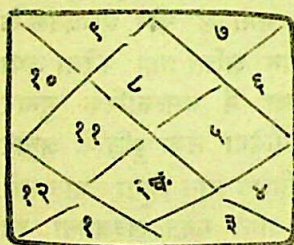
(वृश्चिक लग्न में ७ चन्द्र)

नं० ७७५

इसलिये देह में कुछ कमजोरी रहेगी और आत्मशान्ति के साधन कमजोर रहेंगे और भाग्य तथा धर्म में आन्तरिक दृष्टि से कुछ कमी अनुभव रखेगा।

यदि मिथुन का चन्द्र—आठवें आयु एवं पुरातत्त्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उन्नति के मार्ग में बड़ी कमजोरी एवं परेशानियाँ रहेंगी और धर्म का यथार्थ पालन नहीं हो सकेगा और सुयश की कमी रहेगी किन्तु आयु की वृद्धि होगी और जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा किन्तु मन को कुछ शान्ति रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये मनोबल की शक्ति से भाग्य और पुरातत्त्व के सहयोग से धन की शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलेगा।
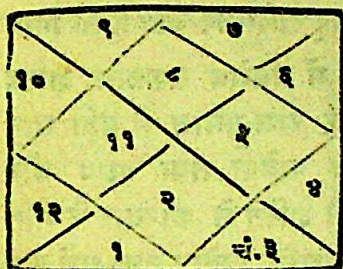
(वृश्चिक लग्न में ८ चन्द्र)

नं० ७७६

यदि कर्क का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्य की महान् सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन करेगा और मनोबल की सतोगुणी शक्ति के द्वारा भाग्य की वृद्धि और यश को प्राप्ति करेगा तथा ईश्वर में विशेश श्रद्धाशक्ति रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की सुन्दर शक्ति प्राप्त

(वृश्चिक लग्न में ९ चन्द्र)

नं० ७७७

करने पर भी भाई-बहिन की तरफ से कुछ नीरसता रहेगी और पराक्रम स्थान के सम्बन्ध में मनोबल और धर्म बल की सुन्दरता युक्त मार्ग से बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त रहेगी।

यदि सिंह का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में विशेष सफलता शक्ति पावेगा और राज-समाज में बड़ा मान और प्रभाव पावेगा तथा भाग्य और मनोबल की शक्ति से कारबार के मार्ग में विशेष उन्नति पावेगा तथा धर्म कर्म का उत्तम पालन करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में कुछ नीरसता अनुभव करेगा और भूमि मकानादि के स्थान में कुछ कमी लिये हुए सुख के साधन पावेगा तथा यश मिलेगा।
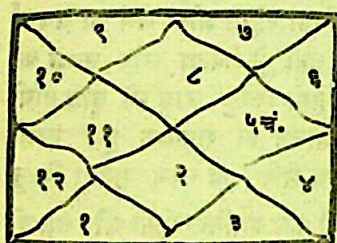
(वृश्चिक लग्न में १० चन्द्र)

नं० ७७८

यदि कन्या का चन्द्र—ग्यारवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य और मनोबल की शक्ति से धन की लाभ की आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म का लाभ पावेगा तथा भाग्य की सफलता के मार्ग से मन को महान् प्रसन्नता रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से बुद्धि, विद्या एवं संतान स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में बड़ा सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में
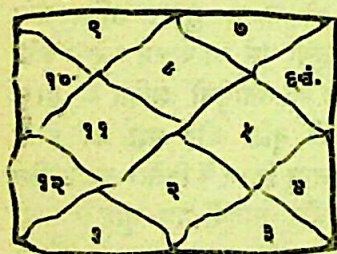
(वृश्चिक लग्न में ११ चन्द्र)

नं० ७७९

बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा बुद्धि और वाणी के अन्दर मनोबल की शक्ति के द्वारा यश और लाभ पावेगा।

यदि तुला का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति के द्वारा खर्चा बहुत करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में मनोयोग के द्वारा बहुत सफलता पावेगा और स्थानीय मार्ग में भाग्य की बड़ी कमजोरी अनुभव करेगा तथा धर्म के पालन में कमजोरी प्राप्त रहेगी और भाग्योन्नति के मार्ग में बड़ी देर और दूरी के योग से शक्ति प्राप्त होगी और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु एवं झंझट के स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में एवं दिक्कतों के मार्ग में भाग्य और मनोबल की शान्त शक्ति से काम निकालेगा।
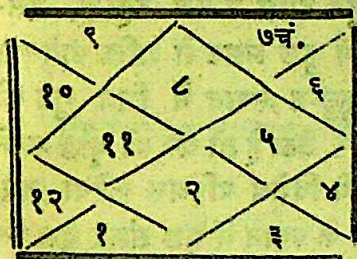
(वृश्चिक लग्न में १२ चन्द्र)

नं० ७८०

देह, शत्रु तथा झंझट स्थानपति—भौम

यदि वृश्चिक का भौम—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो देह में बड़ी शक्ति और प्रभाव रखेगा तथा शत्रु स्थान में सफलता शक्ति पावेगा तथा दिक्कतों और झंझटों पर विजय पायेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष-कारणों से देह में कुछ परेशानी एवं परिश्रम का योग पाकर व्यक्तित्व का विकास करेगा और देह में कुछ रोग पावेगा और चौथी शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में

(वृश्चिक लग्न में १ भौम)
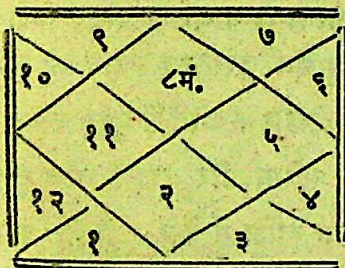
नं० ७८१

देख रहा है, इसलिये माता पिता के स्थान में कुछ वैमनस्यता पावेगा और मातृ भूमि के सुख सम्बन्धों में कमी पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परिश्रम की शक्ति से रोजगार में शक्ति पावेगा और कुछ नीरसता युक्त मार्ग से स्त्री पक्ष में शक्ति पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति पावेगा और पुरातत्व में कुछ झंझट से शक्ति पावेगा।

यदि धन का मंगल—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो धन की वृद्धि करने के लिये विशेष परिश्रम करेगा तथा कुटुम्ब के स्थान में कुछ संझट युक्त रूप से शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का काम करता है, और छठें घर का स्वामी परेशानी का कार्य करता है, इसलिये दोनों दोषों के कारण देह के पक्ष में सुख शांति की कमी तथा स्वास्थ्य में कुछ प्रभाव की शक्ति तथा इज्जत पावेगा और चौथी

(वृश्चिक लग्न में २ भौम)

नं० ७८२

दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ परेशानी के योग से संतान पक्ष में शक्ति पावेगा और परिश्रम के मार्ग विद्या स्थान में शक्ति पावेगा तथा वाणी के अन्दर विशेष शक्ति रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम के योग से पुरातत्व का कुछ लाभ पावेगा और आयु में कुछ शक्ति पावेगा और आठवीं नीच दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और धर्म की कुछ हानि या कमजोरी पावेगा तथा यश की कमी रहेगी तथा ईश्वर पर भरोसा थोड़ा रहेगा।

यदि मकर का मंगल—तीसरे पराक्रम एवं भाई बहिन के स्थान पर

(वृश्चिक लग्न में ३ भौम)

नं० ७८३
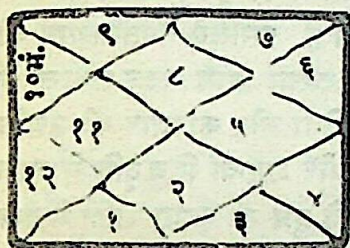
उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो पराक्रम स्थान में विशेष शक्ति पावेगा तथा भाई बहिन की विशेषता के अन्दर कुछ मतभेद पावेगा और देह के द्वारा विशेष पुरुषार्थ कर्म करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति रखेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष-कारण से देह में कुछ शिकायत रहेगी और चौथी दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और विपक्षियों में विजय प्राप्त करेगा तथा झंझट युक्त मार्ग के द्वारा बड़ी सफलता पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य पर भरोसा न रखकर पुरुषार्थ पर भरोसा अधिक रहेगा और धर्म के मार्ग का ठीक अनुसरण नहीं करेगा तथा आठवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की उन्नति करेगा और राज-समाज में मान पावेगा तथा कारबार के मार्ग में खूब उन्नति करेगा।

यदि कुम्भ का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो माता के सुख और प्रेम की कमी प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि के सुख में कुछ नीरसता प्रतीत होगी और देह के अन्दर कुछ रोग या कुछ परेशानी रहेगी तथा शत्रु पक्ष के कारणों से सुख-शान्ति में कुछ बाधा रहेगी और अपने स्थान में ही रहना पसंद होगा और चौथी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद युक्त शक्ति पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम के द्वारा

सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और मूत्रेन्द्रिय में कुछ विकार का योग पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता-स्थान की उन्नति करेगा तथा राज समाज में मान पावेगा और कारबार की उन्नति करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये धन लाभ और आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा अपने स्थान से प्रभाव युक्त रहेगा।

(वृश्चिक लग्न में ४ भौम)

नं० ७८४

यदि मीन का मंगल—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा बुद्धि एवं वाणी के द्वारा प्रभाव शक्ति एवं हठ धर्म रखेगा और षष्ठेश होने के दोष-कारण से संतान पक्ष में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में सदैव विजय पाने के लिये युक्ति सोचेगा इसलिये दिमाग में कुछ परेशानी रहेगी और चौथी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव और कुछ चिन्ता शक्ति पावेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक परिश्रम और बुद्धि की शक्ति से आमदनी के मार्ग में सफलता शक्ति पावेगा तथा आठवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र
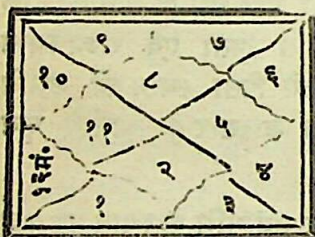
(वृश्चिक लग्न में ५ भौम)

नं० ७८५

की तुला राशि में खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान को देख रहा है, इसलिये खर्च की अधिकता से कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थान में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा सफलता शक्ति पावेगा।

यदि मेष का मंगल—छठें शत्रु स्थान में एवं झंझट के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव शक्ति कायम करेगा तथा विजय पावेगा क्योंकि छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत बलवान् हो जाता है, इसलिये बड़े से बड़े झंझटों और परेशानियों के अन्दर बड़ी बहादुरी के साथ सफलता शक्ति पावेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से देह में कुछ रोग और कुछ परेशानी या परतंत्रता सी प्राप्त करेगा तथा चौथी नीच
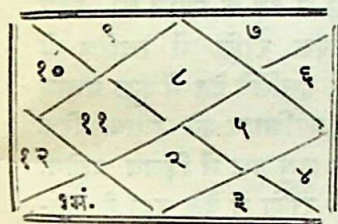
(वृश्चिक लग्न में ६ भौम)

नं० ७८६

दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और धर्म के मार्ग में कुछ कमजोरी पावेगा तथा यश की कमी रहेगी और सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के साथ खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों में सम्बन्ध बनावेगा और आठवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और नाम की कुछ शक्ति मिलेगी और परिश्रम की शक्ति के द्वारा आत्मबल की जागृति रहेगी।

यदि वृषभ का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता युक्त शक्ति पावेगा तथा कुछ मतभेद रहेगा और गृहस्थ के संचालन में कुछ परेशानी रहेगी तथा छठें स्थान के दोष के कारण मूत्र इन्द्रिय के स्थान में कुछ विकार का योग कभी पावेगा और रोजगार के मार्ग में

कुछ परिश्रम और कुछ परेशानी के साथ-साथ शक्ति पावेगा और चौथी

(वृश्चिक लग्न में ७ भौम)

नं० ७८७
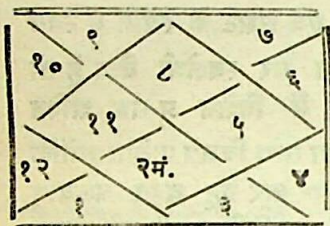
मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में उन्नति करेगा तथा राज-समाज में मान पावेगा और कारबार के मार्ग में शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ प्रभाव तथा अपने व्यक्तित्व की व्यावहारिक कुशलता से शत्रु पक्ष में विजय पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से धन को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि का तथा कुटुम्ब की वृद्धि का विशेष प्रयत्न करेगा।

यदि मिथुन का मंगल—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध

(वृश्चिक लग्न में ८ भौम)

नं० ७८८

की राशि पर बैठा है तो देह के सुख और सुन्दरता में कमी पावेगा तथा छठें स्थान के दोष के कारण आयु एवं जीवन की दिनचर्या में कुछ-कुछ परेशानी या चिन्ता पावेगा और पुरातत्व की अनुकूल शक्ति को कुछ कठिनाइयों से प्राप्त करेगा तथा उदर में कुछ विकार पावेगा और शत्रु पक्ष के सम्बन्ध से कुछ परेशानी अनुभव करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये देह के कठिन परिश्रम से आमदनी के मार्ग में शक्ति पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये विशेष परिश्रम करेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से भाई और
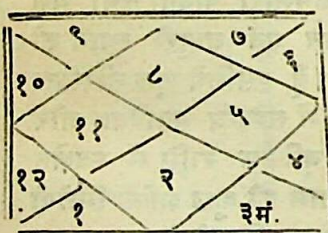
पराक्रम के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये देह के कठिन पुरुषार्थ से पराक्रम की महान् शक्ति पावेगा तथा भाई-बहिन के स्थान में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति और वृद्धि प्राप्त करेगा और बड़ी हिम्मत रखेगा।

यदि कर्क का मंगल--नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में नीच (वृश्चिक लग्न में ९ भौम)

नं० ७८९
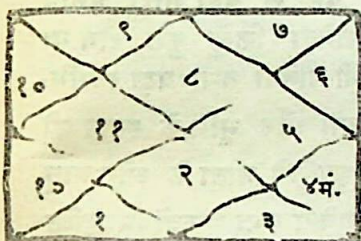
का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, तो भाग्य के स्थान में कमजोरी अनुभव करेगा और धर्म के पालन में कमजोरी रहेगी तथा षष्ठेश होने के दोष कारण से शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट तथा दिक्कतों के योग से भाग्योन्नति के मार्ग में रुकावटें पड़ती रहेंगी और देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है; इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों में सम्पर्क शक्ति रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये देह के परिश्रम के योग से पुरुषार्थ कार्य की उन्नति करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति का विकास पावेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता के पक्ष में कुछ वैमनस्यता पावेगा और मकानादि के सुख में कुछ कमी रहेगी।

यदि सिंह का मंगल—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो षष्ठेश होने के दोष कारण से पिता स्थान में कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान एवं प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में कुछ परिश्रम और

कुछ दिक्कतों के योग से उन्नति और सफलता पावेगा और दसम स्थान पर मंगल शक्ति प्रदायक माना जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में विजय और सफलता पावेगा और चौथी दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा भारी प्रभाव शक्ति पावेगा किन्तु कुछ रोग या झंझट भी पावेगा तथा बड़ा स्वाभिमानी बनेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता और भूमि के स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता के और मातृ भूमि के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त सम्बन्ध पावेगा तथा आठवीं मित्रदृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये दैहिक परिश्रम की शक्ति से विद्या एवं वाणी के अन्दर सफलता और प्रभाव पावेगा तथा संतान पक्ष में कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा।
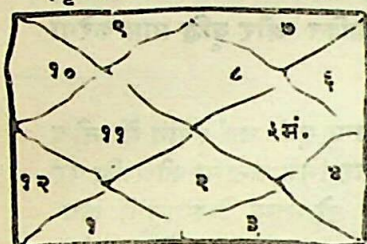
(वृश्चिक लग्न में १० भौम)

नं० ७९०
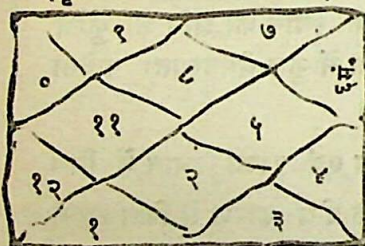
यदि कन्या का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के परिश्रम से और प्रभाव शक्ति से खूब लाभ पावेगा तथा शत्रु पक्ष में झगड़े झंझट का स्वामी होने के कारण देह की कुछ परेशानी तथा कुछ रोग या अधिक प्रयत्नशील रहना पड़ेगा और चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त रहेगी और सातवीं मित्र

(वृश्चिक लग्न में ११ भौम)

नं० ७९१

दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को गुरु की मीन राशि देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाइयों के द्वारा विद्या की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और सन्तान पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ उत्तम शक्ति तथा वाणी और बुद्धि के द्वारा प्रभाव शक्ति पावेगा और आठवीं दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में विजय लाभ पावेगा तथा बड़ा प्रभाव रखेगा और ननसाल पक्ष से लाभ का योग होगा तथा स्वाभिमानी बनेगा।

यदि तुला का मंगल—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में बड़ी कमजोरी तथा कुछ रोग होगा और खर्चा अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों में मान प्राप्त करेगा और अपने स्थान में कुछ खिन्नता पावेगा तथा चौथी उच्च दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है,
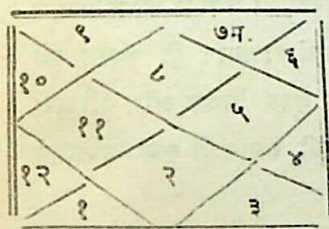
(वृश्चिक लग्न में १२ भौम)

नं० ७९२

इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ शक्ति रहेगी तथा पराक्रम स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ प्रभाव रहेगा और झगड़े-झंझट के मार्ग में कुछ हिम्मत शक्ति से काम करेगा और आठवीं दृष्टि से स्त्री तथा रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति पावेगा तथा कभी मूत्र रोग का विकार और गृहस्थी में झंझट पावेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के द्वारा कार्य संचालित रखेगा।

आमद, आयु तथा पुरातत्त्व स्थानपति-बुध

यदि वृश्चिक का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो देह के परिश्रम और विवेक शक्ति के द्वारा धन का सुन्दर लाभ पावेगा और आयु की शक्ति का उत्तम योग मिलेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होगा और अष्टमेश होने के दोष—कारण से देह में कुछ परेशानी पावेगा किन्तु प्रभाव युक्त रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए कुछ विवेक और परिश्रम के योग से रोजगारमें सफलता मिलेगी तथा स्त्री स्थान में कुछ कठिनाई के सहित सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा।
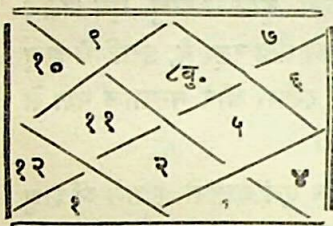
(वृश्चिक लग्न में १ बुध)

नं० ७९३

यदि धन का बुध—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है, तो आमदनी के सुन्दर योग से धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब शक्ति पायेगा तथा विवेक शक्ति के द्वारा धन और कुटुम्ब का लाभ होगा और आठवें स्थान का स्वामी होने के दोष-कारण से धन और कुटुम्ब की सुख-शक्ति में कुछ कमी और कुछ बाधा प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि होगी तथा
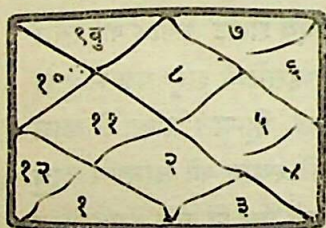
(वृश्चिक लग्न में २ बुध)

नं० ७९४

जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ पायेगा और जीवन की दिनचर्या अमीरात ढंग से चलायेगा।

यदि मकर का बुध—तीसरे पराक्रम एवं भाई बहिन के स्थान पर

(वृश्चिक लग्न में ३ बुध)
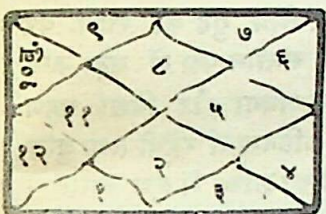
नं० ७९५

मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति का लाभ करेगा तथा विवेक शक्ति और पुरुषार्थ के योग से आमदनी का सुन्दर लाभ होगा किन्तु अष्टमेश होने के कारण से भाई बहिन की सुख शक्ति के लाभ में कुछ कमी और कुछ दिक्कत रहेगी तथा पुरुषार्थ कर्म की सफलता के मार्ग में कुछ कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और आयु के स्थान में सुन्दर शक्ति का लाभ मिलेगा तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ का योग विवेक रूपी पुरुषार्थ के बल से प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य और धर्म के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विवेक शक्ति के बल से भाग्य और धर्म का लाभ होगा।

(वृश्चिक लग्न में ४ बुध)
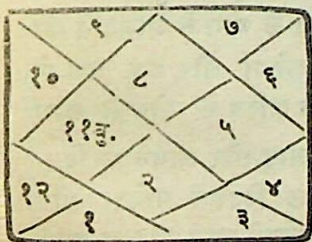
नं० ७९६

यदि कुम्भ का बुध—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता को शक्ति का लाभ करेगा और कुछ पुरातन भूमि का लाभ होगा तथा अपने स्थान में ही कुछ विवेक शक्ति के कठिन कर्म से आमदनी का सुन्दर लाभ होगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष—कारण से माता के सुख-सम्बन्धों में तथा भूमि के पक्ष में कुछ

कमी प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति का सुख लाभ होगा और पुरातत्त्व शक्ति के लाभ का सुख प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाई के साथ पिता एवं राज-समाज का लाभ पावेगा।

यदि मीन का बुध—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में बड़ा कष्ट एवं कमी पावेगा और विद्या ग्रहण करने में कठिनाइयाँ रहेंगी तथा बुद्धि एवं वाणी की शक्ति में कुछ कमजोरी लिये हुए विवेक शक्ति के द्वारा आमदनी का लाभ होगा और जीवन की दिनचर्या तथा आयु स्थान में कुछ चिंतित रहकर समय व्यतीत करेगा और पुरातत्व शक्ति का थोड़ा लाभ पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में वित्त से ज्यादा लाभ प्राप्ति का साधन बनायेगा।
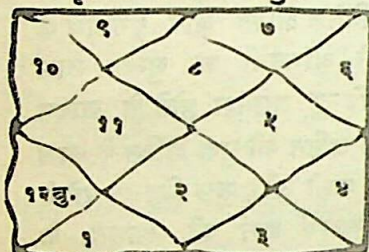
वृश्चिक लग्न में ५ बुध।

नं० ७९७

यदि मेष का बुध—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान पर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो कुछ परिश्रम एवं परेशानी के योग से आमदनी का मार्ग प्राप्त करेगा और शत्रु पक्ष में कुछ विवेक शक्ति के योग से लाभ होगा तथा आयु और जीवन की दिनचर्या में कुछ दिक्कतें पावेगा और पुरातत्व सम्बन्धी लाभ की कुछ हानि होगी तथा लाभ के मार्ग में कुछ कमी के कारणों से दुःख अनुभव करेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी
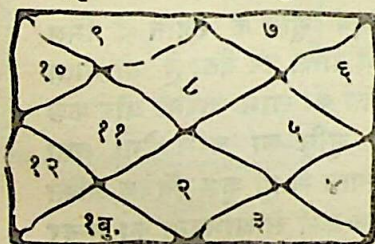
(वृश्चिक लग्न में ६ बुध

नं० ७९८

स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ का योग प्राप्त करेगा तथा नरमाई के योग से प्रभाव पावेगा।

यदि वृषभ का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण कुछ थोड़ी सी परेशानी के साथ स्त्री स्थान में लाभ शक्ति पावेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ विवेक शक्ति के द्वारा तथा कुछ कठिनाइयों के द्वारा सुन्दर लाभ का योग प्राप्त करेगा और आयु की शक्ति का लाभ पावेगा और पुरातत्व शक्ति के संयोग से लाभ का साधन मिलेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये विवेक की शक्ति के द्वारा देह में मान प्राप्ति तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी।
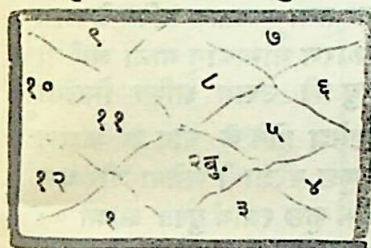
(वृश्चिक लग्न में ७ बुध)

नं० ७९९

यदि मिथुन का बुध—आठवें आयु एवं मृत्यु स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु स्थान में वृद्धि एवं शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ होगा और अष्टमेश होने के कारण लाभ स्थान में कुछ परेशानी तथा कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा परिश्रम के योग से आमदनी और जीवन की दिनचर्या में शानदारी पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख
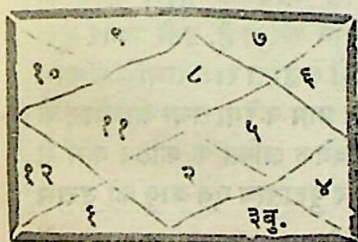
(वृश्चिक लग्न में ८ बुध)

नं० ८००

रहा है, इसलिये विवेक शक्ति के योग द्वारा धन की वृद्धि के कारण प्राप्त करेगा और कुछ कठिनाई के योग से कुटुम्ब का लाभ होगा।

यदि कर्क का बुध—नवम् त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र

(वृश्चिक लग्न में ९ बुध)

नं० ८०१
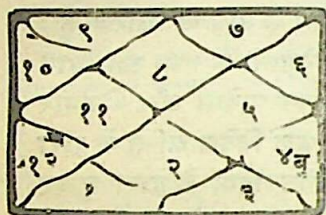
चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य और विवेक की शक्ति से आमदनी का योग होगा तथा पुरातत्व शक्ति के लाभ योग के कारण भाग्यवान् माना जायेगा और आयु की उत्तम शक्ति मिलेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण भाग्य में कुछ परेशानी पावेगा और धर्म के स्थान में कुछ स्वार्थ युक्त शक्ति का पालन करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में कुछ कमी लिये हुए लाभ योग होगा और विवेक शक्ति के लाभ योग द्वारा पुरुषार्थ की सफलता शक्ति पायेगा।

यदि सिंह का बुध—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में मित्र सूर्य

(वृश्चिक लग्न में १० बुध)

नं० ८०२

की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के कारण से पिता के स्थान में कुछ कष्ट युक्त मार्ग के द्वारा लाभ की शक्ति प्रदान करता है, इसी प्रकार कुछ कठिनाइयों के द्वारा राज-समाज में लाभ और मान प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में विवेक शक्ति के कठिन कर्म से उन्नति और पुरातत्व एवं आयु की उत्तम शक्ति पावेगा तथा इज्जत आबरू के जरिये से धन का लाभ प्राप्त करेगा और

सातवीं दृष्टिसे माता एवं भूमि के सुख भवन को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाई के साथ माता और भूमि का लाभ होगा।

यदि कन्या का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में विवेक शक्ति के सम्बन्ध से पुरातत्व मार्ग के द्वारा महान् उत्तम लाभ की सफलता शक्ति पायेगा और आयु का उत्तम लाभ होगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ा उमंग पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से विद्या एवं सन्तान पक्ष को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या स्थान में कुछ कमी पावेगा और सन्तान पक्षमें कुछ कमी और कुछ कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा अष्टमेशहोने के कारण से एवं अधिक स्वार्थ सिद्धि करने के कारण से बुद्धि एवं वाणी से कुछ रूखा बर्ताव करेगा।
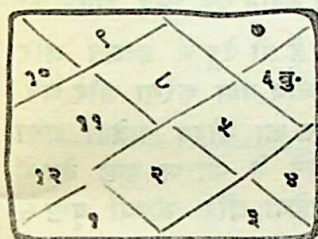
वृश्चिक लग्न में ११ बुध)

नं० ८०३

यदि तुला का बुध—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो बहुत अधिक खर्च करेगा तथा पुरातत्व शक्ति की हानि पावेगा और आमदनी के मार्ग में कमजोरी पावेगा किन्तु पुरातत्व से संबंधित विवेक शक्ति के द्वारा बाहरी स्थानों में सफलता मिलेगी और खर्च का संचालन कार्य भी बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से करेगा और आयु के सम्बन्ध में कभी-कभी चिंताओं का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु एवं झंझट
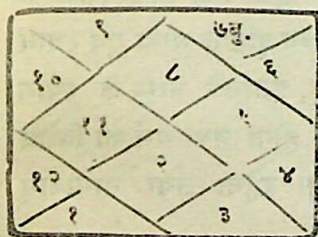
(वृश्चिक लग्न में १२ बुध)

नं० ८०४

स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नरमाई और विवेक शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष से काम निकालेगा तथा भ्रमणकारी जीवन होने की वजह से कुछ अशान्ति सी रहेगी।

धन, संतान तथा विद्या स्थानपति—गुरु

यदि वृश्चिक का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो देह में इज्जत और मान तथा प्रभाव प्राप्त करेगा और धन-जन की शक्ति का गौरव पावेगा तथा द्वितीयेश होने के कारण कुछ देह में घिराव सा रहेगा और पाँचवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को स्वयं अपनी राशि मीन में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या के स्थान में महान् गौरव और सफलता शक्ति पावेगा तथा सन्तान पक्ष में बहुत उत्तम शक्ति और सफलता पायेगा तथा विद्या, बुद्धि एवं देह के संयोग से धन की शक्ति का सुख प्राप्त होगा और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद युक्त सहयोग पायेगा और रोजगार के पक्ष में कुछ थोड़ी सी दिक्कतों के योग से सफलता शक्ति मिलेगी और नवमी उच्च दृष्टि से भाग्य एवं स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य के स्थान में विशेष उन्नति करेगा और यश प्राप्त होगा तथा धर्म का विशेष पालन करेगा और ईश्वर में विशेष निष्ठा रहेगा तथा भाग्यवान् माना जायेगा।

(वृश्चिक लग्न में १ गुरु)

नं० ८०५

यदि धन का गुरु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा और

कुटुम्ब का संयोग प्राप्त करेगा तथा विद्या की विशेष शक्ति का संग्रह करेगा किन्तु द्वितीयेश होने के दोष--कारण से सन्तान पक्ष के सुख-सम्बन्ध में कमी पावेगा और बुद्धि के अन्दर स्वार्थ-सिद्धि का विशेष ध्यान रखेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में एवं झंझटों के स्थान में बड़ी चानाई और बुद्धि योग के द्वारा सफलता मिलेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति पायेगा तथा पुरातत्व स्थान के मार्ग में सफलता और नवमी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति का लाभ के साथ और राज-समाज में मान एवं प्रभाव होगा तथा कारबार के मार्ग में बुद्धि और धन की शक्ति से उन्नति प्राप्त करेगा तथा बड़ा बुद्धिमान् बनेगा।
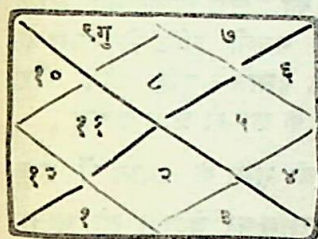
(वृश्चिक लग्न में २ गुरु)

नं० ८०६

यदि मकर का गुरु--तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में नीच का होकर शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान में परेशानी प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ स्थान में कमजोरी रहेगी और विद्या के पक्ष में कमी रहेगी तथा धन और कुटुम्ब की तरफ से कुछ कमी और कुछ परेशानी पायेगा तथा बुद्धि की तरफ से कुछ अनुचित शक्ति का प्रयोग करेगा और पाँचवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख
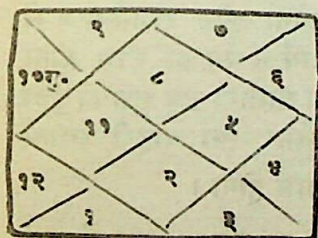
(वृश्चिक लग्न में ३ गुरु)

नं० ८०७

रहा है, इसलिये कुछ वैमनस्यता युक्त रूप से अच्छी शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परिश्रम के योग से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उत्तम शक्ति का लाभ और धर्म का पालन श्रेष्ठ रूप से करेगा और नवमी दृष्टि से लाभ के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग और परिश्रम के द्वारा धन का खूब लाभ आमदनी के रूप में प्राप्त करेगा।

यदि कुम्भ का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु शनि कुम्भ राशि पर बैठा है तो माता के पक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त शक्ति से सफलता और कुछ भूमि मकानादि की शक्ति पायेगा तथा कुछ विद्या की शक्ति रहेगी और सन्तान पक्ष में कुछ मतभेद युक्त सुख-शक्ति और धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ सुख-शक्ति मिलेगी तथा पाँचवीं मित्र-दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति रहेगी और पुरातत्व के सम्बन्ध में सफलता शक्ति मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से लाभ पायेगा और राज-समाज में इज्जत तथा मान मिलेगा और कारबार के मार्ग में धन का लाभ होगा और नवमी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थानों में कुछ थोड़ी सी नीरसता के साथ धन का लाभ होगा।
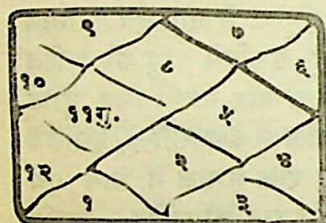
(वृश्चिक लग्न में ४ गुरु)

नं० ८०८

यदि मीन का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो विद्या स्थान में विशेष शक्ति पायेगा

तथा विद्या बुद्धि के योग से धन की प्राप्ति करेगा और कुटुम्ब में शक्ति

वृश्चिक लग्न में ५ गुरु)

नं० ८०९

पायेगा, किन्तु द्वितीयेश होने के कारण से कुछ दिक्कतों के साथ सन्तान पक्ष में कीमती शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणी की ताकत से विशेष लाभ पायेगा और पाँचवीं उच्च दृष्टि से भाग्य के स्थान को मित्र चन्द्रमा की राशि कर्क में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति विशेष रूप से प्राप्त करेगा और धर्म का विशेष ज्ञान होगा तथा बुद्धि योग से यश मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में सफलता शक्ति मिलेगा और नवमी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह में बड़ा प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता और इज्जत मिलेगी और विद्या, सन्तान, धन, इज्जत, मान इत्यादि कार्यों की प्राप्ति के कारण से बड़ा भाग्यवान् समझा जायेगा।
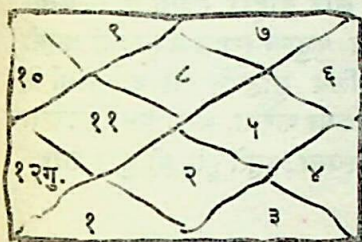
यदि मेष का गुरु—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान में मित्र मंगल की राशि

(वृश्चिक लग्न में ६ गुरु)

नं० ८१०

पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में झंझट और परेशानी रहेगी तथा विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी और बुद्धि की तेजी से शत्रु पक्ष में दानाई से काम निकालेगा और धन-जन एवं कुटुम्ब की तरफ से कुछ झंझट प्राप्त होगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता-स्थान की उन्नति करेगा और राज-समाज में
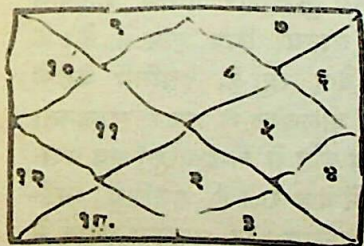
मान तथा प्रभाव होगा और कारबार की उन्नति करेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थान के सम्बन्धों में प्रभाव रखेगा और नवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि के परिश्रम-मार्ग के द्वारा धन की वृद्धि के लिये सदैव प्रयत्न किया करेगा, अतः धन मिलता रहेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ वैमनस्यता रहते हुए भी कुछ शक्ति-सम्बन्ध रहेगा।

यदि वृषभ का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद के सहित सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री में प्रभाव पावेगा और रोजगार के मार्ग में बुद्धि योग की शक्ति में धन की शक्ति पायेगा तथा बड़ी योग्यता के द्वारा गृहस्थ का संचालन कार्य करेगा और विद्या एवं सन्तान पक्ष की शक्ति प्राप्त करेगा और पांचवीं मित्र दृष्टि से धन की आमदनी के लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और दैनिक कार्यक्रम के योग से अच्छा लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की बृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता, प्रभाव और इज्जत पायेगा तथा बोलचाल के अन्दर, सज्जनता और दानाई से काम करेगा और नवीं नीच दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के स्थान में कुछ परेशानी का योग पावेगा और पराक्रम स्थान में कमजोरी रहेगी तथा हिम्मत में कमी अनुभव होगी।
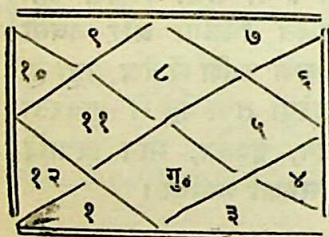
(वृश्चिक लग्न में ७ गुरु)

नं० ८११

यदि मिथुन का गुरु—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व स्थान में मित्र बुध

की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में संकट रहेगा तथा विद्या स्थान

(वृश्चिक लग्न में ८ गुरु)

नं० ८१२

में कमजोरी रहेगी और धन के संग्रह करने के मार्ग में बड़ी कठिनाई होगी तथा कुटुम्ब की शक्ति में कमजोरी रहेगी एवं धन-सन्तान के पक्ष से बुद्धि में फिकर रहेगी और पुरातत्त्व धन की शक्ति का लाभ पायेगा और आयु के स्थान में शक्ति मिलेगी तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ रौनक रहेगी और पाँचवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि से देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों में अच्छा सम्बन्ध रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थानों को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की शक्ति का सामान्यतम सहयोग प्राप्त होगा और नवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के सुख भवन को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ वैमनस्यता युक्त रूप से माता का एवं भूमि का सुख प्राप्त करेगा तथा बुद्धि की योग्यता से सुख के साधन पावेगा।
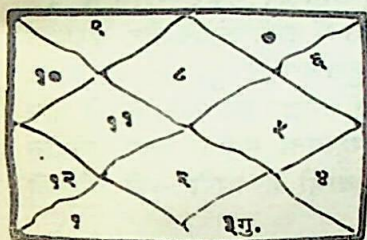
(वृश्चिक लग्न में ९ गुरु)
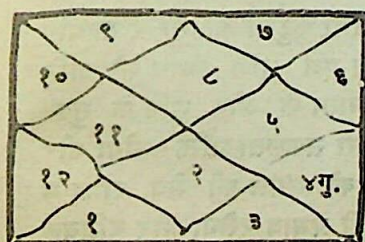
नं० ८१३

यदि कर्क का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में उच्च का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य की महान् उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में विशेष ज्ञान और विशेष शक्ति पायेगा तथा भाग्य की शक्ति के द्वारा धन की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का सुन्दर योग पायेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को मंगल

की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह को बड़ा मान प्राप्त होगा और बुद्धि योग की शक्ति से बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की सुख-शक्ति में कमी रहेगी और पराक्रम स्थान में कमजोरी रहेगी और भाग्य के मुकाबले में पुरुषार्थ की शक्ति न्यून रहेगी तथा नवमी दृष्टि से विद्या एवं सन्तान को स्वयं अपनी मीन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या की महानता पायेगा और सन्तान पक्ष की विशेष उत्तम शक्ति पायेगा तथा वाणी के द्वारा बड़ी कीमती बातें कहकर सुयश प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का गुरु—दशम केन्द्र पिता एवं राज-स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान के द्वारा धन की शक्ति का सुन्दर योग प्राप्त होगा तथा राज-समाज के सम्बन्ध में बड़ी इज्जत, प्रभाव और मान प्राप्त करेगा और बुद्धि योग के द्वारा कारबार में भारी सफलता और उन्नति प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में बड़ी सफलता और सुन्दर सहयोग मिलेगा तथा

(वृश्चिक लग्न में १० गुरु)
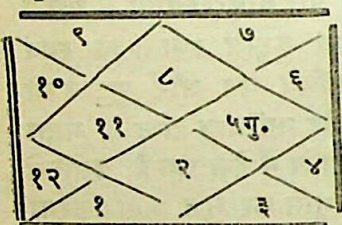
नं० ८१४

विद्या स्थान में विशेष शक्ति और मान प्राप्त होगा और पाँचवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की विशेष उन्नति करेगा तथा कुटुम्ब का सुन्दर सहयोग प्राप्त होगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये माता के और भूमि के सुख-सम्बन्धों में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा सफलता शक्ति पायेगा और नवमी मित्र दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और बुद्धिबल की उत्तम कर्म शक्ति के द्वारा अनेक प्रकार के संकट से सुरक्षा प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का गुरु-ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा हो तो आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति मिलेगी और कभी-कभी विशेष धन का लाभ होगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर योग मिलेगा और बड़ी इज्जत प्राप्त करेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों में कमी अनुभव करेगा तथा पराक्रम स्थान में कमजोरी पायेगा और हिम्मत शक्ति के अन्दर कुछ आलस्य रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या स्थान की शक्ति का उत्तम लाभ पायेगा और सन्तान पक्ष के योग से विशेष उन्नति रहेगी तथा बुद्धि और वाणी की योग्यता से बड़ा लाभ पायेगा और नवमी दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त मार्ग से लाभ होगा और रोजगार में सफलता प्राप्त करेगा।
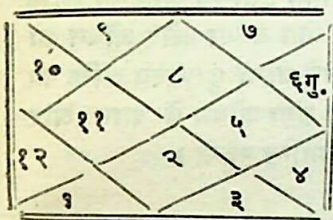
(वृश्चिकलग्न में ११ गुरु)

नं० ८१५

यदि तुला का गुरु--बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है अतः बहुत अधिक खर्च करेगा तथा धन के संग्रह स्थान में कमी और दुःख का अनुभव करेगा तथा कुटुम्ब स्थान के सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और सन्तान पक्ष की तरफ से कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में बुद्धि योग द्वारा धन का लाभ होगा तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से माता और भूमि के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता और मातृ भूमि के सम्बन्ध में नीरसता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है,

(वृश्चिक लग्न में १२ गुरु)

नं० ८१६

इसलिये शत्रु पक्ष में एवं झंझटों में कुछ दानाई से काम निकालेगा और प्रभाव पायेगा तथा नवमी दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति का अच्छा योग बनेगा और जीवन की सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ होगा तथा जीवन में ज्ञान और बुद्धि में अशान्ति रहेगी।

स्त्री, रोजगार, खर्च तथा बाहरी स्थानपति—शुक्र

यदि वृश्चिक का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो देह में कुछ कमजोरी और कुछ रौनक पायेगा तथा खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध होगा तथा घूमने-फिरने के कार्यों में बड़ी योग्यता, कुशलता और चतुराई से काम करेगा और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बाहरी संबंधों के योग से बड़ी चतुराई के साथ रोजगार की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष के सम्बन्ध में कुछ सुन्दर शक्ति मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष से स्त्री व रोजगार के मार्ग में कुछ कमी अनुभव होगी।
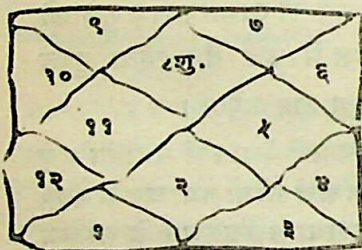
(वृश्चिक लग्न में १ शुक्र)

नं० ८१७

यदि धन का शुक्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में सामान्य

शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण से धन के कोष स्थान में कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब की सुख शक्ति में भी कमी रहेगी और स्त्री पक्ष का स्वामी धन के बन्धन स्थान में बैठा है, इसलिये स्त्री पक्ष में विशेष असन्तोष रहेगा और रोजगार के मार्ग में बाहरी स्थानों के योग से धन का लाभ पावेगा किन्तु खर्च की शक्ति अधिक रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को एवं पुरातत्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में कुछ रौनक रहेगी और पुरातत्व स्थान में कुछ शक्ति और कुछ कमजोरी मिलेगी किन्तु बड़ी चतुराई के साथ धनवानों में नाम रखेगा।
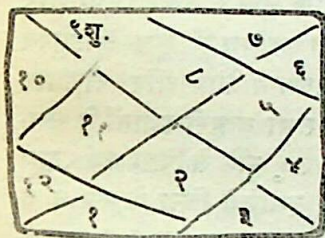
(वृश्चिक लग्न में २ शुक्र)

नं० ८१८

यदि मकर का शुक्र—तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान पर मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण भाई-बहिन के स्थान में कुछ कमी पावेगा तथा पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से रोजगार की शक्ति पावेगा तथा खर्चा खूब करेगा और स्त्री के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी लिये हुए शक्ति पावेगा तथा बड़ी चतुराई के द्वारा गृहस्थ में खर्च की शक्ति से आमोद-प्रमोद करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य और धर्म के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के कारण भाग्य में कुछ कमजोरी लिये हुए कुछ शक्ति पावेगा और धर्म के मार्ग में खर्च की शक्ति से काम लेगा किन्तु यथार्थ धर्म का पालन नहीं करेगा।
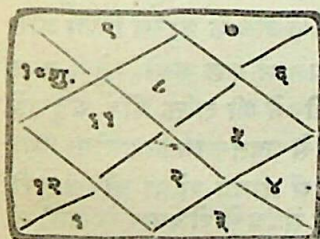
(वृश्चिक लग्न में ३ शुक्र)

नं० ८१९
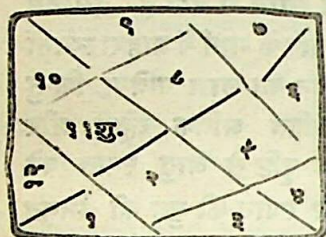
यदि कुम्भ का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो सुखपूर्वक घर बैठे खर्च चलेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख मिलेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से माता के सुख में कमी रहेगी और भूमि के सुख में कमी रहेगी और स्त्री पक्ष के सम्बन्ध में कुछ त्रुटियुक्त सुख के साधन पावेगा और रोजगार के मार्ग में तथा बाहरी स्थानों में चतुराई के सम्बन्ध से सुख मिलेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के स्थान के सम्बन्ध में कुछ नीरसता रहेगी और राज-समाज व कारबार में कुछ दिक्कतों के साथ कामयाबी रहेगी।

(वृश्चिक लग्न में ४ शुक्र)

नं० ८२०

यदि मीन का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर उच्च का होकर बैठा है तो बुद्धि विद्या के अन्दर कोई विशेष कला पावेगा तथा सन्तान पक्ष में शक्ति रहेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण विद्या और सन्तान पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा अधिक बोलने की शक्ति और चतुराई की बातों से बहुत काम निकालेगा तथा स्त्री पक्ष में प्रभाव रहेगा और बाहरी स्थानों के संबंध से रोजगार के मार्ग में सफलता शक्ति पावेगा और खर्चा विशेष करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से लाभ के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ कमी और कुछ परेशानी रहेगी।

(वृश्चिक लग्न में ५ शुक्र)

नं० ८२१

यदि मेष का शुक्र—छठें शत्रु और झंझट के स्थान में सामान्य शत्रु

(वृश्चिक लग्न में ६ शुक्र)

नं० ८२२
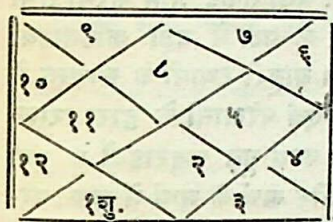
मंगल की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ झंझट तथा परेशानी पावेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी क्योंकि शुक्र व्ययेश होने से भी दोषी है और छठें बैठने से भी दोषी है, इसलिये गृहस्थ के संचालन और खर्चे के मार्ग में दिक्कतें रहेंगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी किन्तु बाहरी सम्बन्ध से एवं दैनिक कर्म की चतुराई से शत्रु पक्ष में शान्ति से काम निकालेगा और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च अधिक करना पड़ेगा और बाहरी स्थानों में कुछ परिश्रम मार्ग के द्वारा सम्बन्ध बनेगा।

यदि वृषभ का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में

(वृश्चिक लग्न में ७ शुक्र)

नं० ८२३
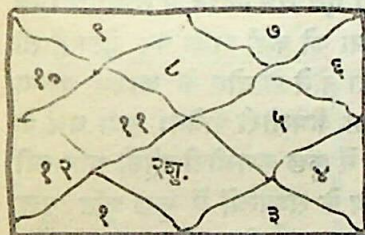
स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो स्त्री एवं रोजगार के स्थान में बड़ी सुन्दर शक्ति पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण स्त्री एवं रोजगार के मार्ग में कुछ कमजोरी भी रहेगी परन्तु बाहरी स्थानों के सुन्दर सम्बन्ध से गृहस्थ संचालन के मार्ग में चतुराई के योग से खर्च की सुन्दर शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी पावेगा किन्तु गृहस्थ की शक्ति के कारण कुछ प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा व्यवहारिक कार्य, दौड़-धूप में चतुर बनेगा।

यदि मिथुन का शुक्र—आठवें मृत्यु स्थान में एवं पुरातत्व स्थान में

(वृश्चिक लग्न में ८ शुक्र)

नं० ८२४
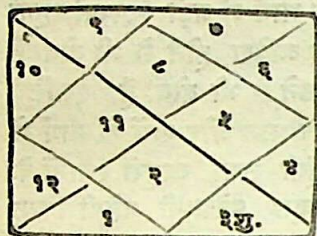
मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा संकट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के पक्ष में बड़ी कठिनाइयाँ मिलेगी। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम एवं परेशानी के द्वारा रोजगार का कार्य गूढ़ चतुराइयों से पूरा करेगा और खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी एवं कमजोरी रहेगी और गृहस्थ के सुख-संचालन मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष के कारण धन की संग्रह शक्ति के मार्ग में बड़ी कमजोरी रहेगी तथा कुटुम्ब के मार्ग में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा चतुराई से इज्जत बनावेगा और आयु स्थान में कुछ दिक्कत रहेगी।

(वृश्चिक लग्न में ९ शुक्र)

नं० ८२५
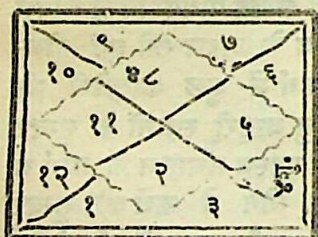
यदि कर्क का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण भाग्य में कुछ कमजोरी पावेगा तथा धर्म के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और स्त्री गृहस्थ के सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त रहकर भाग्य की शक्ति उत्तम योग प्राप्त करेगा तथा धर्म के मार्ग में स्वार्थ-युक्त रहकर चतुराई और खर्च के मार्ग से धर्म का पालन करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध का लाभ कुदरती तौर से भाग्य शक्ति द्वारा प्राप्त करेगा और रोजगार मार्ग में बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चतुराई से कुछ सफलता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है,

इसलिये भाई एवं पराक्रम स्थान में कुछ कमी प्राप्त करेगा।

यदि सिंह का शुक्र—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण पिता स्थान में कुछ हानि या कमी पावेगा और राज समाज के सम्बन्ध में कुछ चतुराई और बाहरी स्थानों के सहयोग से कुछ शक्ति पावेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें पावेगा और स्त्री गृहस्थ के सुखों में कुछ कमजोरी और विशेष खर्च की योजना से काम करेगा तथा रोजगार के पक्ष में कुछ चतुराई के योग से मान पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता और भूमि के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये माता का बड़ा सहयोग मिलेगा और भूमि का कुछ सुख पावेगा।
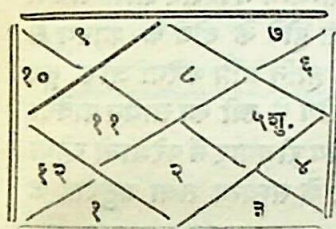
(वृश्चिक लग्न में १० शुक्र)

नं० ८२६

(वृश्चिक लग्न में ११ शुक्र)
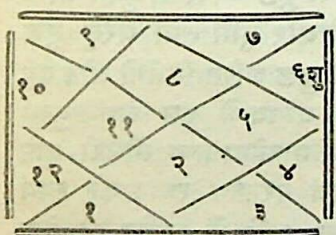
यदि कन्या का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने से तथा नीच होने से डबल दोष के कारण आमदनी के स्थान में कमजोरी करेगा तथा खर्च की भी कमी रहेगी और स्त्री पक्ष के सम्बन्ध में सुख शान्ति की कमी रहेगी और रोजगार के मार्ग में बाहरी स्थानों के योग से तथा चतुराई से आमदनी को थोड़ी लाभ शक्ति पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि में शक्ति प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में कुछ कमी के साथ विशेष शक्ति पावेगा।

नं० ८२७

यदि तुला का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी
(वृश्चिक लग्न में १२ शुक्र) राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विशेष शक्ति पावेगा तथा व्ययेश होने के दोष के कारण से स्त्री पक्ष में हानि प्राप्त करेगा और दूर व देर के योग से स्त्री का साधन पावेगा तथा स्थानीय रोजगार में परेशानी रहेगी और बाहर के सम्बन्ध तथा चतुराई के योग से रोजगार में शक्ति मिलेगी और सातवीं दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिए व्यवहारिक चतुराई के योग से शत्रु पक्ष में एवं झंझटों में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

नं० ८२८

भाई, पराक्रम, माता तथा भूमि स्थानपति—शनि

यदि वृश्चिक का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्ध में कुछ नीरसता युक्त शक्ति
(वृश्चिक लग्न में १ शनि) प्राप्त रहेगी और भूमि तथा घरेलू सुख के मार्ग में कुछ शक्ति मिलेगी और देह के अन्दर स्वभाव में कुछ शान्तियुक्त तेजी का योग रहेगा तथा तीसरी दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए भाई-बहन के सम्बन्ध में शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पुरुषार्थ शक्ति की सफलता मिलेगी और बड़ी हिम्मत शक्ति से काम करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री तथा रोजगार के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री स्थान में सुख शक्ति प्राप्त रहेगी तथा
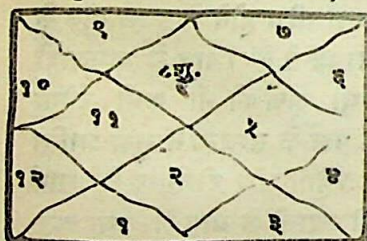
नं० ८२९

रोजगार के पक्ष में अच्छी सुख-सफलता मिलेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्था में वैमनस्यता पावेगा तथा राज-समाज में कुछ प्रभाव की कमी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के द्वारा सफलता-शक्ति प्राप्त करेगा।

(वृश्चिक लग्न में २ शनि)
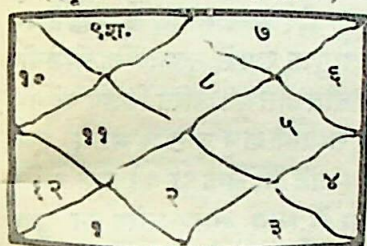
नं० ८३०

यदि धन का शनि—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो कुछ थोड़ी सी नीरसताई के साथ धन की शक्ति और कुटुम्ब का सुख प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धनकारक होता है, इसलिये भाई-बहन के सुख-सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी तथा पराक्रम की शक्ति से धन की वृद्धि करने में लगा रहेगा और धन के संग्रह करने में ही सुख का अनुभव करेगा तथा तीसरी दृष्टि से माता और भूमि के स्थान को स्वयं पनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए भूमि की शक्ति पावेगा तथा कुछ माता की शक्ति का लाभ पावेगा किन्तु मातृस्थान के प्रेम सम्बन्ध में कुछ कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से ायु एवं पुरातत्त्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति का सुख मिलेगा और पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा दसवीं मित्र दृष्टि से आमद तथा लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति पावेगा तथा सुखपूर्वक धन के लाभ का आनन्द प्राप्त करेगा परन्तु घरेलू सुख की वास्तविक यथार्थता में कमी का योग मिलेगा।

यदि मकर का शनि—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई-बहिन के पक्ष की सुख-शक्ति प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान में बड़ी सफलता-शक्ति और

हिम्मत शक्ति प्राप्त करने के कारण से बड़ा सुख और उत्साह रहेगा तथा माता की शक्ति का आनन्द मिलेगा और भूमि मकानादि के सुख की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है इसलिये कुछ दिक्कतों के साथ विद्या की शक्ति का सुख संग्रह पावेगा और सन्तान-पक्ष में कुछ वैमनस्यतायुक्त रूप से सुख-शक्ति मिलेगी तथा बातचीत की शक्ति विशेष रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये थोड़ी-सी नीरसता के साथ भाग्य-शक्ति का सुख प्राप्त होगा और धर्म के स्थान में कुछ मतभेद के साथ पालन करेगा तथा दसवीं उच्च दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए खर्चा बहुत करेगा और दूसरे स्थानों में सफलता पावेगा।
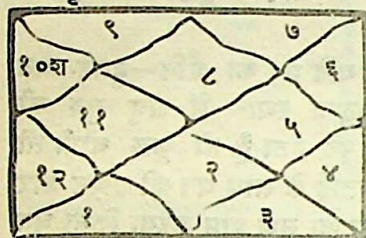
(वृश्चिक लग्न में ३ शनि

नं० ८३१

यदि कुम्भ का शनि—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो माता के पक्ष की विशेष शक्ति मिलेगी तथा भूमि मकानादि की सुन्दर शक्ति का आनन्द रहेगा और घरेलू सुख प्राप्ति के मजबूत साधन मिलेंगे तथा भाई-बहिन की शक्ति का सुन्दर सुख रहेगा और सुखपूर्वक पराक्रम शक्ति का प्रयोग करेगा तथा तीसरी नीच दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ अशान्ति के कारण बनेंगे तथा झगड़े-झंझटों के
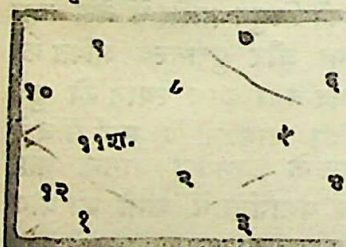
(वृश्चिक लग्न में ४ शनि

नं० ८३२

मार्ग में कुछ नरमाई या कठिनाई के योग से काम निकालेगा और ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के स्थान में कुछ मतभेद रहेगा और राज-समाज सम्बन्धों में कुछ नीरसताई रहेगी तथा कारबार की उन्नति के लिये लापरवाही रखेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी तथा देह से बहुत परिश्रम करने का प्रयत्न करेगा।

यदि मीन का शनि—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो कुछ अरुचिकर मार्ग के द्वारा विद्या की शक्ति पावेगा और विशेष वाचाल शक्ति रखेगा और भाई-बहिन तथा माता के पक्ष में कुछ वैमनस्यतायुक्त सम्पर्क पावेगा और मकानादि भूमि का थोड़ा सुख मिलेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति का प्रयोग बुद्धियोग द्वारा करेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष से सुख शक्ति मिलेगी तथा रोजगार के मार्ग में सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में सफलता पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष स्थान की वृद्धि करने का विशेष प्रयत्न करते रहने पर भी धन की शक्ति का साधारण सुख मिलेगा और कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य रहेगा।
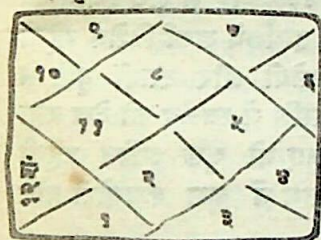
(वृश्चिक लग्न में ५ शनि)

नं० ८३३

यदि मेष का शनि—छठें शत्रु स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की मेष राशि पर बैठा है तो माता के सम्बन्ध में सुख शक्ति की महान् कमी पावेगा तथा मातृ-भूमि मकानादि की कमी एवं कष्ट रहेगा और

(वृश्चिक लग्न में ६ शनि)

नं ८३४
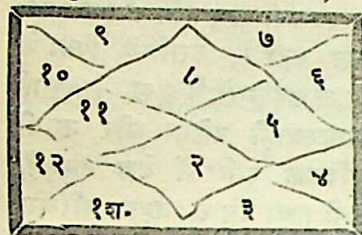
भाई-बहिन के पक्ष में शत्रुता एवं परेशानी का योग रहेगा तथा सुख शक्ति को पाने के लिये महान् कठिन परिश्रम करेगा तथा शत्रु पक्ष में कुछ गुप्त शक्ति के बल से हिम्मत और सहारा प्राप्त करेगा तथा कुछ दूसरे का सहारा पाकर चलेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति मिलेगी और पुरातत्त्व का लाभ पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से खर्च स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में शक्ति मिलेगी और दसवीं दृष्टि से भाई-बहिन के स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन से विरोध रूप होते हुए भी कुछ शक्ति रहेगी और पराक्रम में कुछ शक्ति रहेगी और पराक्रम में कुछ कमजोरी होते हुए भी हिम्मत से सफलता मिलेगी।

(वृश्चिक लग्न में ७ शनि)

नं० ८३५
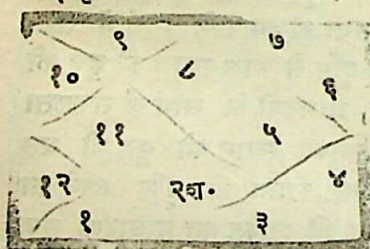
यदि वृषभ का शनि—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष से सुख और शक्ति पावेगा तथा सुखपूर्वक पराक्रम शक्ति के द्वारा रोजगार के मार्ग में सफलता एवं सुख प्राप्त करेगा और भाई-बहिन की शक्ति का योग रहेगा और गृहस्थ में आनन्द अनुभव करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्मस्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये धर्म व भाग्य के स्थान में कुछ थोड़ी-सी नीरसता का अनुभव करते हुए भी भाग्य और धर्म के विकास

का साधन बनाता रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से देह स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता की कुछ कमी रहेगी और देह से परिश्रम अधिक लिया जायगा और दसवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति मिलेगी और घरेलू सुख के उत्तम साधन मिलेंगे तथा मकान भूमि की सुख-शक्ति मिलेगी और दैनिक कार्य के मार्गों में आमोद-प्रमोद का सदैव ख्याल रखेगा।

यदि मिथुन का शनि—आठवें मृत्यु स्थान एवं पुरातत्त्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में हानि या कमी पावेगा और माता के सुख में बहुत कमी रहेगी तथा भूमि के सुख-सबंधों में परेशानी और पराक्रम स्थान की शक्ति में कमजोरी रहेगी तथा आयु के स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज-स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये पिता के सम्बन्ध में वैमनस्यता प्राप्त करेगा और राज-समाज के कार्यों में कुछ नीरसता रहेगी तथा कारबार के मार्ग में उन्नति के लिये कुछ आलस्य मानेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह-शक्ति में कुछ कमी रहेगी तथा कुटुम्ब में कुछ वैमनस्यता रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या की शक्ति में कुछ कमी रहेगी और संतान पक्ष में कुछ नीर-सता का योग प्राप्त करेगा तथा दिनचर्या में कुछ शानदारी रहेगी।

(वृश्चिक लग्न में ८ शनि)

नं० ८३६

यदि कर्क का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो कुछ नीरसतायुक्त मार्ग के

(वृश्चिक लग्न में ९ शनि)

नं० ८३७
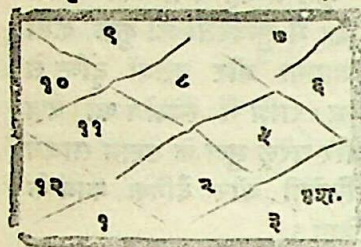
द्वारा भाग्य की वृद्धि पावेगा तथा धर्म का पालन करेगा और माता की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि का सुख मिलेगा और तीसरी मित्रदृष्टि से आमदनी के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ और भाग्य की शक्ति से धन का खूब लाभ पावेगा और आमदनी के मार्ग में सुखपूर्वक सफलता पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पराक्रम स्थान की उत्तम सफलता शक्ति पावेगा और भाई-बहिन की शक्ति का सुन्दर सम्बन्ध पावेगा और दसवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी के सहित शक्ति पावेगा और झगड़े झंझटों के पक्ष में कुछ दिक्कत रहेगी तथा ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी रहेगी तथा भाग्यवान् समझा जायगा।

(वृश्चिक लग्न में १० शनि)

नं० ८३८
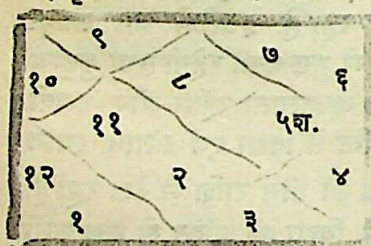
यदि सिंह का शनि— दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ नीरसता के कारण योग से शक्ति और सुख प्राप्त करेगा तथा राज समाज के सम्बन्ध में कुछ परिश्रम के योग से मान प्राप्त करेगा और कारबार के स्थान में शक्ति मिलेगी और उन्नति करेगा तथा भाई-बहिन के पक्ष में कुछ वैमनस्यतायुक्त शक्ति और सुख प्राप्त करेगा और पराक्रम से सफलता-शक्ति मिलेगी तथा तीसरी उच्च दृष्टि से खर्चस्थान एवं बाहरी स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख

रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों में सफलता-शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कुम्भ राशि में माता एवं भूमि स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति में कुछ मतभेद रखते हुए सुख प्राप्त करेगा और भूमि-मकानादि की शक्ति पावेगा तथा घरेलू सुख के साधन रहेंगे और दसवीं मित्र दृष्टि से स्त्री रोजगार के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में सुखपूर्वक शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में सुखपूर्वक शक्ति प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के अन्दर सुखसम्बन्धी साधनों को पावेगा।

यदि कन्या का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आमदनी के स्थान में विशेष सुख-शक्ति एवं उन्नति पावेगा क्योंकि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति से सुखपूर्वक लाभ की शक्ति प्राप्त रहेगी और भाई-बहिन की शक्ति का सुख लाभ पावेगा और माता के पक्ष से लाभ की शक्ति पावेगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये लाभ के मार्ग के द्वारा देह में कुछ आराम की कमी रहेगी तथा सुन्दरता में कुछ न्यूनता पावेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ दिक्कत के साथ विद्या की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा और सन्तान पक्ष में कुछ थोड़ी-सी नीरसता के योग से सुख-शक्ति मिलेगी तथा दसवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा
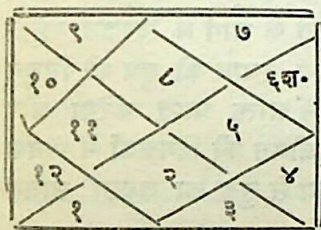
(वृश्चिक लग्न में ११ शनि)

नं० ८३९

है, इसलिये आयु की सुख-शक्ति पावेगा और पुरातत्त्व में शक्ति के योग से सुख मिलेगा।

यदि तुला का शनि--बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों में विशेष प्रभाव शक्ति और सुख मिलेगा और भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ हानि या परेशानी-सी पावेगा तथा माता के सुख सम्बन्धों में तथा मातृ-स्थान के सम्बन्ध में कमजोरी पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में कमी रहेगी तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ नीरसता प्रतीत होगी और सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी के कारण प्राप्त करेगा तथा कुछ झगड़े-झंझटों के मार्ग में दिक्कतें रहेंगी और दसवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्त्व सम्बन्ध में सुख-शक्ति रहेगी तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक और प्रभाव रहेगा और विशेष खर्च के संयोग से सुख का अच्छा साधन पावेगा।
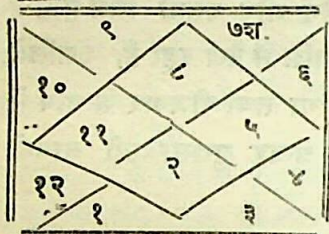
(वृश्चिक लग्न में १२ शनि)

नं० ८४०

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्ति के अधिपति--राहु

यदि वृश्चिक का राहु--प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो देह के सम्बन्ध में चिन्ता और कष्ट के साधन पावेगा तथा देह के अन्दर कोई कमी अनुभव करेगा तथा बड़ी कठिन और गुप्त युक्ति के बल से मान और प्रभाव पावेगा तथा गहरी उन्नति करने के लिये महान् कठिन कर्म की साधना करेगा तथा मंगल

(वृश्चिक लग्न में १ राहु)
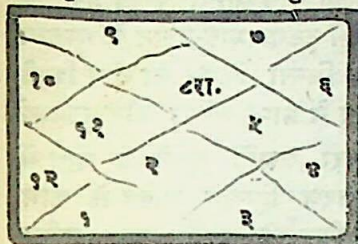
नं० ८४१

की राशि में राहु बैठा है इसलिये स्वभाव में बड़ी तेजी रहेगी और गुप्त रूप से अधिक स्वार्थसिद्धि का योग बनाता रहेगा किन्तु कभी-कभी देह में मृत्यु तुल्य संकट का सामना भी पाता रहेगा तथा सुन्दरता में कमी का योग प्राप्त करेगा किन्तु अन्दरूनी तौर से देह में कोई छिपी शक्ति का संयोग पावेगा।

यदि धन का राहु--धन और कुटुम्ब के स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है, तो धन के कोष स्थान में बड़ी भारी कमी रहेगी, धन के सम्बन्ध में कभी २ महान् हानि और महान् संकट के योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब के पक्ष में बड़ी भारी चिंता और परेशानी के

(वृश्चिक लग्न में २ राहु)
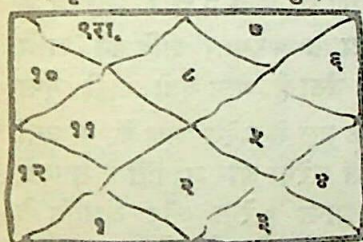
नं० ८४२

योग प्राप्त करेगा। गुरु की राशि पर नीच का होकर बैठा है, इसलिये धन की शक्ति पाने के लिए महान् कठिन कष्टसाध्य कर्म को बड़ी गुप्त युक्ति और योग्यता के द्वारा करके सफल बनेगा किन्तु फिर भी जीवन में धन की चिंता से मुक्ति नहीं मिलेगी तथा धन की पूर्ति के लिये कभी २ धन का कर्जा भी लेना पड़ेगा तथा धन की न्यून शक्ति का पालन करेगा।

यदि मकर का राहु--तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति की महान् वृद्धि करेगा और बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम लेगा तथा गुप्त युक्ति के कर्म बल से महान् धैर्य के द्वारा बड़े २ काम करेगा किन्तु कभी २ अचानक हिम्मत

(वृश्चिक लग्न में ३ राहु)

नं० ८४३
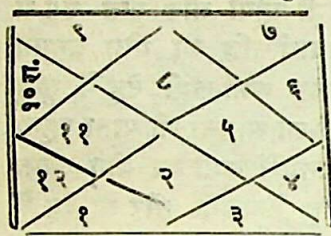
हारने का योग बनेगा परन्तु प्रकट में धैर्य नहीं टूटेगा भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता, फिकर का योग किसी भी रूप में प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ के द्वारा उन्नति करने के मार्ग में असाधारण हिम्मत शक्ति से काम लेगा फिर भी अपने अन्दर शक्ति सामर्थ्य की कुछ कमी अनुभव करेगा ।

यदि कुम्भ का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में बड़ा संकट एवं माता के सुख की कमी प्राप्त करेगा और भूमि स्थान के सुख-सम्बन्धों में भी

(वृश्चिक लग्न में ४ राहु)

नं० ८४४

कमी और झंझट पावेगा तथा घरेलू वातावरण में कभी २ घोर अशांति के कारण प्राप्त करेगा । शनि की राशि पर राहु बैठा है, अतः बड़ी भारी गुप्त युक्ति के बल से घरेलू सुख के साधनों को प्राप्त करेगा और अशांति के साधनों को भी प्राप्त करेगा और अशांति के वातावरण में बड़ी युक्ति के द्वारा बचाव के अनेक साधन बनायेगा तथा सुखी रहने के लिये कठिन परिश्रम तथा कुछ दूसरों का सहारा प्राप्त करेगा ।

यदि मीन का राहु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में बड़ा भारी संकट प्राप्त करेगा और विद्या को ग्रहण करने में बड़ी २ दिक्कतें रहेंगी किन्तु फिर भी गुरु की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये गुप्त युक्ति और योग्यता के बल से विद्या स्थान की पूर्ति करेगा तथा छिपाव शक्ति के द्वारा बोलचाल के

(वृश्चिक लग्न में ५ राहु)

नं० ८४५

अन्दर बड़ी भारी अक्लमंदी जाहिर करेगा और संतान पक्ष में बड़ी २ दिक्कतों से टकराने के बाद कुछ शक्ति पायेगा और दिमाग के अन्दर कुछ अशान्ति और परेशानी सी रहेगी और बड़ी २ गहरी युक्तियों के द्वारा बड़ी २ लम्बी योजनाएँ बनायेगा।

(वृश्चिक लग्न में ६ राहु)
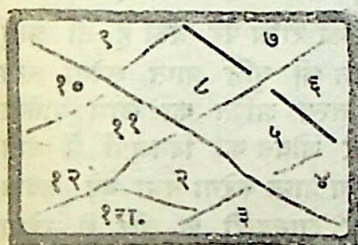
नं० ८४६

यदि मेष का राहु - छठे शत्रु स्थान एवं झंझट स्थान में शत्रु मंगल की मेष राशि पर बैठा है, तो छठे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली हो जाता है, अतः शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और बड़ी से बड़ी मुसीबतों के अन्दर बड़ी भारी युक्ति और हिम्मत शक्ति से काम निकालेगा और गुप्त हिम्मत शक्ति से बड़ी विजय पावेगा किन्तु फिर भी कभी २ राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी प्राप्त होगी बल्कि कभी २ शत्रु पक्ष में कठिन समस्याओं से टकराना पड़ेगा किन्तु झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी धैर्यता की शक्ति से कामयाबी प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में हानि एवं परेशानी पावेगा तथा रोजगार के स्थान में बड़ी दिक्कतें रहेंगी मगर चतुर शुक्र की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये बड़ी २ चतुराई और युक्तियों के बल से स्त्री और गृहस्थ की संचालन शक्ति पावेगा तथा बड़ी गहरी युक्तियों

(वृश्चिक लग्न में ७ राहु)
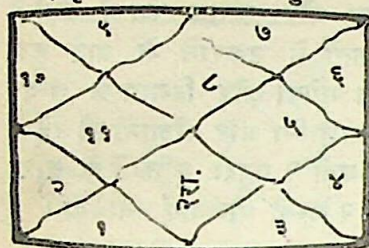
नं० ८४७

के बल से रोजगार में शक्ति प्राप्त करेगा, किन्तु कभी २ स्त्री स्थान में एवं गृहस्थ के पक्ष में घोर संकट पावेगा तथा इसी प्रकार रोजगार के मार्ग में कभी २ भारी चिन्ता का योग पावेगा और रोजगार तथा गृहस्थ के सम्बन्ध में अन्दरूनी कुछ कमी के साथ चलेगा।

यदि मिथुन का राहु—आठवें आयु स्थान में उच्च का होकर मित्र

(वृश्चिक लग्न में ८ राहु)
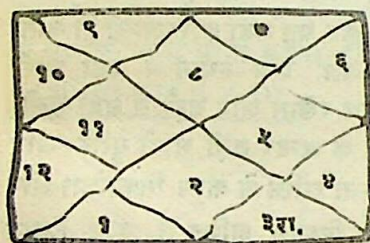
नं० ८४८

बुध की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ी उमंग प्राप्त करेगा तथा बड़े जवाब और शानदारी के तौर से रहेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण जीवन के अन्दर अन्दरूनी कुछ कमी महसूस करेगा तथा कभी २ आयु के स्थान में अचानक कोई खतरा या निराशा का योग पावेगा और इसी प्रकार कभी २ पुरातत्त्व विभाग में कोई हानि का योग पावेगा और कभी २ कोई उदर के अन्दर शिकायत का योग पावेगा तथा आसपास के स्थान में प्रसिद्धता पावेगा।

यदि कर्क का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में महान् संकट का योग प्राप्त करेगा तथा भाग्य की उन्नति के लिये बड़ी २ टक्करें खाने के बाद कुछ रास्ता पावेगा और धर्म के मार्ग में हानि एवं कुछ

(वृश्चिक लग्न में ९ राहु)

नं० ८४९

अश्रद्धा रहेगी तथा धर्म का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकेगा और मानसिक चिंतायें प्राप्त होंगी तथा भाग्योन्नति के लिये कुछ न्याय के विपरीत मार्ग भी बनाना पड़ेगा तथा बड़ी भारी निराशाओं से सामना करना पड़ेगा और ईश्वर के भरोसे में बारम्बार कमी और शंका रहेगी बाद में कुछ सहारा रहेगा।

यदि सिंह का राहु—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में परेशानी तथा चिन्ता के कारण प्राप्त करेगा और राज समाज के संबंध में कुछ कष्ट एवं निराशा प्राप्त करेगा तथा मान-उन्नति एवं पदोन्नति के मार्ग में रुकावटें तथा कमी पावेगा और कार-बार की उन्नति के लिये विशेष चिन्ता एवं परेशानियों के द्वारा कार्य करेगा और राज-समाज, इज्जत-आबरू के सम्बन्ध में कभी २ महान् संकट का सामना पावेगा तथा सूर्य के स्थान पर राहु बैठा है, इसलिये हेकड़ी और चतुराई के द्वारा उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि के प्रयत्न करेगा।

(वृश्चिक लग्न में १० राहु)

नं० ८५०

यदि कन्या का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो लाभ स्थान में क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष लाभ पावेगा तथा गुप्त युक्ति एवं विवेक शक्ति के द्वारा अधिक नफा खाने के लिये विशेष

(वृश्चिक लग्न में ११ राहु)

नं० ८५१

प्रयत्न करेगा तथा आमदनी के स्थान में कभी २ कष्ट एवं चिंताओं का योग प्राप्त करेगा तथा अधिक लाभ प्राप्ति के लिये अनधिकार लाभ की शक्ति भी प्राप्त करेगा तथा अधिक स्वार्थ सिद्धि का सदैव ध्यान रखेगा फिर भी आमदनी के अन्दर कमी और असन्तोष के कारण प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी मुफ्त का सा धन प्राप्त करेगा।

यदि तुला का राहु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक होने के कारण से अथवा खर्च के किसी भी कारण से परेशानी प्राप्त करेगा तथा चतुर शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये चतुराई तथा गुप्त युक्ति बल की शक्ति से खर्च के संचालन मार्ग में शक्ति पावेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में परेशानी के कारण बनेंगे किन्तु युक्ति बल के द्वारा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई के मार्ग में सफलता मिलेगी किन्तु कभी २ खर्च के मार्ग में भारी संकट का सामना करना पड़ेगा फिर भी खर्च के मार्ग में कुछ कमी के साथ शक्ति मिलेगी और कभी-कभी मुफ्त का सा खर्च-संचालन मार्ग भी मिलेगा।
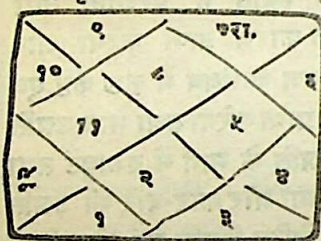
(वृश्चिक लग्न में १२ राहु)

नं० ८५२

कष्ट, कठिनकर्म तथा गुप्त शक्ति के अधिपति—केतु

यदि वृश्चिक का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में कई बार गहरे संकट और आघात प्राप्त होंगे तथा देह में सुन्दरता की कमी रहेगी क्योंकि गरम ग्रह की

(वृश्चिक लग्न में १ केतु)

नं० ८९३
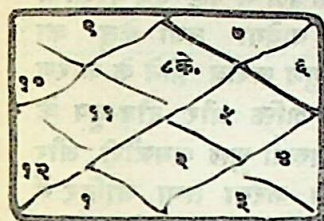
राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये स्वभाव में गरमी रहेगी तथा देह के द्वारा कठिन कर्म एवं विशेष परिश्रम करना पड़ेगा और दिमाग की शक्ति के सम्बन्ध में इसलिये कमजोरी मानेगा क्योंकि केतु के धड़ पर शिर नहीं है, और देह में कभी कोई माता का यानी चेचक की बीमारी भी पावेगा तथा अधिक दौड़ धूप करने के कारण से थकान एवं परेशानी अनुभव करेगा।

यदि धन का केतु—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में उच्च का

(वृश्चिक लग्न में २ केतु)

नं० ८९४
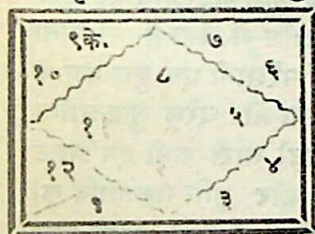
होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन के स्थान में कभी २ मुक्त का सा विशेष धन प्राप्त करेगा और धन की विशेष शक्ति पाने के लिये बड़ा भारी परिश्रम एवं विशेष दौड़-धूप करेगा और कुटुम्ब के स्थान में बड़ा भारी आडम्बर पावेगा और नकद धन की स्थिति के अन्दर प्रकट रूप में बड़ा भारी दिखावा रहेगा किन्तु अन्दरूनी कुछ कुछ कमी रहेगी और केतु स्वाभाविक गुण के कारण से धन के पक्ष में कभी २ बड़ी हानि पावेगा तथा इसी कारण कुटुम्ब सुख में कुछ कमी रहेगी और इज्जत-आबरू के अन्दर बड़ी शक्ति प्राप्त करने का सदैव भारी प्रयत्न करेगा।

यदि मकर का केतु—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये बड़ी भारी पुरुषार्थ शक्ति से काम करने और उद्योग करने का प्रयत्न करेगा तथा बड़ी भारी मित्र हिम्मत शक्ति रखेगा तथा

(वृश्चिक लग्न में ३ केतु)

नं० ८५५

भाई बहिन के पक्ष में कष्ट एवं परेशानी के कारण पावेगा तथा केतु का स्वाभाविक गुण खराब होने के कारण परिश्रम की शक्ति और दौड़-धूप के मार्ग में अन्दरूनी कुछ कमजोरी और परेशानी प्राप्त करेगा तथा जाहिर में बड़ी भारी हेकड़ी से काम लेगा तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग में बहादुरी की सफलता-शक्ति मिलेगी किन्तु अपनी अन्दरूनी पुरुषार्थ-शक्ति के अन्दर कुछ गुप्त शक्ति का भरोसा तथा कुछ कमजोरी मानेगा।

यदि कुम्भ का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर मित्र शनि की राशि में बैठा है तो माता के स्थान में परेशानी एवं कुछ कष्ट के कारण पायेगा और घरेलू सुख-शान्ति के अन्दर बड़ी भारी कमी एवं झंझट प्राप्त करेगा और भूमि-मकानादि की कमी एवं कुछ परेशानी रहेगी तथा कभी-कभी महान् अशांति के कारण प्राप्त होंगे किन्तु सुख-शान्ति पाने के लिये महान् कठिन कर्म एवं विशेष परिश्रम करेगा और गुप्त शक्ति एवं हिम्मत के द्वारा धैर्य और सुख का अनुभव करेगा तथा मकानादि का स्थानान्तर पाकर भी सुख-संचय करने में कुछ त्रुटि मानेगा।
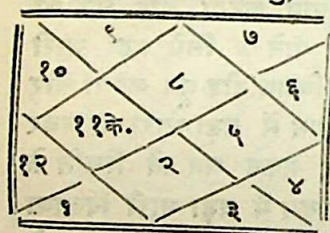
(वृश्चिक लग्न में ४ केतु)

नं० ८५६

यदि मीन का केतु—पांचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान पर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में बड़ा कष्ट प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में विद्या ग्रहण करते समय बड़ी दिक्कतें पावेगा तथा दिमाग के अन्दर परेशानी और गुप्त चिंता का योग प्राप्त करेगा तथा बातचीत

(वृश्चिक लग्न में ५ केतु)
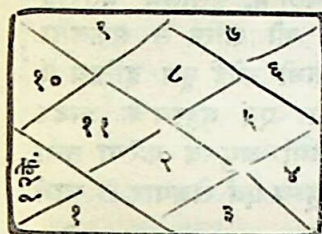
नं० ८५७

के अन्दर शब्दशैली की शोभा में कमी रहेगी तथा कभी-कभी सन्तान पक्ष में महान संकट का योग प्राप्त करेगा और बुद्धि के अन्दर गुप्त शक्ति का योग पावेगा तथा विचारों में बड़ी भारी जिह्वाजी तथा दृढ़ता शक्ति से काम लेगा इसलिए बुद्धि की प्रयोग शक्ति में शील और सत्य की कमजोरी रहेगी तथा क्रोध रहेगा।

यदि मेष का केतु—छठे शत्रु मंगल की मेष राशि में बैठा है तो

(वृश्चिक लग्न में ६ केतु)
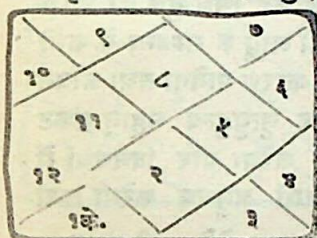
नं० ८५८

छठे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये बड़ी बहादुरी के साथ शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा तथा बड़ी से बड़ी दिक्कतों और मुसीबतों में भारी गुप्त शक्ति और धैर्य से काम करेगा और प्रभाव शक्ति का विकास करने के लिये बड़ी भारी कठिन परिश्रम तथा विशेष दौड़-धूप करेगा और ननसाल पक्ष में कुछ कमजोरी पावेगा तथा कभी-कभी शत्रु पक्ष में अन्दरूनी कमजोरी अनुभव करेगा।

यदि वृषभ का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा कष्ट सहन करेगा और गृहस्थ के संचालन मार्ग में बड़ी बड़ी दिक्कतें एवं परेशानियाँ पावेगा तथा रोजगार के पक्ष में बड़ी कठिनाइयाँ मिलेंगी, कठिन कर्म के द्वारा

(वृश्चिक लग्न में ७ केतु)

नं० ८५९
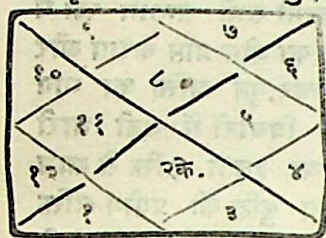
कार्य-संचालन करेगा और चतुर शुक्र के स्थान पर बैठा है, इसलिये चतुराई और हठयोग की शक्ति से सफलता पावेगा तथा कभी कोई मूत्र इन्द्रिय में विकार पावेगा एवं गृहस्थ के अन्दर कोई खास कमी अनुभव करेगा तथा कभी-कभी गृहस्थ एवं रोजगार के मार्ग में महान् संकट का सामना पावेगा किन्तु गुप्त धैर्य की शक्ति से मंजिल पूरी करता रहेगा।

(वृश्चिक लग्न में ८ केतु)

नं० ८६०
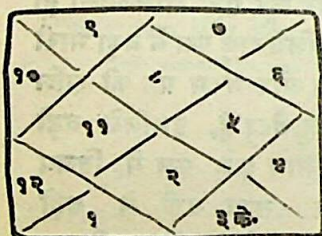
यदि मिथुन का केतु--आठवें आयु स्थान में नीच का होकर मित्र बुध को राशि पर बैठा है तो आयु के सम्बन्ध में कमी और कष्ट के कारण पावेगा तथा जीवन में अनेकों बार मृत्युतुल्य महान् संकट के योग प्राप्त करेगा और दिनचर्या में बड़ी परेशानियाँ अनुभव करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्त्व शक्ति की हानि पावेगा और गुदा के अन्दर या पेट में कोई बीमारी के कारण कष्ट पावेगा तथा अनेक प्रकार की चिंताओं से टकराना पड़ेगा और जीवन-निर्वाह करने के लिए महान् कठिन परिश्रमी कर्म के द्वारा काम करेगा तथा अतिगुप्त शक्ति का भरोसा तथा हिम्मत रखेगा।

यदि कर्क का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में परम शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य स्थान में महान् संकट प्राप्त करेगा तथा धर्म के मार्ग में बड़ी हानि और कमजोरी करेगा और भाग्य

(वृश्चिक लग्न में ९ केतु)

नं० ८६१

की उन्नति के मार्ग में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ और परेशानियाँ पावेगा क्योंकि मन स्थानपति चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिये मानसिक चिंतायें अधिक रहेंगी और कभी-कभी भाग्य के सम्बन्ध में घोर संकट का योग प्राप्त करेगा तथा भाग्य की उन्नति के लिये बड़े कठिन कर्म की साधना करेगा तदुपरान्त बड़ी दिक्कत और देर के बाद भाग्य स्थान में कुछ सान्त्वना पावेगा।

(वृश्चिक लग्न में १० केतु)

नं० ८६२
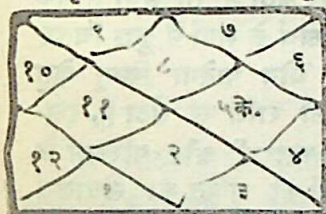
यदि सिंह का केतु—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में बड़ा भारी कष्ट प्राप्त करेगा तथा राज-समाज के मार्ग में मान और प्रभाव की हानि एवं परेशानी रहेगी और कारबार की उन्नति के स्थान में बड़ी भारी दिक्कतें रहेंगी किन्तु गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये उन्नति के लिए महान् कठिन और उग्र कर्म की उपासना करेगा तथा कभी-कभी राज-समाज या कारबार के मार्ग में बड़ा भारी संकट का सामना पावेगा और कठिनाई तथा गुप्त शक्ति के बल से अन्त में कुछ सुधार पावेगा।

यदि कन्या का केतु—मित्र बुध की राशि पर लाभ स्थान में बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा तथा धन लाभ की वृद्धि करने में महान् शक्ति का प्रयोग करेगा तथा बुध की राशि पर

बैठा है, इसलिये विवेक और कठिन कर्म की शक्ति से मुफ्त का-सा लाभ भी प्राप्त करेगा और धन की आमदनी के मार्ग में कभी-कभी संकट पावेगा तथा लाभोन्नति के स्थान में विशेष स्वार्थ सिद्धि का सदैव ध्यान रखेगा तथा फिर भी लाभ के मार्ग में अन्दरूनी कुछ कमी अनुभव करेगा और हिम्मत से काम लेगा।
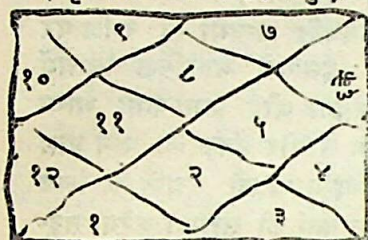
(वृश्चिक लग्न में ११ केतु)

नं० ८६३

यदि तुला का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक रहेगा तथा खर्च के मार्ग में कुछ चिंता-फिकर का योग पावेगा किन्तु केतु चतुर शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी चतुराई और परिश्रम के योग से खर्च की शक्ति का संचालन प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी किन्तु चतुराई और कठिन परिश्रम के योग से बाहरी स्थानों में सफलता शक्ति पावेगा तथा खर्च के संचालन में कुछ अन्दरूनी कमी अनुभव करेगा तथा खर्च में हिम्मत शक्ति से काम लेगा।
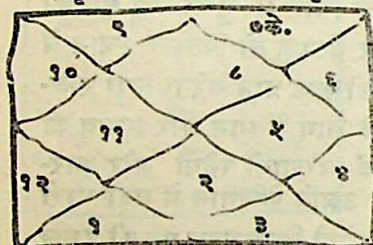
(वृश्चिक लग्न में १२ केतु)
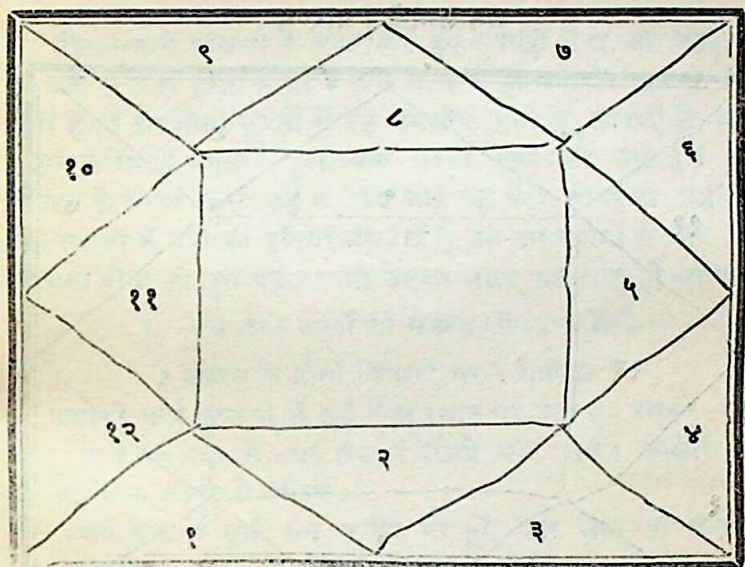
नं० ८६४

॥ वृश्चिक लग्न समाप्त ॥

प्रिय पाठक गण-- ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकार से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा-बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं, उसका फल समस्त जवीन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचरगति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा-बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों

धन लग्नादेश प्रारम्भ
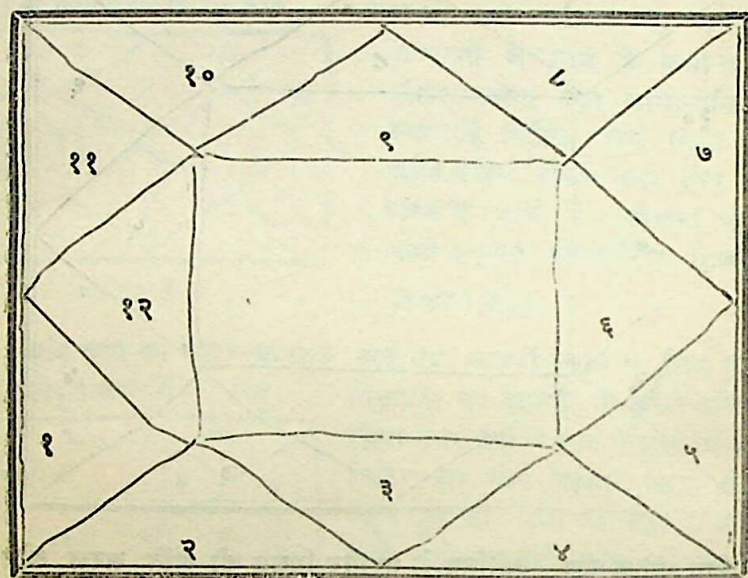
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

[कुण्डली नं० ९७२ तक में देखिये]

का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ८६५ से लेकर कुण्डली नं० ९७२ तक के अन्दर जो-जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता-बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नौ ग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये, अतः दोनों प्रकार से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका असर फल लागू हो जायेगा।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ८६५ से ८७६ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८६५ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८६६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८६७ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८६८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८६९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं ८७३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८७६ के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ८७७ से ८८८ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८७७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८७८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८७९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ८८८ के अनुसार मालूम करिये।

९ – धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए जीवन के दोनों किनारों पर – भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ८८९ से ९०० तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८८९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९० के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९१ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ८९९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०० के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० ९०१ से ९१२ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०१ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में बुध मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९०९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९१० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९११ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९१२ के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ९१३ से ९२४ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१३ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१४ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१५ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९१९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९२४ के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० ९२५ से ९३६ तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९२५ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९२६ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९२७ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९२८ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९२९ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३१ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३२ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३३ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३४ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९३६ के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ९३७ से ९४८ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९३७ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९३८ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९३९ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ९४२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ९४८ के अनुसार मालूम करिये।

६—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ९४९ से ९६० तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९४९ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५० के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५१ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९५७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ९५८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ९५९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६० के अनुसार मालूम करिये।

९—धन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० ९६१ से ९७२ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० के ९६१ अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६२ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६३ के अनुसार मालूम करिये।

१२—जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० ९६७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९६९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९७० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९७१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ९७२ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

भाग्य, धर्म तथा प्रभाव स्थानपति—सूर्य

यदि धन का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा तथा देह के अन्दर प्रभाव और जचाव की शक्ति रखेगा अर्थात् भाग्यशाली दिखलाई पड़ेगा और धर्म का पालन एवं धर्म की जानकारी करेगा और ईश्वर में आदर्श श्रद्धाका रूप प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री पक्ष में सुन्दर सहयोग मिलेगा तथा भाग्यशालिनी स्त्री मिलेगी और भाग्य की शक्ति से रोजगार के मार्ग

धन लग्न में १ सूर्य
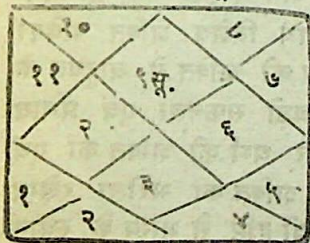
नं० ८६५

में सफलता शक्ति मिलेगी तथा गृहस्थ के अन्दर प्रभाव और धर्म तथा सुख रहेगा।

यदि मकर का सूर्य—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति के अन्दर कुछ थोड़ी सी नीरसताई के मार्ग से अच्छी सफलता एवं प्रभाव प्राप्त करेगा

धन लग्न में २ सूर्य

नं० ८६६
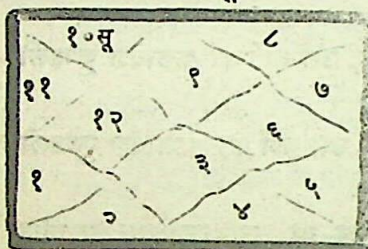
और भाग्यवान् धनवान् समझा जायगा तथा भाग्य की शक्ति से धन की उन्नति होगी और धर्म का पालन स्वार्थ सिद्धि के लिये करेगा तथा कुटुम्ब के स्थान में कुछ थोड़ी सी मत-भेद की शक्ति से उन्नति पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति प्राप्त करेगा तथा भाग्य की शक्ति से जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा।

यदि कुम्भ का सूर्य—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान पर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर गरम ग्रह बड़ा शक्ति-शाली फल का दाता बनता है, इसलिये पराक्रम शक्ति के द्वारा बड़ी

धन लग्न में ३ सूर्य

नं० ८६७

भारी सफलता पावेगा और भाई बहिन के स्थान में कुछ थोड़ी सी नीर-सता के साथ विशेष शक्ति पावेगा तथा भाग्य की शक्ति से बाहुबल के कार्यों में बड़ी सफलता एवं प्रभाव मिलेगा और धर्म की शक्ति का एवं ईश्वर की शक्ति का भरोसा रखेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य के स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ

शक्ति के द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा हिम्मत शक्ति से यश प्राप्त करेगा।

यदि मीन का सूर्य—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में बड़ा भारी प्रभाव तथा सफलता और सुख मिलेगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति प्राप्त होगी और घरेलू वातावरण के अन्दर भाग्य की शक्ति से बड़ा आनन्द और प्रभाव रहेगा और यथा शक्ति धर्म के पालन का आचरण रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से सफलता शक्ति पावेगा तथा राज-समाज में मान एवं प्रभाव रहेगा और कारबार के मार्ग में भाग्य की शक्ति से उन्नति के कारण मिलेंगे तथा धर्म के सुन्दर मार्ग का अनुसरण रहने के कारण यश प्राप्त रहेगा।
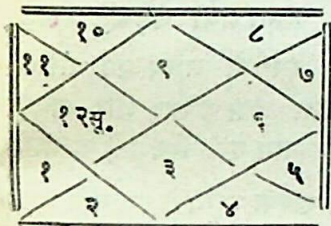
धन लग्न में ४ सूर्य

नं० ८६८

यदि मेष का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष की विशेष शक्ति और सफलता मिलेगी और विद्या स्थान में विशेष उन्नति करेगा तथा बुद्धि और वाणी की शक्ति में बड़ा प्रभाव और चमत्कार पावेगा तथा धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में बड़ा ज्ञान प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में कमजोरी प्राप्त रहेगी और लाभोन्नति के मार्ग में कुछ सज्जनता
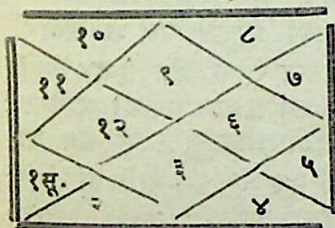
धन लग्न में ५ सूर्य

नं० ८६९

की शक्ति का दुरुपयोग करना पड़ेगा तथा बुद्धि और वाणी की प्रखरता एवं तेजी के कारणों से लाभ के मार्ग में हानि के कारण बनेंगे।

यदि वृषभ का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में शुक्र की राशि पर बैठा है, तो छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव स्थापित रहेगा तथा बड़े-बड़े झगड़े झंझटों के मार्ग में भाग्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग एवं दिक्कतों के मार्ग से ही भाग्य का विकास पावेगा किन्तु प्रकट रूप से भाग्य के स्थान में कुछ कमी अनुभव करेगा तथा धर्म का पालन करने में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च संचालन करने के मार्ग में भाग्य की सहायता रहेगी और बाहरी स्थानों में सफलता मिलेगी।
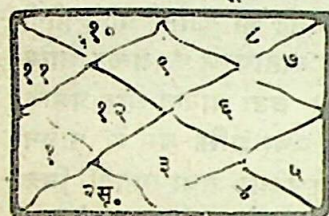
धन लग्न में ६ सूर्य

नं० ८७०

यदि मिथुन का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति पावेगा और स्त्री के पक्ष में बड़ा प्रभाव और भाग्य की उत्तम शक्ति पावेगा तथा गृहस्थ धर्म के अन्दर सुन्दर आनन्द रहेगा और ईश्वर तथा भाग्य की शक्ति का भरोसा मानेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह के अन्दर प्रभाव की शक्ति रहेगी और भाग्यवान् समझा
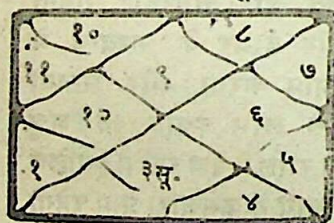
धन लग्न में ७ सूर्य

नं० ८७१

जायगा तथा धर्म और सज्जनता के पालन का ध्यान रखेगा तथा सूर्य गरम स्वभाव का है, इसलिए स्त्री के स्वभाव में तेजी रहेगी।

यदि कर्क का सूर्य—आठवें मृत्यु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्ध में बड़ी भारी परेशानियाँ रहेंगी और भाग्योन्नति के लिये बहुत सी निराशाओं से टकराने के बाद दूसरे स्थान का सहारा लेकर देर-अबेर में शक्ति पावेगा किन्तु भाग्येश होने के नाते आयु की वृद्धि करेगा तथा जीवन की सहायक होने वाली पुरातत्व शक्तिका लाभपावेगाऔरजीवनकीदिन चर्या में प्रभाव रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से धन भवन को देख रहा है, इस लिये धन की संग्रह शक्ति के अन्दर कुछ कमी अनुभव करेगा और कुटुम्ब के मार्ग में कुछ नीरसता पावेगा।

धन लग्न में ८ सूर्य

नं० ८७२

यदि सिंह का सूर्य—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्य की महान् उन्नति करेगा तथा भाग्य में बड़ा भारी प्रभाव और यश प्राप्त करेगा और धर्म का ऊँचा पालन करेगा तथा ईश्वर में निष्ठा रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये पराक्रम स्थान की वृद्धि के मार्ग में कुछ नीरसता पावेगा तथा भाई-बहन के सम्बन्ध में कुछ मतभेद प्राप्त करेगा और भाग्यवान् समझा जायगा तथा भाग्य के मुकाबले पुरुषार्थ स्थान की मान्यता कम करेगा।

धन लग्न में ९ सूर्य
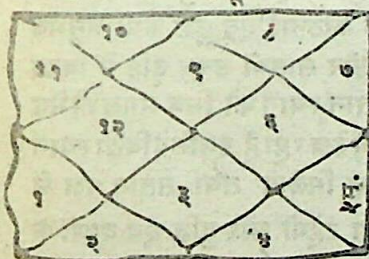
नं० ८७३

यदि कन्या का सूर्य—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र

बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में बहुत उन्नति पावेगा तथा राज-समाज के मार्ग में बड़ा मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कार-बार की उन्नति के मार्ग में भाग्य की शक्ति से बड़ी सफलता पावेगा

धन लग्न में १० सूर्य

नं० ८७४
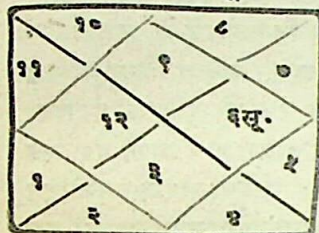
तथा प्रभावशाली कर्म करेगा और बड़ा भाग्यवान् समझाजायगाऔर धर्म कर्म का सुन्दर पालन करेगा तथा सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की मीन राशि में माता एवं भूमि के स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य की शक्ति से माता का सुख सौभाग्य पावेगा और भूमि के स्थान में सुख और सफलता शक्ति पावेगा तथा प्रतिष्ठा युक्त रहेगा।

यदि तुला का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो यद्यपि नीच होने से कमजोर है तथापि ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है,

धन लग्न में ११ सूर्य

नं० ८७५
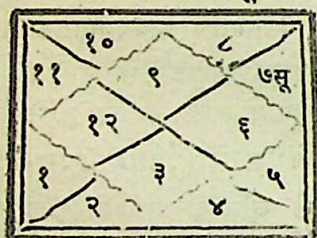
इसलिये भाग्य की शक्ति से लाभ तो सदैव होता रहेगा किन्तु लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाई एवं कुछ कमी अनुभव होगी और सातवीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र मंगलकी मेष राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या स्थान में शक्ति मिलेगी तथा संतान पक्ष में सफलता रहेगी और बुद्धि एवं वाणी के अन्दर धर्म का उत्तम ज्ञान तथा सज्जनता की बोलचाल रहेगी किन्तु धर्म के पालन में कुछ कमजोरी रहेगी।

यदि वृश्चिक का सूर्य—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में

मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा और भाग्योन्नति के मार्ग में कुछ कमजोरियाँ पावेगा तथा बाहरी स्थानों के संयोग से भाग्य की वृद्धि कुछ देरी से प्राप्त करेगा और धर्म के पालन के कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु धर्म के मार्ग में खर्चा अवश्य होगा और यश प्राप्ति में कुछ कमजोरी रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्य और खर्च की शक्ति को प्रभाव प्राप्त करेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ थोड़ी सी दिक्कतों के बाद सफलता शक्ति पावेगा तथा बाहरी स्थानों में उत्तम सम्बन्ध पावेगा।
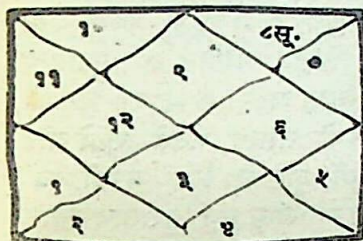
धन लग्न में १२ सूर्य

नं० ८७६

यदि धन का चन्द्र--प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो आयु के सम्बन्ध में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ मनोयोग द्वारा पावेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण देह में कुछ परेशानी पावेगा तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी और मन के अन्दर बड़े उतार-चढ़ाव दुख-सुख के भाव आते रहेंगे तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध को मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में कुछ परेशानी और कुछ शक्ति पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाई के द्वारा मनोयोग से सफलता पावेगा।
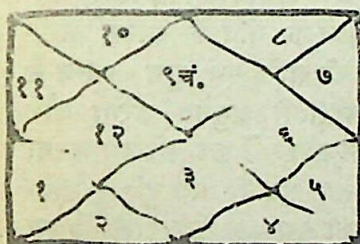
धन लग्न में १ चन्द्र

नं० ८७७

यदि मकर का चन्द्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण धन के कोष स्थान में संग्रह शक्ति का अभाव रहेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कमजोरी तथा कुछ अशान्ति के कारण प्राप्त होंगे किन्तु मनोयोग की पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति के द्वारा धन की प्राप्ति के साधन मिलते रहेंगे और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी कर्क राशि में आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति का सुन्दर लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग रहेगा तथा मनको कुछ विराव सा रहेगा।
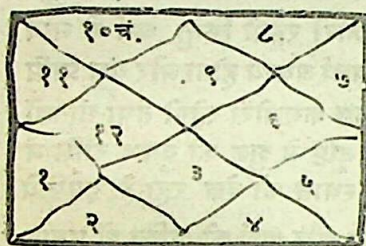
धन लग्न में २ चन्द्र

नं० ८७८

यदि कुम्भ का चन्द्र—तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व सम्बन्धी मनोयोग की शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा, किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण भाई-बहिन की शक्ति एवं सुख सम्बन्ध में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और पराक्रम स्थान में कुछ परिश्रम करना पड़ेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये अष्टमेश होने के कारण जीवन में रौनक और भाग्य एवं धर्म स्थान में कुछ परेशानी या कुछ कमी अनुभव करेगा।
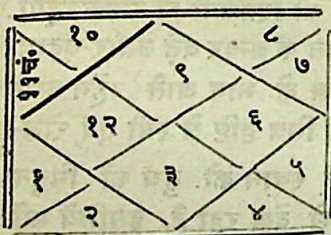
धन लग्न में ३ चन्द्र

नं० ८७९

यदि मीन का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो आयु की उत्तम शक्ति मिलेगी तथा मनोयोग के बल से पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी तथा मातृभूमि के स्थान से कुछ वियोग मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ परेशानी अनुभव होगी तथा राजसमाज एवं कारबार के स्थान में कुछ थोड़ी दिक्कतें प्रतीत होंगी।

धन लग्न में ४ चन्द्र

नं० ८८०

यदि मेष का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है, तो आयु स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी तथा मनोयोग के बल से पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ मनोरंजन रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से सन्तान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त होगा और विद्या स्थान में कुछ त्रुटि मिलेगी तथा दिमाग के अन्दर कुछ फिकर रहेगी और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये लाभ के सम्बन्ध में कुछ परेशानी तथा मनोयोग का बल प्रयोग करना पड़ेगा।
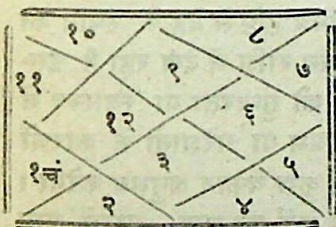
लग्न धन में ५ चन्द्र

नं ८८१

धन लग्न में ६ चन्द्र

नं० ८८२
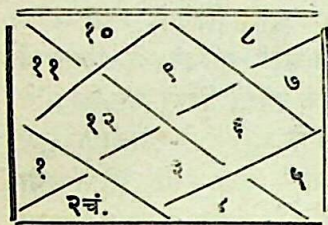
यदि वृषभ का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु में कुछ शक्ति मिलेगी और कुछ मनोयोग के विशेष परिश्रम से पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा तथा शत्रु स्थान में प्रभाव रखेगा और जीवन की दिनचर्या में कुछ दिक्कतों के साथ आनन्द मानेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ मानसिक परेशानी अनुभव करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थान के सम्बन्ध में कुछ अरुचिकर मार्ग प्रतीत होगा।

यदि मिथुन का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में शक्ति मिलेगी तथा मनोयोग के दैनिक कर्म से पुरातत्व जीवनाधार शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ मनोरंजन रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता या स्वास्थ्य में कुछ परिश्रम या परेशानी के कारणों से देह में कुछ थकान अनुभव करेगा।

धन लग्न में ७ चन्द्र

नं० ८८३
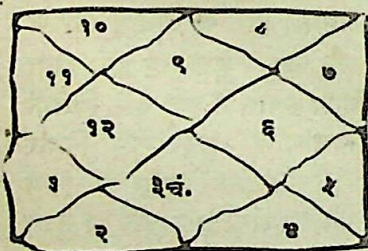
यदि कर्क का चन्द्र—आठवें आयु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु की वृद्धि पावेगा तथा जीवनाधार पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ी शानदारी एवं रौनक रहेगी

तथा पुरातत्व सम्बन्ध में मन को विशेष ज्ञान रहेगा किन्तु अष्टमेश

धन लग्न में ८ चन्द्र
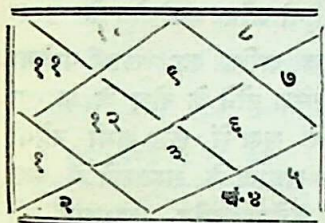
नं० ८८४

होने के दोष के कारण से मन को कुछ अशान्ति सी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष स्थान में कुछ कमी रहेगी तथा धन के सम्बन्ध में कुछ चिंता रहेगी और कुटुम्ब के स्थान में कुछ मानसिक परेशानी रहेगी तथा जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में विचार युक्त रहेगा।

यदि सिंह का चन्द्र—नवम स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा

धन लग्न में ९ चन्द्र
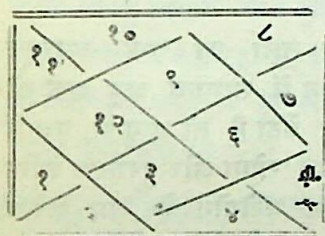
नं० ८८५

है, तो आयु स्थान में वृद्धि मिलेगी तथा जीवनाधार पुरातत्व शक्ति का लाभ भाग्य के द्वारा सुन्दर रूप में प्राप्त होगा तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ी शानदारी रहेगी और अष्टमेश होने के दोष के कारण से भाग्य स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और यश की कुछ कमी रहेगी तथा धर्म के यथार्थ पालन के कुछ कमी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ मतभेद रहेगा तथा मनोयोग के परिश्रम से कुछ शक्ति पावेगा तथा पुरुषार्थ के स्थान में कुछ नीरसता पावेगा।

यदि कन्या का चन्द्र—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त होगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव एवं रौनक रहेगी और मनोयोग के द्वारा पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से पिता के सुख में कुछ कमी रहेगी तथा राज-समाज के सम्बन्धों में कुछ दिक्कतें रहेंगी और कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ बाधायें प्राप्त होंगी और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि रहेगी और भूमि मकानादि के सुख में कुछ नीरसता प्रतीत होगी।
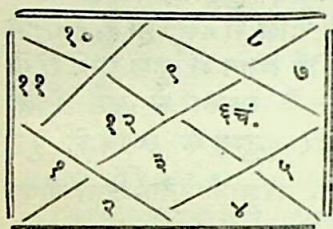
धन लग्न में १० चन्द्र

नं० ८८६

धन लग्न में ११ चन्द्र

नं० ८८७
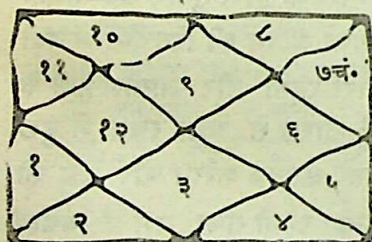
यदि तुला का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु के पक्ष में सुन्दर लाभ रहेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ मनोयोग से प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रसन्नता रहेगी और लाभ स्थान में प्रायः सभी ग्रह उत्तम फल देते हैं, इसलिये धन लाभ होता रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से आमदनी के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव होगी और सातवीं मित्र दृष्टि से संतान एवं विद्या स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी और विद्या स्थान में कुछ

कमी एवं कुछ परेशानी रहेगी तथा दिमाग के अन्दर कुछ उधेड़बुन तथा कुछ फिकर रहेगी।

यदि वृश्चिक का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में कमी और परेशानी रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की हानि रहेगी और जीवन की दिनचर्या में मन के लिये बड़ी परेशानी अनुभव होगी तथा अष्टमेश होने के दोष के कारण तथा नीच होने के कारण खर्च के मार्ग में बड़ी परेशानी अनुभव होगी और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध कष्टप्रद सिद्ध होगा तथा जीवन की दिनचर्या में मनको बड़ी अशान्ति रहेगी किन्तु सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त होगा और मनोयोग की शक्ति से गूढ़ ज्ञान के द्वारा बड़े-बड़े झगड़े झंझटों में कामयाबी प्राप्त करेगा।
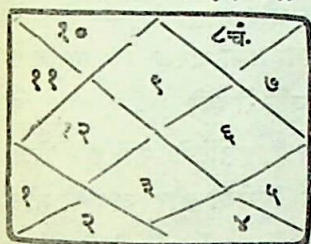
धन लग्न में १२ चन्द्र

नं० ८८८

विद्या, संतान, खर्च तथा बाहरी स्थानपति-मंगल

यदि धन का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर मित्र गुरु की राशि में बैठा है तो खर्च की संचालन शक्ति देह और बुद्धि योग के द्वारा करेगा तथा बाहरी स्थानों का उत्तम सम्बन्ध पावेगा और विद्या की शक्ति रहेगी एवं सन्तान शक्ति मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से देह के स्वास्थ्य और सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी तथा विद्या बुद्धि के सम्बन्ध में कुछ कमी और कुछ फिकर रहेगी तथा

विचारधारा अधिक घूमकर यथार्थता की ओर आया करेगी किन्तु

धन लग्न में १ भौम
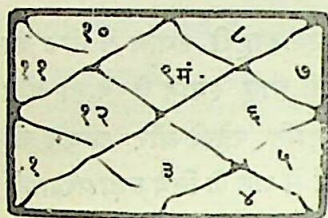
नं० ८८९

बुद्धि के अन्दर अहंभाव अधिक रहेगा और सन्तान पक्ष में कुछ कमी अनुभव होगी तथा चौथी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये मातृभूमि और माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा तथा घरेलू मकानादि के सुख में कुछ त्रुटि रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री एवं रोजगार के मार्ग में कुछ कमी लिये हुये शक्ति मिलेगी और आठवीं नीच दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन और आयु में कुछ अशान्ति रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ कमजोरी रहेगी ।

धन लग्न में २ भौम
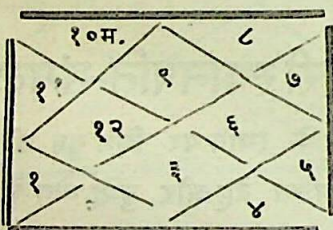
नं० ८९०

यदि मकर का मंगल—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो बाहरी सम्बन्धों के योग से और बुद्धियोग के द्वारा धन संचय करने का विशेष प्रयत्न करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से धन संग्रह नहीं हो सकेगा बल्कि खर्चा अधिक रहेगा और कुटुम्ब के स्थान में बहुत-बहुत प्रकार से उतार-चढ़ाव, दुःख-सुख रहेगा तथा चौथी दृष्टि से विद्या

एवं सन्तान पक्ष को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या की शक्ति पावेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये सन्तान पक्ष में कुछ बाधा रहेगी और सातवीं नीच दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और जीवन में कुछ अशान्ति रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ कमजोरी रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि पाने के लिये अनेकों प्रयत्न करेगा किन्तु सफलता कम मिलेगी और धर्म के मार्ग में ज्ञान ध्यान होते हुए भी यथार्थतः में धर्म पालन की कुछ कमी रहेगी।

यदि कुम्भ का मंगल—तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्ति-शाली बन जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति का विकास एवं सफलता दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से भाई-बहिन की शक्ति में कमी पावेगा और पुरुषार्थ कर्म में कभी कभी हिम्मत शक्ति की कमी और कभी वृद्धि पावेगा तथा

धन लग्न में ३ भौम
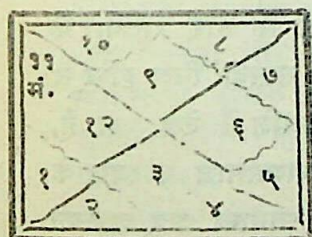
नं० ८९१

खर्चा खूब करेगा और विद्या स्थान में कुछ कमी रहेगी तथा सन्तान पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति मिलेगी और दिमाग के अन्दर तेजी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव पावेगा और झगड़े झंझटों में सफलता मिलेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य

एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये धर्म और भाग्य के स्थान में कुछ उन्नति एवं कमी तथा कुछ अवनति पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता राज-समाज व कारबार में कुछ उतार-चढ़ाव के योग पावेगा।

यदि मीन का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्च का कार्य सुख पूर्वक बुद्धि योग द्वारा चलेगा और बाहरी स्थानों से कुछ अच्छा सम्बन्ध रहेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से माता के सुख में बड़ी हानि रहेगी और भूमि मकानादि के सुखों में भारी कमी रहेगी तथा सन्तान पक्ष के सुखों में कुछ कमी के साथ पूर्ति होगी तथा विद्या स्थान के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि युक्ति शक्ति प्राप्त रहेगी और चौथी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी से कार्य चलेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के पक्ष में कुछ कमी रहेगी और राजसमाज कारबार के मार्ग में कुछ त्रुटि रहेगी और आठवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में लाभ स्थान को देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बुद्धि योग के द्वारा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्ति
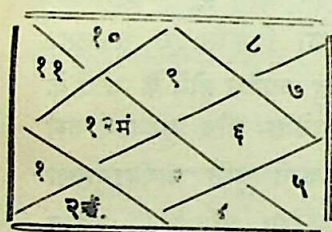
धन लग्न में ४ भौम

नं० ८९२

की सफलता शक्ति पावेगा और आमदनी के लिये अधिक प्रयत्न करेगा।

यदि मेष का मंगल—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो विद्या स्थान में शक्ति पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से विद्या ग्रहण करने में कुछ परेशानी रहेगी और इसी कारण से संतान पक्ष में कुछ परेशानियों के बाद शक्ति मिलेगी तथा दिमाग के विचारों में बड़ी चंचलता रहेगी तथा चौथी नीच दृष्टि से आयु स्थान एवं पुरातत्व स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु एवं जीवन की दिनचर्या में बड़ी परेशानी रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की हानि या कमजोरी रहेगी और उदर में विकार रहेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ बुद्धि योग द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सफलता शक्ति पावेगा और आठवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों की संबंध शक्ति को बुद्धियोग के द्वारा विशेष रूप से प्राप्त करेगा किन्तु खर्च के कारणों से बुद्धि में कुछ परेशानी का योग चलता रहेगा।

धन लग्न में ५ भौम

नं० ८९३

यदि वृषभ का मंगल—छठें शत्रु स्थान में एवं झगड़े झंझट के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो संतान

पक्ष में बड़ी परेशानी रहेगी और विद्या के स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी क्योंकि मंगल को व्ययेश होने का दोष है तथा छठें बैठने का दोष है किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझटों में खर्च की शक्ति से एवं हठयोग से सफलता शक्ति पावेगा तथा चौथी मित्र

धन लग्न में ६ भौम

नं० ८९४
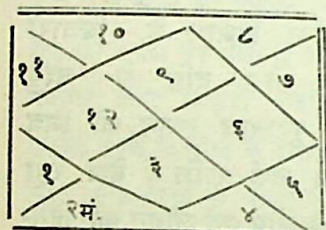
दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य स्थान में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा धर्म के पालन में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा और खर्च में कुछ परेशानी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतें रहेंगी और आठवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य में कुछ कमजोरी रहेगी तथा खर्च के कारणों से कुछ परेशानी अनुभव होगी और दिमाग के अन्दर परेशानी का वातावरण रहेगा।

यदि मिथुन का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बाहरी स्थानों का अच्छा सम्बन्ध रहेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से स्त्री स्थान में कष्ट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी बड़ी दिक्कतें एवं हानियाँ प्राप्त करेगा और बुद्धियोग द्वारा दैनिक कर्म से खर्चा प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में कुछ कमी लिये हुए शक्ति प्राप्त करेगा और संतान

धन लग्न में ७ भौम

नं० ८९५
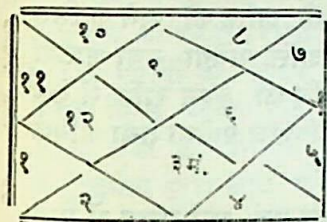
पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सहयोग मिलेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के पक्ष में कुछ कमी प्राप्त होगी और राज-समाज के स्थान में बुद्धि योग द्वारा दौड़ धूप से एवं बाहरी सम्बन्धों से कुछ सफलता शक्ति और कुछ मान पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिए देह में कुछ कमजोरी रहेगी और आठवीं उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये धन के पक्ष में कुछ उन्नति करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ शक्ति रहेगी।

यदि कर्क का मंगल—आठवें मृत्यु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो आयु के पक्ष में कमजोरी रहेगी और पुरातत्व शक्ति की हानि प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में परेशानी अनुभव करेगा तथा व्ययेश होने का दोष और अष्टम में व नीच होने से त्रिदोष होने के कारण सन्तान पक्ष में महान् संकट प्राप्त करेगा और विद्या स्थान में बड़ी कमजोरी रहेगी तथा खर्च की कमी के कारण से दिमाग में परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अशान्ति रहेगी और उदर के अन्दर कुछ बीमारी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से लाभ स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के कठिन परिश्रम से कुछ आमदनी

धन लग्न में ८ भौम
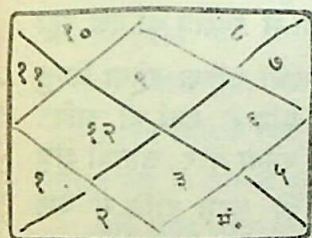
नं० ८९६

पावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए धन की शक्ति को पाने के लिए महान् प्रयत्न करेगा और कुटुम्ब की कुछ शक्ति पावेगा तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहन के स्थान में कुछ विरोध पावेगा तथा अधिक परिश्रम करेगा।

यदि सिंह का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो बुद्धि विद्या की शक्ति पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से विद्या बुद्धि की शोभा में कमी रहेगी तथा सन्तान पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति पावेगा और दिमाग के अन्दर धर्म और भाग्य की व्याख्या को ठीक तौर से पूर्णरूपेण नहीं समझ सकने के कारण कभी-कभी उचित अनुचित बातें सोचेगा और

धन लग्न में ९ भौम
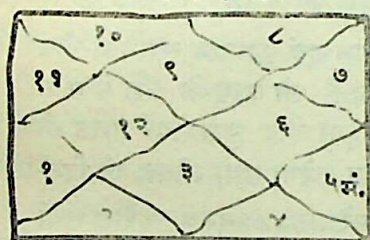
नं० ८९७

कहेगा तथा भाग्य के अन्दर कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और बुद्धिमान् समझा जायेगा तथा चौथी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए खर्चा अधिक रहेगा किन्तु भाग्य और बुद्धि से खर्च की शक्ति पावेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के स्थान में त्रुटि और विरोध भावना पावेगा तथा नीरसता युक्त मार्ग से पुरुषार्थ कम करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति पावेगा तथा कुछ कमी लिये हुए भूमि मकानादि की शक्ति और सुख पावेगा।

यदि कन्या का मंगल—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की कन्या राशि पर बैठा है तो खर्चा शानदार करेगा और बाहरी स्थानों का सुन्दर प्रभावशाली सम्बन्ध बुद्धियोग द्वारा प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से पिता स्थान में हानि पावेगा तथा कारबार में कुछ नुकसान रहेगा तथा किसी बड़ी जगह में बुद्धियोग द्वारा कार्य करेगा और मान पावेगा और राज-समाज के अन्दर कुछ थोड़ा प्रभाव पावेगा तथा चौथी दृष्टि से देह के स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी पावेगा तथा सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कुछ कमी रहेगी और भूमि मकानादि के पक्ष में कुछ त्रुटि अनुभव करेगा और आठवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि की अच्छी योग्यता रहेगी तथा सन्तान पक्ष में कुछ शक्ति मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से विद्या और संतान पक्ष के सुख में कुछ कमी रहेगी।
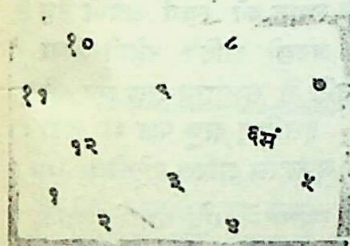
धन लग्न में १० सोम

नं० ८९८

यदि तुला का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिए आमदनी के मार्ग में बड़ी अच्छी सफलता शक्ति पावेगा और खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से तथा बुद्धि योग से लाभ की वृद्धि पावेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण लाभ के मार्ग में कुछ कमी

धन लग्न में ११ भौम

नं० ८९९
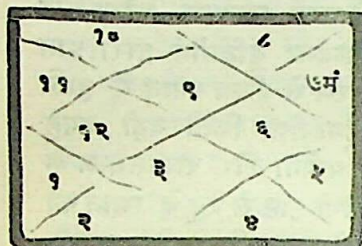
रहेगी तथा चौथी उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए धन की वृद्धि करने के लिए विशेष प्रयत्न करेगा तथा अधिक लाभ करेगा और कुटुम्ब स्थान में कुछ शक्ति पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में देख रहा है, इसलिए विद्या की अच्छी शक्ति रहेगी तथा सन्तान पक्ष से लाभ रहेगा और आठवीं दृष्टि से सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है इसलिए शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव पावेगा तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग में सफलता शक्ति रहेगी।

यदि वृश्चिक का मंगल—बारहवें खर्च स्थान में एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों में बुद्धियोग के द्वारा बड़ी सफलता रहेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष के कारण से संतान पक्ष में हानि प्राप्त होगी और विद्या में कमजोरी रहेगी तथा दिमाग के अन्दर बड़ी लम्बी चौड़ी सूझ आने के कारणों से दिमाग में कुछ परेशानी रहेगी तथा चौथी शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिन से वैमनस्यता रहेगी तथा पुरुषार्थ खूब करेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में शक्ति रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि

धन लग्न में १२ भौम

नं० ९००

से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री पक्ष में संकट प्राप्त करेगा और रोजगार में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा बुद्धि और बाहरी सम्बन्धों से रोजगार में कुछ शक्ति प्राप्त करेगा।

स्त्री, रोजगार, पिता तथा राज्य स्थानपति-बुध

धन लग्न में १ बुध

नं० ९०१
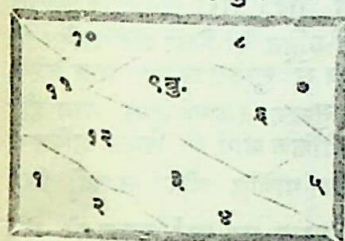
यदि धन का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो देह में शोभा और सम्मान प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान को उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी और राज-समाज एवं कारबार के द्वारा उन्नति रहेगी तथा देह और विवेक की उत्तम कर्म शक्ति से लौकिक सफलता विशेष रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा ऊँची ससुराल मिलेगी और रोजगार के मार्ग में बड़े ऊँचे ढंग से अपनी दैहिक शक्ति के द्वारा बड़ी भारी सफलता पावेगा और गृहस्थ के अन्दर विशेष शक्ति प्राप्त होने के कारण हृदय में बड़ा उल्लास और उमंग रहेगा।

धन लग्न में २ बुध

नं० ९०२
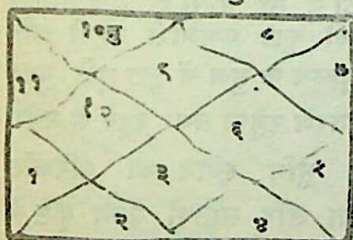
यदि मकर का बुध—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो रोजगार व्यापार कर्म के द्वारा धन की महान् शक्ति पावेगा और कुटुम्ब की विशेष शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिए स्त्री के सुख में बड़ी कमी रहेगी और पिता के व्यक्तित्व के बजाय पिता की शक्ति का लाभ अच्छा रहेगा तथा राज समाज के पक्ष में मान और इज्जत रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि

से आयु एवं पुरातत्व स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिए आयु के स्थान में शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व विभाग में लाभ व सफलता रहेगी तथा जीवन की दिनचर्या में रौनक रहेगी तथा विवेक कर्म के द्वारा उन्नति करेगा।

यदि कुम्भ का बुध—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ कर्म की शक्ति द्वारा कारबार के मार्ग में बड़ी भारी उन्नति करेगा तथा भाई-बहिन व पिता की शक्ति का सहारा पावेगा और स्त्री पक्ष के सम्बन्ध में सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज समाज के दैनिक सम्बन्धों में सुन्दर सम्पर्क तथा मान और प्रभाव प्राप्त रहेगा तथा गृहस्थ और लौकिक कार्य में विवेक शक्ति से सफलता पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा और धर्म कर्म का पालन करेगा तथा कार्य कुशलता के मार्ग में यश पावेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति रखेगा।

धन लग्न में ३ बुध

नं० ९०३

यदि मीन का बुध—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्ध में कमी रहेगी तथा भूमि मकानादि की कुछ कमजोरी रहेगी और स्त्री गृहस्थ के सुख में कुछ त्रुटि युक्त वातावरण रहेगा तथा रहने के मकानादि भूमि स्थान का परिवर्तन मिलेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है और स्वयं नीच होकर बैठा है, इसलिये

धन लग्न में ४ बुध

नं० ९०४

पिता पक्ष में कुछ कमी होते हुये भी उन्नति करेगा तथा राज-समाज कारबार के स्थान में कुछ कमी के सहित शक्ति पावेगा।

यदि मेष का बुध—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में विवेक शक्ति के द्वारा बड़ी भारी सफलता और यश तथा मान प्राप्त करेगा तथा बुद्धि योग के द्वारा रोजगार व्यापार का उत्तम संचालन करेगा और

धन लग्न में ५ बुध

नं० ९०५
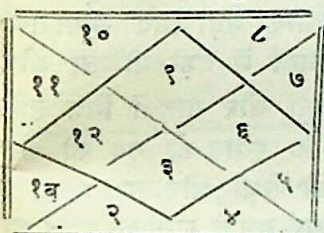
स्त्री, गृहस्थ तथा संतान पक्ष की सुन्दर सुख शक्ति पावेगा और राजसमाज के अन्दर मान तथा प्रभाव मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये दैनिक कर्म शक्ति के उत्तम बुद्धि योग द्वारा विशेष लाभ का योग पावेगा और बातचीत के अन्दर बड़ी भारी चतुराई रहेगी।

यदि वृषभ का बुध—छठें शत्रु स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता पक्ष में सुख की कमी रहेगी और रोजगार कारबार के

धन लग्न में ६ बुध

नं० ९०६

मार्ग में बड़ा परिश्रम एवं कुछ परतंत्रता का योग पावेगा तथा स्त्री एवं गृहस्थ के संचालन मार्ग में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझटों के मार्ग में विवेक शक्ति के कुशल कर्म के द्वारा सफलता पावेगा तथा राज समाज के सम्बन्धोंमें कुछ नीरसता रहेगी और मामा नाना के पक्ष में शक्ति रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि और बाहरी स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध अच्छा रहेगा।
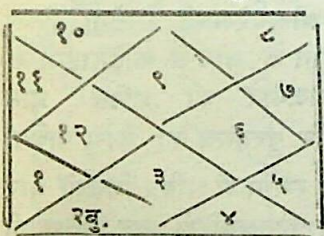
यदि मिथुन का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो स्त्री पक्ष में बड़ी सुन्दर सौभाग्य शक्ति पावेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता विवेक कर्म के द्वारा प्राप्त करेगा तथा पिता-स्थान की शक्ति का सुन्दर सहयोग मिलेगा और राज समाज के सम्पर्क में मान और इज्जत रहेगी तथा गृहस्थ के अन्दर बड़ा वैभव रहेगा तथा लौकिक कार्यों में बड़ी योग्यता और यश पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में बड़ी शोभा और सम्मान प्राप्त रहेगा और अपनी इज्जत आबरू को सुचारु रूप से संचालन करने का पूरा ख्याल रखेगा तथा सुन्दर योग पावेगा।

धन लग्न में ७ बुध

नं० ९०७

यदि कर्क का बुध—आठवें मृत्यु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ी परेशानी रहेगी तथा पिता के सम्बन्ध में कष्ट एवं सुख की कमी रहेगी और रोजगार व्यापार के मार्ग में बड़ा नुकसान और परेशानी मिलेगी किन्तु दूसरे स्थान के योग से कठिनाइयों के द्वारा रोजगार को शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व का लाभ पावेगा तथा आयु स्थान में शक्ति मिलेगी और जीवन की दिनचर्या में गूढ़ विवेक की शक्ति से रौनक पावेगा और राजसमाज के सम्बन्ध में बड़ी कमजोरी पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मित्र शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न करेगा।

धन लग्न में ८ बुध

नं० ९०८

यदि सिंह का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो बड़ा भाग्यवान् बनेगा और धर्म का

(धन लग्न में ९ बुध)

नं० ९०९

पालन करेगा तथा रोजगार व्यापार के पक्ष में भाग्य की शक्ति से बड़ी भारी सफलता मिलेगी तथा स्त्री और पिता के पक्ष से सुन्दर सहयोग प्राप्त होगा और राज-समाज तथा लौकिक व्यवहार के पक्ष में उत्तम विवेक की शक्ति से मान-प्रतिष्ठा मिलेगी और गृहस्थ के आनन्द में वैभव रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में अच्छा सम्बन्ध रहेगा तथा पुरुषार्थ कर्म से कारबार के अन्दर सफलता प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज स्थान में स्वयं अपनी राशि पर उच्च का होकर बैठा है तो पिता की महान् शक्ति रहेगी

(धन लग्न में १० बुध)

नं० ९१०

और राज समाज के पक्ष में बड़ा भारी मान प्राप्त होगा तथा रोजगार व्यापार के मार्ग में दैनिक कर्म की कुशलता और विवेक शक्ति के द्वारा बड़ी भारी सफलता शक्ति मिलेगी और स्त्री स्थान की सुन्दर शक्ति मिलेगी तथा प्रभाव शक्ति रहेगी एवं गृहस्थ में बड़ा भारी वैभव रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से चौथे माता और भूमि स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्ध में कमी रहेगी और जन्म भूमि तथा मकानादि के सम्बन्धों में कुछ कमी एवं कुछ परेशानी रहेगी।

यदि तुला का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो रोजगार व्यापार मार्ग से बड़ा भारी लाभ पावेगा तथा पिता-

(धन लग्न में ११ बुध)

नं० ९११
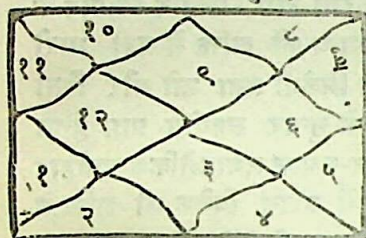
स्थान की शक्ति में सफलता रहेगी तथा स्त्री स्थान के सुख सम्बन्ध में उत्तम योग लाभ रहेगा और राज-समाज के मार्ग में लाभ और मान रहेगा तथा लौकिक कार्यों की बड़ी योग्यता शक्ति प्राप्त करेगा औरविवेक शक्ति के द्वारा खूब आमदनी पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि में शक्ति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष के सम्बन्धों में सफलता रहेगी तथा उत्तम विवेक रहेगा।

यदि वृश्चिक का बुध—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों का

(धन लग्न में १२ बुध)

नं० ९१२

अच्छा सम्बन्ध पाकर रोजगार चला-वेगा किन्तु अपने निजी स्थान में रोज-गार व्यापार में हानि रहेगी तथा स्त्री और पिता के सम्बन्धों में सुख का विशेष घाटा रहेगा और राज-समाज के पक्ष में सुन्दर सम्बन्ध की बड़ी कम-जोरी रहेगी तथा घरेलू वातावरण में इज्जत आबरू बनाने के लिए परे-शानियाँ रहेंगी और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विवेक शक्ति के दैनिक कार्य क्रम के द्वारा शत्रु एवं झगड़े झंझटों में सफलता पावेगा।

देह, माता, भूमि तथा सुख स्थान पति—गुरु

यदि धन का गुरु— प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो देह में विशेष सुख प्राप्त करेगा और माता का सुन्दर सहयोग मिलेगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति और सुख रहेगा तथा देह में मान सम्मान और सुन्दरता पावेगा तथा हँसने हँसाने वाला खुश मिजाज रहेगा और पाँचवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि के अन्दर बड़ी योग्यता पावेगा और संतान पक्ष में सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणी और बोलचाल के अन्दर मिठास तथा बड़प्पन रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के पक्ष में सुख और आत्म-संतोष पावेगा तथा नवमी दृष्टि से भाग्य और धर्म स्थान को मित्र सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति का सुन्दर योग पावेगा औरधर्म का पालन एवं मनन हृदय से करेगा तथा सुख संतोष और सज्जनता के मार्ग से यश प्राप्त करेगा तथा भाग्यशाली माना जायगा।
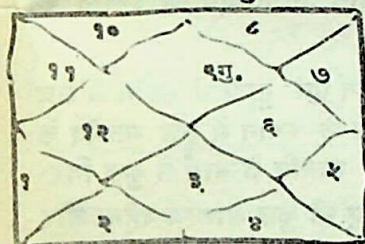
धन लग्न में १ गुरु

नं० ९१३

यदि मकर का गुरु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में नीच का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में कमी के कारण अथवा धन के नुकसान होने के कारण हृदय में बड़ी अशान्ति अनुभव करेगा और कुटुम्ब के पक्ष से कुछ परेशानी पावेगा तथा देह स्वास्थ्य और सुन्दरता के

धन लग्न में २ गुरु

नं० ९१४

अन्दर कुछ कमजोरी रहेगी तथा माता एवं भूमि पक्ष से कुछ दुःख का अनुभव होगा और पाँचवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र को वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ दानाई से काम निकालेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र चन्द्रमा को कर्क राशि में देख रहा है, इसलिए आयु की शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व की लाभ शक्ति मिलेगी और जीवन की दिनचर्या शानदार रहेगी और नवमी दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से शक्ति लाभ रहेगा तथा राज-समाज में मान प्राप्त होगा और कारबार के मार्ग में उन्नति करेगा तथा मान उन्नति एवं पद उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करेगा।

यदि कुम्भ का गुरु—तीसरे भाई बहिन एवं पुरुषार्थ स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान में कुछ मतभेद के सहित शक्ति रहेगी और पुरुषार्थ कर्म की उन्नति के मार्ग में कुछ निरसत ी तथा देह में बल स्फूर्ति होते हुए भी कुछ आलस्य रहेगा और माता के में कुछ नीरसता युक्त शक्ति रहेगी तथा भूमि मकानादि का सामान्य सुख हेर आ प च ी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री पक्ष में सुख और सुन्दरता पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में सफलता मिलेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्म का पालन ध्यान में रखेगा तथा यश मिलेगा और नवमी दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ नीरसता से कुछ
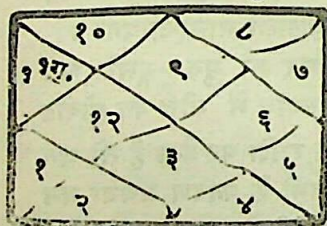
धन लग्न में ३ गुरु

नं० ९१५

सफलता शक्ति पावेगा और अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि मीन का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की महान् सुख शक्ति पावेगा तथा भूमि मकानादि का उत्तम सुख प्राप्त रहेगा और देह के लिए बड़ा सुख और सुन्दरता पावेगा तथा हास विलास के अच्छे साधन रहेंगे और पाँचवीं उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा तथा जीवन निर्वाह के लिये पुरातत्व शक्ति का विशेष लाभ प्राप्त होगा तथा दिनचर्या में बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में भी सुख शक्ति मिलेगी और राज-समाज के मार्ग में मान प्रतिष्ठा रहेगी तथा कारबार में सफलता रहेगी और नवमी मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये सुखपूर्वक खर्च का सुन्दर सञ्चालन रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख और शक्ति का मार्ग प्राप्त करेगा।
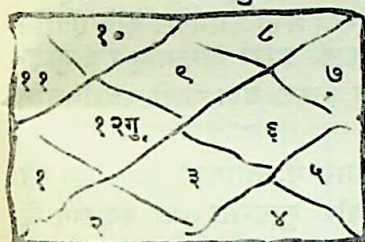
धन लग्न में ४ गुरु

नं० ९१६

यदि मेष का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान से सुख शक्ति पावेगा और संतान पक्ष में बड़ा सुख और आत्मीयता का योग मिलेगा तथा बुद्धि और वाणी के अन्दर बड़ी योग्यता रहेगी तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि पावेगा तथा यश मिलेगा और धर्म का ध्यान एवं पालन करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला

धन लग्न में ५ गुरु

नं० ९१७
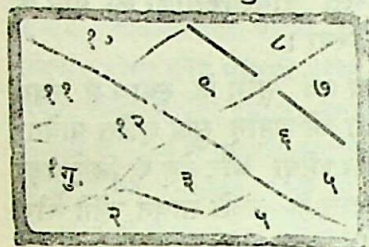
राशि में देख रहा है इसलिए आमदनी के मार्ग में सफलता शक्ति होते हुए भी कुछ असन्तोष रहेगा तथा लाभ की वृद्धि के मार्ग में कुछ नीरसता प्राप्त रहेगी और नवमी दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता एवं प्रभाव और सुडौल प्राप्त करेगा तथा आत्मबल और ख्याति मिलेगी तथा दैहिक कर्म और बुद्धि योग के द्वारा भाग्यवान् एवं बुद्धिमान् माना जायगा और अपने हृदय के अन्दर बड़ा भारी स्वाभिमान एवं सिद्धान्त शक्ति रखेगा।

यदि वृषभ का गुरु छठें शत्रु स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो देह के सुख और सुन्दरता तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहेगी और कुछ परतन्त्रता का सा योग रहेगा तथा माता के सुख सम्बन्धों में बड़ी कमी रहेगी तथा मातृ भूमि एवं मकानादि का सम्बन्ध कुछ विच्छेद रहेगा तथा शत्रु एवं झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ परेशानी और दानाई के योग से कार्य की सफलता प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए पिता के पक्ष में सुख शक्ति रहेगी तथा राज-समाज में मान प्राप्त होगा और कारबार में शक्ति रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि के खर्च एवं बाहरी स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिए खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध पायेगा और नवमीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर
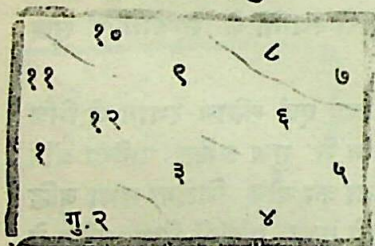
धन लग्न में ६ गुरु

नं० ९१८

राशि में देख रहा है, इसलिये धन की तरफ से कुछ परेशानी हृदय में अनुभव करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में बड़ा असन्तोष मानेगा तथा कुछ झंझट युक्त रहेगा।

यदि मिथुन का गुरु---सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में बड़ी सुन्दरता और प्रभाव एवं सुख प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता और आनन्द मानेगा तथा माता का सुख होगा और भूमि मकानादि रहने का सुन्दर स्थान प्राप्त होगा और लौकिक दैनिक कार्यों का बड़ी योग्यता के साथ पालन करके हृदय में प्रसन्नता अनुभव करेगा और पाँचवीं दृष्टि से लाभ

धन लग्न में ७ गुरु

नं० ९१९

स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ असंतोष युक्त सुख शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए देह में सुन्दरता व सरलता और स्वाभिमान रखेगा तथा नवमी शत्रु दृष्टि से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिए भाई बहिन के स्थान में कुछ नीरसता युक्त सम्बन्ध पावेगा और पुरुषार्थ कर्म के द्वारा उन्नति करने के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से कार्य सम्पादन करेगा।

यदि कर्क का गुरु---आठवें आयु मृत्यु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में उच्च का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो देह में कुछ परेशानी तथा हिम्मत रहेगी और जीवन की दिनचर्या में कुछ मस्ती रहेगी और आयु की शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और देह की सुन्दरता एवं सुडौलताई में कुछ कमी रहेगी तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख

रहा है, इसलिए खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा संबंध पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए धन के पक्ष में कुछ कमजोरी तथा कुटुम्ब के स्थान में कुछ क्लेश रहेगा और नवमीं दृष्टि से चौथे माता एवं भूमि के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता के सुख संबंध में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति रहेगी और भूमि मकानादि की कुछ शक्ति रहेगी तथा घरेलू सुख सम्बन्धों में कुछ विक्कतों से शक्ति मिलेगी।

धन लग्न में ८ गुरु
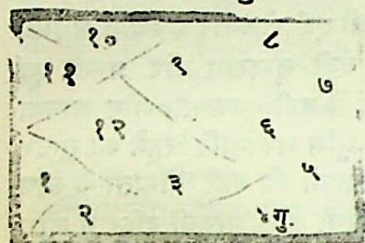
नं० ९२०

यदि सिंह का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो भाग्य को महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन और अध्ययन करेगा तथा माता की शक्ति मिलेगी और मकानादि भूमि का सुख प्राप्त रहेगा तथा देह के द्वारा यश मिलेगा और पाँचवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता पावेगा और नाम तथा कीर्ति रहेगी और सतोगुण के द्वारा विकास और उन्नति के साधन पावेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिए सन्तान पक्ष से सुख शक्ति पावेगा और विद्या स्थान में बुद्धि शक्ति और सफलता रहेगी तथा वाणी में प्रभाव रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पुरुषार्थ स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिए भाई-

धन लग्न में ९ गुरु
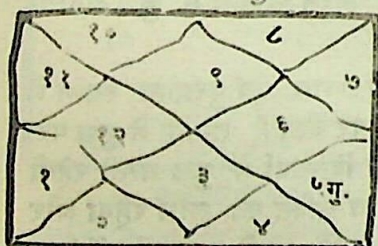
नं० ९२१

बहिन के पक्ष में कुछ नीरसताई के साथ सुख सम्बन्ध रहेगा और पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से कार्य संचालन करेगा।

यदि कन्या का गुरु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान से बड़ी सुख शक्ति प्राप्त रहेगी और राज समाज में मान प्रतिष्ठा मिलेगी तथा कारबार के मार्ग में बड़ी सफलता और यश प्राप्त करेगा तथा देह में सुन्दरता और स्वाभिमान रहेगा और पाँचवीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष स्थान में कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ असन्तोष रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति रहेगी और भूमि मकानादि का प्रभाव रहेगा तथा घरेलू वातावरण में सुख सौभाग्य प्राप्त होगा और नवमी दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में बड़ी योग्यता और चतुराई से काम निकालेगा किन्तु कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग अरुचि रहने के कारण थोड़ी सी दिक्कत अनुभव होगी किन्तु विपक्षियों में प्रभाव रहेगा और रोगादिक मार्ग में सफलता रहेगी।
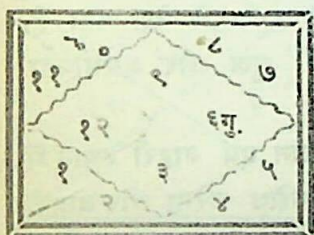
धन लग्न में १० गुरु

नं० ९२२

यदि तुला का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो कुछ थोड़ी सी नीरसताई के साथ देह के योग से आमदनी का सुख लाभ प्राप्त करेगा और माता का लाभ पावेगा तथा

धन लग्न में ११ गुरु

नं० ९२३
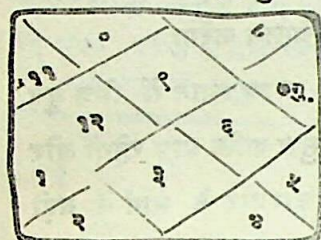
भूमि मकानादि का सुख रहेगा और धन लाभ की वृद्धि करने के लिए बड़ा प्रयत्नशील रहेगा तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिए भाई बहिन के स्थान में कुछ नीरसता का योग प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में कुछ अरुचिकर रूप से काम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्ष में सुख शक्ति पावेगा और विद्या स्थान में बड़ी सफलता रहेगी बुद्धि और वाणी के द्वारा बड़ी योग्यता प्रदर्शित करेगा और नवमीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के पक्ष में सुख और आत्मीयता प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का गुरु—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों में सुख सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा देह के पक्ष में कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों में भ्रमण करना पड़ेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए कुछ कमी के सहित माता का सुख सम्बन्ध पावेगा तथा भूमि मकानादि की कुछ थोड़ी शक्ति रहेगी और खर्च के योग से सुख प्राप्ति का साधन

धन लग्न में १२ गुरु

नं० ९२४

पावेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये बड़ी दानाई के साथ शत्रु पक्ष में काम निकालेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ शान्ति से शक्ति पावेगा और नवमी उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा तथा पुरातत्त्व शक्ति का विशेष लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्या में बड़ी रौनक एवं प्रभाव रहेगा।

धनलाभ, शत्रु तथा दिक्कत स्थान पति—शुक्र

यदि धन का शुक्र—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के परिश्रम और विशेष चतुराई के योग से आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा छठें स्थान का स्वामी होने के कारण देह में कुछ रोग और प्रभाव तथा कुछ परेशानी पावेगा किन्तु शत्रु पक्ष में विजयी रहेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ थोड़े से मतभेद के सहित लाभ पावेगा और रोजगार के मार्ग में थोड़े से परिश्रम के योग से बड़ी योग्यता और चतुराई के द्वारा बड़ा लाभ एवं सफलता शक्ति और मान पावेगा।
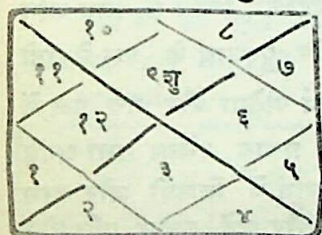
धन लग्न में १ शुक्र

नं० ९२५

यदि मकर का शुक्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग से धन की संग्रह शक्ति का विशेष

धन लग्न में २ शुक्र

नं० ९२६
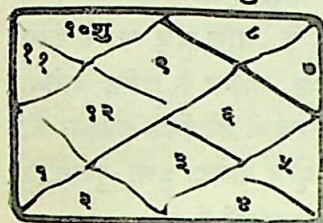
लाभ पायेगा और छठें स्थान का स्वामी होने के दोष कारण से धन के मार्ग में कुछ परेशानी भी रहेगी और कुटुम्ब स्थान में कुछ मतभेद रहेगा तथा शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में फायदेमन्द तथा प्रभाव युक्त रहेगा और सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पावेगा और जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग रहेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और इज्जत आबरू पावेगा तथा धन का संग्रह करने के लिए बड़ा भारी प्रयत्न करेगा।

यदि कुम्भ का शुक्र—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो अपने परिश्रम और पुरुषार्थ के बल से बड़ी चतुराइयों के द्वारा अच्छी आमदनी का मार्ग पावेगा और शत्रु पक्ष में

धन लग्न में ३ शुक्र

नं० ९२७
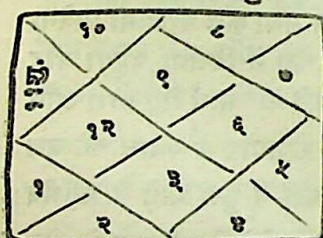
बड़ा भारी प्रभाव रहेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में विजयी और लाभ युक्त रहेगा और छठें स्थान पति होने के दोष कारण से भाई-बहिन के पक्ष में कुछ मतभेद युक्त सम्बन्ध रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये-भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा धर्म के स्थान में कुछ अरुचिकर सम्बन्ध रहेगा तथा भाग्य के मुकाबले में पुरुषार्थ और युक्तिबल को विशेष अपनावेगा।

यदि मीन का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में

उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो अपने स्थान से ही आमदनी का श्रेष्ठ मार्ग और सुलभ साधन पावेगा और भूमि

धन लग्न में ४ शुक्र

नं० ९२८

मकानादि की विशेष शक्ति रहेगी तथा माता का लाभ पावेगा और शत्रु पक्ष तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से सरलता पूर्वक लाभ पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में हानि या परेशानी रहेगी और राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी तथा मान प्रतिष्ठा कार-बार की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्राप्त होंगी।
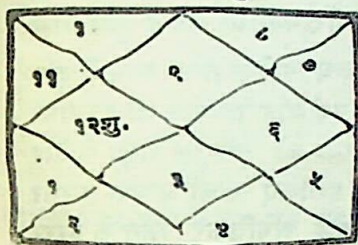
यदि मेष का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में शक्ति

धन लग्न में ५ शुक्र

नं० ९२९

पावेगा तथा बुद्धि एवं वाणी के अन्दर बड़ी चतुराई और कला शक्ति का लाभ पावेगा और छठें स्थानपति होने के दोष कारण से सन्तान पक्ष में कुछ दिक्कत के साथ लाभ शक्ति रहेगी और शत्रु पक्ष के अन्दर बुद्धि योग द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा झगड़े झंझट और परिश्रम से फायदा पावेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी तुला राशि में लाभ स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये बुद्धि विद्या एवं सन्तान पक्ष के सम्बन्धों द्वारा आमदनी का मजबूत साधन पावेगा।
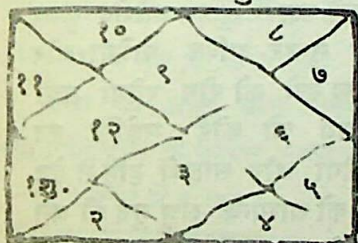
यदि वृषभ का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्र में बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ की शक्ति पावेगा तथा आमदनी के पक्ष में कुछ

धन लग्न में ६ शुक्र

नं० ९३०
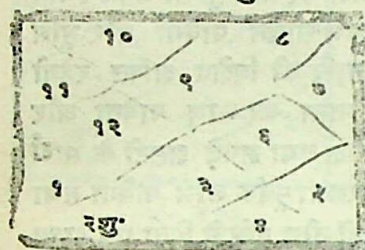
परतंत्रता और परिश्रम के योग से सफलता शक्ति पावेगा तथा धन के लाभ सम्बन्ध में कुछ कमी एवं असंतोष पावेगा और ननसाल पक्ष से कुछ लाभ का सम्बन्ध पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए खर्चा अधिक करना पड़ेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ अरुचिकर मार्ग के द्वारा अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की मिथुन राशि पर बैठा है तो कुछ परिश्रम और विशेष चतुराई के योग से रोजगार के मार्ग धन का सुन्दर लाभ योग एवं सफलता शक्ति पावेगा और शत्रु पक्ष में प्रभाव युक्त रहेगा तथा छठें स्थानपति होने के दोष कारण से स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद युक्त लाभ की सुन्दर शक्ति पावेगा और कभी कुछ स्त्री को रोग रहेगा तथा कभी स्वयं को कोई मूत्रेन्द्रि का विकार होगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव रहेगा किन्तु आमदनी के मार्ग में कुछ परिश्रम और कुछ दिक्कतें अनुभव होंगी।

धन लग्न में ७ शुक्र
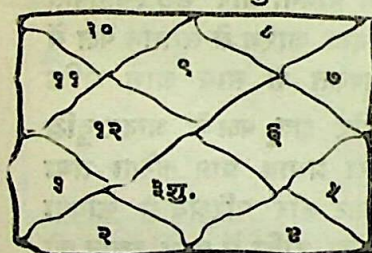
नं० ९३१

यदि कर्क का शुक्र—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान में शक्ति पावेगा और पुरातत्व स्थान का लाभ योग प्राप्त करेगा और आमदनी

धन लग्न में ८ शुक्र

नं० ९३२
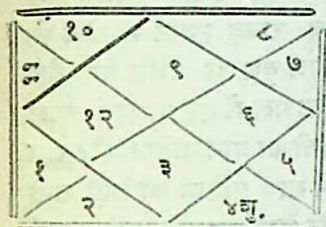
के मार्ग में कुछ परेशानी अनुभव करेगा तथा दूसरे स्थान के सम्बन्ध से लाभ का साधन चतुराई और परिश्रम के द्वारा प्राप्त करेगा किन्तु छठें स्थान का स्वामी होने के कारण से जीवन की दिनचर्या में कुछ झगड़े झंझट और शत्रु पक्ष के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतें अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिए महान् प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब की कुछ शक्ति का सहयोग पावेगा।

यदि सिंह का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो कुछ असंतोष के कारणों सहित भाग्य की शक्ति और परिश्रम के योग से आमदनी का साधन मार्ग प्राप्त करेगा और धर्म के पक्ष में कुछ थोड़ी श्रद्धा का लाभ पावेगा तथा शत्रु पक्ष में भाग्य की शक्ति और चतुराई से लाभ प्राप्त होगा किन्तु छठे स्थानपति होने के कारण भाग्य के पक्ष में कुछ दिक्कतें अनुभव करेगा

धन लग्न में ९ शुक्र

नं० ९३३

और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में कुछ शक्ति संबंध रहेगा और परिश्रम के मार्ग से पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि एवं सफलता पावेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा।

धन लग्न में १० शुक्र

नं० ९३४

यदि कन्या का शुक्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता पक्ष में एवं आमदनी के पक्ष में परेशानी का योग पावेगा और राज समाज में मान प्रतिष्ठा की बड़ी कमी रहेगी और कारबार की उन्नति के मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और शत्रु पक्ष के कारणसे लाभोन्नति में रुकावटें एवं कुछ कमी रहेगी तथा गुप्त चतुराई के कारण से अपना काम चलावेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से माता एवं भूमि स्थानको सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति का लाभ पावेगा और भूमि मकान का सुख रहेगा तथा घर के अन्दर प्रभाव प्राप्त करेगा।

यदि तुला का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में सफलता शक्ति पावेगा और शत्रु पक्ष के मार्ग में बड़ा प्रभाव और लाभ पावेगा तथा झगड़े झंझट

धन लग्न में ११ शुक्र

नं० ९३५

आदि के पक्ष में बड़ी गहरी चतुराई के योग से सफलता शक्ति मिलेगी किन्तु छठे स्थान पति होने के कारण से आमदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतें भी रहेगी और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या के पक्ष में कुछ दिक्कत के साथ अच्छी योग्यता पावेगा तथा संतान पक्ष का कुछ कमी के साथ लाभ पावेगा और बड़ा चतुर बनेगा।

यदि वृश्चिक का शुक्र—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान

में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करना पड़ेगा तथा बाहरी स्थानों से आमदनी का योग प्राप्त करेगा और निजी स्थान में आमदनी की कुछ कमजोरी रहेगी तथा झगड़े झंझट आदि मार्गों से कुछ परेशानी रहेगी और गुप्त चतुराई के

धन लग्न में १२ शुक्र

नं० ९३६

योग से एवं परिश्रम से लाभ पावेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ खर्चे की शक्ति और युक्ति से अपना मतलब हल करेगा तथा सामान्य प्रभाव पावेगा और खर्चके स्थानमें अधिक वृद्धि करने से अपना प्रभाव अनुभव करेगा।

धन, कुटुम्ब, भाई तथा पराक्रम स्थानपति-शनि

यदि धन का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो दैहिक कर्म की कुछ अरुचिकर शक्ति से धन को प्राप्ति करेगा और कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ मतभेद युक्त शक्ति पावेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का सा भी कार्य करता है, इसलिये धन और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ घिराव सा रहेगा तथा धनवानों और इज्जतदारों में नाम रहेगा और देह की सुन्दरता में

धन लग्न में १ शनि

१०	९श.	८
११	१२	७
१२	६	
१	३	५
२	४	

नं० ९३७

तथा स्वास्थ्य में थोड़ी सी कमी रहेगी और तीसरी दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये भाई बहिन की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पुरुषार्थ कर्म करने में सर्वथा तत्पर रहेगा और बड़ी भारी हिम्मत शक्ति से काम करेगा और

सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगारके स्थान को बुधकी मिथुन राशिमें देख रहा है, इस लिये स्त्री पक्ष में शक्ति रहेगी और रोजगारके मार्ग से धन प्राप्त करेगा तथा दसवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता-स्थानसे शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

यदि मकर का शनि— दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का वैभव रहेगा तथा धन का स्थान बन्धन का सा काम करता है, इसलिये भाई बहिन के सुख सम्बन्ध में कमी रहेगी और पुरुषार्थ के द्वारा बहुत धन प्राप्त करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से चौथे माताके स्थान और भूमि स्थान को गुरुकी मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान में कुछ नीरसता पावेगा और भूमि मकानादि के पक्ष में कुछ सुखकी कमी रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थान को चन्द्रमाकी कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में कुछ शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व स्थान में लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्यामें अमीरातका ढंग रहेगा तथा दसवीं उच्च दृष्टिसे लाभ स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी और धन लाभ के पक्ष में विशेष सफलता शक्ति मिलेगी अर्थात् कभी २ मुफ्तका सा धन प्राप्त करेगा और धन वृद्धि करनेके मार्गमें अपनी विशेष पुरुषार्थकी शक्तिका प्रयोग करेगा।
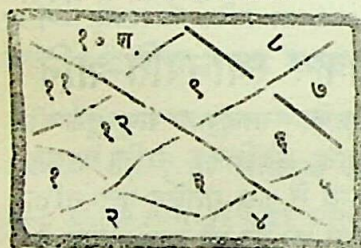
धन लग्न में २ शनि

नं० ९३८

यदि कुम्भ का शनि— तीसरे पराक्रम स्थान एवं भाई के स्थान पर स्वयं अपनी कुम्भ राशि में बैठा है तो पराक्रम स्थानकी विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ के द्वारा खूब धन पावेगा और

कुटुम्ब की शक्ति रहेगी किन्तु धनेश कुछ बन्धन का कार्य करता है इसलिये भाई-बहन की शक्ति होते हुए भी कुछ कमी रहेगी और

धन लग्न में ३ शनि

नं० ९३९
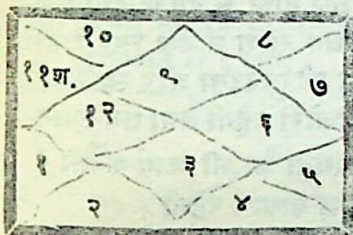
तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये पुरुषार्थ और हिम्मत स्थान पर बड़ा भारी भरोसा रखेगा और तीसरी नीच दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा और विद्यामें कुछ कमी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्यकी सिंह और में देख रहा है, इसलिये भाग्य और यश की कुछ कमजोरी रहेगी तथा धर्म पर श्रद्धा की कमजोरी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च की अधिकता के मार्ग में कुछ परेशानी होगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता रहेगी।

यदि मीन का शनि चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर शत्रु गुरु की राशि में बैठा है तो माता के सुख संबन्ध में कमी रहेगी और भूमि मकानादि की शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु रहने के स्थान में कुछ नीरसता का योग प्रतीत होगा तथा भाई-बहिन कुटुम्ब इत्यादि की सुख शक्ति के अन्दर कुछ फीकापन रहेगा और धन की शक्ति से धनवान् समझा जायगा तथा तीसरी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग में लाभ युक्त रहेगा और ननसाल पक्ष से कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के पक्ष से उन्नति एवं शक्ति

धन लग्न में ४ शनि

नं० ९४०
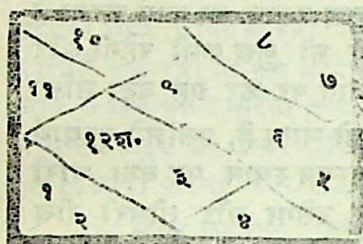
पावेगा और राज-समाज के स्थान में मान प्रतिष्ठा पावेगा और कारबार का वृद्धि करने का प्रयत्न करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इस लिये देह की सुन्दरता और स्वास्थ्यमें कुछ कमजोरी रहेगी तथा धन स्थान-पति ग्रह कुछ बन्धन का भी कार्य करता है, इसलिये दैहिक सुख और घरेलू सुखमें कुछ बाधायें रहेंगी।

यदि मेष का शनि—पाँचवें त्रिकोण विद्या एव संतान स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा और विद्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी तथा बोलचाल बातचीत के अन्दर कुछ रूखापन और छिपाव रहेगा तथा कुटुम्ब के पक्ष से कुछ चिंता रहेगी तथा तीसरी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये रोजगार में शक्ति रहेगी और स्त्री स्थान में सफलता मिलेगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देखरहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति रहेगी और लाभ के स्थान में अधिक धन प्राप्त करनेके लिये बड़ा भारी प्रयत्न करता रहेगा और दसवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये विशेष चिन्तित रहकर पेचीदी युक्ति से काम लेकर कुछ शक्ति पायेगा।
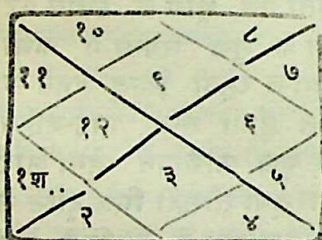
धन लग्न में ५ शनि

नं० ९४१

यदि वृषभ का शनि—छठें शत्रु स्थान में शुक्र की वृषभ राशि पर

बैठा है तो छठे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है, इसलिए शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझट के मार्ग से फायदा उठायेगा तथा धन के पक्ष में प्रभाव रखते हुए भी अन्दरूनी कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के पक्ष में कुछ विरोध का सा रूप रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख

धन लग्न में १ शनि
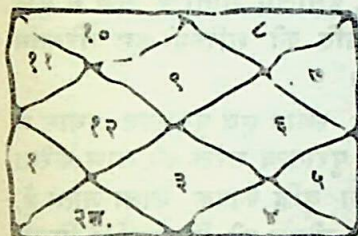
नं० ९२

है, इसलिए जीवनमें कुछ फिकर रहेगी तथा आयुमें शक्ति बनेगी और पुरातत्व स्थान से कुछ शक्ति मिलने पर भी पुरातत्व शक्ति में कुछ कमी प्रतीत होगी और उदर में कुछ शिकायत रहेगी तथा दसवीं दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए भाई बहिन की शक्ति प्राप्त होते हुए भी भाई-बहिनके सम्पर्कमें कुछ वैमनस्य एवं अलहदगी का योग पावेगा और अपने पुरुषार्थ पर बड़ा भारी भरोसा रखते हुए जबरदस्त हिम्मत और बहादुरी के साथ काम करेगा।

यदि मिथुन का शनि सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशिपर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से काफी धन पैदा करेगा और स्त्री स्थान में शक्ति पावेगा किन्तु धन स्थानपति के दोष होने के कारण स्त्री के सुख में

धन लग्न में ७ शनि

नं० ९४२
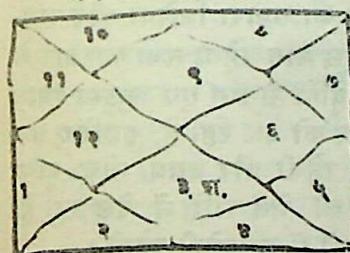
कुछ थोड़ी कमी रहेगी तथा कुटुम्ब की शक्ति रहेगी और भाई बहिन के पक्ष से अच्छा सहयोग बनेगा और पुरुषार्थ की शक्ति के द्वारा काफी सफलता प्राप्त करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टिसे भाग्य स्थान को सूर्यकी सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्य

स्थान में कुछ नीरसता प्रतीत होगी तथा धर्मके मार्गमें कुछ अरुचि रहेगी क्योंकि भाग्य और धर्म के मुकाबले में पुरुषार्थ और लौकिक सफलता का महत्व अधिक रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ परेशानी पावेगा और दसवीं शत्रु दृष्टिसे चौथे माता एवं भूमि स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिए माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि की शक्तिमें कुछ परिवर्तन होगा और कठिनाई से उन्नति करेगा।

यदि कर्क का शनि—आठवें मृत्यु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो पुरातत्व शक्ति का लाभ करेगा तथा आठवें स्थान पर शनि आयु का वृद्धि कारक माना जाता है, इसलिए आयु की वृद्धि करेगा किन्तु जीवन की दिनचर्या में फिकर मन्दी रहेगी और भाई बहिन के सुख में कमजोरी रहेगी तथा सञ्चित धन शक्ति का अभाव रहेगा और कठिनाईके मार्ग से धनकी प्राप्ति होगी। तथा पुरुषार्थ शक्तिके मार्गमें कमजोरी प्रतीत होगी और कभी-कभी हिम्मत टूट जायगी तथा तीसरी मित्र दृष्टिसे पिता एवं राज्य-स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये पिता स्थान की शक्ति का सहारा मिलेगा और राज-समाज में कुछ मान रहेगा तथा कारबार के पक्ष में कुछ शक्ति रहेगी और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए धन और कुटुम्ब की साधारण शक्ति प्राप्त रहेगी और दसवीं नीच दृष्टि से विद्या एवं सन्तान पक्ष को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और सन्तान पक्ष के सुखों में कमजोरी रहेगी।
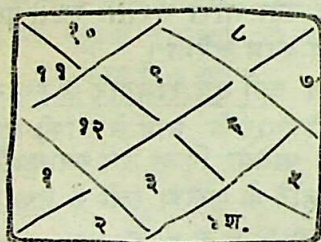
धन लग्न में ८ शनि

नं० ९४४

यदि सिंह का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थानमें

शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो कुछ नीरसता युक्त मार्गके द्वारा भाग्यकी उन्नति कर पायेगा तथा धर्म के स्थानमें कुछ अरुचियुक्त भाव से धर्म का पालन कर सकेगा और धन की संग्रह शक्ति का साधारण योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का थोड़ा सुख प्राप्त करेगा और तीसरी उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा

धन लग्न में ९ शनि

नं० १४५
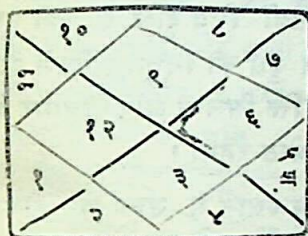
है, इसलिए आमदनी के मार्ग में विशेष नफा और सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी मुफ्त का सा धन लाभ प्राप्त होगा और सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का योग प्राप्त रहेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति की सफलता मिलेगी और हिम्मत शक्ति से कार्य करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझट आदि के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति और लाभ प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का शनि—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान से बड़ी सफलता शक्ति पावेगा और कारबार से धन की उन्नति करेगा तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा और लाभ पावेगा तथा भाई-बहिन की शक्ति का गौरव प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ कर्म के द्वारा सुन्दर उन्नति का मार्ग बनेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का अच्छा सहयोग रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च की अधिकता के मार्ग में कुछ कटुता एवं कुछ असन्तोष रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ

धन लग्न में १० शनि

नं० ९४६
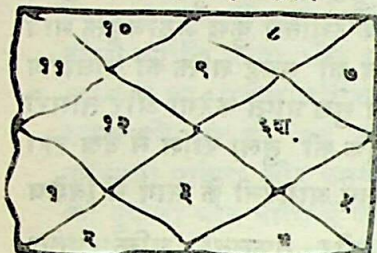
नीरसता युक्त सम्बन्ध रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये माताके सुख सम्बन्ध में कुछ कमी रहेगी और भूमिके स्थानमें कुछ नीरसता शक्ति रहेगी तथा दसवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में सफलता शक्ति मिलेगी और रोजगार के मार्ग में पुरुषार्थ के द्वारा धन का लाभ श्रेष्ठ रहेगा।

यदि तुला का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें घर में क्रूर ग्रह जबरदस्त शक्ति का द्योतक होता है, इसलिये धन की आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा और कभी कभी मुफ्त का सा बहुत धन लाभ प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का उत्तम सहयोग पावेगा और भाई बहिन की सम्पर्क शक्ति का लाभ पावेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के द्वारा बड़ा लाभ प्राप्त करेगा और

धन लग्न में ११ शनि

नं० ९४७
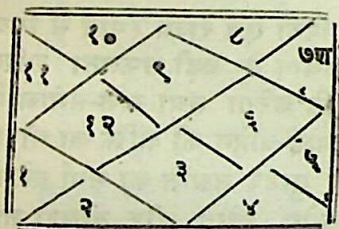
तीसरी शत्रु दृष्टि से देह स्थान को गुरु की धन राशिमें देख रहा है, इस लिये देह में कुछ परेशानी और सुन्दरता की कुछ कमी रहेगी तथा सातवीं नीच दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशिमें देख रहा है, इसलिए संतान पक्ष में कुछ कष्ट रहेगा और विद्या स्थान में कुछ कमी रहेगी तथा बोल-चालमें कुछ रूखापन रहेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व

स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये आयु तथा जीवन की दिन-चर्या में कुछ परेशानी रहेगी तथा पुरातत्व का लाभ रहेगा।

यदि वृश्चिक का शनि— बारहवें खर्च स्थान एवं बहारी स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और धन तथा कुटुम्ब की कुछ हानि पावेगा और भाई-बहिन की शक्ति का कुछ कष्ट और कमी प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्तिमें कुछ कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ अरुचिकर मार्ग के द्वारा शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टि से धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए धन और कुटुम्ब की थोड़ी सी शक्ति पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे शत्रु स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझट व आमदनी के पक्षों में लाभ युक्त रहेगा और कुछ छिपी शक्ति से काम करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्यके स्थानमें कुछ असन्तोष युक्त मार्गसे सफलता पावेगा तथा धर्म का थोड़ा-सा पालन करेगा।
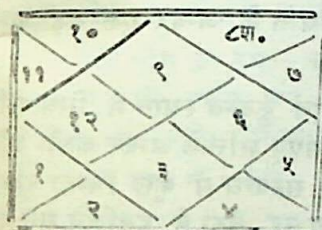
धन लग्न में १२ शनि

नं० ९४८

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्ति के अधिपति–राहु

यदि धन का राहु— प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में बड़ी

कमी रहेगी और देह में कुछ कष्ट और चिन्ता का योग प्राप्त करेगा तथा गुप्त युक्ति के बल से उन्नति पर पहुँचने का विशेष प्रयत्न करेगा किन्तु उन्नति के मार्ग एवं मान प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में कमी रहेगी और देह में कभी-कभी महान् सङ्कट का योग पावेगा किन्तु राहु देव गुरु बृहस्पतिजी के घर में बैठा है, इसलिये अन्दरूनी छिपाव एवं अनुचित योजना की शक्ति का प्रयोग प्रकट में बड़े सज्जनकता के ढङ्ग से कार्य रूप में परिणित करेगा और अपनी परिस्थिति के अन्दर एक बड़ी कमी होने के गुप्त दुःख का अनुभव करेगा।
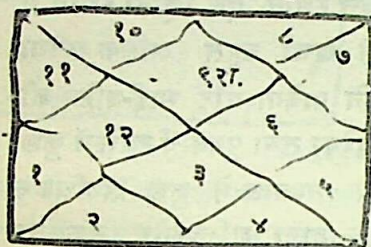
धन लग्न में १ राहु

नं० ९४९

यदि मकर का राहु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्तिके अन्दर कमी और कष्ट के कारण पावेगा तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ चिन्ता रहेगी क्योंकि स्थिर हठी ग्रह शक्ति की राशि पर बैठा है इसलिये धन की शक्ति पाने के लिये बड़ा भारी युक्ति बल का प्रयोग करेगा तथा धन और कुटुम्ब के मार्ग में कभी-कभी महान् संकट का योग मिलेगा किन्तु बार-बार गहरे प्रयत्न की शक्ति से धनके सुधार का मार्ग प्राप्त करेगा एव धन की पूर्ति करने के लिए कभी-कभी धन का कर्ज लेकर कार्य संचालन करेगा।
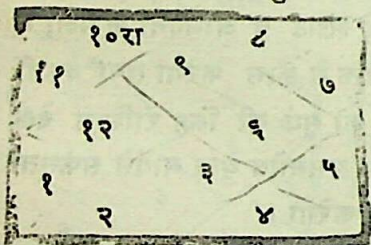
धन लग्न में २ राहु

नं, ९५०

यदि कुम्भ का राहु—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये पराक्रम स्थान के मार्ग से बड़ी भारी

धन लग्न में ३ राहु
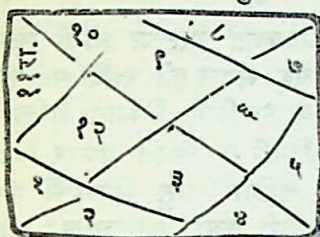
नं० ९५१

सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और जबर्दस्त हिम्मत शक्ति से काम लेगा और स्थिर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये अपनी उन्नति करने के लिये गहरी युक्ति बल के प्रयोग से सदैध प्रयत्नशील रहेगा। किन्तु भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा कभी-कभी पुरुषार्थ कर्म की सफलता के मार्ग में घोर संकट प्राप्त होने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से काम निकालेगा।

यदि मीन का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के सुख में भारी कमी रहेगी और भूमि मकानादि की हानि या कमी प्राप्त करेगा तथा घरेलू रहन-सहन के सुख सम्बन्धों में कुछ अ ान्ति का योग पावेगा किन्तु देवगुरु वृहस्पति के स्थान में राहु बैठा है, इसलिये घरेलू सुखके साधनों को बड़ी योग्यता एवं गुप्त युक्ति के बल से प्राप्त करेगा और कभी-कभी घरेलू वातावरण में घोर संकट का सामना पाने पर भी गुप्त बुद्धिमत्ता के द्वारा कार्य सम्पन्न करेगा और जन्म स्थान से वियोग पावेगा तथा कुछ मुफ्त का सा सुख भी मिलेगा।
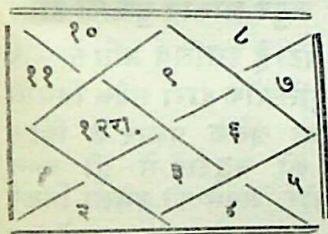
धन लग्न में ४ राहु

नं० ९५२

यदि मेष का राहु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान पर शत्रु मंगल की राशि में बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट प्राप्त होगा और संतान पक्ष के सम्बन्ध से कुछ न कुछ चितायें बनती रहेंगी

धन लग्न में ५ राहु

नं० ९५३
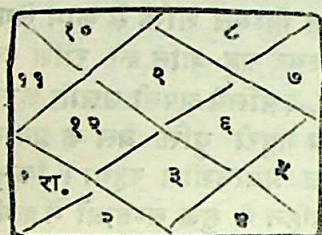
तथा विद्या ग्रहण करने के मार्ग में बड़ी-बड़ी दिक्कतें उत्पन्न होंगी किन्तु गरम ग्रह मंगल की राशि पर राहु बैठा है, इसलिए हिम्मत शक्ति के द्वारा किसी न किसी प्रकार विद्या ग्रहण करेगा किन्तु विद्या में कुछ कमी रहेगी तथा बोलचाल और बातचीत के अन्दर कुछ रूखापन और कुछ छिपाव रहेगा तथा गुप्त युक्ति के बलसे अपने सिद्धांत की पूर्ति करेगा किन्तु दिमाग के अन्दर कभी-कभी बेहद परेशानी अनुभव करेगा।

यदि वृषभ का राहु—छठें शत्रु स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो छठे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है इसलिए शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा

धन लग्न में ६ राहु

नं० ९५४
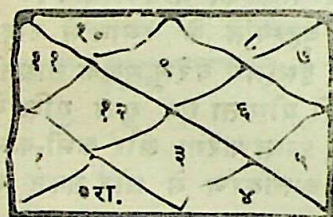
और परम चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर राहु बैठा है इसलिये अति गम्भीर गहरी युक्तियोंके द्वारा सदैव विजयी रहेगा तथा अनेक प्रकार के विघ्न बाधाओं को चतुराई से ही दबन करेगा और अपने को हमेशा निडर मानेगा किन्तु मामा के पक्ष में कुछ खराबी करेगा और राहुके स्वाभाविक गुणोंके कारण कभी-कभी शत्रु पक्ष में बेहद परेशानी का योग पावेगा किन्तु अपनी अन्दरूनी कमजोरी को छिपाये रखनेसे प्रभाव कायम रहेगा।

यदि मिथुन का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थानमें उच्च का होकर बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष शक्ति पावेगा और

धन लग्न में ७ राहु

नं० ९५५

सम्भवतः कुछ अधिक स्त्रियों से शादी या सम्बन्ध पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में विशेष उन्नति करेगा और वहुत प्रकार के मार्गोंसे रोजगार की वृद्धिके साधन बनायेगा तथा विवेकी बुध की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये महान् चतुराई के साधनों से सफलता शक्ति पायेगा और राहुके स्वाभाविक गुणोंके कारण गृहस्थ और रोजगार के मार्ग में कभी-कभी भारी अशांति का योग बनेगा किन्तु उच्च का होने के नाते उन मुसीबतों से जल्दी ही छुटकारा मिलेगा और रस्ता साफ हो जायेगा।

यदि कर्कका राहु—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थानमें मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो आयु के स्थान में कई बार संकट प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व शक्ति की हानि रहेगी और जीवन की दिनचर्या में बड़ी चिन्तायें प्राप्त करेगा तथा उदर के अन्दर कोई बीमारी रहेगी और कभी-कभी जीवन की समाप्ति का साम हान् संकट बनेगा इसलिये जीवन की रक्षा और जीवन के निर्वाह के लिये फिकरमंदी का योग चलेगा तथा गुप्त युक्ति और अनेक प्रकार के साधनों से जीवन की दिनचर्या का संचालन कार्य करेगा तथा जीवन झंझट युक्त रहेगा।

धन लग्न में ८ राहु

नं० ९५६

यदि सिंह का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में परमशत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में महान् संकट प्राप्त करेगा तथा भाग्योन्नति के लिये बड़ी-बड़ी दिक्कतें

धन लग्न में ९ राहु

नं० ९५७

सहनी पड़ेंगी और धर्म के पक्ष में हानि और कमी रहेगी तथा ईश्वर की भक्ति और निष्ठा में कमजोरी रहेगी और सुयश का अभाव रहेगा तथा सूर्य की राशि पर होनेसे भाग्य की उन्नति के मार्ग में भारी प्रयत्न करेगा और विशेष युक्ति बलसे काम लेगा किन्तु कभी-कभी भग्य के पक्ष में घोर संकट पाने पर भी हिम्मत और प्रताप शक्ति से काम करेगा।

यदि कन्या का राहु—दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ परेशानी या कमी रहेगी और राज-समाज में कुछ झंझट युक्त वातावरण से काम चलेगा

धन लग्न में १० राहु
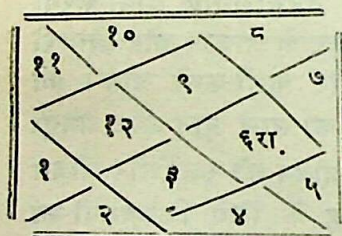
नं० ९५८

तथा कारबार मान-प्रतिष्ठा आदि के मार्गमें कभी महान् संकट का सामना पावेगा किन्तु विवेकी बुधकी राशिपर राहु बैठा है, इसलिये गुप्त और गहरी युक्ति के बल से अपनी स्थिति और कारबार की उन्नति करेगा फिर भी कुछ कमी और कमजोरी रहेगी और बहुत सी दिक्कतोंके मार्गके बाद इज्जत आबरू को बना सकेगा तथा अधिक उन्नति और ऊँचे पद पर पहुँचने के लिये सदैव चिन्ता युक्त रहेगा।

यदि तुला का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थानपर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता

धन लग्न में ११ राहु

नं० ९५९

बन जाता है, इसलिये आमदनीके मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा और अधिक में अधिक मुनाफा खाने की चेष्टा करेगा किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्रकी राशिपर राहु बैठा है इसलिये आमदनी के मार्ग में महान् चतुराई की गुप्त युक्तियोंके द्वारा रास्ता स्तेमाल करके आमदनी की वृद्धि प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनीके मार्गमें कठिनाइयाँ और परेशानियाँ भी प्राप्त रहेगी कभी-कभी लाभ के मार्ग में कठिन समस्या बनने पर भी धैर्यसे काम लेगा।
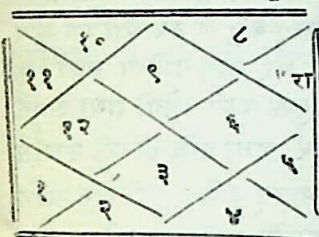
यदि वृश्चिक का राहु - बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में शत्रु मङ्गल की राशि पर बैठा है तो खर्चके मार्गमें कुछ चिंता फिकर

धन लग्न में १२ राहु

नं० ९६०

रहेगी और कुछ झंझट एवं परेशानियों के द्वारा खर्च का सञ्चालन कार्य रहेगा तथा बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध में कुछ कष्ट अनुभव होगा, गरम ग्रह मंगल की राशिपर राहु बैठा है, इसलिये बड़ी कड़ाई और मेहनत तथा हिम्मत और गुप्त युक्तियोंके बलसे खर्चके मार्गको पूरा करेगा तथा इसी प्रकार बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे कार्य बनावेगा किन्तु खर्चके मार्गमें कभी कभी भारी संकट का सामना पावेगा तथा दूसरे स्थानोंमें सम्बन्धसे कभी नुकसान रहेगा किन्तु धैर्य और गुप्त साहससे काम निकालेगा।
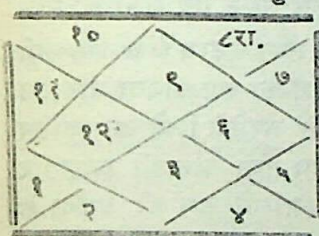
कष्ट, कठिन कर्म, तथा गुप्त शक्ति के अधिपति-केतु

यदि धन का केतु --प्रथम केन्द्र देह के स्थान में उच्च का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के आकार में वृद्धि और शक्ति

प्राप्त करेगा तथा अपने अन्दर बड़ी बहादुरी और हिम्मत रखेगा तथा हठधर्मी और जिद्दबाजी से काम करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण देह में कुछ चिंता एवं कुछ कष्ट का योग पावेगा तथा देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ कमी रहेगी तथा अपने व्यक्तित्व और मान प्रतिष्ठा की उन्नति के लिये महान् कठिन परिश्रम और विशेष साधन उपस्थित करेगा तथा कठिनसे कठिन कार्य को पूरा करनेके लिए सदैव उद्यत रहेगा किन्तु फिर भी अपने अन्दर कुछ कमीके कारणसे दुःख अनुभव करेगा।
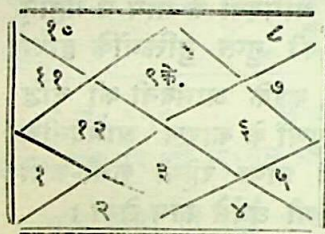
धन लग्न में १ केतु

१० ८ ११ ९के. ७ १२ ६ १ ३ ५ २ ४

नं० ९६१

यदि मकर का केतु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो धन के पक्ष में कुछ संकट एवं कमी का योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब के अन्दर कमी और क्लेश का रूप पावेगा और धन की उन्नति करनेके लिये बड़ा कठिन कर्म करेगा तथा शनि की राशि पर बैठा है इसलिये धन की प्राप्ति के मार्ग में बड़ा भारी परिश्रम करते हुए सदैव प्रयत्नशील रहेगा और मेहनत की परवाह नहीं करेगा किन्तु फिर भी कभी-कभी धन के स्थान में घोर संकट का सामना पावेगा परन्तु पुनः हिम्मत शक्ति और परिश्रम के योग से उन्नति के पथ पर चलेगा और कभी-कभी धन के लिए कर्ज भी करना पड़ेगा।
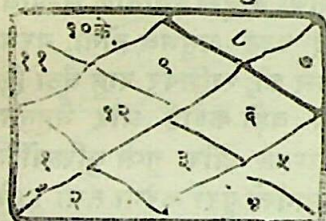
धन लग्न में २ केतु

१०के. ८ ११ ९ ७ १२ ६ १ ३ ५ २ ४

नं० ९६२

यदि कुम्भ का केतु—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत शक्ति-

शाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये पराक्रम स्थान की शक्ति के द्वारा महान् कठिन परिश्रम कर उन्नति प्राप्त करेगा तथा अपने बाहु-बल की शक्ति पर बड़ा भारी भरोसा करेगा और भाई-बहिन के स्थान में कुछ कष्ट एवं कुछ कमी पावेगा तथा केतु के स्वाभाविक दोष के कारण कभी-कभी हिम्मत शक्ति के अन्दर अन्दरूनी तौर से कमी या कमजोरी अनुभव करेगा किन्तु प्रकट रूपमें कभी भी हिम्मत नहीं हारेगा इसलिये कठिनसे कठिन समय पर विपक्षियों के सम्मुख जबरदस्त धैर्य की गुप्त शक्ति से काम लेकर सफलता प्राप्त करेगा।
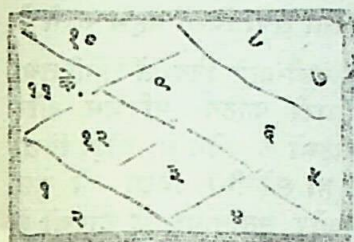
धन लग्न में ३ केतु

नं० ९६३

यदि मीन का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्ध में जबरदस्त हानि और कमी प्राप्त करेगा तथा मातृ भूमि एवं जन्म स्थान से वियोग पावेगा तथा मकानादि भूमि के सम्बन्ध में तथा घरेलू वातावरण में सुखों की कमी रहेगी और देवगुरु बृहस्पतिके घर में केतु बैठा है इसलिये गुप्त धैर्य और संतोष के द्वारा सुख का साधन बनावेगा तथा सुखप्राप्तिके साधनोंके लिये बड़ा भारी प्रयत्न और गुप्त रूपसे परिश्रम करके सफलता शक्ति पावेगा किन्तु कभी-कभी घरेलू सुख शान्तिके अंतर विशेष संकट प्राप्त करेगा।
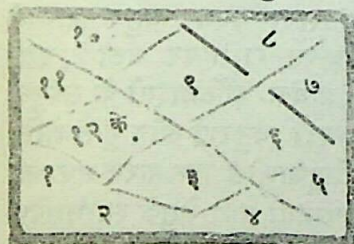
धन लग्न में ४ केतु

नं० ९६४

यदि मेष का केतु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थानमें शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में महान् संकट का योग

धन लग्न में ५ केतु

नं० २६५
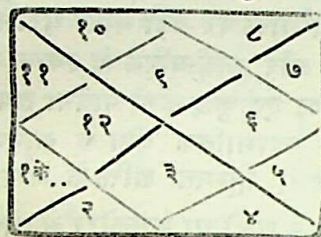
प्राप्त करेगा तथा विद्या ग्रहण करने के मार्गमें बड़ी-बढ़ी दिक्कतें रहेंगी तथा बड़े भारी कठिन परिश्रम और कठिनाइयों के योग से थोड़ी विद्या प्राप्त हो सकेगी। विद्या की कुछ कमी और संतान पक्ष के कारणों से दुःख का अनुभव होता रहेगा तथा दिमाग के अन्दर कुछ चिंता फिकर सी रहेगी और बोल चाल में कुछ नीरसता एवं क्रोध रहेगा किन्तु गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये अपने मन्तव्य और गुप्त युक्तिके सम्मुख किसी दूसरे व्यक्ति की बात को ग्रहण नहीं करेगा।

यदि वृषभ का केतु—छठे शत्रु स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का द्योतक होता है इसलिये शत्रुपक्ष में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और बड़े-बड़े

धन लग्न में ६ केतु

नं० ९६६

झगड़े झंझटों के मार्ग में विजय प्राप्त करेगा तथा परम चतुर आचार्य शुक्रदेव की राशि पर बैठा है, इसलिये प्रत्येक कठिनाइयों के सम्मुख बड़ी भारी चतुराई और गुप्त शक्ति तथा जिह्वाजीसे काम करके सफलता शक्ति पावेगा तथा केतुके स्वाभाविक गुणों के कारण कभी-कभी शत्रु पक्ष में महान् संकट का योग पाने पर भी संकट में बड़ी बहादुरी से काम निकालेगा और ननसाल पक्ष में कुछ कमी रहेगी।
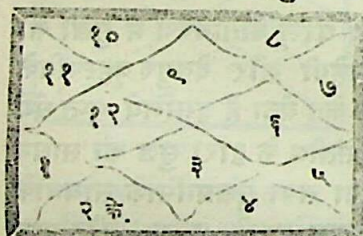
यदि मिथुन का केतु – सातवें केन्द्र, स्त्री एवं रोजगार के स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में विशेष हानि या परेशानी प्राप्त होगी तथा रोजगार के मार्ग में बड़ी-बड़ी दिक्कतें रहेंगी और कठिन कर्म तथा परेशानियों से रोजगार का संचालन कर सकेगा तथा कभी-कभी रोजगार एवं गृहस्थ के अन्दर महान् संकट का योग प्राप्त होगा किन्तु धैर्य की शक्ति से काम निकालेगा और बार-बार गृहस्थ के सम्बन्धों से दुःख का अनुभव करता रहेगा किन्तु कुछ गुप्त युक्ति की शक्ति से काम निकालेगा तथा गृहस्थ सुख की कमी को कुछ मजबूरियों के कारण पूरा नहीं कर सकेगा।
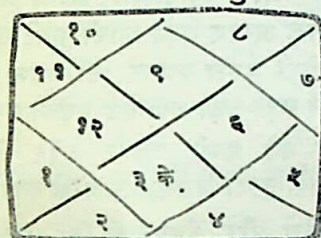
धन लग्न में ७ केतु

नं० ९६७

यदि कर्क का केतु—आठवें आयु एवं मृत्यु तथा पुरातत्व स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो आयु के सम्बन्धमें बड़े-बड़े महान् संकटों का सामना प्राप्त करेगा जीवन की दिनचर्या में बहुत प्रकार की परेशानियाँ रहेंगी और पुरातत्व सम्बंधी शक्ति की हानि प्राप्त होगी तथा उदरके अन्दर कोई प्रकार की बीमारी का योग भी रहेगा और चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिए मन के अन्दर मृत्यु तुल्य दुःख का अनुभव करेगा और जीवन को चलाने के लिए कुछ गुप्त शक्ति और कठिन कर्म का प्रयोग करेगा।
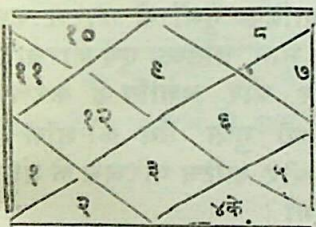
धन लग्न में ८ केतु

नं० ९६८

यदि सिंह का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में परम

शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में महान् संकटों का योग प्राप्त करेगा तथा भाग्य की वृद्धि करने के लिए बड़े-बड़े कठिन कर्म और गुप्तशक्तियों का प्रयोग करेगा और फिर भी भाग्य की स्थितिके अन्दर बड़ी भारी कमी एवं कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म के मार्गमें बड़ी-बड़ी रुकावटें पड़ेंगी तथा सुयश की कमी रहेगी और दैव संयोगके द्वारा असफलताओंके कारण प्राप्त होते रहेंगे और ईश्वर के विश्वास में तथा बरक्कत के स्थान में बड़ी कमजोरी रहेगी।
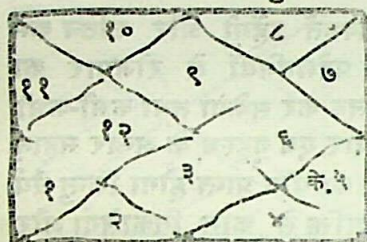
धन लग्न में ९ केतु

नं० १६९

यदि कन्या का केतु—दसम केन्द्र पिता स्थान में एवं राज्य स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कुछ कमी और परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा कारबार और राज-समाज के पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा मान प्रतिष्ठा के अन्दर कुछ कमजोरी के सहित मार्ग बनेगा और केतुके स्वाभाविक गुणों के कारण कभी-कभी मान प्रतिष्ठा एवं कारबार के अन्दर घोर अशांति के करणपाने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति एवं हिम्मत से और कठिन परिश्रम के योग से पुनः अपनी शक्ति में जीवन प्राप्त करेगा।
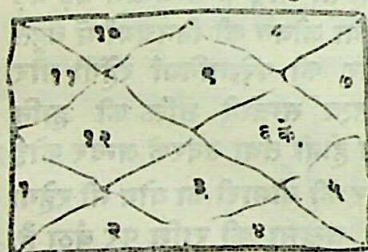
धन लग्न में १० केतु

नं० १७०

यदि तुला का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिए आमदनी के मार्ग में विशेष सफलात

धन लग्न में ११ केतु
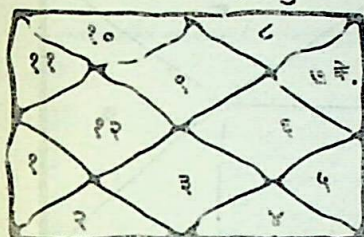
नं० ९७१

शक्ति पावेगा और अधिक से अधिक लफा खाने का विशेष प्रयत्न एवं विशेष परिश्रम करेगा और केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनी के मार्गमें कभी-कभी विशेष परेशानी का योग प्राप्त करेगा किन्तु गुप्त शक्ति और कठिन परिश्रम के योगसे सफलता शक्ति पावेगा तथा लाभ प्राप्ति में वृद्धि होते हुए भी लाभ के स्थान में कुछ त्रुटि महसूस होगी।

यदि वृश्चिक का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बड़ी परेशानी रहेगी और खर्च की संचालन शक्ति पाने के लिये महान् कठिन परिश्रम

धन लग्न में १२ केतु

नं० ९७२

करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतें एवं कठिनाइयां रहेंगी तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिए खर्च की शक्ति को सफल करने के लिये गुप्त शक्ति और महान् हिम्मत से काम लेगा। किन्तु खर्चके स्थान में कभी-कभी महान् संघर्ष के योग बनते रहेंगे और कुछ त्रुटि युक्त मार्ग से खर्च का सञ्चालन चलता रहेगा।
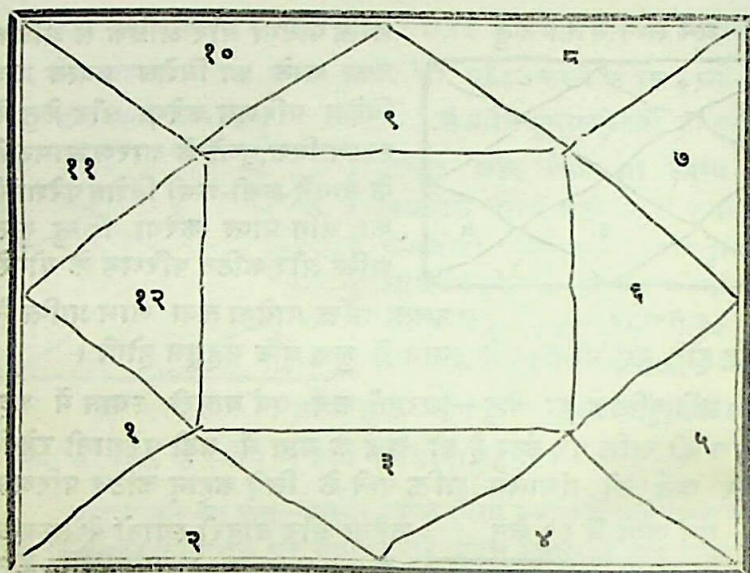
॥ धन लग्न समाप्त ॥

———

मकर लग्न का फलादेश प्रारम्भ
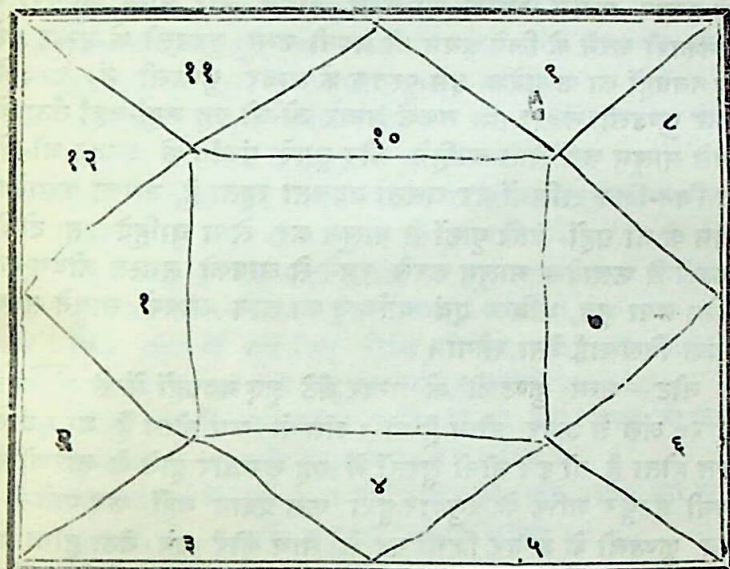
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

कुण्डली नं० १०८० तक में देखिये)

प्रिय पाठक गण—ज्योतिषके गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारोंसे असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं, उसका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचरगति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न

रूप से अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ९०२ से लेकर कुण्डली नं० १०८० तकके अन्दर जो-जो ग्रह जहाँ-जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नौ ग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका असर फल लागू हो जायगा।

१०—मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर - सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ९७३ से ९८४ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१०- जिस मासमें सूर्य मकर राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ५७३ के अनुसार मालूम करिये।

११- जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ९७४ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९७५ के अनुसार मालूम करिये ।

१–जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९७६ के अनुसार मालूम करिये ।

२–जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९७७ के अनुसार मालूम करिये ।

३–जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९७८ के अनुसार मालूम करिये ।

४–जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९७९ के अनुसार मालूम करिये ।

५–जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९८० के अनुसार मालूम करिये ।

६–जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९८१ के अनुसार मालूम करिये ।

७–जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९८२ के अनुसार मालूम करिये ।

८–जिस मासमें सूर्य वृश्चिक राशिपर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९८३ के अनुसार मालूम करिये ।

९–जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९८४ के अनुसार मालूम करिये ।

१०–मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर चन्द्रफल

जन्म कालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० ९८१ से ९९० तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकार से देखिये ।

१०–जिस दिन चन्द्रमा मकर राशिपर हो, उस दिनका फलादेश कुण्डली नं० ९८५ के अनुसार मालूम करिये ।

११–जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९८६ के अनुसार मालूम करिये ।

१२–जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९८७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९८८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशिपर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९८९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९० के अनुसार मालूम करिये।

४–जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ९९६ के अनुसार मालूम करिये।

१०–मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर भौमफल

जन्म कालीन मंगलका फल कुण्डली नं० ९९७ से १००८ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१०–जिस मासमें मंगल मकर राशिपर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० ९९७ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९९८ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ९९९ के अनुसार मालूम करिये।

१– जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशिपर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००६ के अनुसार मालूम करिये।

८– जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००७ के अनुसार मालूम करिये।

९- जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० १००९ से १०२० तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१०–जिस मास में बुध मकर राशिपर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १००९ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस मास में बुध कुम्भ राशिपर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१० के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०११ के अनुसार मालूम करिये।

१ जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मासमें बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१४ के अनुसार मालूम करिये।

४– जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१७ के अनुसार मालूम करिये।

७– जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०१९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०२० के अनुसार मालूम करिये।

१०—मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं १०२१ से १०३२ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१० जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०२१ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२२ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२३ के अनुसार मालूम करिये ।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२४ के अनुसार मालूम करिये ।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२५ के अनुसार मालूम करिये ।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२६ के अनुसार मालूम करिये ।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२७ के अनुसार मालूम करिये ।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२८ के अनुसार मालूम करिये ।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०२९ के अनुसार मालूम करिये ।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०३० के अनुसार मालूम करिये ।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०३१ के अनुसार मालूम करिये ।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०३२ के अनुसार मालूम करिये ।

१०-मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्म कालीन शुक्रका फल कुण्डली नं० १०२३ से १०४४ तक में देखिये और समय कालीन शुक्रका फल निम्न प्रकारसे देखिये ।

१०-जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० १०३३ के अनुसार मालूम करिये ।

११-जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० १०३४ के अनुसार मालूम करिये ।

१२-जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०३५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०३६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०३७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०३८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०३९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०४० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०४१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०४२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मासमें शुक्र वृश्चिक राशिपर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०४३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०४४ के अनुसार मालूम करिये।

१०—मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० १०४५ से १०५६ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१०-जिस वर्षमें शनि मकर राशिपर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०४५ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०४६ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०४७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०४८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०४९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५१ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५५ के अनुसार मालुम करिये।

९—जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५६ के अनुसार मालूम करिये।

१०-मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—राहु फल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० १०५७ से १०६८ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१०-जिस वर्ष में राहु मकर राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५७ के अनुसार मालूम करिये।

११ जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५८ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०५९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०६२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०६३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—मकर लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० १०६९ से १०८० तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये

१०-जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०६९ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुन्डली नं० १०७० के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में केतु मीन राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्षमें केतु वृषभ राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्षमें केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्षमें केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०७५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्षमें केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०७७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०७८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्षमें केतु वृश्चिक राशिपर हो, उस वर्षका फलादेश कुण्डली नं० १०७९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०८० के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

आयु, मृत्यु तथा पुरातत्व स्थान पति—सूर्य

यदि मकर का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण से देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य के अन्दर कुछ कमजोरी रहेगी और देहमें कभी-कभी विशेष संकटका योग भी बनेगा किन्तु आयु स्थान की वृद्धि रहेगी और पुरातत्व सम्बन्धमें कुछ अरुचिकर रूप से शक्ति रहेगी तथा देह में प्रभाव और तेजी रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के
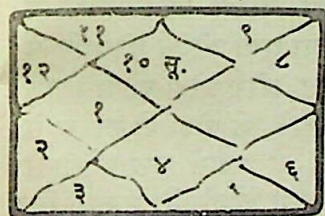
मकर लग्न में १ सूर्य

नं० ९७३

स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के पक्षमें अष्टमेश के दोष दृष्टि के कारण कुछ परेशानी एवं कुछ कठिनाइयाँ रहेंगी।

यदि कुम्भ का सूर्य—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है, तो अष्टमेश होने के दोष के कारण धन की शक्तिको संचित नहीं कर सकेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ परेशानी एवं नीरसता युक्त सम्बन्ध रहेगा और धन के मार्ग में कभी-कभी विशेष चिन्ता का योग बनेगा और कुटुम्ब से संघर्ष रहेगा। सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए आयु की वृद्धि प्राप्त होगी तथा पुरातत्व शक्ति का अच्छा लाभ होगा और जीवनकी दिनचर्या में प्रभाव और अमीरात का ढंग रहेगा और जीवन की शानदारी के लिये धन की परवाह नहीं करेगा।
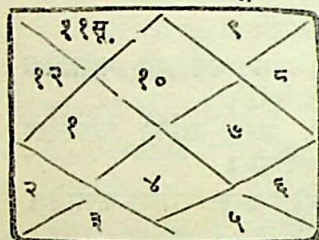
मकर लग्न में २ सूर्य

नं० ९७४

यदि मीन का सूर्य—तीसरे पराक्रम स्थान एवं भाई के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान में गरम ग्रह शक्ति शाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये आयु की शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरातत्व शक्तिका लाभ रहेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा तथा जीवन की शक्तिमें बड़ी हिम्मत और जोश रहेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण से भाई-बहिन के पक्षमें कुछ परेशानी तथा कुछ कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध

मकर लग्न में ३ सूर्य
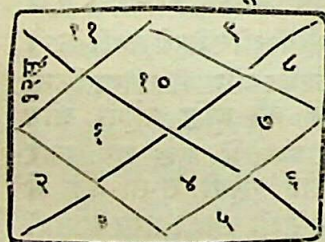
नं० ९७५

की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये भाग्य में कुछ कमी नजर आयेगी और धर्म के मार्ग में वास्तविक रूप से कुछ कमजोरी रहेगी।

यदि मेष का सूर्य– चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु की विशेष सुख शक्ति रहेगी तथा जीवन की दिनचर्या में बड़ा आनन्द और प्रभाव रहेगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध की सञ्चित शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति रहेगी तथा घरेलू वातावरण एवं माता के सम्बन्ध में प्रभाव युक्त रहेगा और सातवीं नीच दृष्टिसे पिता एवं राज्य स्थान को शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए पिता के सुख में बड़ी कमी रहेगी और राज-समाज के अन्दर मान प्रतिष्ठा की कमी रहेगी तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटे रहेंगी।
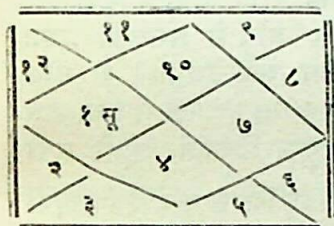
मकर लग्न में ४ सूर्य

नं० ९७६

यदि वृषभ का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है, तो आयु स्थान में कुछ शक्ति रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्ध का ज्ञान और लाभ रहेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ नीरसता का अनुभव होगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारणों से संतान पक्ष में कष्ट प्राप्त होगा तथा विद्या के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और बुद्धि के अन्दर कुछ क्रोध और कुछ चिन्ता रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये बड़ा प्रयत्न और परिश्रम करेगा।

मकर लग्न में ५ सूर्य

नं० ९७७

यदि मिथुन का सूर्य— छठे शत्रु स्थान पर मित्र बुध की राशि में बैठा है तो छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा तथा आयु स्थानमें कुछ शक्ति रहेगी और पुरातत्व सम्बन्ध की कुछ शक्ति मिलेगी और झगड़े झंझट आदि मार्गों में कुछ-कुछ परिश्रम के योग से सफलता प्राप्त करेगा तथा अष्टमेश होने के दोष कारण से मामा के पक्ष में तथा शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा सातवीं मित्रदृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थान में कुछ अरुचि रहेगी।
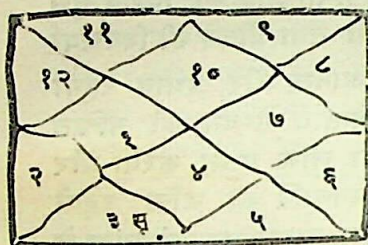
मकर लग्न में ६ सूर्य

नं० ९७८

यदि कर्क का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण स्त्री स्थान में संकट एवं परेशानी रहेगी और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयों से संचालन कार्य करेगा तथा कभी-कभी रोजगार में बड़ी हानि रहेगी और आयु स्थानमें शक्ति प्राप्त होगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और जीवन की दिन-चर्या में प्रभाव और प्रमोद रहेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थानको शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कष्ट रहेगा और देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी तथा अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।
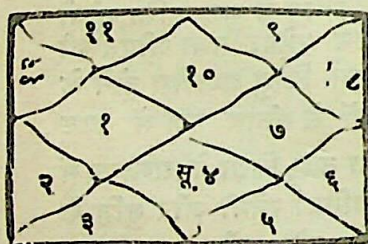
मकर लग्न में ७ सूर्य

नं० ९७९

यदि सिंह का सूर्य—आठवें आयु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु स्थान में शक्ति प्राप्त रहेगी तथा जीवन

की दिनचर्या में बड़ा भारी प्रभाव रहेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन को सहायक होने वाली विशेष शक्ति प्राप्त होगी तथा निर्भयता युक्त समय व्यतीत करेगा तथा रहन-सहन के अन्दर तेजी और स्वाभिमान रखेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह के स्थान में परेशानी के कारण प्राप्त होंगे और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ झंझट और नीरसता का योग पावेगा।
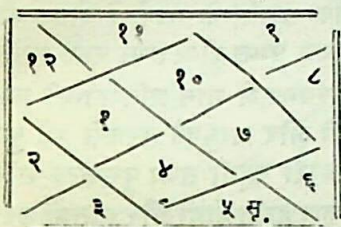
मकर लग्न में ८ सूर्य

नं० ९८०

यदि कन्या का सूर्य – नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध का राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा जीवन को सहायक होने वाली पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या को भाग्यवानी और प्रभाव के द्वारा व्यतीत करेगा किन्तु अष्टमेश होनेके दोष के कारण भाग्य स्थान की उन्नतिके मार्ग में रुकावट प्राप्त करेगा तथा सुयश की कमी रहेगी और धर्म पालन की हानि और कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरुकी मीन राशिमें देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी तथा पुरुषार्थ में कुछ लापरवाही करेगा।
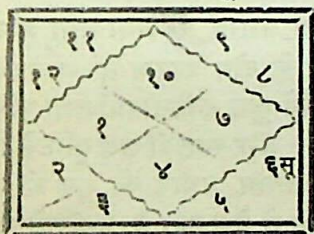
मकर लग्न में ९ सूर्य

नं० ९८१

यदि तुला का सूर्य – दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि परा बैठा है तो पिता के सुख सम्बन्ध

में महान् कष्ट प्राप्त करेगा क्योंकि सूर्य नीच भी है और अष्टमेश भी है, इसलिये विशेष दोषी होनेके कारण प्रत्येक उन्नति के मार्ग में बाधा और रुकावट प्राप्त होंगी तथा राज-समाज के सम्बन्ध में मान प्रतिष्ठा की कमी रहेगी और आयुकी तरफसे भी कुछ कमजोरी रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि होगी और सातवीं उच्च दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये माता एवं भूमि के सम्बन्धों में कुछ शक्ति रहेगी और सुख मिलेगा।
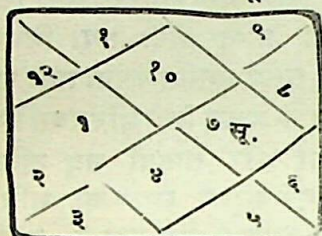
मकर लग्न में १० सूर्य

नं० ९८२

यदि वृश्चिक का सूर्य ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है इसलिये आयु की विशेष शक्ति रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन को सहायक होने वाली शक्ति का लाभ रहेगा और आमदनी के मार्गमें सफलता और प्रभाव मिलेगा तथा अष्टमेश होने के दोष कारण से आमदनी के मार्गमें कुछ कठिनाइयाँ तथा परिश्रम रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टिसे विद्या एवं संतान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कष्ट रहेगा और विद्या स्थान में कुछ कठिनाई प्राप्त होगी तथा विमाग में कुछ तेजी रहेगी।
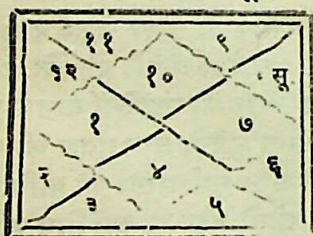
मकर लग्न में ११ सूर्य

नं० ९८३

यदि धन का सूर्य बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की धन राशि पर बैठा है तो आयु के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव की कुछ कमी रहेगी और पुरातत्व

मकर लग्न में १२ सूर्य

नं० ९८४
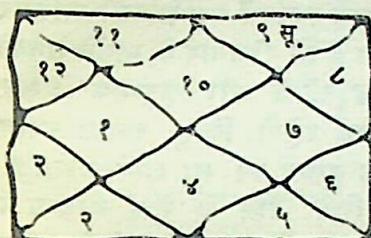
शक्ति के लाभ में कुछ हानि रहेगी तथा अष्टमेश होने के दोष के कारण खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानके मार्गमें कुछ असफला या दिक्कतें रहेगी और उदर में कुछ नीचे की तरफ विकार रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ दिक्कतों के साथ प्रभाव शक्ति रहेगी तथा अनेकों झंझटें स्वयमेव कटती रहेंगी ।

स्त्री, रोजगार तथा मनः स्थान पति--चन्द्र

यदि मकर का चन्द्र-प्रथम केन्द्र देह के स्थानमें शत्रु शनिकी मकर राशि पर बैठा है तो देह मे कुछ सुन्दरता एवं कोमलता पावेगा और देह में कुछ सजावट एवं मनोरञ्जन का ध्यान रहेगा तथा मान और

मकर लग्न में १ चन्द्र

नं० ९८५
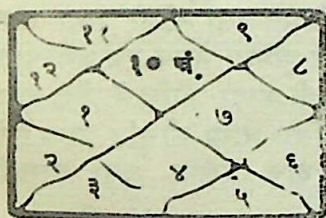
कुछ ख्याति प्राप्त करेगा तथा लौकिक उन्नति और कार्य कुशलता का बड़ा ध्यान रखेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिए स्त्री पक्ष में सुन्दरता एवं योग्यता तथा स्वाभिमान पावेगा और रोजगारके मार्ग में तन और मन की शक्तिके द्वारा बड़ी भारी सफलता शक्ति मिलेगी तथा गृहस्थके पक्ष में आनन्दित रहेगा तथा प्रभाव शक्ति रहेगी ।

मकर लग्न में २ चन्द्र
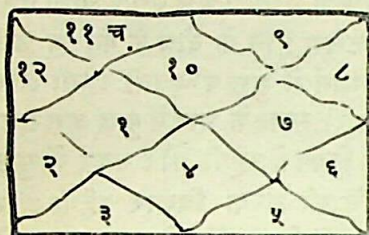
नं० ९८६

यदि कुम्भका चन्द्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थानमें शत्रु शनिकी राशिपर बैठा है तो रोजगार के मार्गसे धनकी वृद्धि रहेगी और कुटुम्बके अन्दर शक्ति रहेगी किन्तु धनका स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य करता है, इसलिये स्त्री के सुख सम्बन्ध में मन के लिये बड़ी परेशानी रहेगी और मनोयोग की शक्ति से धनोन्नति के कारण पैदा करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से आयु स्थान को एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और दिनचर्या में अमीरात का ढङ्ग रहेगा।

यदि मीन का चन्द्र—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो मनोयोग के द्वारा पराक्रम शक्ति से रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में सुन्दर शक्ति पावेगा तथा भाई बहिन की शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा और गृहस्थ के पक्ष से मनको बड़ी प्रसन्नता रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे भाग्य एवं धर्मस्थानको बुधकी कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा और धर्ममें रुचि रखेगा तथा उत्साहित मनोयोग के द्वारा यश प्राप्त करेगा।
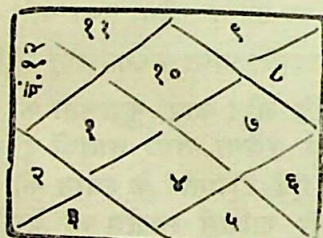
मकर लग्न में ३ चन्द्र

नं० ९८७

यदि मेष का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर मित्र मंगल की राशि में बैठा है तो स्त्री पक्ष की तरफ से बहुत सुख और सुन्दरता प्राप्त रहेगी तथा मनोयोग से रोजगार की बड़ी सुन्दर

मकर लग्न में ४ चन्द्र

नं० ९८८
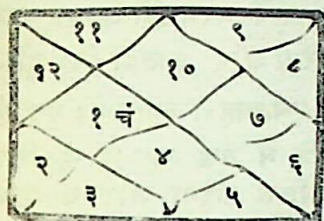
सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि के रहन-सहनका सुन्दर सुख रहेगा तथा माता का उत्तम आनन्द मिलेगा और घरेलू वातावरण में मनोरंजनका सुन्दर साधन रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये पिता स्थान में सुन्दर सहायता मिलेगी और राज-समाज, कारबारमें मान प्रतिष्ठा और सुख रहेगा।

यदि वृषभ का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एव संतान स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्रकी राशि पर बैठा है तो स्त्री और संतान पक्ष में सुन्दर शक्ति पावेगा तथा मन और बुद्धि के योग से

मकर लग्न में ५ चन्द्र

नं० ९८९
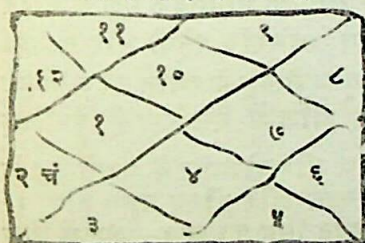
रोजगार का कार्य बड़ी योग्यता से करेगा तथा लौकिक भोगादिक पक्ष के सम्बन्धमें बड़ी भारी दिलचस्पी रखेगा और विद्या बुद्धि एवं बातचीत के अन्दर हाजिर जबाबी का दिमाग पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टिसे लाभ स्थान को मित्र मंगलकी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिए आमदनी के मार्ग में बड़ी कमजोरी अनुभव करेगा अतः लाभ के पक्ष से मन को कुछ असुविधा रहेगी।

यदि मिथुन का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुधकी राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में मानसिक विरोध रहेगा एवं मनको कुछ असुविधा और अशांति अनुभव होगी तथा रोजगार के मार्गमें बड़ी दिक्कतें रहेंगी अर्थात मानसिक मनोयोगके परिश्रम और कुछ परेशानियोंके संयोगसे रोजगार का संचालन करेगा तथा दैनिक

मकर लग्न में ६ चन्द्र

व्यवहार और मनोयोग की कुशलता से शत्रु पक्षमें नरमाईसे अपना कार्य पूरा करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिए खर्चा अधिक करेगा और बाहरका अच्छा सम्बन्ध रहेगा।

नं ६९०

यदि कर्क का चन्द्र— सातवें स्त्री एव रोजगार के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो मनोयोगकी महान् शक्ति के द्वारा रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री के सुख और सौंदर्य में महानता प्राप्त होगी तथा गृहस्थके अन्दर मनोरञ्जन का सुन्दर साधन रहेगा तथा लौकिक भोगादिक पक्ष के अन्दर विशेष अभिरुचि रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टिसे देह के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए गृहस्थ और रोजगार के पक्षसे देह के सम्बन्ध की कुछ अरुचि युक्त मार्ग से मान और गौरव प्राप्त होगा।

मकर लग्न में ७ चन्द्र

नं० ६९१

मकर लग्न में ८ चन्द्र

यदि सिंह का चन्द्र— आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्वस्थानमें मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो स्त्रीस्थानमें बड़ा कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयों युक्त कर्म के द्वारा कार्य सफल कर सकेगा तथा गृहस्थ सुख की कमी के कारण मानसिक अशान्ति रहेगी और पुरातत्व सम्बन्ध में सहायता शक्ति मिलेगी तथा आयु में तथा जीवन की दिन

नं० ६९२

चर्या में रौनक रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिए कुछ दिक्कतों के साथ धन की वृद्धि करने का प्रयत्न करेगा तथा कुटुम्ब से कुछ अच्छा सम्पर्क रहेगा।

यदि कन्या का चन्द्र नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री के पक्ष में भाग्यवानी और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा मनोयोग की उत्तम शक्ति के द्वारा रोज-

मकर लग्न में ९ चन्द्र

नं० ९३
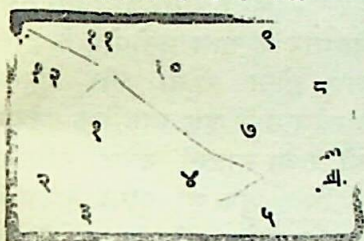
गार के मार्ग में बड़ी सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ और रोजगार के द्वारा बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा और लौकिक तथा पार लौकिक दोनों ही विषयों में सुन्दर रुचि रखेगा तथा यश और धर्म को प्राप्त करेगा तथा व्यवहारिक मार्ग में न्याय को पसंद करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से गुरु की मीन राशि में भाई और पराक्रम स्थान को देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन का योग पावेगा तथा मनोयोग के द्वारा पुरुषार्थ की सफलता पावेगा।

यदि तुला का चन्द्र दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की शक्ति का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा और राज-समाज के अन्दर बड़ी मान प्रतिष्ठा

मकर लग्नमें १० चन्द्र

नं० ९४

पावेगा तथा मनोबल की उत्तम शक्ति के द्वारा रोजगार का मार्ग ऊँचे स्तर पर ले जाकर सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा सुन्दर और स्वाभिमान वाली स्त्री पावेगा और गृहस्थ के सम्बन्ध में आमोद-प्रमोद रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता और भूमि के स्थान को मंगल की मेष राशि में
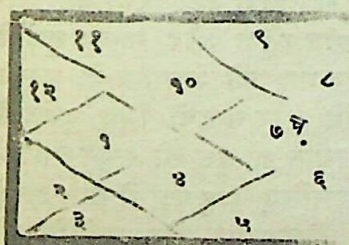
देख रहा है, इसलिए माता के पक्ष में और मकानादि भूमि के सम्बन्ध में सुख और मनोरञ्ज पावेगा।

यदि वृश्चिक का चन्द्र ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनीके मार्गमें कुछ कमजोरी रहेगी और स्त्री पक्ष के सम्बन्ध में सुख की कमी अनुभव होगी तथा रोजगार के साथ मनोयोग के द्वारा लाभ होता रहेगा और गृहस्थ के सम्बन्ध से कुछ मानसिक परेशानियाँ रहेंगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए विद्या बुद्धि की शक्ति पावेगा और सन्तान पक्ष में बुद्धि और उल्लास प्राप्त रहेगा।
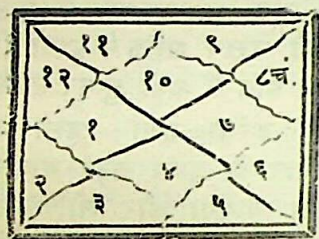
मकर लग्नमें ११ चन्द्र

नं० ९९५

यदि धन का चन्द्र बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से मनोयोग की कर्म शक्ति से सफलता पावेगा और स्त्री पक्ष के सुख सम्बन्ध में हानि और कमजोरी रहेगी तथा स्थानीय रोजगार के मार्ग में बड़ी परेशानियां और नुकसान रहेगा और गृहस्थ सुख के अन्दर मन को अशान्ति के कारण मिलेंगे और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी नरमाई से काम निकालेगा और मनोयोग की शक्ति से कुछ प्रभाव रहेगा।
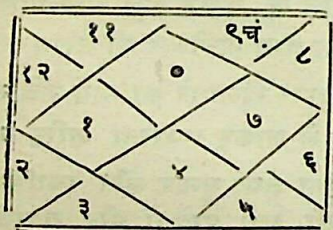
मकर लग्न में १२ चन्द्र

नं० ९९६

माता, भूमि तथा आमद स्थानपति—मंगल

यदि मकर का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थानमें उच्चका होकर

मकर लग्न में १ भौम
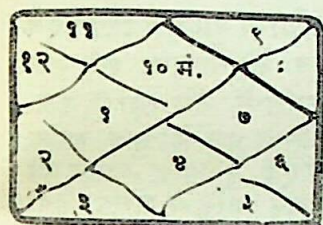
नं० ९९७

शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर सुन्दर और सुडौल कद प्राप्त करेगा तथा सुख पूर्वक विशेष लाभ की शक्ति देह के द्वारा प्राप्त होगी और देह में बड़ा प्रभाव रहेगा तथा चौथी दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता का उत्तम सुख प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्तिका विशेष लाभ पावेगा तथा घरेलू रहन-सहन के अन्दर सुख प्राप्ति के ऊँचे साधन पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिए स्त्री के सुख सम्बन्धमें कुछ कमी रहेगी और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी तथा आठवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिए आयु स्थान में सुख शक्ति पावेगा तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा तथा अपने अनेक प्रकार के लाभ और स्वार्थ सिद्धि के लिये तत्परता से काम करेगा।

यदि कुम्भ का मंगल—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ थोड़े से अरुचिकर मार्ग के द्वारा धन का अच्छा लाभ पावेगा तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ नीरसता के साथ सुख मिलेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का

मकर लग्न में २ भौम

नं० ९९८
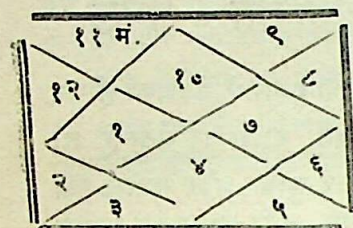
भी कार्य करता है, इसलिये माता के सुख संबंध में कमी रहेगी और भूमि मकानादि की शक्ति से लाभ रहेगा और धनकी वृद्धि करने के कारणों से घरेलू सुख शान्ति में विशेष कमी रहेगी और चौथी दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या के पक्ष में बुद्धि पावेगा और संतान पक्ष में सुख शक्ति मिलेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिए आयु में शक्ति रहेगी और पुरातत्व शक्ति का लाभ पावेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये भाग्य स्थान में वृद्धि पावेगा और धर्म का पालन करेगा किन्तु अपने आर्थिक लाभ का विशेष ध्यान रखेगा।

यदि मीन का मंगल—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान पर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिए पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि रहेगी और पुरुषार्थ कर्म के द्वारा आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा तथा पराक्रम के द्वारा ही घरेलू वातावरण तथा भूमि मकानादि का सुख प्राप्त करेगा और माता तथा भाई-बहिन की शक्ति का लाभ रहेगा और चौथी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए शत्रु पक्ष में लाभ और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा बड़ी हिम्मत शक्तिसे काम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिए भाग्य की वृद्धि पावेगा तथा धर्म का पालन करेगा और यश प्राप्त करेगा और आठवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को
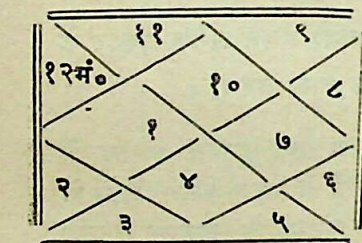
मकर लग्न में ३ भौम

नं० ९९९

सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ क्षणिक अरुचि के साथ पिता की शक्ति का लाभ पावेगा और राज-समाज कारबार के पक्ष में मान और उन्नति रहेगी।

यदि मेष का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो माता की महन् शक्ति का लाभ मिलेगा और भूमि मकानादि की शक्ति से बहुत लाभ और सुख प्राप्त रहेगा तथा आमदनी के मार्ग की शक्ति का लाभ घर बैठे मिलेगा और चौथी नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा तथा स्त्री के सुख सम्बन्धों में बड़ी कमी रहेगी और रोजगार के मार्गमें लाभ और सुख की कमी रहेगी और सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशिमें देख रहा है, इसलिए पिता की शक्ति का लाभ पावेगा और राज समाज में मान प्राप्त करेगा तथा बड़े स्थान के कार्य में सफलता पावेगा और आठवीं दृष्टिसे स्वयं अपनी वृश्चिक राशि लाभ स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति का लाभ पावेगा अर्थात् बँधी हुई मजबूत आमदनी का योग बड़ी सुगमता पूर्वक प्राप्त करता रहेगा।
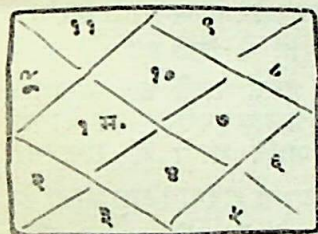
मकर लग्न में ४ भौम

नं० १०००

यदि वृषभ का मंगल--पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो विद्या की शक्ति का सुख लाभ पावेगा और बुद्धि एवं वाणी के द्वारा स्वार्थ की पूर्ति सुख पूर्वक करेगा संतान पक्ष में सुख शक्ति और लाभ प्राप्त करेगा तथा माता का लाभ मिलेगा और भूमि मकानादि का लाभ सुख रहेगा चौथी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्त्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है,

मकर लग्नमें ५ भौम
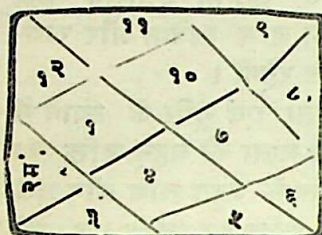
नं० १००१

इसलिए आयु के पक्ष में सुख शक्ति रहेगी और पुरातत्व स्थानकी शक्ति का लाभ रहेगा तथा जीवन की दिन-चर्या में आनन्द रहेगा और सातवीं दृष्टि से आमदनी के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिए आमदनी की शक्ति का मजबूत लाभ बुद्धि योग द्वारा प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सुख और लाभ प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का मंगल—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर गरम ग्रह शक्ति शाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु स्थान में विशेष प्रभाव रखेगा और झगड़े झंझट आदि मार्गों में सफलता और सुख प्राप्त करेगा किन्तु माता के सुख सम्बन्धों में कमी पावेगा और जन्म भूमि के मकानादि स्थान पक्षमें सुख की कमी रहेगी और आदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतोंके योग से सफ-लता और प्रभाव पावेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का कुछ पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान के गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिए खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थान के सम्बन्ध में सुख लाभ रहेगा और आठवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये देह में विशेष प्रभाव पावेगा तथा सुन्दरता युक्ति सुडौल कद रहेगा देह का सुख और लाभ प्राप्त रहेगा।
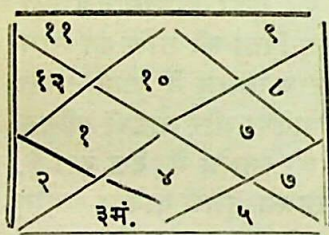
मकर लग्नमें ६ भौम

नं० १००२

यदि कर्क का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, तो स्त्री स्थान में घरेलू सुख शान्ति की बड़ी भारी कमी रहेगी तथा रोजगार के पक्ष में आमदनी की कमजोरी रहेगी और माता के सुख सम्बन्ध में कमी रहेगी तथा भूमि मकानादि के सुख की कमजोरी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए पिता-स्थान से लाभ और सुख प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा पावेगा तथा बड़े कारबार के मार्गमें सफलता रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिए देह में प्रभाव और गौरव प्राप्त रहेगा तथा देह की वृद्धि और सुख प्राप्ति का विशेष ध्यान रखेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिए धन की संग्रह शक्ति के सम्बन्ध में कुछ नीरसता युक्त शक्ति रहेगी कुटुम्ब का सुख रहेगा।

मकर लग्न में ७ भौम

११ ९
१२ १० ८
१ ७
२ ४मं. ६
३ ५

नं० १००३

यदि सिंह का मंगल—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्ध में बड़ी भारी कमी रहेगी तथा भूमि एवं मकानादि के सम्बन्ध में कुछ हानि रहेगी और आमदनी के पक्ष में कुछ परेशानी तथा आयु स्थान में सुख शक्ति रहेगी और पुरातत्व सम्बन्ध की शक्ति का लाभ पावेगा तथा चौथी दृष्टि से आमदनी के स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये परिश्रम और कठिनाई के योग से मजबूत आमदनी का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह शक्ति के सुख में कुछ

मकर लग्न में ८ भौम

नं० १००४

कमी के साथ सुख रहेगा और कुटुम्ब का सामान्य सुख रहेगा तथा आठवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का सुख योग रहेगा तथा पराक्रम शक्तिमें वृद्धि और हिम्मत रहेगी तथा घरेलू सुख थोड़ा रहेगा।
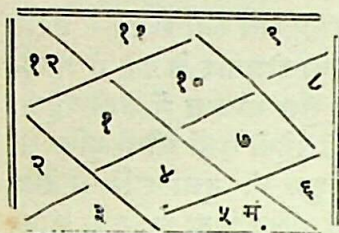
यदि कन्या का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से आमदनी का उत्तम मार्ग प्राप्त करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा धन का लाभ न्याय से करेगा और भाग्यवान् समझा जायेगा और चौथी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को मित्र गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ और सुख मिलेगा और कुदरती तौर से सफलता एवं यश मिलेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिनकी सुख शक्ति का लाभ रहेगा और पराक्रम स्थान की सफलता शक्ति से लाभ और सुख मिलेगा तथा उल्लास और हिम्मत शक्ति पर भरोसा रहेगा तथा आठवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति का विशेष सुख और लाभ भाग्य से प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की उत्तम शक्ति का लाभ पावेगा तथा घरेलू वातावरण में रहन-सहन और अमोद-प्रमोद के ढंग स्वतः भाग्य की शक्ति से प्राप्त करेगा।
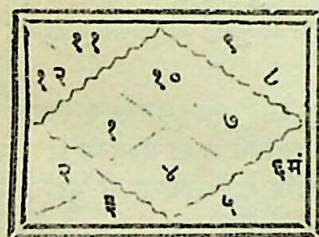
मकर लग्न में ९ भौम

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ ४ ६मं ३ ५

नं० १००५

मकर लग्न में १० भौम

नं० १००६
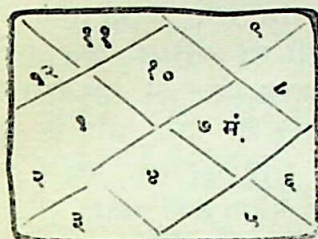
यदि तुला का मंगल — दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो दसम स्थान पर मंगल का बैठना अधिक श्रेष्ठ माना जाता है, इसलिये पिता स्थान कीशक्ति का विशेष लाभ पावेगा और राज-समाज के अन्दर मान प्रतिष्ठा और आमदनी का उत्तम मार्ग प्राप्त करेगा तथा कारबार के पक्ष में बड़ी शानदारी से उन्नति और लाभ पावेगा और चौथी उच्च दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए देह में विशेष प्रभाव एवं मान तथा सुख के साधन पावेगा तथा देह के कद में वृद्धि रहेगी तथा समाज में अपना व्यक्तित्व बड़प्पन रखेगा और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मेष राशि में माता एवं भूमि के स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये माता की सुख शक्ति का गौरव पावेगा और भूमि मकानादि की प्रतिष्ठा शक्ति का आनन्द रहेगा और आठवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में शक्ति और लाभ रहेगा तथा विद्या स्थान में वृद्धि तथा शक्ति एवं सुख और लाभ पावेगा तथा दिमाग के अन्दर हुकूमत का प्रभाव रहेगा।

मकर लग्न में ११ भौम
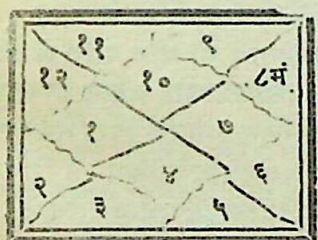
नं० १००७

यदि वृश्चिक का मंगल—ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के सम्बन्धमें बड़ी भारी शक्ति का मार्ग प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति का लाभ और सुख

विशेष पावेगा तथा माता की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा लाभ प्राप्ति के स्थान में बँधी हुई आमदनी का जरिया सुख पूर्वक रहेगा। और चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन की सग्रह शक्ति के सुख सम्बन्ध में थोड़ा सा असंतोष रहेगा और कुटुम्बके पक्ष में कुछ थोड़ी सी नीरसता के साथ सुख सम्बन्ध रहेगा। तथा सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या में शक्ति प्राप्त रहेगी और संतान पक्ष में सुख और लाभ पावेगा तथा आठवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रहेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ और सुख पावेगा निर्भय रहेगा।

यदि धन का मंगल— बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में हानि और कमी पावेगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति में दुर्बलता रहेगी और मातृ-भूमि से विछोह रहेगा तथा घरेलू सुख के साधनों की कमी रहेगी और स्थानीय लाभ प्राप्तिके मार्गमें कमजोरी रहेगी तथा खर्चा अधिक तायदाद में रहेगा किन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में आमदनी और सुख प्राप्तिके अच्छे साधन रहेंगे और खर्च का मार्ग कभी रुक नहीं सकेगा और चौथी मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का लाभ रहेगा और पराक्रम स्थानके द्वारा सफलता शक्ति पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें बड़ी दानाईसे प्रभाव रखेगा और झगड़ा झंझटों की परवाह नहीं करेगा और आठवीं नीच दृष्टि से स्त्री
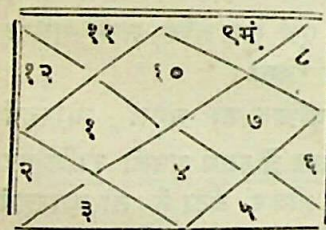
मकर लग्न में १२ भौम

नं० १००८

एवं रोजगार के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में हानि या सुख की कमी के कारण पावेगा और रोजगार में कुछ परेशानी रहेगी।

भाग्य, धर्म, शत्रु तथा विवेक स्थान पति बुध

मकर लग्न में १ बुध

नं० १००९
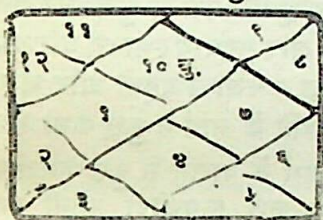
यदि मकर का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति मिलेगी तथा देह को मान सम्मान प्राप्त रहेगा और धर्म का पालन करेगा और शत्रु पक्षके मार्गमें विवेक शक्ति के योगसे प्रभाव पावेगा तथा अनेक प्रकारके झंझट और परेशानियोंसे बचाव पाने के लिए भाग्य का सुन्दर सहयोग स्वतः रहेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारणों से देह में कुछ रोग रहेगा तथा भाग्योन्नति के मार्गमें कुछ दिक्कते रहेंगी और सातवीं दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगारके स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री एवं रोजगार के मार्गमें शक्ति रहेगी।

मकर लग्न में २ बुध

नं० १०१०
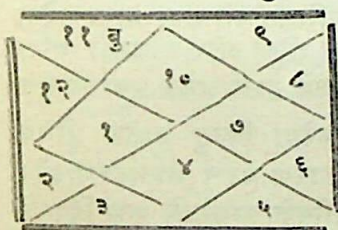
यदि कुम्भ का बुध दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की कुम्भ राशि पर बैठा है तो भाग्य और परिश्रम के योग से विवेक शक्ति के द्वारा धन की खूब वृद्धि करेगा तथा कुटुम्ब की योगशक्ति का फायदा उठावेगा और धनवान एवं भाग्यवान् समझा जायगा और इज्जत तथा मान प्राप्त करेगा और धर्म के मार्ग में स्वार्थ युक्ति से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष के कारण से कभी-कभी धन और भाग्य में कुछ परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति

रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और दिनचर्या में प्रभाव रहेगा।

मकर लग्न में ३ बुध
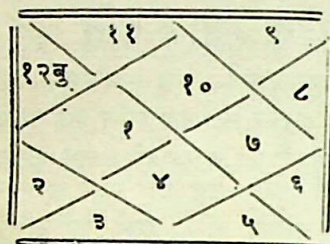
नं० १०११

यदि मीन का बुध—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई बहिनके पक्ष में सुख की कमी रहेगी और पुरुषार्थ स्थानमें बल बुद्धि की कुछ कमजोरी रहेगी और भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ कमी प्राप्त होगी और धर्म के पालन में कुछ कमजोरी रहेगी तथा शत्रु पक्षके सम्बन्ध में कुछ-कुछ कमजोरी रहेगी कुछ कमजोरी युक्त वातावरण के द्वारा भाग्य की शक्ति से सहारा प्राप्त करेगा और कुछ झगड़े झंझटों के पक्ष से परेशानी एवं कुछ दिक्कतें रहेंगी और सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वय अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पुरुषाथ और विवेक शक्तिके द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा तथा धर्म का यथाशक्ति पालन करने की चेष्टा रखेगा तथा कुछ भग्यवान् समझा जायेगा।

यदि मेषका बुध चौथे केन्द्र माता एवं भूमिके स्थानमें मित्र मंगलकी राशि पर बैठा है तो माताकी शक्तिका सौभाग्य प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि की सुख शाक्ति प्राप्त रहेगी और भाग्यकी शक्ति और विवेकके द्वारा अनेक प्रकारके सुख
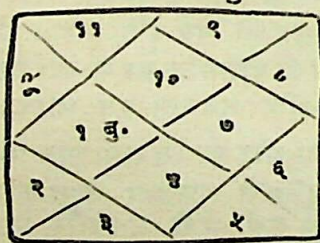
मकर लग्न में ४ बुध

नं० १०१२

प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होनेके दोषके कारण घरेलू वातावरण और सुख शान्तिके सम्बन्धमें कुछ दिक्कतें एवं रुकावटें मिलेंगी और सातवीं मित्र दृष्टिसे पिता एवं राज्यस्थान को शुक्रकी तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये पिताकी शक्ति का लाभ पावेगा तथा राजसमाजमें मान पावेगा और शत्रु पक्ष में भाग्यसे सफलता पावेगा।

यदि वृषभ का बुध—पांचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में विवेक शक्ति और परिश्रम तथा भाग्य के योग से बहुत भारी सफलता प्राप्त करेगा और कुछ थोड़ी सी परेशानी के साथ संतान पक्षमें उत्तम शक्ति पावेगा तथा बुद्धि विद्या के योग से भाग्य की उन्नति करेगा तथा कुछ चतुराई के साथ धर्म का पालन करेगा तथा शत्रु पक्ष के सम्बन्ध में उत्तम विवेक शक्ति के द्वारा सफलता और यश पावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और विवेक शक्ति के द्वारा आमदनी की अच्छी सफलता रहेगी।
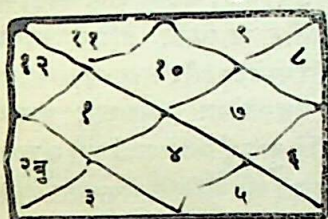
मकर लग्न में ५ बुध

नं० १०१३

यदि मिथुन का बुध—छठें शत्रु स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो शत्रु स्थान में भाग्य की शक्ति से एवं विवेक शक्ति से बड़ी सफलता प्राप्त करेगा किन्तु भाग्य की उन्नति के मार्ग में बड़ी दिक्कतें एवं कुछ झगड़े झंझटें रहेंगी और धर्म के मार्ग में कुछ गड़बड़ी रहेगी किन्तु कुछ रोगादिक झंझटों के मार्ग में दया, धर्म व परमार्थ रहेगा और प्रभाव की वृद्धि करने के सम्बन्ध में भाग्य की कुछ लाभ हानि का योग बनेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा
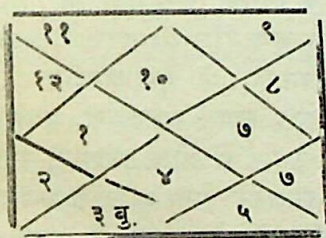
मकर लग्न में ६ बुध

नं० १०१४

खूब करेगा और बाहरी स्थानों में अच्छा सम्बन्ध बनेगा।

यदि कर्क का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति एवं विवेक युक्त परिश्रम के द्वारा रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री पक्षमें कुछ थोड़ी सी झंझट और भाग्यकी वृद्धिके कारण सुन्दरता पावेगा और धर्म का सामान्यतम पालन करेगा तथा शत्रु पक्ष के सम्बन्धमें कुछ दैनिक कार्य की कुशलता और भाग्य की शक्तिसे सफलता पावेगा और षष्ठेशहोनेके कारण कुछदिक्कतों के योगसे भाग्य वृद्धिके साधन पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए देह में मान और प्रभाव तथा कुछ रोग पावेगा।
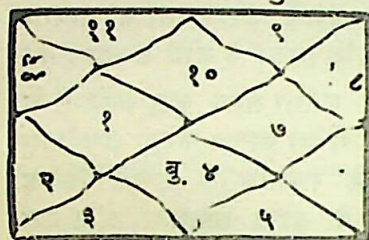
मकर लग्न में ७ बुध

११ ९ १२ १० ८ १ ७ २ बु. ४ ६ ३ ५

नं० १०१५

यदि सिंह का बुध—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा और भाग्य की उन्नति के मार्ग में बड़ी-बड़ी दिक्कतें रहेंगी और सुयशकी विशेष कमी प्राप्त रहेगी और षष्ठेश होनेके दोष के कारण शत्रु पक्ष की तरफ से या कुछ रोग की तरफ से जीवन की दिनचर्या में कुछ अशांति रहेगी एवं कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग से भाग्य स्थान में थोड़ी परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और कुछ झंझटों के योग से धन की वृद्धि रहेगी तथा कुटुम्ब स्थान में शक्ति मिलेगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा।
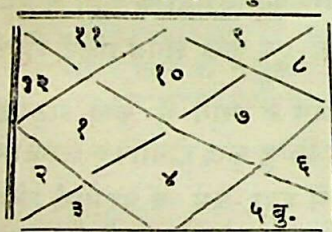
मकर लग्न में ८ बुध

नं० १०१६

मकर लग्न में ९ बुध

नं० १०१७
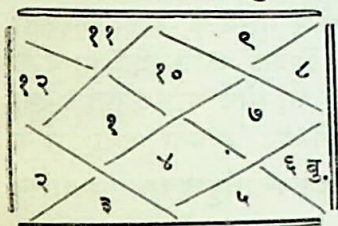
यदि कन्या का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री एवं उच्च का होकर बैठा है तो भाग्य की महान् उन्नति करेगा तथा बाहरी धर्म के दिखावे का विशेष पालन करेगा और विवेक शक्ति की पेचिदी चालसे उत्तम रूप के द्वारा भाग्य की सफलता और शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा तथा बड़ा भारी भाग्यवान् समझा जायगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ पावेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि के द्वारा भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख में विरोध या कमी पावेगा और भाग्य शक्ति के मुकाबले में पुरुषार्थ स्थान के महत्व को छोटा समझेगा तथा पराक्रम में कुछ दुर्बलता रहेगी।

मकर लग्न में १० बुध
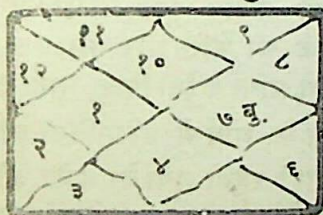
नं० १०१८

यदि तुला का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की शक्ति का अच्छा फायदा उठावेगा तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति का प्रभाव योग प्राप्त करेगा और भाग्य तथा परिश्रम की शक्ति से कारबार में बड़ी सफलता मिलेगी और बड़ा भाग्यवान् माना जायगा तथा शत्रु पक्ष के मार्ग में भाग्य और विवेक शक्ति के ऊँचे कर्मबल से स्वतः सफलता प्राप्त रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को मंगल की मेष राशिमें देख रहा है, इसलिये माता और भूमि की शक्ति का लाभ पावेगा तथा षष्ठेश होने के दोष के कारण से उन्नति के मार्गों में कुछ दिक्कतें रहेंगी।

यदि वृश्चिक का बुध—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष के मार्ग में भाग्य के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा और कुछ परिश्रम तथा विवेक शक्ति एवं भाग्य के योग से आमदनी के अन्दर उत्तम शक्ति का योग लाभ प्राप्त करेगा और लाभ के मार्ग से बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा तथा धर्म के मार्गमें कुछ स्वार्थयुक्त धर्म का पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या के अन्दर विवेक शक्ति के द्वारा बड़ी सफलता पावेगा और सन्तान पक्षमें सफलता मिलेगी किन्तु षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी रहेगी।
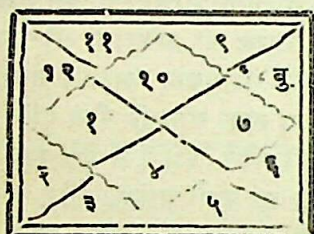
मकर लग्न में ११ बुध

नं० १०१९

यदि धन का बुध—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्चा प्रभाव युक्त अच्छा रहेगा तथा बाहरी स्थानों में परिश्रमी विवेक की शक्ति और भाग्यबल से सफलता प्राप्त करेगा किन्तु भाग्य की उन्नति के मार्ग में परेशानियाँ और कमजोरी रहेगी तथा देर अबेर और दिक्कतोंके साथ भाग्यकी शक्ति को प्राप्त करेगा तथा षष्ठेश होने के दोष कारण से बरक्कत और यश की कमी रहेगी और सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मिथुन राशि में शत्रु स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानियों के द्वार भाग्यबल की शक्ति से मतलब निकालेगा।
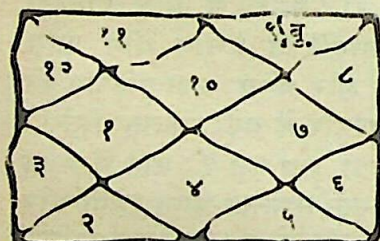
मकर लग्न में १२ बुध

नं० १०२०

भाई, पराक्रम, खर्च तथा बाहरी स्थानपति--गुरु

यदि मकर का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीचका होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो देह में कमजोरी रहेगी तथा खर्च की तरफ से कुछ परेशानी अनुभव होगी और बाहरी स्थानों की तरफ से सम्बन्ध कमजोर रहेंगे तथा भाई बहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी और कष्ट के कारण मिलेंगे तथा पुरुषार्थ और हिम्मत शक्ति के अन्दर कमजोरी का ढंग बनता रहेगा और सातवीं उच्च

मकर लग्न में १ गुरु

नं० १०२१

दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्षमें सुन्दरता और शक्ति प्राप्त रहेगी तथा रोजगार के मार्ग में परिश्रम से अच्छी उन्नति और प्रभाव प्राप्त करेगा और पाँचवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या स्थान में कुछ कमजोरी के साथ-साथ शक्ति भी प्राप्त करेगा और संतान पक्षमे कुछ दुख रहेगा और नवमी दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि मे देख रहा है, इस-लिये भाग्य और धर्म के मार्गमे कुछ उतार चढ़ाव चलता रहेगा।

यदि कुम्भ का गुरु—द्वितीय धन और कुटुम्ब के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष कारण से धन के कोष स्थान में कमजोरी और हानि के कारण पैदा करेगा किन्तु धन की वृद्धि करने के लिए पुरुषार्थ और बाहरी स्थानों के योग से विशेष प्रयत्नशील रहेगा और खर्च के मार्गमें बड़ी रोक थाम करने पर भी खर्चा अधिक रहेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी तथा भाई बहिन के पक्ष में सुख सम्बन्ध की कमी रहेगी तथा पुरुषार्थ शक्ति में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं

मकर लग्न में २ गुरु

नं० १०२२
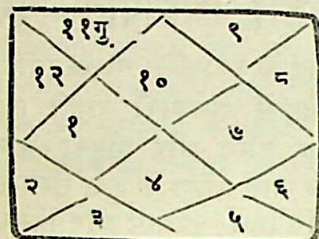
पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु एवं पुरातत्व संबंध में कुछ शक्ति रहेगी और पाँचवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ दानाई और नरम रीति से काम करेगा तथा नवमी दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ कमजोरी पावेगा, राज-समाज में कुछ मान पावेगा तथा कारबार में कुछ शक्ति रहेगी।

यदि मीन का गुरु – तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई-बहन की शक्ति एवं पुरुषार्थ शक्ति उत्तम रूप से प्राप्त करेगा और और बाहरी स्थानों का उत्तम रूपसे सम्बन्ध पावेगा और पाँचवीं उच्च दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र चन्द्र की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये स्त्री पक्ष में सुन्दरता युक्त शक्ति पावेगा तथा रोजगार के मार्ग में उन्नति करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ उतार-चढ़ाव रहेगा और धर्म का थोड़ा पालन करेगा तथा नवमी मित्र दृष्टि से आमद के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये लाभ की शक्ति अच्छी रहेगी।
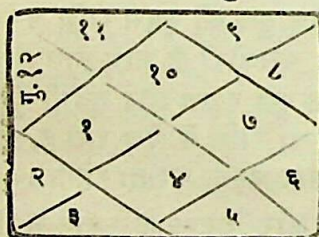
मकर लग्न में ३ गुरु

नं० १०२३

यदि मेष का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष कारण से माता

के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रखेगा और भूमि मकानादि की शक्तिमें कुछ कमजोरी रहेगी तथा भाई बहिनके सम्बन्धोंमें कुछत्रुटि युक्तशक्ति रहेगी और पराक्रम शक्ति का कुछ सुख रहेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से अयु एवं पुरातत्व स्थानको सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में कुछ शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व शक्ति में कुछ उन्नति और अवनति के कारण प्राप्त रहेंगे और सातवीं दृष्टि से पिता

मकर लग्न में ४ गुरु

नं० १०२४

एवं राज्य स्थानको सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये पिता के सुख सम्बन्धमें कुछ त्रुटि युक्त शक्ति रहेगी और राज-समाजमें कुछ मान रहेगा और कारबारमें कुछशक्ति रहेगी और नवमी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थानको स्वय अपनी धनराशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक चलता रहेगा और बाहरी स्थानों की शक्तिका लाभ घर बैठे सुख पूर्वक प्राप्त होता रहेगा।
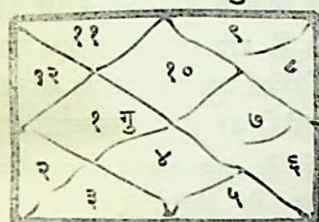
यदि वृषभ का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में शक्ति मिलेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष कारणों से विद्या में कुछ कमजोरी रहेगी और संतान पक्ष में कुछ हानि लाभ का मिश्रित योग प्राप्त करेगा तथा बुद्धि योग द्वारा खर्च की शक्तिका संचालन करेगा तथा

मकर लग्न में ५ गुरु
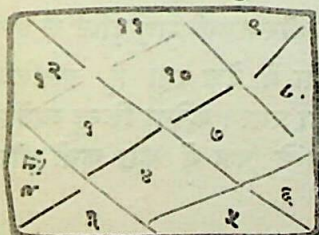
नं० १०२५

बाहरी स्थान-सम्बन्धोंका अच्छाज्ञान रहेगा और भाई-बहिनकी साधारण शक्ति रहेगी तथा पुरुषार्थ कर्म की सफलता को बुद्धि योग द्वारा पावेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाग्यएवं धर्म स्थानको बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की कुछ वृद्धि करेगा तथा धर्मका थोड़ा पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान

को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा आमदनी की वृद्धि करेगा और नवमी नीच दृष्टि से देह के स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देखर हा है, इसलिये देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य के अन्दर कमी एवं कुछ परेशानी के कारण प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का गुरु—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पराक्रम और खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष में प्रभाव रख सकेगा और भाई-बहिन के पक्ष में कुछ विरोध एवं कुछ कमीके कारण पावेगा तथा पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी या कुछ परतन्त्रता का योग बनेगा और झगड़े-झंझटों के मार्ग से कुछ थोड़ी शक्ति और हिम्मत पावेगा तथा पाँचवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थानमें कुछ शक्ति और हानि प्राप्त रहेगी तथा राज-समाज में कुछ कमी और कुछ मान पावेगा तथा सातवीं दृष्टि से खर्च स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है-इसलिये खर्चा खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों की कुछ सम्बन्ध शक्ति पावेगा और नवमी शत्रु दृष्टि से धन
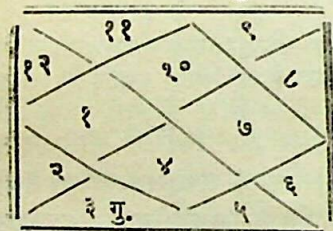
मकर लग्न में ६ गुरु

नं० १०२६

एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन की और कुटुम्ब की वृद्धि करनेका बड़ा प्रयत्न करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से धन और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कमी और कष्ट पावेगा।

यदि कर्क का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगारके स्थानमें मित्र चन्द्रमा की राशि पर उच्च का होकर बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष

मकर लग्न में ७ गुरु

नं० १०२७

शक्ति और सुन्दरता पावेगा और रोजगार के मार्ग में अच्छी सफलता शक्ति रहेगी किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से स्त्री तथा रोजगार के पक्षमें कुछ हानि या कुछ त्रुटि भी रहेगी और खर्च का विशेष संचालन गृहस्थमें रहेगा और बाहरी स्थानों का अच्छा संपर्क रहेगा तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में अच्छा लाभ पावेगा और सातवीं नीच दृष्टि से देह स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य के अन्दर कुछ त्रुटि रहेगी और हृदय में कुछ परेशानी अनुभव रहेगी तथा नवीं दृष्टि से पराक्रम एवं भाई के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति रहेगी और पराक्रम स्थान से विशेष सफलता और सहयोग तथा हिम्मत प्राप्त होगी।
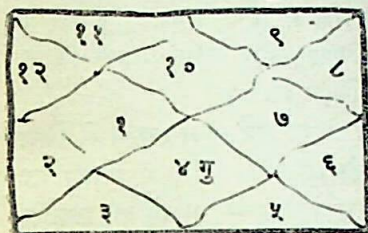
यदि सिंह का गुरु— आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र सूर्यकी राशिपर बैठा है तो भाई बहन के पक्षमें कुछ कमजोरी रहेगी और पुरातत्व सम्बन्धमें जीवनको सहायक होने वाली शक्तिकी कुछ हानि व लाभ पावेगा तथा खर्चके मार्गमें कुछ परेशानी रहेगी किन्तु पाँचवीं

मकर लग्न में ८ गुरु
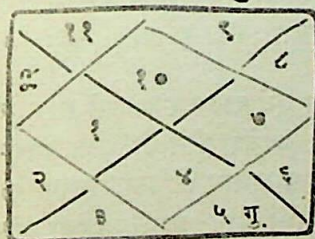
नं० १०२८

दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा परिश्रमके योग से सदैव चलता रहेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे कुछ शक्ति मिलेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थानको शनिकी कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुटुम्बके

पक्षमें कुछ कमी और नीरसता रहेगी तथा नवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमिके स्थानको मंगलकी मेषराशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कुछ त्रुटियुक्त सुख मिलेगा और भूमि मकानादि के सम्बन्ध में कुछ हानि व लाभ का योग मिलेगा।

यदि कन्या का गुरु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो खर्च संचालन की शक्ति में भाग्य का सहारा रहेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से भाग्य की उन्नति में कुछ कमी रहेगी और धर्म के पालन में भी कुछ कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध का कुछ सहारा स्वतः प्राप्त होता रहेगा तथा पाँचवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ परेशानी तथा सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और आत्मामें कुछ आशान्ति रहेगी और सातवीं दृष्टिसे पराक्रम एवं भाई बहिनके स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का कुछ सहारा प्राप्त करेगा और पराक्रम की सफलता शक्ति पावेगा अर्थात् पराक्रम के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा और कुछ भाग्यवान् समझा जायगा तथा नवमीं सामान्य शत्रु दृष्टिसे विद्या तथा सन्तान स्थान को शुक्की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या तथा बुद्धि एवं सन्तान पक्षसे कुछ भाग्योन्नति का साधन प्राप्त करेगा और सज्जनता धारण करेगा।
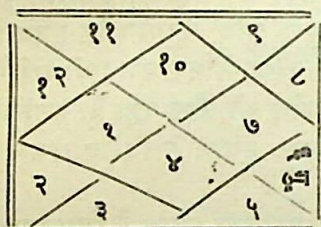
मकर लग्न में ६ गुरु

नं० १०२९

यदि तुला का गुरु—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष कारण से पिता पक्ष में कुछ कमी रहेगी और कारबार में कुछ असफलता मिलेगी तथा राज-समाज के मार्ग में थोड़ा मान प्राप्त रहेगा और भाई-बहिन की कुछ शक्ति मिलेगी तथा पुरुषार्थ कर्म के द्वारा कुछ

शक्ति और कुछ प्रभाव पावेगा और खर्च का कार्य बड़ी शानदारी से करेगा तथा बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध पावेगा और पाँचवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन के कोष में बुद्धि का प्रयत्न करने पर भी कुछ कमी और असंतोष प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में भी कुछ परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को मेष राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कुछ त्रुटियुक्त शक्ति पावेगा और भूमि मकानादि के पक्ष में खर्च की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा और नवमीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बड़ी दानाई के रूप से शत्रु पक्ष में प्रभाव पायेगा।
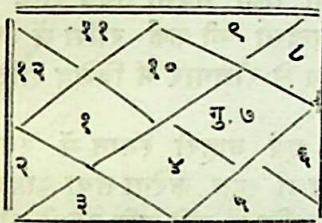
मकर लग्न में १० गुरु

नं० १०३०

यदि वृश्चिक का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान में प्राप्त सभी ग्रह लाभदायक होते हैं इसलिये आमदनी के मार्ग में शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से स्थानीय आमदनी में कुछ त्रुटि रहेगी और बाहरी सम्बन्धों से उत्तम लाभ का योग प्राप्त करेगा तथा खर्चा भी शानदार रहेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में को देख रहा है, इसलिए व्ययेश होने के कारण थोड़ा त्रुटि सहित भाई-बहिन की शक्ति पावेगा और पुरुषार्थ कर्म की सफलता शक्ति पावेगा तथा खर्च के योगसे उन्नति करेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ
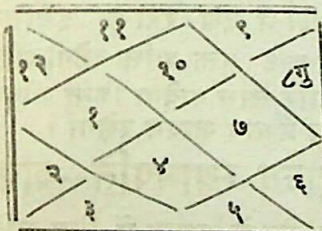
मकर लग्न में ११ गुरु

नं० १०३१

असन्तोष युक्त शक्ति पावेगा और विद्या बुद्धि व वाणी के अन्दर कुछ त्रुटि युक्त शक्ति और प्रभाव रहेगा तथा नवमीं उच्च दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये बाहरी सम्बन्ध के योग से रोजगार में विशेष शक्ति और स्त्री में प्रभाव पावेगा।

यदि धन का गुरु--बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा बहुत करेगा तथा बाहरी स्थानों में अपनी पुरुषार्थ की सफलता शक्ति में बड़ी त्रुटि रहेगी और पुरुषार्थ शक्ति में कुछ कमजोरी और असफलता रहेगी तथा कभी २ हिम्मत टूटती रहेगी और पाँचवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को मंगल की राशि में देख रहा है, इसलिये माता का थोड़ा सुख प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति का कुछ त्रुटि युक्त सुख सम्बन्ध प्राप्त करेगा और खर्च की ताकत से सुख पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें बड़ी युक्ति से काम निकालेगा और प्रभाव रखेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु के और जीवन के पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति रहेगी और पुरातत्व शक्ति के स्थान में कुछ हानि और लाभ पावेगा किन्तु जीवन की दिनचर्या में खर्च की शक्ति के कारण प्रभाव कायम रखेगा।
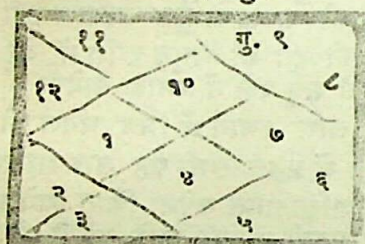
मकर लग्नमें १२ गुरु

११　गु. ९　१२　१०　८　१　७　४　६　२　३　५

नं० १०३२

विद्या, संतान, पिता तथा राज्य स्थानपति--शुक्र

यदि मकर का शुक्र प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह के सम्बन्ध में सुन्दरता और मान तथा प्रभाव प्राप्त करेगा और पिता स्थान को शक्ति का सुन्दर सहयोग

मकर लग्न में १ शुक्र

नं० १०३३

पायेगा तथा राज समाज में इज्जत और उन्नति रहेगी तथा कारबारके मार्ग में चतुराई और बुद्धि के योग से सफलता मिलेगी तथा विद्या को उत्तम रूप से ग्रहण करेगा और सन्तान पक्ष की सुन्दर शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में सुन्दरता और योग्यता की शक्ति पावेगा तथा रोजगार के पक्ष में बुद्धि की विशेष शक्ति के द्वारा उत्तम सफलता मिलेगी तथा बड़ा कार्य कुशल बनेगा।

यदि कुम्भ का शुक्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो नगद धन की विशेष संग्रह शक्ति रहेगी और कुटुम्ब की शक्ति का विशेष गौरव पावेगा तथा पिता की शक्ति से बहुत उन्नति होगी और राज-समाज में इज्जत मान प्राप्त करेगा तथा बुद्धि विद्या की कीमती शक्ति प्राप्त होगी इसलिये बुद्धि योग के व्यापार कर्म से विशेष सफलता और धन प्राप्त करेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का भी कार्य करता है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ दिक्कत रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु तथा दिनचर्या में कुछ नीरसता रहेगी और पुरातत्व का थोड़ा सा लाभ मिलेगा।
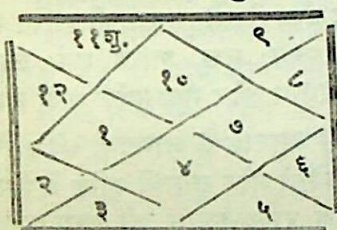
मकर लग्न में २ शुक्र

नं० १०३४

यदि मीन का शुक्र—तीसरे भाई और पराक्रम स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो पराक्रम स्थान में

विशेष शक्ति प्राप्त करेग तथा विद्या और संतान पक्ष की महत्व-दायक शक्ति पावेगा और पिता-स्थान की शक्ति का खूबी के साथ संचालन करेगा तथा राज-समाज में प्रभाव और मान पावेगा तथा बड़े काम को पूरा करने की विशेष हिम्मत शक्ति रखेगा तथा भाई-बहिन के सम्बन्ध में कुछ नीरसतायुक्त शक्ति का योग प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाग्य तथा धर्म स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की कुछ कमजोरी पावेगा और धर्म के पालन में भी कुछ कमजोरी रहेगी तथा बरक्कत और यश की प्राप्ति में कमी रहेगी।
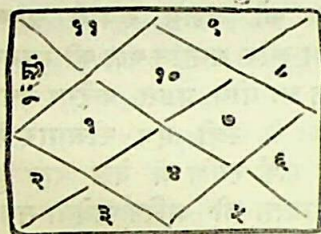
मकर लग्न में ३ शुक्र

नं० १०३५

यदि मेष का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माता की शक्ति का लाभ पावेगा और भूमि मकानादि की सुख शक्ति एवं लाभ प्राप्त रहेगा और सुख पूर्वक बुद्धि योग की चतुराई से आमदनी की शक्ति पावेगा और सातवीं दृष्टि से पिता एव राज्य-स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा तथा राज समाज में मान पावेगा और विद्या की शक्ति और चतुराई के कर्म से उन्नति करेगा और संतान पक्ष की सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण में सुख और वैभव पावेगा और नीति एवं शान्ति युक्त योग्यता की बातों से प्रभाव पावेगा।
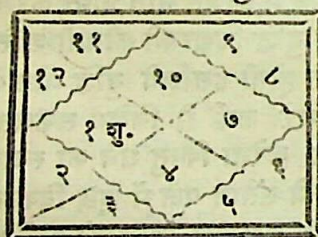
मकर लग्न में ४ शुक्र

नं० १०३६

यदि वृषभ का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो विद्या की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष में महानता पावेगा तथा बुद्धि और वाणी की शक्ति एवं चतुराई के योग से उन्नति और मान तथा प्रभाव प्राप्त करेगा और पिता की शक्ति का योग लाभ पावेगा तथा राज समाज में मान पावेगा और हुकूमत या कानून की दृष्टि से बातें करेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के कर्म योग से आमदनी की शक्ति का सुन्दर लाभ पावेगा तथा उन्नति के लिये बड़ा विचार युक्त रहेगा।
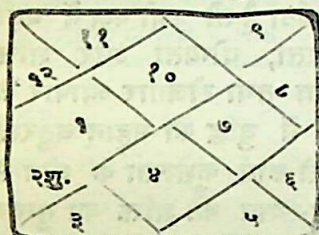
मकर लग्न में ५ शुक्र

नं० १०३७

यदि मिथुन का शुक्र- छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता के पक्ष से कुछ मतभेद युक्त शक्ति रहेगी तथा संतान पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी तथा विद्या की शक्ति में कुछ कमी रहेगी और उन्नति प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी पेचीदी चतुराइयों के योग से तथा परिश्रम से काम करेगा और राज-समाज में मान सम्मान की कुछ कमी रहेगी तथा गहरी चतुराई के योग से शत्रु पक्ष में प्रभाव कायम रखेगा तथा दिमाग में कुछ परेशानी रहेगी और सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सामान्य तथा ठीक रहेगा।
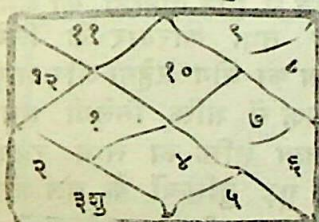
मकर लग्न में ६ शुक्र

नं० १०३८

मकर लग्न में ७ शुक्र

नं० १०३९
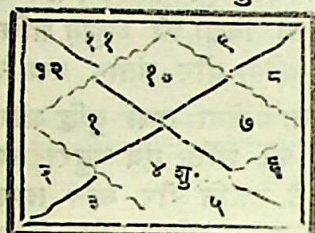
यदि कर्क का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में बड़ी सुन्दरता, योग्यता और शक्ति पावेगा तथा रोजगार व्यापार के मार्ग में बुद्धि की महान् चतुराई और बड़ी भारी कार्य कुशलता के योग से विशेष सफलता प्राप्त करेगा और पिता-स्थान की शक्ति का सुन्दर सहयोग मिलेगा तथा विद्या की योग्यता शक्ति से गृहस्थ का उत्तम आनन्द पावेगा और संतान पक्ष में सहायक सुख शक्ति पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये देह में सुन्दरता और मान पावेगा तथा राज-समाज के पक्ष से इज्जत और उन्नति एवं गौरव पावेगा।

यदि सिंह का शुक्र—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में सूर्य की राशि पर बैठा है तो पिता-स्थान की शक्ति का कष्टप्रद योग पावेगा और संतान पक्ष से भी दुःख अनुभव करेगा तथा विद्या स्थान की कुछ कमजोर रहेगी और राज-समाज में मान प्रतिष्ठा की कमी होगी तथा कारबार के लिये विदेश का योग रहेगा और आयु के पक्ष में शक्ति मिलेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा तथा गूढ़ युक्तियों के बल और परिश्रम से उन्नति का मार्ग बनावेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन की कुछ वृद्धि कर सकेगा और कुटुम्ब की शक्ति का योग प्राप्त करेगा।
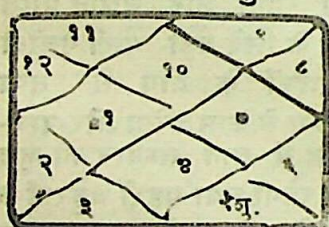
मकर लग्न में ८ शुक्र

नं० १०४०

यदि कन्या का शुक्र नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशिपर बैठा है तो भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी तथा धर्म का पालन ठीक रूप से नहीं हो सकेगा और पिता की तरफ से अधूरा सुख रहेगा तथा विद्या के पक्ष में थोड़ी कमी के साथ चतुराई द्वारा सफलता रहेगी और संतान पक्ष में कुछ दुःख सुख के योग से शक्ति मिलेगी तथा राज-समाज में सामान्य रूप से मान प्राप्त होगा और कारबार के पक्ष में कुछ कमजोरी के साथ सहरा मिलेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की विशेष शक्ति रहेगी और पुरुषार्थ कर्म एवं हिम्मत की शक्ति से सफलता पावेगा।
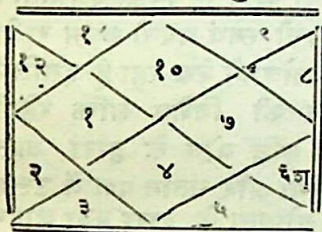
मकर लग्नमें ९ शुक्र

नं० १०४१

यदि तुला का शुक्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो राज-समाज में बड़ा भारी प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा बुद्धि और चतुराई से उन्नति के विशेष कारण मिलेंगे और राजकीय विद्या की उत्तम शक्ति मिलेगी तथा वाणी के द्वारा न्याय और हुकूमत की बातें करेगा तथा पिता स्थान की महत्वदायक शक्ति मिलेगी और संतान पक्ष में बड़ा भारी गौरव रहेगा तथा सातवीं दृष्टि में माता एवं भूमि स्थान को देख रहा है, इसलिये माता की शक्ति मिलेगी तथा भूमि मकानादि की शक्ति का सुख रहेगा और घरेलू वातावरण में बड़ा आनन्द और वैभव प्राप्त रहेगा।
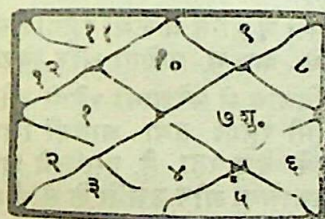
मकर लग्न में १० शुक्र

नं० १०४२

यदि वृश्चिक का शुक्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के स्थान में विशेष शक्ति का लाभ पावेगा तथा महान् चतुराई के उत्तम कर्म में बड़ी सफलता मिलेगी और राज-समाज में मान और

मकर लग्नमें ११ शुक्र

नं० १०४३
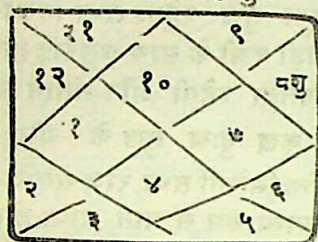
और लाभ प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थानको स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये विद्या की विशेष शक्ति रहेगी तथा बुद्धि योग के द्वारा बहुत धन पैदा करेगा और संतान पक्ष में उत्तम शक्ति का लाभ रहेगा तथा वाणी की योग्यता के द्वारा बड़ा आदर और मान तथा हुकूमत एवं प्रभाव और लाभ की शक्ति रहेगी।

मकर लग्नमें १२ शुक्र

नं० १०४४
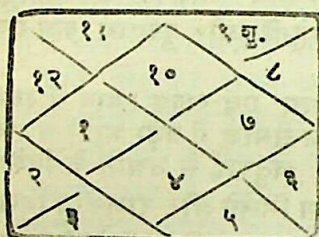
यदि धन का शुक्र बारहवें खर्च स्थान में एवं बाहरी स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की धन राशिपर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों से उत्तम सम्बन्ध पावेगा किन्तु व्यय स्थान में बैठने के दोष कारण से पिता के पक्ष में हानि व कमी रहेगी तथा संतान पक्ष में कष्ट और परेशानी के कारण पावेगा और विद्या स्थान में बड़ी कमजोरी रहेगी तथा दिमाग में परेशानी रहेगी और राज-समाज में मान प्रतिष्ठा की कमी रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ी चतुराई के योग से काम निकालेगा और उन्नति के मार्ग में विलम्ब से सफलता मिलेगी।

धन, कुटुम्ब तथा देह स्थानपति - शनि

यदि मकर का शनि - प्रथम केन्द्र देह के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो देह में सुन्दरता और इज्जत प्राप्त करेगा तथा

धन और जन का सुन्दर योग पावेगा और कुटुम्ब का सहारा मिलेगा तथा देह में स्वाभिमान प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से भाई-बहिन एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन के पक्ष में कुछ नीरसता पावेगा और पराक्रम स्थान में कुछ शक्ति पावेगा तथा हिम्मत से काम करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता युक्त रूप से शक्ति मिलेगी और रोजगार के मार्ग में उन्नति करने के लिये बराबर ध्यान रखेगा तथा दसवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति से उन्नति पावेगा तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा रहेगी और कारबार के मार्ग में उन्नति करेगा तथा धन संग्रह करेगा और धनवान् माना जायगा।
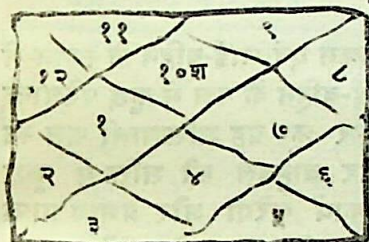
मकर लग्न में १ शनि

नं० १०४५

यदि कुम्भ का शनि दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति का स्थिर योग प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की शक्ति का लाभ पावेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य करता है, इसलिये देह के सुख सम्बन्ध और शान्ति में कमी रहेगी तथा तीसरी नीच दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख में कमी और कुछ परेशानी के कारण पावेगा तथा भूमि और मकानादि के सुख सम्बन्ध में कमजोरी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में येख रहा है, इसलिये पुरातत्व शक्ति में कुछ नीरसता रहेगी और आयु तथा जीवन की
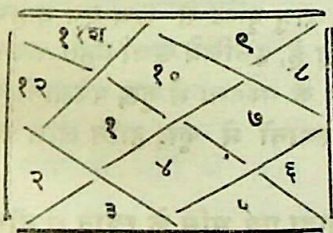
मकर लग्न में २ शनि

नं० १०४६

दिनचर्या में कुछ परेशानी सी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल का वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनीके मार्ग में कुछ कठिनाई के योग से विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और धन की वृद्धि करने के लिये महान् साधना करेगा और बड़ी इज्जत पावेगा तथा स्वार्थ युक्त रहेगा।

यदि मीन का शनि—तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहिन के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के पक्ष में कुछ परेशानी और शक्ति रहेगी और तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है, इसलिये देह और बाहुबल की शक्ति में वृद्धि रहेगी तथा हिम्मत के द्वारा बहुत कार्य करेगा और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति के द्वारा धन की शक्ति पावेगा और कुटुम्ब की शक्ति रहेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये सन्तान की शक्ति मिलेगी और विद्या स्थान में बहुत उन्नति एवं सफलता पावेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की वृद्धि करेगा और धर्मके पालन का ध्यान रखेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत करगा तथा खर्च के मार्ग में एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानी के साथ शक्ति पावेगा और बाहर के स्थानों में कुछ हानि लाभ का योग प्राप्त करेगा।
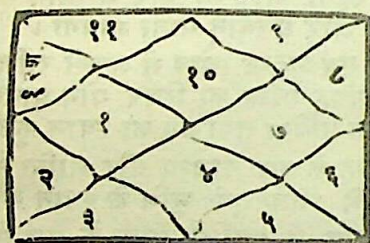
मकर लग्न में शनि

११ ९ १० ८ १ ७ २ ४ ६ ३ ५

नं १०४७

यदि मेष का शनि चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माता के पक्ष में कुछ

त्रुटि रहेगी और भूमि मकानादि के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी अनुभव होगी तथा देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य में कुछ न्यूनता रहेगी और सम्पत्ति की कुछ कमी के कारण से परेशानी होगी तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से शत्रु

मकर लग्न में ४ शनि
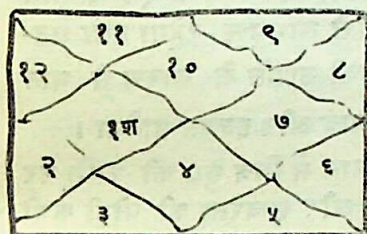
नं० १०४८

स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा और झगड़े झंझटों में लाभ रहेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति की उन्नति रहेगी और राजसमाज में मान प्रतिष्ठा रहेगी तथा दसवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में कुछ सुन्दरता रहेगी तथा आत्मबल के योग पावेगा और धन के पक्ष में शक्ति संग्रह करने का बड़ा भारी ध्यान रखेगा।

यदि वृषभ का शनि— पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में बड़ी शक्ति रहेगी और बुद्धि तथा वाणी के द्वारा बड़ी कीमती बातें कहेगा तथा संतान पक्ष में विशेष शक्ति पावेगा और देह के अन्दर सुन्दरता और योग्यता को प्राप्त करेगा तथा स्वाभिमानी बिचारवान् तथा स्वार्थ युक्त रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता युक्त भावना होते हुए भी विशेष आशक्ति रहेगी और रोजगार के मार्ग में कुछ त्रुटियुक्त शक्ति रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से आमदनी के स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के पक्ष में कुछ परेशानी का अनुभव

मकर लग्न में ५ शनि
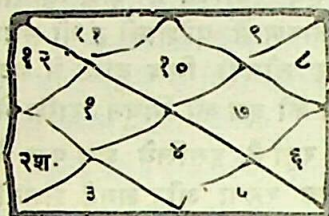
नं० १०४९

करके लाभ पावेगा और दसवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को अपनी कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धियोग द्वारा धन की वृद्धि करेगा और कुटुम्ब एवं सन्तान पक्ष से लाभयुक्त रहेगा तथा धन-जनकी उन्नति के कारण से मान प्रभाव और इज्जत पावेगा।

यदि मिथुन का शनि—छठें शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के पक्ष में कुछ स्वास्थ्य और सुन्दरता की थोड़ी कमी रहेगी और धन की संग्रह शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी रहेगी और कुटुम्ब की शक्ति में कुछ विरोध रहेगा तथा देह से कुछ परिश्रम करना पड़ेगा किन्तु छठे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है, इसलिये देह के कार्य से प्रभाव की शक्ति और इज्जत प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्ष में विजय और सफलता पावेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से

मकर लग्न में ६ शनि

नं० १०५०
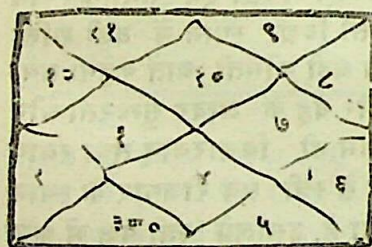
आयु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में कुछ नीरसता रहेगी और पुरातत्व का थोड़ा लाभ रहेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के पक्ष में कुछ थोड़ी सी परेशानी से अधिक खर्च होगा तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध रखेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिए भाई बहिन के पक्ष में

कुछ वैमनस्य या कुछ कमी रहेगी और पुरुषार्थ के पक्ष में विशेष उद्यमी बनेगा ।

यदि कर्क का शनि—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो कुछ मतभेद के सहित स्त्री पक्ष में आत्मीयता एवं शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में कुछ परिश्रम के सहित उन्नति पावेगा और धन पैदा करेगा तथा कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ शक्ति मिलेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा और धर्म का कुछ ध्यान रखेगा तथा सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और स्वाभिमान प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के सम्बन्ध से तथा रोजगार के पक्ष से मान-सम्मान और प्रभाव इत्यादि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा दसवीं नीच दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों की हानि और कमी रहेगी तथा भूमि मकानादि की शक्ति में बड़ी कमजोरी रहेगी और मातृ-भूमि में कुछ अशान्ति रहेगी ।

मकर लग्न में ७शनि

नं० १०५१

यदि सिंह का शनि—आठवें मृत्यु एवं आयु स्थान में तथा पुरातत्व स्थान में शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में बड़ी परेशानी रहेगी और सुन्दरता तथा स्वास्थ्य में कमजोरी रहेगी और जन-धन के सम्बन्धों से भी परेशानी बनेगी किन्तु आठवें स्थान पर शनि आयु की वृद्धि का द्योतक है, इसलिये आयु में शक्ति प्राप्त होगी और पुरातत्व शक्ति का कुछ लाभ मिलेगा

मकर लग्न में ८ शनि

नं० १०५२
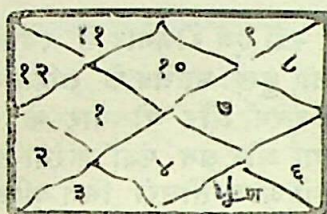
तथा तीसरी उच्च दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष में शक्ति मिलेगी तथा राज-समाज में कुछ मान प्राप्त करेगा और उन्नति पाने के लिये विशेष कर्म करेगा तथा सातवीं दृष्टि से धन और कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की शक्ति का कुछ सहयोग पावेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिए विद्या एवं सन्तान पक्ष में शक्ति रहेगी और बुद्धि में तेजी रहेगी।

यदि कन्या का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति मिलेगी और भाग्यकी शक्ति एवं देहके कर्मसे धनकी विशेष शक्ति प्राप्ति होगी तथा देह में प्रभाव और मान प्राप्त करेगा तथा धर्म का पलन करेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर योग पावेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को मंगलकी वृश्चिक राशि में देख रहा, इसलिये कुछ थोड़ी सी परेशानी से आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति मिलेगी तथा अधिक नफा खायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ नीरसतायुक्त सम्बन्ध रहेगा और पराक्रम स्थान में शक्ति तथा हिम्मत रखेगा और भाग्य तथा पुरुषार्थ दोनों को ही बड़ा मानेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान

मकर लग्नमें ९ शनि

नं० १०५३

को बुध की मिथुन राशि देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में धन और जन की शक्ति से प्रभाव और लाभ पावेगा तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग में बड़ी सावधानी के साथ सफलता प्राप्त करेगा ।

यदि तुला का शनि—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में सुन्दरता एवं प्रभाव की विशेष शक्ति पावेगा और राज-समाज के अन्दर उत्तम कर्म के द्वारा बड़ा मान सम्मान प्राप्त करेगा और धन की उत्तम शक्ति पावेगा तथा कुटुम्ब का विशेष योग प्राप्त करेगा और किसी बड़े कार-बार के द्वारा उन्नति का योग बनेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमिके सुख सम्बन्धोंमें कमी रहेगी और घरेलू वातावरण में कुछ आशान्ति रहेगी तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष के सुख में कुछ कमी युक्त सहयोग रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ थोड़ी परेशानी के द्वारा शक्ति रहेगी ।
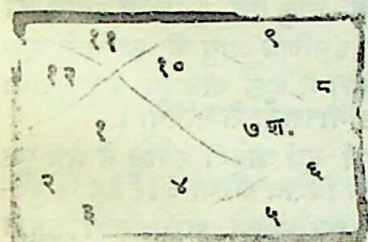
मकर लग्नमें १० शनि

नं० १०५४

यदि वृश्चिक का शनि ग्यारहवे लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह तथा गरम ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति पावेगा तथा बहुत धन प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त रहेगा और तीसरी दृष्टि से देह स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और

मकर लग्नमें ११ शनि
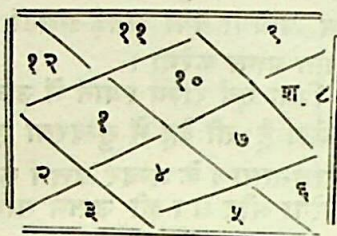
आत्मबल पायेगा और नाम तथा इज्जत प्राप्त करेगा तथा धन सञ्चय का सदैव ध्यान रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये संतान शक्ति से लाभ प्राप्त करेगा

नं० ५०५५

और और विद्या स्थान में बड़ी कीमती शक्ति प्राप्त करेगा तथा बातचीत के अन्दर बड़ी योग्यता के द्वारा स्वार्थ की सिद्धि करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये आयु के स्थान में कुछ फिकर रहेगी और जीवन की दिनचर्या में कुछ दौड़धूप करेगा तथा पुरातत्व शक्ति के लाभ का योग कुछ नीरसता से पावेगा।

यदि धन का शनि—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन का खर्चा विशेष करेगा और देह में दुर्बलता रहेगी और बाहरी स्थानों में विशेष भ्रमण करेगा तथा बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति पायेगा और कुटुम्ब की तथा धन की कमजोरी रहेगी किन्तु तीसरी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन को प्राप्त करने के लिये विशेष रूप से सदैव प्रयत्नशील रहेगा और कुटुम्ब की थोड़ी शक्ति रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान

मकर लग्न में १२ शनि

को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ लाभप्रद रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को बुधकी कन्या राशि में देखा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा

नं० १०५६

तथा भाग्यवान्समझा जायगा और धर्म के पालन में

भी कुछ ध्यान रखेगा तथा अपने व्यक्तित्व के अन्दर खर्च करने की सबसे प्रमुख शक्ति रखेगा।

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्ति के अधिपति—राहु

यदि मकर का राहु—प्रथम केन्द्र देहके स्थान मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह के स्वास्थ्य और सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और कुछ गुप्त चिन्ताओं का योग प्राप्त करेगा तथा देह में कभी-कभी कोई विशेष बीमारी या चोट वगैरह का खास संकट पावेगा और गुप्त युक्ति के बल द्वारा प्रभाव और मान की शक्ति प्राप्त होगी तथा हृदयबल की शक्ति के द्वारा बड़ी गहरी उन्नति का मार्ग खोजेगा और प्रयत्न करता रहेगा सो दिक्कतों से टकरा-टकरा कर अन्त में अपनी गहरी मजबूतीके ढंग स्थापित करेगा और बड़ा सावधान रहेगा।
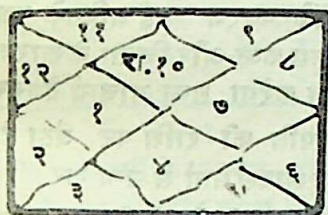
मकर लग्न में १ राहु

नं० १०५७

यदि कुम्भ का राहु—दूसरे धन भवन में एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो धन के स्थन में कुछ चिन्तायें प्राप्त करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कष्ट और कमी रहेगी तथा गुप्त युक्ति के बल से धन की वृद्धिका कारण बनता रहेगा किन्तु मजबूत स्थिर ग्रह की राशि पर बैठा है, इसलिये आन्तरिक धैर्य की शक्ति तथा मजबूत विचारों से धन की प्राप्ति करेगा और कभी-कभी धन के मार्ग में कर्जा लेकर भी काम करेगा और धन के पक्ष में प्रकट रूप से इज्जत प्राप्त करेगा किन्तु आन्तरिक रूप में धन की तरफ से कुछ कष्ट रहेगा और अन्त में धन की तरफ से मजबूती पायेगा।
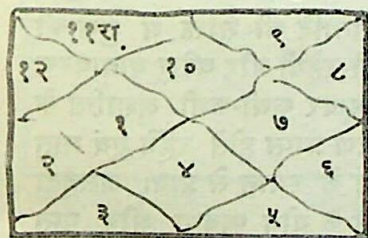
मकर लग्न में २ राहु

नं० १०५८
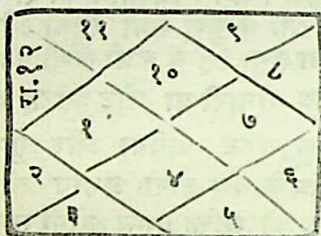
यदि मीन का राहु – तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली कार्य करता है, इसलिये पराक्रम स्थान की शक्ति में वृद्धि करेगा तथा बड़ी जबरदस्त हिम्मत शक्ति से काम करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणोंके कारण भाई बहिनके पक्ष में कुछ कष्ट और चिन्ता के कारण प्राप्त करेगा तथा आचार्य देवगुरु बृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिये गहरी और गुप्त युक्तियों को बड़े आदर्श मार्ग से उन्नति करशक्ति संचित करेगा तथा प्रभाव पायेगा किन्तु अन्दरूनी तौर से हिम्मत शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी मानेगा और प्रकट में विजयी रहेगा

मकर लग्न में ३ राहु

नं० १०५९

यदि मेष का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थन में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये माता के सुख सम्बन्धों मे बड़ी परेशानी एवं कष्ट के कारण प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की शक्ति में सुख की कमी रहेगी और घरेलू वातावरण के अन्दर कभी-कभी अशान्ति के कारण प्राप्त होते रहेंगे एवं मातृ भूमि के स्थान से प्रायः अलहदा रहने के योग पावेगा और गुप्त युक्तियों के मार्ग से अन्त में बड़ी मजबूती के साथ सुख के साधन प्राप्त करेगा और हिम्मत रखेगा।
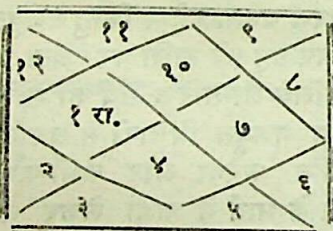
मकर लग्न में ४ राहु

नं० १०६०

यदि वृषभ का राहु— पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान

में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो सन्तान पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा तथा विद्या ग्रहण करने के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी किन्तु महान् चतुर ग्रह आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये विद्या बुद्धि के अन्दर चतुराई के विशेष कारण रहेंगे और गुप्त युक्तियों की गहराई के द्वारा बातें करके दिमागी शक्ति का प्रभाव रखेगा और कभी-कभी दिमाग के अन्दर विशेष परेशानी के कारण पायेगा और अन्त में सन्तान पक्ष और विद्या के पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा।
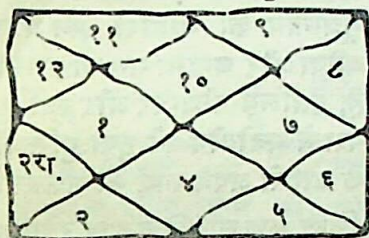
मकर लग्न में ५ राहु

नं० १०६१

यदि मिथुन का राहु—छठे शत्रु स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा जबरदस्त प्रभाव रखेगा और बड़ी से बड़ी दिक्कतों एवं झंझटों के मार्ग में बड़ी दिलेरी के साथ कामयाबी प्राप्त करेगा क्यों कि छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिए गुप्त युक्ति के गहरे बल से बड़ी भारी विजय और ऊँची सफलता प्राप्त करेगा और बड़ा भारी कूट नीतिज्ञ व बहादुर बनेगा तथा रोगादिक बीमारियोंके पक्ष में प्रायः मुक्त रहेगा और परम विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये हमेशा गहरे विवेक की शक्ति से काम लेगा।
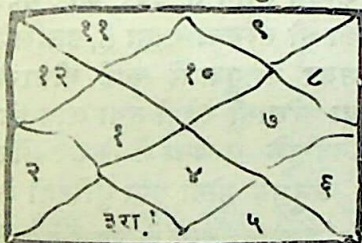
मकर लग्न में ६ राहु

नं० १०६२

यदि कर्क का राहु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में महान् कष्ट

प्राप्त करेगा और रोजगार के पक्ष में विशेष कठिनाइयाँ रहेंगी तथा

मकर लग्न में ७ राहु

नं० १०६३

गृहस्थ के संचालन मार्ग में चिन्ताओं से टकराना पड़ेगा तथा कभी मूत्रेन्द्रिय की बीमारी का योग बनेगा और चन्द्रमा मन का स्वामी है, इसलिये रोजगार और स्त्री के पक्ष में मनोयोग की गुप्त युक्तियों के बल से अपने कार्य की सफलता बनायेगा किन्तु कुछ मानसिक दुःख रहेगा।
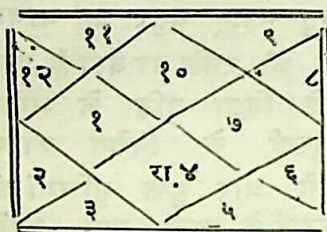
यदि सिंह का राहु—आठवें आयु स्थान एवं पुरातत्व स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो आयु के सम्बन्ध में बड़ी-बड़ी जबरदस्त चिन्ताओं से टकराना पड़ेगा तथा कभ-कभी जीवन रक्षा के लाले पड़ जायेंगे और पुरातत्व

मकर लग्न में ८ राहु

नं० १०६४
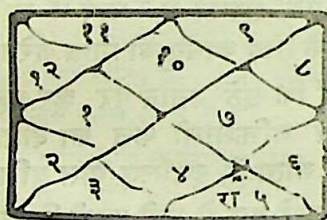
शक्ति की हानि प्राप्त होगी तथा अष्टम स्थान से उदर और गुदा का भी सम्बन्ध रहता है, इसलिये उदर या गुदा में कोई बीमारी या परेशानी रहेगी तथा जीवनके निर्वाहके सम्बन्ध में फिकर और कष्ट का अनुभव होगा गुप्त युक्तियों के बल से समय का संचालन होता रहेगा किन्तु दिनचर्या के प्रकट रूप में कुछ प्रभाव रहेगा क्योंकि सूर्य की राशि पर बैठा है।

यदि कन्या का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में मित्र बुध राशि पर स्वक्षेत्र के समान बैठा है तो राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण भाग्य स्थान में चिन्तायें प्राप्त होंगी और बड़े कठिन एवं

मकर लग्न में ९ राहु

नं० १०६५

कष्ट साध्य मार्ग से भाग्य की उन्नति प्राप्त होगी और विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये गुप्त विवेक की गहरी शक्ति के द्वारा भाग्य का विकास प्राप्त करेगा फिर भी कभी-कभी भाग्य के सम्बन्ध में विशेष परेशानियों से टकराना पड़ेगा और धर्म के पालन में प्रकट रूप से शक्ति रहेगी और अन्दरूनी कुछ कमजोरी रहेगी तथा भाग्य के अन्दर भी कुछ कमी अनुभव होगी।
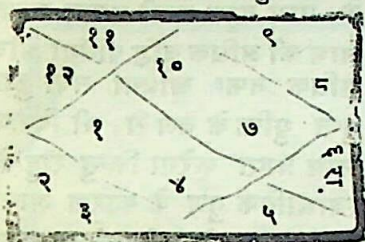
यदि तुला का राहु - दसम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में कुछ चिन्तायें प्राप्त करेगा तथा राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ परेशनियों के द्वारा मान प्राप्त रहेगा और कारबार की उन्नति के मार्ग में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का योग बनेगा किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी गुप्त चतुराइयों के योग से विकास के साधन प्राप्त करेगा और कभी-कभी राज-समाज एवं कारबार के पक्ष में बड़ा संकट पावेगा किन्तु फिर युक्ति के बल से पुनः सुधार पायेगा और सम्पन्न रहेगा।
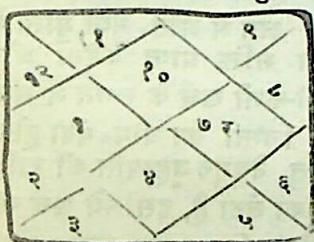
मकर लग्नमें १० राहु

नं० १०६६

यदि वृश्चिक का राहु - ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शुभ फल का संधाता हो जाता है और गरम ग्रह के बैठने से यह विशेषता

मकर लग्न में ११ राहु

नं० १०६७
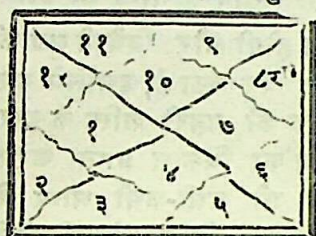
रहेगी कि आमदनी के मार्ग में साहस के साथ बहुत भारी प्रयत्न करके लाभ की अधिक वृद्धि पावेगा और अधिक नफा खायगा तथा कुछ गुप्त युक्ति के बल से भी विशेष लाभ प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुण के कारण आमदनी के मार्ग में कुछ परेशानी एवं कष्ट का योग प्राप्त करेगा कभी-कभी लाभ के मार्ग में विशेष दु:ख सुख प्राप्त होगा।

यदि धन का राहु—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की धन राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बड़ी परेशानी और कमजोरी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध

मकर लग्न में १० राहु
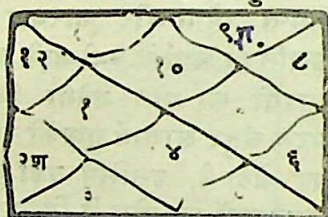
नं० १०८

में कुछ दिक्कतें और कष्ट के कारण पैदा होंगे तथा खर्च के संचालन कार्य क्षेत्र में अति गुप्त युक्ति के द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और कभी-कभी खर्च के स्थान में भयंकर चिन्ता का योग पैदा होगा किन्तु देवगुरु बृहस्पति की राशि पर नीच का बैठा है, इसलिये खर्च की शक्ति को पाने के लिये जो लघु कर्म और कठिन प्रयास करना होगा उसका प्रकट रूप उतना बुरा प्रतीत नहीं होगा अर्थात् दिखावा कुछ ठीक रहेगा।

कष्ट, कठिन कर्म तथा गुप्त शक्ति के अधिपति-केतु

यदि मकर का केतु प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी या परेशानी रहेगी तथा कभी-कभी

मकर लग्न में १ केतु

नं० १०६९
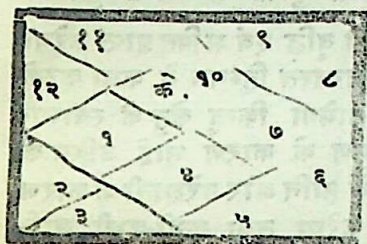
देह के ऊपर महान् संकट या भयंकर चोट का योग प्राप्त करेगा तथा अपने शरीर के अन्दर कुछ खास कमी का अनुभव होने के कारण कष्ट मानेगा किन्तु गरम और जिद्दी शनि की राशि पर बैठा है इसलिये बड़ी भारी तेजी रखेगा और जबरदस्त जिद्द बाजी का स्वभाव पायेगा और अपने व्यक्तित्व को ऊँचा करने के लिये एवं मान पाने के लिये किसी गुप्त शक्ति के बल का प्रयोग करेगा।

यदि कुम्भ का केतु—द्वितीय धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति के अन्दर कमजोरी रहेगी तथा धन के पक्ष से कष्ट के कारण प्राप्त होंगे और धन

मकर लग्न में २ केतु

नं० १०७०
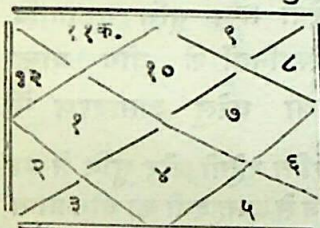
की शक्ति पाने के लिए बड़ा कठिन कर्म करेगा और गुप्त शक्ति का प्रयोग करने से सफलता पायेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण धन के पक्ष से कभी-कभी महान् संकट का गुप्त अनुभव करेगा किन्तु स्थिर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी हिम्मत शक्ति से धन के पक्ष की पूर्ति करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में भी कमी और कष्ट के कारण प्राप्त होते रहेंगे किन्तु सदैव महान् साहससे शक्ति पायेगा।

यदि मीन का केतु—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह का बैठना विशेष शक्ति का सूचक होता है, इसलिये महान् कठिन परिश्रम

मकर लग्न में ३ केतु
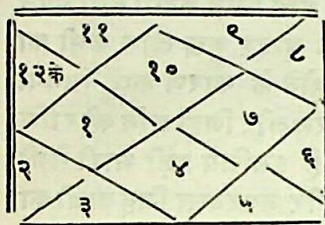
नं० १०७१

और गुप्त युक्ति के बल से पुरुषार्थ स्थान की वृद्धि एवं शक्ति प्राप्त करेगा और जबरदस्त हिम्मत से काम करके विजय पायेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण भाई बहिन के स्थान में हानि और परेशानी के कारण प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी भाई-बहिन के पक्ष से या हिम्मत शक्ति के पक्ष से विशेष कष्ट या निराशा का योग गुप्त रूपसे अनुभव करेगा प्रकटमें धैर्य रहेगा।

यदि मेष का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में कष्ट और कमी के कारण प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि के सुख सम्बन्धों में कमी और परेशानियों के योग प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण में कुछ आशन्ति रहेगी और भूमि से या जन्म स्थान से अलहदगी का योग प्राप्त रहेगा और गरम ग्रह मङ्गल की राशि पर गरम ग्रह केतु बैठा है, इसलिये सुख के साधनों को पाने के लिये कठिन कर्म करेगा तथा गुप्त शक्तिके बलसे सफलता प्राप्त करेगा किन्तु केतुके स्वाभाविक गुण के कारण स्थान परिवर्तन रहेगा।
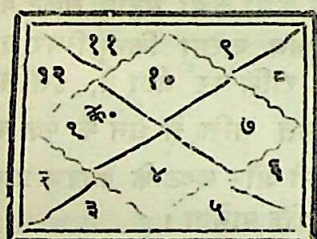
मकर लग्नमें ४ केतु

नं० १०७२

मकर लग्न में ५ केतु
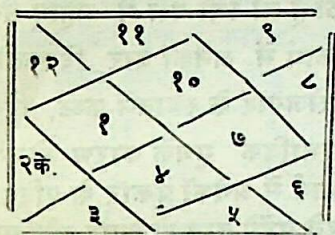
नं० १०७३

यदि वृषभ का केतु पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कष्ट का योग पावेगा तथा संतान पक्ष में कुछ कमी एवं कुछ परेशानी रहेगी तथा विद्या ग्रहण करने में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा दिमाग और बुद्धि के अन्दर कुछ चिन्ता फिक्र का गुप्त योग प्राप्त करेगा तथा विद्या बुद्धि की उन्नति करने के लिये कठिन परिश्रम और गुप्त शक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा और चतुर ग्रह आचर्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिए बुद्धि के अन्दर अन्दरूनी शक्ति और चतुराई रहेगी और प्रकट में कुछ रूखापन रहेगा।

यदि मिथुन का केतु—छठे शत्रु स्थान में मित्र बुध की राशि पर नीच का होकर बैठा है तो शत्रु पक्ष के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और छठें स्थान पर क्रूर ग्रह प्रभावशाली कर्म करता है, इसलिये शत्रु स्थान में गुप्त शक्ति के बल से प्रभाव पायेगा त ा शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करने के लिये कठिन कर्म तथा दौड़ धूप करेगा किन्तु विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये विवेक शक्ति के गुप्त बल से झगड़े झंझटों में कामयाबी पायेगा और केतु के स्वाभाविक गुण के कारण ननसाल पक्ष में हानि प्राप्त करेगा त ा शत्रु पक्ष से कभी-कभी महान् संकट का योग प्राप्त करने पर भी गुप्त धैर्य से काम करेगा।
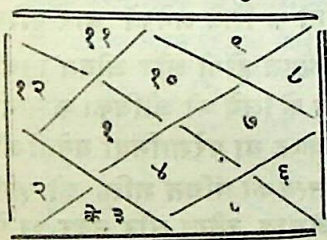
मकर लग्न में ६ केतु

नं० १०७४

यदि कर्क का केतु सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में महान् संकट प्राप्त करेगा और स्त्री गृहस्थ के कार्य में अनेकों बार दिक्कतों से टकरा-टकराकर चलना पड़ेगा और रोजगार के स्थानमें कष्ट, परेशानियाँ प्राप्त होंगी तथा केतु के स्वाभाविक गुणके कारण रोजगार के मार्ग में अनेकों प्रकार के परिवर्तन करने पड़ेंगे तथा रोजगार और गृहस्थ के संचालन विभाग में उन्नति पानेके लिये बड़ा कठिन परिश्रम और गुप्त युक्तिके बल से काम निकालेगा और बहुत सी परेशानियों के बाद तथा कुछ देर अबेर से और कुछ कमी के योग से सफलता शक्ति पावेगा।

मकर लग्न में ७ केतु
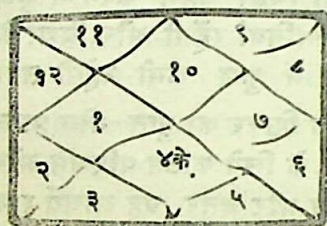
नं० १०७५

यदि सिंह का केतु—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो आयु के स्थान में महान् संकट का योग प्राप्त करेगा अर्थात् जीवन की रक्षा पाने के लिये अनेकों बार दुश्चिन्तायें प्राप्त होंगी और जीवन निर्वाह करने के लिये भी जीविका के मार्ग में बड़े कष्ट या परेशानियाँ बनेंगी और पुरातत्व की संचित शक्ति की हानि या अभाव रहेगा और उदर या पेट के निचले हिस्से में कुछ बीमारी रहेगी किन्तु शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है, इसलिये गुप्त में चिन्ता और प्रकट में प्रभाव रहेगा और जीवन की दिनचर्या को सुचारु रूप से व्यतीत करने के लिये गुप्त शक्ति और कठिन परिश्रम से काम करेगा।

मकर लग्न में ८ केतु

नं० १०७६

यदि कन्या का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में मित्र बुध की राशि पर स्वक्षेत्र के समान बैठा है तो केतु के स्वाभाविक गुण के कारण भाग्य स्थान मे परेशानियाँ रहेंगी किन्तु कन्या का राहु या केतु बलवान् होता है इसलिये भाग्य के प्रकट रूप में शक्ति और सुन्दरता रहेगी तथा धर्म के पालन करने का ढंग रहेगा किन्तु फिर भी कभी भाग्यके स्थान में विशेष संकट का योग प्राप्त करेगा परन्तु विवेकी बुध की राशि पर बैठा है इसलिए भाग्य की उन्नति करने के लिये विवेक शक्ति के कठिन कर्म के द्वारा और गुप्त शक्ति के बल से सफलता शक्ति पायेगा और प्रकट में यश मिलेगा।
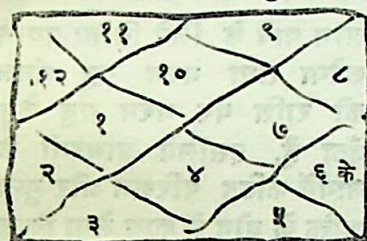
मकर लग्न में ९ केतु

नं० १०७७

यदि तुला का केतु—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान मे मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में कष्ट और कमी के कारण प्राप्त होंगे तथा राज-समाज के पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी और कार व्यापार की उन्नति के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी तथा कभी-कभी इज्जत आबरू की रक्षा करने के लिये बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा और चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये उन्नति प्राप्त करने के लिये तथा मान पाने के लिये बड़ी भारी गुप्त चतुराई की शक्ति के द्वारा कठिन परिश्रम करके सफलता पायेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण उन्नति के मार्ग में बड़े-बड़े परिवर्तन करने पड़ेंगे।
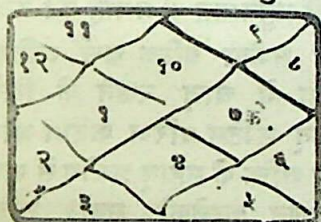
मकर लग्न में १० केतु

नं० १०७८

यदि वृश्चिक का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आमदनी के स्थान में क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और अधिक से अधिक लाभ पाने के लिये विशेष प्रयत्न करेगा तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर गरम ग्रह केतु बैठा है, इसलिये आमदनी के मार्गमें कठिन परिश्रम और गुप्त शक्ति के योग से काम लेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण आमदनी के मार्ग में कभी-कभी चिन्ता और कष्ट के साधन पायेगा किन्तु बहुत शीघ्र सफलता शक्ति को प्राप्त करेगा परन्तु गुप्त रूप से कुछ कमी अनुभव करेगा।

मकर लग्न में ११ केतु

नं० १०७९

यदि धन का केतु बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में उच्च का होकर शुत्र गुरु की राशि पर बैठा है तो खर्च बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध में विशेष शक्ति पायेगा तथा खर्च की बहुतायत के प्रवाह को रोक नहीं सकेगा बल्कि खर्च अधिक मात्रा में चालू रखने के लिये महान् कठिन परिश्र करेगा और गुप्त शक्ति के महान् प्रयोग से खर्च संचालन करनेकी महान् शक्ति प्राप्त करेगा और केतुके स्वाभाविक गुण के कारण खर्च के मार्ग में अथवा बाहरी सम्बन्धों के मार्ग में कोई विशेष परेशानी का योग प्राप्त करेगा किन्तु विशेष सफलता शक्ति प्राप्त रहेगी।
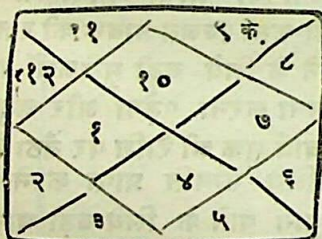
मकर लग्न में १२ केतु

नं० १०८०
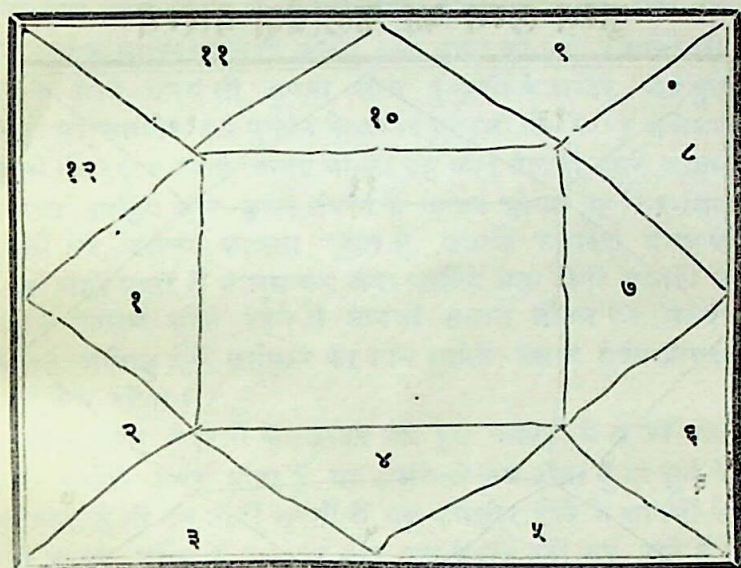
॥ मकर लग्न समाप्त ॥

कुम्भ लग्न का फलादेश प्रारम्भ
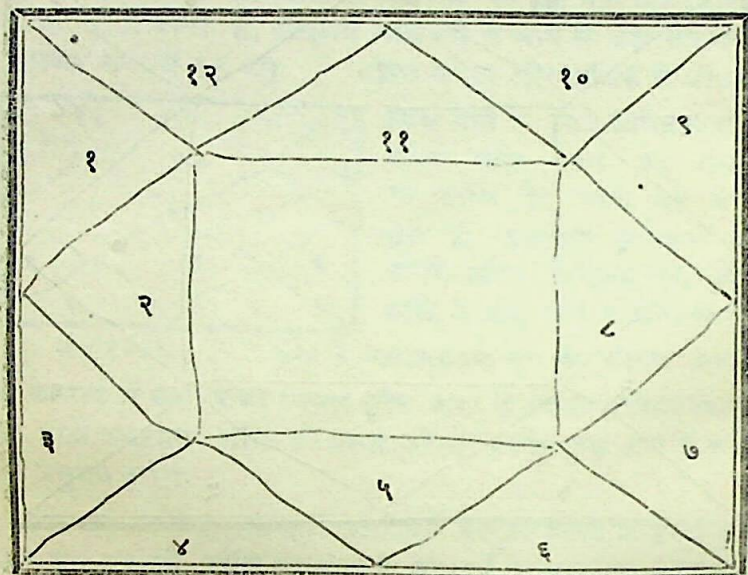
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

(कुण्डली नं ११८८ तक में देखिये)

प्रिय पाठक गण ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं, उसका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता है और नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचरगति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से

अच्छा बुरा असर जीवन के दूसरी तरफ होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० १०८१ से लेकर कुण्डली नं० ११८८ तकके अन्दर जो-जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे तंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है, उसका फलादेश प्रथम के नौ ग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके समाने सदैव प्रत्यक्ष दिखाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका असर फललागू समझा जायेगा।

११-कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० १०८१ से १०९२ तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० १०८१ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८२ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८३ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८४ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८५ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८६ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८७ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८८ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०८९ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मासमें सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०९० के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १०९१ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस मासमें सूर्य मकर राशि पर हो, उस मासका फलादेश कुण्डली नं० १०९२ के अनुसार मालूम करिये।

११-कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्मकालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० १०९३ से ११०४ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमाका फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९३ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९४ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९५ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९६ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९७ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९८ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १०९९ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डसी नं० ११०० के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ११०१ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ११०२ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ११०३ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० ११०४ के अनुसार मालूम करिये।

११-कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—भौमफल

जन्म कालीन मंगल का फल कुण्डली नं० ११०५ से १११६ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस मासमें मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११०५ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११०६ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११०७ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११०८ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११०९ के अनुसार मालूम करिये

४-जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११० के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११११ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११४ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११५ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११६ के अनुसार मालूम करिये।

११—कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवनके लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० १११७ से ११२८ तक में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

११–जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११७ के अनुसार मालूम करिये।

१२–जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११८ के अनुसार मालूम करिये।

१– जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १११९ के अनुसार मालूम करिये।

२– जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२० के अनुसार मालूम करिये।

३— जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२१ के अनुसार मालूम करिये।

४— जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२२ के अनुसार मालूम करिये।

५— जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२३ के अनुसार मालूम करिये।

६— जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२४ के अनुसार मालूम करिये।

७— जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२५ के अनुसार मालूम करिये।

८— जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११२६ के अनुसार मालूम करिये।

९— जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मात का फलादेश कुण्डली नं० ११२७ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस मास में बुध मकर राशि पर हो उस मास फलादेश कुण्डली नं० ११२८ के अनुसार मालूम करिये।

११–कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० ११२९ से ११४० तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११२९ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३० के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३१ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३२ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३३ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ११३४ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३५ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३६ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३७ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३८ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११३९ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११४० के अनुसार मालूम करिये।

११—कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्मकालीन शुक्रका फल कुण्डली नं० ११४१ से ११५२ तक में देखिये। और समय कालीन शुक्रका फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४१ के अनुसार मालूम करिये ।

१२-जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४२ के अनुसार मालूम करिये ।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलदेश कुण्डली नं० ११४३ के अनुसार मालूम करिये ।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४४ के अनुसार मालूम करिये ।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४५ के अनुसार मालूम करिये ।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४६ के अनुसार मालूम करिये ।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४७ के अनुसार मालूम करिये ।

६—जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४८ के अनुसार मालूम करिये ।

७—जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११४९ के अनुसार मालूम करिये ।

८—जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११५० के अनुसार मालूम करिये ।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११५१ के अनुसार मालूम करिये ।

१०-जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११५२ के अनुसार मालूम करिये ।

११-कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं० ११५३ से ११६४ तकमें देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये ।

११-जिस वर्षमें शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५३ के अनुसार मालूम करिये ।

१२-जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उल पर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५४ के अनुसार मालूम करिये ।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५५ के अनुसार मालूम करिये ।

२ जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५६ के अनुसार मालूम करिये ।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५७ के अनुसार मालूम करिये ।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस बर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५८ के अनुसार मालूम करिये ।

५--जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो, उस बर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११५९ के अनुसार मालूम करिये ।

६—जिस बर्ष में शनि कन्या राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६० के अनुसार मालूम करिये ।

७--जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का ललादेश कुण्डली नं० ११६१ के अनुसार मालूम करिये ।

८--जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६२ के अनुसार मालूम करिये ।

९--जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६३ के अनुसार मालूम करिये ।

१०-जिस बर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६४ के अनुसार मालूम करिये ।

११—कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर- राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० ११६५ से ११७६ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये ।

११–जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६५ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६६ के अनुसार मालूम करिये।

१– जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६७ के अनुसार मालूम करिये।

२– जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११६८ के अनुसार मालूम करिये।

३– जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं०११६९ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७० के अनुसार मालूम करिये।

५– जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७१ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७२ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं ११७३ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७४ के अनुसार मालूम करिये।

९– जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७५ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७६ के अनुसार मालूम करिये।

११-कुम्भ लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर केतु फल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० ११७७ से ११८८ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

११-जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७७ के अनुसार मालूम करिये।

१२-जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७८ के अनुसार मालूम करिये।

१- जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११७६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८० के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में केतु मिथुन राशिपर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८१ के अनुसार मालूम करिये।

४- जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८२ के अनुसार मालूम करिये।

५- जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८३ के अनुसार मालूम करिये।

६- जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८४ के अनुसार मालूम करिये।

७- जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८५ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८६ के अनुसार मालूम करिये।

९- जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८७ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० ११८ के अनुसार मालूम करिये।

नोट इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

स्त्री, रोजगार तथा प्रभाव स्थानपति—सूर्य

यदि कुम्भ का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु देह में प्रभाव की शक्ति रहेगी और स्वभाव में तेजी रहेगी तथा गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये दैनिक कार्य क्रम के अन्दर बड़ी भारी दौड़ धूप करता रहेगा और सातवीं दृष्टि से स्त्री एवं दैनिक रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी सिंह राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा रोजगार के पक्ष में दैहिक कर्म के द्वारा विशेष सफलता शक्ति पावेगा और गृहस्थ की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव प्राप्त करेगा।
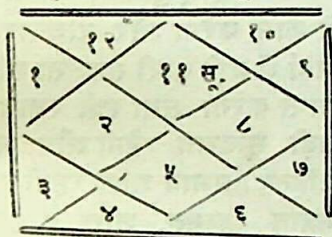
कुम्भ लग्न में १ सूर्य

नं० १०११

यदि मीन का सूर्य दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से धन की वृद्धि के साधन प्राप्त रहेंगे और धन के स्थान में प्रभाव की शक्ति मिलेगी और कुटुम्ब के पक्ष में बड़ा सहारा एवं शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का-सा कार्य भी करता है, इसलिये स्त्री पक्ष में प्रभाव प्राप्त होने पर भी स्त्री के सुख सम्बन्धों में कोई खास कमी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की शक्ति का सहारा मिलेगा और जीवन
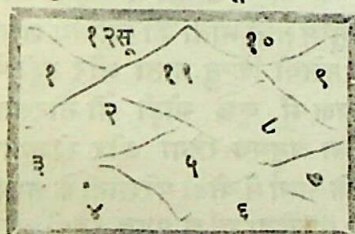
कुम्भ लग्न में २ सूर्य

नं० १०८२

की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध में शक्ति और प्रभाव प्राप्त रहेगा।

यदि मेष का सूर्य—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर गरम ग्रह उच्च का हो जाने से महान् शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये महान् पुरुषार्थ की शक्ति से काम करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा स्त्री स्थान में बड़ी सुन्दरता रहेगी और भाई बहिनकी प्रभाव शक्ति रहेगी तथा महान् हिम्मत, शक्ति के द्वारा उन्नति प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाग्य एवधर्म स्थानको शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य के अन्दर कुछ कमजोरी अनुभव करेगा और धर्म के क्ष में कुछ लापरवाही रहेगी और सुयश एवं बरक्कत की कुछ कमी रहेगी।
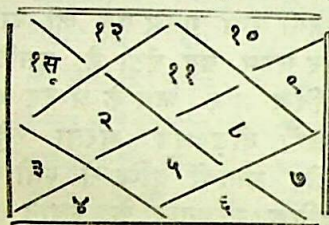
कुम्भ लग्न में ३ सूर्य

नं० १०८३

यदि वृषभ का सूर्य चौथे केन्द्र माता एवं भूमि तथा सुख स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष का सुख प्राप्त रहेगा और भूमि तथा माता की सहयोग शक्ति मिलेगी किन्तु माता और स्त्री के पक्ष में कुछ थोड़ी सी नीरसता का अनुभव रहेगा और रोजगार के मार्ग में थोड़ी परेशानी के साथ-साथ सुख और सफलता शक्ति प्राप्त रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से सफलता शक्ति मिलेगी और राज-समाज के पक्ष में मान प्रतिष्ठा और प्रभाव रहेगा तथा
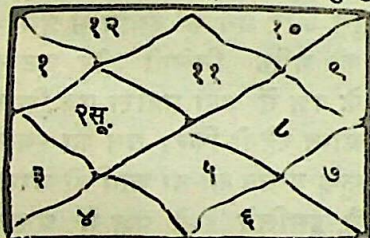
कुम्भ लग्न में ४ सूर्य

नं० १०८४

कारवार की उन्नति के मार्ग में दैनिक कर्म के योग से लाभ पावेगा।

यदि मिथुन का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में शक्ति रहेगी और वाणी के अन्दर कुशलता और प्रभाव की शक्ति रहेगी तथा संतान पक्ष में अनुकूल शक्ति का योग प्राप्त करेगा ओर बुद्धिमती स्त्री का संयोग एवं प्रभाव प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बुद्धि विद्या की शक्ति के योग से सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये रोजगार और बुद्धि के योग से आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त रहेगी और लाभ प्राप्ति के पक्ष से प्रभाव प्राप्त रहेगा।

कुम्भ लग्न में सूर्य

नं० १०८५

यदि कर्क का सूर्य—छठें शत्रु स्थान में मित्र चन्द्र की कर्कराशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से विकास का साधन पायेगा तथा रोजगार के पक्ष में कुछ परेशानी के योग से सफलता और प्रभाव शक्ति मिलेगी तथा स्त्री के सम्बन्ध में कुछ मतभेद और प्रभाव शक्ति रहेगी तथा प्रभाव के मार्ग से ही रोजगार और गृहस्थका संचालन करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलि खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों के पक्ष में कुछ दिक्कतों के योग से प्रभाव और सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।
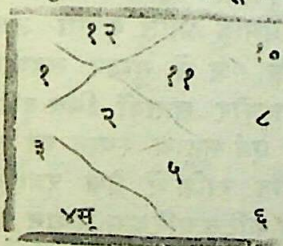
कुम्भ लग्न में ६ सूर्य

नं० १०८६

यदि सिंह का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो स्त्री पक्ष में विशेष शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति मिलेगी और गृहस्थ के संचालन विभाग के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव रहेगा तथा ससुराल पक्ष में विशेष शक्ति रहेगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और स्त्री पक्ष में कुछ मतभेद होने के कारण परेशानी का योग अनुभव रहेगा किन्तु गृहस्थ जीवन और रोजगार के पक्ष से प्रभाव युक्त रहेगा।
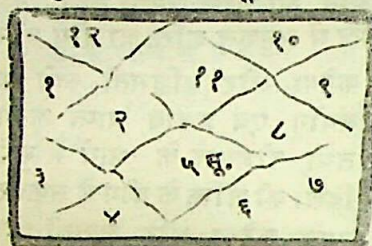
कुम्भ लग्न में ७ सूर्य

नं० १०८७

यदि कन्या का सूर्य आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कष्ट एवं परेशानी के कारण प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी-बड़ी कठिनाई और दिक्कतों के योग से कार्य करेगा तथा दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से रोजगार की संचालन शक्ति पायेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में शक्ति और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा आयु के पक्ष में सुन्दर सहयोग मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगार के कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि करेगा तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलेगा।
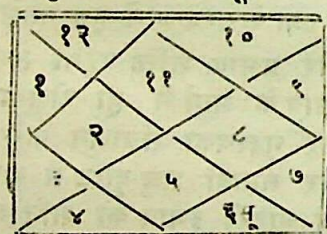
कुम्भ लग्न में ८ सूर्य

सं० १०८८

यदि तुला का सूर्य -नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में नीच का होकर रवि शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो भाग्य के

पक्ष में कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा तथा स्त्री के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी और रोजगार के मार्ग में बड़ी कमजोरी के साथ कार्य संचालन करेगा और धर्म के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा कुछ न्याय विरुद्ध रूप से स्वार्थ सिद्ध करेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा और पुरुषार्थ की उन्नति करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत शक्ति के द्वारा सफलता शक्ति का योग प्राप्त करेगा।
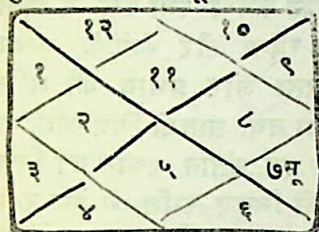
कुम्भ लग्न में ९ सूर्य

नं० १०८९

यदि वृश्चिक का सूर्य दशम केन्द्र पिता एवं राजस्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग में महान् उन्नति और प्रभाव प्राप्त करेगा और स्त्री पक्ष में विशेष शक्ति एवं सुन्दरता तथा बड़प्पन प्राप्त करेगा और पिता के सम्बन्ध में सहायता शक्ति रहेगी तथा राज-समाज में मान प्रतिष्ठा बनेगी और प्रभाव शक्ति के द्वारा कारबार की उन्नति करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये गृहस्थ के सम्बन्ध में मातृ सुख के अन्दर कुछ नीरसता रहेगी और भूमि के सुख में कुछ कमी रहेगी।
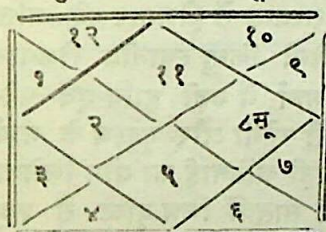
कुम्भ लग्न में १० सूर्य

नं० १०९०

यदि धन का सूर्य ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह विशेष लाभकारी

कुम्भ लग्न में ११ सूर्य

नं० १०९१
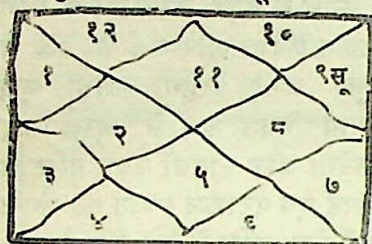
होता है, इसलिये आमदनी के पक्ष में विशेष लाभ पायेगा और अधिक मुनाफा करेगा स्त्री पक्ष में बहुत लाभ रहेगा और स्त्री के अन्दर सुन्दरता और प्रभाव की शक्ति पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि में विकास और प्रभाव पायेगा तथा संतान पक्ष में सहायक शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि मकर का सूर्य - बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करना पड़ेगा तथा खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी सी रहेगी तथा स्त्री के सुख सम्बन्धों में बड़ी भारी कमी और परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में रोजगार की शक्ति मिलेगी किन्तु स्थानीय रोजगार के मार्ग में बड़ी हानि एवं परेशानी रहेगी और गृहस्थ के मार्ग में बड़ी कठिनाई का योग मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान की चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में कुछ सफलता का योग प्राप्त होगा।
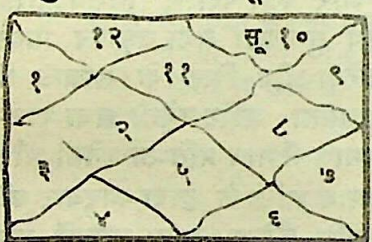
कुम्भ लग्न में १२ सूर्य

नं० १०९२

शत्रु, झंझट तथा मनःस्थान पति—चन्द्र

यदि कुम्भ का चन्द्र - प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष के सम्बन्ध में प्रभाव शक्ति

कुम्भ लग्न में १ चन्द्र
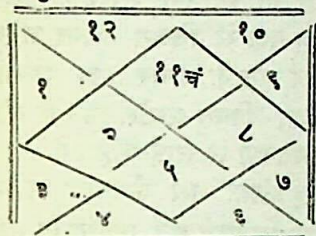
नं० १०९३

रखेगा तथा मनोयोग के द्वारा अनेकों प्रकार की झंझटों पर विजय प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारणों से देह में कुछ रोग रहेगा तथा शत्रु पक्ष एवं कुछ अन्य विघ्न बाधाओं के कारण कुछ परेशानी का अनुभव होगा और मन के अन्दर कुछ भय और शक्ति का अनुभव होगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ मत-भेद रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी या फिकर रहेगी।

यदि मीन का चन्द्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो मनोयोग के परिश्रम से धनोपार्जन करेगा तथा धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्न-शील रहेगा, और कुछ झगड़े झंझटों के मार्ग से धन की सफलता का योग प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से धन स्थान के सम्बन्ध में कुछ हानि या परे-शानी का योग प्राप्त रहेगा और कुटुम्ब के स्थान में कुछ झंझट एवं कुछ वैमनस्य रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में एवं पुरातत्व में कुछ झंझटयुक्त वातावरण प्राप्त रहेगा।
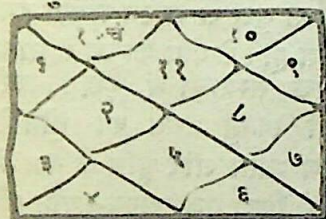
कुम्भ लग्न में २ चन्द्र

नं० १०९४

यदि मेष का चन्द्र—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र

कुम्भ लग्न में ३ चन्द्र

नं० १०९५
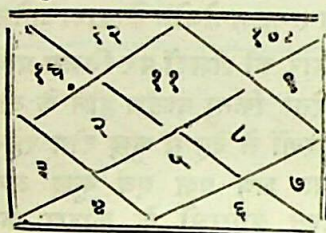
मंगल की राशि पर बैठा है तो मन की पराक्रम शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा और मन के अन्दर बड़ा उत्साह रहेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष के कारण से भाई-बहिन के पक्षमें कुछ झंझट या वैमनस्य रहेगा और पुरुषार्थ एवं उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें रहेंगी और सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि से भाग्य एवं धर्म स्थान को देख रहा है, इसलिये भाग्योन्नति के मार्ग कुछ झंझटयुक्त कर्म से काम करेगा और धर्म के पक्ष में कुछ कठिन मार्ग का अनुसरण करेगा तथा प्रभाव की वृद्धि प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में

कुम्भ लग्न में ४ चन्द्र

नं० १०९६
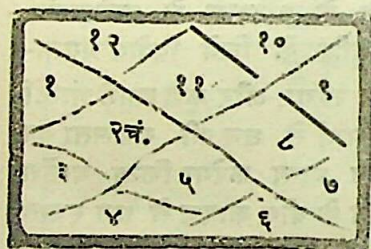
उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में घर बैठे प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से सुख के साधन पावेगा तथा षष्ठेश होने के दोष कारण से माता के सुख सम्बन्धों में कुछ दिक्कतें रहेगी किन्तु उच्च का होने के कारण माता और भूमि के पक्ष में प्रभाव रहेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी एवं क्लेश का योग पावेगा और राज-समाज तथा कारबार पक्ष में कुछ झंझट रहेगी।

यदि मिथुन का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बुद्धि और मनोयोग के द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभाव रखेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से विद्या ग्रहण

कुम्भ लग्न में ५ चन्द्र

नं० १०९७
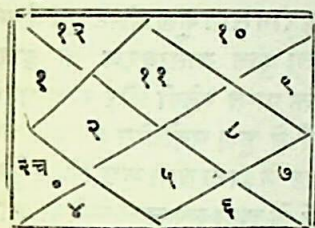
करने में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और संतान पक्ष में कुछ झंझट एवं रोग और चिन्ता फिकर मिलेगी तथा विचारों के अन्दर मानसिक परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा आमदनी की वृद्धि करेगा तथा अधिक लाभ पाने के लिये कुछ मनोयोग की पेचीदी तरकीबों से भी सफलता पायेगा।

यदि कर्क का चन्द्र—छठें शत्रु स्थान एवं झंझट स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो मनोयोग की महान् शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव एवं विजय प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटोंके मार्ग में महान् धैर्य की शक्ति से काम लेगा

कुम्भ लग्न में ६ चन्द्र

नं० १०९८
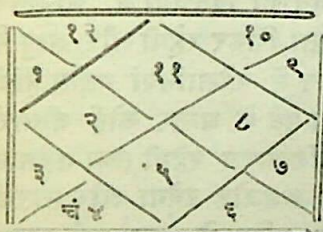
तथा ननसाल पक्ष में शक्ति रहेगी किन्तु षष्ठेश होने के दोष के कारण से मनके अन्दर हमेशा कुछ झगड़े तलब परेशानी की बातें रहेंगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से बाहरी स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के सञ्चालन में कुछ दिक्कतों के योग से शक्ति रहेगी और बाहरी स्थानों में कुछ झंझट रहेगी।

यदि सिंह का चन्द्र - सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो गृहस्थ एवं रोजगार की व्यवहारिक दिनचर्या के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा किन्तु षष्ठेश

कुम्भ लग्न में ७ चन्द्र

नं० १०९९
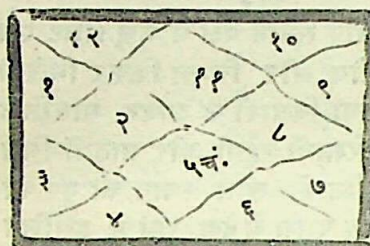
होने के दोष कारण से स्त्री पक्षमें कुछ रोग तथा कुछ झंझट एवं वैमनस्यता युक्त वातावरण के द्वारा शक्ति प्राप्त रहेगी और रोजगारके मार्ग में कुछ मनोयोग की परिश्रम शक्ति के द्वारा तथा कुछ झंझट युक्त मार्ग के द्वारा सफलता पायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ रोग तथा कुछ फिकर और दौड़ धूप का योग रहेगा तथा मन में शक्ति रहेगी।

यदि कन्या का चन्द्र—आठवें मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष के मार्ग में बड़ी परेशानी अनुभव करेगा और प्रभाव के मार्ग में अन्दरूनी कमजोरी रहेगी

कुम्भ लग्न में ८ चन्द्र

नं० ११००
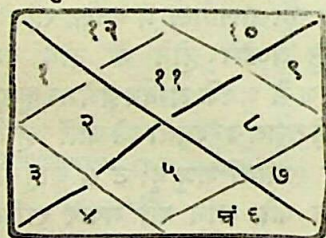
तथा षष्ठेश होने के दोष कारण से जीवन की दिनचर्या में मानसिक चिन्ता फिकर रहेगी और आयु के स्थान में परेशानियां प्रतीत होंगी तथा पेट के अन्दर कोई बीमारी या शिकायत रहेगी तथा ननसाल पक्ष कमजोर रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मीन राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन के कठिन परिश्रम से मनोयोग द्वारा धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये बड़ा प्रयत्न करता रहेगा।

यदि तुला का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति और मनोयोग के कारण से शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा

कुम्भ लग्न में ९ चन्द्र

नं० ११०१

झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ उन्नति पायेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ परेशानियाँ या कुछ दिक्कतें रहेंगी और धर्म के पक्ष में कुछ रुकावटें एवं कमजोरी रहेगी और सुयश की कमी रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ झंझट रहेगी और पराक्रम स्थान में मनोयोग की शक्ति से उत्साह प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष की तरफ से मानसिक चिन्तायें और दिक्कतें रहेंगी तथा प्रभाव के पक्ष में कमजोरी रहेगी और षष्ठेश होने के दोष के कारण से पिता के पक्ष में कुछ कमी और वैमनस्य तथा अशान्ति के कारण प्राप्त होंगे और राज-समाज में मान प्रतिष्ठा की कुछ कमजोरी रहेगी तथा उन्नति मार्ग एवं कारबार में रुकावटें और झंझटें रहेंगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से माता एवं भूमि-भवन तथा सुख स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये घरेलू वातावरण में मनोयोग से सुख प्राप्त करेगा।

कुम्भ लग्न में १० चन्द्र

नं० ११०२

यदि धन का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में प्रभाव रहेगा और शत्रु एवं झगड़े झंझटों के मार्ग से लाभ युक्त रहेगा तथा मनोयोग की परिश्रमी

कुम्भ लग्न में ११ चन्द्र

नं० ११०३

शक्ति के द्वारा आमदनी में बड़ी सफलता प्राप्त करेगा और षष्ठेश होने के दोष कारण से आमदनी के पक्ष में कुछ दौड़ धूप या मानसिक परिश्रम अधिक करना पड़ेगा तथा लाभ की शक्ति में कुछ थोड़ा असन्तोष मानेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये मनोयोग के द्वारा विद्या स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में कुछ फिकरमंदी रहेगी।

यदि मकर का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष की तरफ से हानि एवं

कुम्भ लग्न में १२ चन्द्र

नं० ११०४
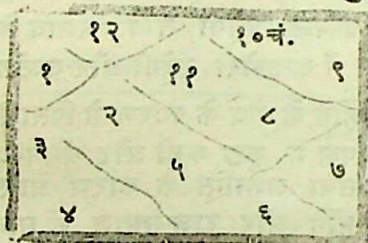
कुछ मानसिक परेशानी रहेगी और प्रभाव की कुछ कमी रहेगी तथा षष्ठेश होने के दोष कारण से खर्च के मार्ग में कुछ दिक्कतें और झंझट रहेंगी तथा मानसिक परिश्रम से खर्च की शक्ति मिलेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और अनेक प्रकार के झंझटों से मन को कष्ट और अशान्ति रहेगी तथा सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये मनोयोग की नरम शक्ति से शत्रु पक्ष में प्रभाव और कामयाबी प्राप्त करेगा।

पिता, राज्य, भाई तथा पराक्रम स्थानपति-मंगल

यदि कुम्भ का मंगल—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो कुछ थोड़ी सी नीरसता के योग से पिता

की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और राज-समाज में कुछ उत्तम परिश्रम से सफलता शक्ति और मान प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कारबार की उन्नति करेगा और भाई बहिन की शक्ति का अच्छा सहयोग प्राप्त करेगा तथा पराक्रम स्थान में सफलता शक्ति और उत्साह प्राप्त करेगा और अपने व्यक्तित्व एवं उन्नति के लिये सदैव ही प्रयत्नशील रहेगा तथा चौथी दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये माता के पक्ष में कुछ थोड़ी सी नीरसता के साथ शक्ति प्राप्त रहेगी और भूमि मकानादि का अच्छा सहयोग रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष एवं रोजगार के पक्ष में शक्ति और मान प्राप्त होगा तथा आठवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति रहेगी और पुरातत्व का लाभ प्राप्त होगा।
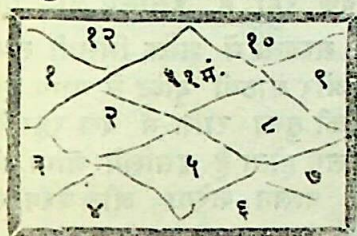
कुम्भ लग्न में १ भौम

नं० ११०५

यदि मीन का मंगल—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो उत्तम पराक्रम शक्ति के द्वारा धन की वृद्धि करेगा और इज्जत मिलेगी तथा राज समाज में मान प्राप्त होगा, किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य करता है इसलिये भाई बहिन और पिता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और कुटुम्ब की शक्ति मिलेगी और चौथी मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये

कुम्भ लग्न में २ भौम

नं० ११०६
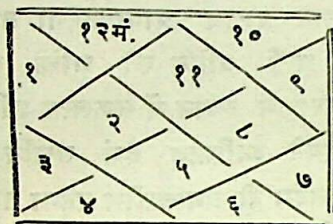
विद्या बुद्धि के अन्दर राज-समाज की ज्ञान शक्ति और सन्तान पक्षमें सहयोग की शक्ति मिलेगी और वाणी में तेजी रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु एवं पुरातत्व सम्बन्ध में शक्ति मिलेगी तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा और आठवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, राज्येश ग्रह का भाग्य को देखना उत्तम होता है इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा और धर्म कर्म का पालन करेगा और बरक्कत प्राप्त होगी।

यदि मेष का मंगल तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति प्राप्त रहेगी और पराक्रम स्थान में महान् शक्ति मिलेगी तथा मंगल का दसम स्थान पर अधिकार पाना महत्व दायक होता है, इसलिये यह आठवीं दृष्टि से राज्य एवं पिता स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, अतः पिता स्थानकी शक्तिका

कुम्भ लग्न में ३ भौम

नं ११०७
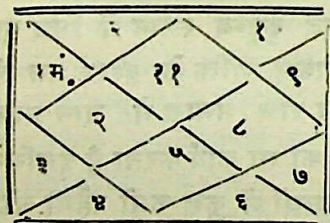
लाभ प्राप्त करेगा और राज-समाज के अन्दर बहुत उन्नति एवं प्रभाव और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में उन्नति, पुरुषार्थ तथा कर्म की शक्ति से बहुत सफलता पायेगा और चौथी नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ झंझट रहेगी तथा ननसाल पक्ष में कुछ हानि रहेगी

और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्म-कर्म का पालन करेगा और बड़ा जबरदस्त हिम्मत और कर्म की शक्ति से भाग्यवान् बनेगा।

यदि वृषभ का मंगल चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो कुछ त्रुटि के सहित माता और भूमि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन का सुख योग रहेगा और पराक्रम शक्ति से सुख प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण मकानादि में प्रभाव शक्ति रखेगा और चौथी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये स्त्रीपक्ष में शक्ति प्राप्त होगी और रोजगार के मार्गमें पराक्रम शक्ति के द्वारा सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में राज्य एवं पिता स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा और राज-समाज में मान प्रतिष्ठा और प्रभाव रहेगा तथा घर बैठे कारबार की उन्नति करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये कारबार एवं पराक्रम शक्ति के द्वारा आमदनी की वृद्धि करेगा और अधिक नफा खायेगा। यह मंगल तीसरे दसवें का स्वामी होकर, दसवें और ग्यारहवें स्थान को देखने से विशेष महत्वदायक फल का दाता बन गया है।
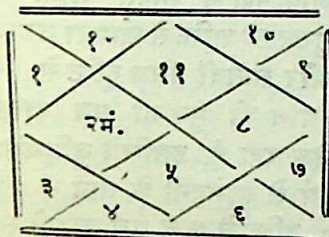
कुम्भ लग्न में ४ भौम

नं० ११०८

यदि मिथुन का मंगल पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थानमें राज-

भाषा की शक्ति का उत्तम ज्ञान प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में शक्ति मिलेगी तथा बुद्धि और वाणी में तेजी रहेगी और भाईबहिन में बड़प्पन पायेगा तथा पिता की शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा एवं बुद्धि योग के द्वारा-समाज में मान और प्रभाव पायेगा तथा कारबार का सुचारु रूप से संचालन करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु पक्ष में शक्ति रहेगी और पुरातत्व शक्ति से फायदा उठायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धियोग के पुरुषार्थ कर्म से आमदनी के मार्ग में अच्छी सफलता प्राप्त करेगा आठवीं उच्च दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का उत्तमोत्तम सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा कायदे कानून से बातें करेगा।
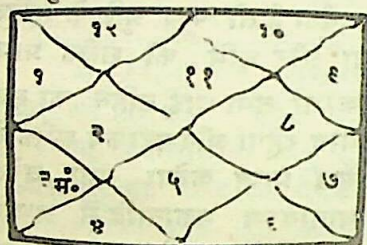
कुम्भ लग्न में ५ भौम

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३मं० ५ ७ ४ ६

नं० ११०९

यदि कर्क का मंगल—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में कुछ झंझटों एवं कुछ दिक्कतों से सफलता प्राप्त करेगा क्यों कि छठें स्थान पर गरम ग्रह तेज पड़ जाता है और भाई बहिन पिता के पक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त सम्बन्ध की शक्ति पायेगा और कुछ परतन्त्रतायुक्त कर्म की शक्ति से पुरुषार्थ का विकास करेगा और राज-समाज के मार्ग में थोड़ा प्रभाव पायेगा और ननसाल पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चौथी दृष्टि से भाग्य एव धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के कठिन परिश्रम से भाग्य की उन्नति करेगा और कुछ धर्म का पालन करेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टि से खर्च एवं बाहरी

कुम्भ लग्न में ६ भौम

नं० १११०

स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा और बाहरी स्थानों का विशेष सम्बन्ध रहेगा तथा आठवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी रखते हुए देह में प्रभाव की शक्ति रहेगी और स्वभाव में तेजी रहेगी।

यदि सिंह का मंगल—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग में पुरुषार्थ के उत्तम कर्म के द्वारा बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और भाई-बहिन की शक्ति का सहयोग पावेगा तथा स्त्री पक्ष में विशेष शक्ति और उन्नति रहेगी और चौथी दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति का सहयोग अच्छा रहेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति प्राप्त रहेगी तथा कारबार में सफलता और प्रभाव प्राप्त होगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी के साथ-साथ प्रभाव और मान प्राप्त होगा और आठवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये व्यापारिक दैनिक कर्म क्षेत्र के द्वारा धन की शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सहयोग पायेगा।

कुम्भ लग्नमें ७ भौम

नं० ११११

यदि कन्या का मंगल आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में हानि एवं कमी पायेगा और राज-समाज में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा उन्नति के मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और मान प्रतिष्ठा की कुछ कमजोरी रहेगी और भाई-बहिन के स्थान एवं पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी रहेगी और दूसरे स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त करेगा

कुम्भ लग्न में ८ भौम
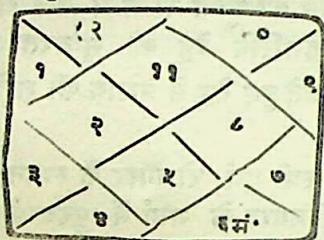
नं० ११११२

तथा चौथी मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये धन संग्रह करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करता रहेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सहारा पायेगा तथा आठवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ शक्ति की वृद्धि करेगा किन्तु अष्टम में बैठने के दोष कारण से भाई-बहिन और पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर अधूरा शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु पुरातत्व शक्ति का लाभ पायेगा।

यदि तुला का मंगल नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो भाग्य की विशेष उन्नति करेगा क्योंकि भाग्य स्थानपति कोई ग्रह राज्य में बैठा हो या

कुम्भ लग्न में ९ भौम

नं० ११११३

राज्य स्थानपति कोई ग्रह भाग्य में बैठा हो तो विशेष उत्तम फल का दाता होता है, इसलिये यह मंगल बड़ा भाग्यशाली एवं धर्मात्मा बनायेगा और पिता की शक्ति मिलेगी तथा राजसमाज से मान प्राप्त करेगा और कारबारके मार्गमें भाग्य शक्तिसे उन्नति प्राप्त होगी तथा चौथी उच्च
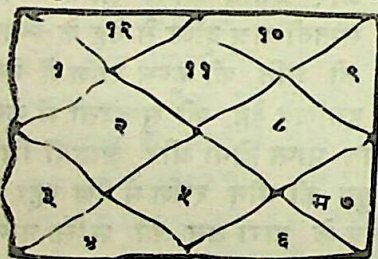
दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा बहुत अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति का सम्बन्ध प्राप्त होगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति प्राप्त होगी तथा पराक्रम स्थान में सफलता शक्ति मिलेगी तथा सतोगुणी कर्म के द्वारा हिम्मत शक्ति और यश मिलेगा तथा आठवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये उत्तम कर्म के द्वारा भूमि और घरेलू सुख के साधन मिलेंगे और माता की शक्ति का लाभ रहेगा तथा भाग्य और कर्म दोनों का अनुयायी बनेगा।

यदि वृश्चिक का मंगल दसम केन्द्र, पिता एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो राज-समाज के अन्दर बड़ी भारी शक्ति और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा पिता की श्रेष्ठ शक्ति पायेगा और पुरुषार्थ कर्म की महानता से कारबार के पक्ष में बहुत उन्नति करेगा तथा भाई-बहिन की शक्ति का योग पावेगा और अपनी हिम्मत शक्ति के द्वारा बड़ी भारी हुकूमत और प्रभाव का ढंग बनायेगा और चौथी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है इसलिये देह की सुन्दरता में कुछ कमी रखते हुए इज्जत और प्रभाव विशेष रहेगा और स्वाभिमानी बनेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये माताके सुख में कुछ नीरसता युक्त शक्ति रहेगी और भूमि मकानादि का योग प्राप्त रहेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध
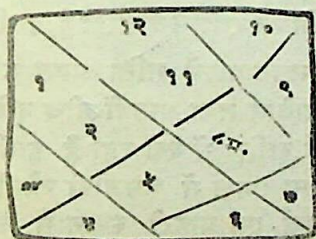
कुम्भ लग्न में १० भौम

नं० १११४

को मिथुन राशि में देख रहा है इसलिये विद्या स्थान में राज भाषा की शक्ति उत्तम रूप में प्राप्त करेगा और सन्तान पक्ष में अच्छी शक्ति मिलेगी और दसम स्थान पर तो मंगल स्वयमेव ही उत्तम होता है, किन्तु स्वक्षेत्री मंगल का दसम स्थान पर बैठना राजयोग कारक होता है।

यदि धन का मंगल ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो ग्यारवें स्थान पर गरम ग्रह का बैठना अधिक श्रेष्ठ होता है इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और पिता स्थान की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा राज समाज से लाभ और मान पायेगा और उत्तम कारबार एवं पुरुषार्थ कर्म के द्वारा धनलाभ की विशेष शक्ति और अधिक नफा खायेगा और भाई-बहिन की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थानको गुरु की मीन राशि में देख रहा है इसलिये धन की संग्रह शक्ति के लिये विशेष प्रयत्न करके सफलता प्राप्त करेगा और कुटुम्बकी शक्ति का सहयोग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये सन्तान पक्षमें शक्ति प्राप्त करेगा और विद्या स्थान की शक्ति से लाभ पायेगा तथा आठवीं नीच दृष्टिसे शत्रु स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये शत्रुपक्ष में कुछ झंझट रहेगी और ननसाल पक्ष में कमजोरी रहेगी।
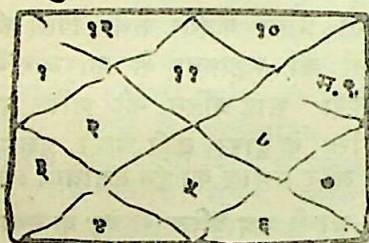
कुम्भ लग्नमें ११ भौम

नं० १ १.

यदि मकर का मंगल बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है, तो खर्चा बहुत अधिक तायदाद में करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति का सम्बन्ध प्राप्त करेगा तथा पिता के सम्बन्धों में कुछ हानि रहेगी और राज-समाज का स्थानीय सम्बन्ध कुछ कमजोर रहेगा और कारबार के

पक्ष में अपने स्थान में हानि तथा दूसरे स्थानों में सफलता पायेगा और चौथी दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का योग प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थानमें शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु पक्षमें कुछ झंझट रहेगी और ननसाल पक्षमें कुछ कमजोरी रहेगी तथा आठवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिये रोजगार के मार्ग बड़ी सफलता शक्ति के द्वारा गृहस्थ के अन्दर शक्ति का संचार रखेगा।
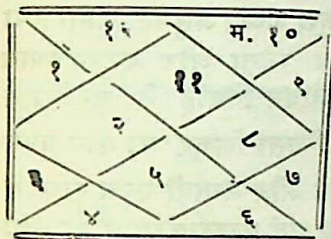
कुम्भ लग्न में १२ भौम

नं० १११६

विद्या, सन्तान, आयु तथा पुरातत्व स्थानपति-बुध

यदि कुम्भ का बुध – प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है, तो आयु के पक्षमें शक्ति मिलेगी और पुरातत्व सम्बन्ध की शक्ति का लाभ रहेगा और संतान पक्ष में सहयोग और मान मिलेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से देह के स्वास्थ्य और सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी तथा कुछ चिन्ता फिकर का योग प्राप्त रहेगा और पञ्चमेश होने की विशेषता के कारण विवेक शक्तिका गहन ज्ञान प्राप्त होगा और प्रभाव तथा मान मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के साथ-साथ विवेक शक्ति के द्वारा सहयोग का लाभ प्राप्त करेगा
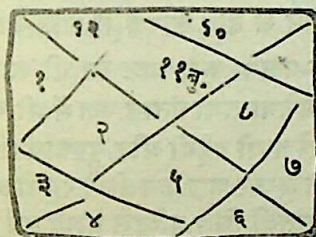
कुम्भ लग्न में १ बुध

नं० १११७

यदि मीन का बुध—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की मीन राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और संतान पक्ष में कुछ कष्ट अनुभव होगा तथा नगद धन की संचित शक्ति का अभाव रहेगा और कुटुम्ब स्थान में कुछ कमी और विरोध रहेगा तथा जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में

कुम्भ लग्न में २ बुध

नं० १११८

कुछ चिन्ता फिकर का योग प्राप्त होगा और सातवीं उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयुमें शक्ति मिलेगी और पुरातत्व धन का अधूरा लाभ रहेगा और विद्या बुद्धि से सम्बन्धित पुरातत्व शक्ति का विवेक की हठयोगता से लाभ और मान प्राप्त करेगा।

यदि मेष का बुध—तीसरे पराक्रम एवं भाई बहिन के स्थान में मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि की शक्ति का बल प्राप्त करेगा आयु और संतान पक्ष में शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु अष्टमेश

कुम्भ लग्न में ३ बुध

नं० १११९

होने के दोष कारण से भाई-बहिन के पक्षमें कुछ कष्ट का भी कारण मिलेगा तथा संतान पक्ष में भी कुछ परेशानी रहेगी और पुरुषार्थ शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थान को शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिए बुद्धि और विवेककी शक्तिके द्वारा कुछ कठिनाइयोंके साथ साथभाग्य की वृद्धि करेगा

और धर्मका ध्यान रखेगा तथा बुद्धि के अन्दर विवेक शक्ति की विशेषता के कारण अनेकों कार्यों की पूर्ति तथा पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का बुध—चौथे माता एवं भूमि के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु की सुख शक्ति और पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा विद्या बुद्धि का अच्छा योग पायेगा और संतान पक्ष में कुछ सुख शक्ति मिलेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से माता के सुख में कुछ कमी रहेगी और भूमि मकानादि के सम्बन्धों में कुछ परेशानी के साथ सुख मिलेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्यस्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सम्बन्ध में कुछ फिकर या परेशानी से काम चलेगा और राजसमाज कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ कठिनाई और विशेष शक्ति से मान और सफलता पायेगा।
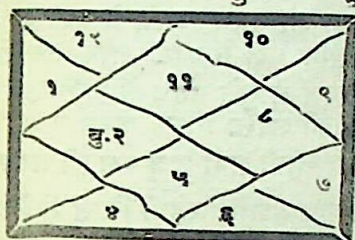
कुम्भ लग्न में ४ बुध

नं० ११२०

यदि मिथुन का बुध—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो विद्या स्थान में पुरातत्व सम्बन्धित मार्ग की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और बुध के अन्दर विवेक शक्ति की प्रधानता होने के कारण बुद्धि और वाणीके द्वारा प्रभाव शक्ति पायेगा और सन्तान पक्ष में शक्ति मिलेगी किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से सन्तान पक्ष में कुछ कमी एवं कुछ कष्ट प्राप्त होगा और विद्या बुद्धि के अन्दर कुछ त्रुटि रहेगी तथा
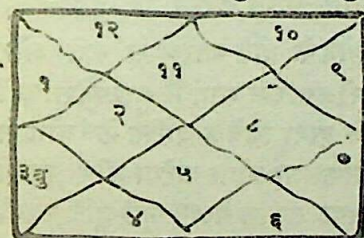
कुम्भ लग्न में ५ बुध

नं० ११२१

सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये बुद्धि की विवेक शक्ति के द्वारा आमदनी के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि कर्क का बुध—छठे शत्रु स्थान एवं झंझट स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो विद्या को ग्रहण करने में बड़ी परेशानियाँ और कमजोरी रहेगी तथा संतान पक्ष में कष्ट और दिक्कतें रहेंगी और जीवन की दिनचर्या में एवं आयुके संबंध में बहुत सी दिक्कतें रहेंगी और पुरातत्व सम्बन्धकी शक्ति प्राप्त करने में बड़ी कमजोरी रहेगी तथा शत्रु पक्ष की तरफ से कुछ अशांति रहेगी किन्तु विवेक की नरम और गुप्त शक्ति के द्वारा शत्रु और झंझटों पर विजय प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक रहेगा और बाहरी स्थानों में विवेक शक्ति के द्वारा सफलता पायेगा।
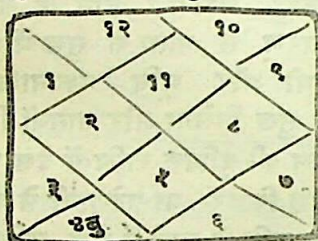
कुम्भ लग्नमें ६ बुध

नं० ११२२

यदि सिंह का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगारके स्थानमें मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि की योग्यता प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में शक्ति पायेगा तथा आयु और पुरातत्व शक्ति का सुन्दर योग-भोग प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से स्त्री और रोजगारके मार्ग में कुछ परेशानियों के द्वारा विवेक शक्ति के योग से सफलता प्राप्त करेगा और विद्या तथा संतान पक्षमें कुछ त्रुटि रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से देहके स्थान को शनि की कुम्भ राशि
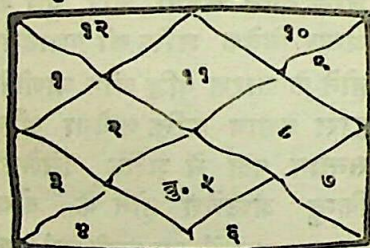
कुम्भ लग्न में ७ बुध

नं० ११२३

में देख रहा है, इसलिये देह में भी कुछ परेशानी के योग से मान प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्यामें रौनक और प्रभाव रहेगा।

यदि कन्या का बुध—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में उच्च का होकर बैठा है तो आयु स्थान में विशेष शक्ति रहेगी तथा पुरातत्व सम्बन्ध में जीवन को सहायक होने वाली शक्ति प्राप्त करेगा और दिनचर्या में बड़ी रौनक और प्रभाव रहेगा किन्तु संतान पक्षमें बड़ी दिक्कतें रहेंगी और विद्या की शक्ति में कुछ कमजोरी होते हुये भी विवेक शक्तिकी महानता रहेगी तथा वाणी में प्रभाव रहेगा और सातवीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है,इसलिये धन संग्रह शक्ति में कमजोरी अनुभव होगी और कुटुम्ब के स्थान में कुछ क्लेश का या कमी का योग रहेगा।
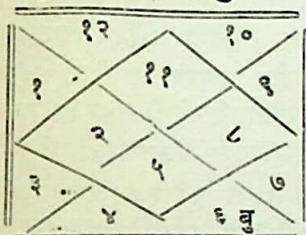
कुम्भ लग्न में ८ बुध

नं० ११२४

यदि तुला का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धन स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में शक्ति मिलेगी और विद्या स्थान में सुन्दर सफलता मिलेगी तथा आयु का सुन्दर योग प्राप्त रहेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ भाग्य से ही स्वतः प्राप्त होगा और विवेक शक्ति की महानता से भाग्यकी वृद्धि करेगा और धर्म का ज्ञान प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारणसे भाग्य की उन्नति में और धर्म के पालन में कछ कमी रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये

कुम्भ लग्न में ९ बुध

नं० ११२५

भाई-बहिन और पराक्रम शक्ति के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त लाभ रहेगा।

यदि वृश्चिक का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु की विशालता मिलेगी और पुरातत्व शक्ति का अच्छा लाभ विवेक कर्म के द्वारा प्राप्त करेगा और विद्या बुद्धि के कर्म योग से मान प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में शक्ति मिलेगी और अष्टमेश होने के दोष कारण से पिता स्थान में कुछ परेशानी रहेगी तथा कारबार एव राज-समाज के सम्बन्धों में कुछ बाधायें प्राप्त होंगी और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमि के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि युक्त सुख मिलेगा तथा विवेक शक्ति से सम्मान प्राप्त करेगा।
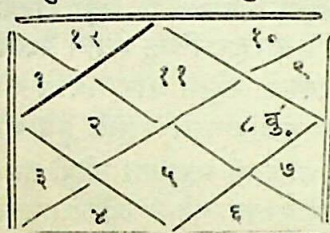
कुम्भ लग्न में १० बुध

१२ १० १ ११ ९ २ ८ बु. ३ ५ ७ ४ ६

नं० ११२६

यदि धन का बुध - ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो आयु के पक्ष में शक्ति प्राप्त रहेगी और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्धित विवेक शक्ति के योग से लाभ की शक्ति पायेगा और जीवन की दिनचर्या में आनन्द और प्रभाव रहेगा तथा अष्टमेश होने के दोष कारण से आमदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतों के योग से अच्छी सफलता पायेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये थोड़ी सी परेशानी के साथ संतान पक्ष
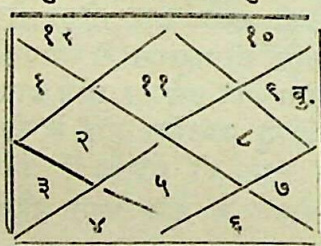
कुम्भ लग्न में ११ बुध

१२ १० १ ११ ९ बु. २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

नं० ११२७

और विद्या स्थानमें शक्ति पायेगा तथा वाणीमें स्वार्थ और प्रभाव रहेगा।

यदि मकर का बुध—बारवें बाहरी एवं खर्च स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा तथा पुरातत्व शक्ति की हानि पायेगा और आयु के सम्बन्ध में चिन्तायें प्राप्त होंगी तथा सन्तान पक्ष में हानि और परेशानी रहेगी एवं विद्या के पक्ष में बड़ी कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानोंमें बुद्धि एवं विवेककी शक्तिसे कुछ सफलता प्राप्त करेगा किन्तु जीवन यापन करने के पक्षमें कुछ दिमाग में परेशानी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि शत्रु एवं झंझट स्थान को कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ नरमाई और विवेक की शक्ति से सफलता पायेगा तथा अनेकों झंझटों से बचेगा।

कुम्भ लग्न में १२ बुध

नं० ११२८

धन, कुटुम्ब तथा आमद स्थानपति---गुरु

यदि कुम्भ का गुरु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो देह के द्वारा धन और लाभ की शक्ति प्राप्त करेगा तथा मान और प्रभाव मिलेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सहयोग रहेगा तथा धनवानों में इज्जत रहेगी और बुजुर्गी के ढंग से धन की शक्ति पायेगा तथा धन की प्राप्ति का बड़ा भारी ख्याल और बड़ा भारी प्रयत्न चालू रखेगा और पांचवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि के मार्ग में बड़ी शक्ति प्राप्त रहेगी तथा सन्तान पक्षसे लाभ प्राप्त करेगा और वाणी के द्वारा सफलता पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्षमें सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा और रोजगारके

कुम्भ लग्न में १ गुरु

नं० ११२९

मार्ग में धनोन्नति के सम्बन्ध में सफलता शक्ति प्राप्त करेगा तथा नवमी दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति पायेगा तथा धर्म का पालन धन से करेगा।

यदि मीन का गुरु – दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति प्राप्त करेगा तथा आमदनी की मोटी शक्ति पायेगा और कुटुम्ब के अन्दर विशेष शक्ति प्राप्त रहेगी तथा धनावन् इज्जतदार समझा जायगा और धन को जोड़ने के लिये भारी प्रयत्न करेगा तथा पांचवीं उच्च दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को मित्र चन्द्रमाकी कर्क की राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष से लाभ और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा झंझट और परिश्रम से फायदा उठायेगा और सातवींमित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में शक्ति मिलेगी
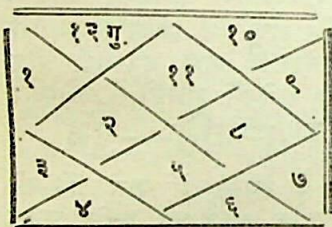
कुम्भ लग्न में २ गुरु

नं० ११३०

तथा पुरातत्व धन का लाभ रहेगा और जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढंग रहेगा और नवमी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान से धन की शक्ति प्राप्त करेगा और राज-समाज में इज्जत और लाभ पायेगा तथा कारबार के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति और उन्नति करेगा।

यदि मेष का गुरु - तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है-तो पराक्रम स्थान के द्वारा धनलाभ की विशेष शक्ति प्राप्त रहेगी और भाई बहिनसे भी लाभ युक्त सम्बन्ध रहेगा तथा अपने बाहुबलके द्वारा बड़ा भारी कीमती कार्य करेगा और कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर लाभ प्राप्त करेगा तथा पांचवीं मित्र दृष्टि से

स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है,

कुम्भ लग्नमें ३ गुरु

१२		१०
१गु.	११	९
२		८
३	५	७
४		६

नं० ११३१

इसलिये स्त्री पक्षमें सुन्दरता एवं लाभ योग रहेगा और रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति और धन प्राप्त करेगा तथा ससुराल से फायदा उठायेगा और गृहस्थ में अमीरातका ढंग रहेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि मे देख रहा है, इसलिये कुछ थोड़ी सी रुकावटों के योग से भाग्य की वृद्धि प्राप्त करेगा और धर्म की विशेष छानबीन करेगा तथा नवमी दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।
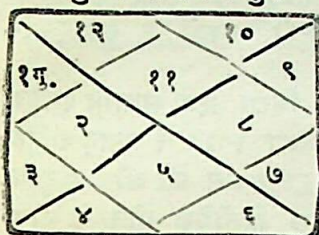
यदि वृषभ का गुरु – चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर बैठा है तो भूमि मकानादि की शक्ति प्राप्त करेगा तथा धनेश कुछ बन्धन का कार्य भी करता है, इसलिये माता के सुख सम्बन्ध में कुछ त्रुटि करेगा किन्तु मातृ स्थान की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा तथा अपने स्थान से ही धन की आमदनी का मार्ग सुख पूर्वक प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान

कुम्भ लग्न में ४ गुरु

१२		१०
१	११	९
२ गु.		८
३	५	७
४		६
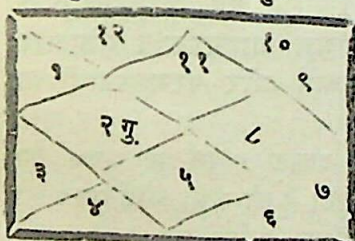
नं० ११३२

को बुध की कन्या राशि देख रहा है, इसलिये आयु में वृद्धि पायेगा और पुरातत्व धन का लाभ प्राप्त करेगा और अमीरातके ढंग से जीवन व्यतीत करेगा त । सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगलकी वृश्चिक राशि से देख रहा है, इसलिये पित.की शक्तिका लाम पायेगा और राज-समाज एवं कारबार के पक्ष में

उन्नति और सफलता तथा मान प्राप्त करेगा और नवमी नीच दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च में और बाहरी स्थानों से कुछ परेशानी रहेगी।

यदि मिथुन का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं सन्तान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा बुद्धि विद्या व वाणी के द्वारा धन की और कुटुम्ब की शक्ति पायेगा तथा सन्तान पक्ष में कुछ द्वितीयेश होने के दोष कारण से थोड़ी सी परेशानी के साथ संतान पक्ष की विशेष लाभदायक शक्ति प्राप्त होगी और पाँचवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है इसलिये थोड़ी सी दिक्कतके साथ भाग्य स्थान की वृद्धि और शक्ति पायेगा तथा धन से धर्म का पालन करेगा तथा सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में स्वक्षेत्र को देख र[illegible] है, इसलिये बुद्धि योग के द्वारा खूब धनोपार्जन करेगा और नवमी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव शक्ति रहेगी और धनवान् एवं भाग्यवान् समझा जायगा तथा बुद्धि और वाणी के अन्दर सज्जनता, योग्यता, स्वार्थ और परमार्थ सभी का पालन करेगा।
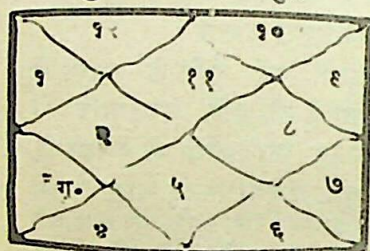
कुम्भ लग्न में ५ गुरु

नं० ११३३

यदि कर्क का गुरु—छठे शत्रु एवं झंझट स्थान में उच्च का होकर मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो कभी कोई मुफ्त की धन शक्ति मिलेगी और शत्रु पक्ष में धन शक्ति का बड़ा प्रभाव रहेगा तथा ननसाल पक्ष में महानता रहेगी किन्तु छठें स्थान पर बैठने के दोष कारणसे धन की प्राप्ति के मार्ग में अर्थात् आमदनी

के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करेगा तथा संचित धनको खराब करेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ झंझट रहेगी तथा पाँचवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति का लाभ मिलेगा और राज समाज व कारबार के मार्गसे फायदा उठावेगा और सातवीं नीच दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में तथा बाहरी सम्बन्धों में परेशानी रहेगी और नवमी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये परिश्रम और झंझटों के मार्ग से धन की प्राप्ति करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में कुछ शक्ति रहेगी तथा धनवान् समझा जायगा।
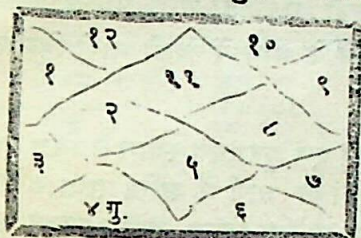
कुम्भ लग्न में ६ गुरु

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ गु. ६

नं० ११३४

यदि सिंह का गुरु सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में महान् सफलता शक्ति तथा धन और सौंदर्य प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बहुत धन प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में बड़ा भरी प्रभाव और इज्जत रहेगी तथा धन और कुटुम्ब की शक्ति का सुन्दर सहयोग पायेगा और पाँचवीं दृष्टि से आमदनी के मार्ग को स्वयं अपनी धन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और कीमती रोजगार करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये देह में मान सम्मान और प्रभाव रहेगा किन्तु सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी और धनवान् समझा जायेगा
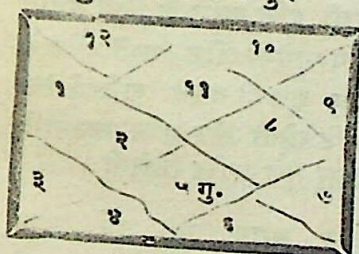
कुम्भ लग्न में ७ गुरु

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ गु. ७ ४ ६

नं० ११३५

तथा नवमीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहिन की शक्ति का लाभ पायेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के मार्ग से बड़ी भरी सफलता शक्ति प्राप्ति करेगा और उन्नति करेगा तथा धन कमाने के मार्ग में बड़ी भारी हिम्मत शक्ति और योग्यता से काम करेगा।

यदि कन्या का गुरु—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो आयु स्थान के मार्ग में शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व धन शक्ति का लाभ पायेगा किन्तु अष्टम स्थान पर बैठने के दोष कारण से संचित धन की शक्ति में हानि प्राप्त रहेगी तथा कुटुम्बके स्थानमें कमी और कष्टके कारण प्राप्त होंगे और आमदनीके मार्ग में दूसरे स्थान का सम्बन्ध और कठिनाइयाँ प्राप्त करेगा तथा पाँचवी नीच दृष्टि से खर्च और बाहरी स्थान को शनि की मकर राशि में शत्रु भाव से देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में तथा बाहरी स्थान के सम्बन्धों में कमी और कष्टके कारण प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मीन राशि में धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वक्षेत्र में देख रहा है, इसलिये धनकी वृद्धि करने के लिये महान् प्रयत्न करेगा और कुटम्बका कुछ सहयोग पायेगा और नवमीं दृष्टि से माता एवं भूमिके स्थानको सामान्य शत्रु शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये माता के स्नेह में कुछ त्रुटि रहेगी और भूमि मकानादि की कुछ शक्ति प्राप्त रहेगी तथा कुछ घरलू सुख शक्ति मिलेगी।
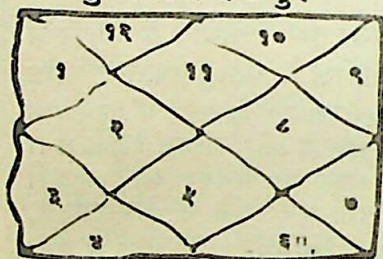
कुम्भ लग्न में ८ गुरु

नं० ११३६

यदि तुला का गुरु - नवम त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की

शक्ति से धन की विशेष प्राप्ति करेगा तथा बड़ा भाग्यवान् एवं धनवान् समझा जायगा और कुटुम्ब की उत्तम शक्ति मिलेगी तथा न्याय के मार्ग से धनोपार्जन करेगा और धर्म की गहरी छानबीन करके धर्म का पालन करेगा और पांचवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को शनि का कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और भाग्यवानी के लक्षण प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशिमें देख रहा है, इसलिये भाई बहिनकी शक्ति का लाभ पायेगा और पुरुषार्थ कर्मकी शक्ति से बहुत धनोपार्जन का लाभ पायेगा तथा हिम्मत शक्ति प्राप्त रहेगी और नवमीं मित्र दृष्टिसे विद्या एवं सन्तान स्थान को बुधकी मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये विद्या की शक्ति का अच्छा लाभ प्राप्त करेगा और सन्तान पक्षमें शक्ति मिलेगी तथा बुद्धि और वाणी से लाभ प्राप्त करेगा।
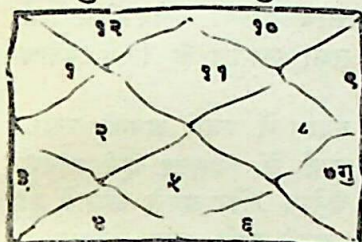
कुम्भ लग्नमें ९ गुरु

नं० ११३७

यदि वृश्चिक का गुरु दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र मङ्गल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान से महान् शक्ति पायेगा तथा राज-समाज में बड़ा लाभ और मान प्राप्त करेगा और कार-बार व्यापार के मार्ग में बड़ी भारी सफलता और धनोन्नति करेगा और बड़ी भारी शानदारी के मार्ग से आमदनी का योग प्राप्त करेगा, तथा पाँचवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मीन राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये धन की शक्ति से कारबार के द्वारा धन की महान् वृद्धि करेगा और कुटुम्ब की

कुम्भ लग्न में १० गुरु

नं० ११३८

विशेष शक्ति पायेगा और सातवीं सामान्य शत्रु दृष्टिसे माता एवं भूमि स्थान को शुक्रकी वृषभ राशिमें देख रहा है, इसलिये भूमि की शक्तिसे लाभ प्राप्त करेगा और माता की शक्तिका लाभ सहयोग प्राप्त रहेगा और सुख के साधन मिलेंगे तथा नवमीं उच्च दृष्टि से शत्रु एवं झंझट स्थान को मित्र चन्द्रमा के कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें महान् प्रभाव रखेगा और झंझटयुक्त मार्ग से बहुत सफलता प्राप्त करेगा तथा उन्नति के लिये विशेष परिश्रम करेगा।

यदि धन का गुरु ग्यारहवें लाभ स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनी के मार्ग में स्वतन्त्र एवं आदर्श शक्ति के द्वारा विशेष सफलता प्राप्त करेगा और अपने क्षेत्र में ही आमदनी का सुन्दर मार्ग पायेगा तथा कभी-कभी लाभ के रूप में विशेष धन सम्पत्ति प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब की शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मङ्गल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई-बहन की शक्तिका लाभ पायेगा और पुरुषार्थ कर्म की शक्ति और सफलतासे कीमती लाभ पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्यामें विशेष शक्ति पायेगा और सन्तान पक्ष में सफलता और लाभ पायेगा, तथा नवमीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के मार्ग में बड़ी सुन्दर सफलता प्राप्त करेगा।
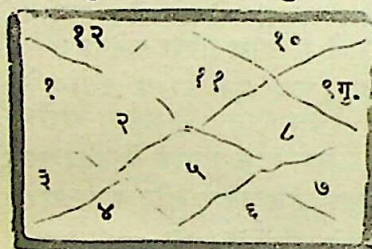
कुम्भ लग्न में ११ गुरु

१२	११	१०
१		९ गु.
२		८
३	५	७
४	६	

न० ११३९

यदि मकर का गुरु बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में नीच का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में कुछ

परेशानी रहेगी तथा आमदनी के पक्ष में कमजोरी रहेगी और बाहरी स्थानों में कुछ दिक्कतें बनेंगी और संचित धन की शक्ति का कुछ अभाव रहेगा और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ अशान्ति रहेगी तथा धन लाभ के मार्ग में कुछ थोड़ा मुनाफा मिलेगा और पाँचवीं दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में

कुम्भ लग्न में १२ गुरु

नं० ११४०
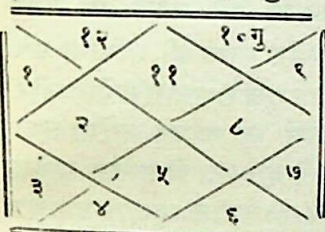
देख रहा है, इसलिये माता और भूमि के सुख सम्बन्धों में कुछ त्रुटि से युक्त शक्ति प्राप्त करेगा तथा रहने के स्थान में कुछ सुख मिलेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये शत्रु स्थान में प्रभाव शक्ति पायेगा और झंझट से धन लाभ प्राप्त करेगा और नवमी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिये आयुमे शक्ति मिलेगी और पुरातत्व धन शक्ति का लाभ पायेगा तथा जीवन की दिनचर्या में अमीरात का ढङ्ग रहेगा।

भाग्य, धर्म, माता तथा भूमि स्थानपति--शुक्र

यदि कुंभ का शुक्र प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह के अन्दर सुन्दरता और सुख सौभाग्य प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि की उत्तम शक्ति पायेगा और माता का

कुम्भ लग्नमें १ शुक्र

नं० ११४१

उत्तम आदर्श योग प्राप्त करेगा तथा धर्म का पालन बड़ी चतुराई और योग्यता के साथ करेगा और भाग्य की आदर्श शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ थोड़ी सी नीरसता के साथ स्त्री पक्ष में सुख और
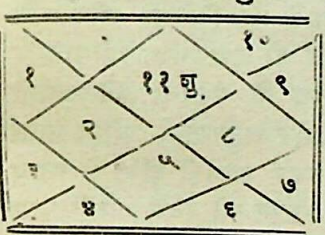
भाग्यवानी प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में थोड़ी सी कठिनाई के द्वारा बहुत सफलता पायेगा तथा बड़ी भारी उत्तम चतुराई के द्वारा लोक और परलोक दोनों की अनुकूल शक्ति पायेगा।

यदि मीन का शुक्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन संग्रह की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का बड़ा वैभव प्राप्त होगा तथा भूमि मकानादि की शक्ति का लाभ पायेगा और भाग्य की शक्ति से धन की विशेष सुख सफलता पायेगा और धन से धर्म का पालन करेगा तथा बड़ा भारी भाग्यशाली समझा जायेगा और धन का स्थान कुछ बन्धन का सा भी कार्य करता है, इसलिये माता के सुख और प्रेम में कुछ त्रुटि युक्त विशेष शक्ति पायेगा और सातवीं नीच दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और पुरातत्व के स्थान में कुछ कमी या कुछ परेशानी रहेगी तथा दिनचर्या में कुछ फिकर रहेगी।
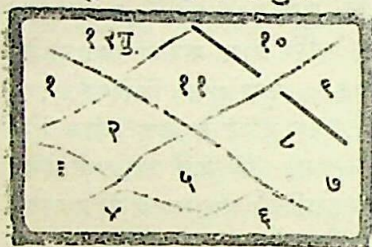
कुम्भ लग्न के २ शुक्र

नं० ११४२

यदि मेष का शुक्र तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई-बहिन के स्थान से सुख सौभाग्य प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्ति के द्वारा बड़ी भारी सफलता और सुख प्राप्त करेगा तथा माता की शक्ति से सुख मिलेगा और भूमि मकानादि की सुख शक्ति पायेगा और घरेलू सुख के साधनों को अपनी हिम्मत और चतुराई के द्वारा प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इस-

कुम्भ लग्न में ३ शुक्र
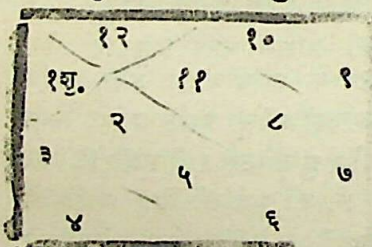
नं० ११४३

लिये भाग्य की बड़ी भारी उन्नति करेगा और धर्म का पालन करेगा एवं यश प्राप्त होगा तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठा रखेगा और उत्तम मार्ग का अनुयायी बनेगा तथा पुरुषार्थ कर्म की सफलता शक्ति के द्वारा बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और उत्साह युक्त रहेगा।

यदि वृषभ का शुक्र चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो माता के सुख की महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा भूमि मकानादि की श्रेष्ठ सुख शक्ति पायेगा तथा घरेलू सुख की प्राप्ति के उत्तम साधन पायेगा तथा घर के अन्दर श्रेष्ठ धर्म का पालन करेगा और बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और घर बैठें भाग्योन्नति के साधन प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान की शक्ति का फायदा और सुख स्वतः प्राप्त होगा तथा राज-समाज के मर्ग में बड़ी इज्जत और उन्नति रहेगी तथा भाग्य की शक्ति और सुन्दर चतुराई के योग से कारबार के स्थान में बड़ी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।
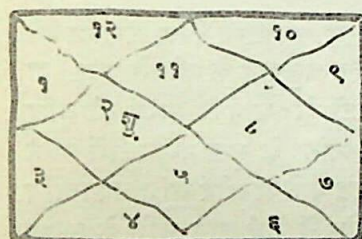
कुम्भ लग्न में ४ शुक्र

नं० ११४४

यदि मिथुन का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या बुद्धि की महान् सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और संतान पक्ष से बड़ा सुन्दर सौभाग्य प्राप्त

कुम्भ लग्न में ५ शुक्र

नं० ११४५
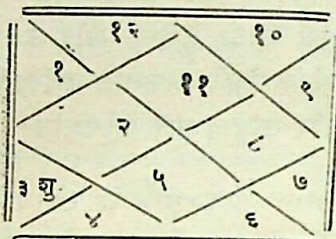
करेगा तथा बुद्धि योग द्वारा उत्तम धर्म का पालन करेगा और भगवान् पर बड़ा भारी भरोसा रखेगा और बुद्धि योग के उत्तम कर्म के द्वारा भाग्य की उन्नति करेगा तथा बहुत गहरी चतुराई से सुयश प्राप्त करेगा तथा माता और भूमि मकानादि की शक्ति पायेगा तथा बुद्धि के अन्दर सत्य, संतोष, शान्ति और सुख की प्राप्ति करेगा तथा सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये सतोगुणी चतुराई के मार्ग से धन लाभ करेगा और भाग्य तथा भगवान् के भरोसे पर अनेक प्रकार के उत्तम पदार्थों के लाभ और सफलता शक्ति पायेगा।

यदि कर्क का शुक्र—छठें शत्रु स्थान में सामान्य मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति और चतुराई के योगसे शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग से भाग्य की वृद्धि पायेगा। माता के सुख सम्बन्धोंमें कमी और झंझट पायेगा और भूमि मकानादि की शक्ति में एवं मातृ भूमि के स्थान सम्बन्धों में कमी रहेगी तथा भाग्य के पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और धर्म के यथार्थ पालनमें कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिए भाग्य की शक्ति से खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों में कुछ सफलता प्राप्त करेगा और चतुराई तथा नरमाई से प्रभाव पायेंगा।
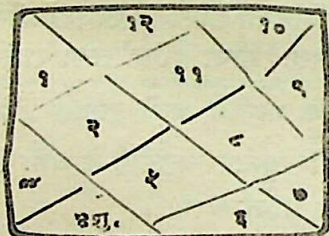
कुम्भलग्न में ६ शुक्र

नं० ११४६

यदि सिंह का शुक्र सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में कुछ थोड़ी सी नीरसता के साथ सुख और सफलता प्राप्त करेगा तथा रोजगार के पक्ष में कुछ थोड़ा परिश्रम के योग से उन्नति और सुख प्राप्त करेगा तथा माताका सहयोग पायेगा और भूमि मकानादि के रहनेके स्थानमें सुख और सुन्दरता रहेगी तथा गृहस्थके अन्दर बड़ा सुन्दर आमोद प्रमोद का ढंग रहेगा त । धर्म का पालन करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह के अन्दर सुन्दरता और सुख-सौभाग्य प्राप्त करेगा और बड़ा सौभाग्यवान् समझा जायगा और सज्जनता युक्त कर्म के मार्ग से यश प्राप्त करेगा तथा बड़ी कार्यकुशलता पायेगा ।

कुम्भ लग्न में ७ शुक्र

१२ १० ११ ९ १ २ ८ ३ ५ शु. ७ ४ ६

नं० ११४७

यदि कन्या का शुक्र—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्य के सम्बन्धमें महान् कमजोरी प्राप्त करेगा तथा धर्मके पक्षमें कुछ अनुचित और कमजोर मार्गका अनुसरण करेगा तथा माता के सुखमें बड़ी भारी कमी रहेगी और भूमि मकानादिके सुख सम्बन्धों में कुछ अशान्ति रहेगी एवं दूसरे स्थान का योग प्राप्त करेगा और आयु तथा जीवन की दीनचर्यामें कुछ शान्ति की त्रुटि रहेगी और पुरातत्व की कुछ कमी रहेगी और सातवीं उच्चदृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की मीन
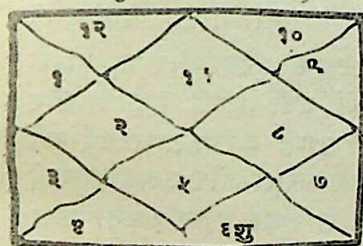
कुम्भ लग्न में ८ शुक्र

१२ १० ११ ९ १ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६शु

नं० ११४८

राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि के लिये बड़ा भारी प्रयत्न करेगा और धन प्राप्त करेगा।

यदि तुला का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्य की महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा धर्म का उत्तम पालन करेगा और माता की श्रेष्ठ शक्ति मिलेगी तथा भूमि मकानादि के सम्बन्धों में भाग्य की शक्ति से बड़ी सफलता और सुख प्राप्त करेगा और दैवी गुणों की चतुराई के योग से बड़ा सुयश पायेगा और घरेलू वातावरणके अन्दर खान-पान-आनन्द इत्यादिका उत्तम सुख साधन प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थानको सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की शक्ति से भाई-बहिन का सुख प्राप्त करेगा और पराक्रम स्थान की सफलताका योग स्वतः सरलता से प्राप्त करेगा।
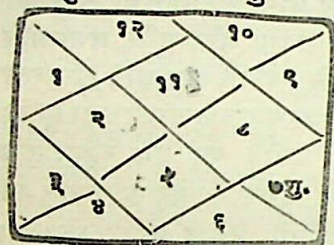
कुम्भ लग्न में ९ शुक्र

नं० ११४९

यदि वृश्चिक का शुक्र- दशम पिता एवं राज्य स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की प्रबल शक्ति के द्वारा पिता के स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में बड़ी भारी मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और कारबारके मार्ग में बड़ी भारी उन्नति और सफलता प्राप्त करेगा तथा धर्म-कर्म का पालन करेगा और उत्तम चतुराई के कर्म से सुयश प्राप्त करेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये माता की महान् शक्ति पायेगा
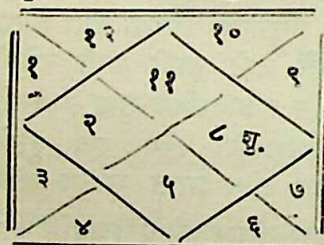
कुम्भ लग्न में १० शुक्र

नं० ११५०

और भूमि मकानादि की उत्तम शोभा पावेगा तथा घरेलू वातावरण में राजसी सुख भोगेगा।

यदि धन का शुक्र – ग्यारहवें लाभ स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्य की उत्तम शक्ति के द्वारा आमदनी के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और सुखपूर्वक धन लाभ का आनन्द प्राप्त होगा और आमदनीके मार्गमें न्याय और चतुराई के कारणों से यश प्राप्त करेगा और धर्म का पालन करेगा तथा माता का सुख लाभ पायेगा और भूमि मकानादि की लाभ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये संतान पक्ष में सुख सौभाग्य पायेगा और विद्या स्थान में बड़ी सफलता पायेगा तथा वाणी में विशेष चतुरता रहेगी।
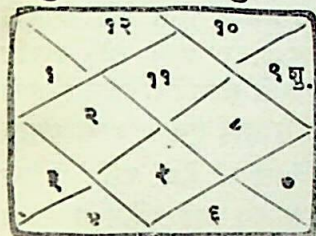
कुम्भलग्न में ११ शुक्र

नं० ११५१

यदि मकर का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से खर्चा विशेष करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष सुख और सफलता शक्ति पायेगा तथा अन्दरूनी तौर से भाग्य के पक्ष में बड़ी कमजोरी मानेगा और धर्म के मार्ग में पालन की कमजोरी रहेगी और सुयश प्राप्ति की कमी रहेगी तथा माता के सुख में कमी और वियोग पायेगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा को कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की शक्ति और चतुराई के योग से शत्रु पक्ष में सफलता पायेगा
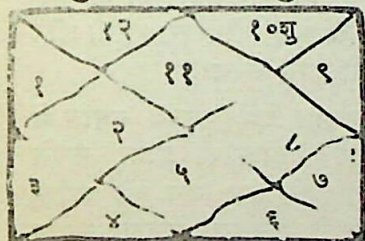
कुम्भ लग्न में १२ शुक्र

नं० ११५२

तथा झंझटों से कुछ सुख मिलेगा।

देह, खर्च तथा बाहरी स्थानपति--शनि

यदि कुम्भ का शनि प्रथम केन्द्र, देह के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो देह स्थान प सुन्दरता एवं सुडौलता पायेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से देह में कुछ कमजोरी रहेगी अथवा कभी-कभी शरीर का संकट प्राप्त होगा और बाहरी स्थानों की स्वतः शक्ति प्राप्त रहेगी तथा आदर मान और ख्याति प्राप्त करेगा और खर्चा शानदार तरीके से चलायेगा और तीसरी नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के स्थान में कुछ परेशानी रहेगी और पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी तथा उत्साह और हिम्मत की जगह कुछ लापरवाही तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ नीरसता अनुभव होगी और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानी सी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है इसलिये पिता से कुछ नीरसता रहेगी और राज-समाज कार-बार में कुछ कठिनाई से काम करेगा।
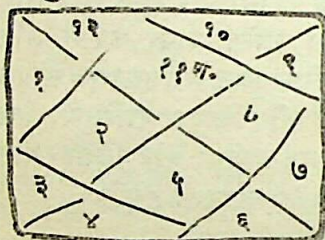
कुम्भ लग्न में १ शनि

नं० ११५३

यदि मीन का शनि—दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन की शक्ति प्राप्त करने के लिये महान् कठिन कर्म करेगा और कुछ धन जन की शक्ति पायेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से धन एवं कुटुम्ब स्थान में कमजोरी रहेगी और खर्च को रोकने की चेष्टा करने पर भी खर्चा मजबूरन अधिक हो जायगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन

कुम्भ लग्न में २ शनि

नं० ११५४
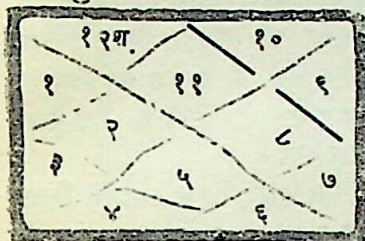
का काम करता है, इसलिये देह के सुख और सुन्दरतामें कुछ कमी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में इज्जत रहेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमि का सहयोग प्राप्त करेगा, किन्तु व्ययेश के दोष कारण से घरेलू सुख के साधनों में कुछ त्रुटि रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु और पुरातत्व शक्ति का कुछ लाभ प्राप्त करेगा तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ नीरसताई के योग से काम करेगा किन्तु अधिक मुनाफा और अधिक लाभ को पाने की प्रबल इच्छा रखेगा।

यदि मेष का शनि तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में कष्ट और कमी के कारण पायेगा तथा पराक्रम शक्ति में कुछ कमजोरी रहेगी और व्ययेश होने से तथा नीच होने से देह की सुन्दरता और स्वाथ्य में कमी रहेगी तथा खर्च और बाहरी सम्बन्धों में कुछ परेशानी करेगा किन्तु दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्च और बाहरी स्थान के सम्बन्धों में शक्ति प्राप्त करेगा तथा

कुम्भ लग्न में ३ शनि

नं० ११५५

तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह का बैठना भी शक्तिप्रदायक होता है और तीसरी मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि तथा सन्तान पक्ष में शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने से कुछ त्रुटि रखेगा और

सातवीं उच्च दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति पैदा करेगा और बड़ा भाग्यशाली समझा जायेगा और धर्म के पालन का ध्यान रखेगा और क्रूर ग्रह का नीच होकर पराक्रम में बैठने से येन केन प्रकारेण अपनी उन्नति करने में तल्लीन रहेगा।

यदि वृषभ का शनि—चौथे केन्द्र, माता एवं भूमि के स्थानमें मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता और भूमि के स्थान पर अपूर्ण अधिकार प्राप्त करेगा क्योंकि शनि व्ययेश होने के कारण दोषी है, इसलिये अपने स्थान में सुख पूर्वक रहने पर भी घरेलू वातावरण में सुख शान्ति की कुछ कमी रहेगी और घर बैठे खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त रहेगी और बाहरी स्थानों का सम्बन्ध सुखदाता बनेगा

कुम्भ लग्न में ४ शनि

नं० ११५६
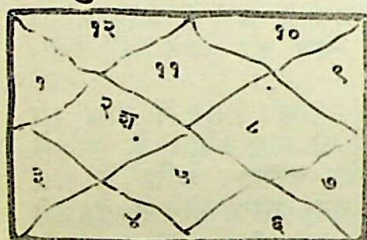
तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये अपने दैहिक प्रभाव और बाहरी सम्बन्धों के कारण से शत्रु स्थान में प्रभाव और सावधानता प्राप्त करेगा और झंझट तथा परेशानियोंसे बचाव पा सकेगा और सातवीं शत्रु दृष्टिसे पिता एवं राज्यस्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता से कुछ नीरसता रहेगी और राज-समाज कारबार के मार्ग में कुछ कठिनाई से कामयाबी प्राप्त करेगा और दसवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और नाम की प्रसिद्धि प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष से देह में कुछ कमजोरी व फिकर रहेगी तथा घर बैठे मान्यता प्राप्त होगी।

यदि मिथुन का शनि—पाँचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या की शक्ति प्रप्त करेगा तथा बुधि योग द्वारा खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करेगा, तथा

कुम्भ लग्न में ५ शनि

नं० ११५७
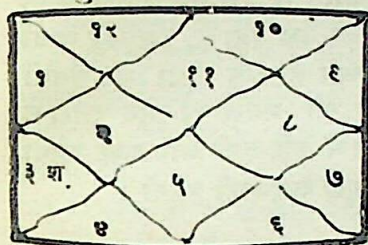
संतान पक्ष में कुछ शक्ति रहेगी और बुद्धि योग द्वारा बाहरी स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध एवं मान प्राप्त करेगा, किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से विद्या में कुछ कमी रहेगी और संतान पक्ष में कुछ हानि प्राप्त होगी और दिमाग के अन्दर कुछ आत्मबल और कुछ परेशानी पावेगा और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है इसलिये आमदनीके मार्ग में कुछ नीरसताई से सफलता पावेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री और रोजगार के पक्ष में कुछ परेशानी अनुभव करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब की वृद्धि करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्नशील और चिन्तित रहेगा।

यदि कर्क का शनि छठे शत्रु स्थान में एवं झंझट स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो देह के द्वारा अधिक परिश्रम करके प्रभाव की विशेष वृद्धि करेगा तथा बाहरी स्थानों में सम्बन्ध प्राप्त करके प्रभावशाली तथा परतंत्रतायुक्त कर्म करेगा और व्ययेश होने के दोष कारण से देह में कुछ सुन्दरता की कमी और कुछ परेशानी प्राप्त करेगा तथा खर्च के मार्ग में कुछ दिक्कतें रहेंगी और शत्रु पक्षमें प्रभाव रखेगा तथा छठे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् हो जाता है, इसलिए अपने अन्दर की कमजोरी को

कुम्भ लग्न में ६ शनि
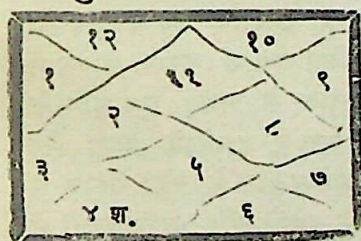
नं० ११५८

जाहिर न करके बड़ी भारी हिम्मत शक्तिसे काम करेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में कुछ शक्ति पावेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ त्रुटि युक्त शक्ति मिलेगी और जीवन की

दिनचर्या में प्रभाव रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक करेगा तथा बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध रहेगा और दसवीं नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ कमी और कष्ट रहेगा तथा पुरुषार्थ कर्म की शक्ति के अन्दर कुछ कमजोरी रहेगी।

यदि सिंह का शनि—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ नीरसता एवं परेशानियों से युक्त शक्ति प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों से सफलता शक्ति पायेगा क्योंकि व्ययेश होने का दोष है, इसलिये कुछ नुकसान और परेशानियों के योग से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध द्वारा शक्ति पा सकेगा और खर्चा अधिक करना पड़ेगा तथा तीसरी उच्च दृष्टि से भाग्य स्थान को एवं धर्म स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति प्राप्त करने से भाग्यवान् समझा जायगा और धर्म के मार्ग में विशेष श्रद्धा रखेगा तथा ईश्वर में भरोसा रखेगा और सातवीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता एवं प्रसिद्धता का योग पावेगा किन्तु व्ययेश दोष के कारण से देह में कुछ परेशानी रहेगी तथा दसवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये माता और भूमि की कुछ शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से माता और भूमि के सम्बन्धों में कुछ त्रुटि रहेगी और घरेलू सुखों में भी कुछ कमी रहेगी।
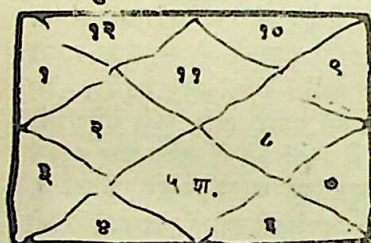
कुम्भ लग्न में ७ शनि

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ श. ७ ४ ६

नं० ११५९

यदि कन्या का शनि—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो देह के सम्बन्ध में बड़ी परेशानी प्राप्त करेगा और खर्च के मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ झंझटों से शक्ति पायेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ हानि लाभ दोनों की शक्ति पायेगा क्योंकि व्ययेश होने के दोष कारण से और अष्टम बैठने के दोष कारण से डबल दोष बन गया है, इसलिये प्रायः उपरोक्त मार्गों में परेशानी के कारण प्राप्त करता है, किन्तु आठवें स्थान पर शनि के बैठने से आयु में वृद्धि प्राप्त होती है, इसलिए आयु पर संकट आने पर भी जीवन की रक्षा होती रहेगी और तीसरी शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता पायेगा और राज-समाज कारबार की उन्नति में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब के मार्गमें कुछ चिंतित रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिए विद्या और संतान पक्ष में शक्ति पायेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से विद्या और संतान पक्ष में कुछ त्रुटि रहेगी।
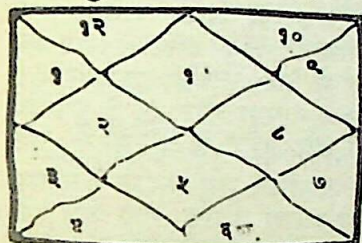
कुम्भ लग्न में ८ शनि

नं० ११६०

यदि तुला का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो देह में सुन्दरता और सुडौलता प्राप्त करेगा और बड़ा भाग्यशाली बनेगा तथा ईश्वर और धर्म को मानने एवं पालन करने वाला बनेगा और खूब खर्चा करेगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में भाग्य की शक्ति से विशेष

कुम्भ लग्न में ९ शनि

नं० ११६१
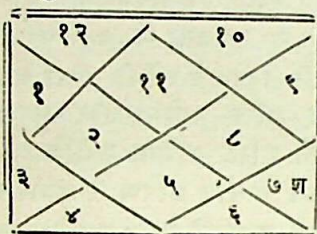
सफलता प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से भाग्य और धर्म के मार्गमें कभी-कभी हानि तथा परेशानी के कारण भी प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतों से सफलता शक्ति पायेगा तथा कुछ मुफ्त सा लाभ भी पायेगा और सातवीं नीच दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख में बड़ी त्रुटि और परेशानी पायेगा और देह के पुरुषार्थ में कुछ कमजोरी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में प्रभाव रखने के लिये विशेष शक्ति का प्रयोग करेगा किन्तु कुछ शत्रु पक्ष एवं झंझटों के माग में कुछ कठिनाइयों से सफलता शक्ति पायेगा किन्तु स्वयं उच्च होने से भाग्यवान् समझा जायेगा।

यदि वृश्चिक का शनि - दशम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो राज-समाज में मान और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा देह में गौरव और स्वाभिमान रखेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से पिता स्थान में कुछ हानि या कमी रहेगी और कारबार की उन्नति के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्राप्त होंगी तथा राज-समाज में भी कुछ परेशानी बनेगी और तीसरी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष शा दार

कुम्भ लग्न में १० शनि

नं० ११६२

रहेगा और बाहरी स्थानों से विशेष महत्व दायक सम्बन्ध बनेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कमी के साथ माता और भूमि का सुख पायेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से स्त्री एवं

रोजगार के स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ कमी और नीरसता का योग पायेगा तथा रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और गृहस्थ के सञ्चालन कार्यों में कुछ कठिनाइयों से शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि धन का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बहुत शक्तिशाली हो जाता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन लाभ की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा आमदनी की वृद्धि करने में बड़ी भारी तत्परता से काम करता रहेगा और खर्चे की शक्ति से आमदनी में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा तीसरी दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और नाम प्राप्त करेगा तथा उन्नति करने में सदैव तत्पर रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष कारण से कुछ त्रुटि युक्त विद्या और सन्तान पक्ष की शक्ति प्राप्त करेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति रहेगी और पुरातत्व शक्ति के मार्ग में सफलता पायेगा और जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा।
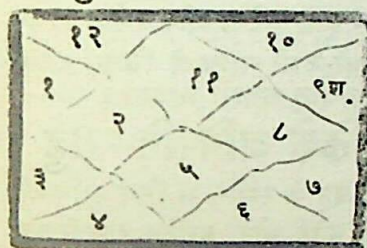
कुम्भ लग्न में ११ शनि

नं० ११६३

यदि मकर का शनि—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्चा बहुत अधिक करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होने के दोष कारण से देह में कमजोरी रहेगी तथा बाहरी स्थानों में खास तौर से आना जाना रहेगा और अपने मुख्य स्थान में कुछ कमी

अनुभव करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष कारण से धन एवं कुटुम्ब स्थान की वृद्धि करने के लिये विशेष चिन्तित रहेगा और धन संग्रह में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशिमें शत्रु स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु स्थान में कुछ थोड़ी सी परेशानी के योग से प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा और दसवीं उच्च दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थानको मित्र शुक्रकी तुला राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की विशेष वृद्धि करेगा और धर्मका पालन करेगा तथा व्ययेश होने के कारण कभी-कभी भाग्य में चिन्ता रहेगी किन्तु लग्नेश होने के कारण बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा।

कुम्भ लग्न में १२ शनि

नं० ११६४

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्तिके अधिपति--राहु

यदि कुम्भ का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो देह के स्थान में कोई चोट वगैरह लगेगी एवं देह की सुन्दरता में कुछ कमी रहेगी तथा स्वास्थ्य में कुछ कमजोरी रहेगी और कुछ गुप्त चिन्ता रहेगी किन्तु मित्र की राशि पर दृढ़ ग्रह के स्थान में राहु बैठा है, इसलिये अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिये महान् प्रयत्न करेगा और दृढ़ता की शक्ति से उन्नति करेगा तथा असाधारण प्रयास के मार्ग में भी सफलता प्राप्त करेगा किन्तु कभी कभी दिक्कतों और परेशानियों से टक्कराता रहेगा परन्तु दिमाग की पेचीदा गम्भीर चाल के द्वारा मान और प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा।

कुम्भ लग्न में १ राहु

नं० ११६५

यदि मीन का राहु— दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन कोष में कमी करेगा और धन के अभाव से कभी-कभी बड़ा कष्ट अनुभव करेगा तथा कुटुम्ब की शक्तिसे बहुत थोड़ा सुख मिलेगा और कभी-कभी धनका अचानक नुकसान प्राप्त करेगा किन्तु देवगुरु बृहस्पति के स्थान में होने से बुद्धि के आदर्श गुप्त सूझ के कारणों से मान युक्त मार्ग से धन की प्राप्ति करेगा और बड़ा धनवान् समझा जायगा परन्तु अनेकों बार धन की हानियाँ प्राप्त करने के बाद धनकी वृद्धि करनेके लिये बड़े कष्ट साध्य मार्ग एवं कर्जके द्वारा तथा महान् हिम्मत शक्ति एवं गुप्त चिन्ताओंसे सफलता प्राप्त करेगा।
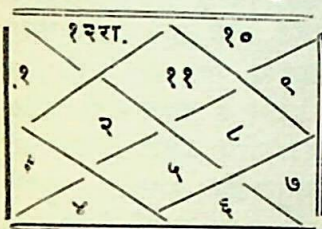
कुम्भ लग्न में २ राहु

१२रा.		१०
१	११	९
	२	८
३	५	७
४		६

नं० ११६६

यदि मेष का राहु तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता हो जाता है, इसलिये पराक्रम शक्ति के द्वारा महान् सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और बड़ी जबरदस्त हिम्मत शक्ति से काम करेगा क्योंकि गरम ग्रह की राशिपर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये प्रभाव की महानता रखने के लिये बड़ा भारी कष्ट साध्य प्रयत्न करेगा किन्तु भाई बहिन के पक्षमें संकट या विरोध के साधन प्राप्त करेगा राहुके स्वाभाविक गुणों के कारण अन्दरूनी तौर से अपनी हिम्मत शक्तिके अन्दर बहुत बार कमजोरियाँ अनुभव करेगा और अपनी गुप्त कमजोरी पर चिन्ता मानते हुए भी प्रकट में विजयी रहेगा।
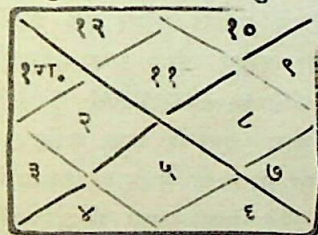
कुम्भ लग्न में ३ राहु

नं० ११६७

यदि वृषभ का राहु चौथे केन्द्र माता एवं भूमिके स्थान में मित्र

शुक्र की राशि पर बैठा है तो माता के सुख सम्बन्धों में कण्टक और कष्ट के कारण प्रदान करेगा तथा भूमि के सुख में कमी रहेगी और

कुम्भ लग्न में ४ राहु

नं० ११६८
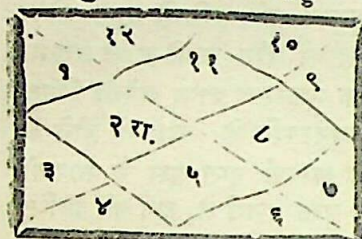
घरेलू वातावरण में कुछ अशान्ति के कारण प्राप्त होते रहेंगे किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर बैठा है, इसलिये कभी-कभी विशेष अशान्तिका योग प्राप्त होनेपर भी गहरी चतुराईके योगसे सुखके साधनों को प्राप्त करही लेगा तथा बहुत से घरेलू संघर्षों को पार करने के बाद अन्त में सुख के साधनों को मजबूती से पा सकेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण घरेलू सुखों के मार्ग में कुछ कमी और कुछ अशान्ति का योग किसी अंशों में अवश्य रहेगा।

यदि मिथुन का राहु- पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा बड़ा बोलने वाला होगा एवं वाणी और दिमाग की विशेष कला एवं योग्यता रखेगा और गुप्त युक्तियों के द्वारा बड़ा भारी काम करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के

कुम्भ लग्न में ५ राहु

नं० ११६९

कारण संतान पक्ष में कुछ कष्ट एवं कुछ कमी प्राप्त करनेपर संतान शक्ति पावेगा और विद्या स्थान में अंदरूनी कुछ कमजोरी रहेगी तथा विवेकी बुध की राशि पर उच्चका होकर राहु बैठा है, इसलिये विद्या बुद्धि तथा संतान पक्षके मार्ग में विवेक शक्ति के योग से बड़ी सफलता प्राप्त करेगा तथा बात चीत में प्रभाव जाहिर करता रहेगा।

यदि कर्क का राहु—छठे शत्रु स्थान में चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा तथा छठे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल प्रदान करता है, इसलिये झगड़े झंझटों और विपक्षियों के मुकाबले में गुप्त युक्तियों के बल से विजय प्राप्त करेगा तथा राहुके स्वाभाविक गुणों के कारण शत्रु पक्ष में कुछ अन्दरूनी तौरसे परेशानी अनुभव करेगा किन्तु प्रकट रूपमें बड़े भारी धैर्य और हिम्मत शक्ति से काम करके सफलता प्राप्त करेगा तथा ननसाल पक्ष में हानि पायेगा और मनोयोग के स्वामी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इसलिये अनेक प्रकार की कठिनाइयों को दमन करने के मार्ग में मनोयोग की गुप्त सूझ के द्वारा सफलता पायेगा।
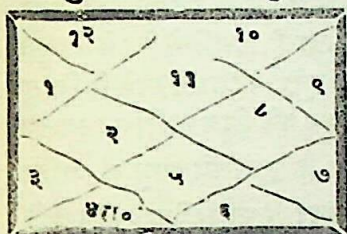
कुम्भ लग्नमें ६ राहु

नं० ११७०

यदि सिंह का राहु—सातवें स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ा कष्ट और कमी के कारण प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के संचालन मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और रोजगार के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ और कुछ परेशानियाँ रहेंगी तथा मूत्र इन्द्रिय में कुछ विकार प्राप्त करेगा और तेजस्वी सूर्य की राशि पर बैठा है, इसलिये रोजगार के पक्ष में कठिन कठिनाइयाँ प्राप्त करके भी प्रभाव शक्ति पायेगा और बड़ी-बड़ी निराशाओं से टकरा-टकरा करके उन्नति का मार्ग प्राप्त करेगा तथा गुप्त युक्तियों तथा महान् धैर्य की शक्ति से गृहस्थ में शक्ति प्राप्त करेगा।
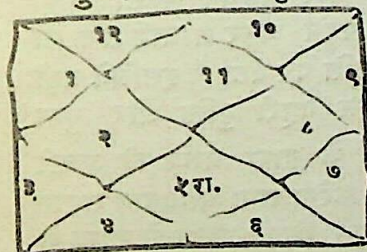
कुम्भ लग्नमें ७ राहु

नं० ११७१

यदि कन्या का राहु—आठवें आयु, मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में

मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो पुरातत्व सम्बन्ध में कुछ हानि पायेगा तथा आयु के सम्बन्ध में अनेकों बार चिन्तायें प्राप्त होंगी तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानियाँ रहेंगी और अष्टम स्थान का सम्बन्ध उदर से भी होता है, इसलिये पेट के निचले हिस्से में कुछ परेशानी रहेगी किन्तु विवेकी बुध की मित्र राशि पर स्वक्षेत्र के समान बैठा है इसलिये आयु में शक्ति देगा और पुरातत्व का कुछ लाभ करेगा तथा गुप्त विवेक की गहरी सूक्ष्म शक्ति के द्वारा जीवन का ढंग प्रभावशाली रूप में व्यतीत करेगा और अन्त में उन्नति रहेगी।
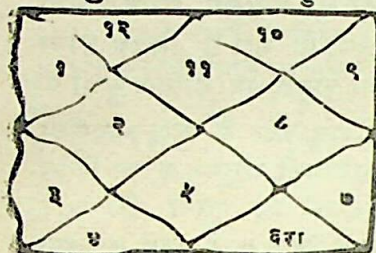
कुम्भ लग्न में ८ राहु

नं० ११७२

यदि तुला का राहु—नवम त्रिकोण भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण भाग्य में कुछ परेशानी रहेगी तथा धर्म के स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और भाग्य की उन्नति के मार्ग में अनेकों बार अड़चनें पड़ती रहेगी किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र की मित्र राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी जबरदस्त गहरी युक्ति और गुप्त चतुराई के द्वारा भाग्य की अच्छी उन्नति करेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा फिर भी किसी प्रकार से भाग्य के अन्दरूनी हिस्से में कुछ कमजोरी अनुभव करेगा किन्तु भाग्य की उन्नति के लिये कठिन प्रयत्न करता रहेगा।
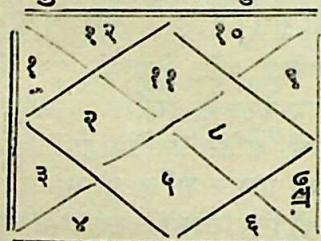
कुम्भ लग्नमें ९ राहु

नं० ११७३

यदि वृश्चिक का राहु—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में

कुम्भ लग्न में १० राहु

नं० ११७४

शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में बड़ा कष्ट एवं झंझट प्राप्त करेगा तथा राज-समाज के मार्गमें कुछ परेशानियाँ रहेंगी और कारबार की उन्नतिके रास्ते में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ रहेंगी किन्तु गरम ग्रह मंगल की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये उन्नति प्राप्त करने के लिये बड़ा कठिन और कठोर प्रयत्न करेगा तथा अनेकों संघर्ष प्राप्त करने के बाद उन्नति का मार्ग प्राप्त करेगा और कभी-कभी इज्जत आबरू की रक्षा करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा किन्तु गुप्त शक्ति से सफलता पायेगा।

यदि धन का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी कमजोरी और कठिनाइयाँ रहेंगी तथा ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, किन्तु यह नीच का होने के कारण कुछ अधिक लाभ की उन्नति न करके थोड़ा लाभ प्राप्त करेगा तथा देवगुरु बृहस्पति के घर में बैठा है, इसलिये कुछ न्यूनता युक्त मान सम्मान के मार्ग से आमदनी की शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनी के मार्ग में बड़ी चिन्ता युक्त प्रणाली से तथा कुछ गुप्त युक्तियों के बल से सफलता पायेगा।
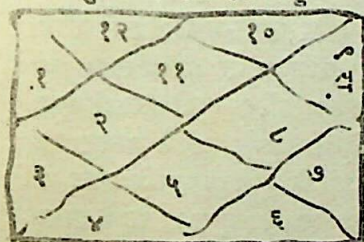
कुम्भ लग्नमें ११ राहु

नं० ११७५

कुम्भ लग्न में १२ राहु

नं० ११७६
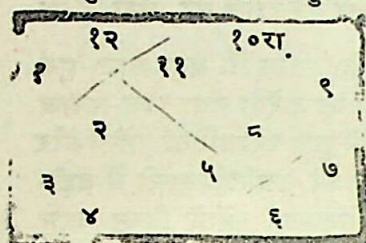
यदि मकर का राहु—बारहवें खर्च स्थान एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में बड़ी दिक्कतें रहेंगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ चिन्ताओंसे टकराना पड़ेगा तथा राहुके स्वाभाविक गुणों के कारणों से खर्च के लिये कभी-कभी विशेष चिन्तित होना पड़ेगा किन्तु दृढ़ ग्रह शनिकी मित्र राशि पर होने के कारणों से खर्च की शक्ति को पाने के लिये कठोर प्रयत्न करेगा और प्रकट रूप में बड़ा खर्चीला बनेगा किन्तु अन्दरूनी तौर से खर्च के मार्ग में कुछ कमी का अनुभव करेगा और गुप्त युक्ति के बल से खर्च की शक्ति तथा बाहरी स्थान की शक्ति पावेगा।

कष्ट, कठिन कर्म तथा गुप्त शक्तिके अधिपति--केतु

यदि कुम्भ का केतु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो कठोर ग्रह की राशि पर कठोर ग्रह बैठा है, इसलिये बड़े कड़े स्वभाव के द्वारा कार्य करेगा तथा व्यक्तित्व की उन्नति पाने के लिये महान् कठिन कर्म करेगा और कभी-कभी देह में कोई चोट या घाव प्राप्त करेगा तथा देह की सुन्दरता और सुडौलता में कुछ कमी रहेगी किन्तु अपने अन्दर की कुछ कमी के होते हुए भी प्रकट में बड़ी हिम्मत और गुप्त शक्ति के द्वारा उन्नति की तरफ बढ़ता रहेगा और कोई महान् संकट आने पर भी धैर्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा तथा किसी विशेष कार्य के द्वारा प्रभाव की स्थिर शक्ति प्राप्त करके मान और गौरव पायेगा।

कुम्भ लग्न में १ केतु

नं० ११७७

यदि मीन का केतु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो धन के कोष में बड़ी भारी कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब स्थान में क्लेश और झंझट रहेगा तथा धन पूर्ति करने के लिये महान् कठिन कर्म करेगा किन्तु देवगुरु बृहस्पति की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये आदर्श वादिता के मार्ग से धन की प्राप्ति का साधन रहेगा और कभी-कभी कर्ज के द्वारा बड़ी समझदारी से धन के क्षेत्र की पूर्ति करके कार्य संपादन करेगा किन्तु जीवन में कभी-कभी धन के पक्ष से महान् संकट का योग बनने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से सफलता का मार्ग प्राप्त करेगा तथा धन की शक्ति को, सुचारु रूप में प्राप्त करने के लिये सदैव भारी प्रयत्न करता रहेगा।
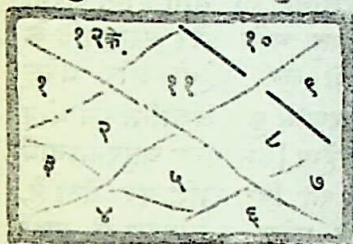
कुम्भ लग्न में २ केतु

नं० ११७८

यदि मेष का केतु—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये पराक्रम स्थान से महान् सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और बड़ी जबरदस्त हिम्मत शक्ति से उद्योग करता रहेगा तथा गरम ग्रह मंगल की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये कठिन से कठिन कष्ट साध्य कर्म को करके भी उन्नति का मार्ग पकड़े रहेगा और गुप्त शक्ति के बल से प्रभाव रखेगा तथा केतु के स्वाभाविक गुणके कारण भाई बहिनके पक्ष में कष्ट और हानि का योग पायेगा तथा कभी-कभी आन्तरिक रूप से हिम्मत शक्ति बिल्कुल टूट जाने पर भी

कुम्भ लग्न में ३ केतु

नं० ११७९

प्रकट में हिम्मत नहीं हारेगा और अन्त में पुनः शक्ति सम्पन्नता प्राप्त करेगा।

यदि वृषभ का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण माता के स्थान में कुछ हानि या परेशानी का योग प्राप्त करेगा तथा मातृ भूमि और मकानादि के सुखों में कमी रहेगी और घरेलू वातावरण में कुछ अशान्ति का योग प्राप्त रहेगा किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्रदेव की मित्र राशि पर बैठा है, इसलिये घरेलू वातावरण के सुखों की प्राप्ति के मार्ग में बड़ी भारी चतुराई की गुप्त शक्ति के द्वारा सफलता पायेगा तथा भूमि मकानादि के सुखों की वृद्धि के लिये बड़ा कठिन परिश्रम करेगा और सुख के साधनों में कुछ त्रुटि युक्त प्रभाव रहेगा।
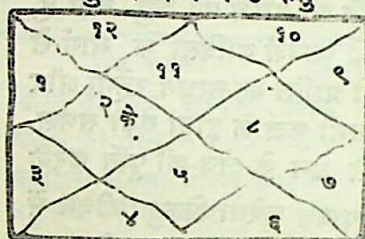
कुम्भ लग्न में ४ केतु

नं० ११८०

यदि मिथुन का केतु - पञ्चम त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में बड़ी भारी कठिनाइयां प्राप्त होंगी और विद्या ग्रहण करनेके लिये महान् कठिन परिश्रम करने पर भी विद्या के क्षेत्र में कमजोरी रहेगी तथा संतान पक्षमें महान संकट प्राप्त होगा और संतान सुख प्राप्त करने के लिये बड़े कष्ट साध्य कर्म के गुप्त प्रयोग करेगा किन्तु विवेकी बुध की राशि पर केतु बैठा है और बुध अष्टमेश होने से दोषी हो गया है, इसलिये संतान पक्ष में कुछ त्रुटियुक्त ही वातावरण रहेगा और बुद्धि तथा
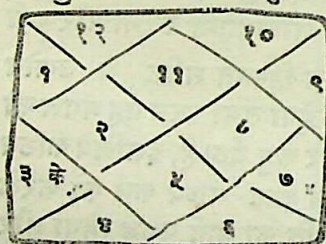
कुम्भ लग्न में ५ केतु

नं० ११८१

वाणी के द्वारा सत्य और शील की विशेष कमी रहेगी तथा दिमाग में अशान्ति रहेगी।

यदि कर्क का केतु—छठें शत्रु स्थान में एवं झंझट स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो केतु के स्वाभाविक गुण के कारण, शत्रु पक्ष से कुछ अशान्ति करेगा तथा ननसाल पक्ष में कमी और कष्ट का योग बनावेगा किन्तु छठें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और मनोयोग के स्वामी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है इसलिये मनोयोग की गुप्त शक्ति के द्वारा शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा और बड़े भारी कठिन परिश्रम के द्वारा, प्रभाव की वृद्धि करने में सदैव तत्पर और कटिबद्ध रहेगा, किन्तु कभी-कभी शत्रु पक्ष से विशेष भय अनुभव होने पर भी प्रकट में हिम्मत नहीं हारेगा तथा गुप्त धैर्य की शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा।
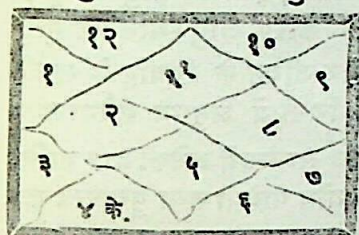
कुम्भ लग्न में ६ केतु—

नं० ११८२

यदि सिंह का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो स्त्री पक्ष में महान् संकट प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग में बड़ा कष्ट साध्य कठिन कर्म के द्वारा काम करेगा और कई बार रोजगार की महान् विफलताओं को प्राप्त करने से रोजगार के मार्ग में परिवर्तन प्राप्त करेगा और गृहस्थके संचालन क्षेत्र में बड़ी दिक्कतों और कठिनाइयों से कार्य करेगा तथा गरम ग्रह सूर्य की राशि पर केतु बैठा है, इसलिये मूत्रेन्द्रिय में कुछ विकार रहेगा तथा स्त्री के स्वभाव में बड़ी तेजी रहेगी और स्त्री तथा रोजगार
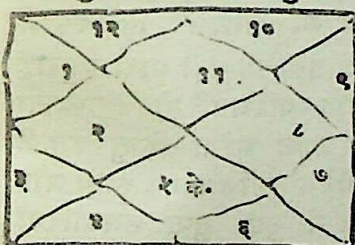
कुम्भ लग्न में ७ केतु

नं० ११८३

के पक्ष में घोर संकटों का योग पाने के बाद पुनः शक्ति प्राप्त होगी किन्तु शक्ति मिलने पर भी कुछ असंतोष रहेगा।

यदि कन्या का केतु—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो बुध की कन्या राशि पर राहु या केतु स्वक्षेत्र के समान बलवान् माने जाते हैं, इसलिये आयु की वृद्धि करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण आयु स्थान पर मृत्यु तुल्य संकट अनेकों बार प्राप्त करेगा और जीवन के निर्वाह के सम्बन्धों में चिन्तायें अनुभव करेगा तथा पुरातत्व सम्बन्धमें अनेकों बार हानियों के योग पायेगा तथा पुरातत्व का सामान्य लाभ प्राप्त रहेगा और विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये जीवन की निर्वाहक शक्ति को पाने के लिये गुप्त विवेक की शक्ति से कठिन कर्मके द्वारा सफलता पायेगा।
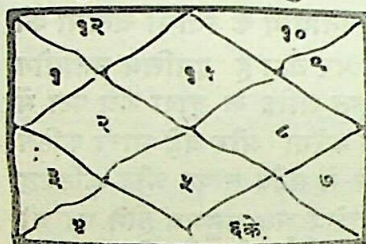
कुम्भ लग्न में ८ केतु

नं० ११८४

यदि तुला का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में कुछ चिन्तायें प्राप्त करेगा और भाग्योन्नति के मार्ग में महान् कठिन कर्म और गुप्त शक्ति के योग से सफलतायें प्राप्त करेगा किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्रदेव की राशि पर मित्र रूप में बैठा है, इसलिये बड़ी भारी चतुराई और कठिन परिश्रमके योगसे सफलता शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणोंके कारण भाग्य और धर्म के पक्ष में कुछ गुप्त कमजोरियां रहेंगी और कभी-कभी भाग्य स्थानमें घोर निराशाओं का सामना
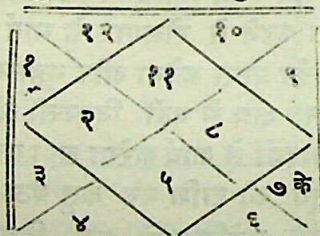
कुम्भ लग्नमें ९ केतु

नं० ११८५

पाने पर भी गुप्त धैर्य की शक्ति से सफलतायें पायेगा तथा भाग्य स्थान में फिर भी कुछ त्रुटि अनुभव करेगा।

यदि वृश्चिक का केतु—दशम केन्द्र पिता एवं राज्यस्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में बड़ा कष्ट प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में परेशानियों के कारण पायेगा और कारबारके मार्गमें बड़ा कठिन परिश्रम करेगा और गरम ग्रह मंगल की राशि-पर केतु बैठा है, इसलिये उन्नति और मान की वृद्धि करने के लिये गुप्त शक्ति के बल से महान् कठिन प्रयत्न करेगा तथा उन्नति के मार्ग में अनेकों बार बिफलतायें प्राप्त करने पर भी अन्त में शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु अपनी आन्तरिक स्थिति के दायरे में कुछ ऐसी कमजोरी पायेगा जिसके कारण कुछ गुप्त दुःख का अनुभव करेगा परन्तु उत्साह पूर्वक उन्नति के मार्ग में लगा रहेगा।
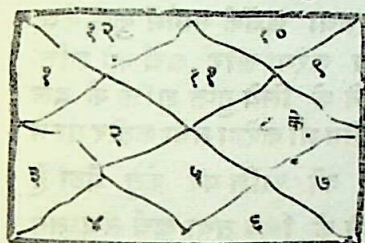
कुम्भ लग्न में १० केतु

नं० ११८६

यदि धन का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर बैठा है तो आमदनीके मार्ग में बड़ी भारी शक्ति प्राप्त करेगा और ग्यारहवें स्थानपर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये बड़ा भारी नफा खाने का कार्य करेगा तथा कभी-कभी मुफ्त का साधन लाभ भी पाता रहेगा और केतु देवगुरु बृहस्पति के घरमें उच्च का होकर बैठा है, इस लिये आदर्शवाद की उच्चतम प्रणाली से बहुत अधिक धन पैदा करेगा तथा आमदनी के मार्ग में अधिक से अधिक उन्नति करने का

कुम्भ लग्न में ११ केतु

नं० ११८७

सदैव भारी प्रयत्न करता रहेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण आमदनी के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी।

कुम्भ लग्नमें १२ केतु

नं० ११८८

यदि मकर का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो खर्चा अधिक करेगा तथा खर्चके मार्गमें कुछ कष्ट अनुभव करेगा और खर्च की शक्ति को पाने के लिये गुप्त शक्ति के बल का प्रयोग भी करेगा तथा कठोर गरम ग्रह शनि की राशि पर केतु बैठा है इसलिये बाहरी सम्बन्धों में शक्ति पाने के लिये तथा खर्च संचालन की शक्ति के लिये महान् कठिन परिश्रम का कर्म करेगा और अनेकों बार निराशाओंसे टकरा-टकरा करके भी अन्तमें खर्च की और बाहरी सम्बन्धों की शक्ति को प्राप्त करेगा और विशेष प्रयत्न करते रहने पर भी इस मार्गमें अन्दरूनी कुछ कमजोरी महसूस करेगा।
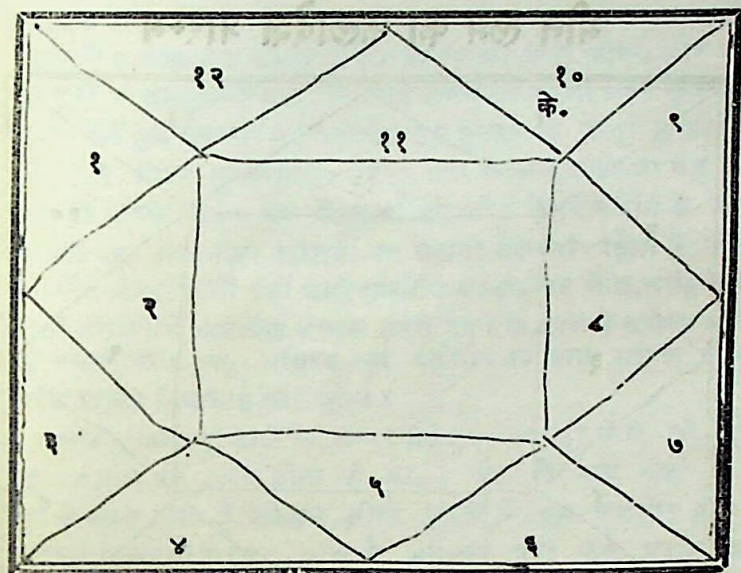
॥ कुम्भ लग्न समाप्त ॥

मीन लग्न का फलादेश प्रारम्भ
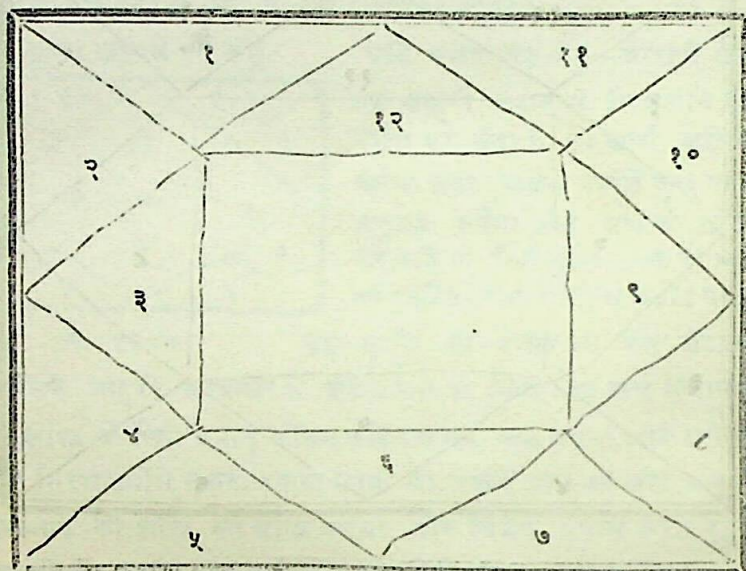
नवग्रहों द्वारा भाग्यफल

(कुण्डली नं० १२९६ तक में देखिये)

प्रिय पाठक गण—ज्योतिष के गम्भीर विषय को अति सरल और सत्य रूप में जानने के लिये यह अनुभव सिद्ध विषय आपके सम्मुख रख रहे हैं।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन पर नवग्रहों का दो प्रकारों से असर होता रहता है, अर्थात् जन्म के समय, जन्म कुण्डली के अन्दर नवग्रह जिस २ स्थान पर जैसा २ अच्छा बुरा स्वभाव लेकर बैठे होते हैं उसका फल समस्त जीवन भर, जीवन के एक तरफ हमेशा होता रहता है और जीवन के दूसरी तरफ नवग्रहों द्वारा हमेशा पंचांग गोचरगति के अनुसार राशि परिवर्तन करते रहने के कारणों से

हर एक लग्न वालों पर भिन्न-भिन्न रूप से अच्छा बुरा असर होता रहता है। अतः इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन और भाग्य की पूरी २ जानकारी करने के लिये प्रथम तो अपनी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों का फलादेश इस पुस्तक के अन्दर कुण्डली नं० ११८९ से लेकर कुण्डली नं० १२९६ तक के अन्दर जो-जो ग्रह जहाँ बैठा हो उससे मालूम कर लेना चाहिये और दूसरे पंचांग के अन्दर जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर चलता बदलता रहता है उसका फलादेश प्रथम के नौ ग्रहों वाले पृष्ठों से मालूम कर लेना चाहिये अतः दोनों प्रकारों से फलादेश मालूम करते रहने से आपको समस्त जीवन का नक्शा तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान आपके सामने सदैव प्रत्यक्ष दिखलाई देता रहेगा।

नोट—जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे हुए नवग्रहों में से जो कोई ग्रह २७ अंश से ऊपर होता है या ३ अंश से कम होता है या सूर्य से अस्त होता है तो इन तीनों सूरतों में ग्रह कमजोर होने के कारणों से अपनी भरपूर शक्ति के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर पाते हैं। जन्म कुण्डली के अन्दर किसी ग्रह के साथ कोई ग्रह बैठा होगा या जहाँ-जहाँ जिन-जिन स्थानों में ग्रहों की दृष्टियाँ बतलाई हैं उन-उन स्थानों में यदि कोई ग्रह बैठा होगा तो उस ग्रह पर भी उसका फल लागू समझा जायेगा।

१२ मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—सूर्यफल

आप की जन्म कुण्डली में सूर्य जिस स्थान पर बैठा है उसका फलादेश कुण्डली नं० ११८९ से १२०० तक में देखिये और समय कालीन सूर्य का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२· जिस मास में सूर्य मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११८९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में सूर्य मेष राशि पर हों, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में सूर्य मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में सूर्य कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में सूर्य सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९४ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में सूर्य कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९५ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास सूर्य तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९६ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में सूर्य वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में सूर्य धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९८ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस मास में सूर्य मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० ११९९ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस मास में सूर्य कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२०० के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों का समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—चन्द्रफल

जन्मकालीन चन्द्रमा का फल कुण्डली नं० १२०१ से १२१२ तक में देखिये और समय कालीन चन्द्रमा का फल निम्न प्रकारसे देखिये।

१२ जिस दिन चन्द्रमा मीन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस दिन चन्द्रमा मेष राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस दिन चन्द्रमा वृषभ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस दिन चन्द्रमा मिथुन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस दिन चन्द्रमा कर्क राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०५ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस दिन चन्द्रमा सिंह राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०६ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस दिन चन्द्रमा कन्या राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस दिन चन्द्रमा तुला राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस दिन चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२०९ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस दिन चन्द्रमा धन राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२१० के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस दिन चन्द्रमा मकर राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२११ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस दिन चन्द्रमा कुम्भ राशि पर हो, उस दिन का फलादेश कुण्डली नं० १२१२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर भौमफल

जन्म कालिन मंगलका फल कुण्डली नं० १२१३ से १२२४ तक में देखिये और समय कालीन मंगल का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२–जिस मास में मंगल मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में मंगल मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१४ के अनुसार मालू करिये।

२—जिस मास में मंगल वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में मंगल मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में मंगल कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१७ के अनुसार मालूम करिये।

५- जिस मास में मंगल सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१८ के अनुसार मालूम करिये।

६– जिस मास में मंगल कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२१९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में मंगल तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में मंगल वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में मंगल धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिम मास में मंगल मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२३ के अनुसार मालूम करिये।

११ जिस मास में मंगल कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० २२४ के अनुसार मालूम करिये।

१२–मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—बुधफल

जन्म कालीन बुध का फल कुण्डली नं० १२२५ से १२३६ तक

में देखिये और समय कालीन बुध का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२-जिस मास में बुध मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में बुध मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में बुध वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेख कुण्डली नं० १२२७ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में बुध मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२८ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में बुध कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२२९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में बुध सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस मास में बुध कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस मास में बुध तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस मास में बुध वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३३ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में बुध धन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३४ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस मास में बुध मकर राशि पर हो उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३५ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस मास में बुध कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२३६ के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—गुरुफल

जन्म कालीन गुरु का फल कुण्डली नं० १२३७ से १२४८ तक में देखिये और समय कालीन गुरु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२–जिस वर्ष में गुरु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२३७ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में गुरु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२३८ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में गुरु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२३९ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में गुरु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४० के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में गुरु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४१ के अनुसार मालूम करिये।

५–जिस वर्ष में गुरु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४२ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में गुरु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४३ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में गुरु तुला राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४४ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में गुरु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४५ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में गुरु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४६ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस वर्ष में गुरु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४७ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस वर्ष में गुरु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२४८ के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—शुक्रफल

जन्मकालीन शुक्र का फल कुण्डली नं० १२४९ से १२६० तक में देखिये और समय कालीन शुक्र का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२–जिस मास में शुक्र मीन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२४९ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस मास में शुक्र मेष राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५० के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस मास में शुक्र वृषभ राशि पर हो, उस मास का फलादेण कुण्डली नं० १२५१ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस मास में शुक्र मिथुन राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५२ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस मास में शुक्र कर्क राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५३ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस मास में शुक्र सिंह राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५४ के अनुसार मालूम करिये।

६–जिस मास में शुक्र कन्या राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५५ के अनुसार मालूम करिये।

७–जिस मास में शुक्र तुला राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५६ के अनुसार मालूम करिये।

८–जिस मास में शुक्र वृश्चिक राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५७ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस मास में शुक्र धन राशि हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५८ के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस मास में शुक्र मकर राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२५९ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस मास में शुक्र कुम्भ राशि पर हो, उस मास का फलादेश कुण्डली नं० १२६० के अनुसार मालूम करिये।

१२--मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—शनिफल

जन्म कालीन शनि का फल कुण्डली नं १२६१ से १२७२ तक में देखिये और समय कालीन शनि का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२–जिस वर्ष में शनि मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६१ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में शनि मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फालदेश कुण्डली नं० १२६२ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में शनि वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं १२६३ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में शनि मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६४ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में शनि कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६५ के अनुसार मालूम करिये।

५–जिस वर्ष में शनि सिंह राशि पर हो उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६६ के अनुसार मालूम करिये।

६–जिस वर्ष में शनि कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६७ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में शनि तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६८ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में शनि वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२६९ के अनुसार मालूम करिये।

९–जिस वर्ष में शनि धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७० के अनुसार मालूम करिये।

१०–जिस वर्ष में शनि मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७१ के अनुसार मालूम करिये।

११–जिस वर्ष में शनि कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७२ के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिए

जीवन के दोनों किनारों पर—राहुफल

जन्म कालीन राहु का फल कुण्डली नं० १२७३ से १२८४ तक में देखिये और समय कालीन राहु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२—जिस वर्ष में राहु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७३ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में राहु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७४ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में राहु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७५ के अनुसार मालूम करिये।

३—जिस वर्ष में राहु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७६ के अनुसार मालूम करिये।

४—जिस वर्ष में राहु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७७ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में राहु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७८ के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में राहु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२७९ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में राहु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८० के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में राहु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८१ के अनुसार मालूम करिये।

९—जिस वर्ष में राहु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८२ के अनुसार मालूम करिये।

१०—जिस वर्ष में राहु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८३ के अनुसार मालूम करिये।

११—जिस वर्ष में राहु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८४ के अनुसार मालूम करिये।

१२—मीन लग्न वालों को समस्त जीवन के लिये

जीवन के दोनों किनारों पर—केतुफल

जन्म कालीन केतु का फल कुण्डली नं० १२८५ से १२९६ तक में देखिये और समय कालीन केतु का फल निम्न प्रकार से देखिये।

१२-जिस वर्ष में केतु मीन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १०८५ के अनुसार मालूम करिये।

१—जिस वर्ष में केतु मेष राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८६ के अनुसार मालूम करिये।

२—जिस वर्ष में केतु वृषभ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८७ के अनुसार मालूम करिये।

३-जिस वर्ष में केतु मिथुन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८८ के अनुसार मालूम करिये।

४-जिस वर्ष में केतु कर्क राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२८९ के अनुसार मालूम करिये।

५—जिस वर्ष में केतु सिंह राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९० के अनुसार मालूम करिये।

६—जिस वर्ष में केतु कन्या राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९१ के अनुसार मालूम करिये।

७—जिस वर्ष में केतु तुला राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९२ के अनुसार मालूम करिये।

८—जिस वर्ष में केतु वृश्चिक राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९३ के अनुसार मालूम करिये।

९-जिस वर्ष में केतु धन राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९४ के अनुसार मालूम करिये।

१०-जिस वर्ष में केतु मकर राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९५ के अनुसार मालूम करिये।

११-जिस वर्ष में केतु कुम्भ राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश कुण्डली नं० १२९६ के अनुसार मालूम करिये।

नोट—इसके आगे जन्म कालीन ग्रहों का फलादेश प्रारम्भ हुआ है।

शत्रु प्रभाव तथा परिश्रम स्थान पति—सूर्य

यदि मीन का सूर्य—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो देह में प्रभाव की शक्ति पायेगा तथा शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करेगा और षष्ठेश होने के दोष कारण से देह में कुछ रक्तविकार और कुछ रोग प्राप्त करेगा तथा प्रभाव की वृद्धि करने के लिये अधिक दौड़ धूप और परिश्रम करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ झंझटों से युक्त प्रभाव की शक्ति पायेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ अधिक परिश्रम की शक्ति से सफलता पायेगा तथा गृहस्थ में कुछ परेशानी रहेगी।

मीन लग्न में १ सूर्य

नं० ११८९

यदि मेष का सूर्य—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में उच्च का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो प्रभावशाली परिश्रम के योग से धन की वृद्धि के कारण प्राप्त करेगा और धन का संग्रह शक्ति के द्वारा प्रभाव की वृद्धि होगी तथा कुटुम्ब के स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और विशेष प्रयत्न शील रहने के कारण इज्जत बढ़ेगी और सातवीं नीच दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में आयु एवं पुरातत्व स्थान को देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्या और आयु के पक्ष में कुछ थोड़ी परेशानी रहेगी और पुरातत्व शक्ति के लाभ में कुछ कमजोरी रहेगी।
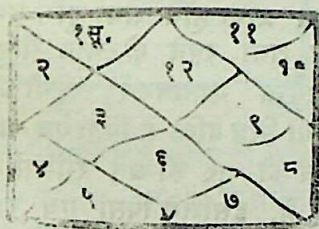
मीन लग्न में २ सूर्य

नं० ११९०

यदि वृषभ का सूर्य—तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा किन्तु तीसरे स्थान पर गरम ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये महान् पराक्रम शक्ति प्राप्त करेगा और महान् परिश्रम के योग से महान् प्रभाव प्राप्त करेगा तथा शत्रु पक्षमें विजय पायेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से पुरुषार्थ शक्ति में एवं भ्रातृ शक्ति में कुछ परेशानी प्राप्त होगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम और प्रभाव के द्वारा भाग्य की वृद्धि करेगा धर्म की नहीं।

मीन लग्न में ३ सूर्य

नं० ११९१

यदि मिथुन का सूर्य—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो घर बैठे सुख पूर्वक प्रभाव की वृद्धि प्राप्त करेगा किन्तु षष्ठेश होने के दोष कारण से माता के प्रेम सम्बन्ध में कमी रहेगा और घरेलू सुख शान्ति के अन्दर कुछ परेशानीके कारण प्राप्त होंगे तथा भूमि मकानादि तथा रहने के स्थान में कुछ झंझटयुक्त वातावरण रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को गुरु की धन राशिमें देख रहा है, इसलिये पिता एवं राजसमाज के सम्बन्ध में प्रभाव प्राप्त करेगा तथा कारबार एवं मान प्रतिष्ठा की उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करेगा।
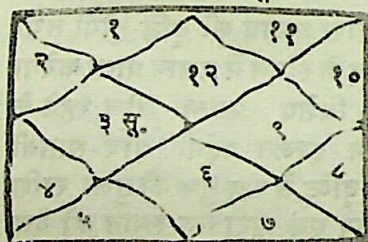
मीन लग्न में ४ सूर्य

नं० ११९२

यदि कर्क का सूर्य—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो बुद्धि और वाणी में प्रभाव की शक्ति रहेगी तथा शत्रु पक्ष में बुद्धि योग द्वारा विजय पायेगा

मीन लग्न में ५ सूर्य

नं० ११९३
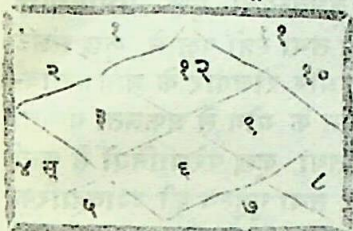
किन्तु षष्ठेश होनेके दोष कारण से संतान पक्ष में झंझट एव कुछ बाधा प्राप्त होगी और विद्याके ग्रहण करने में कुछ असुविधायें रहेंगी तथा दिमाग के अन्दर कुछ क्रोध और परेशानियाँ रहेंगी और सातवीं शत्रुदृष्टिसे लाभ स्थान का शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ दिक्कतें प्रतीत होंगी किन्तु अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये बुद्धि के द्वारा अधिक परिश्रम से सफलता पायेगा।

यदि सिंह का सूर्य—छठें स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री

मीन लग्न में ६ सूर्य

नं० ११९४
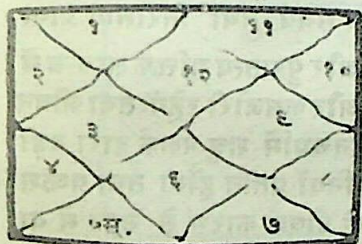
बैठा है तो शत्रु स्थान में महान् प्रभाव और विजय प्राप्त करेगा तथा प्रभाव की वृद्धि करने के लिये उग्र परिश्रम करेगा और अपने पक्ष को प्रबल रखने के लिये सदैव तत्पर रहेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में निर्भयता पूर्वक कार्य करेगा और रोगादिक पक्ष में बहुत कम घिराव पायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्धों में कुछ दिक्कतें रहेंगी और प्रभाव की रक्षा के कारण अधिक खर्च करने से कुछ अशान्ति प्रतीत होगी।

मीन लग्न में ७ सूर्य

नं० ११९५
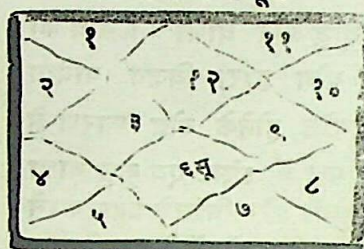
यदि कन्या का सूर्य—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो षष्ठेश होने के दोष के कारण स्त्री पक्ष में कुछ वैमनस्यता युक्त प्रभावशक्ति पायेगा तथा स्त्री पक्ष में कुछ झंझट रहेगी और रोजगार के मार्ग प्रभावशाली परिश्रम के योग से सफलता पायेगा। किन्तु रोजगार के लिये कुछ दौड़ धूप तथा कुछ परेशानियों से कार्य संचालन करना पड़ेगा और रोजगार तथा गृहस्थ की व्यावहारिक प्रणाली के प्रभाव से शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ परेशानी के योग से प्रभाव शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि तुला का सूर्य—आठवें आयु उदर एवं पुरातत्व के स्थान में नीच का होकर शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु के स्थान में बड़ा संघर्ष तथा निराशायें प्राप्त होंगी और पुरातत्व शक्तिके सम्बन्ध में हानि और कमजोरी रहेगी तथा जीवन की दिनचर्यामें शत्रु पक्षके द्वारा बड़ी परेशानियाँ प्रतीत होंगी तथा षष्ठेश होने के दोषके कारण से उदर में या उदर के नीचे की तरफ कोई रोग रहेगा तथा ननसाल पक्ष में कमजोरी रहेगी और सातवीं उच्च दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मित्र मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन के कठिन परिश्रम के द्वारा धन और कुटुम्ब की वृद्धि का विशेष प्रयत्न करेगा।
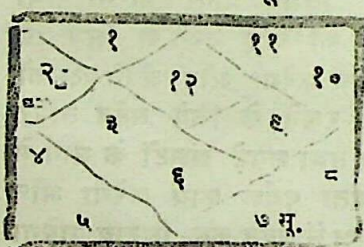
मीन लग्न में ८ सूर्य

नं० ११९६

यदि वृश्चिक का सूर्य – नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से शत्रु स्थान में विजय एवं सफलता प्राप्त करेगा और स्वतः प्रभाव की शक्ति प्राप्त रहेगी किन्तु षष्ठेश होने के दोष के कारण भाग्य की उन्नति में कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा कुछ परिश्रमी प्रभावशाली कर्म से भाग्य की वृद्धि होगी और धर्म के यथार्थ पालन में कुछ कमजोरी रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई के पक्ष में कुछ विरोध रहेगा, पराक्रम स्थान में कुछ परिश्रम और कुछ झंझटों के द्वारा प्रभाव और हिम्मत की वृद्धि तथा शक्ति प्राप्त करेगा।
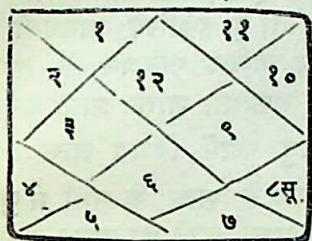
मीन लग्न में ९ सूर्य

नं० ११९७

यदि धन का सूर्य—दसवें केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्षमें महान् प्रभाव की शक्ति प्राप्त करेगा तथा प्रभावशाली परिश्रम के योग से कारबार में तथा राज-समाज में उन्नति करेगा किन्तु षष्ठेश होनेके दोष कारण से पिता स्थान में कुछ वैमनस्यता पायेगा और कारबार मान प्रतिष्ठा आदि के मार्ग में कुछ दिक्कतें रहेगी तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थानको बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम और प्रभाव के योग से घरेलू वातावरण में कुछ शक्ति पायेगा और भूमि तथा माता के स्थान में कुछ झंझट युक्त प्रभाव रहैगा।
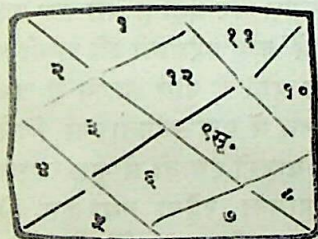
मीन लग्न में १० सूर्य

नं० ११९८

मीन लग्न में ११ सूर्य

नं० ११९९
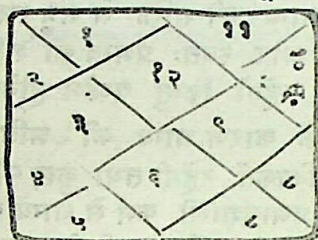
यदि मकर का सूर्य—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु शनि की मकर राशिपर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फलका दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कठिन परिश्रम के द्वारा विशेष सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और शत्रु पक्षमें विजय लाभ प्राप्त करेगा तथा षष्ठेश होनेके दोष कारण से लाभ के मार्ग में कुछ परेशानियाँ प्रतीत होंगी किन्तु अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या और संतान पक्ष में कुछ कठिनाई से सफलता प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में १२ सूर्य

नं० २००
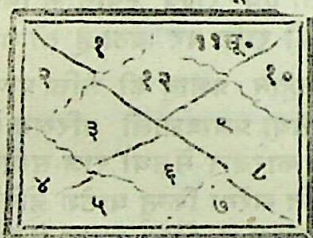
यदि कुम्भ का सूर्य बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो शत्रु पक्षके मार्ग में कुछ परेशानी सी रहेगी और षष्ठेश होने के दोष कारण से खर्चके संचालन में कुछ कठिनाइयाँ मिलेंगी और बाहरी स्थानों में कुछ दिक्कतों का सामना रहेगा तथा कुछ नीरसता के योग से अधिक खर्च हो जायगा और सातवीं दृष्टि से शत्रु स्थान को स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्च के योग से शत्रु पक्ष में प्रभाव प्राप्त करेगा और प्रभाव की वृद्धि के लिये कठिनाइयाँ सहन करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी प्रभाव की जागृति होगी तथा कमजोर स्थिति के अन्दर भी क्रोध और अहंकार छिपा रहेगा।

विद्या, संतान तथा मनः स्थान पति—चन्द्र

यदि मीन का चन्द्रमा - प्रथम केन्द्र देह के स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो विद्या का आदर्श ज्ञान प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा। और देह में सुन्दरता एवं कोमलता पायेगा तथा बुद्धि और मनोयोग की शक्ति से सुन्दर सम्मान एवं कीर्ति व ख्याति पायेगा तथा मन के अन्दर आत्मिक शान्ति प्राप्त रहेगी और वाणी के द्वारा उत्तम बातें कहेगा। तथा सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थानमें सुन्दरता पायेगा तथा रोजगार के पक्ष में बुद्धि तथा मन की शक्ति से उन्नति एवं सुन्दरता और सफलता प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में १ चन्द्र

नं० १२०१

यदि मेष का चन्द्र—धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो मन और बुद्धि के योग से धन की सुन्दर शक्ति प्राप्त करेगा तथा विद्या का अच्छा लाभ प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की सुन्दर शक्ति मिलेगी तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का भी कार्य करता है, इसलिये संतान पक्ष में भी कुछ परेशानी रहेगी किन्तु विद्या और संतान पक्षसे इज्जत भी प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति मिलेगी तथा मनोयोग के बल से पुरातत्व शक्ति का योग लाभ पायेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रसन्नता प्राप्त रहेगी।

मीन लग्न में २ चन्द्र

नं० १२०२

यदि वृषभ का चन्द्र—भाई एवं पराक्रम स्थान में उच्च का होकर सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन की शक्ति प्राप्त करेगा तथा मनोबल की पुरुषार्थ शक्ति के द्वारा विद्या की विशेष सफलता पायेगा और संतान पक्ष की शक्ति का बल प्राप्त करेगा तथा मन और बुद्धि के योग से बड़ी प्रसन्नता एवं हिम्मत शक्ति प्राप्त करेगा और बातचीत के अन्दर बड़ी तेजी एवं स्फूर्ति रहेगी तथा सातवीं नीच दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि योग द्वारा भाग्य की उन्नति में रुकावटें पड़ेंगी और धर्म के पक्ष में मन की रुचि कमजोर रहेगी तथा सहनशीलता की कमी के कारण सुयश की भी कमी रहेगी।
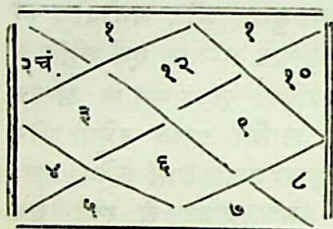
मीन लग्न में ३ चन्द्र

नं० १२०३

यदि मिथुन का चन्द्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि तथा सुख स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष से सुख प्राप्त होगा तथा माता के पक्ष में प्रसन्नता रहेगी और विद्या के द्वारा सुख के अच्छे साधन बनेंगे तथा बुद्धि और वाणी के द्वारा मनोरंजन का व्यवहार रहेगा तथा भूमि मकानादिक रहने के स्थान में सुख प्राप्त होगा और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य व कारबार स्थान को गुरु की धनराशि में देख रहा है, इसलिये मनोयोग एवं बुद्धि के द्वारा कारबार में उन्नति करेगा तथा राजसमाज में मान प्राप्त होगा और पिता के अन्दर सहयोग का लाभ पायेगा और अनेकों प्रकार की उन्नति को सुखपूर्वक पायेगा।
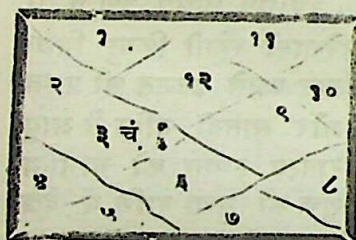
मीन लग्न में ४ चन्द्र

नं० १२०४

यदि कर्क का चन्द्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो मनोयोग की बलवान् शक्ति के द्वारा विद्या की महानता प्राप्त करेगा तथा बोलचाल के अन्दर कोमलता युक्त विशेष वाक्य-पटुता की शक्ति से काम करेगा और संतान पक्ष में सुन्दर शक्ति पायेगा तथा मन में मगन रहेगा और दिमाग के अन्दर स्थिरता रहेगी तथा विचारों में दूरदर्शिता एवं गम्भीरता रहेगी और सातवीं शत्रु दृष्टिसे लाभ स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कुछ नीरसता प्रतीत होते हुए भी आमदनी की वृद्धि के लिये मन और बुद्धि की शक्ति का विशेष प्रयोग करके सफलता पायेगा ।
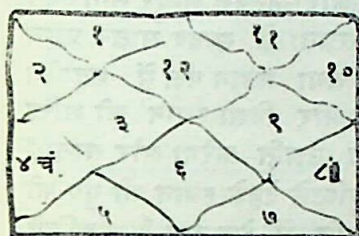
मीन लग्न में ५ चन्द्र

नं० १२०५

यदि सिंह का चन्द्र—छठें शत्रु एवं झंझट स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो विद्या ग्रहण करने में बड़ी दिक्कतें रहेगी और मन तथा बुद्धि के अन्दर कुछ झगड़े झंझटों की तरफ से बड़ी अशान्ति रहेगी और संतान पक्ष में कष्ट अनुभव होगा तथा शत्रु पक्ष में मनोयोग एवं बुद्धि की कोमल शक्ति के द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा विद्या की कमी के कारण कुछ दुःख अनुभव होगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एव बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा विशेष करने से कुछ दुःख प्रतीत होगा तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ नीरसता युक्त मार्ग के द्वारा शक्ति पायेगा ।
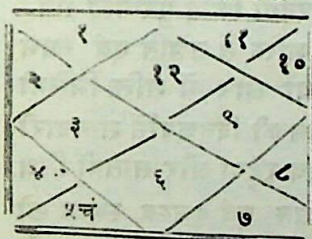
मीन लग्न में ६ चन्द्र

नं० १२०६

यदि कन्या का चन्द्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में बैठा है तो बुद्धि और मनोयोग की सुन्दर शक्ति से रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता पायेगा तथा स्त्री पक्ष में सुन्दरता एव बुद्धिमत्ता पायेगा और गृहस्थके अन्दर मनोरंजन एवं प्रसन्नता के सुन्दर साधन प्राप्त करेगा तथा संतान पक्ष में सहयोग मिलेगा और विद्या स्थान की शक्ति के द्वारा उन्नति करेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे देहके स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और योग्यता प्राप्त करेगा तथा मान सम्मान की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा लौकिक एवं गृहस्थी के कार्यों की प्रवीणता और कुशलता मिलेगी।
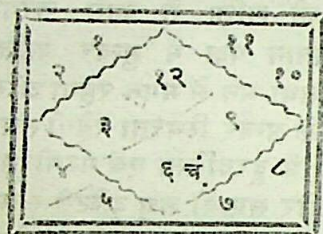
मीन लग्न में ७ चन्द्र

नं० १२०७

यदि तुला का चन्द्र—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में सामान्य मित्र शुक्रकी तुला राशि पर बैठा है तो विद्या को प्राप्त करने में बड़ी परेशानी और कमजोरी रहेगी तथा संतान पक्ष में कष्ट अनुभव होगा और मन तथा बुद्धि में अशान्ति रहेगी किन्तु पुरातत्व संबंधी मन की शक्ति से उन्नति एवं लाभ रहेगा तथा आयु में शक्ति मिलेगी और जीवन की दिनचर्यामें शानदारी तथा प्रभाव रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये मन और बुद्धि के योग से धन की वृद्धि करने के बहुत साधन बनायेगा और कुटुम्ब के पक्ष में विशेष दिलचस्पी रखेगा।
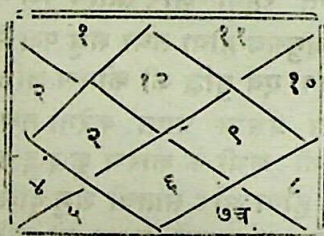
मीन लग्न में ८ चन्द्र

नं० १२०८

यदि वृश्चिक का चन्द्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में

मीन लग्न में ९ चन्द्र

नं० १२०९
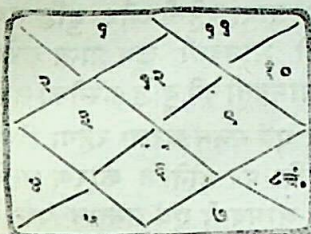
नीच का होकर मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में कुछ कमजोरी मिलेगी तथा संतान पक्ष के सुख में कमी एवं कुछ परेशानी रहेगी और बुद्धि तथा मन की कमजोरी के कारण भाग्य की उन्नति के मार्ग में रुकावटें रहेंगी और धर्म का यथार्थ पालन नहीं कर सकेगा और भाग्यके पक्ष से मन में चिन्तित रहना पड़ेगा और सातवीं उच्च दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को उच्च दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन की शक्ति मिलेगी तथा पुरुषार्थ शक्ति पर बड़ा भारी भरोसा और हिम्मत शक्ति प्राप्त रहेगी।

मीन लग्न में १० चन्द्र
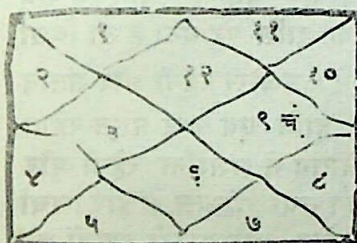
नं० १२१०

यदि धन का चन्द्र—दसम केन्द्र पिता, राज-समाज तथा कार-बारके स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो मनोयोग की शक्ति से विद्या स्थान में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष की उत्तम शक्ति मिलेगी और पिता की शक्ति का सुन्दर योग प्राप्त करेगा तथा मनोयोग और बुद्धिबल के द्वारा कार-बार में बड़ी उन्नति करेगा तथा राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा और इज्जत रहेगी और कानून कायदेका माननेवाला स्वाभिमानी बनेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि के द्वारा घरेलू सुख और भूमि मकानादि की शक्ति का सहयोग तथा माता का सुख प्राप्त करेगा।

यदि मकर का चन्द्र—ग्यारहवें लाभ स्थान में शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो मनोयोग के कुछ कठिन मार्ग से विद्या की सफलता प्राप्त करेगा तथा संतान शक्ति प्राप्त रहेगी और बुद्धि तथा मनोबल की योग शक्ति से धनलाभ की आमदनी खूब प्राप्त करेगा

मीन लग्न में ११ चन्द्र

नं० १२११
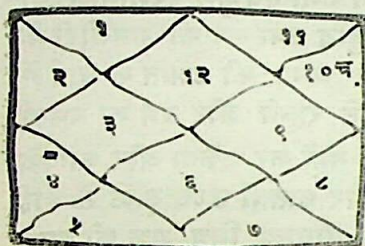
और आमदनी की वृद्धि करनेका सदैव चिन्तन एवं मनन करता रहेगा किन्तु शत्रु राशि पर होने के कारण मनके अन्दर आमदनी एवं सन्तान पक्ष से कुछ असंतोष रहेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को स्वयं अपनी कर्क राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि और संतान पक्ष के सम्बन्धों में सदैव उन्नति का ध्यान रखेगा तथा स्वार्थ-युक्त बातें कहेगा।

यदि कुम्भ का चन्द्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु

मीन लग्न में १२ चन्द्र

नं० १२१२
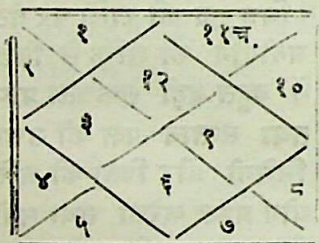
शनि की राशि पर बैठा है तो विद्या स्थान में कमजोरी रहेगी और संतान पक्ष में हानि एवं कष्ट प्राप्त रहेगा तथा दिमाग में अशान्ति रहेगी और मनोयोग तथा बुद्धिबल के द्वारा खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों की सम्बन्ध शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु शत्रु राशिपर होने से खर्च के मार्ग में तथा बाहरी स्थानों में कुछ मानसिक परेशानी अनुभव करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये बुद्धि और वाणी की नरम शक्ति से शत्रुपक्ष में काम निकालेगा तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग में मनोयोग के द्वारा प्रभाव प्राप्त करेगा।

धन, कुटुम्ब भाग्य तथा धर्म स्थानपति—मंगल

यदि मीन का मंगल प्रथम केन्द्र देह स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के योग से धन की शक्ति और इज्जत प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का सुन्दर योग मिलेगा और भाग्य की उन्नति करेगा तथा बड़ा भाग्यवान् समझा जायेगा और यथासामर्थ्य धर्म का पालन करेगा तथा देह से मान सम्मान प्राप्त करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता के स्थान से शक्ति पायेगा तथा भूमि मकानादि एवं रहने के स्थानों में सुख सौभाग्य प्राप्त करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशिमें देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान में भाग्यवानी प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में भाग्य की शक्ति से धन की प्राप्ति करेगा तथा भाग्य के बल से ही गृहस्थ के अन्दर उन्नति के साधन पायेगा और आठवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये पुरातत्व सम्बन्ध में कोई विशेष शक्ति पायेगा और आयु स्थान में वृद्धि का योग प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में कुछ कठिनाई के साथ अमीरात का ढंग पायेगा।
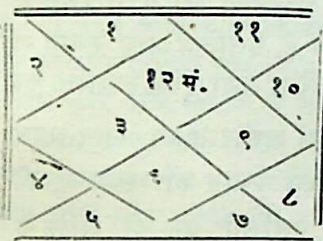
मीन लग्न में १ भौम

नं० १२१३

यदि मेष का मंगल—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन का संग्रह शक्ति का सौभाग्य प्राप्त करेगा और कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा बड़ा धनवान् माना

जायेगा और चौथी नीच दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या के पक्ष में कुछ कमजोरी रहेगी और संतान पक्षमें कुछ कष्ट प्राप्त रहेगा तथा बुद्धिके

मीन लग्न में २ भौम
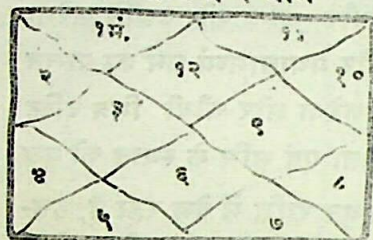
नं० १२१४

अन्दर कुछ परेशानी एवं चिन्ता के कारण रहेंगे और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये वाणीके द्वारा कुछ कटु शब्दों का प्रयोग करेगा तथा सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्वशक्ति का लाभ पायेगा और जीवन की दिनचर्या में अमीरात का रहन-सहन पायेगा और आठवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन की शक्ति के द्वारा भाग्य की महान् उन्नति करेगा और बड़ा भारी भाग्यवान् समझा जायगा तथा धर्म के पालन करने के मार्ग में कुछ स्वार्थ युक्त वातावरण के द्वारा धर्मके पालन का भी सदैव ध्यान रखेगा।

यदि वृषभ का मंगल—तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर गरम ग्रह विशेष शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये पराक्रम स्थान की शक्ति के द्वारा विशेष सफलता एवं धन की उन्नति प्राप्त करेगा तथा भाई बहिन की शक्ति का उत्तम सहयोग प्राप्त करेगा और कुटुम्ब का सुन्दर सहयोग पायेगा और चौथी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि

मीन लग्न में ३ भौम

नं० १२१५
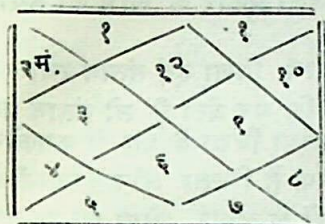
में देख रहा है, इसलिये भाग्य और पुरुषार्थ की शक्तिके द्वारा शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव प्राप्त करेगा तथा झगड़े झंझटों की कमी परवाह नहीं करेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये धन और पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य की उन्नति पाकर भाग्यशाली कहलायेगा और धर्म के मार्ग में श्रद्धा भक्ति रखेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज समाज व कारबार के स्थान को गुरु की धन राशिमें देख रहा है, इसलिये पिता एवं कारबारसे उन्नति करेगा और राज समाज में भाग्य की शक्ति से मान प्राप्त करेगा।

यदि मिथुन का मंगल—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो धन कुटुम्ब का सुख सहयोग पायेगा तथा भूमि और मकानादि सम्बन्धी भी धन की शक्ति पायेगा तथा बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और धर्म का पालन करेगा तथा

मीन लग्न में ४ भौम

नं० १२१६

चौथी मित्र दृष्टिसे स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और धन की शक्ति से रोजगारके मार्ग में बड़ी सफलता पायेगा और भाग्यवान् स्त्री का संयोग प्राप्त करेगा तथा गृहस्थके अन्दर बड़ी शोभा रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज-समाज को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में शक्ति पायेगा और राज-समाज में मान प्राप्त करेगा तथा कारबार में उन्नति रहेगी और आठवीं उच्च दृष्टि से लाभ के स्थान को शत्रु शनि की

मकर राशिमें देख रहा है इसलिये घर बैठे भाग्य की शक्तिसे आमदनी का विशेष लाभ प्राप्त करेगा और अनेकों प्रकार के लाभ का संयोग सुलभता पूर्वक प्राप्त करेगा।

यदि कर्क का मंगल—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में नीच का होकर मित्र चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो संतान पक्ष में कमी और कष्ट का योग पायेगा तथा विद्या के पक्ष में कमजोरी रहेगी और धन तथा कुटुम्ब की तरफ से चिन्ता और परेशानी के के कारण रहेंगे तथा बुद्धि और विचारों के अन्दर भाग्य की दुर्बलता का ध्यान रहेगा और धर्म के पक्ष में श्रद्धा की कमजोरी रहेगी और चौथी दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये जीवन की दिनचर्यामें एवं आयु पक्षमें प्रभाव रहेगा और पुरातत्व सम्बन्धमें कुछ शक्ति प्राप्त रहेगी तथा सातवीं उच्च दृष्टि से लाभ स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में वृद्धि एवं शक्ति पायेगा अर्थात् आमदनी की वृद्धि के लिये विशेष प्रयत्नशील रहेगा और आठवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक होने के कारण खर्च के मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ नीरसता युक्त शक्ति प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ५ भौम

नं० १२१७

यदि सिंह का मंगल—छठें शत्रु स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो शत्रु स्थान में भाग्य की शक्ति से बड़ाभारी प्रभाव प्राप्त करेगा और छठे स्थान में गरम ग्रह शक्तिशाली फल का द्योतक होता है, इसलिये नगद धन की कुछ कमी होते हुये भी धन का काम शानदारी से चलता रहेगा और कुटुम्ब का थोड़ा प्रभाव रहेगा तथा परिश्रम और झंझट युक्त मार्ग के द्वारा धन की वृद्धि करेगा तथा

मीन लग्न में ६ भौम

नं० १२१८
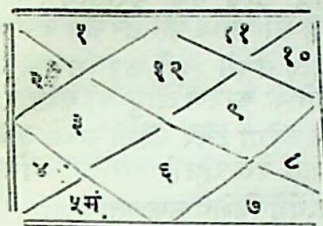
चौथी दृष्टि से भाग्य स्थान एवं धर्म स्थान को स्वयं अपनी वृश्चिक राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है इसलिये कुछ कठिनाइयोंके योग से भाग्यकी वृद्धि एवं उन्नति करेगा तथा भाग्यवान् समझा जायगा और धर्म का थोड़ा पालन करेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शत्रु शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्च के मार्ग में कुछ नीरसता रहेगी तथा बाहरी स्थानों में कुछ अरुचि रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में मान सम्मान और इज्जत प्राप्त करेगा तथा झगड़े झंझट और परेशानियों के मार्ग में बड़ी निर्भयता से काम करेगा।

यदि कन्या का मंगल— सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो भाग्यशाली स्त्री का संयोग प्राप्त करेगा तथा रोजगार के मार्ग से भाग्य की वृद्धि तथा रोजगार की विशेष सफलता शक्ति पायेगा और गृहस्थ के अन्दर धर्म पालन का भी ध्यान रखेगा तथा चौथी मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति

मीन लग्नमें ७ भौम

नं० १२१९
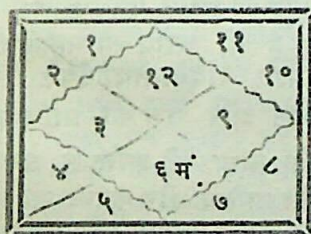
मिलेगी और राज-समाजमें मान और शक्ति पायेगा तथा कारबार के मार्ग में बड़ी उन्नति करेगा तथा लौकिक सफलतायें प्राप्त करने में बड़ी भारी कोशिश और कुदरती सहायताओं का योग पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से देहके स्थानको गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में गौरव और मान प्रतिष्ठा एवं भाग्यवानी का योग प्राप्त करेगा तथा आठवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये रोजगार और भाग्य की शक्ति के द्वारा धन की विशेष वृद्धि करेगा और कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि तुला का मंगल—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो भाग्य की तरफसे कमजोरी प्राप्त करेगा और धर्म का पालन सुचारु रूपसे नहीं कर सकेगा तथा सुयशकी कमी रहेगी और भाग्येश होने के कारण आयु की वृद्धि रहेगी तथा पुरातत्व सम्पत्ति का लाभ प्राप्त करेगा और चौथी उच्च दृष्टिसे लाभ स्थानको शत्रु शनिकी मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्गमें विशेष सफलताशक्ति पायेगा और अधिक नफा खाने का प्रयत्न करता रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थानको स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन का संग्रह करने के लिये विशेष परिश्रम सदैव करते रहकर धन की कुछ शक्ति पायेगा और कुटुम्ब की शक्ति का भी कुछ लाभ प्राप्त करेगा तथा आठवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ नीरसता युक्त सम्बन्ध पायेगा तथा पराक्रम स्थान में परिश्रम के द्वारा सफलता शक्ति पायेगा।
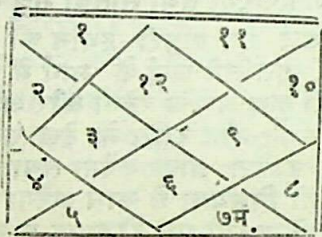
मीन लग्न में ८ भौम

नं० १२२०

यदि वृश्चिक का मंगल—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाग्य की महान् शक्ति प्राप्त करेगा और बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा तथा दैवके संयोग से धन और यश की प्राप्ति होगी अर्थात् भाग्य की शक्ति से धन की उन्नति पायेगा और कुटुम्ब का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा तथा चौथी शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चके मार्गमें कुछ नीरसता युक्त रूप से खर्च का सचालन रहेगा

मीन लग्न में ९ भौम

नं० १२२१

और बाहरी स्थानों में कुछ अरुचिकर रूप से सम्बन्ध रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये थोड़ी सी नीरसता के साथ भाई बहिन का योग पायेगा और पराक्रम स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता एवं भूमि मकानादि की सुख शक्ति का योग पायेगा।

यदि धन का मंगल – दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो भाग्येश जहाँ बैठता है वहाँ उन्नति करता है, इसलिये पिता स्थान की बड़ी उन्नति करेगा तथा राज-समाज में बड़ा भारी प्रभुत्व और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा कारबारके मार्गमें बड़ी तरक्की प्राप्त होगी तथा भाग्य की शक्ति और दैव संयोग के द्वारा अनेकों प्रकार से धन और मान की वृद्धि तथा कुटुम्ब का उत्तम सहयोग प्राप्त होगा और धर्म कर्म का पालन करेगा और चौथी मित्र दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में प्रभाव और गौरव पायेगा तथा स्वाभिमान और इज्जत का बड़ा ध्यान रखेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से सुख एवं माता और भूमि के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमि तथा घरेलू सुख प्राप्त करेगा और आठवीं नीच दृष्टि से विद्या एवं सन्तान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या में कुछ कमजोरी तथा संतान पक्ष में कुछ कमी और कष्टके कारण पायेगा तथा दिमाग में कुछ परेशानी तथा शब्दोंमें कुछ नीरसता रहेगी।
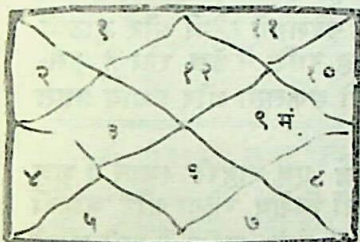
मीन लग्न में १० भौम

नं० १२२२

यदि मकर का मंगल – ग्यारहवें लाभ स्थान में उच्च का होकर शत्रु शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर गरम ग्रह विशेष लाभदायक होता है इस पर भी यह उच्च का बैठा है, इसलिये

आमदनी के मार्ग में बड़ी जबरदस्त शक्ति पायेगा और अधिक से अधिक मुनाफा प्राप्त करने में भाग्य शक्ति का विशेष सहयोग प्राप्त करेगा तथा बड़ा भाग्यवान् समझा जायगा और धर्म का भी कुछ

मीन लग्नमें ११ भौम

नं० १२२३
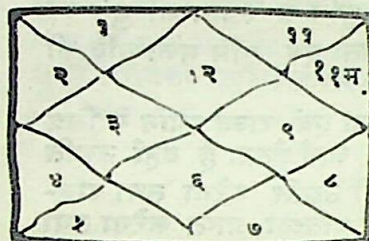
पालन करेगा तथा चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को स्वयं अपनी मेष राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये धन और कुटुम्ब को विशेष शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टिसे विद्या एवं सन्तान स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिये विद्या स्थान में कुछ कमी रहेगी और सन्तान पक्ष म कुछ परेशानी रहेगी और आठवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि मे देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में भाग्य की शक्ति से बड़ी सफलता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा बड़ी भारी हिम्मत रहेगी।

यदि कुम्भ का मंगल बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शनि की कुम्भ राशि में बैठा है तो खर्चा विशेष रहेगा और बाहरी स्थानों में शक्ति प्राप्त करेगा और धन की संग्रह शक्ति मे बड़ी भारी कमजोरी रहेगी तथा कुटुम्ब के स्थान में हानि रहेगी और भाग्य के स्थान में उन्नति प्राप्त करने के लिये बड़ी भारी परेशानी एवं अधिक दौड़ धूप करनी पड़ेगी और धर्म तथा सुयश की कमी रहेगी तथा

मीन लग्न में १२ भौम

नं० १२२४

चौथी दृष्टिसे भाई बहिन एव पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाईके पक्षमें कुछ वैमनस्यतायुक्त रूपसे शक्ति प्राप्त करेगा और पराक्रम की वृद्धि शक्ति पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में
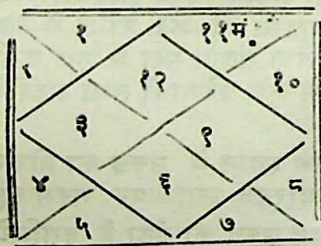
प्रभाव पायेगा तथा बड़ी हिम्मत शक्ति के द्वारा कार्य करेगा और आठवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है इसलिये भाग्य की शक्ति और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा तथा स्त्री और गृहस्थ से भाग्यवानी पायेगा तथा खर्च के योग से उन्नति करेगा।

स्त्री, रोजगार, माता तथा भूमि स्थान पति-बुध

यदि मीन का बुध—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में नीच का होकर मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहेगी और स्त्री तथा गृहस्थके एवं मकानादिके सुख सम्बन्धोंमें तथा माताके सुखोंमें कुछ कमी रहेगी तथा देह के अन्दर स्वाभिमान तथा गौरव और प्रभाव की कुछ कमीके कारण आन्तरिक थोड़ा सा दुःख अनुभव होगा और सातवीं उच्च दृष्टिसे स्त्री तथा रोजगार के स्थान को स्वयं अपनी कन्या राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये देह के परिश्रम के द्वारा रोजगारकी वृद्धि करेगा और स्त्री पक्ष में विशेष मान्यता और प्रभाव मानेगा।
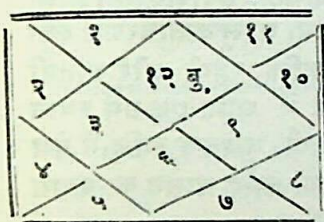
मीन लग्न में १ बुध

नं० १२२५

यदि मेष का बुध—धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो रोजगार के मार्ग से विवेक के द्वारा सुख पूर्वक धन की वृद्धि का योग प्राप्त करेगा तथा कुटुम्ब का सुख पायेगा और भूमि मकानादिकी शक्ति का लाभ प्राप्त होगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धनका सा भी कार्य करता है, इसलिये माता और स्त्रीके सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी किन्तु गृहस्थ के पक्षमें कुछ इज्जत रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को, शुक्र की तुला राशि में देख रहा
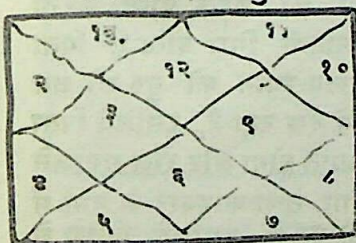
मीन लग्न में २ बुध

नं० १२२६

है, इसलिये आयु और पुरातत्व का लाभ प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में आमोद रहेगा।

यदि वृषभ का बुध—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो पराक्रम स्थान से विशेष सफलता शक्ति पायेगा और भाई बहिन के पक्ष से सुन्दर सुख प्राप्त होगा तथा माता एवं स्त्री की सुख शक्ति प्राप्त रहेगी और भूमि मकानादिका सुन्दर योग रहेगा तथा पुरुषार्थ कर्मके द्वारा रोजगारके पक्षमें बड़ी सफलता शक्ति मिलेगी तथा घरेलू वातावरणमें बड़ी हिम्मत शक्ति रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा तथा धर्मके पालन का प्रयास रखेगा तथा गृहस्थ में यश प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ३ बुध

नं० १२२०

यदि मिथुन का बुध—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो माता का विशेष सुख मिलेगा तथा भूमि मकानादि की उत्तम सुख शक्ति प्राप्त होगी और स्त्री पक्ष से बड़ा सुन्दर सुख मिलेगा तथा गृहस्थ में बड़ा आनन्द रहेगा और घर बैठे विवेक शक्ति के बलसे रोजगार की शक्ति प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थानमें सुख प्राप्त होगा और राज-समाजसे मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति का योग पायेगा तथा कारबार के मार्ग में उन्नति प्राप्त होगी किन्तु बुध विवेकी ग्रह है, इसलिये विवेक से सुख पायेगा।
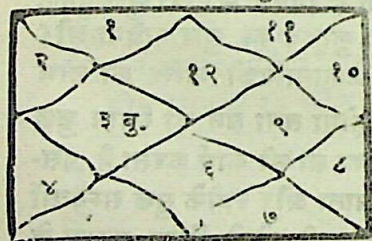
मीन लग्न में ४ बुध

नं० १२२८

यदि कर्क का बुध पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो विवेकी ग्रह बुध के विद्या स्थान पर बैठने से विशेष महत्ता और बढ़ गई है। इसलिये विद्या की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और बुद्धिके अन्दर बड़ी भारी योग्यता एवं गृहस्थ सम्बंधी कार्य कुशलता का ज्ञान पावेगा और वाणी के अन्दर बड़ा मिठास पावेगा और माता तथा स्त्री का सुख प्राप्त करेगा और मकान जायदाद का मान और सुख पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे आमदनी के स्थान को शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये शान्ति पूर्वक बुद्धि के द्वारा धन की आमदनी का सुन्दर सुख योग प्राप्त करेगा और बड़ा विवेकी बनेगा।
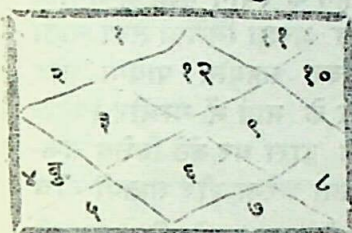
मीन लग्न में ५ बुध

१	११
२	१२	१०
३	९
४ बु.	६	८
५	७

नं० १२२९

यदि सिंह का बुध—छठें शत्रु स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो स्त्री और माता के पक्ष से सुख की कमी प्राप्त होगी और स्त्री एवं माता से कुछ विरोध भावना रहेगी तथा गृहस्थ के सम्बन्ध में कुछ झंझट युक्त वातावरण से कार्य संचालन करेगा और भूमि मकानादि के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और रोजगारके मार्ग में कुछ विवेक युक्त परिश्रम की शक्तिसे सफलता पायेगा तथा शत्रु पक्षमें शान्ति पूर्वक काम निकालेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और रोजगार के पक्ष से बाहरी वातावरणमें अच्छा सम्बन्ध और सफलता पायेगा।
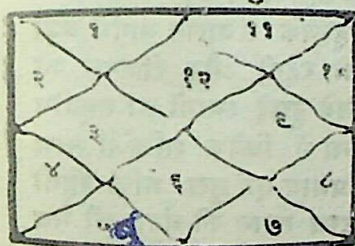
मीन लग्न में ६ बुध

१	११
२	१२	१०
३	९
४	६	८
५ बु.	७

नं० १२३०

यदि कन्या का बुध—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में उच्च का होकर स्वयं अपनी राशि में स्वक्षेत्री बैठा है तो स्त्री के पक्ष में महान् सुख और सुन्दरता प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव और जचाव रहेगा और रहने के स्थान भूमि मकानादि का सुख अच्छा मिलेगा तथा माता का सुन्दर सहयोग पायेगा और रोजगार के मार्ग में गम्भीर विवेक शक्ति के द्वारा घर बैठे विशेष सफलता प्राप्त करेगा और सातवीं नीच दृष्टि से देह के स्थान को मित्र गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कमजोरी रहेगी तथा गृहस्थ संचालन की विशेषताओं के कारण से देह के स्वास्थ्य में लापरवाही रहेगी।
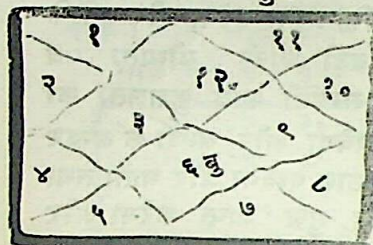
मीन लग्न में ७ बुध

नं० १२३१

मीन लग्न में ८ बुध

नं० १२३२
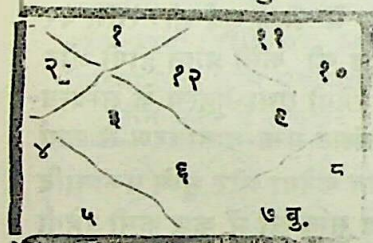
यदि तुला का बुध—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो स्त्री के सुखमें विशेष कमी रहेगी और माता की सुख सहायतामें बड़ा घाटा रहेगा तथा गृहस्थके संचालन मार्गमें बड़ी परेशानी रहेगी और रोजगार की सफलताके लिये दूसरे स्थानों का सहयोग सम्बन्ध बनावेगा किन्तु पुरातत्व सम्बन्ध में विवेक शक्ति से लाभ उठावेगा तथा आयु और दिनचर्या में प्रभाव एवं सुख शक्ति रहेगी और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि के लिये बड़ा प्रयत्नशील रहेगा और धन एवं कुटुम्ब की शक्ति का कुछ योग प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का बुध—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में

मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो माता का सुन्दर सहयोग एवं सुख पायेगा और स्त्री के अन्दर सुन्दरता सुशीलता और भाग्यवानी प्राप्त करेगा तथा भूमि और रहने के स्थान की सुन्दरता शक्ति पावेगा तथा गृहस्थ के सम्बन्ध में धर्म का पालन करेगा और भाग्य की शक्तिसे सुख समृद्धि प्राप्त करेगा और रोज-गार के मार्ग में सफलता पूर्वक धन शक्ति पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन का सुख प्राप्त करेगा तथा घर बैठे पुरुषार्थ की शक्ति से सफलता मिलेगी तथा हिम्मत और यश प्राप्त करेगा।
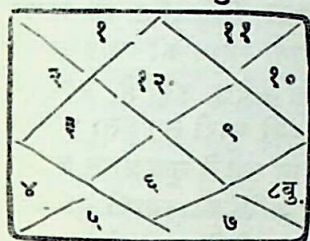
मीन लग्न में ९ बुध

१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४ ६ ८बु. ५ ७

नं० १२३३

यदि धन का बुध—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य-स्थान में मित्र गुरु की राशि पर बैठा है तो पिता के सम्बन्ध से सुख शक्ति प्राप्त करेगा तथा राज-समाज में मान और उन्नति रहेगी और कारबार रोजगार के मार्ग में बड़ी सफलता शक्ति पायेगा तथा स्त्री स्थान में बड़ा प्रभाव प्राप्त करेगा और गृहस्थ के हर एक मार्ग में विवेक शक्ति के द्वारा बड़ी उन्नति पायेगा तथा सातवीं दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता की बड़ी उत्तम शक्ति पायेगा और भूमि मकानादि की शोभा का गौरव प्राप्त करेगा तथा वैभव युक्त रहेगा।
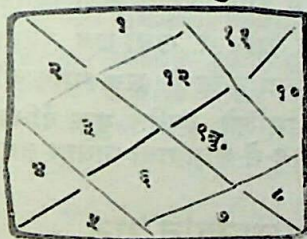
मीन लग्नमें १० बुध

१ ११ २ १२ १० ३ ९बु. ४ ६ ८ ५ ७

नं० १२३४

यदि मकर का बुध ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता एवं स्त्री पक्ष से बड़ा भारी सुख लाभ

प्राप्त करेगा तथा रोजगार व्यापार के मार्ग से विवेक शक्तिके द्वारा बड़ी भारी आमदनी पैदा करेगा और गृहस्थ सम्बन्ध में उत्तम लाभ रहेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या में बड़ी भारी सफलता पावेगा और सन्तान पक्ष से सुख प्राप्त करेगा तथा विवेक की शक्ति का स्वामी बुध जब बुद्धि स्थान को देख रहा है तो बुद्धि और वाणी से यश पायेगा।
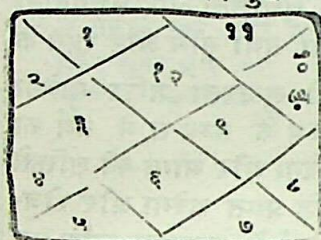
मीन लग्न में ११ बुध

नं० १२३५

यदि कुम्भ का बुध—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो माता के सुख में बड़ी हानि रहेगी और स्त्री पक्ष में सुख सम्बन्धों की बड़ी कमजोरी रहेगी तथा मकानादि भूमि आदि की परेशानी मिलेगी अर्थात् घरेलू वातावरण में अशान्ति का सा योग रहेगा तथा रोजगार के लिये दूसरे बाहरी स्थानों के सम्पर्क से कामयाबी पावेगा किन्तु निजी स्थानों में हानि रहेगी तथा विवेक शक्ति के योग से खर्चा खूब रहेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शान्ति युक्त दैनिक व्यावहारिक कुशलता के योग से शत्रु स्थान में कामयाबी पायेगा तथा धैर्य से काम करेगा।
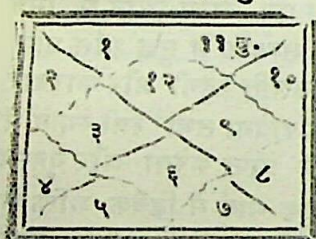
मीन लग्न में १२ बुध

नं० १२३६

राज्य, पिता तथा देह स्थानपति गुरु

यदि मीन का गुरु—प्रथम केन्द्र देहके स्थानमें स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो देह के अन्दर बड़ा भारी प्रभाव और सुन्दरता पायेगा और पिता की शक्ति का उत्तम योग प्राप्त करेगा तथा राज-

समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और बड़े प्रभाव एवं गौरव के साथ कारबार करेगा तथा देहाधीश के स्वक्षेत्री होने के कारण नाम एवं ख्याति प्राप्त होगी और पाँचवीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं सन्तान स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये ऊँचे दर्जे की विद्या प्राप्त करेगा तथा वाणी और बुद्धि के योग से यश प्राप्त करेगा तथा सन्तान पक्ष में विशेष शक्ति पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये रोजगारमें बड़ी सफलता शक्ति रहेगी और स्त्री पक्षमें सुन्दरता और प्रभाव प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ के अन्दर मान तथा इज्जत रहेगी और नवमी मित्र दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की विशेष उन्नति प्राप्त करेगा और धर्म कर्म का पालन करेगा तथा यश और बरक्कत पायेगा।
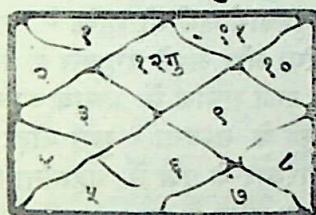
मीन लग्न में १ गुरु

नं० १२३७

यदि मेष का गुरु—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र मंगल की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति का सुन्दर योग प्राप्त करेगा और धनवान् और इज्जतदार समझा जायगा तथा कुटुम्ब शक्ति का महान् योग मिलेगा किन्तु धन का स्थान कुछ बन्धन का भी कार्य करता है, इसलिये देह के स्वास्थ्य में कुछ परेशानी सी रहेगी और पाँचवी मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये अपने दैहिक कर्मके प्रभाव और धन की शक्तिसे शत्रु स्थान में बड़ा प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़े धैर्यसे सफलता पायेगा तथा सातवीं दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशिमें देख रहा है, इसलिये आयु में कुछ शक्ति मिलेगी और पुरा-

मीन लग्न में २ गुरु
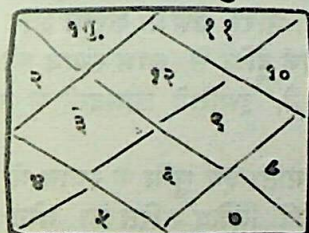
नं० १२३८

तत्व सम्बन्ध में कोई उन्नति एवं शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा और नवमीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता की महान् शक्ति से उन्नति पायेगा और राज समाज से मान प्रतिष्ठा एवं इज्जत प्राप्त करेगा और कारबार की महानता के द्वारा धन की वृद्धि प्राप्त रहेगी।

यदि वृषभ का गुरु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ कर्म की शक्ति से उत्तम सफलता एवं मान सम्मान प्राप्त करेगा और अपने बाहुबल के कार्यों पर बड़ा भारी भरोसा रखेगा और राज समाज में प्रभाव का योग प्राप्त करेगा तथा पिता एवं भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ थोड़ा सा मतभेद युक्त शक्ति पायेगा तथा कारबार के पक्ष में महानता और हिम्मत शक्ति के द्वारा उन्नति करेगा तथा पांचवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये परिश्रम कर्मके द्वारा रोजगार के मार्गमें बड़ी उन्नति करेगा और स्त्री स्थान में आत्मशक्ति तथा प्रभाव का योग प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के द्वारा भाग्य की बड़ी भारी उन्नति करेगा और धर्म कर्म का पालन करेगा तथा नवमीं नीच दृष्टि से लाभ स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्गमें कमजोरी पायेगा।
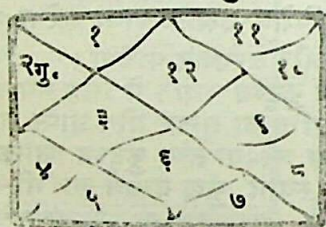
मीन लग्न में ३ गुरु

नं० १२३९

यदि मिथुन का गुरु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो माता की विशेष शक्ति का योग प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि की उत्तम शक्ति मिलेगी तथा अपने स्थान

में सुख पूर्वक मानयुक्त रहेगा और देह में सुन्दरता एवं प्रभाव रहेगा तथा घरेलू वातावरण में सुख प्राप्ति के उत्तम साधन प्राप्त होंगे और पाँचवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति मिलेगी और पुरातत्व सम्बन्ध में कोई लाभ शक्ति का सहयोग पायेगा और सातवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी धनराशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता की शक्ति से उन्नति पावेगा तथा राज समाजमें मान प्रतिष्ठा रहेगी और कारबारसे सुख शक्ति पायेगा और नवमीं शत्रु दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है इसलिये खर्चा विशेष करेगा किन्तु खर्चे के मार्ग में कुछ अरुचिकर वातावरण रहेगा और बाहरी स्थानों में कुछ नीरसतायुक्त मार्ग से विशेष सम्बन्ध रखेगा।
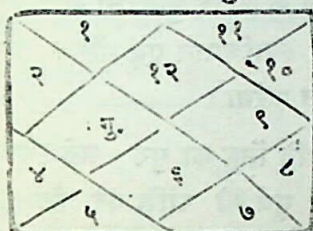
मीन लग्न में ४ गुरु

नं० १२४०

यदि कर्क का गुरु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में मित्र चन्द्रमा की राशि पर उच्च का होकर बैठा है तो विद्या स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा वाणी के द्वारा प्रभावशाली बोलने वाला बनेगा और संतान पक्ष में विशेष उत्तम शक्ति पायेगा तथा पिता स्थान की शक्ति पायेगा और राज समाजमें इज्जत और मान प्राप्त करेगा तथा कारबार के मार्ग में उन्नति पानेके लिये विशेष प्रयत्नशील रहेगा और पाँचवीं मित्र दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति करेगा तथा भाग्यवान् समझा जायेगा और धर्म का पालन एवं ध्यान रखेगा तथा सातवीं नीच दृष्टिसे
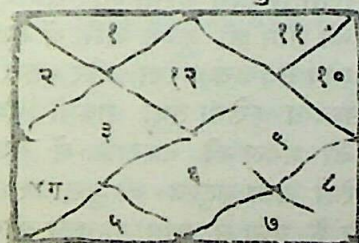
मीन लग्न में ५ गुरु

नं० १२४१

लाभ स्थान को शत्रु शनि की मकर राशि में देख रहा है, इसलिये आमदनी के मार्ग में कमजोरी पायेगा तथा आमदनी के लिये कुछ लापरवाही करेगा और नवमीं दृष्टि से देह के स्थान को स्वयं अपनी मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह के अन्दर सुन्दरता और अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करेगा और हृदय में स्वाभिमान एवं गौरव पायेगा तथा नाम प्रसिद्धता और इज्जत प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ६ गुरु

नं० १२४२

यदि सिंह का गुरु—छठे स्थान में मित्र सूर्य की राशि पर बैठा है तो देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्यमें कुछ कमजोरी प्राप्त करेगा और कुछ पर तंत्रता युक्त एवं कुछ रोग युक्त रहेगा तथा कुछ परिश्रम की अधिकता के कारण शान्ति कम मिलेगी किन्तु शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और पाँचवीं दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को स्वयं अपनी धनराशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में उन्नति करेगा तथा राज समाज में मान प्राप्त करेगा और अपने दैहिक परिश्रम के योग से उन्नति प्राप्त करनेके लिये सदैव तत्परता से काम करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता के योग से खर्च करेगा और बाहरी स्थानों में कुछ अरुचिकर रूप से सम्बन्ध रखेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की मेषराशि में देख रहा है, इसलिये धन की वृद्धि करेगा तथा कुटुम्ब की कुछ उत्तम शक्ति पायेगा और विशेष परिश्रम के योग से मान प्रतिष्ठा और इज्जत प्राप्त करेगा।

यदि कन्या का गुरु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में बड़ी सुन्दरता एवं प्रभाव और मानयुक्त आत्मीयता का योग प्राप्त करेगा तथा रोजगार के पक्ष में महान् शक्ति प्राप्त करेगा तथा पिता की शक्ति का उत्तम सहयोग पायेगा और राज समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा कारबार की उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करेगा और पाँचवीं नीच दृष्टि से लाभ स्थानको शत्रु शनि की मकर राशिमें देख रहा है, इसलिये आमदनी और मुनाफाका हिस्सा कमजोर रहेगा तथा सातवीं दृष्टिसे देह के स्थानको स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्रको देख रहा है, इसलिये देह में सुन्दरता और सुडौलता प्राप्त करेगा तथा अच्छा स्वास्थ्य रहेगा और देह में मान प्रतिष्ठा प्रभाव और ख्याति तथा स्वाभिमान प्राप्त करेगा और नवमीं दृष्टि से भाई एवं पुरुषार्थ स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषराशि में देख रहा है, इसलिये कुछ नीरसता युक्त मार्ग से भाई बहिन की शक्ति का अच्छा सहयोग पायेगा और पुरुषार्थ कर्म के पक्ष में कुछ अधिक परिश्रम करके सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ७ गुरु

नं० १२४३

यदि तुला का गुरु—आठवें मृत्यु आयु एवं पुरातत्व स्थान में सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर बैठा है तो पिता स्थान की तरफ से परेशानी रहेगी और राजसमाज के सम्बन्ध में मान प्रतिष्ठा की कमी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के लिये बड़ी कठिनाइयाँ प्राप्त होंगी और देह की सुन्दरता एवं स्वास्थ्य में बड़ी कमजोरी रहेगी तथा दूसरे स्थान का सहवास पायेगा और पुरातत्व सम्बन्ध में

मीन लग्न में ८ गुरु

नं० १२४४

कुछ शक्ति प्राप्त करेगा और आयु स्थानमें वृद्धि रहेगी तथा पाँचवीं शत्रु दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थानको शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये खर्चा अधिक होनेके कारण कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अरुचिकर मार्ग से शक्ति सम्पर्क स्थापित करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये धन की कुछ वृद्धि करेगा और कुटुम्ब का कुछ सुन्दर सहयोग पायेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता का और भूमि का कुछ सुन्दर सम्पर्क पायेगा तथा रहने के स्थान में कुछ सुख शक्ति प्राप्त करेगा।

यदि वृश्चिक का गुरु- नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर बैठा है तो भाग्य की महान् शक्ति का योग प्राप्त करेगा तथा बड़ा भाग्यशाली समझा जायगा और धर्म कर्म का पालन करेगा तथा ईश्वर में निष्ठा और भक्ति पायेगा और राज समाज के अन्दर मान प्रतिष्ठा एवं प्रभाव प्राप्त करेगा तथा पिता स्थान की शक्ति का सुन्दर सहयोग पायेगा तथा कारबारके मार्ग में भाग्यबलसे सफलता प्राप्त करेगा और पाँचवीं दृष्टिसे देह के स्थान

मीन लग्न में ९ गुरु

नं० १२४१

को स्वयं अपनी मीन राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिये देहमें महान् सुन्दरता एवं प्रभाव की शक्ति पायेगा और स्वाभिमान तथा आत्माभिमान रखेगा और सातवीं दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशिमें देख रहा है इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ नीरसता-

युक्त भाव से अच्छा सम्बन्ध रखेगा और पराक्रम की सफलता शक्ति पायेगा तथा नवमीं उच्च दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या की महान् उत्तम शक्ति पायेगा और संतान पक्ष में बहुत उन्नति रहेगी तथा वाणी में कलात्मक शक्ति रहेगी ।

यदि धन का गुरु दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में स्वयं अपनी धन राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो पिता स्थान की महान् उन्नति करेगा तथा राज समाजमें बड़ा भारी प्रभाव और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा तथा बड़ा ऊँचा आदर्शवाला कारबार करके सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और देह के अन्दर सुन्दरता एवं प्रभुत्व की शक्ति रखेगा तथा स्वाभिमानी बनेगा और पांचवीं मित्र दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये बड़ी शानदारी के साथ धन की उन्नति करेगा और कुटुम्ब का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा तथा बड़ा भारी इज्जतदार समझा जायगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये माता की सुख शक्ति पायेगा और भूमि मकानादि के सुख सम्बन्ध का सुन्दर सहयोग प्राप्त करेगा और रहने के स्थान में सजावट का ध्यान रखेगा तथा नवमीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा भारी प्रभाव और विजय शक्ति पायेगा तथा झगड़े झंझटों के मार्ग में बड़ी भारी धैर्य की शक्ति से सफलता पायेगा तथा बड़ी भारी बहादुरी एवं हिम्मत शक्ति रखेगा और हुकूमत रखेगा ।
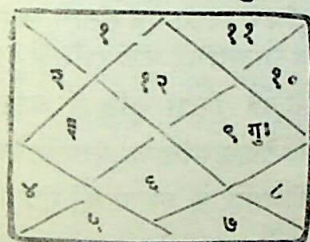
मीन लग्न में १० गुरु

नं० १२४६

यदि मकर का गुरु—ग्यारहवें लाभ स्थान में नीच का होकर शत्रु शनि की मकर राशि पर बैठा है तो आमदनी के मार्ग में बड़ी कमी रहेगी तथा देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य मे कमजोरी रहेगी तथा पिता स्थान के लाभ सम्बन्धों में दिक्कतें रहेंगी और राज-समाज के पक्ष से मान प्रतिष्ठा की कमी रहेगी तथा कारबार की उन्नति के मार्ग में बड़ी रुकावटें रहेंगी और देह के परिश्रम से थोड़ा लाभ प्राप्त होगा और पाँचवीं दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभराशि में देख रहा है इसलिये भाई बहिनके पक्ष में कुछ थोड़ी सी नीरसता के योगसे अच्छा सम्बन्ध बनायेगा और पुरुषार्थ कर्मके द्वारा शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं उच्च दृष्टिसे विद्या एवं संतान स्थान को मित्र चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है, इसलिये विद्या बुद्धि में अच्छी शक्ति पायेगा तथा संतान पक्ष में कोई विशेष उन्नति का योग पायेगा और नवमीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान कों बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इस लिये स्त्री तथा रोजगार के पक्ष में सुन्दरता और शक्ति प्राप्त करेगा।
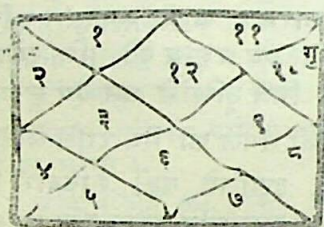
मीन लग्न में ११गुरु

१	११	गु १०
२	१२	९
३		८
४	६	
५		७

नं० १०४७

यदि कुम्भ का गुरु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में शत्रु शनि की कुम्भ राशि पर बैठा है तो खर्चा विशेष करने के कारणों से परेशानी रहेगी और देह के पक्ष में कुछ कमजोरी तथा सुन्दरता की कमी रहेगी और पिता के सुख में कमी एवं कष्ट के कारण प्राप्त करेगा और राज समाज के पक्ष में मान सम्मान की कमी रहेगी और कारबार के मार्ग में हानि एवं उन्नति में रुकावटें प्राप्त करेगा

मीन लग्न में १२ गुरु

नं० १२४८

तथा पाँचवी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये माता और भूमि की सुख शक्ति पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ी दानाई से काम निकालेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग में धैर्य से काम करेगा तथा नवमी दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु स्थान में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व सम्बन्ध में कोई सहायता शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव प्राप्त करेगा।

भाई पराक्रम, आयु तथा पुरातत्व-स्थानपति—शुक्र

यदि मीन का शुक्र प्रथम केन्द्र देह के स्थान में उच्च का होकर सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह में सुन्दर सुडौलता एवं विशालता प्राप्त करेगा तथा उत्तम आयु पायेगा और भाई बहिन की विशेष शक्ति रहेगी तथा पराक्रम स्थान में शक्ति और हिम्मत की विशेषता रहेगी तथा पुरातत्व स्थान में उत्तम शक्ति का लाभ प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में मस्ती और आनन्द पायेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को मित्र बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री के सुख में कमी एवं कुछ कष्ट का योग पायेगा और रोजगार के मार्ग में कई प्रकारों से कभी २ कमजोरियाँ प्राप्त करेगा तथा गृहस्थ में कुछ असंतोष मानेगा।
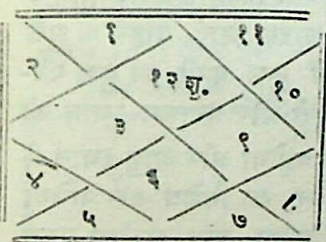
मीन लग्न में १ शुक्र

नं० १२४९

यदि मेष का शुक्र—दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो पुरुषार्थ की शक्ति के द्वारा धन कमाने का विशेष प्रयत्न करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण धन की संग्रह शक्ति पूर्ण नहीं कर सकेगा तथा धन का स्थान कुछ बन्धन का सा कार्य भी करता है, इसलिये भाई बहिन के पक्ष में कुछ सुख की कमी रहेगी और सातवीं दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को स्वयं अपनी तुला राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि पायेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ बड़ी चतुराई और पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्त करेगा तथा अमीरात के ढंग से दिनचर्या व्यतीत करेगा।
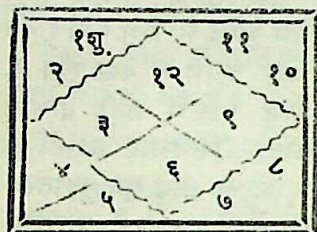
मीन लग्न में २ शुक्र
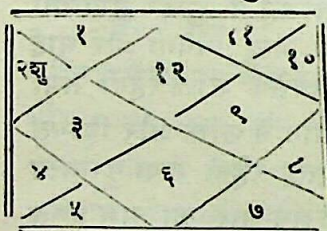
नं० १२५०

यदि वृषभ का शुक्र तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो भाई की शक्ति पायेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष के कारण भाई बहिन के सुख सम्बन्धोंमें कुछ कमी या कुछ परेशानी रहेगी और पराक्रम स्थान की सफलता शक्ति पायेगा और आयु स्थान में वृद्धि प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व की शक्ति का विशेष बल पायेगा और अपने बाहुबल के कार्यों से बड़ी हिम्मत तथा भरोसा प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टि से भाग्य एवं धर्मस्थान को सामान्य शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य की उन्नति में कुछ थोड़ी सी दिक्कतों के योग से शक्ति पायेगा और धर्म के मार्ग में कुछ त्रुटियुक्ति वातारण से धर्म का पालन करेगा।

मीन लग्नमें ३ शुक्र

नं० १२५१

यदि मिथुन का शुक्र—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष के कारण माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी रहेगी और घरेलू भूमि मकानादि की भी कुछ कमी रहेगी किन्तु आयु की शक्ति प्राप्त होगी और पुरातत्व की शक्ति से जीवन को सहायता और सुख मिलेगा और भाई बहिन का सहयोग पायेगा और पराक्रम की सफलता और चतुराई से सुख प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टिसे पिता एवं राज्य स्थान को सामान्य शत्रु गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता के सुख में कुछ कमी युक्त सम्बन्ध पावेगा और राज-समाज तथा कारबार के मार्ग में चतुराई और परिश्रम के योग से सफलता शक्ति प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ४ शुक्र

नं॰ १२५२

यदि कर्क का शुक्र—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थानमें सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर बैठा है तो बुद्धि स्थान पर चतुर ग्रह शुक्र के बैठने से पुरातत्व सम्बन्धी विद्या की विशेष शक्ति प्राप्त होगी तथा वाणी में कलात्मक शैली रहेगी और आयु की शक्ति उत्तम रहेगी तथा पुरुषार्थ की सफलता का योग बुद्धि द्वारा प्राप्त करेगा और भाई बहिन की शक्ति का योग अपने से छोटों में पायेगा और अष्टमेश होने के दोष के कारण से विद्या और संतान पक्ष में कुछ कमी प्राप्त करेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से लाभ स्थानको शनिकी मकर राशि में देख रहा है, इसलिये अपनी बल बुद्धि की योग्यताके द्वारा आमदनीके मार्गमें
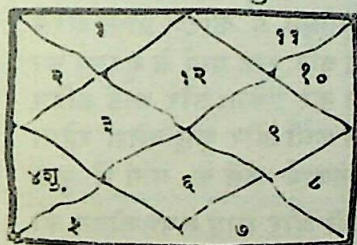
मीन लग्न में ५ शुक्र

नं॰ १२५३

विशेष सफलता प्राप्त करेगा और अपने हर एक स्वार्थ की पूर्ति के लिए भारी प्रयत्न करेगा।

यदि सिंह का शुक्र—छठें शत्रु स्थान एवं परेशानी के स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में परेशानी और कष्ट का योग रहेगा और अपने पुरुषार्थ कर्म के अन्दर कुछ परतन्त्रता का योग प्राप्त करेगा तथा आयु और जीवन की दिनचर्या में अनेकों बार असंतोष प्राप्त होगा तथा पुरातत्व शक्ति की कुछ हानि और कमी रहेगी तथा अष्टमेश होने के दोष कारण से शत्रु पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और चतुराई की शक्ति से अपना कार्य बना सकेगा और सातवीं मित्र दृष्टिसे खर्च एवं बाहरी स्थान को शनि की कुम्भ राशिमें देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों का कुछ सम्बन्ध पायेगा।

मीन लग्न में ६ शुक्र

नं० १२५४

यदि कन्या का शुक्र—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान में नीच का होकर मित्र बुध की कन्या राशि पर बैठा है तो अष्टमेश होने के दोष एवं नीच होने के दोष के कारण स्त्रीके स्थान में एवं रोजगार के स्थान में परेशानियों के कारण प्राप्त करते हुए कुछ त्रुटि युक्त मार्ग से गृहस्थ का संचालन कर सकेगा और भाई बहिन के पक्षसे कमी और कुछ क्लेश रहेगा तथा पुरुषार्थ कर्म के मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और आयु तथा जीवन की दिनचर्या तथा पुरातत्व की तरफ से कुछ असंतोष प्रतीत होगा

मीन लग्न में ७ शुक्र

नं० १२५५

और सातवीं उच्च दृष्टिसे देह के स्थानको सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देहके अन्दर कुछ विशालता प्राप्त करेगा।

यदि तुला का शुक्र—आठवें आयु एवं पुरातत्व स्थान में स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आयु स्थानमें एवं पुरातत्व स्थान में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा तथा जीवन की दिनचर्या में प्रभाव रहेगा किन्तु मृत्यु स्थान के दोष के कारण से भाई-बहिन के पक्ष से बड़ा असंतोष रहेगा और पराक्रम स्थानमें कुछ कमजोरी रहेगी किन्तु जीवन में कुछ मस्ती और बेफिकरी का भी योग प्राप्त करेगा और सातवीं दृष्टिसे धन एवं कुटुम्ब स्थान को सामान्य शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये बड़ी शक्ति और चतुराई का प्रयोग करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोषके कारणसे धन और कुटुम्ब की सफलता के स्थान में कुछ परेशानी प्राप्त करेगा।
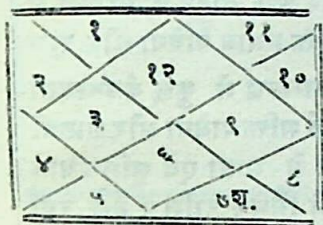
मीन लग्न में ८ शुक्र

नं० १२५६

यदि वृश्चिक का शुक्र—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में सामान्य शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो आयु की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और पुरातत्व शक्ति का फायदा भाग्यबल से प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होने के दोष कारण से भाग्य की उन्नति में कुछ परेशानी रहेगी और धर्म का पालन ठीक तौर पर नहीं कर सकेगा तथा सुयश की कमी रहेगी और जीवन की दिनचर्या में मस्ती और आनन्द अनुभव करेगा तथा सातवीं दृष्टिसे भाई एवं पराक्रम स्थान को स्वयं अपनी वृषभ राशिमें स्वक्षेत्रको देख रहा है, इसलिये पराक्रम स्थान की विशेष शक्ति और सफलता प्राप्त करेगा किन्तु अष्टमेश होनेके कारण भाई बहिन के पक्ष में कुछ त्रुटि युक्त वातावरण से शक्ति प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ९ शुक्र

नं० १२५७

यदि धन का शुक्र—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो आयु की वृद्धि रहेगी तथा पुरातत्व शक्ति का लाभ एवं प्रभाव रहेगा और पराक्रम शक्ति की सरलता के योगसे मान और इज्जत पायेगा किन्तु अष्टमेश होनेके दोष कारण से पिता की सुख शक्ति में कमी रहेगी और भाई बहिन के सम्बन्ध में कुछ त्रुटियुक्त प्रभाव पावेगा और राज समाजके सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता युक्त सम्पर्क शक्ति पायेगा और सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है इसलिये माता और भूमि की सुख शक्तिको त्रुटियुक्तमार्गसे प्राप्त करेगा और गूढ़ चतुराई से उन्नति करेगा।
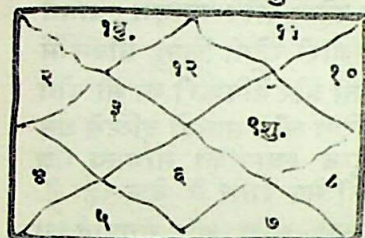
मीन लग्नमें १० शुक्र

नं० १२५८

यदि मकर का शुक्र – ग्यारहवे लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो आयु की उत्तम शक्ति पायेगा तथा पुरातत्व शक्ति का विशेष लाभ चतुराई और पराक्रम के द्वारा प्राप्त करेगा तथा पराक्रम शक्तिके द्वारा जीवनका अच्छा आनन्द पायेगा और अष्टमेश होने के दोष कारण से भाई के लाभ में थोड़ी सी त्रुटियुक्त सफलता रहेगी और आमदनी के कार्य में विशेष परिश्रम शक्ति के द्वारा उन्नति पायेगा तथा अनेक प्रकारों से अपनी स्वार्थ सिद्धि करनेका विशेष ध्यान रखेगा और सातवीं दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को सामान्य मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है. इसलिये विद्या बुद्धि वाणी एवं संतान पक्ष में शक्ति पाने के लिये बड़ा प्रयत्न करेगा।
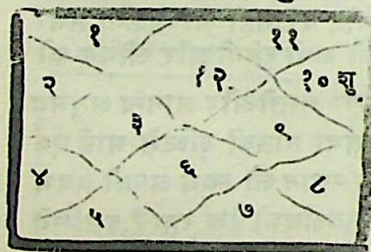
मीन लग्न मे ११ शुक्र

नं० १२५९

यदि कुम्भ का शुक्र—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो भाई बहिन के पक्ष में हानि और कमी प्राप्त करेगा तथा पुरुषार्थ शक्ति में कमजोरी रहेगी और पुरातत्व शक्ति की हानि पायेगा तथा आयु के सम्बन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी तथा कई बार मृत्यु तुल्य संकट प्राप्त होंगे और खर्चा बहुत अधिक करना पड़ेगा तथा अष्टमेश होनेके कारणसे खर्चके मार्गमें तथा बाहरी सम्बन्धोंमें कुछ परेशानी के साथ शक्ति प्राप्त करेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थानको सूर्यकी सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें कुछ परेशानी और चतुराई के योगसे तथा पराक्रम शक्ति के द्वारा प्रभाव पायेगा तथा झंझटों को बुरा समझेगा।
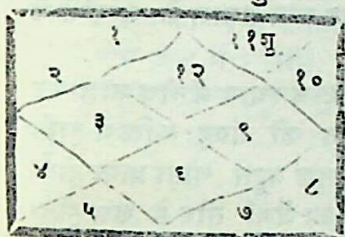
मीन लग्नमें १२ शुक्र

नं० १२६०

आमद, खर्च तथा बाहरी स्थान पति--शनि

यदि मीन का शनि—प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष के कारण देह की सुन्दरता और स्वास्थ्य में कुछ परेशानी अनुभव करेगा किन्तु देह के द्वारा खर्चा और आमदनी की खास संचाल शक्ति पायेगा और बाहरी स्थानों में सम्बन्ध की उत्तम शक्ति प्राप्त करेगा और तीसरी मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिये लाभेश होने का गुण और व्ययेश होने का दोष इन दोनों कारणों से भाई बहिन एवं पराक्रम स्थान के सम्बन्धों में हानि लाभ दुःख सुख दोनों की प्राप्ति करेगा तथा हिम्मत शक्ति से काम करेगा और सातवीं मित्र दृष्टि में स्त्री एवं रोज-

मीन लग्न में १ शनि
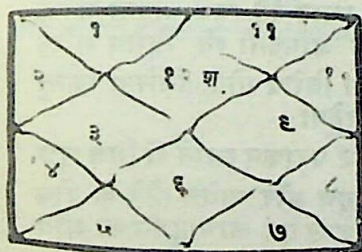
नं० १२६१

गार स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ दुःख प्राप्त रहेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ हानि लाभ दोनों का योग प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इसलिये पिता पक्ष में कुछ वैमनस्यता प्राप्त करेगा और राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ परेशानी से प्रभाव रहेगा।

यदि मेष का शनि – दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में नीच का होकर शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति में हानि और कमजोरी रहेगी तथा कुटुम्ब का सुख बहुत थोड़ा प्राप्त होगा और व्ययेश होने के दोष के कारण धन का बेजाँ तौर से खर्च होता रहेगा तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी हानिकारक सिद्ध होगा और तीसरी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को बुध की मिथुन राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश-लाभेश होने के दोष-गुण के कारण माता और भूमि के सुख सम्बन्धोंमें दुःख-सुख एवं हानि लाभ का योग पायेगा तथा सातवीं उच्च दृष्टिसे आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र शुक्रकी तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु में शक्ति प्राप्त करेगा तथा पुरातत्व की लाभोन्नति प्राप्त करेगा और जीवन की दिनचर्या में मस्ती रखेगा तथा दसवीं दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये आमदनी की विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और धन की आमदनी का विशेष योग मिलेगा किन्तु धन के जोड़ने के पक्ष में सदैव कमजोर रहेगा।
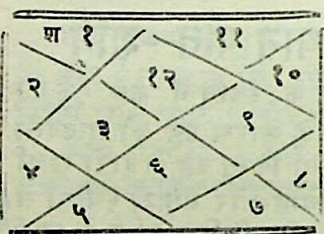
मीन लग्न में २ शनि

नं० १२०२

यदि वृषभ का शनि – तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो लाभेश होने के गुण और व्ययेश होने के दोष के कारण भाई-बहिन के पक्षमें कुछ सुख दुःख एवं लाभ-हानि का योग पायेगा और पराक्रम शक्ति के द्वारा आमदनी एवं खर्च की शक्ति

प्राप्त करेगा तथा तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह बलवान् होता है, इसलिये पुरुषार्थ कर्म के द्वारा विशेष सफलता प्राप्त करेगा और बड़ी हिम्मत शक्ति से काम करेगा तथा तीसरी शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होने के दोष कारण से संतान पक्ष में कुछ दिक्कतें रहेंगी और विद्या स्थान में कुछ कमी रह जायगी और सातवीं शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये भाग्य और धर्म के अन्दरूनी मार्ग में कुछ कमी रहेगी और दसवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्च खूब करेगा तथा बाहरी स्थानों से लाभ की शक्ति पायेगा।
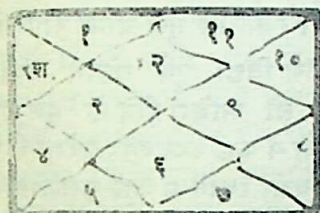
मीन लग्न में ३ शनि

नं० १२६३

यदि मिथुन का शनि—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो लाभेश होने के गुण और व्ययेश होने के दोष के कारण माता के सुख सम्बन्धों में कुछ कमी और कुछ हानि से युक्त लाभ शक्ति प्राप्त करेगा और मातृ भूमि एवं मकानादि की कुछ हानि एवं वियोग पाने के बाद भूमि का कुछ लाभ प्राप्त करेगा तथा घरेलू वातावरण के अन्दर सुख शान्ति में कुछ बाधा रहेगी और तीसरी शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष में कुछ परेशानीके संयोगसे प्रभाव प्राप्त करेगा और झगड़े झंझटों के मार्ग से कुछ हानि लाभ पायेगा और सातवीं शत्रु दृष्टि से पिता एवं राज्य-स्थान को गुरु की धन राशि में देख रहा है, इस लिये पिता के सम्बन्ध में कुछ वैमनस्यता युक्त लाभ खर्चका संयोग
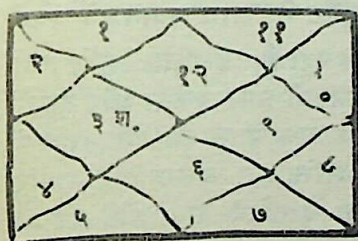
मीन लग्न में ४ शनि

नं० १२६४

पायेगा और राज-समाजके मार्गमें कुछ नीरसता युक्त सम्बन्ध रहेगा और कारबार की उन्नति के पक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और दसवीं शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह के आराममें कुछ कमी तथा देहकी सुन्दरता और स्वास्थ्यके संबन्ध में कुछ कमजोरी रहेगी तथा खर्च और आमदनी के सम्बन्ध से कुछ गुप्त चिन्ता और बाहरी स्थानोंमें सुख प्राप्त होगा।

यदि कर्क का शनि—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो लाभेश होने के गुण एवं व्ययेश होने के दोष के कारण संतान पक्ष में कुछ कष्ट और परेशानी के योग से थोड़ा लाभ प्राप्त करेगा तथा विद्या स्थान में कुछ कमजोरीके साथ २ कुछ शक्ति पायेगा और बुद्धि योग के द्वारा आमदनी और खर्च की शक्ति प्राप्त होगी तथा बाहरी स्थानों का लाभयुक्त सम्बन्ध पायेगा किन्तु दिमाग में कुछ परेशानी रहेगी और तीसरी मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये स्त्री पक्ष में कुछ दुःख-सुख का मिश्रित योग पायेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ हानि लाभ का मिश्रित योग होने के कारण उन्नति में सामान्यता रहेगी और सातवीं दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये बुद्धि तथा बाहरी स्थानों के संयोग से बराबर आमदनी प्राप्त करेगा और दसवीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये धन की संग्रह शक्ति का प्रभाव रहेगा और कुटुम्ब में कुछ कष्ट और क्लेश रहेगा इसलिये धन और जन की तरफ से चिन्ता रहेगी।
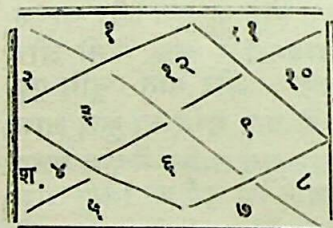
मीन लग्न में ५ शनि

नं० १२६५

यदि सिंह का शनि—छठें शत्रु स्थान में शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन बन जाता है, इसलिये शत्रु पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेगा किन्तु आमदनी और खर्च के मार्ग में कुछ परतंत्रता एवं कुछ परिश्रम का योग प्राप्त करेगा और व्ययेश होने के दोष के कारण कुछ झगड़े झंझटों में अथवा बीमारी आदि में भी बेकार खर्च करना पड़ेगा और तीसरी उच्च दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देख रहा है, इसलिये आयु की वृद्धि रहेगी और और पुरातत्व शक्ति का लाभ प्राप्त होगा तथा जीवन में उमंग और प्रभाव रहेगा तथा सातवीं दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान को स्वयं अपनी कुम्भ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब करेगा और बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु छठें बैठने के कारण आमदनी और खर्चा में जितना बाहरी प्रभाव रहेगा उतना आन्दरूनी आनन्द नहीं रहेगा और दशवीं मित्र दृष्टि से भाई एवं पराक्रम स्थानको मित्र शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहिन के सुख में कुछ कमी के साथ सम्बन्ध रहेगा और पराक्रम शक्ति में सफलता और हिम्मत रहेगी।
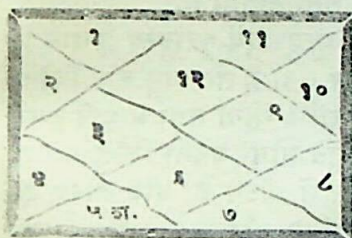
मीन लग्न में ६ शनि

नं० १२६६

यदि कन्या का शनि—सातवें स्त्री एवं रोजगार के स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो लाभेश होने के गुण और व्ययेश दोष के कारण स्त्री स्थान में कुछ हानि और परेशानी पाने के बाद कुछ शक्ति पायेगा तथा इसी प्रकार रोजगार के मार्ग में कुछ हानि लाभ का योग प्राप्त करेगा तथा खर्चा अधिक रहने के कारणों से गृहस्थ में कुछ परेशानी रहेगी और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करेगा

और तीसरी शत्रु दृष्टि से भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की

मीन लग्न में ७ शनि
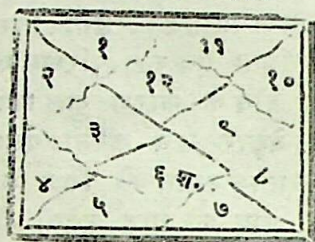
नं० १२६७

वृश्चिक राशिमें देख रहा है, इसलिये भाग्यमें कुछ दुःख सुखका योग पावेगा और धर्म का थोड़ा लाभ पावेगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे देह के स्थान को गुरुकी मीनराशिमें देखरहा है, इसलिये देहमें कुछकमजोरी तथा कुछपरेशानी प्राप्त करेगा और दसवीं मित्र दृष्टिसे माता एवं भूमि स्थान को बुध की मिथुनराशिमें देख रहा है, इसलिये माता के सुखमें कुछ हानि लाभ का योग पावेगा और भूमि मकानादि के सुख प्राप्ति में कुछ कमी के साथ सफलता पावेगा।

यदि तुला का शनि—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थान में उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो आयु की विशेष वृद्धि करेगा और पुरातत्व शक्ति का लाभ रहेगा तथा बाहरी दूसरे स्थान के योग से ही आमदनी का मजबूत योग बनेगा किन्तु व्ययेश होनें के दोष के कारण से और अष्टम में बैठने के दोष कारण से आमदनी के मार्गमें कुछ परेशानी और अधिक दौड़धूप का योग प्राप्त

मीन लग्न में ८ शनि
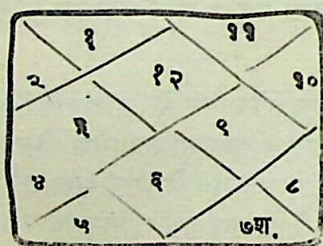
नं० १२६८

रहेगा और तीसरी शत्रु दृष्टिसे पिता एवं राज्य स्थान को गुरुकी धनराशि में देख रहा है, इसलिये पिता स्थान में कुछ नीरसता रहेगी और राज-समाज के सम्बन्ध में कुछ साधारण सम्पर्क रहेगा तथा सातवीं नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु मंगल का मेषराशि में देख रहा है, इसलिए धन की संग्रह शक्ति का

अभाव रहने के कारणों से कुछ परेशानी बनेगी और कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कष्ट और कमी के कारण प्राप्त करेगा और दसवीं शत्रु दृष्टि से विद्या एवं संतान स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशिमें देख रहा है इसलिये व्ययेश होने के दोष कारण से संतान पक्ष में कुछ हानि और कमी के कारण बनेंगे तथा विद्यास्थान में कुछ कमजोरी रहेगी और दिमाग के अन्दर खर्च एवं लाभ की वजह से कुछ चिन्ता रहेगी।

यदि वृश्चिक का शनि—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य की शक्ति से खर्च का संचालन कर सकेगा और बाहरी स्थानों का लाभ युक्त सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु व्ययेश होनेके दोष के कारण भाग्य की उन्नति में कुछ बाधायें प्राप्त होती रहेंगी और धर्म के पालन में कुछ स्वार्थ युक्त धर्म का पालन करेगा और तीसरी दृष्टि से स्वयं अपने लाभ स्थान को मकर राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये भाग्यकी शक्तिसे आमदनी के मार्गमें विशेष सफलता प्राप्त करेगा और धर्म स्थानके योगसे भी लाभ प्राप्त करेगा तथा सतावीं मित्र दृष्टिसे भाई एव पराक्रम स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है, इसलिये भाई बहनके पक्षमें कुछ कमजोरीसे सम्बन्ध पावेगा और पराक्रम स्थान में कुछ कमजोरी रहेगी तथा दसवीं शत्रु दृष्टि से शत्रु स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है, इसलिये कुछ कठिनाइयों के योग से शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा और झंझट युक्त मार्ग से कुछ लाभ पावेगा।
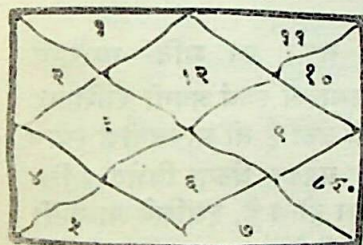
मीन लग्न में ९ शनि

नं० १:६९

यदि धन का शनि—दशम केन्द्र, पिता एवं राज्यस्थानमें शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो व्ययेश होने के दोष कारण से कारबार की उन्नतिके मार्गमें बड़ी दिक्कतें और राज-समाजके पक्षमें कुछ कमजोरी युक्त लाभ का ढंग रहेगा किन्तु प्रभावयुक्त मार्ग के द्वारा आमदनी का योग प्राप्त करेगा और तीसरी दृष्टि से खर्च एवं बाहरी स्थान

मीन लग्न में १० शनि

नं० १२७०
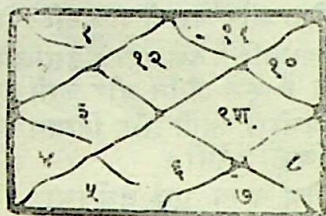
को स्वयं अपनी कुम्भ राशिमें स्वक्षेत्र को देख रहा है, इसलिये खर्चा खूब शानदार करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्ध से लाभ और प्रभाव की शक्ति पायेगा तथा सातवीं मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थानको बुध की मिथुन राशिमें देख रहा है, इसलिये माताके सुख सम्बन्धोंमें कुछ कमी युक्त लाभ रहेगा और भूमि मकानादि के सम्बन्ध में कुछ थोड़ा सुख प्राप्त रहेगा और दसवीं मित्र दृष्टि से स्त्री एवं रोजगार के स्थान को बुध की कन्या राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश होनेके कारण स्त्रीपक्ष में कुछ परेशानी रहेगी और रोजगार के पक्ष में कुछ हानियों के योग से लाभ प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ११ शनि

नं० १२७१
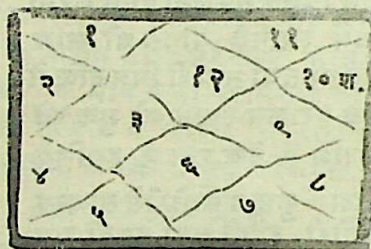
यदि मकर का शनि—ग्यारहवें लाभ स्थानमें स्वयं अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो आमदनीके स्थान पर क्रूर ग्रहका बैठना विशेष शक्ति का दाता होता है, इसलिये आमदनी केमार्गमें विशेष सफलता प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्बन्धसे तथा खर्च की शक्ति से बहुत धन पैदा करेगा और खर्चा भी खूब करेगा तथा व्ययेश होने के दोषके कारणसे आम-दनीके मार्ग में कुछ परेशानी रहेगी और तीसरी शत्रु दृष्टि से देह के स्थान को गुरु की मीन राशि में देख रहा है, इसलिये देह में कुछ कमजोरी तथा सुन्दरता की कमी रहेगी और धन के आवागमन के मार्ग से देह को विशेष दौड़ धूप और चिंतित रहनेके कारण कष्ट प्राप्त होगा तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे विद्या एवं सन्तान स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है, इसलिये विद्या की सफलता के मार्ग में

कुछ परेशानी एवं कुछ कमजोरी रहेगी और सन्तान पक्ष के सम्बन्ध में व्ययेश दोष के कारण कुछ हानि और कुछ चिन्ता रहेगी तथा वाणी के अन्दर कुछ नीरसता और कुछ स्वार्थ परायणता का विशेष ढंग रहेगा, इसलिये धनोपार्जन का मुख्य ध्यान रहेगा।

यदि कुम्भ का शनि—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में स्वयं अपनी राशिपर स्वक्षेत्री बैठा है तो खर्च का संचालन विशेष रूप से करेगा और बाहरी स्थानों में विशेष लाभदायक सम्बन्ध प्राप्त करेगा किन्तु निजी स्थान में आमदनी की तरफ से कुछ परेशानी रहेगी क्योंकि लाभेश को व्ययेश होने का दोष है और व्यय स्थान में ही बैठ गया है। यह तीसरी नीच दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देख रहा है, इसलिये नगद धन की संग्रह शक्ति का बड़ा भारी अभाव रहेगा और कुटम्ब की तरफ से हानि रहेगी अर्थात् धन और कुटुम्बकी तरफ से चिन्ता के कारण प्राप्त होंगे तथा सातवीं शत्रु दृष्टिसे सूर्यकी सिंह राशि में शत्रु स्थानको देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्षमें कुछ थोड़ी सी परेशानीके योग से कार्य बनेगा और दसवीं शत्रु दृष्टिसे भाग्य एवं धर्म स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देख रहा है, इसलिये व्ययेश दोष के कारण भाग्य की उन्नति के मार्ग में कुछ बाधायें रहेंगी और लाभेश होने के कारण कुछ भाग्यमें शक्ति भी मिलेगी और धर्म की कुछ कमजोरी रहेगी और यश थोड़ा मिलेगा।
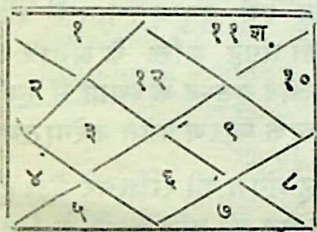
मीन लग्न में १२ शनि

१ ११ श. १२ २ १० ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

नं० १२७२

कष्ट, चिन्ता तथा गुप्त युक्ति के आधिपति—राहु

यदि मीन का राहु—प्रथम केन्द्र देह के स्थान पर शत्रु गुरु राशि में बैठा है तो देह की सुख शान्ति और सुन्दरता में कमी करेगा और

मीन लग्न में १ राहु

नं० १२७३
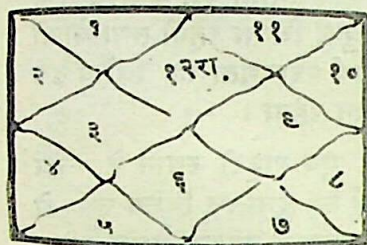
देवगुरु बृहस्पति की राशि पर बैठा इसलिये मान प्राप्त करने का विशेष साधन तथा उपाय करेगा और कठिनाई के योगसे मान और प्रभावप्राप्त करेगा तथा अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिये बड़ी गुप्त और गहरी युक्ति के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा किन्तु अपने अन्दर खास तौर से कुछ कमी अनुभव करेगा तथा अनधिकार वातावरण पर भी कामयाबी पाने में सफल हो सकेगा और कभी-कभी गहरे संकट का सामना प्राप्त करेगा किन्तु अपनी उन्नति के मार्ग में बार-बार प्रयत्नशील होकर सफल बनेगा।

यदि मेष का राहु—दूसरे धन भवन एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन की संग्रह शक्ति के अभाव के कारण बड़ा भारी कष्ट अनुभव करेगा और कुटुम्ब के स्थान में कमी और कष्टके कारण प्राप्त करेगा तथा

मीन लग्न में २ राहु

नं० १२७४
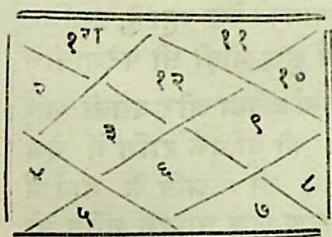
गरम ग्रह मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये महान् कठिन गुप्त युक्तिके द्वारा सफलता शक्ति पायेगा और अपने वित्त से भी अधिक कठिन मार्गमें धन प्राप्ति का साधन पा सकेगा किन्तु फिर भी राहु के प्राकृतिक स्वाभाव के कारण कभी-कभी धन की तरफ से महान् चिन्ता पा सकेगा परन्तु कठिनाइयों के मार्ग से धन की वृद्धि एवं शक्ति कुछ अपूर्ण रूप से प्राप्त कर हीलेगा।

यदि वृषभ का राहु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये पराक्रम स्थान में बड़ी शक्ति प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणके कारण भाई-बहिन के पक्ष में कुछ कमी और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा तथा कभी-कभी अपने अन्दर गुप्त रूपसे कुछ कमजोरी अनुभव करेगा किन्तु परम चतुर शुक्रकी राशि पर बैठा है, इसलिये अपने पुरुषार्थ की वृद्धि करनेके लिये बड़ी भारी चतुराई और गुप्त युक्तिके द्वारा पराक्रम और प्रभाव की सफलता प्राप्त करेगा तथा प्रकट रूप में कभी भी हिम्मत हारने को तैयार नहीं होगा और अपना कार्य सिद्ध करने में सदैव तत्पर रहेगा ।

मीन लग्न में ३ राहु

नं० १२७५

यदि मिथुन का राहु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान में उच्च का होकर मित्र बुध की राशिपर बैठा है तो भूमि मकानादिकी सुख शक्ति पायेगा तथा माता के स्थान में विशेष प्रभाव प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुण के कारण माता के पक्ष में एवं भूमि के पक्ष में कुछ कमी का योग अनुभव करेगा और घरेलू वातावरण में कुछ गुप्त युक्ति बल के द्वारा सुख के साधनों की विशेष वृद्धि करेगा किन्तु फिर भी कभी-कभी गुप्त अशान्ति का योग प्राप्त करेगा परन्तु उच्च का होनेके कारण कुछ सुख के साधनों को मुफ्त के से रूप में विशेष प्राप्त करेगा सुख प्राप्ति के मार्ग में दिखावटी आडम्बर बहुत कुछ रहेगा ।
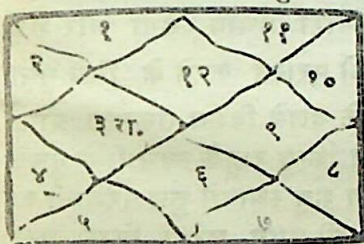
मीन लग्न में ४ राहु

नं० १२७६

यदि कर्क का राहु—पाँचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थान मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो विद्या ग्रहण करने के मार्ग में परेशानी रहेगी और संतान पक्ष में कष्ट अनुभव करेगा तथा विभाग के अन्दर चिन्ता रहेगी और बोलचाल की वाणी के अन्दर कुछ रूखापन रहेगा क्योंकि राहु मुख्य शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है, इस लिये मन के द्वारा संतान पक्ष और बुद्धि योगके अन्दर कभी-कभी महान् संकट का योग प्राप्त करेगा और गुप्त युक्ति एवं विचारोंके योगसे संतान पक्ष में शक्ति पाने का विशेष प्रयत्न करेगा और सत्य असत्य की परवाह न करते हुए अपने मन को प्रसन्न रखने की चेष्टा करेगा।
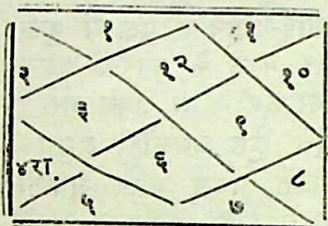
मीन लग्न में ५ राहु

नं० १२७७

यदि सिंह का राहु—छठे शत्रु स्थान में परम शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो छठे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता बन जाता है, इसलिये शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा और शत्रु पक्ष को परास्त करने के लिये गुप्त युक्तिके बलसे विशेष सफलता प्राप्त करेगा किन्तु राहुके स्वभाविक गुणके कारण शत्रु स्थानसे कुछ परेशानी का योग भी प्राप्त करेगा किन्तु महा तेजस्वी सूर्य की राशि पर बैठा है इसलिये शत्रु पक्ष में विजय पाने के लिये महान् शक्ति और महान् युक्ति का प्रयोग करेग तथा ननसाल पक्षमें कुछ हानि प्राप्त करेगा और प्रत्येक अवस्थाओंमें अपने प्रभाव की जागृति रखने का पूरा प्रबन्ध रखेगा।
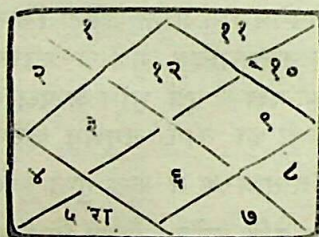
मीन लग्न में ६ राहु

नं० १२७८

मीन लग्न में ७ राहु

नं० १२७९

यदि कन्या का राहु – सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगारके स्थानमें मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो स्त्री स्थान में कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और रोजगार के मार्ग में कुछ परेशानियाँ रहेंगी किन्तु विवेकी बुध की कन्या राशि पर राहु स्वक्षेत्री के समान माना जाता है इसलिये गुप्त विवेक की महान् शक्ति के द्वारा रोजगार के मार्ग में कुछ कठिनाइयों के योगसे विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और स्त्री तथा गृहस्थ के अन्दर कुछ कमी के योग से उन्नति का मार्ग प्राप्त करेगा किन्तु राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण कभी-कभी गृहस्थ के अन्दर महान् संकट का योग पायेगा परन्तु राहु बलवान् है, इसलिये पुनः पुनः उन्नति पायेगा।
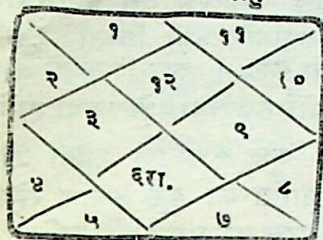
यदि तुला का राहु –आठवें आयु एवं मृत्यु तथा पुरातत्व स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है तो जीवन और आयुके सम्बन्ध में अनेकों बार चिन्ता और कष्ट के कारण प्राप्त करेगा और पुरातत्व सम्बन्धमें कुछ हानि और कमी का योग पायेगा और आठवें स्थान से उदर का भी सम्बन्ध है, इसलिये पेट के अन्दर कुछ परेशानी या कुछ बीमारीका योग और कभी-कभी जीवन निर्वाह तथा जीवन संचालनके मार्ग में विशेष चिन्ताओं का योग प्राप्त करेगा किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र की राशि पर राहु बैठा है, इसलिये बड़ी भारी गम्भीर चतुराई के योगसे जीवन निर्वाह की शक्ति पायेगा और इसी चतुराईके बलसे कुछ मुफ्त का सा पुरातत्व शक्ति का लाभ पायेगा और प्रकट रूप में शानदार जीवन रहेगा।
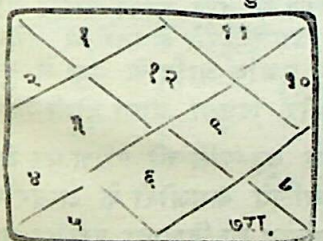
मीन लग्न में ८ राहु

नं० १२८०

यदि वृश्चिक का राहु - नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्मस्थानमें शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्यके स्थानमें बड़ी चिन्तायें रहेंगी और भाग्य की उन्नति के मार्ग में हमेशा कुछ न कुछ दिक्कतों और परेशानियोंसे टकराना पड़ेगा तथा धर्मके मार्ग में कुछ कमजोरी रहेगी और सुयश प्राप्ति का कुछ अभाव रहेगा परन्तु गरम ग्रह मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये बड़ी हिम्मत शक्ति और गुप्त युक्ति के कठिन प्रयत्न से भाग्य की वृद्धि पायेगा और कठिन प्रयत्नके परिणाम स्वरूप कभी-कभी भाग्य में मुफ्त का सा लाभ पायेगा और राहु के स्वाभाविक गुण के कारण कभी-कभी भाग्यके स्थानमें महान् कष्ट का अनुभव करेगा किन्तु भाग्य की उन्नति के लिये बराबर प्रयत्नशील रहकर शक्ति प्राप्त करेगा।

मीन लग्न में ९ राहु

नं० १२८१

यदि धन का राहु—दसम केन्द्र पिता एवं राज्य स्थान में नीच का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो पिता स्थान में महान् कष्ट का योग पायेगा और राज-समाज में बड़ी भारी झंझट और परेशानी के कारण प्राप्त करेगा उन्नति प्राप्त करने के मार्ग में अनेकों बार हानियाँ मिलेंगी और मान सम्मान प्रभाव आदि के पक्ष में कुछ कमी और लघुता प्राप्त होगी किन्तु देवगुरु वृहस्पति की राशि पर बैठा है, इसलिये कमजोरी के अन्दर भी आदर्शवाद का दिखावा रखकर गुप्त युक्तियोंके बलसे अपना कार्य सम्पादन करेगा और बड़े २ संघर्षों के मार्ग से अपनी इज्जत आबरू बना सकेगा और अति गम्भीर युक्तियोंके योग से कार-बार का मार्ग बनाकर चलेगा।
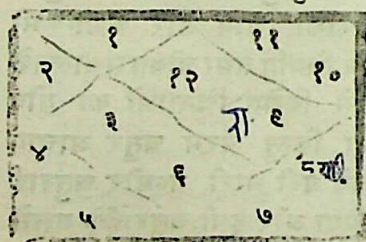
मीन लग्न में १० राहु

नं० १२८२

यदि मकर का राहु—ग्यारहवें लाभ स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष लाभ प्राप्त करेगा और अपने वित्त से अधिक नफा खाने का योग प्राप्त करेगा और राहु के स्वाभाविक गुण के कारण कभी २ धनोपार्जनके लिये बड़ा कष्ट अनुभव करेगा किन्तु गरम ग्रह मित्र शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये धन प्राप्तिके मार्ग में बड़ी भारी गुप्त युक्ति के बल से और धैर्य की महान् शक्ति से विशेष सफलता प्राप्त करेगा और कभी २ मुफ्त का सा धन भी प्राप्त करेगा और आमदनी की अधिक से अधिक वृद्धि करने के लिये बड़ी गहरी सूक्ष्म शक्ति से सदैव काम करता रहेगा।
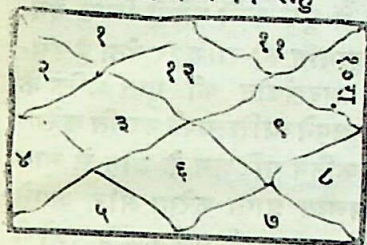
मीन लग्न में ११ राहु

नं० १२८३

यदि कुम्भ का राहु बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो खर्च की संचालन शक्ति को पाने के लिये बड़ी कठिनाइयोंका योग प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानोंके सम्पर्कमें कुछ दिक्कतें रहेंगी तथा स्थिर ग्रह शनि की राशि पर बैठा है, इसलिये खर्चके मार्ग को सुचारु बनानेके लिये गहरी युक्ति की सूक्ष्म शक्ति के द्वारा महान् प्रयत्न करता रहेगा परन्तु राहु के स्वाभाविक गुणके कारणोंसे खर्च के मार्ग में एवं बाहरी सम्बन्धों में कभी २ बड़ी भारी परेशानी एवं कमी और कष्ट के कारणों को सहन करेगा किन्तु मित्र राशि पर होने के कारण कुछ संघर्षों के द्वारा सफलता शक्ति प्राप्त करता रहेगा।

मीन लग्न में १२ राहु

नं० १२८४

गुप्त परिश्रम शक्ति, कमी तथा कष्टके अधिपति-केतु

यदि मीन का केतु - प्रथम केन्द्र देह के स्थान में शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो देह के सम्बन्ध में बड़ी चिन्तायें रहेंगी और कभी कभी कोई सांघातिक चोट एवं मृत्यु तुल्य कष्ट का योग प्राप्त होगा और देह की सुन्दरता में और स्वास्थ्य में कुछ कमी रहेगी किन्तु देव-गुरुबृहस्पति की राशिपर बैठा है, इसलिये आदर्शवाद की गुप्त शक्ति के द्वारा अपने व्यक्तित्वकी उन्नति करेगा और कठिन परिश्रम के योग से मान एवं प्रभाव प्राप्त करेगा और अपने अन्दर कुछ कमी एवं कुछ कमजोरी को पाते हुए भी प्रकटमें बड़ी हिम्मत शक्ति से कार्य संचालन के योग से जीवन यापन करता रहेगा।

मीन लग्न में १ केतु

नं० १२८५

यदि मेष का केतु - दूसरे धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु मंगल की राशिपर बैठा है, तो धन की संग्रह शक्तिके अन्दर बड़ी कमी रहेगी और कुटुम्ब के अन्दर क्लेश रहेगा तथा धन और कुटुम्ब के योग से बड़ा कष्ट अनुभव करेगा। किन्तु क्षत्री ग्रह मंगल की राशि पर बैठा है, इसलिये धन की वृद्धि करने के लिये गुप्त शक्तिके कठिन परिश्रम से दृढ़ता पूर्वक कार्य करता रहेगा परन्तु धन-जन की कठिन परिस्थति के कारणोंसे कभी-कभी कठिन वेदना का योग पायेगा और कभी कुछ मुफ्त का सा धन भी प्राप्त करेगा और अन्दरूनी धन की कमजोरी रहते हुए भी जाहिर में कुछ इज्जत प्राप्त करेगा और दूसरों की दृष्टि में कुछ धनवान् कुटुम्बवान् समझा जा-गा।
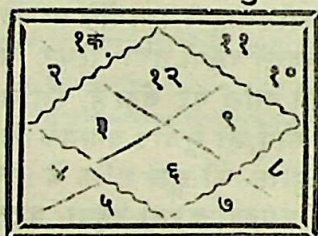
मीन लग्न में केतु

नं० १२८६

यदि वृषभ का केतु—तीसरे भाई एवं पराक्रम स्थान में

मित्र शुक्र की राशि पर बैठा है, तो तीसरे स्थान पर क्रूर ग्रह शक्ति शाली फल का दाता होता है, इसलिये पराक्रम स्थान की बड़ी भारी सफलता शक्ति प्राप्त करेगा और परम चतुर आचार्य शुक्र की राशिपर बैठा है, इसलिये गुप्त चतुराई की शक्ति केबल से बड़ी उन्नति पायेगा और इसी कारण बड़ी भारी हिम्मत प्राप्त करेगा किन्तु केतुके स्वाभाविक गुणके कारण भाई-बहिन के पक्ष में परेशानी और कुछ कष्ट प्राप्त करेगा और इसी वजह से कभी-कभी अपने अन्दर कमजोरी अनुभव करेगा परन्तु प्रकट में दूसरों के सम्मुख चतुराइयों के द्वारा बड़ी जबरदस्त हिम्मत शक्ति से काम करेगा और बाहुबल में बहादुरी और स्वतन्त्रता पाने के लिये सदैव प्रयत्न करता रहेगा।
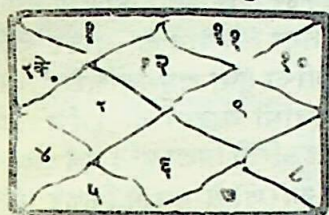
मीन लग्न में ३ केतु

नं० १२८७

यदि मिथुन का केतु—चौथे केन्द्र माता एवं भूमि के स्थान पर नीच का होकर मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो माता के स्थान में बड़ी जबरदस्त कमी एवं कष्ट प्राप्त करेगा और भूमि मकानादि रहन सहन के पक्ष में कुछ दुख अनुभव करेगा तथा घरेल वातावरण में सुख शान्ति की बड़ी कमजोरी रहेगी तथा घरेलू सुख शान्ति पाने के लिये कुछ निम्न श्रेणी के मार्ग से कार्य पूर्ति करेगा क्योंकि विवेकी ग्रह बुध की मित्र राशि पर बैठा है, इसलिये गुप्त विवेक की अति गूढ़ शक्ति के द्वारा सुख प्राप्ति के साधनों को कठिन परिश्रम के योग से प्राप्त कर सकेगा फिर भी कभी-कभी घोर क्लेश का योग प्राप्त करेगा और गुप्त धैर्य से सुख मानेगा।
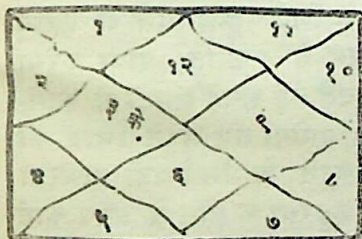
मीन लग्न में ४ केतु

नं० १२८८

यदि कर्क का केतु—पाचवें त्रिकोण विद्या एवं संतान स्थानमें परम

शत्रु चन्द्रमा की राशि पर बैठा है तो विद्या ग्रहण करने के मार्ग में बड़ी जबरदस्त परेशानी का योग पावेगा और संतान पक्ष में बड़ा भारी कष्ट और कमी का योग प्राप्त करेगा तथा दिमाग के अन्दर बड़ी चिन्ताओंका गुप्त अनुभव करेगा तथा मनके स्वामी चन्द्रमा की राशि पर बैठा है,इसलिये विद्या बुद्धि एवं संतान पक्ष के कारणों से मन में फिक्र और अशान्ति के विचारों को प्राप्त करेगा परन्तु मनोयोग की गुप्त परिश्रम शक्ति के द्वारा ही विद्या एवं संतान पक्ष की पूर्ति के कुछ साधन प्राप्त करेगा और केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण कभी २ विचारों में किंकर्तव्य विमूढ़ता का योग पायेगा और कभी कभी मजबूती पायेगा।
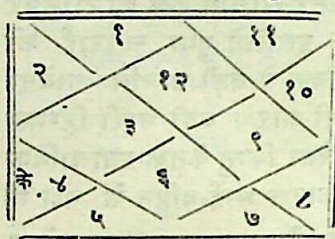
मीन लग्न में ५ केतु

नं० १२८९

यदि सिंह का केतु—छठे शत्रु स्थान में एवं परिश्रम और झंझट के स्थान में मुख्य शत्रु सूर्य की राशि पर बैठा है तो छठें स्थान पर क्रूर ग्रह बड़ा शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये शत्रु का दमन करने के लिये और शत्रु पर विजय पाने के लिये गुप्त शक्ति के महान् परिश्रम से सफलता प्राप्त करेगा और बड़े-बड़े झगड़े-झंझटों में कामयाबी पायेगा तथ अपने प्रभाव की वृद्धि करने के लिये बड़ी तत्परता और कट्टरता के योग से सदैव कार्य करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण शत्रु पक्ष में कभी २ अन्दरूनी बड़ी परेशानी अनुभव करेगा किन्तु सूर्य की तेजस्वी राशिपर बैठा है, इसलिये कठिन से कठिन परिस्थिति में भी बहादुरी से विजय प्राप्त करेगा।
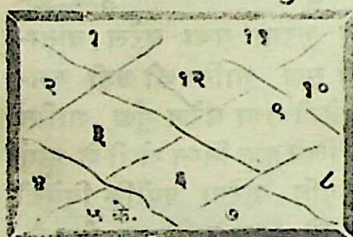
मीन लग्न में ६ केतु

नं० १२९०

यदि कन्या का केतु—सातवें केन्द्र स्त्री एवं रोजगार के स्थान

में मित्र बुध की राशि पर बैठा है तो कन्या राशि पर बैठा राहु या केतु स्वक्षेत्र के समान होता है, इसलिये स्त्री एवं रोजगार के पक्ष में शक्ति तो प्रदान करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणों के कारण स्त्री पक्ष में कुछ अशान्ति का योग प्रदान करेगा औ रोजगार के मार्ग में कुछ कष्ट और कठिनाइयाँ भी प्राप्त होंगी तथा रोजगार की उन्नति करने के लिये गुप्त परिश्रम की महान् शक्तिसे कार्य करेगा तथा विवेकी बुध की राशि पर बैठा है, इसलिये गहरी विवेक की शक्तिसे गृहस्थ का आनन्द प्राप्त करेगा फिर भी स्त्री और गृहस्थ के सम्बन्ध में कभी-कभी घोर कष्ट का अनुभव करेगा।
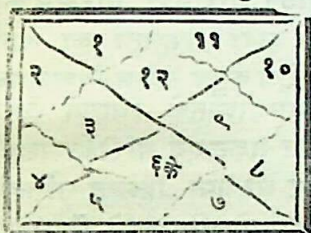
मीन लग्न में ७ केतु

नं० १२९१

यदि तुला का केतु—आठवें आयु मृत्यु एवं पुरातत्व स्थानमें मित्र शुक्र की राशि पर बैठा तो आयु के स्थान में कई बार मृत्यु तुल्य संकट प्राप्त होंगे और पुरातत्व शक्ति की हानि एवं कमजोरी बनेगी किन्तु परम चतुर आचार्य शुक्र की मित्रराशिपर बैठा है, इसलिये जीवन की रक्षाके लिये बड़े-बड़े उत्तम उपाय और साधन की अनुकूलताके योग से आयुमें शक्ति प्राप्त होगी और पुरातत्व सम्बन्धमें कोई गुप्त परिश्रमकी शक्ति और चतुराईके योगसे जीवन निर्वाह के मजबूत साधन मिलेंगे परन्तु केतु के स्वाभाविक गुणके कारण निर्वाह करने के मार्ग में कभी-कभी गहरी चिन्ता और कष्ट का योग प्राप्त कर के पुनः उत्तम मार्ग प्राप्त करेगा।
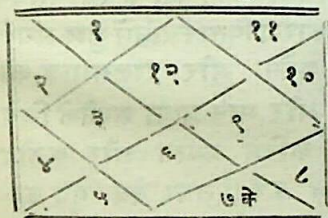
मीन लग्न में ८ केतु

नं० १२९२

यदि वृश्चिक का केतु—नवम त्रिकोण भाग्य एवं धर्म स्थान में

शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो भाग्य के स्थान में परेशानी एवं कष्ट अनुभव करेगा और धर्मके मार्ग में कमजोरी रहेगी परन्तु गरम

मीन लग्न में ९ केतु

नं० १२९३
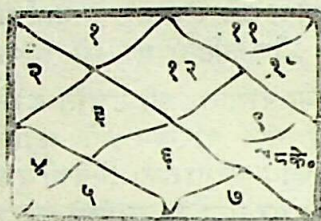
ग्रह मंगल की राशि पर कठिन ग्रह केतु बैठा है इसलिये भाग्य की उन्नति के लिये कठिन और गुप्त परिश्रम की शक्ति के द्वारा सफलता का मार्ग प्राप्त करेगा केतुके स्वाभाविक गुणके कारण भाग्योन्नतके स्थानमें कभी कभी घोर संकट एवं भारी निराशायें प्राप्त करने पर भी गुप्त हिम्मत शक्तिके द्वारा उन्नति का योग प्राप्त करेगा तथा भाग्योन्नति करने में सदैव तत्पर रहेगा और धर्म की उन्नति का भी गुप्त ध्यान रखेगा फिर भी धर्म, भाग्य और यश की कुछ कमी रहेगी।

यदि धन का केतु दसवें केन्द्र पिता एवं राज्यस्थान में उच्च का होकर शत्रु गुरु की राशि पर बैठा है तो पिता के स्थान में और कारबार में बहुत उन्नति करेगा तथा राज-समाज के पक्ष में बड़ा

मीन लग्न में १० केतु

नं० १२९४

प्रभाव रखेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुणके कारण पिता स्थानमें कुछ संघर्ष प्राप्त करेगा और राजसमाज की उन्नति और मान प्राप्त करनेके लिये महान् कठिन प्रयत्न और कठोर परिश्रम करेगा तथा देव गुरु बृहस्पति की राशिपर उच्च का बैठा है इसलिये आदर्शवादके मार्ग द्वारा उन्नति की महान् शक्ति प्राप्त करने के लिये सदैव गुप्त रूप से भारी दौड़ धूप करता रहेगा और कभी२ विशेष परेशानी का योग प्राप्त होने पर भी अपनी उन्नति करनेके मार्गमें विशेष बहादुरीसे काम करेगा।
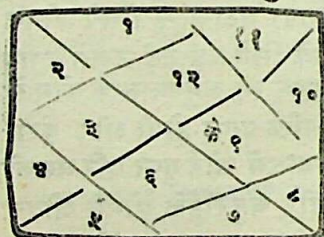
यदि मकर का केतु—ग्यारहवें लाभ स्थानमें मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रह शक्तिशाली फल का दाता होता है, इसलिये आमदनी के मार्ग में विशेष शक्ति प्राप्त करेगा और क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह बैठा है, इसलिये अधिक लाभ पाने के लिये गुप्त परिश्रम की कठोर शक्ति से सफलता प्राप्त करेगा और दृढ़ता पूर्वक स्वार्थ सिद्धि करने में लगा रहेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण, आमदनी के मार्ग में कभी-कभी महान् कष्ट का योग प्राप्त करेगा तथा फिर भी आमदनी में कुछ कमी का योग अनुभव करने के कारण से आमदनी की वृद्धि करने के लिये विशेष प्रयत्न करेगा।

मीन लग्न में ११ केतु

नं० १२९५

यदि कुम्भ का केतु—बारहवें खर्च एवं बाहरी स्थान में मित्र शनि की राशि पर बैठा है तो खर्च के मार्ग में कुछ कमी और कष्ट का योग प्राप्त करेगा और बाहरी स्थानों के सम्बन्धमें कुछ परेशानी अनुभव करेगा किन्तु गरम ग्रह की राशि पर गरम ग्रह बैठा है, इसलिये खर्च की संचालन शक्ति प्राप्त करने के लिये गुप्त परिश्रम शक्ति के योग में दौड़ धूप करके सफलता पायेगा और खर्च एवं बाहरी सम्बन्धों के मार्ग में बड़ी हिम्मत धौर दृढ़ता से कार्य करेगा किन्तु केतु के स्वाभाविक गुण के कारण खर्च के मार्ग में कभी २ घोर संकट का योग प्राप्त होने पर भी बड़ी बहादुरी के साथ परिश्रम करके पुनः खर्च की शक्ति में ज्ञान प्राप्त करेगा।
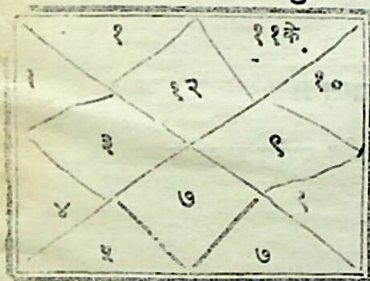
मीन लग्न में १२ केतु

नं० १२९६

॥ मीन लग्न समाप्त ॥

॥ इति भृगु संहिता फलित सर्वांग दर्शन समाप्त ॥